श्रीमद्विजयानंदसूरिविरचित

श्री जैनतत्त्वादर्श.

भाषान्तर करनार,

वकील मुलचंद नथुभाई

भावनगर

छपावी प्रसिद्ध करनार,

श्रीआत्मारामजी जैनज्ञानशाला तथा
पुस्तकालयनी कार्यदक्ष सभा

भावनगर

संवत १९५६ कारतक सुद १० सने १८०९

मुल्य चार रुपीआ

आ ग्रंथ मुंबई निर्णयसागर प्रेसमां छाप्यो

आ ग्रंथ मळवाना ठेकाणां.

१ अमारे त्यांथी दोशी गुलाबचंद आणंदजी
लाइब्रेरीयन मारफत

२ मुंबइ शा. भीमशी माणक जैनपुस्तक
वेचनार मांडवीबंदर

३ भावनगर जैनधर्म प्रसारक सभा आफीस

अर्पण पत्रिका.

अनेक गुणगणालंकृत सुज्ञ मुरबी शेठ

आणंदजी परशोतमनी सेवामां

मु० जावनगर.

बाल्यावस्थाथी स्वशक्तिवडे सांसारिक व्यापारमां अभ्युदय प्राप्त थवाथी आपे स्वोपार्जित द्रव्यनो, अन्य अन्य प्रसंगे, तीर्थयात्रा, उद्यापन (उजमणु) अठाइ महोत्सव, शत्रुंजय महातीर्थ उपर जीनबिंबोनु स्थापन, अक्षयनीधिआदि धर्मकार्योमां अंतःकरणना धार्मिक उत्साहथी व्यय करी पोताना आत्माने निर्मल करेलो छे, अने तेवी निर्मलता प्राप्त थवाथी वृद्धावस्थामां शांतरसनो आपना अंतःकरणमां जमाव थयोछे, तेनो प्रत्यक्ष अनुभव जावनगरना जैनसमुदायमां प्रसंगे प्रसंगे थता उंचा मनने शांति पमाडवामां आपनुं अतःकरण साधनभूत थायछे, एवां अनेक कारणोने लीधे, तेमज मारा उपर आप अत्यंत प्रीति राखो छो, तेथी आ जाषान्तररूप ग्रंथ आपने सविनय अर्पण करुछुं ते स्विकारशो

जावनगर,
ता० १७ नोवेंबर
१८९९

ली. आज्ञांकित,
जाषांतर कर्त्ता.

प्रस्तावना.

नमे त्राता महावीरो, नद्वेषो कपिलादिषु ॥
युक्तिमद् वचनंयस्य तस्यकार्यः परिग्रह. ॥ १ ॥
इत्याचार्य श्री हरिभद्र सूरि ॥

जैनदर्शन सर्व दर्शनोमां श्रेष्ठ छे, एम पूर्वाचार्य श्रीमद् हरिभद्र सू-
र षट्दर्शन समुच्चय नामना ग्रथमां छ ए दर्शनोना देवता तत्वप्रमु-
ना यथार्थ विचार प्रदर्शित करी सिद्ध करी बताव्युं छे मोक्षाभिलाषी
त्मार्थने मोक्षपद प्राप्त करवामां जैनदर्शननुं आराधन एज सत्य सा-
न छे. साधन रत्नत्रयीनुं आराधन करवु तेज छे ज्ञान, दर्शन, चारित्र
त्रय छे. श्री तत्वार्थमां "सम्यग् ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः"
 यथार्थ सिद्ध करी बताव्युं छे.

वेदांत आदि दर्शनमां मात्र ज्ञाननेज मुक्तिनुं साधन मानेलुं छे. द-
न, चारित्र तो तेमनी गणनामांज नथी.जुओ शंकराचार्यकृत अपरोक्षानु
ति, तथा विद्यारण्य स्वामिकृत पंचदशी श्री शंकराचार्यकृत आत्मबो-
मां चारित्र अर्थात् क्रियानी जरुरीआत बतावी छे, परंतु दर्शन अर्थात्
म्यग्दर्शननी मोक्षप्राप्तिमां केटली आवश्यकता छे ते संबंधी विचार
नदर्शन शिवाय बीजा कोइपण दर्शनमां बिलकुल बताव्या नथी. सम्य-
दर्शननुं यथार्थ स्वरूप तो मात्र जैनदर्शनना पूर्वाचार्य प्रणीत गहन ग्रं-
ोनु अवलोकन करवाथीज जाणी शकाय छे, तेमां पण गुरुगम ज्ञाननी
ावश्यकता छे जैनदर्शनमां सम्यग्दर्शननी मुख्यता छे, कारण के ते
शवाय ज्ञान अने चारित्र मोक्ष प्राप्त कराववामां असमर्थ छे, आप्रमाणे
 छतां सम्यग्दर्शन अने सम्यग्चारित्रनु मूल कारण सम्यग् ज्ञान छे.
ो सम्यग् ज्ञान प्राप्त थाय तो सम्यग् दर्शन अने सम्यग् चारित्र से-
्जे प्राप्त थाय छे, परंतु सम्यक् ज्ञान प्राप्त थवुं ते अति दुर्लभ छे.
ुदा जुदा दर्शनना आचार्योनी विद्वत्ता तेओना ग्रंथोनुं अवलोकन कर-
ाथी स्पष्ट रीते मालम पडे छे जुदा जुदा दर्शनना ग्रंथो अवलोकन क-
शो तो आपने सिद्ध थशे के सम्यग् ज्ञान मात्र जैनदर्शनना ग्रथोमां-
 छे. अवलोकन करती वखते निष्पक्षपात मतिनी पुरी जरूर छे. बी-

जाउं वास्ते तो शुंज बोलवुं, परतु वेदांतमतना धुरंधर श्री माधवाचार्ये, पोताना सर्वदर्शन संग्रह नामना ग्रथमां जुदा जुदा शोल दर्शनना विचारो बतावेलाछे, एकनु बीजामा एम उत्तरोत्तर खडन करेलु छे, तेमां आर्हत (जैन) दर्शन सबधी विचारो बतावतां जेजे बाबतोनु जेजे रूपे खडन करेलु छे ते एवु तो विचित्र छे के, आ प्रसंगे हु हिमतथी लखी शकु छु के, तेवा महान् आचार्यने पण जैनदर्शननु यथार्थज्ञान न होतु सर्व दर्शनसंग्रहमा आर्हत दर्शननु स्वरूप बतावबामा छ द्रव्यसंबंधी तथा सप्तजंगीसबधी विचारो बताव्या छे छ द्रव्यमां "धर्म अने अधर्म" जे प्रथमना बे द्रव्यो छे, तेनु स्वरूप तदन असत्य ते स्थले बतावेलु छे, जैनदर्शननु सत्यज्ञान जो तेमने होत तो ते बने पदार्थोनो जेवो तेमणे अर्थ कर्यो छे तेवो करतज नहि, खोटो अर्थ करी असत्य खडन कर्युं छे. खेर! मात्र तेटलुज नहि परतु सप्तजंगीनी गहन शैली पण तेवा विद्वान् आचार्यने समजवामां आवी नथी, छता "नैकस्मिन्नसंजवात्" एम सूत्र लखी असत्य कल्पनाउं बतावी छे सप्तजंगीना असत्य खडननु खंडन श्रीमद्‌विजयानदसूरिजीए बहुज विस्तारथी करेलु छे जे थोडा वखत पछी छपाववामा आवशे, ते अवलोकन करवाथी वाचकवर्गने सिद्ध थशे के जैनदर्शन अति गहन दर्शन छे, अने तेनुज यथार्थ ज्ञान ते सम्यग् ज्ञान छे श्री माधवाचार्य जेवा महान् आचार्यपण जैनदर्शनना परम रहस्यथी अज्ञात हता, तो सामान्य विद्वानो माटे तो शुज बोलवु? आमारा लखाणनी साबिती माटे जीज्ञासुए जैनदर्शनना प्रवीण पुरुष पासे जैनदर्शननु यथार्थ ज्ञान नवतत्व प्रमुखनु प्राप्त करी सर्व दर्शनसग्रहमां वर्णवेला आर्हत दर्शनसबंधी विचारो तथा तेनु खडन अवलोकन करवु, आर्यावर्तमा वसनारा तेमज बहारना विद्वानो मध्येनो मोटो जाग वेदांतदर्शनने सर्वोत्तम दर्शन माने छे, परंतु दिलगीरी मात्र ए छे के वेदांतनु ज्ञान धरावनारा महाविद्वानो पण जैनदर्शननु यथार्थ ज्ञान प्राप्त करवा सारु तेना गहन ग्रथोनो लेशमात्र अज्यास करता नथी. जैनदर्शननु यथार्थ ज्ञान पूर्वाचार्य श्रीमद्‌हरिजद्रसूरि तथा श्रीमद् हेमचद्राचार्य प्रमुखना रचेला द्रव्यानुयोग संबधी ग्रथोनु सदगुरु समक्ष अध्ययन करवाथी थाय छे संस्कृत जाषाना वेत्ताउं, तर्कना नियमो लक्षमां

लइ, पूर्वाचार्यप्रणीत जैनदर्शनना गहन ग्रंथोनुं अभ्यन करे छे, त्यारेज तेओने सर्व दर्शनो करतां जैनदर्शननी महत्त्वतानुं भासन थाय छे जैनदर्शननुं यथार्थ ज्ञान थवा सारू प्राचीन तथा अर्वाचीन महान् आचार्योंए अनेक ग्रथोनी रचना करेली छे; परंतु एवा निःस्वार्थ परोपकारी महात्माओए ज्ञानरूप लक्ष्मी जैनोने वारसामां आपतां उत्तरोत्तर प्राप्त थतां वर्त्तमान कालना जैनोना कवजामां ते एवी तो बंधनमां पडेली छे के, ते ज्ञानरूप लक्ष्मीना उत्तम नगीना अति जीज्ञासुओने पण दृष्टिपथे आववा पामता नथी आप्रमाणे लखवानो हेतु ए छे के परमकृपालु श्रीमद् विजयानंदसूरिजीने (ग्रथकर्त्ताने) एक प्रसंगे अमुक शेहेरनो ज्ञान भंडार अवलोकन करवानी जीज्ञासा थइ हती. तेवा धर्मधुरंधर महान् आचार्यने पण त्यांना श्रावकोए ज्ञानभंडार बतावबामां आनाकानी करी हती. आवी अज्ञानता ज्यां ज्यां व्यापेली छे, ते ते स्थलना जैनो जैनदर्शननी ज्ञानरूप लक्ष्मीनो सदुपयोग करताज नथी, तेमज बीजा जीज्ञासुओने पण करवा देता नथी. महाविद्वान् आचार्योंए परम उपगार बुद्धिए अति प्रयासथी अमूल्य ग्रंथोनी रचना करी जैनीओने जे स्वाधिन करेला छे,ते मात्र सिंडुकमां राखवासारु तेमज बार मासे एक दिवस धूप देवा अने बज नाखवासारु नहि,परंतु नदीना जलनी जेम ज्ञाननी पिपासावालाने तृषा छीपाववासारु प्रगट दृष्टिपथे आवे तेवी रीते राखवासारु स्वाधिन करेला छे. मारो लखवानो हेतु ए छे के जैनदर्शननु ज्ञान बीजा दर्शनवालाओना ज्ञानना प्रमाणमां बहु अल्प विस्तारमां प्रसिद्धिमां आवेलु छे. अन्य दर्शनवालाओना जेजे महान् ग्रंथो छे ते सर्वे प्रगट थएला छे, त्यारे जैनदर्शनना महान् ग्रंथो ज्ञानभंडारोमांज मात्र बिराजे छे जुओ सम्मतितर्क, रत्नावतारिका प्रमुख जैनदर्शनधारी श्रावक समुदायतो आवा अमूल्य ग्रथोना ज्ञानथी अतिदूर छे साधु समुदायमां पण विरला छे. सारांश के वर्त्तमान कालना जैनोने ज्ञान प्राप्त करवानी बहुज अल्प जिज्ञासा छे जैनदर्शनमां सात क्षेत्रमां द्रव्यनो व्यय करवानी जिनाज्ञा छे सात क्षेत्रमां ज्ञानक्षेत्रनो समावेश छे, आ क्षेत्र एवु तो बलवान छे के तेना रक्षण उपर जैनदर्शनना अस्तित्वनो परम आधार छे. ए प्रमाणे जिनाज्ञा छे छतां वर्त्तमान कालना जैनो आ आधारभूत क्षेत्रमां बिलकुल व्यय श-

किना प्रमाणमां करताज नथी. जे कांइ व्यय करे छे ते बीजाउंना प्रमाणमां यत्किंचित् छे आ प्रसंगे कोइ सवाल करशे के हालमां जैनशालाउं अनेक स्थले स्थापवामां आवी छे ते शुं ज्ञानक्षेत्रमां व्यय नथी? उत्तर मात्र एटलोज छे के ते व्ययनी बीजा क्षेत्रना व्ययनी साथे सरखामणी करशो, त्यारेज यथार्थ समजवामा आवशे आवी जैनशालाउंमां महाविद्वान् शिक्षकोने राखी तीक्ष्ण बुद्धिवाला जैनना बालकोने उत्तरोत्तर गहन ग्रंथोनु अध्ययन कराववामां पुष्कल द्रव्यनो व्यय करवानी जरूर छे, एटले सुधी के जे दरज्जो चैत्यक्षेत्र तथा प्रतिमाक्षेत्र वर्त्तमान कालमां प्रकाशित थयेल छे, ते दरज्जो ज्ञानक्षेत्रने प्रकाशित करवानी जरूर छे ज्ञानीने पुष्टि आपवी तेज ज्ञाननी पुष्टि छे, अने ज्ञानने पुष्टि आपवी ते ज्ञानीने खोराक आपवातुल्य छे आ बाबतमां वर्तमान कालना अन्यदर्शनीउंनी पद्धति तरफ दृष्टि करवी जोइए अन्यदर्शनोना तमाम महान् ग्रंथो प्रगट थएला छे विद्वान् पुरुषो ते प्रगट थएला ग्रथोनु अवलोकन करी शके छे जेवी छुट विद्वानोने अन्यदर्शनोना ग्रथोनी छे, तेवी जैनदर्शनना ग्रथोनी नथी टुकामां कहीए तो जैनदर्शनना ग्रथो बिलकुल विस्तार पामेला नथी जे प्रगट थयेला छे ते पण एवी पद्धतिमां के प्रवेशकने सहायक शिवाय मार्ग पण सूझे नहि सारांश के जैनदर्शननु ज्ञान केलवणी रूप थवामां तेवा प्रकारनी रचनानी वर्त्तमानमा अत्यत खामी छे आवी अनेक मुश्केलीउंना कारणथी सम्यग्ज्ञान प्राप्त थवु ते वर्तमान कालना मनुष्योने अति दुर्लभ छे

सम्यग् ज्ञान, सम्यग् दर्शन, सम्यक् चारित्र ते मोक्षमार्ग एवु जे प्रथम दर्शावेल छे तेनो सामान्य अर्थ आ प्रसगे बताववानी जरूर छे

सम्यग् ज्ञान–ते आप्तप्रणीत तत्वस्वरूपनो यथार्थ अवबोध

सम्यग् दर्शन ते आप्त प्रणीत तत्व स्वरूपना यथार्थ अवबोधनो अनुभव, वा यथार्थ तत्व रुचि

सम्यक्चारित्र ते आत्मस्वरूपमा, कर्मक्षय करवा निमित्ते रमणताकरवी

सम्यग् दर्शन अने सम्यक् चारित्रनु विस्तारथी स्वरूप बताववानो आ स्थले प्रसग नथी मात्र सम्यग् ज्ञानसंबधी कांइक लखवानी आ-

वश्यकता छे, तेथी पूर्वाचार्यप्रणीत ग्रंथनुं अनुकरण करी नवतत्वसंबंधी कांइक विचार जाहेर करवा रजा लउं छुं.

आप्तप्रणीत तत्व बे छे. १ जीव, २ अजीव बे तत्वना विस्ताररूप सात तथा नव तत्व छे. ते आ प्रमाणे १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बंध, ९ मोक्ष. पुण्य, पापने बधमां अंतर्भावी करवाथी सात तत्व थाय छे.

प्रथम जीवतत्व–जीव शब्द चेतन, आत्मा इत्यादि अर्थवाची छे जीवतत्वनो यथार्थ अवबोध तेज अति गहन ज्ञान छे. जीवनुं अस्तित्व माननारा विद्वानोना विचारमां पण बहुज विचित्रता छे. जीव, ज्ञान, दर्शन, चारित्रयुक्त, सुख दुःख वीर्यवान् छे भव्यत्व, अभव्यत्व, प्रमेयत्व, सत्व, द्रव्यत्व, प्राणधारित्व, संसारित्व, सिद्धत्व, आदि स्व अने परपर्याय जीवने छे. ज्ञानादि जीवना धर्म छे तेमना थकी जीव भिन्न पण नथी अने अभिन्न पण नथी, परंतु ते बन्नेथी भिन्न जातिरूप भिन्नाभिन्न छे. जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव भिन्न होय तो हुं जाणु छुं, हुं जोउं छुं, हुं सुखी, हुं दुःखी, हुं भव्य इत्यादि अभेद प्रतिपत्ति न थवी जोइए, अने ते तो प्राणीमात्रने छे, तेमज जो ज्ञानादि धर्मोथी जीव अभिन्न होय तो, आ धर्मी अने आ तेना धर्म छे, एवी भेदबुद्धि न थवी जोइए. माटे ज्ञानादि धर्म थकी भिन्नाभिन्न एवोज जीव मानवो जोइए वली जीव केवो छे ? कर्मना भेदोनो कर्त्ता छे, तेमज ते कर्मोना फलनो पण भोक्ता छे, चतुर्गतिरूप संसारमां कर्मना संबंधथी परिभ्रमण करनारो छे. तेमज द्वादशविध तपप्रयोगथी सकल कर्मनो क्षय करी सिद्धत्व प्राप्त करनारो छे आ सर्व लक्षणो जीवना, चेतनना, आत्माना छे. जीव, पृथ्वी, अप, तेउ, वायु वनस्पतिकायनो तेमज बे, त्रण, चार के पांच इंद्रियवालो छे, एम नव प्रकारनो छे. प्रकारांतरे तेना ५६३ भेद पण थाय छे.

बीजु अजीवतत्व–जीव करतां जेनां लक्षणो विपरीत होय ते अजीव, अज्ञानादि धर्मवान्, रूप, रस, गंध, स्पर्शादिथी भिन्नाभिन्न, नरदेवादि भवांतरमां नहि गमन करनार, ज्ञानावरणीयादि कर्मनो अकर्त्ता, तेमना फलनो अभोक्ता, अने जडस्वरूप, सडन, पडन, विध्वंसनादि धर्मवान्,

ते अजीव छे तेना धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल अने काल, एवा पांच भेद छे

त्रीजु पुण्यतत्व अने चोथु पापतत्व–सत्कर्मपुद्गल ते पुण्य छे, अने तेनाथी विपरीत ते पाप छे पुण्य पापथीज जीवने उत्तरोत्तर सुखदुःख प्राप्त थाय छे दानादि शुभ क्रिया पुण्यनु कारण छे; अने हिंसादि अशुभक्रिया पापनु कारण छे जीवमात्रमां आत्मत्व तो सरखुज छे, छतां मनुष्य, पशु आदि देहप्रमुख विचित्रता जे जणाय छे, तेनु कारण पुण्यपाप छे.

पाचमु आश्रव तत्व छे जेनाथी जीवने कर्म प्राप्त थाय ते आश्रव तेना मिथ्यात्व, अविरति, कपाय, योग, आ हेतु छे असद् देव, गुरु, धर्मने सत् रूपे मानवानी जे बुद्धि ते मिथ्यात्व, हिंसादिथी न विरमवु ते अविरति, क्रोध, मान, प्रमुख ते कपाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग साराश के ज्ञानावरणीयादि कर्म बधना हेतु ते आश्रव तत्व छे

छठु सवर तत्व छे मिथ्यात्व, अविरति, कपाय अने योग रूप आश्रवनो सम्यग् दर्शन, विरति, क्षमादि अने त्रिगुप्ति आदि धर्मना आचरणथी निरोध अर्थात् निवारण ते संवर साराश के जीवने कर्म उपादान हेतुभूत परिणामनो अभाव ते सवर छे

सातमु निर्जरा तत्व छे जीवसाथे बधायेला ज्ञानावरणीयादि कर्मनु बार प्रकारना तपथी छुटा पडवु ते निर्जरा छे तेना बे प्रकार छे. १ सकाम, २ अकाम अति दुष्कर तपश्चर्या करनारा, कायोत्सर्गमां रहेनारा, बावीस परीषह सहनकरनारा, लोचादि काय क्लेश भोगवनारा, अष्टादश शीलांग रथना धारण करनारा, बाह्य, अभ्यतर सर्व परिग्रहना त्यागनारा, चारित्रीआउ सकाम निर्जरावालां छे देशविरतिउने पण सकाम निर्जरा थाय छे बाकीनाउ अकाम निर्जरावालां छे

आठमुं बध तत्व छे बध अर्थात् बधन, अर्थात् जीव अने कर्मप्रदेश पुद्गलनो क्षीरनीर जेवो संबध

सवाल–जीव अने कर्मनो सबध कचुकिक अने कचुकना जेवो छे के अन्य तरेहनो छे ?

उत्तर–कचुकिक अने कचुकना जेवो नथी, परतु अग्नि अने लोहना जेवो तेमज क्षीर अने नीरना जेवो, कर्म अने जीवनो सबध परस्पर अ-

नुप्रवेशात्मक अर्थात् परिणमन धर्मवालो संबध छे. आ प्रसंगे कोइ शंका करे के जीवतो अमूर्त छे, तेने हस्त प्रमुख तो छे नहि, एटले लेवा मुकवानी शक्ति पण नथी, तो तेने कर्म ग्रहण केम संभवे ? समाधान ए छे के जीवने अमूर्त कोणे मान्यो छे ? जीवने कर्मनो संबंध अनादि छे, अर्थात् बंने क्षीरनीरनी जेम एक होय तेम परिणाम पामे छे. ए प्रमाणे जीव मूर्त होवाथी कर्म ग्रहण करे छे. कर्मने लेवा मुकवामां कांइ हस्त प्रमुखनी जरूर पडती नथी, परंतु राग द्वेष, मोहरूप परिणामनी चीकाशथी, तेलमां पडेला वस्त्रने रज चोटवानी जेम जीव कर्मने ग्रहण करे छे, अने तेनाथीज विपरीत एवा सद् अध्यवसायथी जीव कर्मने मुके छे सारांश के संसार अवस्थामां जीव मूर्त छे आवो जे बध ते प्रकृति, स्थिति, रस अने प्रदेश एवा चार भेदथी प्रशस्त अने अप्रशस्त एम बे प्रकारनो छे.

नवमुं मोक्ष तत्व छे. शरीर, इंद्रिय, आयुष्य आदि बाह्य प्राण, पुण्य, पाप, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, पुनर्जन्मग्रहण, वेदत्रय; कषायादि संग, अज्ञान, असिद्धत्व इत्यादि समेत देहादिनो जे आत्यतिक वियोग ते मोक्ष छे. सारांश के सकल कर्मनुं सर्वथा क्षय लक्षण ते मोक्ष छे.

आ नव तत्वनुं स्वरूप अति सूक्ष्म छे, अति विस्तारवालुं छे अने तेनुं अनुभवरूप स्वरूप समजवामां स्वसंवेदनत्व तथा गुरुगम अवबोधनी संपूर्ण आवश्यकता छे. नवतत्वनुं प्रकरण कंठाग्र करवाथी जे पोपटीयुं ज्ञान प्राप्त थाय छे, ते मुमुक्षु थवानी अभिलाषा राखनारा प्राणीउने बस नथी; कारण के शास्त्रमां कह्युं छे के " श्रावक तेजे जाणे तत्व " आ सूत्रनो अर्थ समजनारा एम मानता होय के अमे नवतत्व कंठे कर्यां एटले श्रावक थया, तो एवु तेमनुं मानवुं यथार्थ नथी. ज्यारे तत्वनुं स्वरूप यथार्थ रीते जाणवामां आवे अने ते प्रमाणे गुण धारण करवामां आवे त्यारेज श्रावकपणुं प्राप्त थाय छे ?ेवी अभिलाषा धारण करनारा उत्तम जीवोना हीतने अर्थे परम कृपालु महाराजे अनेक प्राचीन, अर्वाचीन महान ग्रंथकारोना अति उत्तम ग्रंथोमांथी जीन वचनामृतनुं दोहन करी आ जैनतत्वादर्श ग्रंथरूप क्यारीमां तेनुं सिंचन करेल छे. ग्रंथकर्त्ताए आ ग्रंथनु नाम " जैनतत्वादर्श आपेलुं छे ते यथार्थ छे, कारण के आ ग्रंथना अ-

ध्ययन करनार, आदर्श (आरीसा) मां जोनार जेम पोताना प्रतिबिंबने जुए ठे, तेम आ ग्रथरूप आदर्शमा तत्व स्वरूप जुए ठे

आ प्रसंगे मारे जणाववु जोइए के, मात्र सांसारिक विद्याना अभ्यासीउं वारंवार एवो सवाल करे ठे के अमोने जैनदर्शननुं ज्ञान मेलवानी तो वहुज जीज्ञासा थाय ठे, परतु पद्धतिप्रमाणे ज्ञान प्राप्त करवानुं कोइपण ग्रथकारे अत्यारसुधीमां एक पण साधन योजेलु होय तेम अमारी नजरे आवतु नथी तेवा जीज्ञासुउंने मारी नम्र विनति एवी ठे के सांसारिक तत्वनु ज्ञान एकडेएकथी ते महान पाठशालाउंनी उंचा प्रकारनी केलवणी सुधी प्राप्त करता केटलां वर्षो व्यतीत थाय ठे, तेमां जेवी धीरज अने खत राखो ठो, तेना करतां आ अति गहन धर्मतत्व विषयमां विशेष धीरज अने खंत राखवानी जरूर ठे. तत्वज्ञाननी जीज्ञासावालाने शरुआत करवामां आ ग्रथ अति उत्तम ठे, ज्यां ज्यां पारिजाषिक कठिनता लागे, त्यां त्या तत्ववेत्ताउंनी सहाय लेवी तत्वनु ज्ञान लेशमात्र नहि ठतां मात्र सांसारिक विद्याना कारणथी पोताने कृतकृत्य मानवा ते मिथ्याजिमान ठे सांसारिक विद्या ऐहिक सुखनां साधनोनी योजना करी आपे ठे, परंतु आमुष्मिक सुखनां साधनो योजवामा तो तत्वविद्यानुंज साम्राज्य ठे सासारिक विद्याना उत्कर्षरूप ज्वरने शात करवामा आ ग्रथ परम उंपध ठे

आ ग्रंथ हिडुस्तानी जापामां ग्रंथकर्त्ताए रचेलो ठे, तेनु गुजराती जापामा जापान्तर करी आपवानी मने मारा मित्रोए तथा गुरुराजना केटलाएक शिष्योए जलामण करी मे तेमने कह्युं के हिंडुस्तानी जापामां जे खुवी समायेली ठे, ते गुजराती जापामा कोइपण रीते आववानी नथी ठतापि तेमनो आग्रह एवो थयो के काठीआवाड गुजरातना वहु लोको हिडुस्तानी जापा वरावर समजी शकता नथी, तेवाउंना हीतने अर्थे जापान्तर करी आपो, ते कारणथी आ जापान्तर मारी अल्पमति अनुसार में कर्युं ठे आ जापान्तरमां जेजे स्थले जूल चूक मालम पडे ते सर्वे सुज्ञजनोए सुधारी वांचवा कृपा करवी एज विनति

ली जापान्तर कर्त्ता

॥ आ ग्रंथनी अनुक्रमणिका लखीये छीये ॥

प्रथम परिच्छेदमां देवतत्वनुं स्वरूप छे तेनी अनुक्रमणिका लखीये छीये ॥

॥ बीजा परिछेदमां कुदेवनुं स्वरूप छे,तेनी अनुक्रमणिका॥

॥ त्रीजा परिछेदमा गुरुतत्वनुं स्वरूप कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ सातमा परिछेदमां सम्यग् दर्शननुं स्वरूप लखेलछे, तेनी अनुक्रमणिका॥

॥ आठमा परिछेदमा चारित्रनु स्वरूप कहेल छे, तेनी अनुक्रणिका ॥

नवमा परिछेदमां श्रावकोनो दिनकृत्य विधि कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका.

दशमा परिछेदमां रात्रिकृत्यादिक पांच कृत्यो कहेल छे, तेनी अनुक्रमणिका

॥ बारमां परिछेदमां श्री महावीर भगवानथी लइने आज पर्यंत केटलुंक वृतांत लखेल छे, तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ ॐनमः स्याद्वादवादिने ॥

॥ अथ तपागच्छीय ॥

॥ मुनिश्री आनंदविजय (आत्मारामजी) विरचित ॥

॥ जैनतत्त्वादर्श नामक ग्रंथ प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम परिच्छेद ॥

॥ अनुष्टुब् वृत्तम् ॥

स्यात्कारमुद्रितानेक, सदसद्भाववेदिनम् ॥
प्रमाणरूपमव्यक्तं, भगवन्तमुपास्महे ॥ १ ॥

प्रथम देव, गुरु अने धर्म, आ त्रण तत्वोनु कांइक स्वरूप लखीए छीए.

विदित करीए छीए के आ जैनमतनु स्वरूप श्रीतीर्थंकर, गणधर तेमज पूर्वाचार्य आदि पुरुषोए, आगम निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका तेमज प्रकरणो अने तर्कशास्त्रादि अनेक ग्रथोनी रचना करी स्पष्ट बतावेल छे, परंतु पूर्वाचार्य रचित ते सर्व ग्रथो प्राकृत तेमज संस्कृत भाषामां होवाथी तेमज वर्तमान कालमां जेनिओना विद्याभ्यासमा उद्यमनो अभाव होवाथी ते अत्यत उत्तम ग्रंथोनो आशय नाश पामवा योग्य थयेल छे. तेथी केटलाएक भव्य जीवोनी प्रेरणाथी तथा स्वकर्मनिर्जराना हेतुथी जेओने संस्कृत तेमज प्राकृत कठिन लागेछे तेमना उपकार माटे देव, गुरु अने धर्मनुं कांइक स्वरूप भाषामां (गुजरातीमां) लखीए छीए.

श्रीसंघना वाचक वर्गने नम्रतापूर्वक विनति छे के आ ग्रथमां जैन मार्गथी विपरीत ज्यां माराथी लखायु होय त्यां यथार्थ जे होय ते बतावशे तो तेओनो मारा उपर अत्यंत उपकार थशे, आ कालमां लोकोए स्वकपोलकल्पित घणां नवीन मतो प्रगट करेलछे तथा अंग्रेजी अने फारसी विद्याभ्यासथी तथा अनेक मत मतांतरोनी वातो श्रवण करवाथी अनेक भव्यजीवोने अनेक तरेहना संशय उत्पन्न थया करेछे,ते दूर करवाने कांइक लखवु एज आ ग्रंथ लखवानो उद्देशछे. प्रथम कहेलां त्रण तत्वो मध्येथी देव तत्वनुं स्वरूप नीचे मुजब—

देव नाम परमेश्वरनुं छे ते परमेश्वरना स्वरूपमा अनेक प्रकारना विकल्प मतांतरी पुरुषो करेछे जैनमतमां परमेश्वरनुं स्वरूप केवु कथन करेलछे, ते नाम, रूप तेमज विशेषणसयुक्त वतावुतुं जैनमतमां जे परमेश्वर मानेलछे. ते वार गुण सहित तेमज अढार दोषरहित अर्हंत परमेश्वर छे अने जे परमेश्वर वार गुण रहित तेमज अढार दोष सहित हशे तेनामां परमेश्वरता कदापि सिद्ध थशे नहि आ विवेचन आगल करवामां आवशे

प्रथम वार गुण तेमां अशोक वृक्षादि अष्ट महाप्रातिहार्य सर्व जैन समुदायमां प्रसिद्ध छे ते तथा चार मूल अतिशय ए रीते वार गुण ए वार गुणमध्येना चार मूल अतिशयनां नाम (१) ज्ञानातिशय (२) वागतिशय (३) अपायापगमातिशय (४) पूजातिशय प्रथम ज्ञानातिशयनु स्वरूप आ प्रमाणे केवलज्ञान तथा केवल दर्शनेंकरी जूत, जविष्य, वर्तमानकालमां जे सामान्य विशेषात्मक वस्तु छे तेनु, तथा उत्पाद, व्यय, ध्रौव्ययुक्त त्रिकाल सवधी जे सत् वस्तुर्जनुं, जाणवु तेनु नाम ज्ञानातिशय वीजो वचनातिशय तेमां जगवतनां वचन पात्रीश अतिशये युक्त होय छे. ते पात्रीश अतिशयोनु स्वरूप आ प्रमाणे (१) सस्कारवत्त्वं (संस्कृतादि लक्षण युक्त) (२) औदात्त्य (शब्दमां उचपणु) (उपचार परीतता) (३) अग्राम्यत्वं (गामडाना रेहेनार पुरुषना वचन समान जेमनु वचन नहि) (४) मेघगजीरघोषत्वं (मेघनी समान गजीर शब्द) (५) प्रतिनाद विधायित्ता (सर्ववाजीत्रोनी साथ मलता शब्द) (६) दक्षिणत्वं (वचननी सरलतासयुक्त) (७) उपनीतरागत्वं (मालकोशादि ग्राम राग संयुक्त) आ सात अतिशय शब्दनी अपेक्षाथी जाणवा–वाकीना वीजा अतिशयो अर्थ आश्रय जाणवा (८) महार्थता (अत्यत मोटो जेमां अनिधेय कहेवा योग्य अर्थ छे) (९) अव्याहतत्वं (पूर्वापरविरोध रहित) (१०) शिष्टत्वं (अजिमत सिद्धात उक्त अर्थता) एटले के अजिमत सिद्धातनु जे कहेवु ते वक्ताना शिष्टपणानु सूचक छे (११) सशयानामसजव (जेना कथनमा श्रोताने सशय थतो नथी) (१२) निराकृताऽन्योत्तरत्वं जेना कथनमा कोइपण दूषण नहि, श्रोताने सशय उत्पन्न थाय नहि तेम जगवान् वीजीवार उत्तर दे नहि) (१३) हृदय गमता (हृदयमा ग्रहणकरवा योग्य) (१४) मिथ साकांक्षता (अरस पर

स पद वाक्योनु सापेक्षपणु) (१५) प्रस्तावौचित्यं (देशकाल युक्त, विरुद्धनहिं) (१६) तत्त्वनिष्ठता (विवक्षित वस्तुना स्वरूपने अनुसरवापणुं) (१७) अप्रकीर्ण प्रसृतत्वं (सुसंबंधनो विस्तारअथवा असंबंध अधिकारनो अतिविस्तार नहि) (१८) अस्वश्लाघाऽन्यनिंदता (आत्मोत्कर्ष तथा परनिंदा रहित) (१९) आभिजात्य (प्रतिपाद्य वस्तुनी भूमिकाने अनुसरवारूप) (२०) अति स्निग्ध मधुरत्वं (घीगोळनी पेठे सुखकारी)(२१) प्रशस्यता (कहेला गुणोनी योग्यताथी प्राप्त थइ छे श्लाघा) (२२) अमर्मवेधिता (पारकां मर्म जेमां उघाड्यां होय नहि) (२३) औदार्य (अभिधेय अर्थनु तुच्छपणुं नहि) (२४) धर्मार्थप्रतिबद्धता (धर्म तेमज अर्थ संयुक्त) (२५) कारकाद्यविपर्या (कारक, काल, वचन तेमज लिंगादि ज्यां विपर्यय नहि) (२६) विभ्रमादिवियुक्तता (वक्ताना मनमां भ्रांति विक्षेपादि दोष रहित) (२७) चित्रकृत्त्व (कुतूहल पणानो जेमां अभाव छे) (२८) अद्भुतत्व (अद्भुतपणुं) (२९) अनतिविलंबिता (अति विलंब रहित) (३०) अनेकजाति वैचित्र्य (जाति आदि वर्णन करवा योग्य वस्तु स्वरूपना आश्रय युक्त) (३१) आरोपिता विशेषता (वचनांतरनी अपेक्षाथी विशेषपणु जेमां स्थापन थयेल छे) (३२) सत्त्वप्रधानता (साहस करी संयुक्त) (३३) वर्णपदवाक्य विविक्तता (वर्णादिनु विछिन्नपणु) (३४) अव्युछित्ति. (विवक्षित अर्थनी सम्यक् प्रकारे सिद्धि ज्या सुधी न थाय त्यां सुधी अव्यवछिन्न वचननु प्रमेयपणुं) (३५) अखेदित्वं (श्रमरहित) भगवंतना बीजा वचनातिशयना ए पांत्रीशभेद—त्रीजो अपायापगमातिशय एटले उपद्रव निवारक चोथो पूजातिशय जेथी भगवान् त्रण लोकना पूजनीय छे आ बे अतिशयना विस्ताररूप चोत्रीश अतिशय छे ते आ प्रमाणे

(१) तीर्थंकर भगवानना देहनु रूप तथा सुगंध सर्वथी उत्कृष्ट तेमज रोग, परसेवो अने मलें करी रहित शरीर (२) श्वास निःश्वास पद्मकमलना जेवो सुगंधमय (३) रुधिर अने मास गायना दुध जेवुं उज्वल (४) आहार निहारनो विधि चर्मचक्षु वाळां देखे नहि आचार अतिशय जन्मथीज (१) एक योजन समवसरणनुं क्षेत्र छतां देवता, मनुष्य, तिर्यंचोनी कोडाकोडी पण ज्यां समाइशके अने भीड थाय नहि (२) वाणी

नापा अर्धमागधी, देवता, मनुष्य अने तिर्यंचोने पोतपोतानी नाषामां समजाइ जाय तेमज एक योजन सुधी सांजली शकाय (३) प्रनामंरूल मस्तकना पाठलना नागमां सूर्यना विबोनी साथे जाणे हरीफाइ करतु होयनी! पोतानी शोनायुक्त मनोहर नामंरूल शोने ठे (४) चारे दिशामा साडीपचवीश योजन सुधी उपद्रव रूप ज्वरादि रोग होय नहि (५) वे र (परस्पर विरोध होय नहि) (६) (इति) धान्यने उपद्रव कारी उ दरादि न होय (७) मारिमरीनो उपद्रव न होय (८) (अति वृष्टि) नि रंतर वरसाद नहि (९) (अवृष्टि) वरसादनो अनाव नहि (१०) दुर्निक्ष न होय (११) स्वचक्र परचक्रनो नय न होय आ अगीयार अतिशय ज्ञानावरणीय आदि चार घातिकर्मना क्षयथी उत्पन्न थाय ठे (१) आ काशमा धर्मप्रकाशक चक्र चाले ठे (२) आकाशमा चामर विंजाय ठे (३) आकाशमां पादपीठ सहित स्फटिकमय सिंहासन होय ठे (४) आ काशमां त्रण ठत्र (५) रत्न मय ध्वज फरके ठे (६) नगवान् ज्यारे चाले ठे त्यारे पगनी नीचे सुवर्ण कमल देवता रचे ठे (७) समवसरणमां रत्न, सु वर्ण अने रूपामय त्रणकोट मनोहर होय ठे (८) समवसरणमा प्रनुना चार मुख देखाय ठे (९) अशोक वृक्ष ठाया करे ठे (१०) काटा अधोमु ख थइ जाय ठे (११) वृक्षो एवी रीते नमी जाय ठे के जाणे नमस्कार करतां होय (१२) उच्चनादे डुडुनि नुवनव्यापक नाद ध्वनि करे ठे (१३) पवन सुखदायक वाय ठे (१४) पक्षी प्रदक्षिणा दे ठे (१५) सुगध मय पाणीनो वरसाद थाय ठे (१६) ढींचण प्रमाण पाच वर्णना फुलनो वरसाद थाय ठे (१७) केश दाढी मुठ अवस्थित रहे ठे (१८) चार प्र कारना देवता जघन्यथी जघन्य एक क्रोड नगवंतनी पासे रहे ठे (१९) ठ ए ऋतु सानुकूल शुनस्पर्श, रस, गध, रूप, शब्दयुक्त, अशुन नाश पामे ठे अने सुदर प्रगट थाय ठे आ उंगणीश अतिशय देवकृत ठे म तातर तथा वाचनातरमा कोइ कोइ अतिशय अन्यतरेहथी ठे पूर्वोक्त चार मूल अतिशय अने आठ महाप्रातिहार्य मली चार गुणमय विरा जमान अर्हंत नगवत परमेश्वर ठे तेज अढारे दोपरहित ठे तेथी अ ढारदोपनु वर्णन आ प्रमाणे –

श्लोक ॥ अतरायदानलान, वीर्यनोगोपनोगगा ॥ हासोरत्यरती नीति,

जुगुप्सा शोकएव च ॥२॥ कामोमिथ्यात्वमज्ञानं, निद्रा च विरतिस्तथा॥ रागोद्वेषश्च नो दोषा, स्तेषामष्टादशाऽप्यमी ॥ १ ॥ अर्थ (१) दान देवामां अंतराय,(२) लाभगत अंतराय,(३) वीर्यगत अंतराय (४) जे एक वखत भोगववामां आवे ते भोग, पुष्पमालाप्रमुख तद्गत अंतराय ते भोगांतराय (५) वारंवार भोगववामां आवे जेम के स्त्री, घर, कंकण, कुंडलादि तद्गत अंतराय ते उपभोगांतराय, (६) हास्य (७)(रति)पदार्थोपर प्रीति (८) अरति (रतिथी विपरीत) (९) सात प्रकारना भय (१०) जुगुप्सा–मलीन वस्तुने देखी नाक मचकोडवु (११) शोक–चित्तनुं विकलपणु (१२) काम–स्त्री, पुरुष, नपुसक ए त्रणेनो वेदविकार (१३) मिथ्यात्व–दर्शनमोह (१४)अज्ञान–मूढपणुं (१५) निद्रा (१६) अविरति–प्रत्याख्याननो अभाव (१७) राग–पूर्वसुखना साधनमां गृद्धिपणुं (१८) द्वेष–पूर्व दुःखोनुं स्मरण तेमज पूर्व दुःखमां अथवा तेना साधनमां क्रोध–आ अढार दूषण जेमां न होय ते अर्हत्, भगवंत, परमेश्वर छे. ए अढार दूषणोमांथी एक पण दूषण जेमां होय ते कदापि अर्हत्, भगवंत, परमेश्वर होइ शके नहि प्रथमना पांच विघ्नो जेमां लागी रहेल छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

प्रश्न–दानांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर दान दे छे ? तेमज लाभांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वरने शु लाभ प्राप्त थाय छे ? तथा वीर्यांतरायनो नाश थवाथी परमेश्वर शु शक्ति बतावे छे ? तथा भोगांतरायनो नाश थवाथी शुं परमेश्वर भोग करे छे ? अने उपभोगांतरायनो क्षय थवाथी शु परमेश्वर उपभोग करे छे ?

उत्तर–पूर्वोक्त पांच विघ्न क्षय थवाथी भगवंतमां पाच शक्तिउ प्रगट थाय छे जेम निर्मल चक्षुउनी आंखमां आवेलां पडलादि नाश पामवाथी जोवानी शक्ति प्रगट थाय छे तेम– मरजी होय तो देखे अथवा न देखे परंतु देखवानी शक्ति विद्यमान छे, तेवीज रीते अर्हत भगवंतने पांच शक्तिउ प्रगट थाय छे, पछी मरजी होयतो दानादि करे अथवा न करे परंतु शक्ति विद्यमान छे, जे पूर्वोक्त पांच शक्तिउथी रहित छे ते परमेश्वर केवी रीते होइ शके ?

६ हास्य–हसवु जे आवेछे ते अपूर्व वस्तु देखवाथी अथवा अपूर्व

नो उद्धार करवानी मरजी होवाथी इच्छावंत (१०) चोत्रीश अतिशयरूप लक्ष्मीए विराजमान होवाथी श्रीमंत (११) धर्मवंत (१२) अनेक कोटि देवोथी सेव्यमान होवाथी ऐश्वर्यवंत आ बार अर्थ युक्त ते जगवान्(११) जगत्ना परमेश्वर तेथी जगत्प्रञ्जु (१२) तरीए संसारसमुद्र जेनाथी ते तीर्थ, प्रवचनना आधार, चार प्रकारना संघ अथवा प्रथम गणधर तेम ने स्थापन करवानो स्वजाव होवाथी तीर्थंकर (१३) रागादिने जीतनारा जिन (केवली) तेना जे ईश्वर ते जिनेश्वर (१४) स्यात् अव्यय अनेकात वाचक छे तेथी वस्तुउने अनेकांत पणें, अनेक स्वरूपथी केहेवानु शील छे जेमने ते स्याद्वादि (१५) जय सात प्रकारना छे (१) मनुष्यने स्वजातिथी अर्थात् एक मनुष्यने बीजा मनुष्यथी जय ते इहलोकजय (२) विजातीय तिर्यंच देवताथी जे जय उत्पन्न थाय ते परलोकजय (३) धनादिना कारणथी चोर प्रमुखथी जे जय थाय ते आदानजय (४) बाहारना निमित्त विना घरादिनेविषे बेसनारने रात्रिआदिने समये जे जय उत्पन्न थाय ते अकस्मात् जय (५) हु निर्धन छुं छुकालमा केवी रीते जीवितव्य धारण करीश एवो जे जय ते आजीविका जय (६) मरणजय (७) आ प्रमाणे करीश तो मारी मोटी अपकीर्ति थशे एम धारी अयशना जयथी प्रवर्त्ते नहीं ते अश्लाघाजय ए सात प्रकारना जयनो जे प्रतिपक्षी ते अजय ते अजय शु वस्तु छे? विशिष्ट आत्मानु स्वस्थपणुं, नि श्रेयस धर्मनिवधन जूमिकाजूत ते गुणनी प्रकर्षताथी अचिंत्य शक्ति युक्त होवाथी सर्व प्रकारें परहितकारी होय, एवु जे अजय आपे ते अजयद (१६) सर्व प्राणीउं प्रत्ये जे हित चाहे ते सर्वा' (१७) सर्व जे जाणे ते सर्वज्ञ (१८) सर्व जे देखे ते सर्वदर्शी (१९) सर्व प्रकारें कर्म आवरणने दूर करवाथी चेतनस्वरूप प्रगट थयु छे ते "केवल" केवलज्ञान छे जेने ते केवली (२०) देवताउना जे अधिपति ते देवाधिदेव (२१) जिनप्रणीत धर्मनी प्राप्ति जे करावे ते बोधिद (२२) पुरुषोमाहे उत्तम सहज तथा जव्यत्वादि जव करी श्रेष्ठ ते पुरुषोत्तम (२३) गया छे राग रूप जेमाथी ते वीतराग (२४) हितोपदेशक होवाथी आप्त ए रीते चोवीशनाम तथा बीजां हजारो नाम परमेश्वरना छे

पूर्वोक्त परमेश्वरनु स्वरूप श्रीहेमचन्द्राचार्यकृत ग्रथोने अनुसार तथा

समवायांग राजप्रश्नीय प्रमुख शास्त्रानुसार लखेल ठे अन्यथा जिनसह स्र नामना ग्रंथमां एक हजार आठनाम अन्वयार्थ सहित वर्णवेल ठे. सर्वनाम व्युत्पत्ति सहित अर्हंत परमेश्वरनां ठे " अर्हंत पद " अनादि अनंत ठे परंतु ते पदना धारण करनारा जीव अनंत अतीत कालमां थई गया कारण के एकेक उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणि कालमा भारत वर्षमां चोविश चोवीश जीव अर्हंत पदने धारण करी सिद्ध पदने प्राप्त थयेला ठे

आ वर्त्तमान अवसर्प्पिणिथी आगलनी उत्सर्प्पिणिमां जे जीवो अर्हंत पदने धारण करनारा थई गया तेमनां नाम. (१) केवल ज्ञानी (२) निर्वाणी (३) सागर (४) महायश (५) विमलनाथ (६(सर्वानुभूति (७) श्रीधर (८) दत्त (ए) दामोदर (१०) सुतेज (११) स्वामी (१२) मुनिसुव्रत (१३) सुमति (१४) शिवगति, (१५) अस्ताग (१६) नेमीश्वर (१७) अनिल (१८) यशोधर (१ए) कृतार्थ (२०) जिनेश्वर (२१) शुद्धमति (२२) शिवकर (२३) स्यंदन (२४) संप्रति

वर्तमान चोवीश अर्हंतनां नाम. (१) श्रीरुषभनाथ (२) श्री अजित नाथ (३) श्री संभवनाथ (४) श्री अभिनंदन नाथ (५) श्री सुमतिनाथ (६) श्री पद्मप्रभ (७) श्रीसुपार्श्वनाथ (८) श्री चन्द्रप्रभ (ए) श्रीसुविधिनाथ बीजुं नाम पुष्पदंत (१०) श्रीशीतलनाथ (११) श्रीश्रेयांसनाथ (१२) श्री वासुपूज्य स्वामी (१३) श्री विमल नाथ (१४) श्री अनंतनाथ (१५) श्रीधर्मनाथ (१६) श्रीशांतिनाथ (१७) श्री कुंथुनाथ (१८) श्री अरनाथ (१ए) श्रीमल्लिनाथ (२०) श्री मुनिसुव्रत स्वामी (२१) श्री नमिनाथ(२२) श्रीअरिष्टनेमि (२३) श्री पार्श्वनाथ (२४) श्री महावीर

वर्त्तमान चोवीश तीर्थंकर भगवंतनां नाम शा शा कारणथी थयां ते तथा नामोना सामान्यार्थ जे सर्व तीर्थंकरोमां पामी शकाय तथा विशेषार्थ जे ते एकज तीर्थंकरना नामने निमित्ते ठे ते लखीयें ठीयें

"रुषति गछति परमपदमिति रुषभ." जाय जे परमपदने ते रुषभ आ अर्थ सर्व तीर्थंकरमां व्यापक ठे तथा " उर्वोर्वृषभलांठनमभूद्भगवतो जनन्या चतुर्दशानां स्वप्नानामादौ वृषभोदृष्ट. तेन रुषभ " भगवानना बने साथलोमां बलदनु लांठन हतु अथवा भगवंतनी माता मरुदेवीए चौद स्वप्ननी आदिमां बलदनुं स्वप्न दीठुं ते कारणथी रुषभ एव नाम दीध-

एवी रीते सर्व तीर्थंकरनो प्रथम सामान्यार्थ अने पछी विशेषार्थ जाणवो

२ "परिसहादिभिर्नजित इत्यजित " बावीश परिसह आदि शब्दथी चार कषाय, आठकर्म, चारप्रकारना उपसर्ग इत्यादिथी न जीताय, ते अजित, तथा "यद्वा गर्भस्थेऽस्मिन् द्यूते राज्ञा जननी न जितेत्यजित " ज्यारे भगवान् गर्भमां हता त्यारे जुगार खेलतां राजा राणीने न जीती शक्या ते हेतुथी अजित नाम दीधु

३ "शं सुखं भवत्यस्मिन् स्तुते सशंभव " शं नाम सुखवाचक छे सुख थाय जेनी स्तुति करतां ते संभव " यद्वा गर्भगतेऽप्यस्मिन्नभ्यधिकसस्य संभवात् सभवोपि " अथवा ज्यारे भगवान् गर्भमा हता त्यारे पृथ्वीमां अधिक धान्यनो संभव होवाथी संभव

४ " अभिनंद्यते देवेंद्रादिभिरित्यभिनंदन." जेनी स्तुति करायेली छे देवेन्द्रादिथी ते अभिनदन " यद्वा गर्भात् प्रभृत्येवाभीक्ष्ण शक्रेणाभिनद नादभिनंदन " अथवा जे दिवसे भगवान् गर्भमां आव्या ते दिवसथी लइने वारवार शक्रेंद्रे स्तुति करी तेथी अभिनंदन,

५ "शोभना मतिरस्येति सुमति " भली छे बुद्धि ते जेनी ते सुमति,"यद्वा गर्भस्थे जनन्या सुनिश्चिता मतिरभूदिति सुमति."अथवा भगवान् गर्भमां आव्या त्यारथी मातानी वहुज निर्मल निश्चित वुद्धि थइ ते कारणथी सुमति

६ " निष्पकतामगीकृत्य पद्मस्येव प्रभाऽस्य पद्मप्रभ. " विषयतृष्णा कर्मकलंकरूप कीचडथी रहित पद्मनी पेठे प्रभा छे जेनी ते पद्मप्रभ " यद्वा पद्मशयनदोहदो मातुर्देवतया पूरितइति पद्मवर्णश्च भगवानिति पद्मप्रभ " अथवा पद्मशयन दोहलो माताने उत्पन्न थयो ते देवतायें पूर्ण कर्यो ते कारणथी प्रद्मप्रभ अथवा पद्मकमल समान भगवानना शरीरनो वर्ण हतो ते कारणथी पद्मप्रभ

७ "शोभनौ पार्श्वावस्य सुपार्श्व." शोभनिक छे बने पासा जेनां ते सुपार्श्व "यद्वा गर्भस्थे भगवति जनन्यपि सुपार्श्वाऽभूदिति सुपार्श्व " अथवा भगवान् गर्भमा रह्या त्यारथी माताना बने पासा वहुज सुदर थइगयांतेथीसुपार्श्व

८ " चद्रस्येव प्रभा ज्योत्स्ना सौम्यलेश्याविशेषाऽस्य चद्रप्रभ " चद्रमानी पेठे सौम्य लेश्या छे जेनी ते चद्रप्रभ, तथा " गर्भस्थे देव्या चद्रपानदोहदोऽभूत् इति चद्रप्रभ " गर्भमा ज्यारे भगवान् हता त्यारे

माताने चंद्रमा पीवानो दोहद उत्पन्न थयो ते कारणथी चंद्रप्रज.

९ " शोजनो विधिर्विधानमस्य सुविधि."रूडो छे विधि ते जेनो तेसुविधि तथा "यद्वा गर्जस्थे जगवति जनन्यप्येवमिति सुविधिः" जगवान् गर्जमां रेहेवाथी माता पण शोजनिक विधिवाली थइ ते कारणथी सुविधि

१० " सकलसत्त्वसंतापहरणात् शीतलः "८ सर्वजीवोनो संताप दूर करवाथी शीतल तथा " गर्जस्थे जगवति पितुः पूर्वोत्पन्नाऽचिकित्स्यपित्तदाहोजननीकरस्पर्शाडुपशांत इति शीतल. " जगवंतना पिताना शरीरमां पित्तदाहनो रोग हतो तेनी वैद्योथी शांति न थई परंतु जगवान् माताना गर्जमां आववाथी जगवंतनी माताना हाथस्पर्शथीज राजानुं शरीर शीतल थई गयु ते कारणथी शीतल

११ " श्रेयान् समस्तजुवनस्यैव हितकर. प्राकृतशैल्या छांदसत्वाच्च श्रेयांसइत्युच्यते" सर्वजगतनु जे हित करे ते श्रेयांस"यद्वा गर्जस्थेऽस्मिन् केनापि नाक्रांतपूर्वी देवताधिष्टितशय्या जनन्या आक्रांतेति श्रेयोजातमिति श्रेयांस. " ज्यारे जगवान् गर्जमां हता त्यारे जगवानना पिताना घरमां देवताऽधिष्टित शय्या हती ते उपर जे वेसता तेने असमाधि उत्पन्न थती जगवाननी माताने ते शय्यापर सुवानो दोहद थयो,माता ते शय्यापर सुती, देवताये उपद्रव न कर्यो पण शांत थयो ते कारणथी श्रेयांस.

१२ " तत्र वसूनां पूज्यः वसुपूज्य. वसवोदेवा " देवताउंथी जे पूजनीय ते वसुपूज्य " वसुपूज्यनृपतेरपत्यं वासुपूज्यः " वसुपूज्य नामना राजाना जे पुत्र ते वासुपूज्य " वासवो देवराया तस्स गप्नगयस्स अजिक्खण अजिक्खण जणणीए पूय करेति तेण वासुपुद्योत्ति अहवा वसूणि रयणाणि वासवो वेसमणो सो गप्नगए अजिक्खणं अजिक्खणं तं रायकुलं रयणेहिं पूरेयति वासुपुद्योत्ति अर्थ.–वासव नाम इन्द्रनुं छे. जगवान् ज्यारे गर्जमां आव्या त्यारे वारंवार इंद्रे जगवाननी मातानी पूजा करी ते कारणथी वासुपूज्य अथवा वसु एटले रत्न अने वासव नाम वैश्रमणनुं छे जगवान् ज्यारे गर्जमां हता त्यारे वैश्रमणे जगवानना कुलमां वारंवार रत्नोनी पूर्णता करी ते हेतुथी वासुपूज्य

१३ " विगतो मलोऽस्य विमल' विमलज्ञानादियोगाद्वा विमलः " दूर थया छे आठ कर्मरुप मल जेना ते विमल, अथवा निर्मलज्ञानादि यो

गे करी विमल, " यद्वा गर्भस्थे मातुर्मतिस्तनुश्च विमला जातेति विम ल· " तथा भगवान् ज्यारे गर्भमां हता त्यारे मातानी बुद्धि तथा शरीर निर्मल थई गयां ते कारणथी विमल

१४ " न विद्यते गुणानामतोऽस्य अनंत· अनतकर्मांशजयाद्वाऽनंत अ नंतानि वा ज्ञानादीनि यस्येत्यनंत " जेना गुणनो अत न जाणी शकिये ते अनंत, अथवा अनत कर्मांश जीतवाथी अनंत अथवा अनत छे ज्ञाना दि गुण जेने ते अनंत, " रयण विचित्त रयण खविय अणत अतिमह पमाण, दामं सुमिणे जणणीये, दिठ्ठ तउ अणतोत्ति " विचित्ररत्ने जडि त अति मोटी दाममाला मातायें स्वप्नमा दीठी ते कारणथी अनत

१५ " दुर्गतो पतन्तं सत्वं सघातं धारयतीति धर्म्म " दुर्गतिमां पड ता जीवोना समूहने जे धारण करे ते धर्म, तथा " गर्भस्थे जननी दा नादिधर्म्मपरा जातेति धर्म· " परमेश्वर गर्भमा आववाथी माता दाना दि धर्ममां तत्पर थई तेथी धर्म

१६ " शांतियोगात्तदात्मकत्वात्तत्कर्तृकत्वाद्वाय शांति " शांतिना यो गथी अथवा शांतिरूप होवाथी अथवा शाति करवाथी शांति, तथा "गर्भ स्थे पूर्वोत्पन्ना शिव शातिरभूदिति शांति·" तथा भगवान् गर्भमां उत्प न्न थवाथी पूर्वे जे अशिव उत्पन्न थयु हतु ते शांत थई गयु तेथी शांति

१७ " कु पृथ्वी तस्या स्थितिवानिति कुंथु पृषोदरादित्वात् " कु नाम पृथ्वीनु छे ते पृथ्वीमा जे स्थित थया ते कुंथु तथा " गर्भस्थे भग वति जननी रत्नाना कुंथु राशि दृष्टवतीति कुंथु " भगवान् गर्भमां आ व्या पछी मातायें रत्नमय कुंथुर्ओनो राशि दीठो ते कारणथी कुंथु

१८ " सर्वोत्तममहासत्त्व·, कुले यउपजायते ॥ तस्याभिवृद्ध्ये वृद्धैरसा वरउदाहृत " ॥ १ ॥ इतिवचनादर सर्वेथी उत्तम महासात्विक कुलमा जे उत्पन्न थाय तथा ते कुलनी वृद्धिकारक जे होय तेने वृद्धपुरुष प्रधान अर कहेछे तथा " गर्भस्थे भगवति जनन्या स्वप्ने सर्वरत्नमयोऽरोदृष्ट इत्यपरः " तथा भगवान् गर्भमा हता त्यारे मातायें सर्वरत्नमय अर स्व प्नमा दीठो ते कारणथी अर

१९ " परिसहादिमल्लजयनान्निरुक्तान् मल्लि " परिसहादि मल्लोने जीतवाथी मल्लि तथा " गर्भस्थे भगवति मातु सुरभिकुसुममाल्यशय

नीयदोहदो देवतया पूरित इति मल्लि. " तथा जगवान् गर्जमां आव्या पठी माताने सुगधी फुलोनी मालावाली शय्या उपर सुवानो दोहद उत्पन्न थयो ते देवताये पूर्ण कर्यो ते कारणथी मल्लि

२० " मन्यते जगतस्त्रिकालावस्थामिति मुनि. शोजनानि व्रतान्यस्येति सुव्रतः मुनिश्चासौ सुव्रतश्च मुनिसुव्रत " त्रणे कालमा जे जगतने माने ते मुनि, जलां ठे व्रत जेनां ते सुव्रत आ वने पद एकत्र करवाथी मुनिसुव्रत, तथा " गर्जस्थे जननी मुनिवत् सुव्रता जातेति मुनिसुव्रतः ' तथा जगवत गर्जमां रह्यां थकां माता रूडा व्रतवाली थइ तेथी मुनिसुव्रत

२१ " परीसहोपसर्गादीनां नामनात् नमेस्तुवेति विकल्पेनोपांत्यस्येकाराजावपक्षे नमिः " परिसह उपसर्गोने नमाववाथी नमि, तथा " यद्वा गर्जस्थे जगवति परचक्रनृपैरपि प्रणतिः कृतेति नमि· " जगवान् गर्जमां आववाथी वैरीराजाउयें पण नमस्कार कर्यो ते कारणथी नमि

२२ " धर्मचक्रस्य नेमिवन्नेमि. " धर्मचक्रनी धारासमान ते नेमि तथा "गप्नगए तस्स मायाए, रिठरयणा मउमहति महालउ नेमि ॥ उप्पयमाणो सुमिणे, दिठोत्ति तेणसेरिठनेमित्ति नामं कयति " तथा जगवान् गर्जमां आव्यापठी माताये अरिष्ट रत्नमय मोटो नेमि (चक्रधारा) आकाशमां उत्पन्न थयो एम स्वप्नमां दीठो ते कारणथी अरिष्टनेमि.

२३ " स्पृशति ज्ञानेन सर्वजावानिति पार्श्वः" सर्वपदार्थोने ज्ञानें करी स्पर्शे जाणे ते पार्श्व तथा "गर्जस्थे जनन्या निशि शयनीयस्थयांऽधकारे सर्प्पो दृष्टइति गर्जानुजावोयमिति पश्यतीति निरुक्तात् पार्श्व. पार्श्वोऽस्यवैयावृत्त्यकरो यक्षस्तस्य नाथः पार्श्वनाथ जीमो जीमसेन इति न्यायाद्वा पार्श्व. ' तथा जगवान् गर्जमां रह्या थका मातायें रात्रिमां शय्या उपर बेठां थकां अंधारामां सर्प जातो दीठो,माता पिताये विचार्युं के आ गर्जनो प्रजाव ठे अथवा पार्श्वनामा वैयावच्च करनारा देवताना जे नाथ ते पार्श्वनाथ.

२४ "विशेषेण ईरयति प्रेरयति कर्माणीति वीर. " विशेषेकरी प्रेरे जे कर्मोने ते वीर तथा अत्यंत उग्र परीसह उपसर्ग सहन करवाथी देवताउयें श्रमण जगवान् महावीर एवुं तथा माता पितायें धनधान्यादिनी वृद्धि थवाथी वर्धमान एवुं नाम दीधुं.

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी मातानां नाम लखीयें छीयें

(१) मरुद्भिर्दीव्यते स्तूयते मरुदेवा पृषोदरादित्वात् तल्लोप· मुरदेव्य पि स्यात् (देवताउयें करी छे स्तवना जेनी ते मरुदेवी मुरदेवी एम पण नाम छे) (२) विजयते विजया (जयवंतविजया) (३) सह अनेन जि तारिस्वामिना वर्त्तते सेना (जितारि राजानी साथ जे वर्ते ते सेना) (४) सिद्धोर्थोऽस्या सिद्धार्था (सिद्ध थया छे अर्थ जेना ते सिद्धार्था) (५) मगलहेतुत्वात् मंगला (मंगलहेतुभूत होवाथी मंगला) (६) शो भना सीमा मर्यादाऽस्या सुसीमा (भली छे मर्यादा जेनी ते सुसीमा) (७) स्थेम्ना पृथ्वीव पृथ्वी (स्थिर छे पृथ्वीना जेवी ते पृथ्वी) (८) लक्ष्मीः शोभाऽस्त्यस्या· लक्ष्मणा (लक्ष्मीनी पेठे शोभा छे जेनी ते लक्ष्मणा) (९) धर्मकृत्येषु रमते रामा (धर्मकृत्यमां जे रमे ते रामा) (१०) नंदति सु पात्रेण नंदा (सुपात्रदान देवाथी वृद्धिमती थाय ते नंदा) (११) वेवेष्टि गुणैर्जगदिति विष्णु. (गुणेंकरी जगतने वींटाले ते विष्णु) (१२) जयति सतीत्वेन जया (उत्कृष्टपणे वर्ते छे सतीपणु जेनु ते जया) (१३) श्यामव र्णत्वात् श्यामा (श्यामवर्ण होवाथी श्यामा) (१४) शोभन यशोऽस्या सुयशा (भलु छे यश जेनुं ते सुयशा) (१५) शोभनं व्रतमस्या सुव्रता पतिव्रतात्वात् (भला छे व्रत जेनां ते सुव्रता पतिव्रता होवाथी सुव्रता) (१६) न चिरयति धर्मकार्येष्वऽचिरा (धर्मकार्योमां जे ढील करती नथी ते अचिरा) (१७) श्रीरिव श्रीदेवीव देवी प्रभाऽस्त्यस्या श्री (लक्ष्मीनी पेठे प्रभा छे जेनी ते श्री) (१८) देवीनी पेठे प्रभा छे जेनी ते देवी (१९) प्रभावती प्रभावती (२०) पद्मइव पद्मावती (पद्मनी जेवी ते पद्मा- वती) (२१) धर्मबीजमिति वप्रा (२२) शिवहेतुत्वात् शिवा (२३) मनो ज्ञत्वात् वामा पापकार्येषु प्रातिकूल्यात् वामा (मनोज्ञ होवाथी वामा) (पापकार्योथी प्रतिकूल होवाथी वामा) (२४) त्रीणि ज्ञानदर्शनचारि त्राणि शलयति प्राप्नोतीति त्रिशला (ज्ञानदर्शन चारित्र ए त्रणेने जे प्राप्त करे छे ते त्रिशला)

ए प्रमाणे तीर्थंकरोनी माताना नाम कह्यां. अथवा सुगमताने माटे चोवीश तीर्थंकरोनी साथे बावन बोलनो संबध छे तेनु स्वरूप यन्त्रबध ल खीयें छीयें बावन बोलनां नाम आ प्रमाणे·–

बावन बोलनां नाम कहेछे.

१ श्रीतीर्थंकर नाम.
२ च्यवन तिथि.
३ कया विमानथी आव्या
४ कइ नगरीमां जन्म थयो
५ जन्मतिथि.
६ पिताउनां नाम
७ माताउनां नाम
८ कया नक्षत्रमां जन्म्या.
९ जन्मराशि
१० लांछननां नाम
११ शरीरनी उचाईनुं प्रमाण
१२ आयुषना वर्षनुं प्रमाण
१३ शरीरनो वर्ण
१४ पदवी
१५ परणेला के कुंवारा ?
१६ केटला जणोनी साथे दीक्षा लीधी
१७ दीक्षा कइ नगरीमां लीधी.
१८ दीक्षाने दिवसे केटलु तप
१९ प्रथम पारणे शु आहार मळ्यो
२० प्रथम पारणानु घर
२१ केटला दिवसनुं पारणु
२२ दीक्षानी तिथि.
२३ छद्मस्थपणाना कालनुं प्रमाण
२४ कइनगरीमां केवलज्ञान प्राप्तथयुं
२५ ज्ञानोत्पत्तिने दिने कयु तपकर्युं
२६ कया वृक्षनी नीचे दीक्षा लीधी
२७ कइ तिथियें ज्ञान उत्पन्न थयु.
२८ गणधरोनी संख्या.
२९ साधुउनी संख्या
३० साध्वीयोनी सख्या
३१ वैक्रियलब्धिवंतोनी संख्या
३२ अवधिज्ञानियोनी संख्या
३३ केवलज्ञानियोनी संख्या
३४ मनःपर्यवज्ञानियोनी संख्या
३५ चौदपूर्वधारियोनी संख्या.
३६ वादियोनी संख्या
३७ श्रावकोनी सख्या
३८ श्राविकाउनी संख्या
३९ शासनना यक्षोनां नाम
४० शासननी यक्षिणीयोनां नाम.
४१ प्रथम गणधरनुं नाम
४२ प्रथम आर्यानु नाम.
४३ मोक्ष थवानुं स्थान
४४ मोक्ष पहोचवानी तिथि.
४५ मोक्ष दिनें तप
४६ मोक्ष जवानु आसन
४७ परस्पर अंतरनु मान
४८ गण नाम.
४९ योनि नाम
५० मोक्ष परिवार.
५१ सम्यक्त्व पाम्यापछीमहोटो भव.
५२ कया कुलमां उत्पन्न थया.
५३ गर्भवासना कालनुं प्रमाण.

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम.	१ श्रीऋषभ देव	२ श्रीअजितनाथ	३ श्रीसंभवनाथ.
२	च्यवन तिथि.	अषाढवदी ४	वैशाख शुदि १३	फाल्गुन शुदि ८
३	विमान नाम	सर्वार्थ सिद्धि	विजय विमान	उपरला ग्रैवेयक
४	जन्म नगरी.	विनीता भूमि	अयोध्या	सावत्थी
५	जन्म तिथि.	चैत्रवदी ८	माघशुदी ८	महाशुदी १४
६	पिताना नाम	नाभिकुलकर	जितशत्रु	जितारि
७	माताना नाम	मरुदेवी	विजया	सेना
८	जन्म नक्षत्र	उत्तराषाढा	रोहिणी	मृगशिर
९	जन्म राशि	धन	वृष	मिथुन
१०	लांछन नाम	वृषभ	हस्ती	अश्व
११	शरीरनु मान	५००) धनुष	४५०) धनुष	४००) धनुष
१२	आयुर्मान.	८४) लक्षपूर्व	७२) लक्षपूर्व	६०) लक्षपूर्व
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्णवर्ण
१४	पदवी राजनी	राज पदवी	राज पदवी	राज पदवी
१५	पाणिग्रहण	विवाह थयो	विवाह थयो	विवाह थयो
१६	केटला साथे दीक्षा	४०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षा नगरी	विनीता.	अयोध्या	सावत्थी
१८	दीक्षा तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	इक्षु रस	परमान्नक्षीर	परमान्नक्षीर
२०	पारणाना स्थान	श्रेयासने घेर	ब्रह्मदत्तने घेर	सुरेंद्रदत्तने घेर
२१	केटलादिवसनापा०	एक वर्ष पछी	बे दिवसपछी	बे दिवसपछी
२२	दीक्षा तिथि	चैत्रवदि ८	महावदी ९	मार्गशिरशु० १५
२३	छद्मस्थ काल	१०००) वर्ष	१२) वर्ष	१४) वर्ष
२४	ज्ञान नगरी	पुरिमताल	अयोध्या	सावत्थी
२५	ज्ञान तप	त्रण उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षा वृक्ष	वट वृक्ष	शाल वृक्ष	प्रियाल वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	फाल्गुन वदि ११	पोषवदि ११	कार्त्तिकवदि ११

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

२८	गणधरसंख्या.	८४)	९५)	१०२)
२९	साधुउंनी संख्या	८४०००)	१०००००)	२०००००)
३०	साधवीयोनीसंख्या.	३०००००)	३३००००)	३३६०००)
३१	वैक्रियलब्धिवंत	२०६००)	२०४००)	१९८००)
३२	वादियोनी संख्या	१२६५०)	१२४००)	१२०००)
३३	अवधिज्ञानी संख्या	९०००)	९४००)	९६००)
३४	केवली संख्या	२००००)	२२०००)	१५०००)
३५	मनःपर्यवसंख्या	१२७५०)	१२५५०)	१२१५०)
३६	चौदपूर्वी संख्या.	४७५०)	३७२०)	२१५०)
३७	श्रावक संख्या	३५००००)	२९८०००)	२९३०००)
३८	श्राविका संख्या	५५४०००)	५४५०००)	६३६०००)
३९	शासनयक्षोनां नाम.	गोमुखयक्ष	महायक्ष	त्रिमुखयक्ष
४०	शासननी यक्षिणी	चक्रेश्वरी	अजितबाला	दुरितारि
४१	प्रथम गणधर नाम.	पुंडरीक.	सिंहसेन	चारु
४२	प्रथम आर्या नाम.	ब्राह्मी	फाल्गु	श्यामा
४३	मोक्षस्थान.	अष्टपद	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	माघ वदि १३	चैत्र शुदि ५	चैत्रशुदि ५
४५	मोक्षसंलेषणा	७ उपवास	एक मास	एकमास
४६	मोक्षआसन.	पद्मासन	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७	अंतर मान	५०लाखकोटीसा	३०लाखकोटीसा	१०लाखकोटीसा
४८	गण नाम	मानवगण	मानवगण	देवगण
४९	योनि नाम	नकुलयोनि	सर्प्पयोनि	सर्प्पयोनि
५०	मोक्षपरिवार	१००००)	१०००)	१०००)
५१	भवसंख्या	तेर भव कर्या.	त्रणभवकर्या	त्रण भव कर्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	नवमासचारदि०	८ मासपच्चीशदि.	नवमास८ दिवस

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्री तीर्थंकरनाम	४ श्रीअभिनंदन	५ श्रीसुमतिनाथ	६ श्री पद्मप्रभ
२	च्यवनतिथि	वैशाख शुदि ४	श्रावणशुदि २	माघवदि ६
३	विमान नाम	जयत विमान	जयत विमान	उपरिमग्रैवेयक
४	जन्मनगरी	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
५	जन्मतिथि	माघशुदि २	वैशाख शुदि ८	कार्तिकवदि १२
६	पिताना नाम	संवर राजा	मेघराजा	श्रीधरराजा
७	मातानां नाम	सिद्धार्था	मंगला	सुसीमा
८	जन्मनक्षत्र	पुनर्वसु	मघा	चित्रा
९	जन्म राशि	मिथुन	सिंह	कन्या
१०	लांछननां नाम	वांदरानु	क्रौंच पक्षीनुं	पद्मकमलनु
११	शरीर मान	३५०) धनुष	३००) धनुष	२५०) धनुष
१२	आयुनु प्रमाण	५०) लाखपूर्व	४०) लाख पूर्व	३०) लाखपूर्व
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	रक्तवर्ण
१४	पदवी राजानी	राजा	राजा	राजा
१५	पाणि ग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
१८	दीक्षातप	बे उपवास	नित्यभक्त	एक उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर	क्षीर	क्षीर
२०	पारणानां स्थान	इन्द्रदत्तने घेर	पद्मने घेर	सोमदेवने घेर
२१	केटला दिवसनापा०	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)	बे दिवस (२)
२२	दीक्षा तिथि	माघशुदि १२	वैशाखशुदि ९	कार्तिकवदि १३
२३	छद्मस्थ काल	अढार वर्ष	वीश वर्ष	छमास
२४	ज्ञाननगरी	अयोध्या	अयोध्या	कौसुंबी
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	चोथभक्त
२६	दीक्षावृक्ष	प्रियंगुवृक्ष	साल वृक्ष	छत्रवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषवदि १४	चैत्रशुदि ११	चैत्रशुदि १५

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८ गणधरसंख्या	११६)	१००)	१०७)
२९ साधुओनीसंख्या	३०००००)	३२००००)	३३००००)
३० साधवीयोनी संख्या	६३००००)	५३००००)	४२००००)
३१ वैक्रिय लब्धिवंत.	१९०००)	१८४००)	१६१०८)
३२ वादियोनी संख्या.	११०००)	१०४००)	९६००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	९८००)	११०००)	१००००)
३४ केवली संख्या	१४०००)	१३०००)	१२०००)
३५ मन पर्यव सख्या.	११६५०)	१०४५०)	१०३००)
३६ चौद पूर्वीसंख्या	१५००)	२४००)	२३००)
३७ श्रावकसंख्या.	२८८०००)	२८१०००)	२३६०००)
३८ श्राविकासंख्या	५२७०००)	५१६०००)	५०५०००)
३९ शासन यक्षोनांनाम	नायकयक्ष	तुंबरुयक्ष	कुसमयक्ष
४० शासन यक्षिणीनांना०	कालिका	महाकाली	श्यामा
४१ प्रथम गणधरनाम	वज्रनाभ	चरम	प्रद्योतन
४२ प्रथम आर्यानाम.	अजिता	काश्यपी	रति
४३ मोक्ष स्थान	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	वैशाखशुदि ८	चैत्रशुदि ९	मागशिरवदि ११
४५ मोक्षसंलेपणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग	कायोत्सर्ग
४७ अंतरमान.	९लाखकोडीसा	९०हजारकोडीसा	९हजारकोडीसा
४८ गणनाम.	देवगण	राक्षसगण	राक्षसगण
४९ योनिनाम.	छागयोनि	मूपकयोनि	महिषयोनि
५० मोक्षपरिवार.	१०००)	१०००)	३०८)
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२ कुलगोत्रनाम	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकालमान	८मास२८दिवस	नवमास६दिवस	नवमास६दि०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	७श्रीसुपार्श्वनाथ	८श्रीचंद्रप्रज्ञ	एश्रीसुविधिनाथ
२	च्यवन तिथि	जाद्रवावदि ८	चैत्रवदि ५	फागण वदि ए
३	विमान नाम	मध्यिमग्रैवेयक	विजयत	आनतदेवलोक
४	जन्मनगरी	वणारसी नगरी	चद्रपुरीनगरी	काकदीनगरी
५	जन्मतिथि	ज्येष्ठशुदि १२	पोषवदि १२	मागशर वदि ५
६	पितानां नाम	प्रतिष्ठराजा	महासेन राजा	सुग्रीव राजा
७	मातानां नाम	पृथिवीमाता	लक्ष्मणामाता	रामाराणीमाता
८	जन्म नक्षत्र	विशाखा नक्षत्र	अनुराधानक्षत्र	मूल नक्षत्र
ए	जन्म राशि	तुलराशि	वृश्चिकराशि	धन राशि
१०	लाठन नाम	साथीयानुलांठन	चद्रनुं लाठन	मगरमछनु लां०
११	शरीरनु प्रमाण	२००) धनुष	१५०) धनुष	१००) धनुष
१२	आयुनुप्रमाण	२०) लाखपूर्व	१०) लाखपूर्व	२) लाखपूर्व
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	श्वेतवर्ण	श्वेतवर्ण
१४	पदवी राजानी	राजा	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथे दीक्षा	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	वणारसी नगरी	चद्रपुरी नगरी	काकंदी नगरी
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१ए	प्रथमपारणानोआ०	क्षीरनु जोजन	क्षीरनु जोजन	क्षीरनु जोजन
२०	पारणाना स्थान	महेन्द्रने घेर	सोमदत्तने घेर	पुष्पने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि	ज्येष्ठशुदि १३	पोषवदि १३	मागशिर वदि ६
२३	छद्मस्थकाल	नवमास रह्या	त्रण मास रह्या	चारमास रह्या
२४	ज्ञान नगरी	वणारसीनगरी	चद्रपुरी नगरी	काकदी नगरी
२५	ज्ञानतप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	शिरीषवृक्ष	नागवृक्ष	शाली वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	फागण वदि ६	फागणवदि ७	कार्तिक शुदि ३

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८ गणधर संख्या.	८५) गणधर	९३) गणधर	८८) गणधर
२९ साधुओनीसंख्या.	३०००००)	२५००००)	२०००००)
३० साधवियोनी संख्या.	४३००००)	३८००००)	१२००००)
३१ वैक्रियलब्धिवंत	१५३००)	१४०००)	१३०००)
३२ वादियोनीसंख्या	८४००)	७६००)	६०००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या.	९०००)	८०००)	८४००)
३४ केवली संख्या	११०००)	१००००)	७५००)
३५ मन.पर्यवसंख्या.	९१५०)	८०००)	७५००)
३६ चौदपूर्वीसंख्या.	२०३०)	२०००)	१५००)
३७ श्रावक संख्या	२५७०००)	२५००००)	२२९०००)
३८ श्राविकासंख्या.	४९३०००)	४७९०००)	४७१०००)
३९ शासनयक्षनांनाम.	मातंगयक्ष	विजय यक्ष	अजिता यक्ष
४० शासनयक्षणीनांनाम	शांता	भृकुटी	सुतारिका
४१ प्रथम गणधर नाम	विदर्भ	दिन्न	वराहक
४२ प्रथमआर्या नाम.	सोमा	सुमना	वारुणी
४३ मोक्षस्थान	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	फागण वदि ७	भाद्रवा वदि ७	भाद्रवा शुदि ९
४५ मोक्षसंलेषणा	एक मास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७ अंतर प्रमाण	९सोकोडीसागर	९०कोडीसागर	९ कोडीसागर
४८ गणनाम	राक्षसगण	देवगण	राक्षसगण
४९ योनि नाम	मृगयोनि	मृगयोनि	वानरयोनि
५० मोक्षपरिवार	५००)	१०००)	१०००)
५१ भवसंख्या.	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२ कुलगोत्र नाम	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल	ईक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकाल मान.	९मास१९दिवस	नवमास७ दिव०	मास ८ दिव.२६

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१ तीर्थंकरनाम	१०शीतलनाथ	११ श्रेयांसनाथ	१२ श्रीवासुपूज्य
२ च्यवनतिथि	वैशाखवदि ६	ज्येष्ठवदि ६	ज्येष्ठ शुदि ए
३ विमाननाम	अच्युत देवलोक	अच्युतदेव लोक	प्राणतदेवलोक
४ जन्मनगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
५ जन्मतिथि	महावदि १२	फागणवदि १२	फागण वदि १४
६ पिताना नाम	दृढरथराजा	विष्णुराजा	वसुपूज्यराजा
७ मातानांनाम	नंदामाता	विष्णुमाता	जयामाता
८ जन्मनक्षत्र	पूर्वाषाढा	श्रवण नक्षत्र	शतभिषानक्षत्र
९ जन्मराशि	धनराशि	मकर राशि	कुम्भराशि
१० लाछन नाम	श्रीवत्सनुलाछन	गेडानुलाछन	पाडानु लांछन
११ शरीरनु मान	नेवुधनुप	एंशीधनुप	सीत्तेरधनुप
१२ आयुनुप्रमाण	एकलाखपूर्व	८४ लाखवर्ष	७२ लाखवर्ष
१३ शरीरनावर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	लालवर्ण
१४ पदवीराजानी	राजा	राजा	कुमार
१५ पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६ केटलासाथेदीक्षा	(१०००) साधु	(१००० साधु	६०० साधु
१७ दीक्षानगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
१८ दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९ प्रथमपारणानोआ	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन
२० पारणानांस्थान	पुनर्वसुनेघेर	नदनेघेर	सुनदनेघेर
२१ केटलाविवसनुपारणु	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२ दीक्षातिथि	महावदि १२	फागणवदि १३	फागणशुदि १५
२३ छद्मस्थकाल	त्रणमासरह्या	बे मासरह्या	एक मासरह्या
२४ ज्ञाननगरी	नद्दिलपुर	सिंहपुरी	चपापुरी
२५ ज्ञानतप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६ दीक्षावृक्ष	प्रियंगुवृक्ष	तडुकवृक्ष	पाडलवृक्ष
२७ ज्ञानतिथि	पोषवदि १४	महावदि ३	महाशुदि २

श्रा बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधरसंख्या	८१)गणधर	७६)गणधर	६६)गणधर
२९	साधुउंनी संख्या.	१०००००	८४०००	७२०००
३०	साधवीयोनीसंख्या.	१००००६	१०३०००	१०००००
३१	वैक्रियलब्धिवंत.	१२०००	११०००	१००००
३२	वादियोनी संख्या.	५८००	५०००	४७००
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	७०२०	६०००	५४००
३४	केवली संख्या.	७०००	६५००	६०००
३५	मन.पर्यवसंख्या	७५००	६०००	६५००
३६	चौदपूर्वी संख्या	१४००	१३००	१२००
३७	श्रावक संख्या.	२८९०००	२७९०००	२१५०००
३८	श्राविका संख्या.	४५८०००	४४८०००	४३६०००
३९	शासनयक्षोनांनाम.	ब्रह्मायक्ष.	जक्षेटयक्ष	कुमार यक्ष.
४०	शासननी यक्षिणी.	अशोका	मानवी	चंडा
४१	प्रथम गणधर नाम.	नंद	कक्षप	सुभूम
४२	प्रथम आर्या नाम.	सुयशा	धारणी	धरणी
४३	मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	चंपापुरी
४४	मोक्षतिथि	वैशाखवदि २	श्रावणवदि ३	अशाड शुदि १४
४५	मोक्षसंलेपणा.	एकमास	एक मास	एकमास
४६	मोक्षआसन	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अतर मान.	एककोडीसागर	चोपन सागर	त्रीश सागर
४८	गण नाम.	मानवगण	देवगण	राक्षसगण
४९	योनि नाम	नकुलयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५०	मोक्षपरिवार.	१००० परिवार	१००० परिवार	६००परिवार
५१	जवसंख्या	त्रणजवकस्या.	त्रणजवकस्या	त्रण जव कस्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्जकाल मान.	मास ९ दिवस६	मास ९ दिवस६	मास८ दिवस२०

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	१३ विमलनाथ	१४ अनतनाथ	१५ श्रीधर्मनाथ
२	च्यवन तिथि	वैशाखशुदि १२	श्रावणवदि ७	वैशाखशुदि ७
३	विमान नाम	अष्टसारदेवलोक	प्राणत देवलोक	विजयविमान
४	जन्म नगरी	कपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी नगरी
५	जन्म तिथि.	महाशुदि ३	वैशाखवदि १३	महाशुदि ३
६	पिताना नाम	कृतवर्माराजा	सिहसेन राजा	जानुराजा
७	मातानां नाम	श्यामामाता	शुयशामाता	सुव्रता माता
८	जन्म नक्षत्र	उत्तराजाद्रपद	रेवतीनक्षत्र	पुष्यनक्षत्र
९	जन्म राशि	मीनराशि	मीन राशि	कर्कराशि
१०	लांछन नाम	वराहनुं लांछन	सीचाणानुंलांछन	वज्रलांछन
११	शरीरनु मान	शाठधनुष	पचाशधनुष	पीस्तालीशधनुष
१२	आयुर्मान	शाठलाखवर्ष	त्रीशलाखवर्ष	दशलाखवर्ष
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण	सुवर्ण वर्ण
१४	पदवी राजानी.	राजा	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण	परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटला साथे दीक्षा	(१०००) साधु	(१०००) साधु	(१०००) साधु
१७	दीक्षा नगरी	कपिल पुर	अयोध्या	रत्नपुरी
१८	दीक्षा तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन
२०	पारणानां स्थान	जयराजाने घेर	विजयराजानेघेर	धनसिहने घेर
२१	केटलादिवसनांपा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि	महाशुदि ४	वैशाखवदि १४	महाशुदि १३
२३	छद्मस्थ काल	बे मास	त्रण वर्ष	बे वर्ष
२४	ज्ञान नगरी	कपिलपुरी	अयोध्या	रत्नपुरी
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षा वृक्ष	जबूवृक्ष	अशोक वृक्ष	दधिपर्णवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पौषशुदि ६	वैशाख वदि १४	पोष शुदि १५

आं बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे

२८ गणधरसंख्या	५७) गणधर	५०) गणधर	४३) गणधर
२९ साधुउनीसंख्या	६८०००)	६६०००)	६४०००)
३० साधवीयोनी संख्या.	१००८००)	६२०००)	६२४००)
३१ वैक्रिय लब्धिवंत	९०००)	८०००)	७०००)
३२ वादियोनी संख्या	३६००)	३२००)	२८००)
३३ अवधिज्ञानी संख्या	४८००)	४३००)	३६००)
३४ केवली संख्या	५५००)	५०००)	४५००)
३५ मन:पर्यव संख्या	५५००)	५०००)	४५००)
३६ चौद पूर्वीसंख्या.	११००)	१०००)	९००)
३७ श्रावकसंख्या	२०८०००)	२०६०००)	२०४०००)
३८ श्राविकासंख्या	४२४०००)	४०१४००)	४१३०००)
३९ शासन यक्षोनांनाम	षण्मुखयक्ष	पातालयक्ष	किन्नरयक्ष
४० शासन यक्षिणीनांना०	विदिता	अकुशा	कंदर्पा
४१ प्रथम गणधरनाम.	मंदरगणधर	जसगणधर	अरिष्ट
४२ प्रथम आर्यानाम.	धरा	पद्मा	आर्यशिवा
४३ मोक्ष स्थान	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४ मोक्षतिथि.	आषाढवदि ७	चैत्रशुदि ५	ज्येष्ठशुदि ५
४५ मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	एकमास
४६ मोक्षआसन.	काउस्सग	काउस्सग	काउस्सग
४७ अंतरमान.	नवसागरोपम	चारसागरोपम	त्रणसागरोपम
४८ गणनाम	मानवगण	देवगण	देवगण
४९ योनिनाम	छागयोनि	हस्तियोनि	मंजारयोनि
५० मोक्षपरिवार.	६००)	७००)	१०८)
५१ भवसंख्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२ कुलगोत्रनाम	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्भकालमान	मास८दिवस२१	मास ९ दिवस ६	मास८दिवस२६

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्री तीर्थंकरनाम.	१६श्रीशांतिनाथ	१७ श्रीकुंथुनाथ	१८श्रीअरनाथ
२	च्यवनतिथि	भाद्रवावदि ७	श्रावणवदि ९	फागण शुदि २
३	विमाननाम	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध	सर्वार्थसिद्ध
४	जन्मनगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
५	जन्मतिथि	ज्येष्ठवदि १३	वैशाख वदि १४	मागशिरशु० १०
६	पितानां नाम	विश्वसेन	सूरराजा	सुदर्शन
७	मातानां नाम	अचिरा राणी	श्री राणी	देवीराणी
८	जन्मनक्षत्र	भरणी नक्षत्र	कृत्तिका नक्षत्र	रेवती नक्षत्र
९	जन्म राशि	मेषराशि	वृष राशि	मीन राशि
१०	लांछननां नाम	हरिणनु लांछन.	बकरानु लांछन	नंदावर्त्तनुं
११	शरीर मान.	४०) धनुष	३५) धनुष	३०) धनुष
१२	आयुनु प्रमाण	एक लाखवर्ष	९५०००) वर्ष	८४०००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण	सुवर्णवर्ण
१४	पदवी राजानी	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती	चक्रवर्त्ती
१५	पाणि ग्रहण	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री	६४०००) स्त्री
१६	केटला साथे दीक्षा.	१०००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन	क्षीर भोजन
२०	पारणानां स्थान	सुमित्रने घेर	व्याघ्रसिंहने घेर	अपराजितने घेर
२१	केटला दिवसनापा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षा तिथि	ज्येष्ठ वदि १४	चैत्र वदि ५	मागशिर शु०११
२३	छद्मस्थ काल	एकवर्ष	शोल वर्ष	त्रणवर्ष
२४	ज्ञाननगरी	गजपुर	गजपुर	गजपुर
२५	ज्ञान तप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	नदीवृक्ष	तीलक वृक्ष	आंबानु वृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	पोषशुदि ९	चैत्रशुदि ३	कार्तिक शुदि१२

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

२८	गणधर संख्या.	३६) गणधर	३५) गणधर	३३) गणधर.
२९	साधुओनीसंख्या.	५२०००	६००००	५००००
३०	साधवियोनी संख्या.	६१६००	६०६००	६००००
३१	वैक्रियलब्धिवंत	६०००	५१००	७३००
३२	वादियोनीसंख्या.	२४००	२०००	१६००
३३	अवधिज्ञानी संख्या.	३०००	२५००	२६००
३४	केवली संख्या.	४३००	३२००	२८००
३५	मनःपर्यवसंख्या.	४०००	३३४०	२५५१
३६	चौदपूर्वीसंख्या.	८००	६७०	६१०
३७	श्रावक संख्या.	१९००००	१७९०००	१८४०००
३८	श्राविकासंख्या	३९३०००	३८१०००	३७२०००
३९	शासनयक्षनांनाम.	गरुडयक्ष	गंधर्वयक्ष	यक्षेदयक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम.	निर्वाणी	वला	धणा
४१	प्रथम गणधर नाम.	चक्रयुक्त	सांब	कुंभ
४२	प्रथमआर्या नाम.	शुचि	दामिनी	रक्षिता
४३	मोक्षस्थान.	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्षतिथि.	ज्येष्ट वदि १३	वैशाख वदि १	मागशिरशुदि१०
४५	मोक्षसंलेपणा	एक मास	एकमास	एकमास
४६	मोक्षआसन	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अतर प्रमाण.	०॥पल्योपम	०पल्योपम	१००० क्रोडवर्षे
४८	गणनाम.	मानवगण	राक्षसगण	देवगण
४९	योनि नाम.	हस्तियोनि	छागयोनि	हस्तियोनि
५०	मोक्षपरिवार	९००परिवार	१०००)परिवार	१०००) परिवार
५१	भवसंख्या	बार भव कस्या	त्रणभवकस्या	त्रणभवकस्या
५२	कुलगोत्र नाम.	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३	गर्भकाल मान.	मासनवदिवस६	मासनवदि०पांच	मासनव दिव. ८

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे

१	श्रीतीर्थंकर नाम	१९ श्रीमल्लिनाथ	२० श्रीमुनिसुव्रत	२१ श्रीनमि नाथ
२	च्यवन तिथि	फागण शुदि ४	श्रावण शुदि १५	आशोशुदि १५
३	विमान नाम	जयतविमान	अपराजितविमा	प्राणत देवलोक
४	जन्मनगरी	मथुरानगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
५	जन्मतिथि	मागशिरशुदि११	ज्येष्ठवदि ८	श्रावण वदि ८
६	पिताना नाम	कुंजराजा	सुमित्रराजा	विजयराजा
७	मातानां नाम	प्रजावती	पद्मावती	विप्रा राणी
८	जन्म नक्षत्र	अश्विनी नक्षत्र	श्रवण नक्षत्र	अश्विनी नक्षत्र
९	जन्म राशि	मेषराशि	मकरराशि	मेषराशि
१०	लाछन नाम	कलशनु लांछन	कछपनु लाछन	कमलनु लांछन
११	शरीरनु प्रमाण	पचीश धनुष	वीश धनुष	पदर धनुष
१२	आयुनुप्रमाण	५५०००)वर्ष	३००००) वर्ष	१०००) वर्ष
१३	शरीरना वर्ण	नीलो वर्ण	श्यामवर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवी राजानी	कुमार	राजा	राजा
१५	पाणिग्रहण	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथे दीक्षा	३००) साधु	१०००) साधु	१०००) साधु
१७	दीक्षानगरी	मिथिला नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
१८	दीक्षातप	त्रण उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ०	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन	क्षीर जोजन
२०	पारणाना स्थान	विश्वसेन	ब्रह्मदत्त	दिन्नकुमार
२१	केटलादिवसनापा०	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि	मागशिरशुदि११	फागणशुदि १२	अषाढ वदि ९
२३	छद्मस्थकाल	एक अहोरात्र	अगियार मास	नवमास
२४	ज्ञान नगरी	मथुरा नगरी	राजगृही नगरी	मथुरा नगरी
२५	ज्ञानतप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	अशोक वृक्ष	चपकवृक्ष	वकुलवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	मागशिरशुदि११	फागण वदि १२	मागशिरशुदि११

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरोमां कहेछे

२८	गणधर संख्या.	८८) गणधर	१८) गणधर	१७) गणधर
२९	साधुउनी संख्या	४००००	३००००	२००००
३०	साध्वीयोनी संख्या	५५०००	५००००	४१०००
३१	वैक्रियलब्धिवंत	२९००	२०००	५०००
३२	वादियोनी सख्या	१४००	१२००	१०००
३३	अवधिज्ञानी संख्या	२२००	१८००	१६००
३४	केवली संख्या	२२००	१८००	१६००
३५	मन पर्यव संख्या	१७५०	१५००	१२५०
३६	चोदपूर्वी संख्या	६६८	५००	४५०
३७	श्रावक सख्या	१८३०००	१७२०००	१७००००
३८	श्राविका सख्या	३७००००	३५००००	३४८०००
३९	शासन यक्षोनांनाम	कुबेरयक्ष	वरुण यक्ष	त्रृकुटी यक्ष
४०	शासनयक्षणीनांनाम	धरणप्रिया	नरदत्ता	गधारी
४१	प्रथम गणधर नाम	अत्तीक्षकगणधर	मल्लीगणधर	शुत्नगणधर
४२	प्रथम आर्या नाम	वधुमती	पुष्पमती	अनिला
४३	मोक्ष स्थान	समेतशिखर	समेतशिखर	समेतशिखर
४४	मोक्ष तिथि	फागण शुदि १२	ज्येष्ठ वदि ए	वैशाखवदि १०
४५	मोक्ष संलेपणा	एकमास	एक मास	एकमास
४६	मोक्ष आसन.	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग	काउस्सग्ग
४७	अतरमान	५४००००० वर्ष.	६००००० वर्ष	५००००० वर्ष
४८	गण नाम	देवगण	देवगण	देवगण
४९	योनि नाम	अश्वयोनि	वानरयोनि	अश्वयोनि
५०	मोक्ष परिवार	५०० परिवार	१००० परिवार	१००० परिवार
५१	नव संख्या	त्रण त्नव कस्या	त्रण त्नव कस्या	त्रणत्नव कस्या
५२	कुलगोत्र नाम	इक्ष्वाकुवंश कुल	इक्ष्वाकुवंशकुल	इक्ष्वाकुवंशकुल
५३	गर्जकालमान	मास ए दिवस ७	मास एदिवस ८	मास ए दिवस ८

आ बावन बोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहेछे.

१	श्रीतीर्थंकरनाम	२२ श्रीनेमिनाथ	२३श्रीपार्श्वनाथ	२४ श्रीमहावीर
२	च्यवनतिथि.	कार्तिकवदि १२	चैत्रवदि ४	आषाढशुदि ६
३	विमाननाम.	अपराजित	प्राणत देवलोक	प्राणतदेवलोक
४	जन्मनगरी.	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
५	जन्मतिथि.	श्रावणशुदि ५	पोषवदि १०	चैत्रवदि १३
६	पिताना नाम.	समुद्र विजय	अश्वसेन	सिद्धार्थराजा
७	मातानांनाम	शिवा देवी	वामा देवी	त्रिशला देवी
८	जन्मनक्षत्र	चित्रानक्षत्र	विशाखा नक्षत्र	उत्तरा फाल्गुनी
९	जन्मराशि	कन्याराशि	तुला राशि	कन्याराशि
१०	लांछन नाम.	शंखनु लांछन	सर्पनु लांछन	केशरी लांछन
११	शरीरनु मान	दशधनुष	नवहाथ	सातहाथ
१२	आयुनुप्रमाण	हजारवर्ष	शो वर्ष	बहोंतेर वर्ष
१३	शरीरनावर्ण	श्यामवर्ण	नीलो वर्ण	पीलो वर्ण
१४	पदवीराजानी	कुमार पदवी	कुमारपदवी	कुमार पदवी
१५	पाणिग्रहण	नथी परण्या	परण्या	परण्या
१६	केटलासाथेदीक्षा	१०००) साधु	(३०० साधु	एकाकी दीक्षा
१७	दीक्षानगरी	सौरिपुर	वणारसी	क्षत्रियकुंड
१८	दीक्षातप	बे उपवास	बे उपवास	बे उपवास
१९	प्रथमपारणानोआ	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन	क्षीरभोजन
२०	पारणानास्थान	वरदिन्न	धन्यनाम	बहुल ब्राह्मण
२१	केटलादिवसनुंपारणु	बे दिवस	बे दिवस	बे दिवस
२२	दीक्षातिथि	श्रावण शुदि ६	पोषवदि ११	मागशिर वदि११
२३	छद्मस्थकाल	चोपनदिवस	चोराशी दिवस	बार वर्ष
२४	ज्ञाननगरी	गिरनार	वणारसी	ऋजुवालुका नदी
२५	ज्ञानतप	त्रण उपवास	त्रण उपवास	बे उपवास
२६	दीक्षावृक्ष	वेडसवृक्ष	धातकीवृक्ष	शालवृक्ष
२७	ज्ञानतिथि	आशोवदि०)	चैत्रवदि ४	वैशाख शुदि १०

श्र्या वावन वोल प्रत्येक तीर्थंकरमां कहे छे.

२८ गणधरसंख्या.	११) गणधर	१०) गणधर	११) गणधर.
२९ साधुर्उनीसंख्या.	१८०००)	१६०००)	१४०००)
३० साधवीयोनी संख्या.	४००००)	३८०००)	३६०००)
३१ वैक्रियलब्धिवंत	१५००)	११००)	७००)
३२ वादियोनी संख्या.	८००)	६००)	४००)
३३ श्र्यवधिज्ञानी संख्या	१५००)	१०००)	१३००)
३४ केवली संख्या	१५००)	१०००)	७००)
३५ मनःपर्यव संख्या	१०००)	७५०)	५००)
३६ चौद पूर्वीसंख्या	४००)	३५०)	३००)
३७ श्रावकसंख्या.	१६९०००)	१६४०००)	१५९०००)
३८ श्राविकासंख्या	३३६०००)	३३९०००)	३१८०००)
३९ शासन यक्षोनां नाम.	गोमेधयक्ष	पार्श्वयक्ष	मातंगयक्ष
४० शासनयक्षिणीनांना०	श्र्यंविका	पद्मावती	सिद्धायिका
४१ प्रथम गणधरनाम.	वरदत्त	श्र्यार्यदिन्न	इंद्रनूति
४२ प्रथम श्र्यार्यानाम.	यक्षदिन्ना	पुष्पचूडा	चंदनवाला
४३ मोक्ष स्थान	गिरनार	समेतशिखर	पावापुरी
४४ मोक्षतिथि.	श्र्यापाढशुदि ८	श्रावण शुदि ८	कार्तिक वदि ०)
४५ मोक्षसंलेषणा.	एकमास	एकमास	वे उपवास कस्या
४६ मोक्षश्र्यासन	पद्मासन	काउस्सग	पद्मासन
४७ श्र्यंतरमान.	८३७५०) वर्षे	२५०) वर्षे	चरमजिनेश्वर
४८ गणनाम.	राक्षसगण	राक्षसगण	मानवगण
४९ योनिनाम	महिषयोनि	मृगयोनि	महिषयोनि
५० मोक्षपरिवार.	५३६) परिवार	३३) परिवार	एकला पोते
५१ नवसंख्या.	नवनवकस्या	दशनव कस्या	सत्यावीशनवक०
५२ कुलगोत्रनाम	हरिवंश	इक्ष्वाकुकुल	इक्ष्वाकुकुल
५३ गर्नकालमान.	मास ए दिवस ८	मास ए दिवस ६	मास ए दिवस ७॥

आ यंत्र अनुसार दरेक तीर्थंकरना बावन बोलनो संबध जाणवो ते मध्येनां मातादि केटलांएक द्वार व्युत्पत्तिना कारणसर प्रथम पृथक् बतावेल ठे

आ चोवीश तीर्थंकरमाहेना नवमा, दशमा, अग्यारमा, बारमा, तेरमा, चौदमा, अने पदरमा ए सात तीर्थंकरना निर्वाण थया पठी तेमना शासन (द्वादशांग वाणीरूप शास्त्र) तथा साधु, साध्वी, श्रावक, अने श्राविका चतुर्विध श्रीसंघरूप तीर्थ केटलाएक काल प्रवर्त्ती विछेद गयां ते समये भारत वर्षमां जैनमतनु नाम पण विद्यमान न होतु, ते वखतथी अनेक मत मतांतर तथा कुशास्त्रोनी प्राय प्रवृत्ति थई ते वर्तमान काल सुधी विद्यमान ठे बहु लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रो रचीने प्राचीन मुनि, ऋषि अथवा ईश्वरप्रणीत ते ठे एम प्रसिद्ध कर्यां ए प्रमाणे त्रणसो त्रेसठ मत प्रवर्त्यां चारे आर्यवेद विछेद गया, अने नवीन वेदोनी रचना करी नवीन वेदो मध्ये पण लोकोए केटलीएक वार नवी नवी रचना करी तेमने उलट पालट करी दीधा नवी नवी रचना कर्या पठी जे बाकी रह्या तेनी अनेक तरेहथी भाष्य, टीका, दीपिका, रचीने अर्थमां गडबड करी दीधी अत्यार सुधी ते प्रमाणेज कर्या करे ठे आ सर्व स्वरूप ज्या वेदोनी उत्पत्ति विषे लखशु त्या स्पष्ट लखशु--वेद--नाम बहुज प्राचीन कालथी ठे जे पुस्तकोनां नाम वेद आज प्रसिद्ध ठे ते प्राचीन नथी तेनु प्रमाणयुक्त वर्णन आगल करवामां आवशे इति श्री तपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्य मुनि श्री आनदविजय श्री आत्मारामविरचिते जैनतत्त्वादर्शे प्रथम. परिछेद संपूर्ण. ॥

॥ अथ द्वितीय परिछेद ॥

आ परिछेदमां कुदेवनु स्वरूप लखियें ठिये जे "भगवान्" नथी परतु लोकोए पोतानी मतिथी जेने परमेश्वर मान्या तेने कुदेव कहेवामां आवे ठे ते कुदेवनु स्वरूप प्रथम वर्णवेला देव स्वरूपथी विपरीत ठे एम सर्व बुद्धिमान् तो जाणी शके ठे परतु जेउं विस्तारपूर्वक लखवाथी समजी शके ठे तेमना हित सारु लखियें ठिये

" श्लोक ॥ ये स्त्रीशस्त्राक्षसूत्रादि, रागाद्यंककलंकिताः ॥ निग्रहानुग्रहपरा, स्ते देवा. स्युर्न मुक्तये ॥ १ ॥ नाट्याट्टहाससंगीता, द्युपप्लव विसंस्थुलाः ॥ लंजयेयु. पदं शान्तं, प्रपन्नान्प्राणिनः कथ ॥ २ ॥ " इति योगशास्त्रे॥ जे देवनी पासे स्त्री होय, तथा जेनी प्रतिमानी पासे स्त्री होय, ते देव तथा प्रतिमाद्वारा ते देवनुं स्वरूप प्रगट थइ जायछे, कारण के जेवो पुरुष होयछे तेवीज तेनी मूर्त्ति पण प्रायः होयछे वर्तमानमां सर्व चित्रोमां तेमज देखवामां आवेछे, ते कारणथी मूर्त्तिद्वारा तथा मतावलंबी पुरुषोना ग्रंथानुसार स्वरूप समजी लेवुं, तेम शस्त्र, धनुष्, चक्र, त्रिशूल, अक्षसूत्र, जपमाला तथा कमंडल प्रमुख जेनी पासे होय ते देव केवा होय ? राग द्वेष प्रमुख दूषणोनां चिन्ह जे देवमां होय तथा जे देव स्त्रीने पासे राखेछे ते अवश्य रागी, द्वेषी तेमज कामी छे स्त्री साथे भोग करनारो छे तेना करतां अधिक रागीपणुं सूचवनारुं बीजुं कयु चिह्न छे ? आ काम रागने वश थवाथी कुदेवोए परस्त्री, स्वस्त्री, पुत्री, माता, बेहेन तेमज पुत्रवधू प्रमुख स्त्रियो साथे अनेक कामक्रीडा कुचेष्टा करी छे.

वर्तमानमां कोइपण पुरुष परस्त्रीगमन करनारो होय तो तेने कोइपण मतावलंबी " सज्जन " केहेता नथी, तो पछी परमेश्वर थइने परस्त्रीसंग काम कुचेष्टा करे तेने कुदेव केहेवामा बुद्धिमान् पुरुषो शका करता नथी, जे पुरुष पोतानी स्त्री साथे काम सेवन करेछे परंतु परस्त्रीनो त्यागीछे, तेने पण परस्त्रीनो त्यागी, गृहस्थधर्मी, एम लोक कही शके छे, परंतु तेने मुनि, ऋषि के ईश्वर कदापि तेओ केहेशे नहि, कारण के जे पोतेज कामाग्नि कुडमां प्रज्वलित थई रह्या छे तेनामा ईश्वरता कदि होई शकती नथी आ हेतुथी रागरूप चिह्नें करी जे संयुक्त छे ते कुदेव छे. वली द्वेषना चिह्नेकरी जे संयुक्त छे ते पण कुदेव छे. द्वेषना चिह्न शस्त्रादि धारण करवां ते; जे शस्त्र, धनुष्, चक्र, त्रिशूल प्रमुख पोतानी पासे राखे तेने अवश्य कोइ वैरीने मारवानो छे ते विना शस्त्र राखवानुं शु प्रयोजन छे ? तेथी जे वैरविरोधमय छे ते परमेश्वर थइ शक्ता नथी जे भयसंयुक्त छे ते पोतानी साथे टाल के खड्ग राखेछे, तेथी जे पोतेज भयसंयुक्त छे तेनी सेवा करवाथी अमे निर्भय केम थइ शकि-

यें ? आ हेतुथी द्वेषसंयुक्तने पण कोण बुद्धिमान् परमेश्वर कही शके छे ? परमेश्वर जे छे, ते तो "वीतराग" छे अने रागद्वेषसंयुक्त जे छे ते कुदेव छे

जेना हाथमां जपमाला छे ते असर्वज्ञतानु चिह्न छे जो सर्वज्ञ होय तो मालाना मणका विना पण जापनी सख्या करी शके छे वली जे जाप करे छे ते पण पोताना करतां उचानो जाप करे छे तो परमेश्वर करतां श्रेष्ठ कोण छे जेनो ते जाप करे छे ? आ हेतुथी मालाथी जे जाप करे छे ते पण कुदेव छे जे शरीरें जस्म लगावे छे, धूणी तापे छे, नग्न थइ कुचेष्टा करे छे, जांग, अफीण, धतुरो, मदिरा प्रमुख पीये छे, मांसादि अशुद्ध आहार करे छे, तेमज हाथी, उट, बलद अने रासज प्रमुखनी स्वारि करे छे ते पण कुदेव छे, कारण के शरीरें जस्म लगाडनार तथा धूणी तापनार कोई वस्तुनी ईछावाला छे तेथीं जेनो मनोरथ अत्यार सूधी पूर्ण थयो नहि ते परमेश्वर नहि पण कुदेव छे तेमज जे निस्सो करावनारी चीजो खाय छे तथा पीये छे ते निस्साना अमलमां आनंद तेमज हर्ष द्धढे छे परमेश्वर तो सदा आनद तेमज सुखरूप छे परमेश्वरमां एवो कयो आनद नथी जे निस्सो करवाथी तेने प्राप्त थाय छे ? ते हेतुथी निस्सो करनारा तेमज मांसादि अशुद्ध आहार करनारा पण कुदेव छे

स्वारि परजीवने पीडानु कारण छे परमेश्वर तो दयालु छे ते परजीवने पीडा केम उत्पन्न करे ? तेथी स्वारि जे करे ते पण कुदेव छे

जे कमंडल राखे छे ते शुचिताने कारणे राखे छे, परमेश्वर तो सदा काल पवित्र छे तेने कमंडलथी शु काम छे ?

स्त्रीसंग काममाचष्टे, द्वेष चायुधसग्रह ॥ व्यामोहं चाक्षसूत्रादि, रशौच च कमडलु ॥ १ ॥ स्त्रीनो सग कामवृत्ति सूचवे छे, शस्त्रसग्रह, द्वेष जाव सूचवे छे, जपमाला व्यामोह अने कमंडल अशुचिपणु बतावे छे तेमज निग्रह (रुष्ट) पणाथी जे बीजाने वध, बधन, मरण, रोग, शोक, अतीष्टवियोग, नरकपात, निर्धन, हीन, दीन, क्षीण करे ते पण कुदेव छे, तेमज जेनी उपर अनुग्रह करे तेने इन्द्र, चक्रवर्त्ती, बलदेव, वासुदेव, महामडलिक मडलिक आदि राजपदवीनु वरदान आपे, तथा सुदर स्त्री पुत्र परिवारादिसयोग करावे ते पण कुदेव छे, कारण

के जे रागी, द्वेषी ठे ते मोक्षप्राप्ति माटे कदि थइ शकता नथी, तेर्ड तो ज्रूत, प्रेत पिशाचादिनी पेठे क्रीडाप्रिय देवता मात्र ठे. तेवा देव पोताना सेवकोने मुक्ति केम प्राप्त करावी शके ? पोतेज रागी, द्वेषी, कर्मपरतंत्र ठे तो सेवकोनुं कार्य शुं सारी शके ठे? आ हेतुथी निग्रह, अनुग्रह करनारा पण कुदेव ठे

जे नाद, नाटक, हास्य, संगीत, ईत्यादि रसमां मग्न ठे, वाजीत्र वजावे ठे, पोते नाचे ठे, बीजाने नचावे ठे, हसे ठे, कुदे ठे, विषयी रागो गाय ठे, संगीत करे ठे इत्यादि, मोहकर्मने वश थई संसारनी चेष्टा करे ठे तथा जेनो अस्थिर स्वज्ञाव ठे ते पण कुदेव ठे जे पोतेज एवा ठे ते सेवकोने शांतिपद केम प्राप्त करावी शके ? एरंम वृक्ष कल्पवृक्षनी पेठे इच्छा पूर्ण करी शकतुं नथी जेम कोइ मूर्ख पुरुष एरंम वृक्षने कल्पवृक्ष मानी एरंड पासे इच्छा फलीज्रूत करवा याचना करे ते एरंम शुं कल्पवृक्षनु काम करी शके? तेम कोइ मिथ्यादृष्टि पुरुष कुदेवने परमेश्वर मानी लीये तो शु ते कुदेव परमेश्वर थई शके ठे ? ते कारणथी प्रथम परिछेदमां जे लक्षणो परमेश्वरनां वताव्यां ठे, ते लक्षणोवाला परमेश्वर, देव ठे बाकीना सर्व कुदेव ठे.

प्रश्न–अमे तो एम सांजळ्यु ठे के जैनियो ईश्वरने मानता नथी, तेमनो मत अनीश्वरीय ठे, अने आपे तो प्रथम परिछेदमां कइक जगोये अर्हंत, ज्ञगवंत परमेश्वर लखेल ठे, वली प्रथम परिछेद तो ज्ञगवाननाज स्वरूपकथनमां समाप्त करेल ठे. आमां वास्तविक शु ठे ?

उत्तर–हे ज्ञव्य ! जे एम कहे ठे के जैनमतावलंबी ईश्वरने मानता नथी तेमनु एवु कथनज मिथ्या ठे, तेर्डए कदी जैनमतना शास्त्रनुं अध्ययन अथवा श्रवण कर्युं नहि होय, तेमज कोइ बुद्धिमान् जैनीनो परिचय पण कर्यो नहि होय, जो कदि जैनमतना शास्त्रोनुं अध्ययन अथवा श्रवण कर्युं होत तो कदि ते एम न कहेत के जैनी ईश्वरने मानता नथी जो जैनी ईश्वरने मानता नथी तो आ श्लोको कोनी स्तुतिठे?

त्वामव्यय विज्रुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगकेतुम् ॥
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेक, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥२॥ हे जिन ! सत्पुरुष आपने (अव्यय) कहे ठे अपचयने जे न प्राप्त थाय

ते द्रव्यार्थिक नयने मते अव्यय, त्रणे कालमां एक स्वरूप छे शोभे छे परमेश्वर पणाएं करी जे ते (विभु) अथवा समर्थ थया कर्मउन्मूलन करी जे ते (विभु) अथवा इन्द्रादि देवताउना जे स्वामी ते (विभु) सत्पुरुष ते कारणथी आपने विभु कहे छे वली आपने अध्यात्मज्ञानी पण चिंतन करवामां समर्थ नथी तेथी आप (अचिंत्य) छो वली आपना गुणोनी गणतरी थइ शकती नथी तेथी सत्पुरुष आपने(असंख्य) कहे छे वली सर्व लोकव्यवहार प्रवर्त्तावावामां आदि करनार तेथी, अथवा पोतानु तीर्थ स्थापवामा आदि करवाथी आप (आद्य) छो वली अनंत आनंदें करी सर्वथी अधिक बुद्धिवाला होय ते (ब्रह्म) सत्पुरुष आपने ब्रह्म कहे छे वली सर्व देवताउना ठाकोर तेथी आपने (ईश्वर) कहे छे वली अनत ज्ञानदर्शनना योगथी (अनंत) अथवा नथी जेनो अत ते (अनंत) अथवा अनंतज्ञान– अनंतवल– अनतसुख– अनतजीवन, ए चार अनतें करी सयुक्त ते (अनंत) सत्पुरुष आपने अनंत कहे छे वली कामदेवनो नाश करवाने आप केतु समान छो तेथी आपने (अनंगकेतु) कहे छे, अथवा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण शरीररूपी चिह्न जेनें नथी ते (अनंग केतु) जविष्य नैगम नयने मतें करी आपने कहे छे वली चार ज्ञानना धारण करनार जे योगी केहेवाय छे तेना आप ईश्वर छो तेथी आपने (योगीश्वर) कहे छे वली जाण्या छे सम्यक् ज्ञानादियोग जेणे, अथवा ध्यानादि योग जेणे, अथवा विशेषे करी जीव साथेनो कर्मनो संयोग खंडित कर्यो छे जेणे ते (विदितयोग) सत्पुरुष आपने (विदितयोग) कहे छे वली आप ज्ञानें करी सर्वगत होवाथी, अथवा अनेक सिद्ध एकत्र रेहेवाथी, अथवा गुणपर्यायनी अपेक्षाथी, अथवा ऋषजादि व्यक्ति जेदथी सत्पुरुष आपने (अनेक) कहे छे वली आप अद्वितीय उत्तमोत्तम छो तेथी अथवा जीवद्रव्य अपेक्षाथी आपने (एक) कहे छे वली आप, ज्ञान क्षायिक केवल छे स्वरूप जेनु ते ज्ञानस्वरूप तेथी आपने (ज्ञानस्वरूप) कहे छे वली अष्टादश दोषरूप मल जेने नथी तेथी सत्पुरुष आपने (अमल) कहे छे आ पदर विशेषण ईश्वरसंवधी मतातरोमा प्रसिद्ध छे

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोसि ॥ २ ॥ अर्थः– हे विबुधार्चित! विबुध जे देवताउ, तेनाथी पूजाएला साते सुगतो मध्येथी कोइ एक सुगत, तेने बुद्ध कहियें, ते बुद्ध आपजछो, शा कारणथी? धर्मबुद्धि प्रगट करवाथी वली आप शकर छो, शा कारणथी? त्रणे भुवनमां शं जे सुख ते करवाथी. वली हे धीर! आप धाता (ब्रह्मा) छो, शा कारणथी? शिव जे मोक्ष तेनो मार्ग जे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप तेनो विधि बतावनाथी, आप विधाताछो हे भगवन्! आप व्यक्त प्रगट, पुरुषोमां उत्तमछो. इत्यादि लाखो श्लोक, परमेश्वरनी स्तुतिना छे जो जैनी ईश्वरने नथी मानता तो आ श्लोकोथी तेमणे कोनी स्तुति करीछे? सबब जे एम कहेछे के जैनी लोक, ईश्वरने नथी मानता ते प्रत्यक्ष मृषावादी छे

प्रश्न–बहु सारुं थयुं जे मारा मननो संशय दूर थयो, परंतु एक संशय मारा मनमां अद्यापि छे आपें ईश्वर तो मान्या परंतु जगत्कर्त्ता ईश्वर आपे जैनमतमां मान्या छे के नहि? उत्तर–हे भव्य! जगत्‌ना कर्ता जो ईश्वर सिद्ध थाय तो जैनी केम न माने? परंतु सर्व वस्तुना कर्त्ता ईश्वर कोइ पण प्रमाणथी सिद्ध थता नथी

प्रश्न–जो कोइ पण प्रमाणथी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्त्ता सिद्ध नथी थता तो १ नवीन वेदांती २ नैयायिक ३ वैशेषिक ४ पातंजल ५ नवीन सांख्य ६ इसाइ ७ मुसलमान प्रमुख अनेक मतावलंबी पुरुष ईश्वरने जगत्कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानेछे, शुं तेउमां कोइ पण ईश्वरना जगत्कर्त्तापणानो निषेध करनार समजू थयो नहि?

उत्तर–हे भव्य! १ जैन २ बौद्ध ३ प्राचीन सांख्य ४ पूर्वमीमांसा कारक जैमिनि मुनिना संप्रदायी भट्ट प्रभाकर इत्यादि अनेक मतावलंबियोमां कोइ पण समजु थयो नहिं के जेणे ईश्वरना जगत्कर्त्तापणानु स्थापन कर्युं !!

प्रश्न–जैन, बौद्ध अने प्राचीन सांख्य प्रमुख, ऊपर वर्णवेला मतावलंबी तमाम, अज्ञानी थया छे ते कारणथी ईश्वरने जगत्कर्त्ता नथी मानता.

उत्तर–नवीन वेदांती, नैयायिक, वैशेषिकादि सर्व अज्ञानी थया छे के जे ईश्वरने जगत्कर्त्ता माने छे

प्रश्न–ईश्वर जगत्‌ना अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता छे एम जो मानियें तो शु दूषण छे ?

उत्तर–ईश्वरने जगत्‌ना कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानवामां वहु दूषणो आवे छे

प्रश्न–आप अपूर्व वात कहोछो अमे तो कदी सांभल्यु नथी के ईश्वरने जगत्कर्त्ता अथवा सर्व वस्तुना कर्त्ता मानवामां दूषण आवेछे हवे तो आपे ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानवामा शु शु दूषणो आवेछे ते केहेवु जोइये ?

उत्तर–हे भव्य ! प्रथम तो आप ए वतावो के आप कया ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानोछो ?

प्रश्न–शु ईश्वर पण कइक तरेहना छे, जे आप अमने एम पुछोछो ?

उत्तर–शु आप नथी जाणता के वे प्रकारना ईश्वर मतावलंवियोयें मानेलाछे ? एकतो जगत् उत्पत्ति पेहेला केवल एकज ईश्वर हता, जगत्‌ना उपादानादि कोइ पण कारण अथवा वीजी वस्तु न होती, एकज शुद्ध बुद्ध सच्चिदानंदादिस्वरूपयुक्त परमेश्वर हता केटलाएक जीवोने तो एवा ईश्वर, जगत् वा सर्व वस्तुना रचनार संमत छे, अने वीजाउने तो १ जीव २ परमाणु ३ आकाश ४ काल दिशादि सामग्रीवाला अर्थात् एक तो ईश्वर उपर वर्णवेला विशेषणसंयुक्त–अने जेथी जगत् रचीशकाय एवी वीजी सामग्री–ए वने वस्तु अनादि छे, एम समत छे, अर्थात् एक तो ईश्वर, अने वीजी जगत् उत्पन्न करवानी सामग्री, ए वने कोइये वनावी नथी एम तेउ मानेछे हवे आपने आ वे मतमाथी कयो मत संमतछे

पूर्वपक्ष–अमने तो प्रथम मत समत छे कारण के वेदादि शास्त्रोमा एम लख्यु छे–" एतस्मादात्मन आकाश संभूत· आकाशाद्वायु वायोरग्नि रग्नेराप अद्भ्य पृथिवी पृथिव्या ओषधय ओषधिभ्योऽन्नमन्नाद्रेत रेतस पुरुष सवा एप पुरुपोन्नरसमय " आ तैत्तिरीय शाखानी श्रुतिछे, तथा "सदेव सोम्येदमग्रआसीदेकमेवाऽद्वितीय तदैक्षत वहु स्या प्रजायेयेति " आ श्रुति छांदोग्य उपनिषद्‌नी छे तथा "ना सदासीन्नो सदासीत्तदानीन्ना

सीदजोन व्योम परोयत् किमावरीव. कुहकस्य शर्मण्णम्नः किमासीज्ञहनं गन्नीरं " आ श्रुति ऋग्वेदनीछे, तथा " आत्मा वा इदमग्र आसीन्नान्यत् किंचिन्मिषत् स ईक्षत लोकानुसृज इति " आ ऐतरेय ब्राह्मणनी श्रुति छे; इत्यादि अनेक श्रुतियोथी सिद्ध थायछे के सृष्टिनी पेहेलां एक ईश्वर हता. न जगत् हतुं अथवा नहोतुं जगतनु कारण,एकज ईश्वर शुद्धस्वरूप हता. वली इसाइ तेमज मुसलमान मतवाला पण एमज माने छे. ए हेतुथी अमे प्रथम पक्ष मानियें छीये

उत्तर– हे पूर्वपक्षि! आपनुं ए केहेवुं ईश्वरने बहुज कलंकित करेछे.

पूर्वपक्ष– जगत् रचवाथी ईश्वरने शुं कलंक प्राप्त थाय छे?

उत्तरपक्ष– प्रथम तो जगतनु उपादान कारण नथी, ते हेतुथी जगत् कदापि उत्पन्न थइ शकतु नथी जेनुं उपादान कारण होय नहि ते कार्य कदापि उत्पन्न थइ शके नही जेम के गधेडानां सींग.

पूर्वपक्ष–ईश्वरें पोतानी शक्ति, नामांतर कुदरतथी जगत् रचेल छे. ईश्वरनी जे शक्ति छे तेज उपादान कारण छे

उत्तरपक्ष– ईश्वरनी जे शक्ति छे ते ईश्वरथी भिन्न छे, के अभिन्न छे? जो कहो के भिन्न छे, तो पछी जड छे के चेतन छे? जो कहो के जड छे, तो ते नित्य छे, के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो आपनु एम जे केहेवुं हतुं के सृष्टिनी पेहेलां एक केवल ईश्वर हता अने बीजी कांइपण वस्तु न होती; ते प्रमाणरहित अन्यायी वचन थयुं, पोतेज पोताना वचनने मृषा कराव्यु वली एम कहो के अनित्य छे तो पछी तेनी उपादानकारणरूप बीजी ईश्वरनी शक्ति थइ, ते शक्तिनी उत्पन्न करनारी त्रीजी शक्ति थइ, एवीरीतें करतां अनवस्था दूषण आवे छे. जो कहो के चेतन छे, तो पछी नित्य छे के अनित्य छे? बंने पक्षमां उपर बताव्या मुजब पूर्वापर स्ववचन व्याहत तेमज अनवस्था दूषण छे. जो कहो के ईश्वरशक्ति ईश्वरथी अभिन्न छे तो सर्ववस्तुने, ईश्वरज केहेवी जोइये. जो सर्ववस्तु ईश्वर बनी गइ तो पछी सारुं के बुरुं, नरकके स्वर्ग, पुण्य के पाप, धर्म के अधर्म, उचनीच, रंकराजा,सुशील के दुःशील, राजा तेमज प्रजा, चोर तेमज साधु, सुखी तेमज दुःखी इत्यादि सर्वे, ईश्वर पोतेज बन्या. हवे विचारो के ईश्वरें जगत् शुं रच्यु? पोतेज

पोतानु सत्तानाश करी लीधुं आ प्रथम कलंक ईश्वरने लागे छे, तथा ज्यारें ईश्वर पोतेज सर्वरूप बनी गया तो पछी वेदादि शास्त्र शा माटे बनाव्यां ? तेमज तेनो अभ्यास करवाथी शु फल थयुं ? आ बीजुं कलक; तथा ज्यारे वेदादि शास्त्र बनाव्यां त्यारें पोते पोताने ज्ञानी बनाववाने रच्यां ते उपरथी सिद्ध थयु के प्रथम तो पोते अज्ञानी हता आ त्रीजु कलंक, तथा शुद्ध हता ते अशुद्ध बन्या कारण के जगत्रूप बनवानी मेहेनत करी जे निष्फल थई आ चोथु कलंक, कोइ वस्तु जगत्मां सारी के बुरी नहि, आ पांचमुं कलंक, शा माटे पोते पोताने संकटमां नाख्या आ छठ्ठु कलंक, इत्यादि अनेक कलंक आप ईश्वरने लगावो छो

पूर्वपक्ष–ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे, ते हेतुथी ईश्वर, उपादान कारण विनापण जगत् रची शकेछे

उत्तरपक्ष–आ जे आपनुं केहेवु छे ते प्यारी स्त्री अथवा मित्र मानशे परंतु प्रेक्षावान् कोईपण नहि माने, कारण के आ तमारा केहेवामां कोईपण प्रमाण नथी जेनु उपादानकारण होय नहि ते कार्य कदी थई शके नहि जेम के गधेडाना सींग, एवु प्रमाण आपना केहेवाने बाधक छे परतु साधक तो कोई नथी, तेम छता हठ करी स्वकपोलकल्पितनेज मानशो तो प्रेक्षावाननी पक्तिमा कदापि दाखल नहि थई शको. तेमज आ तमारा कथनमां इतरेतर आश्रय दूषणरूप वज्रनो प्रहार पडे छे जेम के सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय, जो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय तो सृष्टिनी पेहेलां उपादानादि सामग्रीरहित केवल शुद्ध, एक ईश्वर सिद्ध थाय, आ बनेमांथी ज्यां सुधी एक सिद्ध न थाय त्यासुधी बीजु कदीपण सिद्ध न थाय तेमज आ तमारा कथनमां चक्रक दूषण आवे छे, सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय तो सर्वशक्तिमान् सिद्ध थाय ज्यारें सर्व शक्तिमान् सिद्ध थाय त्यारें सृष्टिनी पेहेलां सामग्रीरहित केवल शुद्ध एक ईश्वर सिद्ध थाय, ज्यारे एम थाय त्यारे सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय, एम प्रगट चक्रक दूषण आवे छे

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध छे, पछी आप तेने सृष्टिकर्त्ता केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष– जो ईश्वर सृष्टिना कर्त्ता प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध थाय तो कोइने पण अमान्य न होय, अने तमारो अमारो ईश्वरविषयी विवाद पण कदी न होय, कारण के प्रत्यक्षमां विवाद होतोज नथी परंतु ईश्वरनुं प्रत्यक्ष दर्शन तो आपना वेदमंत्रथी विरुद्ध छे वेदमंत्र अपाणिपादो जवनो ग्रहीता, पश्यत्यचक्षुस्सशृणोत्यकर्णः ॥ सवेत्ति विश्वं नच तस्यास्ति वेत्ता, तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥ आ मंत्रथी सावीत थाय-छे के ईश्वरने जाणनार कोइ छे नहि

पूर्वपक्ष–कर्त्ता विना जगत् केम थइ गयुं ? आ अनुमान प्रमाणथी ईश्वर सृष्टिकर्त्ता सिद्ध थाय छे, ते आप केम नथी मानता ?

उत्तरपक्ष– आ आपना अनुमाननुं बीजा ईश्वरपक्षमां खंडन करवामां आवशे उपर बतावेला प्रकारथी एक केवल उपादानादि सामग्री रहित, सृष्टिनी पेहेलां ईश्वर सिद्ध न थया तो पण अमे आगल चलावियें छियें ज्यारे ईश्वरें आ जीवोने रच्या हता त्यारे १ निर्मल रच्या हता ? २ पुण्यवाला रच्या हता ? ३ पापवाला रच्या हता ? ४ मिश्रित पुण्यपाप अर्धो अर्धवाला रच्या हता ? ५ पुण्य अल्प पाप अधिक एवा रच्या हता ? ६ किंवा पुण्य अधिक पाप अल्प एवा रच्या हता ? जो प्रथम पक्ष ग्रहण करशो तो जगतुमां सर्व जीव निर्मलज होवा जोइये, पछी वेदादि शास्त्रद्वारा तेउने उपदेश करवो वृथा छे तेमज वेदादि शास्त्रोना कर्त्ता पण मूढ सिद्ध थशे. कारण के जो प्रथमथीज जीव निर्मल छे तो तेउने माटे शास्त्र शा माटे रच्यां ? जे वस्त्र निर्मल होय छे तेने कोइपण बुद्धिमान् धोता नथी जो कदापि धोवे तो ते महामूढ छे आ कारणथी जे निर्मल जीवोना उपदेश निमित्त शास्त्र रचे ते पण मूढ छे.

पूर्वपक्ष–ईश्वरे तो जीवोने शुद्ध निर्मल अर्थात् सारा बनाव्या हता, परंतु जीवोए पोतानी इछाथी सारां अथवा भूंडां कामो करी लीधां छे, तेमां ईश्वरनो कांइ दोष नहि.

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें जीवोमां सारां अथवा बुरां काम करवानी शक्ति रची न होती तो पछी जीवोमां पुण्य अथवा पाप करवानी शक्ति क्यांथी आवी ?

पूर्वपक्ष–शक्तियो तो जीवमां सर्व ईश्वरेंज रची छे, परंतु जीवोने बुरां

काम करवामां प्रवर्त्ताव्या नथी बुरां काम करवामां जीव पोतेज प्रवृत्त थयेलछे जेम के कोइ गृहस्थें पोताना प्रिय बालक पुत्रने खेलवा माटे एक रमकडु दीधुं, हवे जो ते बालक ते खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख खोवे तो तेमां तेना पितानो शुं दोष छे ? तेवीज रीतें ईश्वरे जीवोने जे हाथ, पग प्रमुख वस्तुउं आपीछे ते नित्य केवल धर्म करवाने वास्ते आपेली छे, पछी जे जीव पोतानी इच्छाथी ते वस्तुने पापकर्ममां प्रवर्त्तावे तो तेमां ईश्वरनो शुं दोष छे ?

उत्तरपक्ष—हे भव्य ? आ जे तमे बालकनु दृष्टांत आप्युं ते समीचीन नथी कारण के बालकना मातपिताने ए ज्ञान नथी के बालकने खेलवा वास्ते आपणे जे वस्तु आपिये छिये ते खेलवानी वस्तुथी आ बालक पोतानी आंख फोडी नाखशे, जो कदापि बालकना मातपिताने ए ज्ञान होत के आ बालक खेलवानी वस्तुथी पोतानी आंख फोडी नाखशे तो ते माता पिता कदापि तेना हाथमां ते खेलवानी वस्तु आपत नहि, जो कदी जाणवा छतां आपे तो ते तेनां मातपिता नथी परंतु परम शत्रु छे तेवीज रीतें ईश्वर मातपिता तुल्य छे अने तमे अमे तेनां बालक छियें जो ईश्वर जाणता हता के में आ जीवोने रच्या, तेउने हाथ, पग, मन इंद्रियादि सामग्री आपी छे, आ जीव ते सामग्रीथी बहु पाप करीने नरकमा जानार छे, तो पछी ईश्वरें ते जीवने शा माटे रच्यो? जो कदी एम कहो के ईश्वर ए वात जाणता न होता के मे धर्म करवाने आपेली सामग्रीथी पाप करीने ते जीव नरकमां जाशे, तो पछी ईश्वर आपना केहेवाथीज अज्ञानी, असर्वज्ञ, सिद्ध थाय छे जो कदी एम कहो के ईश्वर जाणता हता के आ जीव मारी आपेली सामग्रीथी पाप करीने नरक जवानो छे तो पछी अमने रचनार ईश्वर परम शत्रु थया के नहि ? प्रयोजन विना राक जीवोने सामग्रीद्वारा पाप करावीने शा माटे तेउने नरकमा नाख्या ? ज्यारे सामग्रीद्वारा प्रथम पाप कराव्या अने पछी नरकमा जवानी शिक्षा करी त्यारे आ तमारा केहेवाथी ईश्वर करता अधिक अन्यायी कोइ नथी, कारण के प्रथम तो ते जीवने रच्यो, पछी नरकमा नाख्यो बस आथीज तमे ईश्वरने अन्यायी,

असर्वज्ञ, निर्दय, अज्ञानी, वृथा मेहेनती इत्यादि कलंक दीधां. ते कारणथी निर्मल जीव ईश्वरे रच्या नथी ए प्रथम पक्षोत्तर

द्वितीय पक्षोत्तर–जो एम कहो के ईश्वरें पुण्यवालाज जीव रच्याछे तो ते पण तमारुं केहेवुं मिथ्या छे कारण के जो पुण्यवालाज सर्व जीव हता तो गर्भमांज अंधा, लंगडा, लूला, बहेरा, मूंगा होवापणु, भूंडुं रूप, नीच अथवा निर्धन कुलमां जन्मवा पणुं, जावजीव दुःखी रेहेवुं, खावा पीवाने पुरुं न मलवुं, महाकष्टकारक मेहेनत करी पेट भरवुं, आ सर्व पुण्यना उदयथी होइ शकतुं नथी, वली पुण्य कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य केम लगावी दीधुं ? जो कदी कर्या विनाज जीवोने ईश्वरें पुण्य लगावी दीधु तो तेवीज रीतें धर्म कर्या विनाज जीवोने स्वर्ग तेमज मोक्ष केम नथी पहोंचाडी शकता ? शास्त्रोपदेश करावीने, भूखें मरावीने, तृष्णा छोडावीने, राग द्वेष मिटावीने, घरबार तजावीने, साधु बनावीने, टुकडा मगावीने, दया, दम, दान, सत्यवचन, चोरीनो त्याग, स्त्रीनो त्याग, इत्यादि अनेक साधन करावीने पछी स्वर्ग मोक्षमां पहोंचाडवा, आ संकट ईश्वरें फोकट उत्पन्न करीने जीवोने शा माटे दुःख दीधु. आ वातथी तो ए प्रतीत थायछे के ईश्वरने कांइ समजण नथी.

तृतीय पक्षोत्तर– जो कदी एम कहो के ईश्वरें पापसंयुक्तज जीव रच्या छे, तो पछी कर्या विनाज जीवोने पाप लगावी दीधां तेमां तो ईश्वरें अमारुं सत्तानाश करी दीधुं. हवे अमे कोनी पासे जइ विनति करियें के गुन्हा कर्या विना ईश्वर अमने पाप लगावे छे, जेथी आप तेमने मना करो के कर्याविना अमने पाप न लगावे, एवा अन्यायी ईश्वरनुं तो कदी नाम पण लेवु न जोइयें तथा जो ईश्वरें पापसंयुक्तज सर्व जीव रच्या छे, तो राजा, मंत्री, शेठ, सेनापति, धनवान् इत्यादिना घरमां उत्पन्न थवु, नीरोगी काया, सुदर रूप, सुंदर शरीर, घरमां आदर सन्मान, वहार यशकीर्त्ति, पचेंद्रिय. विषयभोग, इत्यादि सामग्री प्राप्त थवानो पापथी कदी संभव होतो नथी ते कारणथी जीवोने केवल पापवान् ईश्वरें रच्या नथी. इति.

चतुर्थ पक्षोत्तर–जो एम कहो के अर्धोअर्ध पुण्य पापवाला जीव ई-

श्वरें रच्या ठे तो ते पक्ष पण यथार्थ नथी, कारण के अरधा सुखी अ-
रधा दुःखी एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी इति

पचम पक्षोत्तर– पांचमो पक्ष पण ठीक नथी, सुख थोडु अने दुःख
विशेष एवा पण सर्व जीव देखवामां नथी आवता, परतु सुख विशेष
अने दुःख अल्प, एवा वहु जीव देखवामां आवे ठे इति

षष्ट पक्षोत्तर– ठठ्ठो पक्ष पण समीचीन नथी सुख घणु अने दुःख
थोडु एवा पण सर्व जीव देखवामां आवता नथी, दुःख वहु अने सुख
अल्प, एवा वहु जीव देखवामां आवे ठे आ हेतुउथी ईश्वर जीवोने
कोइपण व्यवस्थावाला रची शकता नथी तो पठी सृष्टिना कर्त्ता ईश्वर
केम सिद्ध थइ शके ठे ? कदी थइ शकता नथी तथा ज्यारे ईश्वरें सृष्टि
रची न होती त्यारें ईश्वरने शुं दुःख हतुं ? अने ज्यारे सृष्टि रची
त्यारे शु सुख थयु ?

पूर्वपक्ष–ईश्वर तो सदा परम सुखी ठे शुं ईश्वरमा कांइ न्यूनता ठे
के ते न्यूनताने पूर्ण करवा वास्ते सृष्टि रचे ठे ते तो जगत्मा पोतानी
ईश्वरता प्रगट करवाने सृष्टि रचे ठे

उत्तर पक्ष–ज्यारें ईश्वरें सृष्टि रची न होती त्यारें तो ईश्वरनी ईश्व-
रता प्रगट न होती अने ज्यारे सृष्टि रची त्यारे ईश्वरता प्रगट थइ,
तो प्रथम ज्यारें ईश्वरनी ईश्वरता प्रगट न होती थइ त्यारे तो ईश्वर
वहुज उदास, तेमज अपूर्ण मनोरथवाला अने ईश्वरता प्रगट करवामां
विह्वल हता आ हेतुथी अवश्य ईश्वरने दुःख होवु जोइयें ज्यारें
ईश्वर सृष्टिनी पेहेला एवा दुःखी हता त्यारे निरुद्यमी केम वेसी
रह्या हता ? आ सृष्टिनी पेहेला वीजी सृष्टि रचीने पोतानु दुःख केम
दूर कर्यु न होतु ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरें जे सृष्टि रची ठे ते जीवोने धर्म करावीने तेउने अनंत
सुख देशे आ परोपकार वास्ते ईश्वरें सृष्टि रची ठे

उत्तरपक्ष–धर्म करावीने जीवोने सुख देवु ते तो तमारा केहेवा मु-
जव परोपकार थयो, परतु जेउ पाप करीने नरकमा गया तेउना उपर
शु उपकार कर्यो ? तेउने दुःखी करवाथी शु ईश्वर परोपकारी थइ शके ठे?

१ सारो वा प्रमाणसिद्ध सत्य.

पूर्वपक्ष–तेउने नरकमांथी काढीने पढी स्वर्गमां स्थापन करशे;

उत्तरपक्ष–तो पढी प्रथमज नरकमां केम जवा दीधा ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरज सर्व पुण्यपापादि करावे ढे जीवने आधीन कांइपण नथी. ईश्वर जे चाहे ढे ते करावे ढे. जेम काष्ठनी पुतलीने बाजीगर जेम चाहे ढे तेम नचावे ढे अने पुतली स्वाधीन नथी तेम.

उत्तरपक्ष–जो जीवने कांइ आधीन नथी तो जीवने सारा नरसानुं फल पण न जोइयें कारण के जो कोइ सरदार कोइ नोकरने फरमावे के तमे आ काम करो पढी नोकर सरदारना हुकम मुजब ते काम करे, अने ते काम सारु अथवा नरसुं ढे तो शुं पढी ते सरदार ते नोकरने कांइ शिक्षा करी शके ढे ? कांइ पण करी शकता नथी. तेवीज रीतें ईश्वरनी आज्ञाथी जो जीवें पुण्य अथवा पाप कर्या तो पढी पुण्य पापनुं फल जीवोने नज मलवु जोइये ज्यारें पुण्य पाप जीवनां कर्यां थतां नथी त्यारें स्वर्ग तेमज नरक पण जीवने न होवां जोइयें पढी जीवने, नरक, स्वर्ग, तिर्यक् तेमज मनुष्य ए चार गति पण न होय ज्यारे चार गति न होय त्यारे संसार पण न होय. जो संसार न होय तो वेद, पुराण, तौरे, तजबूर, इंजिल प्रमुख शास्त्र पण न होय ज्यारें शास्त्र न होय त्यारें शास्त्रना उपदेशक पण न होय, ज्यारें शास्त्रना उपदेशक पण होय नहि त्यारे ईश्वर पण नहि. जो ईश्वरज नहि तो पढी सर्व शून्यता सिद्ध थइ आ कलंक केम मटशे ?

पूर्वपक्ष–आ जगत् बाजीगरनी बाजी जेवु ढे, अने ईश्वर तेना बाजीगर ढे तेथी ईश्वर आ जगत्ने रचीने खेलथी क्रीडा करेढे नरक, स्वर्ग, पुण्य तेमज पाप कांइ नथी

उत्तरपक्ष–जो ईश्वरें क्रीडाने माटे जगत्नी रचना करी तो क्रीडाज मात्र तेनुं फल थवु जोइयें परंतु आ जगत्मां तो कुष्टी, रोगी, शोकी, धनहीन, बलहीन, महादुःखी इत्यादि महाप्रलाप करी रह्याढे, जेउने देखीने दयावश थवाथी अमारां रोम उंचां थायढे. तो शुं पढी ईश्वरने आ दुःखी जीवोने देखीने दया नथी आवती ? जो ईश्वरने दया नथी आवती तो पढी निर्दयपण कदी ईश्वर थइ शकेढे ? वली जे क्रीडा करवा वाला ढे ते बालकनी पेठे रागी, द्वेषी, अज्ञानी होय ढे जो राग द्वेष ढे

तो तेमां सर्व दूषण ठे जो पोतेज अवगुणथी जरेला ठे तो ते ईश्वर शेना ? ते तो संसारी जीवठे वली जो राग द्वेषवाला हशे तो सर्वज्ञ कदापि न हशे, जो सर्वज्ञ नहि तो तेने ईश्वर कोण कही शकेठे ?

पूर्वपक्ष–जीवोए करेलां पुण्य पापने अनुसारें ईश्वर दंड दिये ठे, तेमा ईश्वरने शु दोष ठे ? जेवां जेणे (पुण्यपाप) कर्यां तेवां तेने फल दीधा

उत्तरपक्ष–आ तमारा केहेवाथी, आ संसार अनादि सिद्ध थइ गयो, वली ईश्वर कर्त्ता नहि एम सिद्ध थयुं वाह रे मित्र ? पोते पोतानी मेलेज मात थया कारण के जे जीव हाल ठे, अने जे कांइ तेउने अहिया फल मलेल ठे, ते पूर्वजन्ममां करेलु सिद्ध थयु वली जे पूर्व जन्म हतो तेमा जे दु ख सुख जीवने मलेल हतु, ते तेनी पेहेलांना पूर्वजन्ममां कर्युं हतु तेवी रीतें पूर्व पूर्व जन्ममां दु:ख सुख करवा अने उत्तरोत्तर जन्ममां सुख दु:खने जोगववा, एम करता संसार अनादि सिद्ध थायठे हवे विचारो के जगत्ना कर्त्ता ईश्वर केम सिद्ध थया ?

पूर्वपक्ष–अमें तो एकज परमब्रह्म पारमार्थिक सद्रूप मानियें ठियें

उत्तर– जो एकज परम ब्रह्म सद्रूप ठे, तो पठी आ जे सरल, रसाल, प्रियाल, हिताल, ताल, तमाल, प्रवाल प्रमुख पदार्थ अग्रगामी पणे करी जे प्रतीत थाय ठे ते शा कारणथी सत्स्वरूप नथी

पूर्वपक्ष–आ पूर्वोक्त पदार्थ जे प्रतीत थाय ठे ते सर्व मिथ्या ठे तेमज अनुमानप्रपच पण मिथ्या ठे प्रतीत होवाथी जे एवा ठे ते एवा ठे, जेम के सीप, चांदीरूप, तेवोज आ प्रपच ठे आ अनुमानथी प्रपच मिथ्यारूप ठे अने एक ब्रह्मज पारमार्थिक सद्रूप ठे

उत्तरपक्ष– हे पूर्वपक्षि ! आ अनुमान केहेवाथी आप तीक्ष्ण बुद्धिमान् नथी, तेज हवे बताविये ठियें आ जे प्रपच तमे मिथ्यारूप मानेल ठे ते मिथ्या त्रण तरेहनु होय ठे एक तो अत्यत असत् रूप, बीजु ठे तो कांइ अन्य, अने प्रतीति होय अन्य तरेहनी, अने त्रीजु अनिर्वाच्य, आ त्रणे मिथ्यारूप प्रपचमांथी कया प्रपचने आप मानोठो ?

पूर्वपक्ष–आ त्रणे पक्षमांथी प्रथमना बे पक्षनो तोअमने स्वीकारज नथी त्रीजो अनिर्वाच्य पक्ष अमें मानियें ठियें तेथी आ प्रपच अनिर्वाच्यमिथ्यारूप ठे.

१ तेना कारणरूप पाप पुण्य

उत्तरपक्ष–प्रथम तो आप ते कहो के अनिर्वाच्य शु वस्तु ठे? अर्थात् आप अनिर्वाच्य कइ वस्तुने कहो ठो? (१) शु वस्तुने केहेवावालो शब्द नथी? (२) अथवा शब्दनुं निमित्त नथी? प्रथमनो विकल्प तो कल्पनाज करवा योग्य नथी आ सरल ठे, आ रसाल ठे, एवा शब्द तो प्रत्यक्ष सिद्ध ठे बीजो विकल्प लहिये, तो शुं शब्दनुं निमित्त ज्ञान नथी? के पदार्थ नथी? प्रथम पक्ष तो समीचीन नथी सरल, रसाल, ताल, तमाल, प्रमुखनुं ज्ञान तो प्राणी प्राणी प्रत्ये प्रतीत ठे सर्व बुद्धिवंत जीव जाणे ठे के सरल, रसाल, ताल, तमाल प्रमुखनुं ज्ञान अमने ठे बीजो पक्ष–पदार्थ नावरूप नथी? के अनावरूप नथी? जो एम कहो के पदार्थ नावरूप नथी अने प्रतीत थाय ठे, तो आपने विपरीत आख्याति मानवी पडी, अने अद्वैतवादियोना मतमां विपरीत आख्याति मानवी ते महादूषण ठे. बीजो पक्ष-जो पदार्थ अनावरूप नथी तो नावरूप सिद्ध थया, त्यारे तो सत्ख्याति मानवी पडी, अने ज्यारे अद्वैतमतनो अंगीकार कर्यो अने सत्ख्याति मानवी पडी त्यारे सत्ख्यातिना मानवाथी अद्वैतमतना मूलने कुहाडाथी कापी नाख्यु एवी रीते कदापि अद्वैतमत सिद्ध थशे नहि.

पूर्वपक्ष–नावरूप तथा अनावरूप ए बने प्रकारें वस्तु नथी.

उत्तरपक्ष–अमे आपने पुठिये ठियें के नाव तेमज अनाव आ बंनेना अर्थ जे लोकमा प्रसिद्ध ठे तेज आपें मान्या ठे? के तेनाथी विपरीत अन्य तरेहना अर्थ आपें मान्या ठे? जो कदी प्रथम पक्ष मानशो तो ज्यां नावनो निषेध करशो त्यां अवश्य अनावने मानवो पडशे अने ज्यां अनावनो निषेध करशो त्यां अवश्य नावने कबुल करवो पडशे, कारण के बने परस्पर विरोधी ठे तेथी एकनो निषेध बीजानो विधि अवश्य कबुल करावशे ए रीतें अनिर्वाच्यता तो जड मूलथी नाश पामी हवे बीजो पक्ष लेशो तो तेथी अमने कांइ हानि नथी, कारण के अलोकिक अर्थात् आपना मन कल्पित शब्द तेमज शब्दनु निमित्त जो नाश पामशे तो तेथी लौकिक शब्द तथा लौकिक शब्दनुं निमित्त कदापि नाश पामशे नहि; तो पठी अनिर्वाच्य प्रपच केवी रीते सिद्ध थशे? जो अनिर्वाच्य सिद्ध न थयो तो प्रपच मिथ्या केम सिद्ध थायज? तो पठी एकज अद्वैत ब्रह्म पण केम सिद्ध थाय?

पूर्वपक्ष–अमे तो जे प्रतीत न थाय तेने अनिर्वाच्य कहियें छिये

उत्तरपक्ष–आ तमारा केहेवामां तो वहुज विरोध आवे छे जो कदी प्रपंच प्रतीत थतो नथी तो आपे पोताना प्रथम अनुमानमां प्रपचने प्रतीयमान हेतुस्वरूपपणे शा माटे ग्रहण कर्यो ? अने प्रपचने अनुमान करती वेला धर्मिपणे शा माटे ग्रहण कर्यो ? जो एम कहेशो के प्रपचने धर्मीपणे अथवा प्रतीयमान हेतुपणे ग्रहण करवामां शु दोष छे? तो पछी आपे उपर जे प्रतिज्ञा करी हती के अमे तो जे प्रतीत न होय तेने अनिर्वाच्य कहिये छिये, तो हवे प्रपच अनिर्वाच्य केवी रीते सिद्ध थयो ? ज्यारे प्रपच अनिर्वाच्य नहि त्यारे तो भावरूप अथवा तो अभावरूप सिद्ध थशे आ वने पक्षमा कोइपण रूपे प्रपच मानवाथी पूर्वोक्त विपरीतख्याति तथा सत्ख्याति रूप वने दूषण वली आपना गलामा रसी नाखे छे हवे भागी क्यां जशो ? वली अमे आपने पुछिये छिये के आ प्रपचने तमे जे अनिर्वाच्य मानोछो ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी मानोछो ? के अनुमान प्रमाणथी ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो आ प्रपचने सत् स्वरूपज सिद्ध करेछे जेवा जेवा पदार्थ छे, तेवु तेवुज प्रत्यक्ष ज्ञान उत्पन्न थाय छे वली प्रपचस्वरूप एवु छे के, परस्पर जुदी जुदी जे वस्तुओ छे ते पोत पोताना स्वरूपमा भावरूप छे, अने वीजा पदार्थना स्वरूपनी अपेक्षाये अभावरूप छे आ इतरेतर विविक्त वस्तुओनेज प्रपंच रूप मानेल छे, तो पछी प्रत्यक्ष प्रमाण, प्रपचने अनिर्वाच्य केवी रीते सिद्ध करी शके छे ?

पूर्वपक्ष–उपर वतावेल अमारो जे पक्ष छे तेने प्रत्यक्ष कांइ पण हानि करी शकतु नथी, कारण के प्रत्यक्ष तो विधायकज छे जो कदी प्रत्यक्ष एक वस्तुमा वीजी वस्तुना स्वरूपनो निषेध करे तो अमारा पक्षने वाध करनार ठरे, परतु प्रत्यक्ष प्रमाण तो एवु नथी प्रत्यक्ष प्रमाण तो अन्य वस्तुमा अन्य वस्तुनु स्वरूप निषेध करवाने वुठु (कुठ) छे

उत्तर पक्ष–आ पण आपनु कहेवु असत्य छे अन्य वस्तुना स्वरूपनो निषेध कर्या विना प्रस्तुत वस्तुना यथार्थ स्वरूपनो कदापि वोध नहि थाय पीलु इत्यादि वर्णोना अभावनो ज्यारे वोध थशे, त्यारेज कालु एवा रूपनो वोध थशे तेमज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी यथार्थ व-

स्तुस्वरूप ग्रहण करी शकाशे, त्यारेज अवश्य अपर वस्तुना स्वरूपनो निषेध पण त्यां जाणी शकाशे जो कदी अन्य वस्तुना निषेधने अन्य वस्तुमां प्रत्यक्ष नहि जाणशो तो ते वस्तुना विधिस्वरूपने पण प्रत्यक्ष नहि जाणी शको, केवल जे वस्तुना स्वरूपने ग्रहण करवुं छे तेज अन्य वस्तुना स्वरूपनु निषेध करावकुं छे ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाण विधि अने निषेध बनेने ग्रहण करे छे, त्यारे तो प्रपच मिथ्यारूप कदापि सिद्ध नहि थाय, ज्यारे प्रपंच मिथ्यारूप प्रत्यक्ष प्रमाणथी न सिद्ध थयो, त्यारे पछी परम ब्रह्मरूप एकज अद्वैत तत्त्व केवी रीते सिद्ध थयुं ? वली जो तमे प्रत्यक्षने नियमपूर्वक विधायकज मानशो तो तो विद्यानी पेठे अविद्यानो पण विधि तमारे मानवो पडशे हवे आ ब्रह्म अविद्यारहित प्रत्यक्ष प्रमाणथी ग्रहण कराय त्यारे तो अविद्या पण प्रत्यक्षथी निषेध ग्रहण थशे. पछी जे तमारु एम केहेवुं छे के प्रत्यक्ष जे छे ते विधायकज छे परतु निषेधक नथी ते केवुं प्रमाणरहित उन्मत्तवचन छे ? हवे जे अनुमान बतावबामां आवे छे तेथी साबीत थशे के आपना अनुमाननो पक्ष बाधित छे. अमारुं अनुमान एवु छे के, प्रपच मिथ्या नथी, असत्‌थी विलक्षण होवाथी; जे असत्‌थी विलक्षण छे ते आवो छे, जेवो आत्मा छे तेवोज आ प्रपंच छे. तथा प्रतीयमान जे आपनो हेतु छे ते ब्रह्मात्मानी साथे व्यभिचारी छे, जेम के ब्रह्मात्मा प्रतीयमान तो छे परंतु मिथ्यारूप नथी, जो एम कहो के ब्रह्मात्मा अप्रतीयमान छे तो वचनगोचर[1] नहि थाय, जो वचनगोचर[2] नथी तो तो आपने मुगा बनवु ठीक छे, कारण के ब्रह्म विना बीजुं तो काइ छे नहि, अने जे ब्रह्मात्मा छे ते प्रतीयमान नथी, तो पछी आपने अमे मुंगा विना बीजुं शुं कहियें ? प्रथम अनुमानमां आपें जे छीपनु दृष्टांत आप्यु हतु ते साध्यविकल छे, कारण के जे छीप छे तेज प्रपचनी अतर्गत छे, अने आप तो प्रपचने मिथ्यारूप सिद्ध करवा चाहोछो, ते कदापि सिद्ध थइ शकतु नथी. जे साध्य होय तेज दृष्टांतमां कही शकाय जो छीपनुं पण अत्यार सुधी सत् असत् पणुं सिद्ध नथी तो तेने दृष्टांतमां शा माटे लाववी जोइयें ? वली अमे आपने पुछियें छिये के आ जे तमे प्रथम अनुमान, प्रपंचने मिथ्या

१ वाणीने विषयरूप अर्थात् निर्वचनीय. २ निर्वचन योग्य

सिद्ध करवाने कह्युं हेतु ते अनुमान,प्रपचथी भिन्न छे के अभिन्न छे ? जो कहो के भिन्न छे तो पछी सत्य छे के असत्य छे ? जो एम कहो के सत्य छे तो ते अनुमानना सत्यनी पेठे प्रपच पण सत्यस्वरूपज छे जो एम कहो के असत्यस्वरूप छे तो पछी शु शून्य छे ? के अन्यथा ख्यात छे ? के अनिर्वचनीय छे ? प्रथमना बने पक्ष तो कदापि साध्यना साधक नथी, मनुष्यना शृगनी पेठे, तथा छीपना रूपानी पेठे अने त्रीजो जे अनिर्वचनीय पक्ष छे तेनो तो सभवज नथी, ते पोताना साध्यने केम सिद्ध करशे ?

पूर्वपक्ष–अमारू जे अनुमान छे ते व्यवहार सत्य छे ते कारणथी असत्य नथी पछी पोताना साध्यने केम साधी शकतु नथी ? मतलब के साधीज शकेछे

उत्तरपक्ष–अमे आपने पुछिये छिये के आ व्यवहार सत्यनु शु स्वरूप छे ? व्यवहरतीति (व्यवहार) एम जो तेनी व्युत्पत्ति करिये तो तो ज्ञाननुज नाम व्यवहार थयु, ज्ञानथी जे सत्यछे, ते पारमार्थिकज छे, आ पक्षमा सत् ख्यातिरूप प्रपच सिद्ध थयो ज्यारे प्रपच सत् सिद्ध थयो त्यारे तो एकज परम ब्रह्म सद्रूप अद्वैत तत्त्व कोइ पण रीतें सिद्ध नहि थइ शके, जो कदी कहो के व्यवहार नाम शब्दनु सत्य छे तो पछी आपने पुछिये छिये के जो व्यवहार नाम शब्दनु छे तो पछी शब्द, स्वरूपथी सत्यछे ? के असत्य छे ? जो एम कहो के शब्द सत्स्वरूप छे तो शब्दनी पेठे प्रपच पण सत्स्वरूप छे जो एम कहो के शब्द असत् स्वरूप छे तो पछी ब्रह्मादि, शब्दथी कह्या थका केवी रीतें सत्स्वरूप थइ शकशे ? कारण के जे पोतेज असत्स्वरूपछे ते बीजानी व्यवस्था करवाना के केहेवाना हेतुरूप कदी थइ शकता नथी

पूर्वपक्ष–जेम खोटो रूपियो साचा रूपियानी जेम क्रयविक्रयादि व्यवहारमा चालवाथी साचो रूपियो मनायछे,तेवीज रीतें अमारु अनुमान अगर जो के असत्स्वरूपछे तो पण जगतमा सत् व्यवहारथी प्रवर्त्तवाथी व्यवहार सत् छे,ते कारणथी पोताना साध्यने सिद्ध करनार छे

उत्तरपक्ष–हे भव्य ! आ तमारा केहेवाथी तमारु अनुमान पारमार्थिक असत्स्वरूप छे पछी जे दूषण असत्पक्षमा आपेला छे ते सर्व

अहींयां लागु पडेछे जो एम कहेशो के अमे अनुमानने प्रपचथी अभेद मानिये छिये तो तो प्रपचनी पेठे अनुमान पण मिथ्यारूप सिद्ध थयुं, पछी तो पोताना साध्यने केम साधी शकशे? आ पूर्वोक्त विचारथी प्रपंच मिथ्यारूप नथी, परंतु आत्मानी पेठे सत्‌रूपछे, तो पछी एकज ब्रह्म अद्वैत तत्त्वछे आ तमारु केहेवु केवी रीतें सत्य थइ शकेछे? कदी सत्य थइ शकशे नहि

पूर्वपक्ष–अमारी उपनिषदोमां तथा शकर स्वामिना शिष्य आनंदगिरि, शंकरदिग्विजयना त्रीजा प्रकरणमां लखेछे केः–"परमात्मा जगदुपादानकारणमिति" परमात्मा जे छे तेज आ सर्व जगत्‌नु कारण छे, कारण पण केवुं? उपादान रूपछे उपादान कारण तेने कहियें के जे कारण होय तेज कार्यरूप थइ जाय,आ केहेवाथी एम सिद्ध थयु के जे कांइ जगत्‌मां छे ते सर्व कांइ परमात्माज पोते बनी गया छे,तेथी जगत् परमात्मा रूपज छे हवे तमे सृष्टिकर्त्ता ईश्वर केम नथी मानता?

उत्तरपक्ष–वाह रे नास्तिकशिरोमणि? आप जे कांइ कहो छो ते विचार करीने कहो छो के केम? आ तमारा केहेवाथी तो पूर्ण नास्तिकपणुं तमारा मतमां सिद्ध थाय छे जुओ ज्यारे सर्व जगत्‌स्वरूप परमात्म रूपज छे, त्यारे तो नथी कोइ पापी, के नथी कोइ धर्मी, नथी कोइ ज्ञानी के नथी कोइ अज्ञानी, नथी नरक के नथी स्वर्ग, नथी साधु के नथी चोर; नथी सत्‌शास्त्र के नथी मिथ्या शास्त्र; तेमज जेवा गोमांस भक्षी तेवाज अन्नभक्षी, जेवु स्वभार्यासंग कामसेवन, तेवुज माता, बेहेन, दीकरी संग कामसेवन, जेवा चंडाल तेवाज ब्राह्मण, जेवा गद्धा तेवा सन्यासी, कारण के ज्यारे सर्व वस्तुना कारण ईश्वर परमात्माज थयां त्यारे तो सर्व जगत् एकरस एक स्वरूप छे, बीजुं तो कांइ छे नहि.

पूर्वपक्ष–अमें तो एक ब्रह्म मानिये छियें,अने एक माया मानिये छियें, तेथी तमे जे उपर बहु आल जजाल लख्यु ते सर्व मायाजन्य छे, अने ब्रह्म तो सच्चिदानद एकज शुद्धस्वरूप छे

उत्तरपक्ष–हे अद्वैतवादि! आ जे तमे पक्ष मान्यो छे ते बहुज असमीचीन छे जुओ माया जे छे ते ब्रह्मथी भिन्न छे के अभिन्न छे? जो कहो के भिन्न छे तो जड छे के चेतन छे? जो जड छे तो नित्य छे के

अनित्य छे ? जो कहो के नित्य छे तो अद्वैतमतना मूलनेज जस्म करे छे, कारण के ज्यारे ब्रह्मथी जेद रूप थइ, जडरूप थइ अने नित्यरूप थइ त्यारे तो पछी तमे पोते पोतानाज केहेवाथी द्वैतपथ सिद्ध कर्यो अने अद्वैतपथ जडमूलथी नाश पाम्यो जो एम कहो के अनित्य छे तो द्वैतता कदी दूर नहि थाय, कारण के जे नाशवत छे ते कार्यरूप छे, अने जे कार्य छे ते कारणजन्य छे, तो पछी ते मायानु उपादान कारण शु छे ? ते केहेवु जोइये जो एम कहो के बीजी माया तो तो अनवस्था दूषण छे, अने अद्वैत त्रणे कालमा कदापि सिद्ध नहि थाय जो कदी ब्रह्मनेज उपादान कारण मानशो तो तो ब्रह्मज पोते सर्व काइ बनशे वली पूर्वोक्त दूषण आव्यां जो कदी मायाने चैतन्य मानशो तो पण तेना तेज पूर्वोक्त दूषण आवशे, जो एम कहेशो के माया ब्रह्मथी अजेद छे तो तो ब्रह्मज केहेवु जोइये, माया नहि केहेवी जोइये

पूर्वपक्ष–अमे तो मायाने अनिर्वचनीय मानिये छियें

उत्तरपक्ष–आ अनिर्वचनीय पक्षनु उपर खडन करी आव्या छिये, तेवीज रीते अहींया करवु वली अनिर्वचनीय जे शब्द छे तेमा निस् जे उपसर्ग छे तेनो अर्थ तो निषेधरूप कर्यो छे कलाप व्याकरण जुओ बाकी जे शब्द छे ते या तो जावनो वाचक छे अथ वा तो अजावनो वाचक छे ? जो जावनो निषेध करशो तो अजाव आवशे अने जो अजावनो निषेध करशो तो जाव आवी जशे आ जाव अजाव बे उपरात त्रीजु वस्तुनु रूप कोइ नथी ते कारणथी अनिर्वचनीय शब्द दजी पुरुषोए छलरूप रचेलो प्रतीत थाय छे आ केहेवाथी द्वैतज सिद्ध थयु, अद्वैत नहि

पूर्वपक्ष–आ जे अद्वैतमत छे, तेना मुख्य आचार्य शकरस्वामी छे, जेणे सर्व मतोनु खमन करी अद्वैतमत सिद्ध करेल छे, तो पछी एवा शकरस्वामी, साक्षात् शिवना अवतार, सर्वज्ञ, ब्रह्मज्ञानी, शीलवान्, सर्व सामर्थ्ययुक्त, तेमना अद्वैतमतनु खमन करनार कोण छे ?

उत्तरपक्ष–अहो वहाला मित्र !! आपनी समजण मुजब तो जरूर जेम आप कहो छो तेमज छे, परतु शकरस्वामिना शिष्य आनदगिरिये शकर दिग्विजयना अठावनमा प्रकरणमा शकरस्वामिनु जे वृत्तांत लखेल छे ते

वांचवाथी तो एम प्रतीत थाय छे के शंकरस्वामी सर्वज्ञ नहि पण कामी छे, अज्ञानी छे, तेमज असमर्थ छे ते लखाणथी एम पण प्रतीत थाय छे के वेदांतियोनुं अद्वैत ब्रह्मज्ञान ज्यां सुधी आ स्थूल देह रहे छे त्यां सुधीज रहे छे, परंतु आ शरीर छूट्या पछी कोइ वेदांतियोने ब्रह्मज्ञान रेहेशे नहि

पूर्वपक्ष-ए केवुं शंकरस्वामिनुं वृत्तांत छे जेथी तमारी पूर्वोक्त विना सिद्ध थाय छे ?

उत्तरपक्ष-जो आपने वृत्तांत सांभलवु छे तो अमारे ढील नथी. हमणांज वतावियें छियें "ज्यारे शंकरस्वामियें मंडनमिश्रनो पराजय कर्यो, त्यारे मंडनमिश्रें यतिव्रत लीधु, अने मंडनमिश्रनी पत्नी सरसवाणी पोताना पतिये यतिव्रत लीधाथी ब्रह्मलोकमां चाली, सरसवाणीने गमन करती देखीने शंकरस्वामिये जीवन दुर्गा मंत्रथी दिग्बंधन कर्युं, पछी केहेवा लाग्या के हे सरसवाणि ! तु ब्रह्मशक्ति छो, ब्रह्मना अशभूत मंडनमिश्रनी तु पत्नीछो, उपाधियकी सर्वेने फलित छो, ते कारणथी मारीसाथे प्रसंग लइने पछी तमारे गमन करवु योग्य छे पछी सरसवाणीये शंकरस्वामिने कह्युं के पतिना संन्यासथी प्रथमज वैधव्य पणाना भयथी मे पृथ्वी तजी छे, तेथी हवे पृथ्वीनो स्पर्श नहि करुं हे यति ! तुं तो पृथ्वीपर स्थित छो तेथी तारा प्रसंगमाटे एकविषय स्थिति केम होय एम शंकरस्वामिने केहेनारीने फरी शंकरस्वामिये कह्युं के-हे माता ! तो पण पृथ्वीथी उंचे छ हाथ आकाशमां रहो अने मारी साथे सर्व वचननो प्रपंच संचार करीने पछी गमन करो त्यारबाद शरुआतमां शंकरस्वामि साथे सर्वशास्त्र, वेद, इतिहास, पुराणोविषे समय प्रसंग करीने शंकरनो तिरस्कार करवामाटे जेमा दुःखें प्रवेश थइ शके छे एवु जे कामशास्त्र तेना नायक तथा नायिकाभेद संबधी, विस्तार पूर्वक सरसवाणी शंकरने पूछवा लागी, परंतु शंकरस्वामी ते विषयने जाणता न होता तेथी उत्तर दइ शक्या नहि मौन रह्या पछी सरसवाणी शंकरस्वामिने सत्य केहेवा लागी के आ शास्त्र तमारा जाणवामां आव्यु नथी निश्चयपूर्वक ते शास्त्र तो हुंज जाणु छुं. अवसरना जाणनार शंकर स्वामी केहेवा लाग्या के-हे माता ! आप अहींयांज छ महिना रहो, पछी सर्व अर्थनो निश्चय करी हु तमारा प्रश्ननो उत्तर आपीश. त्यार-

ाद शकरस्वामी आग्रहपूर्वक सरस वाणीने त्यांज आकाशमंड-
ामां स्थापन करीने तथा सर्व शिष्योने योग्य स्थानके मोकलीने
 हस्तामलक २ पद्मपाद ३ विधिवत् ४ आनंदगिरि ए चार शिष्यो
हवर्तमान पूजाता थका ते नगरथी पश्चिमदिशा नामा गढमा गया
रसवाणीना प्रश्नोनो उत्तर जाणवा माटे, ते नगरनो राजा मरी गयो
ुतो, अने तेनु शरीर ते समये चितामां प्रज्वलित थतु हतुं ते शरीरने
खीने, शकरस्वामिये पोतानु शरीर ते नगर पासेना एक पर्वतनी गुफामा
थापन करीने शिष्योने कह्यु के तमारे आ शरीरनु रक्षण करवु, अने
ोते परकायप्रवेश विद्याथी, लिगशरीरसंयुक्त, अभिमानसहित, ते
ाजाना शरीरमा ब्रह्मरंध्रथी प्रवेश कर्यो तत्काल राजा सजीवन थया,
ीतोपचार कर्यो, अने उत्सव करी तेने नगरमा लाव्या, राजा मृत्यु
ाम्या नथी एम प्रसिद्ध करी दीधु हवे शकर स्वामिने लोकोयें राज्या-
ननपर स्थापन कर्या पछी राज्यसिहासनपरथी उठी स्वामिजी पट्टरा-
ीना मेहेलमा गया त्या जइ राणीसाथे कामक्रीडा करवा लाग्या हवे
ाकरस्वामिनी कुशलताथी तेने आलिगन करवाथी सुख संजोग उत्पन्न
थयो, तेथी शकरस्वामिये राणीना मुखनी साथे पोतानु मुख जोड्यु,
ोतानी छाती राणीना बन्ने स्तनो पर लगाडी, तेवीज रीतें नाभि पण
ाभि साथे जोडी, पोताना पगथी राणीना पग संकोच्या, अर्थात् जघा-
ा जघा मेलवी, अर्थात् एक शरीरवत् थइ गया बने जणा अत्यत
ाढ आलिगन करवा लाग्या, शकरस्वामी राणीना कक्षास्थानमा हस्त
्पर्श करवाथी बहुज सुखमग्न थया राणी तेना आलाप, चतुराइ
ेखी चित्तमा विचारवा लागी के शरीरमात्रथी तो आ मारो पति छे,
रतु तेनो जीव मारो पति नथी, आ कोइ सर्वज्ञ छे एवो विचार क-
ीने राणीये पोताना नोकरोने चारे दिशामा मोकल्या एवा फरमानथी के
र्वत अथवा गुफामा चार योजन सुधीमा जे जे शरीर जीवरहित होय
े सर्व चितामा भस्म करी द्यो शकरस्वामी विषयमा अत्यत लुब्ध
थया राणीना नोकरो शकरस्वामिना शरीरनु रक्षण करनारा चार
शिष्योने देखी ते शरीर लइ चितामा राखी तेने अग्निसंस्कार करवा
ाग्या शकरस्वामिना चारे शिष्यो नगरमां आव्या, त्या स्वामिजीने काम

लोलुप तथा विषयमां अति आसक्त देखीने राजा (शंकरस्वामी) सन्मुख नाटक करवा लाग्या शकरस्वामिने परोक्तिथी प्रतिबोध करवा लाग्या ते परोक्ति नीचे मुजब

(१) " यत्सत्यमुख्यशब्दार्थानुकूलं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (२) नह्येतत्त्वं विदितं नृपु जावं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (३) विश्वोत्पत्त्यादिविधिहेतु तत्त्व, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (४) सर्वचिदात्मकं सर्वमद्वैतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्? (५) परतार्किकैरीश्वरसर्वहेतु, स्तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (६) यद्वेदांतादिभिर्ब्रह्म सर्वस्थं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (७) यज्जैमिनिनोक्तमखिलकर्म, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (८) यत् पाणिनि. प्राह शब्दस्वरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन् (९) यत् सांख्यानां मतहेतुभूतं,तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१०) अष्टांगयोगेन अनंतरूपं, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (११) सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१२) नह्येतदद्दश्यप्रपंच तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१३) यद् ब्रह्मणोब्रह्मविषावीश्वराद्यजवन्, तत्त्वमसि तत्त्वमसि राजन्! (१४) त्वद्रूपमेवमस्माभिर्विदितं राजन्! तत्र पूर्वयत्याश्रमस्थम् " आ परोक्तियोथी राजा प्रतिबोध पाम्या, सर्व विद्यमान राजाना देहमांथी निकलीने चाल्या गया, पर्वतनी कदरामां शोधतां शरीर प्राप्त न थयु, एटलामां विशेष शोध करतां शरीरने चितामां दीठु, देखतांज तेमां कपालना मध्यथी प्रवेश कर्यो शरीरनी आसपास चारे बाजुए अग्नि सलगतो हतो तेथी निकलवु दुष्कर थयु, एटले लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी, स्तुति करतांज लक्ष्मीनृसिंहें स्वामिजीने जीवता अग्निमांथी बहार काढ्या इति

हे भव्य! हवे विचार करी जुओ. मे आपने प्रथम जे कह्युं हतुं ते सत्य छे के नहि? प्रथम तो (१) ज्यारे सरसवाणीये पुछेला प्रश्नोनो उत्तर शंकरस्वामी न आपी शक्या, त्यारे हवे कयो बुद्धिमान् निष्पक्षपाती स्वामिजीने सर्वज्ञ कही शके छे (२) वली ज्यारे पटराणी साथे विषयसेवन कर्युं त्यारे कामी केहेवामां कांइ पण शंका रहेछे? (३) अने ज्यारे शिष्योयें आवीने प्रतिबोध कर्यो त्यारे अज्ञानी पण अवश्य साबीत थया (४) अने ज्यारे चितामांथी निकली शक्या नहि, अने

काढवाने लक्ष्मीनृसिंहनी स्तुति करी अने लक्ष्मीनृसिंहे आवीने सलगता अग्निमांथी काढ्या, त्यारे शकरस्वामी असमर्थपण सिद्ध थया हवे ज्यारे शकरस्वामिये फरीथी आवीने सरसवाणीना प्रश्नोना उत्तर आप्या, त्यारे सरसवाणीये कह्यु–हे स्वामिन् ! तु सर्वज्ञ छो जुओ के–मरण पामेलाना शरीरमां प्रवेश करीने, तेहनी राणी साथे विषयसेवन करीने, तेमज राणी पासेथी कांइक कामशास्त्रनी वातो शीखीने शु सर्वज्ञ थइ शकाय छे ? सर्वज्ञ तो थइ शक्या नहि, परतु आ तो गढ्ढा उटनो न्याय थयो सरसवाणीये स्वामिने सर्वज्ञ कह्या, अने स्वामियें सरसवाणीने सर्वज्ञ कही दीधी वाह शु सर्वज्ञोनी जोडी मली ? सरसवाणी ब्रह्मनी शक्ति थइ, वली स्त्री बनीने मंडनमिश्रनी साथे विषयसेवन करवा लागी, पाछी सर्वज्ञ पण बनी गइ, तेम शकरस्वामी परस्त्री साथे विषयसेवन करी, कांइक कामशास्त्र शीखी सर्वज्ञ थइ गया, आ ते गढ्ढाउटनो न्याय थयो के बीजु शु थयु ? ज्यारे शकरस्वामी पोतानु स्थूल शरीर छोडी राजाना शरीरमा दाखल थया, अने ब्रह्मविद्या सर्वे भूली गया त्यारे तो शिष्योने उपदेश करवो पड्यो जो न भूली गया होत तो तेओने तत्त्वमसिनो उपदेश करवानी शी जरुर हती ? ज्यारे शकरस्वामी स्थूल शरीरने बदली शक्या, अने परब्रह्मविद्याने भूली गया, त्यारे तो ब्रह्मविद्यानो सबध, न लिंगशरीरनी साथे रह्यो के न आत्मानी साथे रह्यो, परतु स्थूल शरीरनीज साथे रह्यो, तेथी एम सिद्ध थायछे के– ज्यारे वेदांती मरण पामेछे त्यारे तेनु ज्ञानपण नाश पामेछे कारण के स्थूलशरीरनी सायेज ज्ञाननो सबध रहेछे, आत्मानी साथे रेहेतो नथी वली आपें एम कह्यु हतु के– शकरस्वामिये प्रगट कथन करेला अद्वैत मतने कोण खडन करी शकेछे ? तो हे भव्य ! ज्यारे शकरस्वामिनु चरित्रज असमजसछे, तो पछी तेनो कथन करेलो मत कोण सयुक्तिक समजी शके छे ?

पूर्वपक्ष – "पुरुषएवेद" इत्यादि श्रुतियोथी अद्वैतज सिद्ध थायछे

उत्तरपक्ष – आ पण तमारू केहेवु असत् छे, कारण के जो पुरुषमात्ररूप अद्वैततत्त्व होय तो तो आ जे कोइ सुखी, कोइ दुःखी इत्यादि देखाय छे ते सर्व परमार्थथी असत् थइ जशे ज्यारे एम थशे त्यारे आ जे केहेवु छे के– "प्रमाणतोऽधिगम्य ससारनैर्गुण्य तद्विमुखया प्रज्ञया

तदुच्छेदाय प्रवृत्तिरित्यादि–अर्थः–संसारनुं निर्गुणपणुं प्रमाणथी जाणीने, संसारथी विमुख बुद्धि थइने, आ संसारनो उच्छेद करवामाटे प्रवृत्ति करे पछी आ केहेवु ते आकाशना फुलना सुगंधनु वर्णन करवा सरखुं छे, कारण के ज्यारे अद्वैतरूपज तत्त्व छे त्यारे तो नरकादि भवभ्रमणरूप ससार क्यां रह्यो ? के ससारने निर्गुण जाणी तेनो उच्छेद करवानी प्रवृत्ति थाय

पूर्वपक्ष.– तत्त्वथी पुरुष अद्वैतमात्रज छे, अने आ जे संसार निर्गुण वर्णन करेल छे, ते जेम चित्रामण करेली स्त्रीनां सर्व अंगोपांग सारां नरसा प्रतीत थाय छे तेमज सर्व संसार प्रतीत थायछे, सर्व जीवोने हमेशां तेमज प्रतिभासन थइ रहेलछे. परंतु चित्रामण करेली स्त्रीना अंगोपांगना सारा नरसापणानी पेठे सर्व भ्रांतिरूप अथवा भ्रांतिजन्य छे.

उत्तरपक्षः–आ जे तमारूं केहेवु ते असत् छे, आ वातमां कांइ वास्तविक प्रमाण नथी. जो कदि अद्वैत सिद्ध करवाने पृथग्भूत प्रमाण मानशो तो तो द्वैतापत्ति थशे, कारण के प्रमाण विना कोइनो पण मत सिद्ध थतो नथी, जो कदि प्रमाण विनाज सिद्ध मानशो, तो तो सर्व वादियो पोल पोताना मानेला मतने सिद्ध करी लेशे. वली भ्रांति पण प्रमाणभूत अद्वैतथी भिन्न न मानवी जोइये, नहि तो प्रमाणभूत अद्वैत अप्रमाणज थइ जशे, भ्रांति ज्यारे अद्वैतनुंज रूप थइ त्यारे तो पुरुष रूप थइ, अने भ्रांतिस्वरूपवाला पुरुषज छे नहि, त्यारे तत्त्वव्यवस्था तो कांइपण सिद्ध न थइ जो कदि भ्रांति भिन्न मानशो तो द्वैतापत्ति आवशे अने अद्वैत मतनी हानि थशे जो कदी स्तंभने कुंभादिकथी भेद मानवो तेनेज भ्रांति केहेशो तो निश्चयथी सत्स्वरूप कुंभादि कोइ जगे तो जरूर हशे अभ्रांतिने दीठा विना कदापि भ्रान्ति देखवामां आवशे नहि पूर्वे जेणें साचो सर्प दीठो नथी तेने दोरडामां सर्पनी भ्रांति कदापि नहि आवे यथा–नाऽदृष्टपूर्वसर्पस्य, रज्ज्वां सर्पमतिः क्वचित् ॥ तत पूर्वानुसारित्वाद्, भ्रांतिरभ्रांतिपूर्विका ॥ १ ॥ आ कथनथी अद्वैततत्त्व खरून थइ गयु. वली पुरुष अद्वैततत्त्व अवश्य वीजाने निवेदन करवुं, पोते पोताने नहि पोतामां तो व्यामोह छे नहि जो कदी केहेनारमां व्यामोह होय तो तो अद्वैतनी प्रतिपत्ति (सिद्धि) कदापि नहि थाय

पूर्वपक्ष –ज्यारे आत्माने व्यामोह छे त्यारे तो अद्वैततत्त्वनो उपदेश कर्यो जाय छे?

उत्तरपक्ष.– ज्यारे आत्मानो व्यामोह दूर थशे त्यारे तो आत्मा अवश्य अवस्थांतरने प्राप्त थशे, ज्यारे अवस्था बदलाशे, त्यारे अवश्य द्वैतापत्ति थइ जशे वली ज्यारे अद्वैत तत्त्वनो उपदेशक परने उपदेश करशे त्यारे अवश्य परने मानवो पडशे पछी अद्वैततत्त्व परने निवेदन करवु अने अद्वैततत्त्व मानवुं आ कथन तो मारो पिता कुवारो (बाल) ब्रह्मचारी छे तेना जेवु थयु आ वचन केहेवाथी उन्मत्ताइनो दोष आवशे पोताने अने परने बंनेने जो मानशे तो द्वैतापत्ति अवश्य थशे आ कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल छे

पूर्वपक्ष – परमब्रह्मरूप सिद्धज सकल भेदज्ञान प्रत्ययोना निरालंबनपणानी सिद्धि छे

उत्तरपक्ष –आ कथन पण तमारू ठीक नथी कारण के परम ब्रह्मनीज सिद्धि नथी जो छे तो स्वत· सिद्धि छे के परत सिद्धि छे? स्वत सिद्धि तो नथी, जो होय तो तो कोइनो पण विवाद रहे नहि जो परत· सिद्धि छे तो शु अनुमानथी छे के आगमथी छे? जो कहो के अनुमानथी छे तो ते अनुमान केवु छे?

पूर्वपक्ष –ते अनुमान आ छे विवादरूप जे अर्थ छे ते प्रतिभासांत प्रविष्ट ब्रह्मभासनी अतर छे, प्रतिभासमान होवाथी, जे जे प्रतिभासमान छे ते ते प्रतिभासांत प्रविष्टज देखायछे, जेम प्रतिभास आत्मा प्रतिभासमान छे, सकल अर्थ सचेतन अचेतन विवादरूप छे ते कारणथी प्रतिभासांत प्रविष्टछे घटपटादि आ अनुमान छे.

उत्तरपक्ष –आ अनुमान तमारू सम्यक् नथी (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासांत प्रविष्ट होवाथी साध्यरूपज थया.

पूर्वपक्ष –त्यारे तो (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत, आ त्रणेना नहि होवापणाथी अनुमानज नहि बनी शके जो एम कहो के (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांत आ त्रणे प्रतिभासांत प्रविष्ट नथी, तो तेउंनीज साथे हेतु, व्यभिचारी थशे, जो एम कहो के अनादि अविद्या वासनाना बलथी हेतु दृष्टांत जे छे ते प्रतिभासना बाहिरनी पेठे निश्चय

करेछे, जेम प्रतिपाद्य, प्रतिपादक, सन्ना, सन्नापति जननी पेठे, ते कारणथी अनुमान पण थइ शकेछे, अने ज्यारे सकल अनादि अविद्यानो विलास दूर थइ जाशे त्यारे तो प्रतिन्नासांत प्रविष्ट प्रतिन्नास थशे. विवाद पण नहि रहे, पतिपाद्य प्रतिपादक साध्य साधक न्नाव पण रहेशे नहि पठी तो अनुमान करवानुं पण कांइ फल नहि आपज अनुन्नवमान परमब्रह्म बने ठते देश काल अव्यवछिन्न स्वरूप प्रगट थतां निर्व्यन्निचार, सकल अवस्था व्यापकपणा वालामां अनुमाननो कांइ प्रयोगज जोइतो नथी.

उत्तरपक्ष–जो अनादि अविद्या प्रतिन्नासांत प्रविष्ट ठे तो तो विद्या थइ गइ त्यारे हवे असतूरूप (१) धर्मी (२) हेतु (३) दृष्टांतआदि न्नेद केम देखी शकाय जो कहो के प्रतिन्नासनी वाहिरन्नूत ठे तो तो अविद्या प्रतिन्नासमान ठे के अप्रतिन्नासमान ठे? ते अविद्या प्रतिन्नासमान रूप होवाथी अप्रतिन्नासमान तो नहि जो एम कहो के प्रतिन्नासमान ठे, तो तेनीज साथे हेतु, व्यन्निचारी ठे तथा प्रतिन्नासनी वाहिरन्नूत होवाथी तेनो प्रतिन्नासमान होवाथी जो कदी तमारा मनमां एम होय के अविद्या जे ठे ते नथी प्रतिन्नासमान के नथी अप्रतिन्नासमान, नथी प्रतिन्नासनी वाहिर के नथी प्रतिन्नासनी अंदर प्रविष्ट, नथी एक के नथी अनेक, नथी नित्य के नथी अनित्य, नथी व्यन्निचारिणी के नथी अव्यन्निचारिणी, सर्वथा विचारने योग्य नथी, सकल विचारांतर अतिक्रांत स्वरूप ठे, रूपांतरना अन्नावथी अविद्या जे ठे ते नीरूपता लक्षण ठे, आ पण तमारो अज्ञाननो विस्तार ठे, तेवी नीरूपता स्वन्नावने आ अविद्या ठे, आ अप्रतिन्नासमान ठे, एम कोण कथन करवाने समर्थ ठे? जो एम कहो के आ अविद्या प्रतिन्नासमान ठे तो पठी केवीरीते अविद्या नीरूप सिद्ध थशे, जे वस्तु जे स्वरूपथी प्रतिन्नासमान ठे, ते तेज वस्तुनु रूप ठे; तथा अविद्या जे ठे ते विचारगोचर ठे के विचारगोचरतारहित ठे? जो कहो के विचारगोचर ठे तो तो नीरूप नहि, जो विचारगोचर नथी तो तो तेने माननार महामूर्ख ठे ज्यारे विद्या, अविद्या बने सिद्ध ठे, त्यारे एक परम ब्रह्म अनुमानथी केम सिद्ध थया? आ केहेवाथी उपनिषदूमां जे एक ब्रह्मने कहेनारी

श्रुति ठे ते पण खम्न थइ गइ तेमज " सर्व वै खल्विदं ब्रह्मेत्यादि " वचनने परमात्मानो अर्थांतर होवाथी द्वैतापत्ति थइ जशे, जो एम कहेशो के अनादि अविद्याथी एम प्रतीत थायठे तो तो पूर्वोक्त दूषणोनो प्रसंग आवशे सवव अद्वैतनी सिद्धि वंध्यापुत्रनी शोजा जेवी ठे ते कारणथी अद्वैतमत युक्तिविकल ठे तेथी एकज ईश्वर जगत् पेहेला हता ए केहेवु मिथ्या ठे आ प्रथम ईश्वरने माननारना मतनु खम्न थयु

हवे वीजा ईश्वर जगत्ना उपादान कारणवाला, एक ईश्वर अने वीजी सामग्री, आ वने पदार्थ अनादि ठे सामग्री जे ठे ते नीचे मुजव ठे

(१) पृथ्वी (२) जल (३) अग्नि (४) वायु आ चारेना परमाणुउं, (५) आकाश (६) दिशा (७) आत्मा (८) मन (९) काल आ नव वस्तु नित्य ठे, अनादिठे, कोइनी वनावेली नथी ईश्वर, आ पूर्वोक्त सामग्रीथी आ सृष्टिने रचेठे मतावलवियें जेवी रीतें ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेल ठे ते रीति लखिये ठिये उपजातिछंद ॥ कर्त्तास्ति कश्चिज्जगत सचैक, ससर्वग सस्ववश सनित्य ॥ इमा कुहेवाकविडवना स्यु, स्तेषा न येषामनुशासकस्त्वम् ॥ १ ॥ आ जगत् प्रत्यक्षादि प्रमाणथी लक्ष्य ठे चराचररूप त्रणे जगत् तेनो कोइ एवो पुरुष रचनार ठे के जेनु स्वरूप कही शकातु नथी ईश्वरने जगत्कर्त्ता माननारा वादी एवु अनुमान करेठे के–पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादि सर्वे, वुद्धिमान् कर्त्तानां करेला ठे, कार्य होवाथी, जे जे कार्य ठे ते सवे वुद्धिमान् कर्त्ताना करेल ठे जेवो घट तेवु आ जगत् ठे, ते कारणथी जगत् वुद्धिवालानु रचेलु ठे जे वुद्धिवाला ठे तेज ईश्वरठे, एम पण न केहेशो के आ तमारो हेतु असिद्ध ठे, शा कारणथी असिद्ध ठे ? जुउं पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादि पोतपोताना कारण समूहथी उत्पन्न थयेल ठे ते कारणथी कार्यरूप ठे, तथा अवयवी ठे, तेथी कार्यरूपठे, सर्ववादियोनो एवो निश्चय ठे तथा एम पण न केहेवु के आ तमारो हेतु अनेकांतिक ठे, तथा विरुद्ध ठे, कारण के अमारो हेतु विपक्षथी अत्यत दूर गयेल ठे तथा एम पण न केहेवु के आ तमारो हेतु कालात्ययापदिष्ट ठे, कारण के प्रत्यक्ष, अनुमान, आगमथी वाधित नथी, धर्म धर्मी अनतर केहेवाथी, तथा एम पण न केहेवु के तमारो हेतु प्रकरणसम ठे, कारण के अनु-

मानथी जे साध्य छे, तेना शत्रुभूत बीजा साध्यने साधनारा अनुमानना अन्नावथी, तथा एम पण न केहेवुं के ईश्वर, पृथ्वी, पर्वत, वृक्षादिना कर्त्ता नथी, कारण के मुक्त आत्मानी पेठे शरीर विनाना छे. आ पाठलना तमारा अनुमाननो वेरी अनुमान छे ते ईश्वरने जगत्कर्त्ता सिद्ध थवा देतु नथी कारण के तमे तो ईश्वरने शरीरविनाना सिद्ध करीने जगत्‌ना अकर्त्ता सिद्ध कर्या, परंतु अमे तो ईश्वर शरीरवाला मानेला छे ते कारणथी तमारुं अनुमान असत्य छे वली अमारो हेतु निरवद्य छे तथा ईश्वर एक छे कारण के जो बहु ईश्वर मानिये तो तो एक कार्य करवामां ईश्वरोनी जूदी जूदी बुद्धि थइ जाय अने तेउने मना करनार तो कोइ छे नहि तेथी कार्य केम उत्पन्न थाय ? कोइ ईश्वर पोतानी इछाथी चार पगवालो मनुष्य रचे, वली बीजो ईश्वर छ पगवालो रची दे, अने त्रीजो बे पगवालो रचे, तो चोथो आठ पगवालो रचे, एवी रीतें सर्व वस्तु विलक्षण विलक्षण रचाय तो सर्व जगत् असमंजसरूप थइ जाय परंतु एम नहि तेथी ईश्वर एकज होवा जोइये वली ईश्वर सर्वगत सर्वव्यापी छे, जो ईश्वर सर्वव्यापक न होय तो त्रण भुवनमां जे एक साथे उत्पन्न थनारां कार्य छे ते सर्व एक कालमां कदी उत्पन्न नहि थाय. जेम के कुंभारादि ज्यां हशे त्यांज कुंभादि कार्य करी शकशे. परंतु देशांतरमां कदी तेउ नहि करी शके तेमज ईश्वर सर्वज्ञ छे, जो सर्वज्ञ न होय तो सर्व कार्योनां उपादान कारणो केम जाणी शकशे ? जो कार्योनां उपादान कारण न जाणे तो जगत् विचित्र केम रची शके ? तथा ईश्वर स्वतंत्र छे, बीजा कोइने आधीन नथी, ईश्वर पोतानी इछाथी सर्व जीवोने सुखदुःखनु फल आपे छे कह्युं छे के– ईश्वरप्रेरितोगछेत्, स्वर्गं वा स्वभ्रमेव वा ॥ अन्योजतुरनीशोय, मात्मन सुखदुःखयोरिति ॥ अर्थ –ईश्वरनीज प्रेरणाथी जगतुवासी जीव, स्वर्ग तथा नरकमा जाय छे, कारण के ईश्वर विना कोइ जीव पोते पोताने सुख दुःखनुं फल आपवाने समर्थ नथी जो ईश्वरने परतंत्र मानियें तो मुख्य कर्त्ता ईश्वर रेहेशे नहि, एक बीजाने आधीन मानवाथी अनवस्था दूषण लागी जशे. ते हेतुथी ईश्वर स्ववश छे परंतु पराधीन नथी. वली ईश्वर नित्य छे जो कदी अनित्य होय तो तेने उत्पन्न करनार बीजो कोइ होवो जोइये,

ते तो नथी. ते हेतुथी ईश्वर नित्यज छे पूर्वोक्त विशेषणयुक्त ईश्वर (भगवान्) जगत्कर्त्ता छे इति पूर्वपक्ष

उत्तरपक्ष –हे वादि ! आप जे एम कहो छो के पृथ्वी, पर्वत वृक्षादि बुद्धिमान् कर्त्तानां रचेलां छे, ते अयुक्त छे, कारण के आ आपना अनुमानमा व्याप्तिनु ग्रहण थइ शकतु नथी, अने हेतु जे होय छे ते सर्वत्र व्याप्तिमां प्रमाणथी सिद्ध थया थकाज पोताना साध्यने सिद्ध करी शके छे आ कथनमां सर्ववादियो एकमत छे

हवे प्रथम आप कहो के जो ईश्वर जगत् रचे छे तो पूर्वे कह्या मुजव ते ईश्वर, शरीरवाला छे के शरीरविनाना छे ? जो एम कहो के ईश्वर शरीरवाला छे तो अमारा सरखा दृश्य शरीरवाला छे के पिशाचादिनी पेठे अदृश्य शरीर वाला छे ? प्रथम पक्ष तो प्रत्यक्ष वाधित छे कारण के ते ईश्वरना विनाज वर्तमानमां पण उत्पन्न थनारा तृण,वृक्ष,इन्द्रधनुष, वादलां प्रमुख कार्यो देखिये छिये "अनित्य शब्दप्रमेयत्वात्" जेम आ प्रमेयत्व हेतु साधारण अनेकांतिक छे तेमज आ कार्यत्वहेतु साधारण अनेकांतिक छे.

वीजो पक्ष मानशो तो शु ईश्वरनु शरीर नथी देखी शकातु ते ईश्वरना माहात्म्यथी नथी देखी शकातु के अमारा भाग्य अदृष्टना प्रभावथी ? अर्थात् अमारा भाग्य कर्मना प्रभावथी नथी देखी शकातु ? जो एम केहेशो के ईश्वरना माहात्म्यथी ईश्वरनु शरीर देखातु नथी तो आ पक्षमा कोइ पण प्रमाण नथी के जेथी ईश्वरनु माहात्म्य सिद्ध थाय, परंतु वादी जो तपावेलुं जसत पीवानी हिंमत करे तो कदाचित् मानी लइये आ तमारा कथनमा इतरेतर आश्रय दूषण आवे छे जो ईश्वर माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय तो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय, जो अदृश्य शरीरवाला सिद्ध थाय तो माहात्म्य विशेष सिद्ध थाय वीजो पक्ष–जो पिशाचादिनी पेठे ईश्वरनुं अदृश्य शरीर मानशो तो तो संशयनी निवृत्ति थशे नहि जेम के–शुं ईश्वर नथी के– जेथी तेनु शरीर नजरे पडतु नथी ? त्यारे तो वांजणीना पुत्रना शरीरनी जेम, अथवा तो अमारा पूर्वना पापोना प्रभावथी ईश्वरनु शरीर देखातु नथी आ संशय कदी दूर नहि थाय जो एम कहो के अमारा ईश्वर, शरीररहित छे तो तो दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिक ए वन्ने विषम थइ जशे अने हेतुविरुद्ध थ-

इ जशे, कारण के घटादि कार्योना कर्त्ता कुंजारादि शरीरवालाज देखियें ठियें, अने ईश्वरने ज्यारे शरीररहित मानिये त्यारे तो ईश्वर कांइ पण कार्य करवाने समर्थ नहि थाय, जे आकाशनी जेम नित्य व्यापक अक्रिय ठे ते अकर्त्ता ठे. आ हेतुथी शरीरसहित के शरीररहित ईश्वरनी साथे कार्यत्वहेतुनी व्याप्ति सिद्ध थती नथी, तथा आपनो हेतु कालात्ययापदिष्ट पण ठे, आपना साध्यना धर्मिनो एक देश वृक्ष, वीजली, वादलां, इन्द्रधनुष्आदिना आज पण कोइ बुद्धिमान् कर्त्ता देखाता नथी, ते कारणथी प्रत्यक्षथी बाधित थया पठी तमे पोतानो हेतु कह्यो तेथी तमारो हेतु कालात्ययापदिष्ट सिद्ध थयो आ तमारा कार्यत्वहेतुथी बुद्धिमान् ईश्वर जगत्कर्त्ता कदी सिद्ध थता नथी

हवे वीजी रीतें जगत्कर्त्ता खन्न करवानुं स्वरूप लखिये ठिये जे कोइ ईश्वरवादी एम कहे ठे के जगत् सर्व ईश्वरनु रचेलु ठे। ते तेनुं केहेवुं समीचीन नथी, कारण के जगत्कर्त्ता ईश्वर कोइ प्रमाणथी सिद्ध थता नथी

पूर्वपक्ष.—ईश्वरने जगत् कर्त्ता सिद्ध करनार अनुमान प्रमाण ठे जुर्ज. जे यथोचित रीतें अन्निमत फलने संपादन करवाने प्रवृत्त होय, तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् अवश्य होवो जोइये, जेम वांसला, आरि प्रमुख शस्त्र, काष्ठना वे कटका करवामा प्रवर्त्ते ठे, तेमज यथोचित रीते सर्वजगत्ने सुख दुःखादि जे फल आपे ठे तेनो अधिष्ठाता कोइ बुद्धिमान् जरूर होवो जोइये, आपें एम न केहेवु के वांसला, आरि प्रमुख पोतेज काष्ठना वे कटका करवामां प्रवर्त्ते ठे, कारण के ते तो अचेतन ठे तेथी पोतानी मेले केम प्रवर्त्ती शके ? जो एम कहो के वांसला, आरि प्रमुख स्वन्नावथी प्रवर्त्ते ठे तो तो तेर्जनी निरंतर प्रवृत्ति होवी जोइये, वचमां कदी स्तब्ध थवां न जोइयें, पण एम ठे नहि, पूर्वोक्त हेतुथी यथोचित रीते पोत पोतानां फलने साधनारा जे जीव ठे, तेर्जनो अधिष्ठाता ईश्वरज सिद्ध थाय ठे तथा वीजु अनुमान जे परिमंरूलादि, वृत्त, त्र्यश्र, चतुरंश्र, संस्थानवाला गाम, नगरादि ठे, ते सर्वज्ञानवाननां करेलां ठे जेम घटादि पदार्थ, तेमज पूर्वोक्त संस्थान संयुक्त पृथ्वी, पर्वत प्रमुख ठे आ अनुमानथी पण जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय ठे

उत्तर पक्षः—जगत्कर्त्ता सिद्ध करनारुं आपनुं आ अनुमान अयुक्त ठे,

कारण के पूर्वोक्त तमारु अनुमान जेम अमारा मतमा प्रथमथीज सिद्ध छे तेमज सिद्ध करे छे, ते कारणथी सिद्धसाधन दूषण तमारा अनुमानमां आवे छे अमारा मतमां प्रथमथीज नीचे मुजब सिद्ध छे संपूर्ण आ जगत्नी जे विचित्रता छे ते सर्वे कर्मना फलथी छे एम अमे मानियें छियें, कारण के आ भारत वर्षमा अनेक देशोमां, टापुओमां, हेमवंतादि पर्वतोमा अनेक प्रकारना मनुष्यादि प्राणी जे वास करे छे, तथा तेओने सुख दु खादि अनेक तरेहनी जे अवस्था बनी रही छे ते सर्व अवस्थानु कारण कर्मज छे बीजु कोइ नथी. वली देखवामा पण कर्मज कारण थइ शके छे, कारण के ज्यारे कोइ पुण्यवान् राजा राज्य करे छे, त्यारे तेना राज्यमां सुकाल, निरुपद्रव होय छे, ते, ते राजाना शुभ कर्मनो प्रभाव छे ते कारणथी जे यथोचित रीतें जीवोने फल आपेछे ते कर्म छे कर्म जीवने आधीन छे, अने जीव चेतन होवाथी बुद्धिमान् छे, तेथी बुद्धिमानने आधीन थइने कर्म यथोचित फल आपे छे आ रीतें तमारा अनुमानमां सिद्धसाधन दूषण छे जो एम केहेशो के अमेतो विशिष्ट बुद्धिवाला ईश्वरनेज सिद्ध करियें छिये, परतु सामान्य बुद्धिवाला जीव नथी सिद्ध करता, तो तो तमारु दृष्टात साध्यविकल छे वांसला, आरि प्रमुखमां ईश्वर अधिष्ठितपणांनो व्यापार तो उपलब्ध थतो नथी परतु सुथारादिनो व्यापार अन्वयव्यतिरेकथी उपलब्ध थाय छे

पूर्वपक्ष —सुथारादिपण ईश्वरनी प्रेरणाथीज ते ते काममां प्रवर्त्ते छे अमारु दृष्टांत साध्यविकल नथी

उत्तरपक्ष —त्यारे तो ईश्वर पण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथीज प्रवर्त्तता हशे, परतु पोतानी मेले प्रवर्त्तता नहि होय, वली ते ईश्वरपण बीजा ईश्वरनी प्रेरणाथी प्रवर्त्तता हशे, एवी रीते तो अनवस्था दूषण आवशे

पूर्वपक्ष —वढईप्रमुख जीव तो सर्वे अज्ञानी छे तेथी ईश्वरनी प्रेरणाथी ज पोत पोताना काममा प्रवर्त्ते छे, अने ईश्वर (भगवान्) तो सर्व पदार्थोना ज्ञाता छे तेथी अनवस्था दूषण नथी

उत्तरपक्ष —आ तमारु केहेवु असत् छे कारण के तेमां इतरेतर दूषण आवे छे प्रथम ईश्वर जो सर्व पदार्थना यथाऽवस्थित स्वरूपना ज्ञाता सिद्ध थाय, तो अन्यनी प्रेरणा विना पोतेज प्रवर्त्ते छे एम सिद्ध थाय, जो

अन्यनी प्रेरणा विना ईश्वर पोतेज प्रवर्त्ते छे एम सिद्ध थाय तो तो सर्व पदार्थना यथावस्थित स्वरूप जाणनारा सर्वज्ञ सिद्ध थाय, ज्यां सुधी आ बनेमांथी एक सिद्ध न थाय त्यां सुधी बीजानी सिद्धि कदी न थाय. वली हे ईश्वरवादि ? अमे तमने पुछियें छियें के जो ईश्वर सर्वज्ञ तेमज वीतराग छे तो शा माटे बीजा जीवोने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्तावे छे ? कारण के जे विवेकी होय छे ते मध्यस्थज होय छे तेमणे तो जीवोने सत् व्यवहारमांज प्रवृत्त करवा जोइयें, परंतु असत् व्यवहारमां नहि प्रवृत्त करवा जोइयें, अने ईश्वर तो जीवोने असत् व्यवहारोमां पण प्रवर्त्तावे छे तेथी ईश्वरने सर्वज्ञ तेमज वीतराग केम केहेवा जोइये ?

पूर्वपक्षः-- ईश्वर तो सर्व जीवोने शुभ कर्म करवामांज प्रवर्त्तावे छे, तेथी भगवान् तो सर्वज्ञ अने वीतरागज छे, अने जे जीव अधर्म करनारा छे तेउने असत् व्यवहारमां प्रवर्त्तावीने पछी नरकपातनुं फल आपे छे, जेथी ते जीवो दुःखथी मरीने फरी पाप न करे, तेथी उचित फल देवाथी ईश्वर (भगवान्) विवेकवान् तेमज वीतराग सर्वज्ञ छे, तेमां कांइपण दूषण नथी

उत्तरपक्ष --आ आपनु केहेवुं विचारविनानु छे, कारण के प्रथम पाप करवामां तो ईश्वरज प्रवृत्त करे छे, ईश्वर विना बीजो तो कोइ प्रेरक नथी, वली जीव पोते तो कांइ करी शकतो नथी कारणके ते तो अज्ञानी छे तेथी पापमा के धर्ममा पोते प्रवृत्त थइ शकतो नथी, तो पछी प्रथम पाप करावबामां जीवने प्रवर्त्तावबो पछी नरकमां नाखीने तेनु फल भोगवाववुं, पछी धर्ममां प्रवर्त्तावबो वाह ? शुं ईश्वरनी ईश्वरता अने विचारपूर्वक काम छे ?

पूर्वपक्ष.--ईश्वर (भगवान्) जीवोने कदी प्रवर्त्तावता नथी परंतु जीव पोतेज प्रवर्त्ते छे तेथी जे जीव जेवां कर्म करे छे, ते कर्मना वशथी ईश्वर (भगवान्) तेवां तेवां फल ते जीवोने आपेछे जेम कोइ राजा राज्य करे छे ते चोरी करवानी मनाइ करे छे, कोइने चोरी करवानु केहेता नथी, छतांपि कोइ सख्स चोरी करशे तो ते चोरने अवश्य राजा शिक्षा करशे, तेवीज रीतें ईश्वर पाप तो करावता नथी, परंतु पाप करनारने शिक्षा करे छे

उत्तरपक्ष.–आ तमारु केहेवु अयुक्त छे, कारण के राजा चोरने निषेध करवामा समर्थ नथी, कारण के गमे तेवो उग्रशासनवालो राजा होय अने ते मन वचन कायाथी चोरी प्रमुख पाप कर्म अटकाववा चाहे, परंतु लोक चोरी प्रमुख पाप कर्म कदापि सर्वथा छोडशे नहि अने ईश्वर तो सर्व शक्तिमान् तमे मानो छो तो पछी सर्व जीवोने पाप करवामा प्रवर्त्ततां केम मना करता नथी? जो ईश्वर जीवोने पाप करता अटकावता नथी तो ईश्वरज जीव पासे पाप करावे छे, पछी जो तेउने दंड आपे तो पूर्वोक्त दूषण आवेछे जो एम कहो के जीवोने पापमा प्रवर्त्ततां मना करवाने ईश्वर समर्थ नथी, तो पछी उंचा शब्दथी एम केहेशो नहि के "सर्व काइ ईश्वरेंज कर्युं छे अने ईश्वर सर्वशक्तिमान् छे" तथा जो जीव पाप पण पोतेज करे छे, अने धर्मपण पोतेज करे छे, तो फल पण पोतेज भोगवी लेशे हवे ईश्वर कर्त्तानी कल्पना व्यर्थ छे

पूर्वपक्ष –धर्म अधर्म तो जीव पोतेज करेछे, परतु तेना फलप्रदाता तो ईश्वरज छे, जीव पोते करेला धर्म अधर्मनुं फल पोते भोगववाने समर्थ नथी, जेम चोर चोरी करेछे, तेमां चोरी (अधर्म) तो पोतेज करेछे, पर तु ते चोरीनु फल (वदीखानु) भोगववुं ते पोते भोगवी शकतो नथी, वदीखानामां नाखनार तो कोइ वीजो जोइये

उत्तरपक्ष – आ पण तमारु केहेवु असत् छे कारण के जो जीव धर्म अधर्म करवामा समर्थ छे तो पछी तेनु फल भोगववामा समर्थ केम नहि ? आ ससारमा जे जीव जेवा जेवा धर्म अधर्म करेछे तेवां तेवां धर्म अधर्मना फल भोगववामां निमित्त पण वनी जाय छे, जेम चोर चोरी करेछे, ते चोरीनु फल राजा आपेछे, वली कोढीयो थाय छे, शरीरमा कीडा पडेछे, अग्निमा वली जाय छे, पाणीमा डुवी जायछे, खड्गथी हणाय छे, तोप वडुकना गोला गोलीथी मरी जायछे, हाट, हवेली, माटीनी खाण नीचे दवाइ अनेक तरेहथी सकट भोगवी मरी जाय छे, निर्धन थइ जाय छे, इत्यादि असंख्य निमित्तोथी पोते करेला कर्मनां फलने भोगवे छे अहींया निमित्त विना वीजो ईश्वर फलदाता कोइ देखातो नथी, तेवीज रीते नरक स्वर्गादि परलोकमा पण शुभाशुभ कर्मफल भोगववाना असख्य निमित्त छे जो केहेशो के परस्त्रीगमन कर-

वाथी, इत्यादि पापफलमां शुं निमित्त मलशे, जेना योगथी फल जोगववानु थशे ? ते वात तो हुं (ग्रंथकार) जाणतो नथी के आ पुण्य पापनुं आ निमित्त तमने मलीने फल थशे, कारण के मारु एटलु ज्ञान नथी के बरावर पुरे पुरां निमित्त बतावी शकुं, परंतु एटलुं कहि शकुंबुं के जीव जे जे पुण्य पाप करे छे तेनु फल जोगववामां अवश्य कांइक निमित्त होवानु, अने आवी रीते फल जोगवशे, आ निमित्त मलशे, अमुक देशमां, अमुक कालमां जोगवशे, इत्यादि सर्व प्रत्यक्षपणें तो अर्हंत, जगवंत (परमेश्वर) सर्वज्ञना ज्ञानमां जासन थाय छे निमित्त विना कोइपण फल जोगवी शकता नथी, ते कारणथी ईश्वर फलप्रदाता छे एवी कल्पना व्यर्थ छे शु एवु पण बुद्धिमानोनुं केहेवु छे के माणस रोटली तो पकावी शकेछे परंतु पोते खाइ शकतो नथी तेमज ईश्वरने फलदाता कल्पना करवाथी एक वीजुं पण कलंक आप तेने लगावो छो जेमके एक पुरुषे वीजा पुरुषने खड्गादि शस्त्रथी मार्यो, हवे मरनारने जे संकट प्राप्त थयुं, ते कोना योगथी ? कोनी प्रेरणाथी ? जो केहेशो के ईश्वरें ते शस्त्रवालाने प्रेरणा करी, तेथी तेणें तेने मार्यो, तो पठी ते मारनारने फांसी शा माटे मलेछे ? शुं ईश्वरनो एवो न्याय छे के प्रथम एक पुरुषना हाथथी वीजाने मरावववो, पठी ते मारनारने फांसी अपाववी, आ आपनी समजणें ईश्वरने बहुज अन्यायी सिद्ध करेल छे. जो एम कहो के ईश्वरनी प्रेरणा विना ते पुरुषे वीजा पुरुषने मार्यो, तेमज दुःख दीधुं तो तो निमित्तथीज सुख दुःखनुं जोगववुं सिद्ध थयु, पठी ईश्वर फलदातानी कल्पना करवी ते अल्प बुद्धिवालानु काम छे तथा हे ईश्वरवादि ! आपने एक वात पुठियें ठिये के धर्मनु फल, उन्मत्त देवांगनाउना सुकोमल शरीरनो स्पर्श करवो, ते तो जीवोने सुखनु कारण छे तेथी ईश्वरें दीधु, परंतु अधर्मनुं फल घोरनरकना कुंजमां पडवु,अनेक प्रकारना दुःख त्रास, कुंजीपाक, चर्म उत्कर्त्तन, अग्निमां प्रज्वलित थवुं, इत्यादि महादुःखो ईश्वर ते जीवोने शा वास्ते दीये छे ?

पूर्वपक्ष.–जे जीवोए पाप करेलां छे तेउने ते पापनुं फल अवश्य मलवु जोइये ते कारणथी ईश्वर फल आपे छे,

उत्तरपक्ष.–आ तमारा केहेवाथी तो ईश्वर व्यर्थज जीवोने पीडा आ-

उत्तर–आ आपनु अनुमान समीचीन नथी. कारण के आकारवाला आपना हेतु, संध्या, वादला, सर्पनी ववी प्रमुख सस्थानवालामा ठे, परंतु तेनो बुद्धिमान् कर्त्ता कोइ नथी जो एम कहो के, वादलां, इन्द्रधनुष्, सर्पनी ववीप्रमुख संस्थानवालां बुद्धिमानोनां करेलां मनातां नथी त्यारे तो तेवीजरीतें पृथ्वी, पर्वत पण बुद्धिमानोना करेला नहि मानवा जोइयें

आ पूर्वोक्त प्रमाणोथी कोइपण रीतें ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी हवे जे पुरुष ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानेठे तेउने अमे कहिये ठियें के, ज्यां सुधी अमारी आ सघली युक्तियोनो उत्तर न अपाय त्यां सुधी ईश्वरने जगत्कर्त्ता मानवा न जोइयें, जो कोइ ईश्वरवादी आ युक्तियोनो उत्तर पुरेपुरो देशे तो तो अमेपण जगत्कर्त्ता ईश्वर मानी लेशुं, ते विना कदापि नहि मानियें

पूर्वपक्ष.–ईश्वर जगत्ना कर्त्ता तो सिद्ध थता नथी, परंतु एक ईश्वर ठे एम तो सिद्ध थायठे के नहि ?

उत्तरपक्ष –ईश्वर एकज ठे, ए वात सिद्ध करनारु कोइ प्रमाण नथी, तेथी ईश्वर एक सिद्ध केम थाय ?

पूर्वपक्ष–ईश्वरना एकत्वने सिद्ध करनार आ प्रमाण ठे ज्यां वहु एकठा थइने एक काम करवा लागे त्यां जुदी जुदी मति होवाथी एक कार्यपण वनी शकतु नथी तेवीज रीतें जो ईश्वर अनंत होशे तो तो सृष्टि प्रमुख एकज कार्य करवामा न्यारी न्यारी मति थवाथी असमंजस कार्य वनशे ते कारणथी ईश्वर एकज होवा जोइयें

उत्तरपक्ष–आ तमारा प्रमाणथी तो ईश्वर एक सिद्ध थता नथी, कारण के पूर्वोक्त प्रमाणोथी ईश्वर कोइ वस्तुना कर्त्ता सिद्ध थता नथी वली जुउ एक मधपुडो वनाववामा सर्वे मांखियो एकमतवाली तो थायठे, परतु ईश्वर, परमात्मा, निर्विकार, निरुपाधिक, ज्योतिःस्वरूपियोनो एकमत थइ शकतो नथी आ मोटी आश्चर्यनी वातठे ? शु तमे ईश्वरोने कीडाउथी पण बुद्धिहीन, अभिमानी, तेमज अज्ञानी वनावी दीधा, के ते सर्वेनो एकमत थइ शकतो नथी ?

पूर्वपक्ष–माखियो वहु एकठी थइने मधपुडा आदि कार्य करेठे त्यांपण एक ईश्वरनाज व्यापारथी एक मधुपुडो वने ठे

उत्तरपक्षः– त्यारे घडो बनाववो, चोरी करवी, परस्त्रीगमन करवुं इत्यादि सर्व काम ईश्वरना व्यापारथी बनेलां सिद्ध थशे, अने जीव सर्व, अकर्त्ता सिद्ध थशे, पछी पुण्य पापनुं फल कोने मलशे? अने नरक स्वर्गमां जीवने केम मोकलाशे?

पूर्वपक्ष–कुंभारादि, चोरादि, सर्वजीव स्वतंत्रताथी पोतपोतानुं कार्य करेछे, आ प्रत्यक्षसिद्ध छे.

उत्तरपक्ष–शुं मांखियोयेंज तमारो कांइ अपराध कर्योछे, के तेने स्वतंत्र केहेता नथी? आ तमारा एक ईश्वरने मानवाथी तो एम पण प्रतीत थायछे के जो कदी अनंत ईश्वर मान्या जाय तो तो कदाचित् एक सृष्टि रचवामां विवाद थइ जाय पछी ते विवादने कोण दूर करी शके? शिरपंच ता कोइ नथी, वली एक ईश्वरने देखीने बीजो ईश्वर इर्ष्या करे के आ मारी तुल्य केम छे? इत्यादि अनेक उपद्रव उत्पन्न थइजाय, तेथी ईश्वर एकज मानवा जोइये आ पण तमारी समज पूर्ण अज्ञानरूप घुणनामना कीडानी खाधेली छे, कारण के जो ईश्वर (भगवान्) सर्वज्ञ छे तो तो सर्वज्ञना ज्ञानमा एकज सरखुं भासन थवु जोइये, पछी विवाद शा कारणथी होय, वली ईश्वरतो राग,द्वेष,ईर्ष्या,अभिमान इत्यादि सर्व दूषणोथी रहित छे तो बीजा ईश्वरने देखीने इर्ष्या,अभिमान शा माटे करशे? जो ईश्वर थइने अंदर अंदर विवाद, झघडा,इर्ष्या, अभिमान करशे तो ते पामरोने ईश्वरज केम मानवामा आवशे? जो जगत्कर्त्ताज ईश्वर सिद्ध थता नथी तो विवाद झघडाज ईश्वरोने अंदर अंदर शा माटे थशे? ते कारणथी अनंत ईश्वर मानवामां कांइपण दूषण नथी वली ईश्वर "सर्वगत" सर्वव्यापी छे एम मानवु पण प्रामाणिक नथी. कारण के जे वादी ईश्वरने सर्वव्यापक माने छे ते शरीरथी व्यापक माने छे के ज्ञानस्वरूपथी? जो शरीरथी ईश्वरने सर्वव्यापक मानशे तो ईश्वरनु शरीरज सर्वजगामां व्यापी जशे, बीजा पदार्थोने रेहेवा माटे जरापण अवकाश नही मले? ते कारणथी ईश्वर शरीरथी तो सर्वव्यापक नथी.

प्रश्नः– शुं ईश्वरने पण शरीर छे के आप एवो विकल्प करोछो?

उत्तर –हे भव्य! एवो पण आ जगत्मां मत छे,जे ईश्वरने देहधारी माने छे.

प्रश्न.– ए कयो मत छे, जेणे शरीरधारी ईश्वर मानेल छे?

उत्तर.– तौरेत नामनो ग्रंथ छे, तेमा एम लख्युं छे के, ईश्वरें अवरहामने त्यां रोटी खाधी, तथा याकुबनी साथे कुस्ती करी, आ लखाणथी प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे वली शंकरदिग्‌विजयना वीजा प्रकरणमां शंकरस्वामिना शिष्य आनंदगिरि तेज ग्रंथना आदिमा लखे छे के "हुं सर्वज्ञ तुं" ते लखियेंछिये. "ज्यारे नारदजीए जोयुं के आ लोकमां वहुज कपोलकल्पित मत उत्पन्न थया छे, अने सनातन धर्म लुप्त थयो छे, त्यारें ते तत्काल ब्रह्माजीपासे पहोच्या अने जइने केहेवा लाग्या के हे पिताजी! आपनो मत तो प्राय. रह्यो नथी, अने लोकोए अनेक मत चलाव्या छे, तेथी आ वातनो काइ उपाय करवो जोइये; ते सांभली ब्रह्माजी वहु वखत सुधी विचार करीने, पुत्र, मित्र, भक्त जनोंने साथे लइने पोताना लोकथी निकली शिवलोकमां प्रवेश करता हवा त्यां जइ जुए छे तो मध्याह्नमा कोड सूर्यनो प्रकाश होय नहि, तथा क्रोड चंद्रमा समान शीतल, जेने पांच मुख छे, चंद्रमा मुगटमां छे विजलीवत् पिंगलि जटा धारण करी छे, अने पार्वती जेना वामार्ध अंगमा छे एवा सर्वना ईश्वर, महादेव दीठा पछी ब्रह्माजीये नमस्कार करी स्तुति करी, अने केहेवा लाग्या के हे महादेव! सर्वज्ञ, सर्वलोकेश, सर्वसाक्षी, सर्वमय, सर्व कारण इत्यादि–आ लखवाथी प्रगट प्रतीत थाय छे के ईश्वर देहधारी छे, जो देहधारी ईश्वर न होय तो पछी पांच मुख केम होय? आ लखाणथी ईश्वर शरीररहित सिद्ध थता नथी हवे जो शरीरधारी ईश्वर होय तो तो आ लोकमां ईश्वरज व्यापी रहेशे, अने वीजा पदार्थोने रेहेवामाटे वीजो लोक जोइशे जो एम कहो के ज्ञानात्माथी ईश्वर सर्वव्यापक छे तो तो सिद्धसाध्य नथी, अमे पण ज्ञानस्वरूपथी तो भगवानने सर्वव्यापी मानियेंछिये परंतु जुओ तमारा वेदथी विरुद्ध न होय? कारण के वेदोमा शरीरथीज सर्व व्यापक कहेल छे यथा "विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखोविश्वतोवाहुरुत विश्वतस्पादित्यादि श्रुते" आ श्रुतिथी सिद्ध थाय छे के ईश्वर शरीरथीज सर्वव्यापक छे, अने तेम होवाथी पूर्वोक्त दूषणो आवे छे तेथी ईश्वर सर्वव्यापक नथी वली आप कहो छो के ईश्वर सर्वज्ञ छे, परतु तमारा ईश्वर सर्वज्ञ पण नथी, कारण के अमे जे सृष्टिकर्त्ता ईश्वरना खंडन क-

रनारा छियें, ते तेनाथी विपरीत चालियें छिये, तेथी अमने तेउंए शा-
माटे रच्या ? जो एम केहेशो के जन्मांतरोथी उपार्जन करेलां जे जे
तमारां शुभाशुभ कर्म छे ते कर्मोने अनुसार तमने ईश्वर फल आपे छे,
तो पछी तमारा केहेवाथीज ईश्वरनी स्वतंत्रतापर पाणी फर्युं, कारण के
जो अमारा कर्मोविना ईश्वर फल आपी शकता नथी तो तो ईश्वरने
कांइ आधीन नथी; जेवां अमारां कर्म हशे तेवु अमने फल मलशे, जो
एम कहो के ईश्वर जे इछे ते करे तो तो शुं जाणियें के ईश्वर शुं कर-
शे, धर्मियोने नरकमां नाखशे के पापियोने स्वर्गमां मोकलशे ? जो एम
कहो के परमेश्वर न्यायी छे, जेवु जेवुं जे करे छे, तेवुं तेवु तेने फल आ-
पे छे, तो वली तेज परतंत्रतारूप दूषण ईश्वरमां लागे छे. वली ईश्वर
नित्य छे एम केहेवुं ते पण तमारा पोताना घरमांज सुंदर लागे छे, का-
रण के नित्य तो ते वस्तुने कहिये के जे त्रणे कालमां एकरूप रहे. जो
ईश्वर नित्य छे तो शु तेनामां जगत् बनाववानो स्वभाव छे के नहि ?जो
एम कहो के तेनामां जगत् रचवानो स्वभाव छे तो ईश्वर निरंतर जगत्ने
रच्या करशे,कदाऽपि बध रहेशे नहि,कारण के जगत् रचवानो स्वभाव तो
तेनामां नित्य छे जो एम केहेशो के ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वभाव नथी
तो तो ईश्वर कदापि जगत् रचशे नहि, कारण के जगत् रचवानो स्व-
भाव तेनामां नथी तथा जो ईश्वरमां जगत् रचवानो स्वभाव एकांत
नित्य छे तो तो प्रलय कदापि नहि थाय, कारण के ईश्वरमां प्रलय क-
रवानो स्वभाव नथी जो एम कहो के ईश्वरमां रचवानी तेमज प्रलय
करवानी बने शक्तियो नित्य छे तो तो कदापि जगत् रचाशे पण नहि,
तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि, कारण के परस्परविरुद्ध एवी बे शक्ति-
यो एक स्थानमां एककालमां कदापि रेहेती नथी. जो रेहेशे तो जगत्
रचाशे नहि, तेम तेनो प्रलय थशे नहि, कारण के जे कालमां रचनारी
शक्ति रचशे तेज कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे, अने जे
कालमां प्रलय करनारी शक्ति प्रलय करशे तेज कालमां रचनारी शक्ति
रची देशे, एवी रीते ज्यारे शक्तियोनो परस्पर विरोध थशे त्यारे जगत्
रचाशे नहि तेम तेनो प्रलय पण थशे नहि हवे तो अमारोज मत सि-
द्ध थयो. कारण के जगत् कोइये रचेल नथी तेम तेनो कदापि प्रलय

पण थतो नथी, तेथी आ जगत् अनादि अनंत सिद्ध थयु जो एम कहो के ईश्वरमा बंने शक्तियो नथी तो पछी जगत् रचाशे पण नहि तेमज तेनो प्रलय पण थशे नहि. तेथी पण जगत् अनादि अनंत सिद्ध थयु जो एम कहो के ईश्वर रचवानी इच्छा करे छे त्यारे रचे छे, अने प्रलय करवानी इच्छा करे छे त्यारे प्रलय करे छे तेमां शु दूषण ? तो तो ईश्वरनी शक्तियो अनित्य थई चले अनित्य होय,तेमा अमारे शुं हानि छे ? पण जुओ ईश्वरनी शक्तियो अनित्य छे तो तो ईश्वर पण अनित्य थशे, कारण के ईश्वर पोतानी शक्तियोथी अभेद छे, जो एम कहो के शक्तियो ईश्वरथी भेदरूप छे तो पछी शक्तियो नित्य होवाथी जगत् रचाशे नहि तेम तेनो प्रलयपण थशे नहि, अने ईश्वर अकिंचित्कर सिद्ध थशे. कारण के ज्यारे ईश्वर सर्वशक्तिओथी रहित छे, त्यारे तो काइपण करवाने समर्थ नथी पछी जगत् रचवामां केम समर्थ थशे ? वली शक्तिओनु उपादान कारण कोण थशे ? पछी ईश्वरनो अभाव थइ जशे कारण के ज्यारे ईश्वरमां शक्तिज काई नथी त्यारे ते ईश्वर शेनो ? तो तो आकाशना फुलसमान असत् छे. पछी जगत्कर्त्ता कोने मानशो ?

हवे खण्डज्ञानिओनो ईश्वरवाद लखियेछिये खण्डज्ञानी कहे छे के, जगत्मां जेटला पदार्थ छे तेना विलक्षण, विलक्षणसयोग, आकृति, गुण तेमज स्वभाव मालम पडे छे जो कदी तेओनो तथा तेओना नियमोनो कर्त्ता कोइ न होय तो ते नियमो कदि बने नहि, कारण के जड पदार्थमा मलवानु तेमज जुदा थवानु यथावत् सामर्थ्य नथी. ते हेतुथी ईश्वर कर्त्ता अवश्य होवा जोइये

उत्तर पक्ष–प्रथमज अमे जगत्कर्त्ता ईश्वरनु खण्डन करी चुक्या छिये, तो पछी आप जगत्कर्त्ता केम मानो छो ? वली आपे कह्युं के जगत्ना पदार्थोमा जुदा जुदा स्वभाव मालम पडे छे, तेथी ईश्वर सिद्ध थाय छे, परतु आ कथनथी ईश्वर जगत्कर्त्ता सिद्ध थता नथी, कारण के सर्व पदार्थोमां अनत शक्तिओ छे, तेथी पोतपोतानी शक्तिओथी सर्व पदार्थो पोतपोताना कार्य करे छे पदार्थोना सयोगमा निमित्त आ छे १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति (भवितव्यता) ४ जीवोना कर्म,[1] ५ जीवोनो उद्यम,

१ प्रारब्ध–दैव–अदृष्ट–जीवकृत धर्माधर्म–किंवा–पुद्गलो

आ पांच निमित्त विना वीजु कोइपण निमित्त नथी, ए पांचनुं स्वरूप आगल उपर लखवामां आवशे

प्रत्यक्षमां पण आ पांचे निमित्तोथी सर्व कांइ उत्पन्न थाय छे ते जोइये छियें जेम के वीजांकुर ज्यारे वीज ववाय छे, त्यारे काल पण यथानुकूल होवो जोइयें, तेमज वीज, जल अने पृथ्वी इत्यादिना स्वनाव पण अवश्य होवा जोइयें, तेमज नियति पण कारण छे–जे जे पदार्थोना स्वन्नाव छे ते ते पदार्थोना तेवा तेवा जे परिणाम थाय छे तेनु नाम नियति छे; वली अष्टविध कर्मपण कारण छे तथा [१]पुरुषकार (जीवोनो उद्यम) पण कारण छे आ पांच वस्तु अनादि छे, कोइये रचेल नथी, कारण के वस्तुना जे जे स्वन्नाव छे ते ते सर्व अनादिथी छे जो कदी वस्तुमां पोतपोताना स्वन्नाव न होय तो तो कोइ वस्तुज सत्रूप रेहेशे नहि सर्व शशशृंगवत् असत् थइ जशे वली प्रत्यक्ष देखाय छे एवां, पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चंद्रमा इत्यादि पदार्थो एवीरीतें अनादिरूपथी सिद्ध छे, तेमज पृथ्वीउपर जे जे रचना देखाय छे ते सर्व प्रवाहथी एमज चाली आवे छे. वली जगत्‌ना जे जे नियमो छे ते सर्व आ पांच निमित्त विना थइ शकता नथी ते कारणथी सर्वे पदार्थो पोतपोताना नियमोमां छे जो तमे द्रव्यनी शक्तिनेज ईश्वर मानी लेशो तो तो अमने कांइ हानि नथी, कारण के अमे द्रव्यनी अनादि शक्तिनुं नाम इश्वर राखी लेशुं, अने ज्यारे तमे द्रव्यनी अनादि शक्तिने ईश्वर मानी त्यारे तमारो अमारो विवाद दूर थयो, पछी तमे जे लख्युं छे के जडमां यथावत् मलवानी शक्ति नथी, ते पण तमारुं लखाण मिथ्या थयुं. वली जुओ के जगत्‌मां जड पदार्थो अनेक तरेहथी पोतपोतानी मेले पूर्वोक्त पांच निमित्तोथी पोतपोतामां मली जाय छे. जेम के सूर्यना किरणो वादलामां पडवाथी इन्द्रधनुष्यनुं वनवुं, सध्यानुं होवु पांच वर्णना वादलांनी एकत्र घटा थवी, चंद्र सूर्यनी आस पास कुंमालां थवां, आकाशमा पवनोना मेलापथी जल तेमज अग्निनुं उत्पन्न थवु, तेमज वरसाद वरसवाथी घास तृणादि अनेक प्रकारनी वनस्पतिनुं उत्पन्न थवु, तथा अनेक प्रकारना कीट पतंग प्रमुख जीवोनु उत्पन्न थवु इत्यादि;

१ जीवकृत पुरुपार्थ या तेणें करेलो शुभाशुभ यत्न

आ पांचे निमित्त विना कोइ वस्तुने बनावतां ईश्वर देखाता नथी जरा पक्षपात छोडी विचार करो ? ईश्वर कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थइ शके छे ? कारण के पृथ्वी, आकाश, चन्द्र सूर्य इत्यादि तो द्रव्यार्थिक नयना मतथी अनादि छे पछी तेने वास्ते पुछवु थाय के आ कोणे बनाव्या ? तो हवे अमे पुछियें छियें, ईश्वरने कोणें बनाव्या ? जो कहेशो के ईश्वरने तो कोइये बनाव्या नथी, ते तो अनादिथी बन्या बनेलाज छे, तो पछी पृथ्वी प्रमुख केटला एक पदार्थो पण बन्या बनेला अनादिथीज छे एम मानवामां शु लज्जा आवे छे ?

खण्डज्ञानी कहे छे के–स्वभावथी जगत्नी उत्पत्ति जे माने छे तेना मतमां आ दोष आवे छे जो पृथ्वी स्वभावथी थाय छे तो तेनो कर्त्ता तेमज नियता होय नहि, वली आ पृथ्वीथी जुदी दश कोश उपर आकाशमा पोतानी मेले बीजी पृथ्वी थइ जात,जे आज सुधीबनी नथी तेथी एम जणाय छे के ईश्वर कर्त्ता छे

उत्तरपक्ष – आ [illegible] कांइ विचार करो छो के नहि ? जो विचारशो तो
पूर्वोक्त केहेतु अ[illegible] लागशे कारण के अमे कहियें छिये के पृथ्वी वि-
[illegible] अनादि छे [illegible] बनावेल नथी, अने तमे कहो छो के आकाशमा
[illegible] अंतरे बीजी पृथ्वी केम नथी बनती ? हवे विचारो के
[illegible]
[illegible] समजणवालो छे ? आ तमारा प्रश्नना उत्तरमां कोइ
[illegible] श्वर स्वभावथी बन्या होय तो ईश्वरथी अलग बीजा
प [illegible] ा नथी ? जो एम कहो के ईश्वर अनादि छे तेथी
ईश्व [illegible] ने ? तेवी रीते अमे पण कही शकिये छियें के
उ [illegible] नती,तो पछी दश कोश आकाशमा केम बने ?
तो पछी [illegible] नी मेलेज बनीजाय तो सर्वपरमाणु ए-
पदार्थोमा [illegible] क थइने विखरीपण केम जता नथी?
परतु आ क [illegible] मानता नथी के अमारा केहे-
दार्थोमा अनंत [illegible] ा एक एक थइ विखरी
पोतपोताना कार्य [illegible] या एकत्र थशे, ज्या
२ स्वभाव, ३ नियो [illegible] एकठा थश नाह

१ प्रारब्ध–दैव–अदृष्ट–जी[illegible]ने एकत्र मलवामां पांचनिमित्त केम मलतानथी?

उत्तरपक्ष.– अनादि संसारनी जे नियतिरूप मर्यादा छे ते कदापि अन्यथा थती नथी जो कदी थाय तो, संसारमां जे जीवो जन्म लहे छे ते सर्वे स्त्रीनाज, अथवा पुरुषनाज रूपथी केम उत्पन्न न थाय ? जो एम कहो के जेवां जेवां जेणे कर्म कर्यां होय तेवां तेवांज तेने फल मले छे, पछी फक्त स्त्री आदि स्वरूपथीज केम उत्पन्न थाय ? तो हवे अमे पुछिये छिये के, सर्वजीवोयें स्त्री होवानां के पुरुष होवानां जुदां जुदां कर्म केम कर्यां ? एकसरखां कर्म केम न कर्यां ? उत्तरमां एम केहेशो के, संसारमां ए सनातनथी रीत छे के सर्वजीव सरखां कर्म कदापि करता नथी; त्यारे तो परमाणुमां पण सनातनथी एज स्वजाव छे के एकत्र कदापि मलवु नहि, तेमज एकएक थइ विखराइ पण जवु नहि. हे पूर्वपक्षि! आ तमारा ईश्वर जे जगत् रचेछे ते तमारा केहेवाथी, अगाऊ अनंत सृष्टिउ रची चुक्या छे, तेमज एकेक जीवोने अशुजकर्मोनां फल अनंतवार दइ चुक्या छे, तो पण ते जीवो आजसुधी पाप कर्याज करे छे, तो हवे तेउने शिक्षा करवाथी ईश्वरने शु लाज थयो ? के अनंत कालथी आ विडंबनामां पडी रह्या छे ? वली ईश्वरने सृष्टि रचवानुं पण शुं प्रयोजन हतु ?

पूर्वपक्षः– ईश्वरने सृष्टि नहि रचवानुं शुं प्रयोजन हतुं ?

उत्तरपक्ष – वाह रे अज्ञशिरोमणि ! आ तमे शुं उत्तर आप्यो ? शुं आ तमारा उत्तरथी विद्वान् माणस उपहास नहि करे ? ईश्वर जो सृष्टि रचे तो ईश्वरताज नष्ट थइ जाय, आ वृत्तांत, उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें

पूर्वपक्षः– ईश्वरनी जे शक्तिउ छे ते सर्वे पोत पोतानुं काम करेछे, जेम आंख देखवानु काम करेछे, कान सांजलवानुं काम करेछे, तेवी रीतें ईश्वरमां जे रचनाशक्ति छे, ते रचना करवाथीज सफल थायछे, ते वास्ते जगत् रचेछे

उत्तरपक्षः–जो तमे ईश्वरने सर्व शक्तिमान् मान्या तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउ सफल थवी जोइये. पछी तो ईश्वर एक सुंदर पुरुषनु रूप रचीने १ जगत्नी सर्व सुंदर सुदर स्त्रियो साथे जोग करे,२ चोर बनी चोरी करे, ३ विश्वास घातिपणु करे, ४ जीवहत्या करे, ५ जूठ बोले, ६ अ-

आ पांचे निमित्त विना कोइ वस्तुने बनावतां ईश्वर देखाता नथी जरा पक्षपात छोडी विचार करो ? ईश्वर कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थइ शके छे ? कारण के पृथ्वी, आकाश, चन्द्र सूर्य इत्यादि तो द्रव्यार्थिक नयना मतथी अनादि छे पछी तेने वास्ते पुछवु थाय के आ कोणें बनाव्या ? तो हवे अमे पुछिये छियें, ईश्वरने कोणें बनाव्या ? जो कहेशो के ईश्वरने तो कोइये बनाव्या नथी, ते तो अनादिथी बन्या बनेलाज छे, तो पछी पृथ्वी प्रमुख केटला एक पदार्थो पण बन्या बनेला अनादिथीज छे एम मानवामां शु लज्जा आवे छे ?

खरडज्ञानी कहे छे के–स्वजावथी जगत्नी उत्पत्ति जे माने छे तेना मतमां आ दोष आवे छे जो पृथ्वी स्वजावथी थाय छे तो तेनो कर्त्ता तेमज नियता होय नहि, वली आ पृथ्वीथी जुदी दश कोश उपर आकाशमां पोतानी मेले बीजी पृथ्वी थइ जात,जे आज सुधीबनी नथी तेथी एम जणाय छे के ईश्वर कर्त्ता छे

उत्तरपक्ष.– आप काई विचार करो छो के नहि ? जो विचारशो तो पूर्वोक्त केहेवु अयुक्त लागशे कारण के अमे कहियें छियें के पृथ्वी विगेरे अनादि छे, कोईये बनावेल नथी, अने तमे कहो छो के आकाशमा उंचे दश कोशने अंतरे बीजी पृथ्वी केम नथी बनती ? हवे विचारो के आ तमारो सवाल समजणवालो छे ? आ तमारा प्रश्नना उत्तरमां कोइ एम पुछे के जो ईश्वर स्वजावथी बन्या होय तो ईश्वरथी अलग बीजा ईश्वर केम उत्पन्न थता नथी ? जो एम कहो के ईश्वर अनादि छे तेथी बीजा नवा ईश्वर केम बने ? तेवी रीते अमे पण कही शकिये छिये के पृथ्वी अनादि छे,नवी नथी बनती,तो पछी दश कोश आकाशमा केम बने ?

पूर्वपक्ष – जो वस्तु पोते पोतानी मेलेज बनीजाय तो सर्वपरमाणु एकठा केम मली जता नथी?अथवा एकेक थईने विखरीपण केम जता नथी?

उत्तरपक्ष – जड कांई अमारी आज्ञा मानता नथी के अमारा केहेवाथी एकठा थईने एकरूप थई जाय, अथवा एक एक थई विखरी जाय, पूर्वोक्त पाच निमित्त ज्या मलवाना हशे त्यां एकत्र थशे, ज्यां निमित्त नहि मले त्यां एकठां थशे नहि

पूर्वपक्ष –सर्व परमाणुओने एकत्र मलवामा पांचनिमित्त केम मलतानथी?

उत्तरपक्षः– अनादि संसारनी जे नियतिरूप मर्यादा छे ते कदापि अन्यथा थती नथी जो कदी थाय तो, संसारमां जे जीवो जन्म लहे छे ते सर्वे स्त्रीनाज, अथवा पुरुषनाज रूपथी केम उत्पन्न न थाय? जो एम कहो के जेवां जेवां जेणे कर्म कर्यां होय तेवां तेवांज तेने फल मले छे, पछी फक्त स्त्री आदि स्वरूपथीज केम उत्पन्न थाय? तो हवे अमे पुछिये छिये के, सर्वजीवोये स्त्री होवानां के पुरुष होवानां जुदां जुदां कर्म केम कर्यां? एकसरखां कर्म केम न कर्यां? उत्तरमां एम केहेशो के, संसारमां ए सनातनथी रीत छे के सर्वजीव सरखां कर्म कदापि करता नथी; त्यारे तो परमाणुमां पण सनातनथी एज स्वभाव छे के एकत्र कदापि मलवु नहि, तेमज एकएक थइ विखराइ पण जवु नहि. हे पूर्वपक्षि! आ तमारा ईश्वर जे जगत् रचेछे ते तमारा केहेवाथी, अगाउ अनंत सृष्टिउं रची चुक्या छे, तेमज एकेक जीवोने अशुभकर्मोंनां फल अनंतवार दइ चुक्या छे, तो पण ते जीवो आजसुधी पाप कर्याज करे छे, तो हवे तेउने शिक्षा करवाथी ईश्वरने शु लाभ थयो? के अनंत कालथी आ विडंबनामां पडी रह्या छे? वली ईश्वरने सृष्टि रचवानुं पण शुं प्रयोजन हतुं?

पूर्वपक्षः– ईश्वरने सृष्टि नहि रचवानुं शुं प्रयोजन हतुं?

उत्तरपक्षः– वाह रे अज्ञशिरोमणि! आ तमे शुं उत्तर आप्यो? शुं आ तमारा उत्तरथी विद्वान् माणस उपहास नहि करे? ईश्वर जो सृष्टि रचे तो ईश्वरताज नष्ट थइ जाय, आ वृत्तांत, उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें

पूर्वपक्षः– ईश्वरनी जे शक्तिउं छे ते सर्वे पोत पोतानु काम करेछे, जेम आंख देखवानु काम करेछे, कान सांभलवानुं काम करेछे, तेवी रीतें ईश्वरमां जे रचनाशक्ति छे, ते रचना करवाथीज सफल थायछे, ते वास्ते जगत् रचेछे.

उत्तरपक्षः–जो तमे ईश्वरने सर्व शक्तिमान् मान्या तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउं सफल थवी जोइये. पछी तो ईश्वर एक सुंदर पुरुषनुं रूप रचीने १ जगत्नी सर्व सुंदर सुंदर स्त्रियो साथे भोग करे, २ चोर बनी चोरी करे, ३ विश्वास घातिपणु करे, ४ जीवहत्या करे, ५ जूठ बोले, ६ अ-

न्याय करे, ७ अवतार लइ गोपियो साथे कल्लोल करे, ८ कुब्जा साथे भोग करे, ९ बीजानी स्त्रीने भगवी लइ जाय, १० शिरपर जटा राखे, ११ त्रण आंख बनावे, १२ बेलपर चढे, १३ शरीरपर विभूति लगावे, १४ एक स्त्रीने वामार्द्धांगमां राखे, १५ कोइ मुनिनी पासे नागा थइ नाचे, १६ कोइने वरदान आपे, १७ कोइने शाप दे, १८ चार मुख बनावी एक स्त्री राखे, १९ पोतानी पुत्री साथे भोग करे, २० संग्राम करे, २१ स्त्रीने चोरी लइ जाय तो पछी ते स्त्रीने माटे रोतो फरे, २२ एक पोतानो भाइ बनावे, पछी ज्यारे संग्राममां तेने शस्त्र लागे, त्यारे भाइना दुःखथी बहु रोवे, २३ पोते पोताने अज्ञानी समजे, २४ भाइनी चिकित्सा वास्ते वैद्य बोलावे, २५ सर्व काइ खाय, २६ पीये, २७ नाचे, २८ कुदे, २९ रोवे, ३० पीटे, पछी, ३१ निर्मल, ३२ ज्योति स्वरूप, ३३ निरहंकार, ३४ सर्व व्यापक, बनी बेसे इत्यादि शक्तिउ ईश्वरमां छे के नहि ? जो छे तो, पूर्वोक्त सर्व काम ईश्वरने करवां पडशे, जो नहि करे तो ईश्वरनी सर्व शक्तिउ सफल नहि थवानी ? पछी तो ईश्वर महादुःखी थइ जशे कारण के जेने नेत्र तो मलेलां छे, अने तेने देखवानु न मले तो, ते केवो दुःखी थाय छे ? जो एम कहो के पूर्वोक्त अयोग्य शक्तिउ ईश्वरमा नथी, तो तो सर्व शक्तिमान् ईश्वर छे एम कदापि न केहेवु जोइये जो एम कहो के योग्य शक्तिउनी अपेक्षाये अमे सर्वशक्तिमान् मानिये छियें, तो तो जगत् रचवानी शक्ति पण अयोग्यज छे, ते पण परमात्मामा नथी ते शक्तिनी अयोग्यता, उपर लखी आव्या छिये तथा हे पूर्वपक्षि ! ज्यारे ईश्वरें प्रथम सृष्टि रची हती, त्यारे स्त्री, पुरुषो तो न होतां, हवे विचारो के माता पिता विना मनुष्य केम उत्पन्न थयां हशे ?

पूर्वपक्ष –ज्यारे ईश्वरें सृष्टि रची हती, त्यारेज बहुपुरुष, तेमज बहु स्त्रियो, माता पिता विना रच्यां हतां,त्यारपछी गर्भथी उत्पन्न थवा लाग्या

उत्तरपक्ष –आ प्रमाणरहित केहेवु कोइपण विद्वान् मानशे नहि कारण के माता पिता विना कदापि पुत्र उत्पन्न थइ शकतो नथी जो कदी ईश्वरें प्रथम माता पिता विना पुरुष, स्त्री उत्पन्न कर्या हतां तो आज पण घड्या घडाव्या, बन्यां बनाव्या स्त्री पुरुष केम नथी मोकलता? गर्भधारण करावबां, स्त्रीपुरुषनां मैथुन करावबां, गर्भवासना दुःख भो-

गवाववां, योनियंत्रद्वारा खेंची कढाववां, इत्यादि संकट शावास्ते रच्यां ? ईश्वरें अनंतवार सृष्टि रची, अने प्रलय कर्यो, त्यारे तो थाक्या नहि तो शु मनुष्योनेज बनाववाथी थाक चडवानो छे ? के घडेला घडावेला बनेला बनावेला मोकली शकता नथी ? माता पिता विना पुत्र उत्पन्न थाय ए कदापि बनी शकतु नथी, ते हेतुथी जगत्नो प्रवाह अनादिथी तेवीज रीते तरतमता रूपें चालतो आवेलो सिद्ध थाय छे

पूर्वपक्ष–जो कदी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्ता न होय, अने जीवज कर्त्ता होय तो तो जीव पोतेज शरीर धारण करी लेशे वली शरीरने कदापि छोडशे नहि, पोते पोतानां सारां फल जोगवी लेशे, अने कदी मरशे नहि

उत्तरपक्षः–आपे जे कह्युं ते सर्व कर्मने वश छे, परंतु जीवने आधीन नथी, जो एम कहो के कर्मपण जीवेज कर्यां हतां, त्यारे अशुन कर्म जीवे केम कर्यां ? कारण के कोइपण पोतानुं बुरु करतां नथी, आ वातनो उत्तर तो अपाइ गयो छे, परंतु तमारी समजण थोडी छे तेथी समजता नथी कारण के जीवोनी जे जे शुन अशुन अवस्था छे, ते सर्व कर्मोनु फल छे वली जीव, कर्म करवामां तो प्राय स्वतंत्रज छे, परंतु फल जोगववामां स्ववश नथी कारण के जेम कोइ जीव धनुष्यथी तीर चलावे अने पछी पकडवा चाहे तो ते जेम तेनामां सामर्थ्य नथी, तेमज कोई जीव विष खाय, ते खावामां तो स्ववश छे परंतु ते विषना वेगने रोकवामा जेम समर्थ नथी, तेम कर्म करवामां तो जीव प्राय स्वतंत्र छे परंतु फल जोगववामां परवश छे. वली जेम वर्त्तमान कालमां रेलगाडी, तथा तार जीवोए बनावेला छे ते चालती रेलगाडी तथा जता तारना वेगने, जेटलो वखत तेनी कलनी प्रेरणा शक्ति बंध पडती नथी तेटलो वखत, कोइ जीव रोकी शकता नथी, तेवीज रीतें कर्मफलना वेगने रोकवामां जीवपण समर्थ नथी वली जीवने जवांतरमां कोण लइ जाय छे ? तथा जीवना शरीरनी रचना, आंखोना पडदा, अनेक प्रकारना रंग बेरंगी, हाड, चामडी, लोही, वीर्य इत्यादि रचना कोण रचेछे ? तेनु पूर्ण स्वरूप ज्यां (१४८) कर्म प्रकृतिनु स्वरूप लखशुं त्यांथी जाणवुं ते हेतुथी ईश्वर जगत् कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थता नथी विशेष

१सारासार–नहाना मोहोटा उंचनीच वा न्यूनाधिक–के समविषम सुखिदु खी २स्वतंत्र

न्याय करे, ७ अवतार लइ गोपियो साथे कल्लोल करे, ८ कुब्जा साथे भोग करे, ए बीजानी स्त्रीने भगवी लइ जाय, १० शिरपर जटा राखे, ११ त्रण आंख बनावे, १२ बेलपर चढे, १३ शरीरपर विभूति लगावे, १४ एक स्त्रीने वामार्द्धांगमां राखे, १५ कोइ मुनिनी पासे नागा थइ नाचे, १६ कोइने वरदान आपे, १७ कोइने शाप दे, १८ चार मुख बनावी एक स्त्री राखे, १ए पोतानी पुत्री साथे भोग करे, २० संग्राम करे, २१ स्त्रीने चोरी लइ जाय तो पछी ते स्त्रीने माटे रोतो फरे, २२ एक पोतानो भाइ बनावे, पछी ज्यारे संग्राममा तेने शस्त्र लागे, त्यारे भाइना दुःखथी बहु रोवे, २३ पोते पोताने अज्ञानी समजे, २४ भाइनी चिकित्सा वास्ते वैद्य बोलावे, २५ सर्व काइ खाय, २६ पीये, २७ नाचे, २८ कुदे, २ए रोवे, ३० पीटे, पछी, ३१ निर्मल, ३२ ज्योति स्वरूप, ३३ निरहंकार, ३४ सर्व व्यापक, वनी वेसे इत्यादि शक्तिर्ज ईश्वरमा छे के नहि ? जो छे तो, पूर्वोक्त सर्व काम ईश्वरने करवा पडशे, जो नहि करे तो ईश्वरनी सर्व शक्तिर्ज सफल नहि थवानी ? पछी तो ईश्वर महादुःखी थइ जशे कारण के जेने नेत्र तो मलेला छे, अने तेने देखवानु न मले तो, ते केवो दुःखी थाय छे ? जो एम कहो के पूर्वोक्त अयोग्य शक्तिर्ज ईश्वरमा नथी, तो तो सर्व शक्तिमान् ईश्वर छे एम कदापि न केहेवु जोइये जो एम कहो के योग्य शक्तिर्जनी अपेक्षाये अमे सर्वशक्तिमान् मानिये छिये, तो तो जगत् रचवानी शक्ति पण अयोग्यज छे, ते पण परमात्मामां नथी ते शक्तिनी अयोग्यता, उपर लखी आव्या छिये तथा हे पूर्वपक्षि ! ज्यारे ईश्वरे प्रथम सृष्टि रची हती, त्यारे स्त्री, पुरुषो तो न होता, हवे विचारो के माता पिता विना मनुष्य केम उत्पन्न थया हशे ?

पूर्वपक्ष –ज्यारे ईश्वरे सृष्टि रची हती, त्यारेज बहुपुरुष, तेमज बहु स्त्रियो, माता पिता विना रच्या हतां,त्यारपछी गर्भथी उत्पन्न थवा लाग्या

उत्तरपक्ष –आ प्रमाणरहित केहेवु कोइपण विद्वान् मानशे नहि कारण के माता पिता विना कदापि पुत्र उत्पन्न थइ शकतो नथी जो कदी ईश्वरें प्रथम माता पिता विना पुरुष, स्त्री उत्पन्न कर्यां हता तो आज पण घड्या घडाव्यां, बन्यां बनाव्या स्त्री पुरुष केम नथी मोकलता? गर्भधारण करावबा, स्त्रीपुरुपना मैथुन कराववां, गर्भवासना दुःख भो-

गवाववां, योनियंत्रद्वारा खेंची कढाववां, इत्यादि संकट शावास्ते रच्यां? ईश्वरे अनंतवार सृष्टि रची, अने प्रलय कर्यो, त्यारे तो थाक्या नहि तो शुं मनुष्योनेज बनाववाथी थाक चडवानो छे? के घडेला घडावेला बनेला बनावेला मोकली शकता नथी? माता पिता विना पुत्र उत्पन्न थाय ए कदापि बनी शकतुं नथी, ते हेतुथी जगत्‌नो प्रवाह अनादिथी तेवीज रीतें तरतमता रूपे चालतो आवेलो सिद्ध थाय छे

पूर्वपक्षः–जो कदी ईश्वर सर्व वस्तुना कर्ता न होय, अने जीवज कर्त्ता होय तो तो जीव पोतेज शरीर धारण करी लेशे वली शरीरने कदापि छोडशे नहि, पोते पोतानां सारां फल भोगवी लेशे, अने कदी मरशे नहि.

उत्तरपक्षः–आपे जे कह्यु ते सर्व कर्मने वश छे, परंतु जीवने आधीन नथी, जो एम कहो के कर्मपण जीवेज कर्यां हतां, त्यारे अशुभ कर्म जीवे केम कर्यां? कारण के कोइपण पोतानुं बुरुं करतां नथी, आ वातनो उत्तर तो अपाइ गयो छे, परंतु तमारी समजण थोडी छे तेथी समजता नथी कारण के जीवोनी जे जे शुभ अशुभ अवस्था छे, ते सर्व कर्मोनु फल छे वली जीव, कर्म करवामां तो प्राय स्वतंत्रज छे, परंतु फल भोगववामा स्ववश नथी कारण के जेम कोइ जीव धनुष्थी तीर चलावे अने पछी पकडवा चाहे तो ते जेम तेनामां सामर्थ्य नथी, तेमज कोई जीव विष खाय, ते खावामा तो स्ववश छे परंतु ते विषना वेगने रोकवामां जेम समर्थ नथी, तेम कर्म करवामां तो जीव प्राय स्वतंत्र छे परतु फल भोगववामा परवश छे. वली जेम वर्त्तमान कालमां रेलगाडी, तथा तार जीवोए बनावेला छे ते चालती रेलगाडी तथा जता तारना वेगने, जेटलो वखत तेनी कलनी प्रेरणा शक्ति वध पडती नथी तेटलो वखत, कोइ जीव रोकी शकता नथी, तेवीज रीतें कर्मफलना वेगने रोकवामां जीवपण समर्थ नथी वली जीवने भवांतरमां कोण लइ जाय छे? तथा जीवना शरीरनी रचना, आंखोना पडदा, अनेक प्रकारना रंग बेरंगी, हाड, चामडी, लोही, वीर्य इत्यादि रचना कोण रचेछे? तेनुं पूर्ण स्वरूप ज्यां (१४८) कर्म प्रकृतिनुं स्वरूप लखशुं त्याथी जाणवुं ते हेतुथी ईश्वर जगत् कर्त्ता कोइ तरेहथी सिद्ध थता नथी विशेष

१सारासार–नहाना मोहोटा उंचनीच वा न्यूनाधिक–के समविषम सुखिदु खी २स्वतंत्र,

रीतें जगत्कर्त्ता ईश्वरनु खंडन जाणवुं होय तो (१) श्रीसंमतितर्क, (२) द्वादशसार नयचक्र, (३) स्याद्वादरत्नाकर, (४) अनेकांतजय पताका, (५) शास्त्रसमुच्चयस्याद्वादकल्पलता, (६) स्याद्वादमञ्जरी, (७) स्याद्वादरत्नाकरावतारिका, (८) सूत्रकृतांग, (९) नंदीसिद्धांत, (१०) शब्दांभोनिधिगंध हस्ति महाभाष्य, (११) प्रमाणसमुच्चय, (१२) प्रमाणपरीक्षा, (१३) प्रमाणमीमांसा, (१४) आप्तमीमांसा, (१५) प्रमेय कमलमार्त्तंड, (१६) प्रमेयदिनमार्तंड, (१७) न्यायावतार, (१८) धर्मसंग्रहणी, (१९) तत्त्वार्थ, (२०) षड्दर्शनसमुच्चय इत्यादि जैनमतना ग्रंथ जोई लेवा ते कारणथी जे कामी, क्रोधी, कपटी, धूर्त्त, परस्त्रीगामी, स्वस्त्रीगामी, नाचनारा, गानारा, वजावनारा, रोपीटकरनारा, भस्म लगावनारा, माला जपनारा, संग्राम करनारा, डमरु आदि वाजा वगाडनारा, वरदान अथवा शाप देनारा, विनाप्रयोजन अनेक सकटमां पडनारा, इत्यादि अढारे दूषणसहित छे ते कुदेव छे तेने ईश्वर मानवा तेज मिथ्यात्व छे आ कुदेवोने माननारा पथ्थरनी नाव उपर वेठा छे. ते कारणथी लखवानु प्रयोजन एटलुज छे के कुदेवने कदापि अर्हंत भगवंत परमेश्वर मानवा नहि

इतिश्री तपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शभाषातरेकुदेवनिर्णयनामाद्वितीय परिछेद.संपूर्ण ॥२॥

॥ अथ तृतीयपरिछेदप्रारंभ ॥

त्रीजा परिछेदमां गुरुतत्त्वनु स्वरूप कहियें छिये जैनमतमां गुरुनां लक्षण आ प्रमाणे लखेलां छे — महाव्रतधराधीरा, भैक्षमात्रोपजीविन. ॥ सामायिकस्थाधर्मोप, देशकागुरवोमता ॥ १ ॥ अर्थ —अहिंसादि पाच महाव्रत धारण करनारा तथा पालनारा, अने आपत्ति समये धैर्य राखनारा, पोताना धारण करेला व्रतमा दूषण लगावी कलंकित नहि करनारा, तथा बेंतालीश दूषणरहित माधुकरी भिक्षावृत्ति करी, पोताना चारित्र धर्मना, तथा शरीरना निर्वाहवास्ते भोजन करनारा, भोजन पण पुरू पेट भरी नहि करनारा, भोजनने वास्ते अन्न, पाणी रात्रिमा नहि राखनारा, तथा धर्म साधनना उपकरण वर्जी वीजो कांइ पण

संग्रह नहि करनारा, धन, धान्य, सुवर्ण, रौप्य, मणि, मोती, प्रवालादि कांइपण परिग्रह नहि राखनारा, तथा राग द्वेषना परिणामरहित, माध्यस्थवृत्तिथी सदा वर्तनारा, तथा जीवोना उद्धारवास्ते, अर्हंत भगवंत परमेश्वरें सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप धर्म, स्याद्वाद अनेकांतस्वरूप निरूपण करेल छे, तेनो भव्यजीवोने उपदेश करनारा, परंतु ज्योतिष शास्त्र, अष्टांगनिमित्तशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा राजनीति-सेवाप्रमुख अनेक शास्त्र, जेथी धर्ममां बाधा पहोंचे तेवां शास्त्रोनो उपदेश नहि करनारा, कारण के लौकिक शास्त्रो बुद्धिमान् पुरुषो वर्त्तमानमां पण बहु अध्ययन करे छे, तेमज सांसारिक विद्यानां नवीन, नवीन अनेक पुस्तको बनावेछे तथा पाश्चात्य पुरुषोनी बुद्धि जोइ आ देशना लोको पण सांसारिक विद्यामां बहुज निपुण थाय छे, अने ते कारणथी जीवोने धर्म पामवो बहुज मुश्केल थायछे, तेथी फक्त धर्मनोज उपदेश करनारा, एवा लक्षणवाला गुरु जैनमतमां छे अर्थात् जैनमतमां गुरुनां एवां लक्षणो छे

प्रथम पांच महाव्रत साधुने धारण करवां कह्यां छे ते पांच महाव्रत कयां छे ? ते कहिये छिये अहिंसासूनृताऽस्तेय, ब्रह्मचर्यापरिग्रहा· ॥ पचभिः पचभिर्युक्ता, भावनाभिर्विमुक्तये ॥ २ ॥ अर्थः–(१) अहिंसा (जीवदया) (२) सूनृत (सत्यवचन बोलवु) (३) अस्तेय (साधुने उचित, आप्या विना वस्तु न लेवी ते) (४) ब्रह्मचर्य पालवुं (५) सर्व परिग्रहनो त्याग. ए पांच महाव्रत छे, तथा आ पांच महाव्रतोमां एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना छे. साधु आ पांच महाव्रत, तथा पचीश भावना, मोक्षने वास्ते पाले

आ पांच महाव्रतमांथी प्रथम महाव्रतनुं स्वरूप लखिये छिये. न यत् प्रमादयोगेन, जीवितव्यपरोपणं ॥ त्रसाना स्थावराणां च, तदहिंसाव्रतं मतं ॥ ३ ॥ अर्थ –त्रस, (द्वीन्द्रियादि) अने स्थावर, (पृथ्वीकाय) (अप्काय-तेउकाय-वाउकाय-वनस्पतिकाय) आ सर्व जीवोने प्रमादवश थइ मारे नहि प्रमादनां लक्षणो, राग, द्वेष, असावधानपणुं, अज्ञान, मन वचन कायानु चचलपणुं, धर्मनेविषे अनादर इत्यादि प्रमादने वश थइ जे प्राणातिपात करवो, तेनो जे त्याग, तेनुं नाम अहिंसा व्रत छे.

बीजा महाव्रतनु स्वरूप लखिये छिये प्रिय पथ्यं वचस्तथ्यं, सूनृतव्रत मुच्यते ॥ तत्तथ्यमपिनो तथ्यमप्रिय चाहितं च यत् ॥ ४ ॥ जे वचन सांजलवाथी बीजा जीव हर्ष पामे,ते वचनने प्रियवचन कहियें,तथा जे वचन जीवोने पथ्यकारि होय, परिणाम सुदर होय, अर्थात् जे वचनथी जीवने जविष्यमा वहुज सारु थाय, तथा जे वचन सत्य होय, एवु वचन जे बोलवु ते सूनृत व्रत कहिये, अने जे वचन अप्रिय तथा अहितकारि होय ते सत्य होय तो पण सत्य नथी आ व्रतविषे कांइक विशेष लखियेछिये जे वचन व्यवहारमा जलें सत्यज होय, परतु ते जो बीजा जीवने दुःखदायक होय तो ते वचन साधु न बोले जेम के काणाने काणो केहेवो, चोरने चोर केहेवो, कुष्टीने कुष्टी केहेवो, इत्यादि, वली जे वचन जीवोने जविष्यमा अनर्थकारक होय तेपण वसुराजानी पेठे बोले नहि जो आ बने वचनो बोले तो ते साधुने सूनृत व्रतमा कलक लागी जाय, कारण के आ बने वचनो असत्यमाज गणेलां छे

हवे त्रीजु महाव्रत लखियें छिये अनादानमदत्तस्या,ऽस्तेयव्रतमुदीरितं ॥ बाह्या प्राणानृणामर्थो, हरता तं हताहि ते ॥ ५ ॥ अर्थ —अदत्त मालेकना आप्या विना लई लेवु तेनो जे नियम ते अस्तेय व्रत कहिये नामातर अचोरीव्रत अदत्तादान, चार प्रकारनु छे (१) जे वस्तु साधुने लेवा योग्य छे, जेम के अचित्त, जीवरहित वस्तु, तृण, काष्ठ, पाषाणादि, ते तेना स्वामिना पुछ्या विना लई लेवी, ते स्वामि अदत्त (२) तथा जेम कोई घेटुं, वकरी, गाय प्रमुख जीव, जेनो स्वामी बीजा हिंसकजीवने तेनी किमत लई आपे, अथवा किमत विना आपे, अने लेनारे आपेली वस्तु लीधी छे, परतु ते जीवे पोतानुं शरीर आपेलु नथी, ते हेतुथी जीवअदत्त (३) तथा आधाकर्मादि आहार प्रमुख जे जे वस्तु,अचित्त, जीवरहित पण छे, अने आपेली पण ते वस्तुना स्वामिये ज छे, परतु तीर्थंकर जगवते निषेध करी छे पछी जो साधु ते वस्तुने ग्रहण करे तो तीर्थंकर अदत्त (४) तथा जे वस्तु निर्दोष छे, जेम के वस्त्र आहारादि, अने ते वस्तुना स्वामिये ते आपेली छे, तेमज तीर्थंकर जगवते तेनो निषेध पण करेलो नथी, छतापि गुरुनी आज्ञाविना ते वस्तुने जो साधु लहे तो अदत्त आ व्रतमा आ चारे प्रकारनुं अदत्त

न लेवुं. जेटलां व्रत, नियम छे, ते सर्वे अहिंसा व्रतनी रक्षावास्ते वाड समान छे, आ त्रीजा व्रतना पालनथी, अहिंसा व्रतनीज रक्षा थाय छे, अने जो त्रीजु व्रत न पाले तो अहिंसा व्रतने दूषण लागे छे, कारण ए छे के लक्ष्मी जे छे ते मनुष्योना बाह्य प्राण छे ज्यारे मनुष्य कोइनी चोरी करे छे, त्यारे निश्चयथी ते तेना प्राणोनोज नाश करे छे ते कारणथी चोरी करवी ते महापाप छे सर्व चोरीनो जे त्याग, तेनुंज नाम त्रीजु अदत्तादान त्यागरूप महाव्रत छे

हवे चोथा महाव्रतनु स्वरूप लखियें छिये. दिव्योदारिककामानां, कृतानुमतिकारितै ॥ मनोवाक्कायतस्त्यागो, ब्रह्माष्टादशधा मतम् ॥ ६ ॥ अर्थ.—दिव्य (देवताना) वैक्रिय शरीर संबंधी जे कामभोग, तथा औदारिक (तिर्यंच, मनुष्यना) शरीर संबंधी जे काम भोग, अर्थात् वैक्रिय तेमज औदारिक ए बंने शरीरनी साथे विषयसेवन करवु, तेमज बीजाउने विषयसेवन करावबां, तेमज विषयसेवन जे करे तेने अनुमति आपवी, आ छ भेद, मनथी, वचनथी, तेमज कायाथी ए रीतें अढार प्रकारथी मैथुनसेवननो जे त्याग तेने ब्रह्मचर्य व्रत कहियें छियें.

हवे पांचमुं महाव्रत लखियें छियें सर्वभावेषु मूर्छाया, स्त्याग स्यादपरिग्रहः ॥ यदि सत्स्वपि जीयेत, मूछया चित्तविप्लव ॥ ७ ॥ अर्थ.— सपूर्ण जे सारा भाव पदार्थ, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावरूप, तेनेविषे जे मूर्छा- ममत्वभाव- मोह, तेनो जे त्याग, ते अपरिग्रह व्रत कहियें जेनी पासे पोताना शरीर विना बीजी कांइ वस्तु नथी तेने पण निष्परिग्रह पणु छे एम न कहियें, परंतु जेने, सर्व वस्तुउ उपरथी मूर्छा-ममत्व-मोह गयेलो होय तेनेज निष्परिग्रही कहियें कारण के जेनी पासे वस्तु कोइ नथी, परतु नथी एवी वस्तुनी चाहना जेने लागी रही छे ते त्यागी नहि. जो ज्ञानद्वारा मूर्छा त्याग्या विना त्यागी थवातुं होय तो कुतरा तेमज गधेडा पण त्यागी थवा जोइयें सवव जे पुरुष ममत्वरहित छे ते निष्परिग्रही छे पछी तेनी पासे धर्मसाधन करवानां केटलां एक उपकरण पण छे तो पण मूर्छाना अभावथी ते परिग्रह नथी.

हवे पूर्वोक्त एकेक महाव्रतनी पांच पांच भावना लखियें छिये भावनाभिर्भावितानि, पचभि पचभि. क्रमात् ॥ महाव्रतानि नो कस्य, सा-

धयत्यव्यय पदम् ॥ १ ॥ अर्थ – आ पांच महाव्रतोनी पचीशजावनाथी जे कोइ ते ते महाव्रतने रजित (वासित) करे, अर्थात् पांच पांच जावनापूर्वक अखड महाव्रत पाले तो एवो कोइ जीव नथी के तेने ते महाव्रत मोक्ष पद न प्राप्त करावे ?

हवे प्रथम महाव्रतनी पाच जावना लखिये छियें मनोगुप्त्येपणादानै, र्याजि समितिजि. सदा ॥ दृष्टान्नपानग्रहणे, नाहिंसा जावयेत् सुधी. ॥ १ ॥ अर्थ.– मनने पापना काममा न प्रवर्त्तावे, परतु पापना काममांथी खेंची लीए तेनु नाम मनोगुप्ति छे जो मनने पाप काममा प्रवर्त्तावे, अने बाह्य वृत्तिथी हिंसा न पण करे तो पण प्रसन्नचन्द्र राजर्षिनी पेठे सातमा नरकमा गमन करवा योग्य पापकर्म उत्पन्न करे छे ते कारणथी मुनिये अवश्य मनोगुप्ति करवी जोइयें ए प्रथम जावना तथा एषणा समिति–आहारादि चारे वस्तु, आधाकर्मादि बेंतालीश दोपरहित लहे बेंतालीश दूषणोनु संपूर्ण स्वरूप जोवु होय तो पिंडनिर्युक्ति शास्त्र (७०००) श्लोक प्रमाण छे ते जोइ लेवुं ए बीजी जावना तथा आदाननिक्षेप- पात्र, दंड, फलक प्रमुख जे कांइ लेवु पडे, तथा जूमि उपर राखवु पडे, ते प्रथम तो नेत्रथी देखीने, रजोहरणथी पुंजीने, पछी लहे तेमज राखे, कारण के विछी, सर्पादि अनेक झेरी जीव, जो ते उपकरण उपर बेठा होय तो ते करडे, अने बीजी बिचारा अनाथ जीव बेठा होय तो हाथना स्पर्शथी ते मरी जाय, अने तेथी जीवहत्यानु पाप लागे. ते वास्ते जे काम करे ते यत्नपूर्वक करे

नजरे पडता नथी, वली साप, विछी करडवानो जय रहे छे. तथा गृहस्थनुं कांइ आजूपण प्रमुख गयु होय तो तेना मनमां शंका उत्पन्न थाय के, कोण जाणे अंधारामां साधुज लइ गया होय ? वली अंधारामां सुंदर साधुने देखीने कदाचित् कोइ उत्कट विकारवाली स्त्री उग्र स्पर्श करे, अने ते वखते वीजा देखता होय तो धर्मनी अत्यंत निंदा थाय, वली साधुनुं मन पण अंधारामां स्त्रीने देखीने ज्रष्ट थाय, साधु स्त्रीने पकडे, स्त्री पोकार करे, एटले विशेष धर्मनी हानि थाय, साधुउं उपर अप्रीति थाय, ते कारणथी अंधकारवाली जग्यामां साधु अन्नादि न लहे ए पांचमी जावना

हवे वीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छिये. हास्यलोजजय क्रोध, प्रत्याख्यानैर्निरंतरम् ॥ आलोच्य जापणमपि, जावयेत् सूनृतं व्रतं ॥ १ ॥ अर्थ.–प्रथम कोइनी हांसी न करे, हांसीनो त्याग करे, कारण के जे पुरुष वीजानी हांसी करशे, ते अवश्य जुठु वोलशे परनी हांसी करवी ते महा अनर्थनुं कारण छे श्रीहेमचंद्रसूरिकृत रामायणमां लख्युं छे के, रावणनी वेन शूर्पनखानी श्रीरामचंद्र तेमज लक्ष्मणजीये हांसी करी तेथी शूर्पनखा क्रोधायमान थइ, पोताना जाइ रावणनी पासे गइ, अने सीतानु वर्णन कर्युं, पछी रावणें सीतानुं हरण कर्यु, मोटु युद्ध थयु, जेनी आज लोको नकल वनावे छे. आ सारी रामायणनुं निमित्त शूर्पनखानी हांसी छे. ते वास्ते परहास्यनो त्याग करे प्रथम जावना. वीजो, लोजनो त्याग करे, कारण के जे लोजी हशे ते अवश्य पोताना लाजने वास्ते जूठु वोलशे. ए वीजी जावना तथा जय न करवो, कारण के जयवंत पुरुष पण जूठु वोली दीये छे ए त्रीजी जावना. तथा क्रोध करवानो त्याग करे, कारण के जे पुरुष क्रोधवश थशे ते वीजानां छतां, अछतां दूषणो अवश्य वोलशे, तेथी क्रोधत्यागरूप चोथी जावना तथा प्रथम मनमां विचार करी पछी वोले, कारण के विचार विना वोलशे ते अवश्य जूठुं वोलशे, ते वास्ते विचारपूर्वक वोलवु ते पांचमी जावना

हवे त्रीजा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छिये आलोच्यावग्रहयाचा,ऽजीक्ष्णावग्रहयाचनं ॥ एतावन्मात्रमेवैत, दित्यवग्रहधारण ॥ १ ॥

समानधार्मिकेन्यश्च, तथावग्रहयाचनं ॥ अनुज्ञापि तथा नाम्ना, सनमस्तेयन्नावना ॥ २ ॥ अर्थ –जे मकानमा साधुने रेहेवु होय, ते मकानना स्वामिनी प्रथम आज्ञा लेवी, मकाननो मालेक आज ठे एम जाणीने आज्ञा लेवी जो स्वामिनी आज्ञाविना रहे तो स्तेय लागे तेमज घरनो मालेक कदाचित् रात्रिमां क्रोधवश थइ साधुने वहार काढे तो रात्रिमां क्यां जवु ? इत्यादि अनेक क्लेश उत्पन्न थाय, ते वास्ते मकानना मालेकनी आज्ञा लइ ते मकानमा रेहेवु ए प्रथम न्नावना उपाश्रयना स्वामिनी वारवार आज्ञा लेवी, कारण के कोइ साधु कदाचित् रोगी थइ जाय, त्यारे जगल पुरीषमूत्र करवाने अवश्य जगा जोइये गृहस्वामिनी आज्ञाविना जो तेना मकानमां मलमूत्र करे तो चोरी लागे ते वास्ते गृहस्वामिनी वारवार आज्ञा लेवी ए वीजी न्नावना तथा उपाश्रयनी न्नूमिनी मर्यादा करी लहे के अमुक जग्यासुधी अमने आपनी आज्ञा ठे, जो मर्यादा न करे तो अधिक न्नूमि उपयोगमां लेवाथी चोरी लागे ठे ते वास्ते प्रथमज मर्यादा करे ए त्रीजी न्नावना तथा जे साधु समानधर्मी होय, अने ते कोइ जग्यामां प्रथम उतरेला ठे, पठी वीजा साधु जो ते मकानमा उतरवा चाहे तो प्रथमना साधुनी आज्ञा विना उतरे नहि जो प्रथमना साधुनी आज्ञा न लहे तो स्वधर्मी अदत्त लागे ए चोथी न्नावना. तथा साधु जे काइ अन्न, पान, वस्त्र, पात्र, शिष्यादि लहे, ते सर्वे गुरुनी आज्ञाथी लहे, जो गुरुनी आज्ञा विना काइ वस्तु लहे तो गुरु अदत्त लागे ए पाचमी न्नावना

हवे चोथा व्रतनी पांच न्नावना लखिये ठिये स्त्रीपढपशुमद्वेश्मा, सनकुड्यांतरोज्झनात् ॥ सरागस्त्रीकथात्यागात्, प्राग्रतस्मृतिवर्जनात् ॥ १ ॥ स्त्रीरम्यांगेक्षणस्वाग, सस्कारपरिवर्जनान् ॥ प्रणीतात्यशनत्यागात्, ब्रह्मचर्यं तु न्नावयेत् ॥ २ ॥ अर्थ –जे घरमां, आसनमा के न्नीतने अतरे देवी अथवा मनुष्यनी स्त्री वसती होय, अथवा देवागना के मनुष्य स्त्रीनी लेपमय के चित्रामण प्रमुखनी मूर्त्ति होय, तथा जे घरमां नपुसक वेदवाला रेहेता होय, तथा जे मकानमा पशु, गाय, महिषी, घोडी, वकरी, गाडरी प्रमुख तिर्यंच स्त्री राखवामा आवती होय, तथा जे मकानमां कामसेवन करनारी स्त्रीना शब्द तथा वीजा मोह उत्पन्न करनारा

शब्द तथा तेना आनूषणोना शब्द श्रवण थता होय, ते मकानमां तथा तेनी एक जीतने अंतरे साधु न रहे ए प्रथम जावना तथा सराग (प्रेमसहित) स्त्रीनी साथे वार्त्तालाप न करे, अथवा रागवाली स्त्री साथे वार्त्ता न करे, तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, जाषा, स्नेह शृंगार प्रमुखनी कथा सर्वथा न करे, कारण के रागवाली स्त्रीनी साथे जे पुरुष स्नेहसहित कामशास्त्र प्रमुखनी वार्त्ता करशे ते अवश्य विकार जावने प्राप्त थशे, ते वास्ते सरागस्त्री साथे कथा न करे ए वीजी जावना. तथा दीक्षा लीधा पहेलां गृहस्थावासमां स्त्रीनी साथे जे कामक्रीडा, वदनचुंवन, चोरासी कामासनथी विषयसेवन प्रमुख क्रीडा करी होय, तेने फरी मनमां कोइ वखत स्मरण न करे, कारण के पूर्वक्रीडा स्मरण रूप इंधनथी कामाग्नि फरी धुंधवा लागी जाय छे ए त्रीजी जावना तथा अविवेकी मनुष्योने देखवा, तेमज वांछवा योग्य स्त्रीनां अंगोपांग, मुख, नयन, स्तन, जघा, होठ प्रमुख तेने सरागदृष्टिथी जोवां, तथा अपूर्व विस्मय रसना पूरमां मग्न थइ आंख फाडी स्त्री सन्मुख जोवु, इत्यादि वर्जे, परंतु रागरहित दृष्टिथी जो कदाचित् देखवामां आवी जाय तो दोष नहि तथा पोताना शरीरने सुधारे, स्नान, विलेपन, धूपथी सुगंधित करे, नख, दांत, केश, समारे अने चक्षुनी कंगी, सूरमाथी विनूषा करे, इत्यादि शरीरसंस्कार न करे. कारण के स्त्रीनां रमणीय अंगोपांग देखवाथी, दिवानी शिखामां जेम पतंगिउं जस्म थाय छे, तेम कामी पुरुष पण कामाग्निमां जस्म थाय छे आ शरीर सर्व अशुचिनुं मूल छे, तेने शृंगार करवो ते अज्ञानता छे जेम मलीन वस्तुनी कोथली उपर चंदननु लेपन करवामां आवे तो शुं ते कोथली सुगधमय थाय छे? तेवुज आ शरीर छे. वली आ शरीर अते स्मशाननी मूठीजर राख थई जाय छे तो शावास्ते तेनी विनूषा करवामां व्यर्थ काल गमाववो जोइये? ए चोथी जावना तथा प्रणीत, स्निग्ध, मधुरादि रस, तेनो अधिक आहार करवो, तथा रूक्षजोजन पण संपूर्ण पेट जरी खावु, आ वंने प्रकारना आहारनो त्याग करे, कारण के जे पुरुष, निरंतर स्निग्ध, मधुर रसनो आहार करशे ते जरुर धातुपुष्ट थशे, पछी वेद उदयथी अवश्य कुशील सेवन करशे तेमज निक्षावृत्तिमा रूक्षजोजन पण प्रमाणथी अधिक करवाथी काम उ-

त्पन्न थइ जाय छे, तेमज अधिक खावाथी शरीरने पीडा उत्पन्न थाय छे, वली विषूचिकाप्रमुख रोग थाय छे, ते वास्ते प्रमाणथी अधिक जोजन पण न करे पूर्व पुरुषोए खावानी मर्यादा आ प्रमाणें लखी छे, यत. ॥ अद्धमसणस्य सवं, जणस्य कुज्जा दवस्स दोजागे ॥ वाउपविआरणठा, छज्जाय ऊणग कुज्जा ॥ १ ॥ जावार्थ.– मतिपूर्वक पोताना उदरना छ जाग करवा, तेमांथी त्रणजाग अन्नथी, अने बे जाग पाणीथी पूरवा, अने एक जाग खाली राखवो जेथी श्वासोछ्वास सुखें सुखें प्राप्त थया करे ए पांचमी जावना

हवे पाचमा महाव्रतनी पांच जावना लखिये छिये स्पर्शे रसे च गधे च, रूपे शब्दे च हारिणि॥ पचसु हींड्रियार्थेषु गाढ गार्द्ध्यस्य वर्जनं ॥१॥ एतेष्वेवामनोज्ञेषु, सर्वथा द्वेपवर्जन ॥ आकिंचन्यव्रतस्यैव, जावना पच कीर्त्तिता ॥ २ ॥ अर्थ –स्पर्शादि मनोहर पाचे विपयोमा जे अत्यत गृद्धिपणु ते वर्जवु तेमज स्पर्शादि अमनोज्ञ पांचे विपयोमा द्वेप न करवो ए पाचमा महाव्रतनी पांच जावना पूर्वोक्त पाच महाव्रत, तेमज पचीश जावना जेमा होय ते, तथा चरणसित्तरी अने करणसित्तरी संयुक्त जे होय ते जैनमतमा गुरु कहेल छे

हवे चरणसित्तरीना सित्तेर जेद लखिये छिये यत ॥ वयसमण धम्म सजम, वेयावच्च च बज्ज गुत्तीउं॥ नाणाइ तिय तवको, हनिग्गहाइ चरण मेय ॥ १ ॥ अर्थ.–पाच प्रकारना व्रत, दश प्रकारना श्रमणधर्म, सत्तर प्रकारना संयम, दश प्रकारनां वैयावृत्य, नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण प्रकारे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वार प्रकारना क्रोधादिनिग्रह, ए सर्वमली सित्तेर जेद थया तेमाथी पाच व्रतनु स्वरूप जावनासयुक्त उपर वतावेल छे

हवे दशप्रकारें श्रमणधर्म लखियें छिये यत ॥ खतिय मद्दवजाव, मुत्तीतव सजमेय वोधव्वा ॥ सच्च सोय आकिं, चण च वज्ज च जइधम्मो ॥१॥ खंति (क्षमा) कदापि सामर्थ्य होय अथवा न होय तोपण बीजानां डुर्वचन सहन करवाना परिणाम–मनोवृत्ति, तेनु नाम क्षमा छे अर्थात् सर्वथा क्रोधनो त्याग, ते क्षमा (२) मार्दव-कोमलपणुं अहकाररहितपणुं, एवा जे जाव, अथवा कर्म ते मार्दव, नम्र थइ अजिमाननो त्याग करवो ते

(३) आर्जव-मनवचन कायाथी सरल तेनो जे जाव अथवा कर्म ते आर्जव मनवचन कायानी कुटिलतानो अजाव. (४) मुत्तीमोचनं–वाह्याभ्यंतरथी तृष्णानो त्याग, लोजनो त्याग ते मुक्ति (५) तप–रसादि धातु अथवा अष्टप्रकारनां कर्म जेनाथी जस्म थाय ते अशनादि वार प्रकारें तप. (६) संयम-आश्रवनी त्यागवृत्ति (७) सत्यं–मृषावादविरति, जूठनो त्याग (८) शौच-संयमवृत्तिमां कलंकनो अजाव (९) आकिंचन– किंचित्मात्र ऽव्यनुं पोतानी पासे नहि होवापणुं(१०) ब्रह्मचर्य– सर्वथा मैथुननो अजाव. आ दश प्रकारना यतिधर्म जाणवा. वली मतांतरथी दशप्रकारें यतिधर्म आ रीतें कहेठे. यत॰ ॥ खंती मुत्ती अज्जव, मद्दव तहलाघवे तवे चेव ॥ संजम वियोग किंचण, वोधवे वंजचेरेय ॥ १ ॥ अर्थनी सुगमताथी विस्तार कस्यो नथी.

हवे सत्तर जेद संयमना लखिये ठियें. यतः॥ पंचासवा विरमणं, पचिंदिय निग्गहो कसाय जउ ॥ दंमत्तयस्स विरइ, सत्तरसहा संजमो होइ ॥ १ ॥ अथवा ॥ पुढवि दग अगणिमारुय, वणसइ खिति चउ पणिदि अजीवा ॥ पहुप्पेह पमद्यण, परिठवण मणो वइ काए ॥२॥ अर्थ –॥ उत्पन्न करियें कर्म जेनाथी ते आश्रव- तेना पांच प्रकार, पांच महाव्रतमां वताव्या ठे ते (१) हिंसा (२) मृषा (३) चोरी (४) मैथुन (५) परिग्रह आ पांचे आश्रवनो त्याग करे तथा स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु तेमज श्रोत्र आ पांचे इंड्रियोना स्पर्शादि पांचे विषयोविषे लंपटपणुं त्यागे तथा क्रोध, मान, माया अने लोज ए चारे कषायने जीते ए चारेना उदयने निष्फल करे, तेमज नहि उदय पाम्या होय तेने उत्पन्न न करे तथा जीवनी चारित्रधर्मरूप लक्ष्मी जेनाथी दंमाय एवा खोटा मन वचन कायारूप जे त्रण दंम तेनी विरति करे ए सत्तर जेद संयमना वताव्या हवे प्रकारांतरथी संयमना सत्तर जेद वतावियें ठियें (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) पवन, (५) वनस्पति, (६) द्वींड्रियजीव, (७) त्रींड्रियजीव, (८) चतुरिंड्रियजीव, (९) पचेंड्रियजीव पूर्वोक्त नवविध जीवोनी, मन, वचन अने कायाथी, करवी, कराववी अने करनारने अनुमोदवारूप हिंसावृत्तिनो त्याग, ते नव प्रकारना संयम– तेमां संरंज, समारंज, आरंज तेनी समज आ ठे प्राणीना प्राणना विनाश करवानो संकल्प करवो ते

सरंज; जीवना प्राणने परिताप उपजाववो याने पीडा करवी ते समारंज, तथा जीवोना प्राणनो विध्वंस करवो ते आरंज, तथा (१०) अजीवसयम, जे अजीव वस्तुने राखवाथी संयममां कलक लागे जेमके मांस, मदिरा, सुवर्णप्रमुख धातु, मोतीप्रमुख रत्न, अकुशादि शस्त्र, इत्यादि अजीव वस्तु राखवाथी संयममां कलंक लागे, तेथी तेवी अजीव वस्तु न राखवी, अने अजीवरूप पुस्तक, तथा शरीर उपकरणादि, ते आ दूषमकाल प्रप्रमुख दोषथी, बुद्धि, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम, बल इत्यादि सर्व हीन थइ गयेल ठे विद्यास्मरण रेहेती नथी. ते कारणथी आ कालमां पुस्तक राखवां, ते प्रतिलेखणा, प्रमार्जनपूर्वक यत्नथी राखवां तथा (११) प्रेक्षासयम–नेत्रथी देखी, बीज, हरिप्रमुख जीवरहित स्थानमां सुवु, बेसवु, चालवु इत्यादि करवु ते तथा (१२) उपेक्षासंयम– गृहस्थने पापनो व्यापार करता उपदेश करवो के आ काम तमे आवी रीतें करो ते, अथवा कोइ साधु संयमथी चलायमान थया होय तेने हितपूर्वक उपदेश करवो ते, तथा पार्श्वस्थादि साधु जेउ समाचारीथी भ्रष्ट थया होय, तेमज तेउ कोइ अनुचित काम करी रह्या होय, तेउने उपदेश करीश तो तेउ मानवाना नथी, एम कोइ साधु मनमा जाणी उदासीन रहे ते– तथा (१३) प्रमार्जन सयम– अवलोकन करेला स्थानमां वस्त्र, पात्रादि जो लेवा अथवा राखवां पडे तो प्रथम रजोहरणादिथी प्रमार्जन करीने पठी लेवा, राखवां के सुवु, बेसवु करे ते तथा (१४) परिष्ठापना सयम– जात पाणी, वस्त्र, पात्रादि जेमां जीव पडी गया होय तेने जीवरहित शुद्ध जूमिकामा शास्त्रोक्तविधिथी जे परठववां ते तथा (१५) मन सयम–मनमां डोह, ईर्ष्या, अजिमान न करवा, अने धर्मध्यानादिमा मन प्रवृत्त करवु ते तथा (१६) वचनसयम-हिंसाकारी कठोरवचन न बोलवा, अने शुजवचननु उच्चारण करवु ते तथा (१७) कायासयम-गमनागमन करवामां, तथा अवश्य करवा योग्य कामोमां उपयोगपूर्वक कायाने प्रवर्त्तावबी ते आ सत्तर जेद सयमना जाणवा

हवे वेय्यावृत्तना दश जेद कहिये ठिये आयरिय उवझाय, तवस्सि सेहे गिलाण साहुसु ॥ समणोन्न सघ कुलगण, वेयावच्च हवइ दसहा ॥ १ ॥ अर्थ –(१) ज्ञानादि पांच आचारने पाले ते आचार्य, तथा सेविये

जे ते आचार्य तथा (२) जेनी पासे आवीने अध्ययन करीये ते उपाध्याय तथा (३) तप जे करे ते तपस्वी. तथा (४) जेणें नवुं साधुपणुं अंगीकार कर्युं होय ते शिष्य तथा (५) ज्वरादि रोगवाला जे साधु ते ग्लान तथा (६) धर्मथी मगनारने स्थिर करे ते स्थविर तथा (७) जे साधुनी पोताना सरखी समाचारी होय ते समनोज्ञ तथा (८) साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका ए चारेनो जे समुदाय ते संघ तथा (ए) बहु एक सरखा गछोना, सजातिउना जे समूह ते कुल, चन्द्रादि तथा (१०) एक आचार्यनी वाचना वाला साधुउना समूह ते गण, गछ, कौटिकादि. पूर्वोक्त आचार्यादि दशेने अन्न, पाणी, वस्त्र, पात्र, मकान, (१) पीठ, (२) फलकें, (३) संस्तारक प्रमुख धर्म साधनोथी जे साहाय्य करवु, शुश्रूषा करवी, तथा जगलमां रोग उत्पन्न थवाथी औषध करवां, तथा नाना प्रकारना उपसर्गोथी पालना करवी तेनुं नाम वैय्यावृत्त छे

हवे जे शीलवान् साधु नव वाडसहित शील पाले तेने नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्ति कहे छे ते लखियें छिये यतः ॥ वसहि कह निसिज्जिंदिय, कुडुंतर पुव्वकीलिय पणीए ॥ अइमायाहार विभू, सणाइ नव बंभ गुत्तीउ ॥ १ ॥ अर्थः– १ (वसहि) वस्ति- जे ब्रह्मचारी साधु होय ते स्त्री, पशु, पंमकसंयुक्त जे वस्ति होय त्यां न रहे तेमां प्रथम स्त्री, बे प्रकारनी छे, एक देवी, बीजी " मानुषी" मनुष्यणी, ते बनेना बे बे भेद छे, एक असल, बीजी तेनी मूर्त्ति के चित्रामनी मूर्त्ति आ बने प्रकारनी स्त्री न होय ते वस्तीमां रहे तथा पशु जे तिर्यंचणी, गाय, कुतरी, पाडी, घोडी, बकरी, घेटी प्रमुख जे वस्तिमां नहि रहेती होय त्यां रहे. तथा पंडक नपुंसक, त्रीजा वेदवाला, अत्यंत मोहमय काम करनारा, स्त्री अने पुरुष बंनेनी साथे विषय सेवनारा, जे वस्तिमां रेहेता होय त्यां ब्रह्मचारी न रहे. कारण के आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेतां थकां तेउनी काम विकारनी चेष्टा देखवाथी, ब्रह्मचारीना मनमां विकार उत्पन्न थवाथी ब्रह्मचर्यने बाधा थाय छे जेम उंदर तेमज बिलाडी एक जगामां रहे तो उंदरने सुख नहि, तेमज आ त्रणे संयुक्त वस्तिमां रेहेवाथी शीलवान्ने शियलमां उपद्रव थाय आ प्रथम ब्रह्मचर्यगुप्ति

१ पाटला, २ पाटियु ३ संथाराआदि

(कह) कथा केवल स्त्रियोनेज, तथा एकली स्त्रीने धर्मदेशना वचनना प्रबधरूप कथा न कहे, तथा स्त्रीनी कथा न करे ॥ यथा ॥ कर्णाटी सुरतोपचारचतुरा, लाटी विदग्धा प्रिया ॥ इत्यादि कथा न करे. कारण के आ कथा राग उत्पन्न करवानो हेतु छे तथा स्त्रीना, देश, जाति, कुल, वेष, जाषा, गति, विभ्रम, इगित, हास्य, लीला, कटाक्ष, स्नेह, रति, कलह, शृंगार इत्यादि जे विषय रसनी पोषण करनारी कामिनीनी कथा ते कदी न करे, जो करे तो अवश्य मुनिनुं मन पण विकार पामे आ बीजी ब्रह्मचर्यनी गुप्ति

३ (निसिज्ज) आसन– स्त्रियोनी साथे एक आसनपर न वेसवुं, तथा जे जगा अथवा आसनथी स्त्री उठी होय ते आसन अथवा स्थानमां वे घडी सुधी साधु न वेसे, कारण के ते जग्यामां तत्काल वेसवाथी स्त्रीनी स्मृति थाय छे, तेमज स्त्रीना वेसवाथी शय्या अथवा आसन, मेलथी मलिन थवाथी स्त्रीना स्पर्शवाला आसनादिना स्पर्शथी विकार उत्पन्न थाय छे आ त्रीजी ब्रह्मचर्यगुप्ति

४ (इंदिय) इन्द्रिय, अविवेकी लोकोने देखवा योग्य स्त्रियोनां अंगोपांग जे नाक, स्तन, जघा प्रमुख तेउने ब्रह्मचारी साधु अपूर्व रसमां मग्न थइने, नेत्र फाडीने देखे नहि. कदाचित् दृष्टि पडी जाय तो पछी एवी चिंतवना पण न करे के वाह शु विशाल सुदर लोचन छे ! वाह शु नासिका सीधी छे ! तथा इच्छवा योग्य वने स्तन छे ! जो स्त्रीनां पूर्वोक्त अगोपांगनु एकाग्र रसमां मग्न थइ चितवन करे तो अवश्य मोहाधीन थइ मन विकार प्राप्त थाय आ चोथी ब्रह्मचर्यगुप्ति

५ (कुडंतर) कुड्यांतर, जे जींत, तट्टी के कनातने अतरे स्त्री पुरुष मैथुन सेवन करतां होय, तेमज तेउना शब्द सजलाता होय, त्यां ब्रह्मचारी साधु न रहे आ पांचमी गुप्ति

(पुव्वकीलिय) पूर्वक्रीडा पूर्वे गृहस्थ अवस्थामां स्त्रीनी साथे जे विषय, जोग, क्रीडा, करी होय, तेनु स्मरण न करे. जो करे तो कामाग्नि प्रज्वलित थाय आ छठी गुप्ति.

(पणीय) प्रणीत अति चिकाशवाला, मीठा दूध, दहीं, प्रमुख अति

१ आतर अने बाह्य– मानस तथा शारीर, हाव भावादि चेष्टित

धातुपुष्ट करनार आहार निरंतर न करे जो करे तो वीर्यनी वृद्धि थवाथी अवश्य वेदोदय थाय, पछी जरूर विषयसेवन करे, कारण के जीर्ण कोथलीमां विशेष रूपैया नरिये तो जरुर फाटी जाय. आ सातमी गुप्ति.

(अइमायाहार) अतिमात्राहार ते रूक्ष, लुखी भिक्षा पण प्रमाणथी अधिक न खाय, कारण के अधिक खावाथी पण विकार थइ जाय छे,तेमज शरीरने विषूचिकादि पीडा थवानु कारण छे. आ आठमी गुप्ति

(विभूसणाइ) विभूषणादि, शरीरनी विभूषा, ते स्नान, विलेपन, धूप, नख, दांत, केश, जेमनी सुंदरता वास्ते करवा, समारवा, तथा विभूषा वास्ते तिलक करवुं, सुरमो, काजल आखमां सारवा,तथा सुकोमल करवा सारु हाथ, पग, साबु तेल प्रमुखथी मसली गरमपाणीथी धोवां, इत्यादि शरीरनी विभूषा न करे आ नवमी ब्रह्मचर्यगुप्ति आ नव प्रकारनी गुप्ति ते ब्रह्मचर्यनी रक्षा माटे नव वाड छे.

हवे ज्ञानादि त्रण कहिये छियें यथार्थ वस्तुनो जे यथार्थ बोध करे ते ज्ञान ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षय तथा क्षयोपशम थवाथी उत्पन्न थयो जे बोध, तेनां हेतु जे द्वादशांग, तेमज द्वादश उपांग, तथा प्रकीर्णक जे उत्तराध्ययनादि ते सर्व ज्ञान कहियें. तथा बीजु दर्शन–१ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आश्रव, ६ सवर, ७ निर्जरा, ८ बध, एमोक्ष, आ जीवादि नवतत्त्वनुं जे स्वरूप तेमां श्रद्धा (रुचि) करवी जेम के ए नवतत्त्व सत्य छे, मिथ्या नथी एवी तत्त्वरुचि तेनुं नाम दर्शन. तथा त्रीजुं सर्वपापना व्यापारोथी ज्ञान, श्रद्धानपूर्वक निवृत्त थवु तेनु नाम चारित्र छे तेमां देशविरति चारित्र तो ज्यां गृहस्थाश्रम धर्मनुं स्वरूप लखशु त्यांथी जाणवुं; अने जे सर्वविरति चारित्र छे तेनुं स्वरूप तो आ गुरुतत्त्व वर्णनमां लख्या करियें छिये.

हवे बार प्रकारना तपनुं स्वरूप लखिये छिये यतः ॥ अणसण मूणोयरिया, वित्तीसंखेवण रसच्चाउ ॥ काय कलेसो संली, णयाय वद्यो तवो होई ॥ १ ॥ पायछित्त विणउं, वेयावच्च तहेव सद्याउं ॥ जमण उस्सग्गो विय, अभितरउं तवो होइ ॥ २ ॥ अर्थः–१ अनशन व्रत करवां २ ऊणोदरी–थोडुं खावुं ३ वृत्तिसंक्षेप–अनेक प्रकारना अभिग्रह करवा ४ रसत्याग–दूध, दहीं, घी, तेल, गोल, मीठां पकान्न तेउनो त्याग करवो.

५ कायक्लेश–वीरासन, दंडासन, प्रमुख अनेकतरेथी कायाने कष्ट आपवु ६ सलीनता–पाचे इन्द्रियोने पोत पोताना विषयोथी रोकवी. आ ठ प्रकारें बाह्यतप. १ प्रायश्चित्त–जे कांइ अयोग्य काम कर्खु होय ते गुरुनी पासे जे प्रमाणे कर्खुं होय ते प्रमाणे प्रगटपणे केहेवु, पठी ते पापनी निवृत्तिवास्ते गुरुपासे यथायोग्य दंड लेवो, अने जविष्यमां फरी ते पाप न करवु तेनु नाम प्रायश्चित्त तप ठे, २ विनय–पोतानाथी गुणाधिकनु बहुमान करवु ते ३ वैयावृत्त पोतानाथी गुणाधिकनी जक्ति करवी ते ४ स्वाध्याय (१) पोते जणवु बीजाउने जणाववु (२) संशय उत्पन्न थयां थकां गुरुने पुठवु (३) पोते अध्ययन करेलु वारंवार स्मरणमां लाववु. (४) जे कांइ अध्ययन कर्खु होय तेना तात्पर्यनु एकाग्र चित्तथी चिंतवन करवु (५)धर्मकथा करवी ते संक्षेपमां–वांचना,पृछना,परावर्त्तना,अनुप्रेक्षा, धर्मकथा, ए पांच रूपे ठे ५ ध्यान १ आर्त्तध्यान २ रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान आ चारमां आर्त्त अने रौद्रध्यान तजवां अने धर्म अने शुक्लध्यान अंगीकार करवां ६ व्युत्सर्ग सर्व उपाधिउनो त्याग करवो ते आ ठ प्रकारे आन्यतर तप सर्व मली बार प्रकारनां तप ठे

क्रोध, मान, माया, अने लोज आ चारेनो निग्रह करवो ए प्रमाणे पांच महाव्रत, दश श्रमणधर्म, सत्तर ज्ञेदें संयम, दशप्रकारें वैय्यावृत्त, नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, त्रण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, बार प्रकारें तप, क्रोधादि चार निग्रह, सर्वमली सित्तेर ज्ञेद चारित्रना ठे ते वास्ते तेने चरणसित्तरी कहेठे

हवे करणसित्तरीना ज्ञेद लखिये ठिये यत ॥ पिंडविसोही समिई, जावण पडिमाय इंडियनिरोहो ॥ पडिलेहण गुत्तीउ, अजिग्गह चेव करण तु ॥ १ ॥ अर्थ पिंडविशुद्धि १ आहार, २ उपाश्रय, ३ वस्त्र, ४ पात्र आ चार, वस्तुउने साधु बेंतालीश दूषणरहित लहे तेनु नाम पिंडविशुद्धि ठे बेंतालीश दोषनु संपूर्ण स्वरूप जोवु होय तो पिंडनिर्युक्तिनामा ग्रंथ जद्रबाहुस्वामिकृत ठे तेनी मलयगिरिसूरिकृत टीका सात हजार श्लोक प्रमाण ठे ते, तथा पिंडविशुद्धि ग्रंथ जिनवल्लज सूरिकृत ठे तेनी जिनपति सूरिकृत टीका ठे ते तथा प्रवचनसारोद्धार श्रीनेमिचंद्र सूरिकृतसूत्र तथा तेनी सिद्धसेनसूरिकृत टीका ठे ते तथा श्रीहेमचंद्रसूरिकृत योगशास्त्र अवलोकन करवा

हवे पांच समितिनुं स्वरूप लखिये छियें. प्रथम इर्यासमिति. चालवानुं नाम इर्या केहेवाय छे, अने सम्यक् आगमने अनुसार जे प्रवृत्ति, चेष्टा करवी ते समिति कहियें त्रस स्थावरजीवोने अन्नयदान आपनार जे मुनि, ते, प्रयोजन निमित्ते चालवु पडे त्यारे केवीरीतें चाले ? प्रथम तो प्रसिद्ध रस्ते चाले, जे रस्तो सूर्यना किरणोथी तपेलो होय प्रांशुक-जीवरहित होय, तथा स्त्री, पुरुषना संघट्टरहित होय, ते रस्ते जीवोनी रक्षानिमित्तें अथवा पोताना शरीरनी रक्षानिमित्तें पगना अंगुठाथी चार हाथ प्रमाण नूमिका आगल देखीने चाले तेनुं नाम इर्यासमिति छे ते प्रमाणे साधु जो चाले, तेमज बीजु काम करे, ते काममां कदाचित् कोइ जीव मरी पण जाय तो पण साधुने पाप लागतु नथी, कारण के तेनो उपयोग वहुज शुन्न छे तथा २ न्नापासमिति पापसहित न्नापा, तथा कठोरन्नाषा जेम के तु धूर्त्त छे, कामी छे, राक्स छे, एवा चार्वाकप्रमुख बोले तेवा शब्दो तथा निंदनीय शब्दो न बोले परंतु बीजाने सुखदायक, बोलवामां अल्प, बहु प्रयोजनने साधनार, अने संदेहविनानां एवां वचन बोले ते न्नापासमिति. तथा ३ बेंतालीश दूपणरहित आहारादि ग्रहण करे ते एपणासमिति. तथा ४ आसन, संस्तारक, पीठ, फलक, वस्त्र, पात्र, दंकादि आंखथी देखीने उपयोगपूर्वक लेवां, राखवां, करवां ते आदाननिक्षेप समिति. तथा ५ पुरीष, प्रस्रवण, थूंक, श्लेष्म, शरीर मल, वस्त्र, अन्न, पाणी जे शरीरने उपयोगनां न होय ते सर्वने जीवरहित नूमिकामां स्थापन करे ते, पांचमी परिस्थापना समिति. आ पांच समिति कही

हवे बार न्नावना लखिये छियें प्रथम अनित्य न्नावना, बीजी अशरण न्नावना, त्रीजी संसार न्नावना, चोथी एकत्वन्नावना, पांचमी अन्यत्वन्नावना, छठी अशुचिन्नावना, सातमी आश्रवन्नावना, आठमी संवरन्नावना, नवमी निर्जरान्नावना, दशमी लोकस्वन्नावन्नावना, अग्यारमी बोधिदुर्लन्न न्नावना, बारमी धर्मना कथन करनारा अरिहंत छे. आ बार न्नावना रात्रियें तथा दिवसें जेवी रीतें न्नाववा योग्य छे तेवी रीतें अन्यास करवो. आ बार न्नावनानु कांइक स्वरूप लखियें छिये.

१ अनित्य न्नावना- जेनुं शरीर वज्रसमान, सुंदर तेमज कठण हतुं,

ते पण अनित्यरूप राक्षसना जक्ष थया, तो पछी केलना गर्न्न समान नि सार जे जीवोनां शरीर छे ते आ अनित्यरूप राक्षसथी केवी रीतें वचशे ? वली लोको विलाडीनी पेठे आनदित थइने दूधनी पेठे विषय सुखनो स्वाद लहेछे, परंतु लाकडीना मारने देखता नथी, जावार्थ ए छे के, विषयजोगमा मग्न थइ आनंद तो माने छे, परतु जन्मांतरमा नरकपतनरूप सकटथी मरता नथी वली जीवोना शरीर पाणीना परपोटा समान, छे, तथा जीवित ध्वजासमान चचल छे, लावण्य, स्त्री, परिवार, आंखनी पापण जेम चचल छे, युवावस्था हाथीना काननी पेठे चंचल छे, स्वामिपणु स्वप्ननी श्रेणी समान छे, लक्ष्मी वीजली जेम चपल छे, एवी रीतें सर्व पदार्थोनु अनित्यपणु विचारता, प्यारा स्त्री पुत्रादि मरी जाय तो पण पोताना मनमा शोक न करे, अने जे मूर्ख जीव, सर्व जावने नित्य मानेछे ते जीर्ण पांदडानी कुपडीनो नाश थवाथी पण रात दिवस रुदन करेछे. ते कारणथी तृष्णानो नाश करी ममत्व रहित थइ शुद्धबुद्धिवाला जीव अनित्यजावना जावे

२ अशरणजावना- पिता, माता, पुत्र, जार्या प्रमुख विद्यमानछतां, अत्यंत आधि व्याधिना समूहरूप शृंखलामा[1] बंधायेला रुदन करता जीवोने कर्मरूप योद्धा, यमराज (काल) ना मुखमा प्रक्षेप करतां थकां (फेकेछे त्यारे) वहुज दुःख थाय छे जे लोक शरणरहित अनाथ छे, ते शु करशे ? तथा नाना प्रकारना शास्त्रविषयोने जाणनारा, तथा अनेक प्रकारना मत्र, यत्रोनी क्रिया जाणनारा, तथा ज्योतिष विद्याना जाणनारा, तथा अनेक प्रकारनी औषधि, रसायन प्रमुख वैद्यक शास्त्रनी तमाम क्रियामा कुशल, एवा विद्वानोनी कुशलता तथा क्रिया, कालनी सामे कांइपण करवामा समर्थ थइ नहि तथा नाना प्रकारना शस्त्रोवाला शूरवीर योद्धाओनी सेनाथी परिवेष्टित, (चो तरफ वीटायेला) तथा नानाप्रकारना मदजर हाथीओनी जेने वाड छे, एवा इन्द्र, वासुदेव, चक्रवर्त्तिसमान वलवान् पण कालना घरमां खेचाता चाल्या जाय छे. अत्यत दिलगीरी के प्राणियोने कोइनु शरण नथी तथा पृथ्वीनु छत्र अने मेरुनो दंड करवाने समर्थ, तेमज जेने अल्पपण क्लेश न

१ साकल वा वेडी

होतो एवा अनंत बलवान् तीर्थंकरपण लोकोने कालथी बचाववाने समर्थ नथी तो पछी बीजो कोण समर्थ छे ? स्त्री, पुत्र मित्रादिना स्नेहरूप भूतने दूर करवा वास्ते शुद्धमति जीव अशरण भावना भावे

३ संसारभावना कहियेंछियें बुद्धिमान् तेमज बुद्धिहीन, सुखी तेमज दुःखी, रूपवान् तेमज कुरूपवान्, स्वामी तेमज सेवक, वैरी, राजा तेमज प्रजा इत्यादि देवतामनुष्य, तिर्यंच, नारकिना अनेक प्रकारना कर्मवशथी वेष धारण करीने आ संसाररूप अखाडामां आ जीव नाटक करेछे तथा महारंभ, मांसभक्षण, मदिरापानादि कारणोथी अनेक प्रकारनां पापनो बंध करीने, महाअंधकारवाली नरकभूमिकामां जइ पडे छे, त्यां अंगछेदन, अग्निप्रज्वलनादि क्लेशरूप महादुःख जे जीवने थाय छे ते दुःखोनु स्वरूप केवली पण कथन करी शकता नथी आ नरकगति कही तथा कपट,जुठु बोलवुं इत्यादि कारणोथी प्राणी तिर्यंचगतिमां सिंह, वाघ, हाथी, मृग, बेल, बकरी प्रमुखनां शरीर धारण करेछे तथा ते गतिमां क्षुधा, तृषा, वध, बंधन, ताडन, तर्जन, रोग, हलवहन इत्यादि जे दुःख सदा ते जीवोने सहन करवां पडेछे ते केहेवाने कोण समर्थ छे ? आ तिर्यंच गति कही.

तथा खाद्य[1], अखाद्य[2], विवेकशून्यता, मनमां लज्जानो अभाव, मा, बेन, दीकरी गमन करवामां एक समानता,निःशंकता[3] वल्लभ छे ज्यां, एवा अनार्य मनुष्यमां, निरंतर जीवघात, मांसभक्षण, चोरी, परस्त्रीगमनादि अत्यंत कनिष्ट पापकर्म महादुःख उत्पन्न करनार ज्यां थया करे छे,तथा आर्यदेशमां पण क्षत्रिय, ब्राह्मणादि, अज्ञान, दरिद्रता, कष्ट, दौर्भाग्य पणु रोगादिथी पीडित छे, तथा पराधीनता, मानभंग, सेवकभावप्रमुख दुःख, निरंतर भोगववां पडेछे ज्यां, तथा अग्निमां अत्यंत तपावेली सुइओं, जेम एक एक रोममां एक एक सूइ कोइ जुवान पुरुषने परोववामां आवे तेम ते सघली, समकालें चारे बाजुए परोववामां आवे तेथी जे दुःख उत्पन्न थाय तेनाथी आठ गणुं दुःख स्त्रीना गर्भमां ज्यारे उत्पन्न थाय छे त्यारे भोगवे छे, ते दुःखथी अनंतगणुं दुःख जन्मसमये भोगवे छे, तथा बाल अवस्थामां मल, मूत्र, धूलमा आलोटवुं तथा मूर्खता

१ भक्ष्य २ अभक्ष्य ३ निर्भयपणु

प्रमुख तथा युवावस्थामां धन उपार्जन करवानु दुःख, इष्ट वस्तुनो वियोग, अनिष्ट वस्तुनो सयोग इत्यादि, तथा वृद्धावस्थामां शरीरनु कपवु, नेत्रनु वलहीनपणु, तथा श्वास, खांसी प्रमुख अनेक व्याधियी महादुःखोनु उत्पन्न थवु इत्यादि ज्यां निरंतर छे त्यां एवी कष्ट दशा छे के प्राणी सुख प्राप्त करे ? आ मनुष्यगति कही- तथा सम्यक् दर्शनादि पालवाथी जे जीव देवता थाय छे ते पण शोक, विषाद, मत्सर, नय, अल्प ऋद्धिथी इर्ष्या, काम, मद, क्षुधा प्रमुखथी पीडित थवाथी पोतानु आयुष्य दीन मनवालां थइने पूर्ण करे छे आ देवगति कही आ प्रमाणे मोक्षाभिलाषी जीव संसारभावना भावे

४ एकत्वभावना कहिये छिये. जीव एकलोज उत्पन्न थाय छे, अने एकलोज मरण पामे छे, एकलोज कर्म करे छे, अने एकलोज तेनुं फल भोगवे छे वली जीवें अत्यत कष्ट भोगवी जे धन उपार्जन करेलु छे ते धन तो स्त्री, मित्र,पुत्र,बधु प्रमुख खाइ जशे, अने जे पाप कर्म ते धन उपार्जन करवामा बाध्यां छे तेनुं फल तो तेने एकलानेज नरक, तिर्यंच गतिमां जइने भोगववु पडेछे आ केवु आश्चर्य छे ? तथा आ जीव, आ देहने वास्ते, रात दिन अटन करे छे, दीनपणु धारण करे छे, धर्मथी भ्रष्ट थाय छे, पोताना हितमा ठगाय छे, न्यायथी दूर रहेछे इत्यादि अनेक कृत्य करे छे, परंतु आ देह, आत्मानी साथे परभवमा एक पगला जेटली जगा सूधी पण ते साथे आवशे नहि हवे विचार करो के आ देह शु करशे ? शु मदद आपशे ? वली सगा वाहालां सर्व पोत पोताना स्वार्थमा तत्पर छे, वास्तवमा कोइ तारु नथी, ते वास्ते हे बुद्धिमन् ! तु पोताना हितने माटे धर्म करवामां प्रयत्न करय, आ प्रमाणे एकत्व भावना भावे

५ अन्यत्वभावना कहियें छियें आ ससारमां तु कोइनो नथी अने कोइ तारुं नथी माता, पिता, स्त्री, पुत्र, भाइ प्रमुख सगां तथा संबधियो ज्यां सुधी ताराथी तेउंनी कार्यसिद्धि थाय छे त्यां सुधी तु तेउंना प्राण समान वाहालो छे तेम तेउं मानशे परंतु स्वार्थसिद्धिमा भग थये जाणे एक बीजाने लेशमात्र सबध नथी एम भासन थता वेर भाव पण उत्पन्न थशे वली आ देहने छोडी जीव परलोकमा जाय छे तेथी आ शरीरथी जीव भिन्न छे तेम छता अनेक प्रकारनां खान, पान, भोग,

उपन्नोग, सुगंध, लेपनप्रमुखथी शरीरनी पुष्टि इछवी ते पण व्यर्थ छे कदाचित् आ शरीरने कोइ लाकडी प्रमुखथी मार मारे तो पण समता राखी सहन करवुं जोइये जे पुरुष अन्यत्वन्नावना न्नावे तेने शरीर, धन, पुत्रादिना वियोगथी दुःख शोक थतां नथी आ पांचमी अन्यत्व न्नावना कही

६ अशुचि न्नावना कहिये छियें. जेम लूणनी खाणमां जे पदार्थ पडे छे ते लूण थइ जायछे, तेम आ कायामां जे आहारप्रमुख पडेछे ते मलरूप थइ जाय छे, एवी आ काया अपवित्र छे, तथा रुधिर अने शुक्र (वीर्य) बंनेना मेलापथी आ काया (गर्न्न) उत्पन्न थाय छे, जरा (उंर) विंटाएली होय छे, माता जे आहारप्रमुख ग्रहण करेछे तेना रसथीज आ गर्न्न वृद्धि पामे छे, एवा आ देहने कोण बुद्धिमान् पवित्र मानेछे? तथा मिष्ट स्वाद, अने सुगधमय मोदक, दुध, दहिं प्रमुख षड्रस, इक्षुरस, कमोद प्रमुख धान्य, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा आम्र प्रमुख फल जे खावामां आवे छे ते तत्काल मलरूप थइ जाय छे, एवी आ अशुचि कायाने, महामोहांध पुरुष पवित्र मानेछे. तथा पाणीना सो घडाथी स्नान करीने तथा सुगंधमय पुष्प, कस्तूरि प्रमुख द्रव्यो लगावीने, उपरनी चामडी तो केटलो एक वखत मुग्ध जीव शुचि सुगधमय करे छे, परतु मध्य न्नागमां रहेलो विष्टानो कोठो केम पवित्र करी शके तेम छे? तथा अत्यत आनंदनी वृद्धि करनारां द्रव्योथी मघमघायमान थइ रहेली दिशा, तथा चदन, कस्तूरि, कर्पूर, अगर, कुंकुम प्रमुख वस्तुउ पण आ शरीरनो तेमनी साथे संबध थाय छे, त्यारे अल्पकालमा दुर्गंधरूप थइ जाय छे, तो पछी विचारो के आ कायाने कोण बुद्धिमान् पवित्र माने? ए प्रमाणेनी अशुचिरूपता आ शरीरनी विचारीने बुद्धिमान् पुरुष आ शरीरनी ममता न करे आ छठी अशुचिन्नावना कही

७ आश्रवन्नावना कहियें छियें मन, वचन, अने कायाना योगथी शुन्नाशुन्नकर्म जे जीव ग्रहण करे छे, तेनुं नाम आश्रव, जिनेश्वर न्नगवान् कहे छे सर्व जीवोविषे मैत्री न्नावना, गुणाधिक जीवोमां प्रमोदन्नावना, अविनीत शिष्यादिमां मध्यस्थ न्नावना, अने दुःखी जीवोमां करुणान्ना-

वना आ चारे जावनाउंथी जे जीवोनां अंत करण निरतर वासित होय, ते पुण्यवान् जीवो बेंतालीश प्रकारना पुण्य उपार्जन करे ठे, अने आर्त्त-ध्यान, रौद्रध्यान, पांच प्रकारना मिथ्यात्व, सोल प्रकारना कपाय, पांच प्रकारना विपय, तेउनाथी जेउना अंत·करण वासित होय ते ब्यासी प्रकारनां पापकर्म उपार्जन करेठे तथा सर्वज्ञ अर्हंत् जगवंत, गुरु, सिद्धात द्वादशाग, चार प्रकारना संघ इत्यादिना जे गुणानुवाद कीर्त्तन करेठे तेमज हितकारी सत्यवचन बोलेठे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करेठे तथा श्रीसघ, देव, गुरु, धर्म तथा धर्मि प्रमुखना जे अवर्णवाद बोले, तथा असत्य अने कपोलकल्पित मतनो जे उपदेश करेठे ते जीव अशुजकर्म उपार्जन करे ठे, तथा जे जीव वीतराग देवनी चदन पुष्पादिथी पूजा करे, तथा साधुनी जक्ति, विश्रामण प्रमुख, करे तथा पापथी काया गोपवे ते जीव शुजकर्म उपार्जन करे ठे तथा जे जीव, मांसजक्षण, सुरापान, जीवघात, चोरी, जुगार, परस्त्रीगमनादि करे ते अशुज कर्म उपार्जन करे ठे ए अनुक्रमथी मन, वचन, कायाथी शुजाशुज आश्रव उपार्जन कराय ठे आ प्रकारे आश्रवजावना जे जीव जावे ते अनर्थ परपरानो त्याग करेठे अने महानदस्वरूप मोक्षने देनारी, दु ख दावानल पर मेघसमान एवी शर्मावलि (नित्यसुखश्रेणी) अगीकार करेठे आ प्रमाणे सातमी आश्रवजावना कही

८ संवरजावना कहियें ठिये आश्रवनो निरोध ते सवर ते संवर बे प्रकारथी ठे एक सर्वसवर तथा बीजो देशसवर, तेमां सर्वसंवर तो अयोगी केवलीमा होय ठे, अने देशसवर एक बे इत्यादि आश्रवनो त्याग करनारमा होय ठे वली संवरना बीजा बे प्रकार ठे एक द्रव्यसवर तथा बीजो जावसवर तेमा जे कर्म पुजल आश्रवथी जीव ग्रहण करेठे तेउने देशथी अथवा सर्वथी आवता रोकवा ते द्रव्यसवर, अने जवहेतु क्रियानो त्याग करवारूप आत्माना जे शुज अध्यवसाय, ते जावसवर जे बुद्धिमान् मिथ्यात्व, अविरति, कपाय प्रमुख आश्रवोनो निरोध करे, अने आर्त, रौद्र ध्यान तजी धर्म, शुक्लध्यान ध्यावे, क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने मृडुताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोजने सतोषथी जीते, इंद्रियोना इष्ट अनिष्ट विपयोने राग द्वेप त्यागवाथी

जीते, ए रीतें जे जीव संवरभावना भावे तेने मोक्षरूप लक्ष्मी अवश्य वशवर्तिनी थाय छे आ प्रमाणे संवरभावना कही.

ए हवे निर्जरा भावना कहिये छिये संसारनी हेतुभूत जे कर्मनी संतति तेनो अतिशयथी जे नाश करे ते निर्जरा कहेवाय छे निर्जरा बे प्रकारनी छे सकाम निर्जरा तथा अकाम निर्जरा तेमांथी सकाम निर्जरा तो उपशांत चित्तवाला साधुने होय छे, अने बीजा जीवोने अकाम निर्जरा होय छे बीजा जीवोने जे अकाम निर्जरा थाय छे ते कर्मनो पाक स्वयमेव थाय छे तेथी तथा उपायथी पण कर्मनो नाश थायछे. जेम आम्रफल पोतानी मेलेज वृक्षनी डालीपर विद्यमान छतां पाकी जाय छे, अने कोद्रवादि परालनी अंदर दाखल करवाथी पण पाकी जाय छे तेवीज रीतें निर्जरा पण बे प्रकारनी छे अमारा कर्मनी निर्जरा थाय एवा आशयवाला जीव जे तप प्रमुख करे छे तेउने सकाम निर्जरा थाय छे, अने एकेंद्रियादि जे जीव छे तेउने विशेष ज्ञान तो नथी, परंतु शीतोष्ण, वर्षा, दहन, छेदन, वध, बधन, प्रमुख कष्ट भोगववाथी जे कर्म निर्जरा थाय छे तेनु नाम अकाम निर्जरा छे ए प्रमाणे तपप्रमुख करीने निर्जरानी वृद्धि करे, एम नवमी निर्जरा भावना भावे इति

१० हवे लोकस्वभाव भावना कहिये छिये. आ पृथ्वी, चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा, तेमज नरक, स्वर्ग, लोकाकाश सर्व मली एकलोक केहेवायछे जैनमतना सिद्धांतमां ते संपूर्ण लोकनो आकार आ प्रमाणे बतावेलो छे जेम कोई पुरुष जामो पेहेरीने पोतानी कमरमां बने हाथ लगाडी, पग पसारी उभो होय, तेनो जेवो आकार होय तेवो आ लोकनो आकार छे षड्द्रव्यथी पूर्ण छे, उत्पत्ति, स्थिति तेमज लय ए त्रणे स्वरूपसंयुक्त छे, अनादि अनतछे, कोइनो रचेल नथी, उर्ध्वलोक, अधोलोक तेमज तिर्गलोक, एवा तेना त्रण स्वरूपमां सर्व जीव पुद्गल तेनी अंदर प्रवर्त्ते छे, बहार कांइ नथी, बहार तो फक्त एक आकाश छे ते आकाश पण अनंत छे, आ आकाशनुं नाम जैनशास्त्रमां अलोक लखेलछे अधोलोकमां जुदी जुदी नीचे उपर सात पृथ्वी छे, तेमां नरकवासी जीव रहेछे, अने कोइ जगाए भवनपति तथा व्यतरपण रहेछे, तिर्गलोकमां मनुष्य, तिर्यंच तेमज व्यंतर रहेछे, उर्ध्वलोकमां देवता रहेछे, विशेषथी लोकस्वरूप जाणवु होय तो

लोकनाडी द्वात्रिंशति तथा लोकप्रकाश ग्रथ जोइ लेवा आ प्रमाणे लोक स्वरूपनु चितन करी लोकस्वरूपभावना भावे

११ हवे बोधि दुर्लभ भावना कहिये छियें पृथ्वी, पाणी अग्नि, वायु, वनस्पति, तेमां पोतानां करेलां क्लिष्टकर्मथी जीव परिभ्रमण करेछे, आ भयानक संसारमां अनंतानत पुद्गलपरावर्त्तन करतां थकां आ जीव अकामनिर्जराथी, तेमज पुण्य उपार्जन करवाथी, बेंद्रिय, त्रीन्द्रिय, चउरिन्द्रिय, पचेन्द्रियरूप त्रसपणु पामेछे, परतु आर्यक्षेत्र, सुजाति, उत्तमकुल, रोगरहित शरीर, संपत्ति, राज्यसुख, हलुकर्मिपणु, तथा तत्त्वातत्त्वनु विवेचन करनारी, बोध बीजने रोपनारी, कर्मक्षय करी मोक्ष सुखने प्राप्त करावनारी एवी श्रीसर्वज्ञ अरिहंत भगवंतनी देशनानो लाभ थवो बहुज दुर्लभ छे जो जीवे एकवार पण सम्यक्त्वरूप बोधिनु पालन कर्यु होत तो आटला कालसुधी कदापि ते ससारमा पर्यटन न करत जे अतीत कालमां सिद्ध थया, वर्तमान कालमा सिद्ध थायछे अने अनागत कालमां सिद्ध थशे, ते सर्व बोधिनुज माहात्म्य छे ते कारणथी भव्यजीवे बोधिनी प्राप्ति करवामां यत्न करवो जोइये, कारण के केटलाएक जीवोयें द्रव्य चारित्र तो अनतवार प्राप्त कर्यां, परतु बोधिविना ते सर्व निष्फल थयां आ प्रमाणे बोधि दुर्लभ भावना भावे

१२ धर्मकथाना केहेनारा अरिहत छे ए भावना लखियें छिये जे पुरुष परहित करवामां उद्यमी छे, तथा वीतराग छे, ते कदापि कोइपण स्थलें जूठ बोलशे नहि ते कारणथी तेना कथन करेला धर्ममांज सत्यता छे एवा तो लोकालोकने केवल ज्ञानथी प्रकाश करनार अरिहंतज होइ शके छे, बीजा नहि क्षांत्यादि दश प्रकारना धर्मने जिनेश्वर भगवान् केहेता थका ते धर्मनु साधन करनारा जीव ससारसमुद्रमां डुबता नथी अरिहंतनी वाणी पूर्वापर [१]अविरुद्ध छे वली तेना वचनमां हिंसानो उपदेश नथी वचन फक्त निर्जराने वास्ते कहे छे बीजाना उपदेश विना विचित्र तरेहथी कहे छे कुतीर्थिउना वचनो सर्व सद्गतिना वैरी छे, कारण के यज्ञादिमा पशुवधरूप हिंसाथी कलंकित छे, पूर्वापर विरोधी छे, निरर्थक वचनो पण बहु छे तेकारणथी कुतीर्थि-

१ विरोधरहित वा अव्याबाध–निर्दोष

यो,जे धर्म करे छे ते पण धर्माभास छे,धर्म नथी, ते कारणथी तेमनां वचन केम प्रमाण थइ शके? तेमज कुतीर्थिउना जे जे शास्त्रोमां कंइ कंइ स्थलें दया, सत्यता प्रमुखनां कथन छे ते पण केहेवाज मात्र छे;परंतु तत्वथी ते पण कांइ नथी, कारण के यथार्थ तेमनु स्वरूप तेउ जाणता जेम नथी, तेम यथार्थ पालता पण नथी प्रथम तो ते शास्त्रोना जे उपदेशक छे ते सर्वे कामाग्निमां प्रज्वलित हता आ वात सर्वसुज्ञजनोने विदितछे ते कारणथी अर्हंत भगवंतज सत्यार्थना उपदेशक छे. वली महामदफर हाथियोनी घटाप्रमुख संपत्तिवालुं राज्य पामवु, तेमज सर्वजनोने आनंद आपनारी संपदा पामवी,तेमज चंद्रमा समान निर्मल गुणोनो समूह पामवो, तेमज उत्कृष्ट सौभाग्यनो विस्तार पामवो आ सर्वे धर्मनोज प्रभाव छे तथा समुद्र, जलकल्लोलथी पृथ्वीपर पोतानी मर्यादा मुकी फरतो नथी, तेमज मेघ सर्वे पृथ्वीने जलथी रेलम छेलम करतो नथी, तेमज चंद्र, सूर्य जे उदय पामे छे, तेमज अधकारनो नाश करेछे ते सर्वे प्रभाव जयवंत धर्मनोज छे जेने कोइ वंधु नथी, मित्र नथी, नाथ नथी, जे रोगीने वैद्य नथी, जेनी पासे धन नथी, तेमज जेनामां गुण नथी, ते सर्वेना वधु, मित्र, नाथ, वैद्य, तथा गुणनो निधान धर्म छे वली अरिहंतनो कथन करेलो जे धर्म छे ते महापथ्य छे. एवी रीतें जे भव्यजीव मनमां विचारे ते धर्ममां वहु दृढ थाय एकज निर्मल धर्म भाववाने जे जीव निरंतर भावे तेसर्वे पाप कर्मनो नाश करीने,अनेक जीवोने उपदेश द्वारा सुखी करीने परम पद (मुक्ति) प्राप्त करे छे, तो पछी जे वारे भावना भावे तेने परमपद प्राप्त थवामां शु आश्चर्य छे? इति वार भावना.

हवे वार प्रतिमानुं स्वरूप कहिये छियें एक मासथी लइ सात माससुधी वृद्धि करवी, एम सात प्रतिमा थाय छे. जेम के प्रथम एक मासनी, वीजी वे मासनी, एम एकेक मासनी वृद्धि करतां सातमी सातमासनी थाय छे आठमी सात दिनरातनी, नवमी सात दिनरातनी, दशमी सातदिनरातनी, अग्यारमी एक दिन रातनी अने वारमी प्रतिमा एक रात्रि प्रमाण होय छे प्रतिमा– अभिग्रह, प्रतिज्ञा आ एकज नाम छे.

जे साधुउ आ वारे प्रतिमानो अंगीकार करी शकेछे, तेउनुं स्वरूप

१ धर्म सरखो भासे पण तत्वविचारें जोता कल्पित

लखियें छियें " संहननधृतियुक्त " जेनुं संहनन वज्र रुषभ नाराच होय, ते परीषह सहन करवामां समर्थ होय छे, "धृति" जेने चित्तनुं स्वस्थपणु होय, ते रति, अरतिथी पीडित थता नथी. "महासत्त्व" जे महासत्त्ववत होय, ते अनुकूल, प्रतिकूल उपसर्ग सहन करवामां विषाद धरता नथी " भावितात्मा " जेनु अंतःकरण सद्भावनाथी वासित होय, ते प्रतिमा वहन करी शके छे ते भावना पांच छे तेनु विस्तारयुक्त स्वरूप व्यवहारभाष्यनी टीकाथी जाणवुं ते भावना केवी रीतें भावे ? जेम आगममा छे तेम, तथा गुरु आचार्य आज्ञा आपे तेम जो गुरु पोते प्रतिमा अंगीकार करे तो, नवीन आचार्य स्थापन करीने तेनी आज्ञाथी, तथा गछनी आज्ञा लइने करे तथा प्रथम पोताना गछमांज रहीने प्रतिमा अंगीकार करवानु परिकर्म करे ते प्रतिकर्म आ छे–

मासादि सात जे प्रतिमा छे तेउनां प्रतिकर्मपण तेटलाज छे वर्षाकालमा ए प्रतिमा अंगीकार करी शकाती नथी, तेमज प्रतिकर्म पण वर्षाकालमां करवु नहि. प्रथमनी बे प्रतिमा एक वर्षमां, त्रीजी एकवर्षमां, चोथी एकवर्षमा, बाकी पांचमी, छठी, सातमी आ त्रणे प्रतिमाउंना एकवर्षमां प्रतिकर्म अने एक वर्षमां प्रतिमा, एम नववर्षमां सात प्रतिमा समाप्त कराय छे

हवे जे आ प्रतिमा अंगीकार करे छे, तेउंने केटलु ज्ञान होय छे ? यावत् किंचित् न्यून दश पूर्व होय छे, कारण के जेने संपूर्ण दश पूर्वनी विद्या होय छे तेनु वचन अमोघ होय छे ते वास्ते तेउंए धर्मोपदेश आपवो जोइये तेउंना उपदेशथी अनेक भव्य जीवो उपर उपकार तेमज तीर्थनी वृद्धि थवाथी प्रतिमादि कल्प करवा जोइये वली प्रतिमा अंगीकार करनाराउंनु जघन्यज्ञान नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु, जेनु नाम आचार वस्तु छे, त्या सुधी छे तेटलु ज्ञान सूत्र तथा अर्थ बनेथी पूर्ण होय छे, कारण के निरतिशयज्ञानी होय तो कालादिक जाणी शके नहि तथा "व्युत्सृष्ट" शरीरनी सार सभाल त्यागे, देवता प्रमुखना उपसर्ग सहे, जिनकल्पिनी पेठे उपसर्ग सहन करे, तथा एषणा, पिंडग्रहणप्रकार, भिक्षाग्रहणविधि, गछथी बाहार रेहेवु, इत्यादि बाकीनु वर्णन प्रवचनसारोद्धारनी बृहद्वृत्तिथी जोइ लेवु आ बार प्रतिमा कही

हवे इंद्रियनिरोध कहिये छियें. "स्पर्शनं रसना घ्राण चक्षुः श्रोत्रं चेति" आ पांच इंद्रिय, तथा स्पर्श, रस, गंध, वर्ण, शब्द, आ पांच पूर्वोक्त इंद्रियना यथाक्रम विषय छे आ पांचे विषयोनो निरोध करवो, कारण के जो ते वशवर्त्ती नहि रहे तो अत्यंत अनर्थकारक तेमज क्लेशसागरमां डुवाडनारा थशे ॥ यदन्यथापि ॥ आर्या ॥ सक्तः शब्दे हरिणः, स्पर्शे नागोरसे च वारिचरः ॥ कृपणपतंगोरूपे, भुजगो गधेन च विनष्टः ॥ १ ॥ पंचसु सक्ताः पंच, विनष्टायत्र गृहीतपरमार्थाः ॥ एकः पचसु सक्तः, प्रयाति जस्मांततां मूढः ॥ २ ॥ तुरगैरिव तरतरलै, र्दुर्दांतैरिंद्रियैः समाकृष्य ॥ उन्मार्गे नीयते, तमोघने डुःखदे जीवः ॥ ३ ॥ अनुष्टुप् ॥ इंद्रियाणां जये तस्मा, द्यत्नः कार्यः सुवुद्धिजिः ॥ तज्जयोयेन जविनां, परत्रेह च शर्मणे ॥ ४ ॥ प्रतिलेखना जैनसाधुर्जमां प्रसिद्ध छे तेथी विस्तारथी लखेल नथी.

हवे त्रण गुप्ति लखिये छिये मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति. आ त्रण गुप्तिनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे अशुज मन वचन कायानो निरोध करवो अने शुज मन वचन कायानी प्रवृत्ति करवी तेमां मनोगुप्ति त्रण प्रकारनी छे आर्त्त, रौद्रध्यानानुवधी, कल्पनानो वियोग, ते प्रथम मनो गुप्ति, शास्त्रानुसार, परलोकने साधनारी, धर्मध्यानानुवधवाली माध्यस्थ परिणति करवी ते वीजी मनोगुप्ति, अने संपूर्ण शुजाशुज मनोवृत्तिनो निरोध, अयोगी गुणस्थान अवस्थामां स्वात्मारामरूपता, ए त्रीजी मनोगुप्ति.

वचनगुप्ति वे प्रकारनी छे. मुख, नेत्र, ज्रूविकार, आंगली छोडन, ऊंचा थवुं, खांसी खावी, हुंकारा करवा, पछर फेकवा, इत्यादि हेतुथी पोतानुं सूचन कराववुं वर्जवु, ए प्रथम वचनगुप्ति, कारण के जो चेष्टा द्वारा सर्वकांइ सूचवी दइए तो मौन रेहेवुं व्यर्थ छे. वोलवु, वीजाना प्रश्नो लोकथी तेमज आगमथी अविरोध होय तेवो उत्तर देवो, तेमज वोलवुं ते पण मुखपासे वस्त्रादि राखी यत्न पूर्वक वोलवु, ते वीजी वचनगुप्ति आ वने जेदोथी वचननो निरोध, तेमज सम्यग्जापणरूप वचनगुप्ति जाणवी

कायगुप्ति वे प्रकारे छे. एक, चेष्टानो निषेध, वीजी आगमानुसारें चेष्टानो नियम करवो. तेमां देवता तथा मनुष्यादिना उपसर्गमां क्षुधा

तृषादि परीसहोनो संभव थये थके कायोत्सर्ग प्रमुख करीने कायाने निश्चल करवी, तथा अयोगी अवस्थामां सर्वथा कायानी चेष्टानो जे निरोध करवो, ते प्रथम कायगुप्ति. तथा गुरुथी प्रछन्नशरीर सस्तारक, जूम्यादि प्रतिलेखन, प्रमार्जनादि, जेम शास्त्रमां कहेल छे, तेवी रीतें क्रियाकलापपूर्वक शयनादि साधुयें करवां, शयनासन लेवा, राखवा, आ सर्व कृत्योमां स्वछद चेष्टानो त्याग करवो, मर्यादासहित कायानी चेष्टा करवी, ते बीजी कायगुप्ति

हवे अभिग्रह, प्रतिज्ञा लखिये छियें ते अभिग्रह द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावथी चार प्रकारें छे तेनो विस्तार प्रवचनसारोद्धारवृत्तिमां छे आहारप्रमुखना बेंतालीश दूषण, शास्त्रमां बतावेल छे, तोपण पिंड, शय्या, वस्त्र, पात्र, आ चारज वस्तु सदोष न ग्रहण करवी तेथी ते चार दूषण, तथा पांच समिति, बार भावना, बार प्रतिमा, पांच इन्द्रियनिरोध, पचीश प्रतिलेखना, त्रण गुप्ति, चार अभिग्रह ए सर्व मली सित्तेर करणसित्तरीना भेद कहे छे

प्रश्न – चरणसित्तरी तेमज करणसित्तरी आ बंनेमां शु विशेष छे ?

उत्तर – जे नित्य करवु ते चरण, अने प्रयोजन थयां थकां करीलेवु अने प्रयोजन न होय त्यारे न करवु ते करण, आ तेउमां भेद छे ए प्रमाणे चरणसित्तरी तथा करणसित्तरीना भेद समाप्त थया

इत्यादि जैनमतना गुरुतत्वनु स्वरूप लखवामा लाखो श्लोक लखाई जाय तो पण सपूर्ण तेनु स्वरूप जाणी शकाय नहि, ते वास्ते सक्षेपमाज स्वरूप बताव्यु छे जो विशेष जाणवानी इछा होय तो, श्री उघनिर्युक्ति, श्री आचारांग, दशवैकालिक, बृहत्कल्पभाष्यवृत्ति, पचकल्प चूर्णी, जितकल्पवृत्ति, महाकल्पसूत्र, कल्पसूत्र, निशीथ भाष्यचूर्णी, महानिशीथसूत्र, इत्यादि पदविभाग समाचारीना शास्त्र जोइ लेवा

प्रश्न – जैनमतना शास्त्रोमा गुरुनु स्वरूप जेवु लखेल छे, तेवी वृत्तिवाला जैनना कोइपण साधु देखवामा आवता नथी, तो पछी जैनमतना साधुउने आ कालमा गुरु केम मानवा जोइये ?

उत्तर – आपे कोई गीतार्थनो परिचय कर्यो लागतो नथी, तेमज जैन मतना चरणकरणानुयोगना शास्त्रनु अध्ययन पण कर्यु होय तेम ला-

गतु नथी, अथवा तो कोइ गीतार्थ गुरुना मुखारविंदथी वचनामृतनु पान पण कर्युं लागतु नथी, जो आपें पूर्वोक्त कांइपण कर्युं होत तो आपने ते वावतनो संशय कदापि न उत्पन्न थयो होत. जैनमतमां ठ प्रकारना निर्ग्रंथ कहेला ठे. आ कालमां जैनमतना जे साधुउं ठे ते पूर्वोक्त ठ प्रकारमध्येथी वे प्रकारना ठे, कारण के श्री जगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना ठठा उद्देशामां लख्यु ठे के पांचमा कालमां वे प्रकारना निर्ग्रंथ होशे, तेउंनाथी तीर्थ प्रवर्त्तशे. कषायकुशील निर्ग्रंथ तो कोईमां परिणाम अपेक्षा होशे, मुख्य तो वेज रहेशे वली जैनशास्त्रमां जे गुरुनी वृत्ति लखी ठे, ते प्रायः उत्सर्गमार्गनी अपेक्षा ठे, अने आ कालमां तो प्राय अपवाद मार्गनी प्रवृत्ति ठे, तेथी उत्सर्गवृत्तिवाला मुनि आ कालमां केवी रीते होय ? कोइपण रीतें होई शकेज नहि, कारण के, नथी तेवु वज्रऋषजनाराच संहनन,के नथी तेवु मनोवल, नथी तेवी जीवोनी श्रद्धा, के नथी तेवो देशकाल, के नथी धैर्य, तो हवे आ कालमां तेवी उत्सर्गवृत्ति जीव केम करी शके ?

प्रश्नः– जो तेवी वृत्ति आ कालमां नथी तो तेउंने साधुपण केम केहेवा जोईयें ?

उत्तरः– आ आपनुं कहेवुं वहुज वेसमजनु ठे. कारण के व्यवहार सूत्रजाष्यमां लख्यु ठे के –गाथा पोक्करिणी आयारे, आणयण ते गाय गीयछे ॥ आयरिय उएए, आहरण हुंति नायवा ॥ १ ॥ सज परिणा ठक्काय, अहिगमो पिंड उत्तरिद्याए ॥ रूखे वसहे जूहे, जोहे सोहीय पुक्करिणी ॥ २ ॥ " दारगाहादो ' आ वंने द्वारगाथानु व्याख्यान जाष्यकारें पदर जाष्यगाथाथी करेल ठे. जो जाष्यगाथा जोवानी इछा होयतो व्यवहारजाष्यमां जोइ लेवी अहिंया तो ते पदर गाथानो अर्थ जाषा (जाषातर) मां लखियें ठियें पूर्वकालमां जेवी सुगंधमय फूलोवाली पुष्करिणी वावडीयो हती, तेवा फूलोवाली हाल नथी, परंतु पुष्करिणी वावडीयो तो ठे,लोको आ सामान्य वावडीयोथी पोतानुं काम करेठे ॥ १ ॥ तथा सपूर्ण आचारप्रकल्प नवमा पूर्वमां हतुं, आ नवमा पूर्वमांथी उद्धार करीनें पूज्यपाद वैशाखगणियें निशीथसूत्र रच्यु तो शु आ निशीथने आचारप्रकल्प, न केहेवु जोइयें ?॥२॥ पूर्वकालमां तालोद्घा-

टिनी अवस्वापिनीआदि विद्याना धारक चोर हता, अने आ कालमां तेवी विद्या तो नथी तो शुं चोरी करनारने हाल चोर न केहेवा जोइये ? ॥३॥ पूर्वकालमां चौदे पूर्वना पठन करनारने गीतार्थ केहेता हता, तो आ कालमां जघन्य आचारप्रकल्प निशीथ, अने मध्यम आचारप्रकल्प बृहत्कल्पनां अध्ययन करनारने शु गीतार्थ न केहेवा जोइये ? ॥ ४ ॥ पूर्वकालमां श्रीआचारांगनु शस्त्रप्रज्ञा अध्ययन जणवाथी, छेदोपस्थापनीय चारित्रमा स्थापन करता हता, तो शुं हाल दशवैकालिकनु छजीवनीय अध्ययन जणवाथी स्थापन न करवा जोइये ? ॥ ५ ॥ बीजा ब्रह्मचर्यना पाचमाउद्देशामा जे आमगधी सूत्र छे ते सूत्रने अनुसारें पूर्वे मुनि आहारग्रहण करता हता, तो शुं हाल पिंडेषणा अध्ययन अनुसारे न ग्रहण करी शके ? ॥६॥ पूर्वे आचारांग पठी उत्तराध्ययन जणता हता तो शुं हाल दशवैकालिक पठी न अध्ययन करी शके ? ॥ ७ ॥ पूर्वे मत्तांगादि दशप्रकारना वृक्ष हता, तो शु हाल आंबादि वृक्ष न केहेवा जोइये ? ॥ ८ ॥ पूर्वे बहु गायोना समूहवाला नवगोपने गोवाल केहेता हता, तो शु हाल थोडी गायोवालाने गोवाल न केहेवा जोइये ? ॥९॥ पूर्वे सहस्रमल्ल योद्धा हता, तो शुं हाल कोइने योद्धो न केहेवो जोइये ? ॥ १० ॥ पूर्वे छमासी तपनु प्रायश्चित्त हतु तो तेने बदले हाल नीवी प्रमुखनुं प्रायश्चित्त न लेवु जोइयें ? ॥ ११ ॥ एवी रीतें जो पूर्वकालना मुनियोनी वृत्ति हाल नथी तो शु तेउने आचार्य अथवा साधु न केहेवा जोइयें ? परतु जरुर साधु मानवा जोइयें तथा जीवानुशासन सूत्रनी वृत्तिमा पण लख्यु छे के पांचमा कालमां साधु पूर्वोक्त प्रकारना होय तो पण तेउने सयमी केहेवा जोइयें तथा निशीथमा पण लख्यु छे ॥ भाष्यगाथा ॥ जासजमया जीवे, सुतावमूले गुणुत्तर गुणाय ॥ इत्तरियछेय सजम, नियठवउसा पडिसेवी ॥१ ॥ आ गाथानी चूर्णीनो अर्थ – छकायना जीवोविषे ज्यां सुधी दयाना परिणाम हशे, त्या सुधी बकुश निर्ग्रंथ तेमज प्रतिसेवना निर्ग्रंथ रहेशे, ते कारणथी प्रवचनशून्य तेमज चारित्ररहित, पचमकाल कदापि नहि होय ? वली मूलउत्तर गुणोमा दूषण लागवाथी चारित्र तत्काल नष्ट पण थतु नथी मूलगुणजगमा बे दृष्टांत छे, उत्तरगुणजगमां मरूपलु दृष्टात छे

निश्चयनयथी, एक व्रतनो ज्ञंग थयो तो, सर्वव्रतनो ज्ञंग थाय छे, परंतु व्यवहारनयना मतथी तो जे व्रतनो ज्ञग थयो होय, तेनोज ज्ञंग गणाय, बीजानो नहि, ते कारणथी वहु अतिचार लागवाथी संयम जतुं नथी; परंतु जो कुशील सेवे, तेमज धन राखे, अने काचुं सचित्त पाणी प्रवचन अनपेक्ष पीये, ते साधु नहि, ज्यां सुधी छेक प्रायश्चित्त लागे त्यां सुधी संयम सर्वथा जतो नथी वली आ कालमां साधु नथी एम जे माने छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के स्थानांग सूत्रमां लख्युं छे के वहु अतिचार लागता देखीने, तेमज आलोचना, प्रायश्चित्त कोइने यथार्थ लेता देता नहि देखवाथी, कोइ एम कहे छे. हाल कोइ साधु नथी ते चारित्रज्ञेदिनी विकथाना करनार छे तथा श्रीज्ञगवतीसूत्रना पचीशमा शतकना छठा उद्देशाना संग्रहणीकारश्रीमान् अज्ञय देवसूरि, आ बंने निर्ग्रंथोनु जे स्वरूप छे ते लखेछे ॥ गाथा ॥ बउसं सबलं कब्बुर, मेगठंतमिह जस्स चारित्तं ॥ अइयारपंकज्ञावा, सोबउसो होइ निग्गथो ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ बकुश, शबल, कर्बुर, आ त्रणे एकार्थवाची[1] छे, अतिचाररूप पक लागवाथी एवु जेनुं चारित्र छे ते बकुशनामा निर्ग्रंथ छे आ ज्ञारतवर्षमां आ कालमां बकुश अने कुशील, ए बे निर्ग्रंथछे, बाकीना त्रणनो विछेद थयेल छे ॥ तथा चोक्तं परममुनिज्ञिः ॥ बकुश कुशीला दोपुण, जातिछं तावहोहंति इति ॥ अर्थ —बकुश, कुशील ए बे प्रकारना निर्ग्रंथ ज्यां सुधी तीर्थ रहेशे त्यां सुधी रहेशे.

बकुश निर्ग्रंथना बे ज्ञेद छे, ते कहियें छिये वस्त्र पात्रादि उपकरणनी जे विज्ञूषा करे ते उपकरणबकुश, तथा हाथ पग नख मुखादि देहना अवयवोनी जे विज्ञूषा करे ते शरीरबकुश. आ बे ज्ञेदना वली पांच ज्ञेद छे ॥ गाथा ॥ उवगरण सरीरेसु,सोडुहा डुविहोवि होइ पचविहो॥ अज्ञोग अणाज्ञोग, असंबुड संबुडे सुहुमे ॥१॥ अर्थः—प्रथमना बे पदोनो अर्थ उपर लखेलो छे पाछलना बे पदोनो अर्थ लखियें छिये साधुने आ करवा योग्य नथी, एम जाणतां छतां पण जे ते कामने करे ते आज्ञोग बकुश, अने जे अजाणपणाथी करे ते अनाज्ञोगबकुश. मूल तथा उत्तर गुणमां जे गुप्तपणे छाना दोष लगावे ते संवृत बकुश, तथा मूल उ-

१ एक अर्थना कहेनार

तर गुणोमां जे प्रगट दूपण लगावे ते असंवृत वकुश नेत्र, नासिका,मुखादिना जे मल दूर करे ते सूक्ष्म वकुश ए पाच भेद कह्या

हवे उपकरणवकुशनु स्वरूप लखिये ठिये ॥ गाथा ॥ जो उपगरणे वउसो, सो धुवइअ पाउसे विवछई ॥ ईछईय लण्हयाइ, किंचिविज्रूसाई जुंजईय ॥ १ ॥ व्याख्या.- उपकरणवकुश वर्षाऋतु विना पण जलद्वारथी वस्त्र धोवे ठे, वर्षाऋतुमां तो सर्व गछवासी साधुउने आज्ञा ठे, वर्षाऋतु पेहेलां जो एकवार पोताना सर्व उपकरण जलद्वारथी धोई लहे नहि तो वर्षाऋतुमां मलना ससर्गथी निगोदादि जीवोनी उत्पति थई जाय वली वकुश निर्ग्रंथ वर्षाऋतु विना अन्यऋतुउमा पण जलद्वारथी वस्त्रादि धोई लहे ठे, तेमज सुदर, सुकुमाल वस्त्रनी पण वांठा राखेठे, तेमज उपकरण विज्रूपा अर्थात् शोजाने वास्ते पण कांइक पेहेरेठे ॥ गाथा ॥ तहपत्त दंडयाइ, घठमठ सिणेह कय तेय ॥ धारेइ विज्रूसाए, वहुच वच्चेई उवगरणं ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ पात्र, दंरूप्रमुख वहुज घसीने सुकमाल करे, तथा घी, तेल प्रमुख चोपडीने तेजवंत चमकदार करी राखे, तेमज विज्रूपामाटे वहुज उपकरण राखवाने चाहे अर्थात् राखे

हवे शरीर वकुशनु स्वरूप लखिये ठिये ॥ गाथा ॥ देह वउसो अकचे, करचरण नहाइय विज्रूसेइ ॥ दुविहोवि इमोइछि, इछइ परिवार पजिईय ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ शरीरवकुश कारण विना पण हाथ, पग, नखादिनी विज्रूपा करे, जलादिथी धोवे ए प्रमाणे उपकरण तेमज शरीर वकुश निर्ग्रंथ परिवारप्रमुखनी ऋद्धि वांठेठे ॥ गाथा ॥ पडिच्च तवाइ कयं, जसच इछेइ तमि तुस्सइय ॥ सुहसीलो नयवाढ, जयइ अहोरत्तकिरियासु ॥ १ ॥ व्याख्या –पडितपणाथी तथा तपादिथी यशनी इछा करे ते यशनो लाज थवाथी अत्यंत खुशी थाय, तेमज सुखशीलियो थाय, तेमज दिनरातनी समाचारी, क्रियामां वहु उद्यमी पण न होय ॥ गाथा ॥ परिवारोय असंजम, अविवित्तो होइ किचि एयस्स । घसीय पाउ तिल्लाई, मासणि कित्तरिय केसो ॥ १ ॥ व्याख्या –तेनो जे परिवार होय ते असयमी होय, वस्त्रपात्रादि मोहथी दूर करे नहि, हाथ, पग तेल सावु विगेरेथी चोपडी सुकोमल राखे, तेमज दाढी, मूठ अने मस्तकना वाल कातरथी कापे अर्थात् लोचने वदले अस्त्रा अथवा कातरथी

वाल दूर करे, परंतु लोच करे नहि. ॥ गाथा ॥ तह देसव्वेयारि, देहिं सवलेहिं संजुर्ज वजसो ॥ मोह स्कयठमप्पु, ठिर्जय सुत्तमि नणियं च ॥ १ ॥ व्याख्या.–तथा देशछेद, सर्वछेद योग्य दोषोथी जेनुं चारित्र कर्बुर छे, परंतु जेना मनमां मोहक्षय करवानी इछा छे, अर्थात् मनमां संयम पालवानो उत्साह छे, परंतु संपूर्ण संयम पाली शकता नथी आ पूर्वोक्त कृत्योथी संयुक्त होय तेने बकुश निर्ग्रंथ कहिये वली सूत्रमां जे कहेलुं छे ते हवे लखिये छियें ॥ गाथा ॥ उवगरण देह चुस्का, रिद्धि रस गारवासिया निच्च ॥ वहु सवल छेय जुत्ता, निग्गंथा बजसा नणिया ॥ १ ॥ आजोगो जाणंतो, करेइ दोसं अयाणमण जोगे ॥ मूलुत्तरे हि संवुड, विवरिय असवुडो होइ ॥ २ ॥ अछि मुह मज्जमाणो, होइ अहा सुहमर्ज तहा वजसो ॥ सीलं चरण जजस्स, कुछिय सो इह कुसीलो ॥ ३ ॥ पडिसेवणा कसाए, डुहा कुसीलो डुहावि पचविहो ॥ नाणे दंसण चरणे, तवेय अह सुहुमए चेव ॥ ४ ॥ इहनाणाइ कुसीलो उवजीवं होइ नाण पजिईए ॥ अह सुहुमो पुणतुस्सइ, एस तव सत्ति संसए ॥ ५ ॥ व्याख्या–उपकरण, देह शुद्ध राखे, रस, ऋद्धि अने शाता, आ त्रणे गारवमां नित्य मग्न रहे, उपकरणोथी अविविक्त रहे परिवार जेनो छेद योग्य, सवल चारित्रसयुक्त होय, ते निर्ग्रंथ बकुश कहेवाय छे ॥१॥ साधुर्जने आ करवा योग्य नथी एम जाणतां छतां पण जे ते काम करेछे तेने आजोगबकुश कहियें, अने जे अजाणपणाथी अकृत्य करे तेने अनाजोगबकुश कहियें, मूल उत्तर गुणोथी संयुक्त छे, लोक एम जाणे पण छे, परतु गुप्त दोष लगावे छे तेने संवृतबकुश कहियें, अने जे प्रगटपणे मूल उत्तर गुणमां दोष लगावे तनेअसंवृतबकुश कहियें ॥ २ ॥ तथा जे आंख, मुख प्रमुख मांजे, मलादि दूर करे, तेने यथासूक्ष्म बकुश कहियें. आ बकुशना पांच नेद कह्या

हवे कुशील निर्ग्रंथनुं स्वरूप लखियें छियें. शील अर्थात् चारित्र, ते चारित्र जेनु कुत्सित होय ते कुशील निर्ग्रंथ, तेना वे नेद छे ॥ ३ ॥ प्रति सेवनाकुशील तथा कषायकुशील, संज्वलन कषायोथी कुशील होय ते कषायकुशील आ बनेना वली पाच नेद छे ते कहिये छियें. १ ज्ञान

२ दर्शन ३ चारित्र ४ तप ५ यथासूक्ष्मत. ॥४॥ जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप, आ चारे आजीविकाने वास्ते करे ते ज्ञानादिकुशील याने चारे प्रतिसेवनाकुशील, तथा आ तपस्वी छे इत्यादि पोतानी प्रशसा श्रवण करी खुशी थाय ते पांचमा यथासूक्ष्म प्रतिसेवनाकुशील जाणवा तथा जे ज्ञान, दर्शन, तप प्रमुखनो सज्वलन कपायना उदयथी व्यापार करे, ते ज्ञान, दर्शन, चारित्रना कपाय कुशील जाणवा जे कपायकुशील छे ते कपायने वश थईने शाप दीएछे मनथी जे क्रोध प्रमुखनु सेवन करे ते यथा सूक्ष्मकपायकुशील, अथवा कपायथी जे ज्ञान प्रमुखनी विराधना करे ते ज्ञानादि कुशील जाणवा कोइ आचार्य, तप कुशीलना स्थानमां लिंगकुशील कहे छे आ वे प्रकारना निर्ग्रंथ पांचमा आरा पर्यंत रहेशे जे कोई आ तरेहना साधुने साधु अथवा गुरु न माने ते जीव मिथ्यादृष्टि, वहुल ससारी, जिनमतना उत्थापक छे एवा मिथ्यादृष्टिनी सगत पण करवी योग्य नथी

इतिश्रीतपागछीयमुनिश्रीबुद्धिविजयशिष्यमुन्यानंदविजयात्मारामविरचितजैनतत्त्वादर्शजापातरेगुरुतत्त्वनिर्णयनामा तृतीय परिच्छेद. सपूर्ण ॥

॥ अथ चतुर्थपरिच्छेदप्रारंभ ॥

आ चोथा परिच्छेदमा कुगुरु तत्वनु स्वरूप लखिये छिये ॥ श्लोक ॥ सर्वाभिलाषिण सर्व, भोजिन. सपरिग्रहा ॥ अब्रह्मचारिणोमिथ्यो, पदेशागुरवोमता ॥ १ ॥ अर्थ – स्त्री, धन, धान्य, सुवर्ण, रुपाआदि सर्व धातु, तथा क्षेत्र, घर, हाट, हवेली प्रमुख सर्व स्थावर मिलकत तथा चतुष्पदादि अनेकप्रकारनां पशु, आ सर्वनी अभिलाषा करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वाभिलाषी, तथा सर्व मद्यमांसादि बावीश अभक्ष्य, तथा वत्रीश अनंतकाय, तथा अन्य अनुचित आहारादि, आ सर्वनु भोजन करवानो जेनो स्वभाव छे ते सर्वभोजिन , तथा पुत्र, कलत्र, पुत्री प्रमुख सहवर्तमान प्रवर्चे ते सपरिग्रही, अने तेज कारणथी अब्रह्मचारी, जे अब्रह्मचारी, होय छे ते महादोषवान् होय छे तेथी अब्रह्मचारी एवो आ श्लोकमा जूदो उपन्यास करेलो छे वली अगुरुपणानुं असाधारण

कारण कहियें छियें, मिथ्योपदेशाः, मिथ्या (वितथ) आप्तना उपदेश विनानो धर्मनो उपदेश छे जेनो ते अगुरु छे अहियां कोई एवी शंका करे के धर्मना उपदेशदाता गुरु छे, छतां पण निःपरिग्रहादि गुणोनुं ते उपदेशदातामा शामाटे अस्तित्व होवु जोइयें ? ते शंका दूर करवाना हेतुथी विशेष लखिये छिये

॥ श्लोक ॥ परिग्रहारंजमग्ना, स्तारयेयुः कथं परान् ॥ स्वयं दरिद्रो नपर, मीश्वरीकर्त्तुमीश्वर. ॥ ९ ॥ अर्थ.–परिग्रह- स्त्री प्रमुख अने आरंज- जीवहिसा अर्थात् सर्वाजिलाषी तथा सर्वजोजी आ वने विषयोमां जे मग्न छे, अर्थात् आ वने विषयरूप नवसमुद्रमां जे डुबेला छे, ते वीजा जीवोने केवीरीते संसार सागरमांथी तारी शके तेम छे ? दृष्टांत के जे पुरुष पोतेज दरिद्र छे ते वीजाने धनवान् केवी रीतें करी शके तेम छे ? हवे प्रथम श्लोकना चोथा पदमां " मिथ्योपदेशागुरवोमता." जे छे ते पदनो अर्थ विस्तारथी लखिये छियें कुगुरुनो उपदेश आ प्रमाणे मिथ्या छे आ मिथ्या उपदेशना स्वरूपमां प्रथम त्रणसे त्रेसठ मततु स्वरूप लखियें छिये एकसो एंशी मत क्रियावादिना छे तथा चोराशी मत अक्रियावादिना छे, तथा सडसठ मत अज्ञानवादिना छे, अने वत्रीश मत विनयवादिना छे, ए रीतें त्रणसे त्रेसठ मत थाय छे

प्रथम क्रियावादिना मततुं स्वरूप कहिये छिये. क्रियावादी कहेछे के कर्त्ताविना पुण्यवंधादिलक्षणरूप क्रिया थती नथी तेथी क्रिया, आत्मानीसाथे समवायसंवधवाली छे ए प्रमाणे तेमनो मत छे क्रियावादी आत्मा प्रमुख नव पदार्थोने एकांत अस्ति स्वरूपपणे माने छे, आ क्रिया वादिना एकसो एंशीमत, नीचे मुजव जाणी लेवा १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ वध, ५ संवर, ६ निर्जरा ७ पुण्य, ८ अपुण्य, ए मोक्ष, आ नव पदार्थ अनुक्रमे पत्रादिपर लखवा, पछी जीव पदार्थना नीचे स्वतः तेमज परत आवे जेद स्थापन करवा आ स्वतः परतः नीचे वली जुदा जुदा नित्य तेमज अनित्य एवा वे जेद स्थापन करवा, पछी नित्य, अनित्य आ वंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति ५ स्वजाव, आ पांच स्थापन करवा, त्यारवाद विकल्प करीलेवा, ते नीचे मुजव–यंत्रस्थापना.

जीव.			
स्वत		परत	
नित्य	अनित्य	नित्य	अनित्य
१ काल	१ काल	१ काल	१ काल
२ ईश्वर	२ ईश्वर	२ ईश्वर	२ ईश्वर
३ आत्मा	३ आत्मा.	३ आत्मा	३ आत्मा
४ नियति	४ नियति.	४ नियति.	४ नियति.
५ स्वजाव	५ स्वजाव	५ स्वजाव.	५ स्वजाव.

विकल्प करवानी रीत कहियें ठियें अस्ति जीव. स्वतोनित्य. कालत इत्येकोविकल्प ॥ १ ॥ अर्थ.—आ आत्मा निश्चयें स्वस्वरूपथी कालथी उत्पन्न थयेल ठे कालवादिना मतनो आ विकल्पठे. कालवादी, कालथीज जगतनी उत्पत्ति, स्थिति, तेमज लय माने ठे वली कालवादी कहे ठे के चपक, अशोक, सहकार, निंब, जबु, कदंबादि जे वनस्पति ठे, तेउनी उपर फुलोनु लागवु, फलप्रमुखनु वधावु ते कालविना थइ शकतुं नथी, तथा हिमकणसयुक्त शीतनु पडवु, तथा नक्षत्रगर्जनु धारण, वरसादनुं वरसवु इत्यादि कालविना होतुं नथी, वली ठ ऋतुओना विजाग, तथा बाल, कुमार, यौवन, वृद्धादि अवस्था, तेपण कालविना थइ शकती नथी, जे जे प्रतिनियत काल विजागादि ठे, ते सर्वनो कालज नियता ठे, जो कालने नियता न मानिये तो कोइ वस्तुनी व्यवस्था थशे नहि कारण के जेम कोइ पुरुष मग राधे ठे, ते मगपण कालविना रंधाइ जाता नथी, नहि तो हांमली तथा इंधन प्रमुख सामग्रीना सयोगथी प्रथम समयमाज मग केम न रधाइ जाय ? ते कारणथी जे कर्त्ता ठे ते कालज ठे तथा चोक्त ॥ न कालव्यतिरेकेण गर्जबालशुजादिक ॥ यत् किंचिज्जायते लोके, तदसौ कारण किल ॥ १ ॥ किंचित् कालादृते नैव, मुजपक्तिरपीक्ष्यते ॥ स्थाल्यादिसन्निधानेऽपि, तत कालादसौ मत ॥ २ ॥ कालाजावे च गर्जादि, सर्वं स्यादव्यवस्थया ॥ परेष्टहेतु सद्जाव, मात्रादेव तडुद्भवात् ॥ ३ ॥ आ श्लोकोनो जावार्थ उपर लखेलो ठे तथा ॥ काल पचति जूतानि, काल संहरते प्रजा. ॥ काल. सुप्तेषु जागर्त्ति, कालोहि दुरतिक्रम ॥ ४ ॥ अहिया पर इष्ट हेतुना स-

ज्ञाव मात्रादिथी वीजाओए जे एम मानेल छे के स्त्री पुरुषना संयोग मात्र हेतुथी गर्जनी उत्पत्ति थायछे तो एक वर्षे वयना स्त्री पुरुषना संयोगथी केम गर्जनी उत्पत्ति थती नथी ते कारणथी कालज गर्जनी उत्पत्तिनो हेतु छे. तेमज स्त्रीने गर्ज उत्पन्न थवामां ऋतुकाल होवो जोइये, ते विना स्त्री पुरुषना संयोगथी गर्ज केम उत्पन्न थतो नथी? वली कालज पकावे छे तथा पृथ्वी आदि जूतोने परिणामांतर प्रत्ये कालज पहोचाडे छे. तेमज पूर्व पर्यायथी पर्यायांतरमां लोकोने कालज स्थापन करे छे वली सुप्त अवस्था प्राप्त थयेला प्राणियोनी रक्षापण कालज करेछे, ते कारणथी प्रत्यक्ष छे के काल डुरतिक्रम छे. कालने दूर करवामां कोइ समर्थ नथी, आ कालवादिनो विकल्प छे

तेविजरीते वीजा विकल्प पण जाणी लेवा परंतु कालने स्थानकें ईश्वरनी योजना करवी, "यथा अस्ति जीव. स्वतो नित्य ईश्वरत." जीव पोताना स्वरूपथी नित्य छे, परंतु ईश्वर उत्पन्न करे छे. कारण के ईश्वरवादी सर्व जगत् ईश्वरनुंज करेलु माने छे जेने १ ज्ञान, २ वैराग्य, ३ धर्म, ४ ऐश्वर्य, आ चारे स्वत सिद्ध होय, तेमज जे, जीवोना स्वर्ग, नरक, मोक्षादि गमनमां प्रेरक होय तेने ईश्वर कहियें यथा॥ ज्ञानमप्रतिघं यस्य, वैराग्यं च जगत्पतेः ॥ ऐश्वर्यं चैव धर्मश्च, सहसिद्ध चतुष्टयं ॥ १ ॥ अज्ञोजंतुरनीशोय, मात्मनः सुखडुखयो ॥ ईश्वरप्रेरितोगछेत्, स्वर्गं वाश्वभ्रमेव वा ॥ २ ॥ इत्यादि

त्रीजो विकल्प आत्मवादियोनो छे. "पुरुष एवेदं सर्वमित्यादि" जे काइ देखाय छे ते सर्व पुरुषज छे एम आत्मवादियोनो मत छे.

चोथो विकल्प नियतवादियोनो छे नियतवादियो कहे छे के पदार्थोमां एक एवु सामर्थ्य छे के जे सामर्थ्यथी सर्व पदार्थ पोत पोताना स्वरूपनियमोथी तेवाने तेवाज वन्या रहेछे, परंतु अन्यथापणे थता नथी वली तेज वताविये छियें जे पदार्थ जे कालमां जेनाथी थाय छे, ते पदार्थ तेज कालमां, तेनाथी नियतरूपें थतो मालम पडेछे तेम जो न होय तो कार्य कारण जावनी व्यवस्था नियामकना अजावथी कदापि थायज नहि ते कारणथी कार्यनियतताथी उपर मुजव प्रतीत थती जे नियति तेने प्रमाण पंथमां कुशल एवो कयो पुरुष वाध करी शके छे?

जो नियति वाधित थई जाय तो वीजे स्थले प्रमाण मिथ्या थई जशे तथा चोक्त ॥ नियतैनेवरूपेण, सर्वे जावा जवंति यत् ॥ ततो नियति जाह्येते, तत्स्वरूपानुबधतः॥ १ ॥ यद्यदेव यतो यावत्, तत्तदेव ततस्तथा ॥ नियतं जायते न्यायात्, कएनां वाधितु क्षम ॥ २ ॥ आ वने श्लोकनो अर्थ उपर लख्यो छे

पांचमो विकल्प स्वजाववादियोनो छे स्वजाववादियो कहे छे के आ संसारमा सर्वे पदार्थ स्वजावथीज उत्पन्न थाय छे ते कहे छे के माटीथी घट थाय छे, परंतु वस्त्र थतु नथी, तेमज तंतुउथी वस्त्र थाय छे परतु घटादि थता नथी, आ जे मर्यादापूर्वक थवु छे ते स्वजाव विना कदापि थई शकतु नथी ते कारणथी जगत्मा जे कांई थाय छे ते सर्वे स्वजावथीज थाय छे वली वीजां कार्य तो दूर रहो परंतु आ जे मगनु रधावु छे, ते पण स्वजावविना थतु नथी, कारण के हांमी, इधन, काल प्रमुख सामग्री विद्यमान छतां (कागडु) करडु मग रधाता नथी याने पाकता (चडता) नथी, ते कारणथी जे जेना सद्भावें विद्यमान होय, तेमज असद्भावे अविद्यमान होय ते ते अन्वयव्यतिरेकथी तेना कर्त्ता छे, स्वजावथीज मग रधाय छे तेथी स्वजावज सर्वे वस्तुनो हेतु छे

आ पांच विकल्प स्वत. ईश पदथी होय छे, तेवीज रीते पाच परत ईशपदथी उपलब्ध थाय छे परत. शब्दनो अर्थ एवो छे के, पर पदार्थोथी व्यावृत्तरूपे आ आत्मा निश्चयथी छे तेवी रीते नित्य शब्दथी दश विकल्प थाय छे, तेमज अनित्य पदथी पण दश विकल्प थाय छे वने एकठा करवाथी वीश थाय छे आ वीश विकल्प जीव पदार्थ साथे थाय छे, तेवीज रीते अजीवादि नवे पदार्थ साथे जुदा जुदा वीश विकल्प जाणी लेवा, एटले वीशने नवथी गुणतां एकसो एंशी मत क्रियावादिना थाय छे

हवे अक्रियावादिना चोराशी मत लखियें छिये अक्रियावादी कहे छे के पुण्य, पापरूप क्रिया कांइ नथी कारण के पुण्य, पापरूपादि क्रिया तो स्थिर पदार्थोंने लागे छे, अने जगत्मां स्थिर पदार्थ तो कोइ छे नहि, कारण के उत्पत्ति अनंतरज पदार्थनो विनाश थतो जाय छे तथा श्लोक ॥ क्षणिका· सर्वसस्कारा, अस्थिराणां कुत क्रिया ॥ जूतिर्येषा क्रिया सैव, कारक सैव चोच्यते ॥१॥ अर्थ·— सर्वसंस्कार पदार्थ क्ष-

णिक छे, तेथी अस्थिर पदार्थोने पुण्यपापादि क्रिया क्यांथी होय ? पदार्थोनुं जे होवु, तेज क्रिया छे, तेज कारक छे, ते कारणथी पुण्यपापादि क्रिया नथी आ अक्रियावादी आत्माने मानता नथी तेना चोराशी मत जाणवानी आ रीत छे. १ जीव, २ अजीव, ३ आश्रव, ४ संवर, ५ निर्जरा, ६ बंध, ७ मोक्ष, आ सात पदार्थ लखवा, पछी जीवादि साते पदार्थोनी नीचे जुदा जुदा स्व तेमज पर आ बे विकल्प लखवा, पछी आ बंनेनी नीचे जुदा जुदा १ काल, २ ईश्वर, ३ आत्मा, ४ नियति, ५ स्वन्नाव, ६ यदृच्छा, आ छ लखवा अहियां नित्य, अनित्य आ बे विकल्प नहि लख्या तेनु कारण ए छे के ज्यारे आत्मादि पदार्थज नथी त्यारे तेना नित्य, अनित्यनो संन्नवज केम होय ? तथा यदृच्छावादी जे छे ते सर्व नास्तिक अक्रियावादी छे, ते कारणथी क्रियावादी यदृच्छावादी नथी. तेज कारणथी क्रियावादिना मतमां यदृछा पद ग्रहण करेल नथी. आ मतना चोराशी न्नेद आवी रीतें जाणवा ते कहियें छियें.

" नास्ति जीवः स्वत. कालत इत्येको विकल्प. " नथी जीव पोताना स्वरूपे कालथी उत्पन्न थयेल, आ एक विकल्प, तेवीज रीतें ईश्वरादिथी लइने यदृछा पर्यंत सर्व छ विकल्प थया, तेना अर्थ पूर्ववत् जाणवा, परंतु एटलु विशेष के आ मतमां यदृच्छावादी अधिक छे.

प्रश्नः– यदृच्छावादिउनो शु मत छे ?

उत्तर.– जे पदार्थोने संताननी अपेक्षा नियत, कार्य कारण न्नावे मानता नथी, परंतु जे कांइ थाय छे ते यदृछाथी थाय छे, अर्थात् कार्य कारण न्नाव नथी, परंतु यदृच्छाथीज थाय छे एम जे कहेछे ते यदृछावादि छे वली तेउ कहे छे के पदार्थोनो पोत पोतामां कार्यकारणन्नावनो नियमज नथी, कारण के कार्यकारणन्नाव प्रमाणपूर्वक ग्रहण थइ शकाताज नथी जेम मृतकमेरूक (देरूका) थी मेरूक उत्पन्न थायछे, तेमज गोबरथी पण मेरूक उत्पन्न थाय छे, अग्निथी अग्नि उत्पन्न थाय छे, तेमज अरणिना काष्टथी पण अग्नि उत्पन्न थाय छे, धूमाडाथी धूमाडो उत्पन्न थाय छे तेमज अग्निथी पण धूमाडो उत्पन्न थाय छे, कदलीना कदथी केलां उत्पन्न थाय छे, तेमज केलांना बीजथी पण केलां उत्पन्न

थाय छे, बीजथी वटवृक्ष उत्पन्न थाय छे तेमज वटवृक्षनी शाखाथी पण वट वृक्ष उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी नियमपूर्वक कार्यकारणभाव कोइ पण जगाये देखवामां आवता नथी तेथी यदृच्छाथी कोइ जगे कांइ तो कोई जगे काई एम थाय छे, एम मानवु जोईयें, कारण के जो एम जाणु के जे कांइ थाय छे ते यदृच्छाथी थाय छे तो बुद्धिमान् पुरुषे कार्यकारण भावने शावास्ते मानवा जोइये तेमज आत्माने क्लेश करवो जोइये. जेम स्वत नी साथे छ विकल्प करवा तेमज परत'नी साथे पण छ विकल्प करवा तेवी रीते बार विकल्प थया ते बारेने जीवादि सात पदार्थो साथे गुणतां चोराशी भेद अक्रियावादिना थाय छे

हवे त्रीजा अज्ञानवादिना भेद कहियें छियें कुत्सित ज्ञान छे जेनुं ते अज्ञानवादि जाणवा, अथवा अज्ञानथी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानवादी, अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञान सारी वस्तु नथी कारण के जो ज्ञान हशे तो परस्पर विवाद थशे, जो विवाद थशे तो चित्त मलिन थशे, ज्यारे चित्त मलिन थयु, त्यारे ससारनी वृद्धि थई जेम के कोइ पुरुषे कोइ वस्तु विरुद्ध कही, ज्ञानियें तेसांभलीने ज्ञानना अभिमानथी, बहुज मलिन चित्तथी ते पुरुषनी साथे विवाद करवो शरु कर्यो, विवाद करतां थकां अत्यत तीव्र मलिन चित्त थयु तथा अहंकार वध्यो, ते चित्तनी मलिनता तथा अहंकारथी महापापकर्म उत्पन्न कर्या, ते पापथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थई ते कारणथी ज्ञान सारी वस्तु नथी, अने जो पोताने अज्ञानी मानिये तो अहकारनो संभव थतो नथी, तेमज बीजाउनी उपर चित्तनु मलिनपणु पण थतु नथी, तेथी कर्मनो बध पण थतो नथी. वली जे कार्य विचारपूर्वक करियें तेमां महाकर्मनो बंध थाय छे तेनु फल पण महाभयानक प्राप्त थाय छे, अने जे काम मनना व्यापार विना करिये, तेमज मनना व्यापार विना कोइ जीवनो वध पण करिये तो तेनु फल अवश्यमेव भोगववामां आवतुं नथी, अने ते काममा जे कांइ कर्मबध थाय छे, ते पण चुनागळी वाली भित उपर रेतीनी मुष्टिना सबधवत् स्पर्शमात्र थाय छे, परंतु बध थतो नथी ते कारणथी मोक्षगामि पुरुषोने अज्ञानज अगीकार करवु श्रेय छे, परतु ज्ञान अगीकार करवु श्रेयस्कर नथी आ अज्ञानवादी कहे छे के ज्ञानने अमे मानी

पण लश्यें, जो ज्ञानना निश्चय करवानी समर्थता होय ? कारण के प्रथम तो ज्ञान सिद्धज थई शकतुं नथी. जूउं जे जे मतावलंबी पुरुष छे, ते सर्व परस्पर भिन्नज ज्ञान अंगीकार करे छे ते कारणथी निश्चय करवामां केम समर्थ होय, के आ मतनुं ज्ञान सम्यक् छे अने आ मतनुं ज्ञान सम्यक् नथी ? जो एम कहो के सकल वस्तु समूहना साक्षात्कारी एवा ज्ञानवाला जे जगवान् छे तेना उपदेशथी जे ज्ञान थाय ते सम्यक् ज्ञान छे, अने तेना शिवाय बीजा मत छे तेनुं ज्ञान सम्यक् नथी, कारण के तेना मतमां जे ज्ञान छे ते सर्वज्ञनुं कथन करेल नथी.

अज्ञानवादी कहे छे के–आपनुं केहेवुं तो सत्य छे, परंतु सकल वस्तुसमूहना साक्षात् करनारा ज्ञानी, सुगत, ईश्वर, विष्णु ब्रह्मादिने अमे मानियें ? के जगवान् वर्धमान महावीर स्वामिने अमे मानियें ? वली एज संशय रह्यो, निश्चय थयो नहि के कोण सर्वज्ञ छे ? जो एम कहो के जे जगवानना चरण कमलने सर्व देवता, इन्द्र परस्पर अहंपूर्वकविशिष्टविशिष्टतर विभूतियुतिथी संयुक्त सेंकडो विमानोमां वेसी सकल आकाश मंमलने आछादित करता थका, पृथ्वीपर उतरी पूजता हता ते जगवान् वर्धमान स्वामी सर्वज्ञ छे, परंतु सुगत, शंकर, विष्णु ब्रह्मादि नहि; कारण के सुगतादि सर्व अल्पबुद्धिवाला मनुष्य थया छे, परंतु सर्वज्ञ देव थया नथी, जो सुगतादि सर्वज्ञ थया होत तो तेउंनी पण देवता, इन्द्रें, पूजा करी होत, परंतु कोईनी देवता, इंद्रें पूजा करी नथी, ते कारणथी सुगतादि सर्वज्ञ थया नथी हे जैन! आ जे सघलुं तमे कह्युं ते पोताना मतना रागथी कह्युं छे, परंतु ते वातथी इष्ट सिद्धि थती नथी. कारण के वर्धमान स्वामिनी देवता, इंद्र देवलोकथी आवीने पूजा करता हता, आ तमारु केहेवु अमे केम साचु मानी शकियें? जगवान् श्री महावीर स्वामिने थयांने आज बहुकाल व्यतीत थई गयो, वली तेना सर्वज्ञ होवामां कांइ पण साधक प्रमाण नथी. जो कहो के संप्रदायथी अर्थात् महावीरना शासनथी महावीर सर्वज्ञ सिद्ध थाय छे, तो तेमां एवो तर्क थशे के आ, जे तमारो सप्रदाय छे ते कोण जाणे कोई धूर्त्तनो चलावेलो हशे ? के कोइ सत्पुरुषनो चलावेलो हशे ?

१ कांतिवाप्रकाशके ऐश्वर्यप्रद्योतथी

अमे तेमां शु जाणी शकीये ? ते कारणथी सिद्ध करनारुं कोइ पण प्रमाण नथी, अने प्रमाण विना अमे मानिये तो प्रेक्षावान् शेना ? वली मायावान् पुरुष पोते सर्वज्ञ होता नथी तो पण पोते पोताने जगत्मां सर्वज्ञ थयेला प्रगट करी दीयेछे इन्द्रजालनी सत्तावीश पीठ छे, तेमांथी केटलीएक पीठना पाठक पोते पोतानु तीर्थकरनु रूप, तेमज इन्द्र, देवता पूजा करता होय, एम बनावी शके छे, तो पछी देवताउना आगमन, पूजा देखवाथी सर्वज्ञपणु केम सिद्ध थाय, जेथी श्रीमहावीर स्वामिने अमे सर्वज्ञ मानियें ? तमारा मतना आचार्य सामंतभद्रस्तुतिकार पण कहेछे के ॥ श्लोक ॥ देवागमनभोयान, चामरादिविभूतय. ॥ मायाविष्वपि दृश्यते, ह्यतस्त्वमसि नोमहान् ॥ १ ॥ भावार्थ – देवताउना आगमन, आकाशमां चालवु, छत्र चामरादि विभूति, आ सर्व आडंबर इन्द्रजालीआमां पण थई शके छे, ते हेतुथी हे भगवन् ! तु अमोने महान् स्तुति करवा योग्य नथी वली हे जैन ! तमारा केहेवाथी महावीरज सर्वज्ञ होय, तो पण आ जे आचारांगादि शास्त्र छे ते महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे एम केवी रीते जाणी शकिये ? शु जाणीयें के कोई धूर्त्त रचीने महावीरनुं नाम राखी लीधु होय ? कारण के आ वात इंद्रियज्ञाननो विषय नथी, अने अतींद्रिय ज्ञाननी सिद्धिमां कोई पण प्रमाण नथी

भला कदी एम पण हो के आचारांगादि शास्त्र तो महावीर सर्वज्ञनांज कथन करेलां छे तो पण श्रीमहावीर स्वामिना कथन करेला शास्त्रनो आज अभिप्राय छे, आज अर्थ छे, बीजो अर्थ नहि, एम केम जाणी शकाय ? कारण के शब्दना अनेक अर्थ छे, ते आ जगत्मां प्रगट सांभलवामां आवे छे शु जाणिये आज अक्षरोथी श्रीमहावीर स्वामिये कोइ अन्यज अर्थ कह्या होय, अने तमारी समजणमा तेज अक्षरोथी कांई जुदाज अर्थ भासन थता होय ? हवे तेनो निश्चय केवीरीतें थाय के आ अक्षरोना आज अर्थ भगवाने कह्या छे जो तमे एवी रीते मानी लीधु होय के भगवानना समयमां गौतमादि मुनि हता, तेउए भगवानना मुखारविंदथी साक्षात् जे अर्थ श्रवण कस्या हता, तेज अर्थ आज पर्यंत परपराथी चाल्या आवे छे, तेज कारणथी आचारांगादि

शास्त्रोना आज अर्थ छे, बीजा नथी आ पण तमारुं केहेवुं अयुक्त छे, कारण के गौतमादि पण छद्मस्थ हता, अने छद्मस्थने बीजानी चित्त वृत्तिनुं ज्ञान होतु नथी, बीजानी चित्तवृत्तिनी समज तो अतींद्रिय ज्ञाननो विषय छे. छद्मस्थ तो इंद्रियद्वारा जाणी शके छे, इद्रियज्ञानी सर्वज्ञना अभिप्रायने केवी रीतें जाणी शके के सर्वज्ञनो आज अभिप्राय छे ? आ अभिप्रायथी सर्वज्ञें आ शब्द कह्यो छे ? ते वास्ते भगवानना अभिप्राय तो गौतमादि जाणी शकता न होता, केवल जे वर्णावली भगवान् केहेता हता तेज वर्णावलि भगवाननी पाछल गौतमादि उच्चारण करता आव्या छे, परंतु भगवाननो अभिप्राय कोइयें जाणेलो नथी जेम आर्यदेशोत्पन्न पुरुषनो शब्दोच्चार श्रवण करी म्लेछ पण तेवोज शब्दोच्चार करी शके छे, परंतु तात्पर्य कांइ जाणता नथी, तेवीज रीतें गौतमादि, महावीर स्वामिना अनुवादक हता, परंतु तेमना अभिप्राय जाणता न होता, ते कारणथी सम्यक् ज्ञान कोइ मतमां सिद्ध थतु नथी, एक तो ज्ञान थवाथी, पुरुष अभिमानथी बहुज कर्म बांधीने दीर्घसंसारी थई जाय छे, बीजु सम्यक्ज्ञान कोइ मतमां छेज नहि, तेथी अज्ञानज श्रेय छे ए प्रमाणें अज्ञानवादिनी श्रद्धा छे ते अज्ञानी सडसठ प्रकारना छे तेने जाणवानो आ उपाय छे. जीवादि नव पदार्थ कोइ पत्र पर लखवा, अने दशमा स्थानमां उत्पत्ति लखवी, जीवादि नवे पदार्थ नीचे जुदां जुदां सत्त्वादि सात पद स्थापन करवां, ते सात पद आ छे– १ सत्त्व, २ असत्त्वं, ३ सदसत्त्वं, ४ अवाच्यत्वं,५ सदवाच्यत्व, ६ असदवाच्यत्व, ७ सदसदवाच्यत्वं. हवे १ सत्त्व–ते स्वरूपथी विद्यमानपणु, २ असत्त्वं– पररूपथी अविद्यमानपणु, ३ सदसत्त्वं– ते स्वरूपथी तथा पररूपथी विद्यमानपणुं, तेमां अगर जो के सर्व वस्तु स्वपर रूपथी निरतर स्वभावथी सदसत्स्वभाव छे, तो पण कोईक जगाये कदाचित् उद्भूतरूपथी विवक्षा करवामां आवे, ते हेतुथी आ त्रण विकल्प थाय छे, तथा अवाच्यत्वं ते तेजसत्व, असत्व ज्यारे युगपत् [1] एक शब्दथी केहेवानी इच्छा करियें, त्यारे तेनो वाचक कोईपण शब्द नथी तेथी अवाच्यत्व, आ चारे विकल्पनुं सकलादेशा एवु नाम कहिये, का-

१ एक कालावच्छिन्न

रण के आ चारे सकल वस्तु विषयने ग्रहण करे छे ५ वली जो एक भागमां सत्, अने बीजा भागमां अवाच्य, युगपत् विवक्षा करियें तो सद वाच्यत्व, ६ जो एक भागमां असत् अने बीजा भागमां अवाच्य, तो असदवाच्यत्वं, तथा ७ जो एकभागमां सत्य, बीजा भागमां असत्य, त्रीजा भागमां अवाच्य युगपत् कल्पना करियें तो सदसदवाच्यत्व आ साते विकल्पोथी बीजा विकल्प कोई पण नथी जो कदी कोई करी ले तो तेनो ते सातना अतरमांज समावेश थई जशे, परंतु सातथी अधिक विकल्प कदापि थशे नहि आ साते विकल्पने नवगुणा करे त्यारे त्रेसठ थाय छे, अने १ सत्त्व, २ असत्त्वं, ३ सदसत्त्व, ४ अवाच्यत्व, आ उत्पत्तिना चार विकल्प आदिथी होय छे ते त्रेसठमां प्रक्षेप करियें, त्यारे सडसठ मत अज्ञानवादिना थाय छे हवे आ साते विकल्पोना अर्थ लखियें छियें कोण जाणे छे के जीव सत्य छे, आ एक विकल्प जीव सत् छे एम कोईपण जाणतु नथी, कारण के तेने ग्रहण करनारुं कोई प्रमाण नथी कदाचित् कोई जाणी पण लहे के जीव सत् छे तो तेथी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थई, कारण के ज्यारे ज्ञान थशे, त्यारे अभिनिवेश, अभिमान, चित्तमलिनता, विवाद, झघडा विगेरे अनेक, लोकोना प्रसगमां वधी जशे, पठी ज्ञानवान् वहुज कर्म वाधी दीर्घतर ससारी थशे आ प्रमाणे बीजा विकल्पनो पण अर्थ जाणी लेवो इति

हवे विनयवादिनो मत कहियें छियें विनयथी जे प्रवर्त्ते ते वैनयिका' आ विनयवादिनां लिग तेमज शास्त्र नथी तेउं केवल विनयथीज मोक्ष माने छे विनयवादियोना वत्रीश मत छे ते आ प्रमाणे १ सुर, २ राजा, ३ जाति, ४ ज्ञाति, ५ स्थविर, ६ अधम, ७ माता ८ पिता, आ आठेनो मन, वचन, कायाथी, तेमज देशकालपूर्वक उचित दान दइने विनय करवो आ चार साथे आठ गुणा करता वत्रीश भेद थया इति

ए प्रमाणे सर्वमली त्रणसे त्रेसठ मत थया आ सर्वे मतधारी तेमज तेनी प्ररूपणा करनारा, सर्वे कुगुरु छे, कारण के आ सर्वे मतो मिथ्या दृष्टियोना छे सर्व एकातवादि छे, वली स्याद्वादरूप अमृतस्वादथीरहित छे, तेउंनां मानेला तत्त्व, प्रमाणथी वाधित छे, आ सर्वमतोनु पूर्वाचार्योये अनेकयुक्तियोथी खण्डन करेल छे भव्यजीवोने जाणवा वास्ते,

हुं पण किंचित् मात्र, पूर्वाचार्योनी युक्तियो आ स्थले ज्ञाषाग्रंथमां लखुं.

प्रथम, कालवादी कहे ठे के, सर्व वस्तुनो कालज कर्त्ता ठे, तेनुं खन्मन लखु हुं हे कालवादि ! आ जे काल ठे ते शुं १ एक स्वज्ञाव नित्य व्यापी ठे ? २ किंवा समयादिरूपथी परिणामी ठे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो ते अयुक्त ठे, कारण के एवा कालने सिद्ध करनारुं कोईपण प्रमाण नथी जेवो प्रथम पक्षमां तमे काल मान्यो ठे, तेवो काल प्रत्यक्ष प्रमाणथी उपलब्ध थतो नथी, तेमज एवा कालनु कोइ लिंग पण अविनाज्ञावरूप देखातु नथी, ते कारणथी अनुमानथी पण सिद्ध थतुं नथी.

पूर्वपक्ष—केवीरीतें अविनाज्ञाव लिंगनो अज्ञाव कहो ठो ? कारण के ज्ञरत रामचंद्रादिविषे पूर्वापर व्यवहार देखाय ठे, ते पूर्वापर व्यवहार वस्तुरूप मात्र निमित्त नथी, जो वस्तुरूप मात्र निमित्त होय तो वर्तमानकालमां वस्तुरूपना विद्यमानपणाथी तेवो व्यवहार होवो जोइयें. ते कारणथी जेणेकरीने आ ज्ञरत रामादिविषे पूर्वापर व्यवहार ठे, ते काल ठे, तेवीज रीतें, पूर्वकालयोगी, पूर्वज्ञरतचक्रवर्त्ती, अपरकालयोगी, अपर रामादि.

उत्तरपक्षिनो तर्कः—जो ज्ञरत रामादिविषे पूर्वापर कालना योगथी पूर्वापर व्यवहार ठे, तो कालनो पूर्वापर व्यवहार केम सिद्ध थशे ?

पूर्वपक्षिनु समाधान.—कालनो जे पूर्वापर व्यवहार ठे ते अन्य बीजा कालना योगथी ठे

उत्तरपक्ष—जो बीजा कालना योगथी प्रथम कालनो पूर्वापर व्यवहार ठे, तो बीजा कालनो पूर्वापर व्यवहार, त्रीजा कालना योगथी थयो, एम करतां करतां अनवस्था दूषणनो प्रसंग आवेठे

पूर्वपक्ष—ए दूषण अमने लागतुं नथी, कारण के अमे तो ते कालनाज स्वयमेव पूर्वापर विज्ञाग मानिये ठियें बीजा कालादि योगथी मानता नथी. ॥ श्लोक ॥ पूर्वकालादियोगी यः, पूर्वादिव्यपदेशज्ञाक् ॥ पूर्वापरत्वं तस्यापि, स्वरूपादेव नान्यत ॥ १ ॥ अर्थ—जो पूर्वापर कालना योगी ज्ञरत रामादि ठे तो ज्ञरत रामादि पूर्वापर व्यपदेशवाला ठे, अने कालना जे पूर्वापर विज्ञाग ठे ते स्वत ज ठे, परंतु अन्य कालादि योगथी नथी

उत्तरपक्षः—हे पूर्वपक्षि ! आ तमारुं केहेवुं कंठ लगी मदिरा पीनार

मदिरापानिना प्रलाप जेवु छे कारण के तमे प्रथम पक्षमां काल एकांत एक नित्य व्यापी मानेल छे, तो हवे केवी रीते ते कालनो पूर्वापर व्यवहार होय ?

पूर्वपक्ष.–सहचारिना संगथी एक वस्तुनो पण पूर्वापर कल्पनामात्र व्यवहार थइ शके छे जेम सहचारि जरतादिना पूर्वापर व्यवहार छे, तेवीज रीतें जरतादि सहचारियोना संगथी कालनो पण कल्पनामात्र पूर्वापर व्यपदेश थाय छे सहचारियोथी व्यपदेश, सर्व तार्किकोना मतमां प्रसिद्ध छे यथा, " मंचा क्रोशतीति " जेम मंचा गालो दीयेछे

उत्तरपक्ष.–आ पण असमंजस कथन छे कारण के आ कथनमां इतरेतर दोषनो प्रसग आवे छे. ते कहिये छियें सहचारि जरतादिनो कालना योगथी पूर्वापर व्यवहार थयो, अने कालनो पूर्वापर व्यवहार, सहचारि जरतादिना योगथी थयो, जो एक सिद्ध नहि थाय तो वीजु पण सिद्ध नहि थाय उक्त च ॥ एकत्वव्यापितायां हि, पूर्वादित्वं कथ जवेत् ॥ सहचारिवशात्तचे, दन्योन्याश्रयतागम ॥ १ ॥ सहचारिणां हि पूर्वत्व, पूर्वकालसमागमात् ॥ कालस्य पूर्वादित्व च, सहचार्यवियोगत ॥ २ ॥ प्रागसिद्धावेकस्य, कथमन्यस्य सिद्धिरिति ॥ ते कारणथी प्रथम पक्ष श्रेय नथी

जो वीजो पक्ष मानशो तो ते पण अयुक्त छे कारण के समयादि रूप परिणामी कालविषे काल एकज छे तोपण विचित्रपणुं उपलब्ध थाय छे जुओ एक कालमां मगने रांधतां कोइ रंधाय छे, कोइ रंधाता नथी, तथा समकाल एक राजानी नोकरी करता थकां एक नोकरने अल्प कालमांज नोकरीनु फल मली जाय छे, अने वीजाने बहु काल व्यतीत थया छतां पण तेवु फल मलतु नथी, तथा समकालें खेती करतां छतां एक खेडुतने बहु धान्य उत्पन्न थाय छे, अने वीजाने अल्प, वगडेलु तेमज खन्नित उत्पन्न थाय छे, तथा समकालें कोडीओनी मूठी जरीने जमीन उपर नाखियें तो केटलीएक कोडीओ चत्ती पडे छे, अने केटलीएक उधी पडे छे हवे जो कालज एकलुं कारण होय तो सर्व मग एकज कालमां रधावा जोइयें, परंतु तेम थतु नथी, इत्यादि, ते कारणथी नि.केवल कालज जगतनी विचित्रतानो कर्त्ता नथी परंतु

कालादि सामग्रीना मलवाथी कर्म कारण छे, आ सिद्ध पक्ष छे. इति प्रथम कालवादिना मतनुं खरून

बीजा ईश्वरवादी अने त्रीजा अद्वैतवादी आ मतोनुं खंरुन ईश्वरवादमां लखी आव्या छिये, त्यांथी जाणी लेवु.

हवे चोथो मत नियतिवादियोनो छे तेनुं खंरुन लखियें छियें. नियतिवादी कहे छे के सर्व पदार्थना कर्त्ता नियति छे जे तत्त्वांतर थाय ते नियति केहेवाय. ते नियति पण ताडन पामती अति जीर्ण वस्त्रनी पेठे विचाररूप ताडनाने नहि सहन करी शकती सेंकडो कटकाने प्राप्त थाय छे ते कहिये छिये हे नियतवादि! तमारुं जे नियतिनाम तत्त्वांतर छे ते जावरूप छे के अजावरूप छे? जो कहो के जावरूप छे तो पछी एकरूप छे के अनेकरूप छे? जो कहो के एकरूप छे, तो वली नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो पदार्थोनी उत्पत्ति आदिमां केवीरीते हेतुरूप छे? कारण के जे नित्य होय छे ते कोइनुं पण कारण थइ शकतु नथी. कारण के जे नित्य छे ते सर्व कालमां एकरूप होय छे नित्यनु लक्षण–"अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वजावतया नित्यत्वस्य व्यावर्णात्" एवु छे जे क्षरे नहि, तेमज उत्पन्न पण न थाय, स्थिर एक स्वजावथी रहे ते नित्य हवे जो नियति ते नित्यरूपथी जो कार्य उत्पन्न करे तो तो हमेशां तेजरूपथी कार्य उत्पन्न करे, कारण के तेना स्वरूपमां कांइपण विशेष नथी एकज रूप छे, अने हमेशां तेजरूपथी तो कार्य उत्पन्न करती नथी, कारण के कदी एक जातनु तो कदी बीजी जातनु कार्य उत्पन्न थतु देखिये छिये वली एक बीजी पण वात ए छे के जे बीजा, त्रीजा, आदि क्षणमां नियतिने कार्य करवानुं छे, ते सर्व कार्य प्रथम क्षणमांज उत्पन्न करी लेवुं जोइये, कारण के ते नियतिनो जे नित्य करणस्वजाव बीजा, त्रीजा आदि क्षणमां छे ते स्वजाव प्रथमक्षणमां पण विद्यमान छे जो प्रथम क्षणमां द्वितीयादि क्षणवर्ती कार्य करवानी शक्ति न होय तो द्वितीयादि क्षणमां पण कार्य न थवुं जोइये कारण के प्रथम द्वितीयादि क्षणमां कांइ पण विशेष नथी. जो प्रथम द्वितीयादि क्षणमां नियतिना रूपमां परस्पर विशेष मानशो तो तो स्वाजाविक रीतें नियतिना रूपमां अनित्यता आवी जशे. "अताद-

वस्थ्यमनित्यतां ब्रूम· इति वचनप्रामाण्यात्" जे जेवु होय ते तेवु न रहे ते अनित्य ते वचन प्रमाणथी तेने अमे अनित्य कहियें छियें

पूर्वपक्ष –नियति नित्य, विशेष रहितज छे, तो पण ते ते सहकारिनी अपेक्षाथी कार्य उत्पन्न करे छे, अने जे सहकारि छे ते प्रतिनियत देश कालवाला छे, ते कारणथी सहकारिना योगथी कार्य अनुक्रमें थाय छे.

उत्तरपक्ष –आ पण तमारु केहेवु असमीचीन छे कारण के सहकारि जे छे, ते पण नियतिथीज प्राप्त थाय छे, अने नियति जे छे ते प्रथम क्षणमां पण तेने करनार स्वभाववाली छे, जो द्वितीयादि क्षणमां बीजा स्वभाववाली नियति मानशो तो तो नित्यपणानो नाश थशे ते कारणथी प्रथम क्षणमा सर्व सहकारियोनो संभव होवाथी प्रथम क्षणमाज सर्व कार्य करवानो प्रसग थयो वली एक बीजी वात छे के सहकारिउना विद्यमानपणाथी कार्य थयु, अने सहकारिउना न होवापणाथी कार्य न थयु, त्यारे तो सहकारिउज अन्वयव्यतिरेक न्यायथी कारण छे, एम कल्पना करवी जोइये, परंतु नियति कारण थइ नहि,कारण के नियतिमां व्यतिरेकनो असंभव छे उक्त च ॥ श्लोक ॥ हेतुनान्वयपूर्वेण, व्यतिरेकेण सिध्यति ॥ नित्यस्याव्यतिरेकस्य, कुतोहेतुत्वसंभव ॥ १ ॥ हवे जो पूर्वोक्त दूषणोना भयथी अनित्य पक्ष मानशो तो तो ते नियतिनां दरेक क्षणे अन्य अन्य रूप थवाथी नियति बहुरूप थइ गइ, अने तमे जे नियति एकरूप मानी हती ते तमारी प्रतिज्ञाने व्याघात थवानो प्रसग आव्यो वली जे पदार्थ क्षणक्षयी होय छे, ते कोइनु कार्य कारण थइ शकतु नथी वली एक बीजी पण वात छे के, जो नियति एकरूप होय तो तेनाथी जे कार्य उत्पन्न थाय ते सर्व एकरूपज होवां जोइयें कारण के कारणनो भेद थया विना कार्यमां कदापि भेद थइ शकतो नथी जो तेम थइ जाय तो ते कार्यभेद निर्हेतुकज थवानो, अने हेतुविना कोइ कार्यनो भेद नथी जो नियति अनेकरूप मानशो तो तो ते नियतिथी अन्य अनेकरूपी विशेषण विना नियति नानारूप कदापि नहि थाय जेम के वरसादनु पाणी, काली, पीली, उखर जमीनना सबध विना अनेकरूप थइ शकतु नथी. यदुक्त ॥ "विशेषण

विना यस्मा, न तुल्यानां विशिष्टतेति वचनप्रामाण्यात्" ते कारणथी अवश्य ते नियतिथी अन्य नानारूप विशेषण नियतिना नेद मानवा जोइये ते अनेकरूप विशेषणोनु होवु ते शु ते नियतिथीज थाय ठे के कोइ वीजाथी थाय ठे? जो कहो के नियतिथीज थाय ठे तो ते नियति स्वत. एकरूप होवाथी ते नियतिथी उत्पन्न थयेला विशेषणोनी अनेक रूपता केवी रीतें थाय?

जो विचित्र कार्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी नियति पण विचित्ररूपज मानशो, तो नियतिनी विचित्रता वहु विशेषणो विना नहि थाय, ते कारणथी ते नियति विषे विशेष्य अनेक अगीकार करवा जोइये हवे ते विशेषणोना जे नाव ठे ते, ते नियतिथीज थाय ठे के कोइ वीजाथी? इत्यादि तेज फरी आव्युं ते कारणथी अनवस्था दूषण लागेठे.

हवे जो एम कहो के वीजाथी थाय ठे, तो ते पक्ष पण अयुक्त ठे. कारण के नियति विना वीजा कोइने तमे हेतु मानेला नथी, तेथी आ तमारु केहेवु कांइ कामनुं नथी वली एम मानशो के नियति अनेक रूप ठे, तो तमारा मतना वे वेरी विकल्प अमे तमारी सन्मुख खडा करिये ठिये जो तमारी नियति अनेकरूपठे तो मूर्त्त ठे के अमूर्त्त ठे? जो कहो के मूर्त्त ठे तो नामांतरथी कर्मनोज अंगीकार कर्यो कारण के कर्म पुजलरूप होवाथी मूर्त्तपण ठे अने अनेकरूप पण ठे तो तो तमारो अने अमारो एक मत थइ गयो कारण के अमे जेने कर्म मानिये ठिये, तेज कर्मने नामांतरथी तमे नियति मानी लीधी, परंतु वस्तु एकज ठे जो नियतिने अमूर्त्त मानशो तो ते अमूर्त्त होवाथी सुखडुःखनो हेतु थशे नहि. जेम के आकाश अमूर्त्त ठे परंतु सुखडुःखनो हेतु नथी पुजलज मूर्त्त होवाथी सुखडुःखनो हेतु थइ शकेठे जो तमे एम केहेशो के आकाशपण देशनेदथी सुखडुखनो हेतु थाय ठे. जेम के मारवाड देशमां आकाश डुखदायक ठे, अने वीजा जलवाला देशोमां सुखदायक ठे आ पण तमारुं केहेवु असत् ठे ते मारवाड आदि देशोमां पण आकाशमां रहेला जे पुजलो ठे ते पुजलथीज सुख डुःख थाय ठे जेम के मरुस्थल प्राय. जलथी रहित ठे. अने रेती घणीज ठे, तेथी रस्ते चालतां पग रेतीथी घसाय ठे, जेथी परसेवो वहुज

थाय छे वली उनालामां सूर्यना किरणोथी रेती बहुज तपी जाय छे त्यारे चालतां बहुज संताप थाय छे, अने पाणीपण पुरु पीवाने मलतुं नथी, तेथी खोदीने काढतां अनेक प्रयत्न करवा पडे छे ते कारणथी ते देशोमां बहुज दुःख छे, अने सजल देशोमां तेवां कारणो नथी तेथी तेवां दुःख पण नथी, आ हेतुथी पुद्गलज सुखदुःखना हेतु छे, परंतु आकाश नथी

जो नियतिने अभावरूप मानशो तो तेपण तमारो पक्ष अयुक्त छे कारण के अभाव जे छे ते तुच्छरूप छे, शक्तिरहित छे, अने कार्य करवामां समर्थ नथी जुओ के कटक कुंडलादिनो जे अभाव छे ते कटक कुंडल उत्पन्न करवाने समर्थ नथी, अने तेमज देखवामां आवे छे जो कटक कुंडलादिनो अभाव कटक कुंडलादि उत्पन्न करे तो तो जगत्‌मां कोइ दरिद्रि रहे नहि

पूर्वपक्ष —घटाभाव जे छे ते मृत्पिंड छे, ते माटीना पिंडथी घट उत्पन्न थाय छे, तो पछी अमारा केहेवामां अयुक्तता शी छे ? माटीनो पिंड तुच्छरूप नथी, कारण के ते पोताना स्वरूपथी विद्यमान छे, तो पछी अभाव पदार्थनी उत्पत्तिमां हेतु केम न थइ शके ?

उत्तरपक्ष —आ पण तमारो पक्ष असमीचीन छे, कारण के माटीना पिंडनु जे भावस्वरूप छे ते भाव अभावने अरसपरसमां विरोध होवाथी अभाव स्वरूप थइ शकतु नथी कारण के जो भावरूप छे तो अभाव केम थाय ? अने जो अभावरूप छे तो भावरूप केम थाय ? जो एम कहो के स्वस्वरूप अपेक्षायें भावरूप छे अने परस्वरूप अपेक्षायें अभाव रूप छे ते वास्ते भाव अभाव बनेनां जुदां निमित्त होवाथी कांइपण दूषण नथी आ केहेवाथी तो माटीनु पिंड, भाव अभावरूप अनेकांतात्मिकरूपे तमने प्राप्त थयु, परंतु आ अनेकांतात्मिकपणु जैनोनाज मतमां शोभे छे कारण के जैनमतवालाज सर्व वस्तुने स्वपरभावादि स्वरूपथी अनेकांतात्मिक माने छे, परंतु ते तमारा सरखा एकांतग्रहग्रस्त मतवालाओने शोभतु नथी, जो एम कहो के माटीना पिंडमां जे पररूपनो अभाव छे, ते तो कल्पित छे, अने जे भावरूप छे ते तात्विक छे, ते कारणथी अनेकांतात्मिकवाद अमारा मतमां आवतो नथी, तो तो ते माटीना पिंडथी घट केम थशे ? कारण के ते मृत्पिंडमां परमार्थथी घ-

टना प्राग्जावनो अजाव ठे जो प्राग्जाव विना पण ते मृत्पिंडथी घट थइ जाय तो तो सूत्रपिंडादिथी पण घट केम न थाय ? जेवो मृत्पिंडमां घट प्राग्जावनो अजाव ठे, तेवोज सूत्रपिंडादिमां पण घट प्राग्जावनो अजाव ठे तथा ते मृत्पिंडथी खरशृंग केम थइ जतां नथी ? ते कारणथी पूर्वोक्त तमारुं केहेवुं कांइ नहि एवुं ठे तथा तमे जे कह्युं हतु के जे वस्तु जे अवसरे जेनाथी थाय ठे तेज वस्तु कालांतरें पण तेज अवसरे तेनाथी नियतिरूपथी थती देखाय ठे आ जे तमारू केहेवु ठे ते वास्तविक ठे कारण के कारणसामग्रीना अनादि नियमोथी कार्य पण तेज अवसरें तेनाथी नियतरूपेज थाय ठे ज्यारे कारणशक्तिना नियमथी कार्य थइ गयु, त्यारे प्रमाणपंथनो कुशल कोण एवो प्रेक्षावान् ठे के प्रमाणथी वाधित नियतिनो अगीकार करे इति नियतिखडनं ॥

हवे पांचमा स्वजाववादिनुं खडन लखियें ठियें स्वजाववादी एम कहे ठे के, आ संसारमां सर्व जाव पदार्थ स्वजावथीज उत्पन्न थाय ठे. आ स्वजाववादिर्जनो मत नियतिवादना खंमनथीज खमन थइ गयो. कारण के जे दूषणो नियतिवादिना मतमां कहेलां ठे ते सर्व दूषणो प्रायः आ मतमा पण समानज ठे. जेम के आ जे तमारो स्वजाव ठे ते जावरूप ठे के अजावरूप ठे ? जो कहो के जावरूप ठे तो एकरूप ठे के अनेकरूप ठे ? इत्यादि सर्व दूषण नियतिनी जेम केहेवां

एक वीजी पण वात ठे के स्वजाव आत्माना जावने कहे ठे. ते स्वजाव कार्यगतहेतु ठे के कारणगत हेतु ठे ? कार्यगत तो नथी, कारण के ज्यारे कार्य थइ जशे, त्यारे कार्यगत स्वजाव थशे, परंतु कार्य थयाविना कार्यगत स्वजाव केम थाय अने जो कार्य थइ गयु तो तेनो हेतु स्वजाव केम थाय ? जे जेनो अलब्ध लाज संपादन करवामां समर्थ होय ते तेनो हेतु ठे, अने कार्य तो निष्पन्न थवाथी आत्मलाज प्राप्त थयो ठे, नहि तो ते स्वजावनेज अजावनो प्रसंग थइ जशे, त्यारे तो ते स्वजाव कार्यनो हेतु केवीरीतें थशे ? जो कहो के कारणगत हेतु ठे तो ते तो अमने पण संमत ठे ते स्वजाव प्रतिकारण जिन्न ठे, तेथीज माटीथी घट थाय ठे, परंतु पट थतुं नथी, माटीना पिंममां पटादि थवानो स्वजाव नथी तेवीज रीतें तंतुर्जथी पटज थाय ठे, घटादि थता नथी,

कारण के तंतुउंमां घट थवानो स्वजाव नथी ते कारणथी जे तमे कह्युं हतु के माटीथी घटज थाय छे, पटादि थता नथी, ते तो सर्व कारणगत स्वजाव मानवाथी सिद्ध थयेलानेज सिद्ध कर्युं छे आ पक्ष अमारा मतने बाधक नथी वली तमे जे कह्यु हतु के मगमां रंधावानो स्वजाव छे, कांगडु (कोरडू) मां नथी, इत्यादि तेपण कारणगत स्वजाव अंगीकार करतांज सर्व समीचीन थइ जायछे, जेम के एक कांगडु मग छे ते स्वकारणवशथी तेवा रूपवालो थयेल छे, हांडी, इंधन, कालादि सामग्रीनो संयोग छे तो पण रधातो नथी, अने स्वजाव जे छे ते कारणथी अन्नेद छे तेथी सर्व वस्तु सकारणज छे आ पक्ष सिद्ध छे इति क्रियावादिना मतनु खंडन

हवे अक्रियावादिउना मतमां जे यदृच्छावादि छे तेउनु एवु केहेवु छे के वस्तुउना नियमपूर्वक कार्य कारणजाव नथी इत्यादि ते तेमनु केहेवु कार्यकारणना विवेचनवाली बुद्धिना रहितपणाने सूचवे छे कारण के कार्यकारणने प्रतिनियतपणानो सन्नव छे ते कहियेंछियें शालुक (देडका) थी शालुक उत्पन्न थायछे ते निरतर शालुकथीज थायछे, परंतु गोवर (छाण) थी थता नथी, अने गोवरथी जे शालुक उत्पन्न थायछे, ते निरतर गोवरथीज उत्पन्न थायछे, परतु शालुकथी थता नथी वली आ बने जातना देडकाउं शक्तिवर्णादि विचित्र,ताथी तेमजपरस्पर जात्यतर होवाथी एकरूप पण नथी वली अग्निथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे तेपण निरंतर अग्निथीज उत्पन्न थायछे, परतु अरणीना काष्ठथी उत्पन्न थतो नथी, अने अरणीना काष्ठथी जे अग्नि उत्पन्न थायछे ते निरतर अरणीना काष्ठथीज उत्पन्न थायछे परंतु अग्निथी उत्पन्न थतो नथी वली बीजथी केला उत्पन्न थवा इत्यादि अनेक बाबतोमा परस्पर जिन्नता होवाथी तेनो खुलासो पण तेजछे वली एक हकीकत एवी छे के जे केला कदथी उत्पन्न थायछे तेपण परमार्थथी तो बीजथीज थायछे, एटले परपराए तो बीजज कारण छे तेवीज रीते वड आदिनी शाखापण एकदेशथी उत्पन्न थती छता परमार्थथी तो बीजथीज उत्पन्न थायछे विशेष हकीक एवी छे के शाखाथी जे शाखा उत्पन्न थाय छे ते उत्पन्न थनारी शाखानी हेतु शाखा छे एम लोक व्यहार चालतो नथी, कारण के वडनु बीजज सर्व शाखा, प्रशाखा

समुदायरूप वडनुं कारण छे एम जगत्मां प्रसिद्ध छे, तेवीज रीतें शाखाना एक जागथी उत्पन्न थयेल वड, परमार्थथी मूल, ते वडशाखारूपज छे, तेथी ते मूल पण बीजथीज उत्पन्न थयेल मानवु जोइये ते कारणथी कोइपण स्थलें कार्यकारणजाव व्यजिचारी नथी इति यदृछावादिमतखंडन.

हवे अज्ञानवादिना मतनुं खंडन लखिये छिये अज्ञानवादी कहेछे के ज्ञान श्रेय नथी, कारण के ज्यारे ज्ञान थायछे, त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्तमां क्लेश थवाना कारणथी दीर्घतर संसारनी वृद्धि थाय छे. इत्यादि. अज्ञानवादिउनुं आ कथन मूर्खतासूचक छे जुउ के बीजी वात तो दूर रही परंतु प्रथम अमे आपने बे सवाल पुछिये छियें, मुख्य ए छे के ज्ञाननो तमे जे निषेध करोछो ते शु ज्ञानथी करोछो के अज्ञानथी करोछो? जो कहो के ज्ञानथी करिये छिये, तोपछी केम कही शको के अज्ञान श्रेयछे? आ कथनथी तो ज्ञानज श्रेय थयु ज्ञानविना अज्ञानने स्थापन करवाने कोइ समर्थ नथी जो पूर्वोक्त कथन स्वीकारशो तो तमारी प्रतिज्ञाने व्याघातनो प्रसंग आवशे जो केहेशो के अज्ञानथी निषेध करिये छियें तो तेपण अयुक्त छे, कारण के अज्ञानमां ज्ञानने निषेध करवानुं सामर्थ्य नथी कारण के अज्ञानमां कोइनेपण सिद्ध करवानी के बाध करवानी शक्ति नथी, ज्यारे अज्ञानमा ज्ञानने निषेध करवानु सामर्थ्य नथी त्यारे ज्ञानज श्रेयछे एम सिद्ध थयुं, वली तमे कह्युं छे के ज्यारे ज्ञान थायछे त्यारे परस्पर विवादना योगथी चित्त, क्लेशादि जावने प्राप्त करेछे, तेपण आपनुं विना विचारनु कथन छे अमे परमार्थथी ज्ञानी तेनेज कहिये छिये के जेनो आत्मा विवेकथी पवित्र होय, अने जे ज्ञाननो गर्व न करे, तेमज अल्पज्ञानी थइ कठ लगी मदिरापान करनारनी जेम उन्मत्त वचनो बोले अने सर्व जगत्ने तृण सदृश माने, ते परमार्थथी अज्ञानीज छे, कारण के तेने ज्ञाननु फल प्राप्त थयु नथी ज्ञाननुं फल तो रागद्वेषादि दूषणोनो त्यागजावछे. ज्यारे तेम थयु नहि त्यारे परमार्थथी तेनामां ज्ञानज नथी उक्त च॥ तज्ज्ञानमेव न जवति, यस्मिन्नुदिते विजाति रागगण.॥ तमस. कुतोस्ति शक्ति, र्दिनकरकिरणाग्रतः स्थातुम् ॥१॥ एवा ज्ञानी विवेकथी पवित्र आत्मावाला परजीवोने हित करवामां एकांत रसिया होय. एवा ज्ञानी कदापि विवाद करशे, तो पण प-

जीवोना उपकार वास्तेज विवाद करशे, अने राजा आदि निपुण बुद्धि-
ाला परीक्षकोनी परिषद् (सन्ना) मांज करशे, अन्यथा करशे नहि
ीर्थंकर गणधरादियें एवी रीते वाद करवाने फरमान करेल ठे ज्यारे
आज्ञा मुजब वाद थशे त्यारे चित्तनी मलिनता, के कर्मनो बंध, के
थी थती दीर्घतर ससारनी वृद्धि केवी रीतें थशे? ज्ञानवान्नो जे वाद ठे
केवल वादि नरपति आदि परीक्षकोना अज्ञानने दूर करवा वास्तेठे स-
यक्ज्ञान प्रगट थवाथी अत्यत उपकार थायठे ते कारणथी ज्ञानज श्रेय ठे.

वली अज्ञानवादी कहे ठे के तीव्र अध्यवसायथी जे कर्म उत्पन्न था-
ठे, तेनाथी दारुणविपाक फल थाय ठे, ते तो अमे मानिये ठियें,
रंतु अशुन्न अध्यवसायनो हेतु ज्ञान नथी अने अज्ञान तो अशुन्न
ध्यवसायनो हेतु देखवामा आवे ठे फक्त एटली वात ठे के ज्ञान
िद्यमान ठतां कदाचित् कर्मदोषथी अकार्यमा प्रवृत्ति पण थाय तो पण
ानना बलथी क्षणे क्षणे सवेग न्नावनाथी तीव्र अशुरू परिणाम थता
थी, ते तो अनुन्नवाय ठे

जेम कोइ पुरुष राजाआदिना दुष्ट फरमानथी विषमिश्रित अन्न,
ाणतां ठतां पण मनमा नयन्नीत थइ जमशे, तेवीजरीतें सम्यक्ज्ञानी
ण कथचित् कर्मदोषथी अकार्यपण आचरशे, तो पण ससारनां दुःखो-
ी तेनु मन नयन्नीत थशे, परतु निःशक थशे नहि अने ससारथी न-
न्नीत थवु तेनुज नाम सवेग ठे तेथी सवेगवान् तीव्र अशुन्न अध्य-
ासायवाला थता नथी। वली तमे जे कह्यु हतु के अज्ञानज सत्पुरुषोने
ोक्ष प्राप्त करवा वास्ते श्रेय ठे, परतु ज्ञान श्रेय नथी, ते कथनपण
ूढतासूचक ठे जेनु नामज अज्ञान ठे ते श्रेय केवीरीते करी शके ठे?
ली तमे कह्यु हतु के अमे ज्ञानने मानी पण लहिये, जो ज्ञाननो नि-
श्चय करवामा कोइ समर्थ होय तो, आ पण मूर्खवचन ठे अगर जो
के सर्वमतवाला परस्पर न्निन्नज ज्ञान अगीकार करे ठे, तो पण जेनु व-
चन दृष्टेष्टबाधित नथी, तेमज पूर्वापर व्याहत नथी, तेज सम्यक् रूप
जाणवुं तेवु वचन तो न्नगवान्नुज कहेलुं होइ शकेठे. तेज प्रमाण ठे
बीजानु नहि वली कह्यु हतु के बौद्धपण पोताना बुद्ध न्नगवानने सर्वज्ञ

माने ठे, इत्यादि तेपण असत् ठे, कारण के दृष्टेष्टथी तेर्उनां वचन बाधित ठे तेनुं स्वरूप आगल लखवामां आवशे

वली तमे कह्युं हतुं के वर्धमानस्वामी नले सर्वज्ञ होय, परंतु ते वर्धमान स्वामिनां कथन करेलां आज आचारांग आदि शास्त्र ठे तेनी केम प्रतीति थाय ? आ तमारी शकानो पण खुलासो थइ गयो, कारण के वीजा कोइनु एवुं दृष्टेष्टवाधारहित वचन नथी

वली तमे कह्युं हतुं के, आचारांग आदि शास्त्र जे ठे ते वर्धमान स्वामि सर्वज्ञनां कथन करेलां ठे तोपण वर्धमान स्वामिना उपदेशनो आज अर्थ ठे, अन्य नथी, इत्यादि. तेपण अयुक्त ठे कारण के नगवान्, वीतराग ठे, अने जे वीतराग होय ठे ते कोइने कपट उपदेश दइ जूलावो खवरावता नथी, कारण के विप्रतारणहेतु[1] जे रागादि दोषनो समूह, ते नगवानमां नथी वली सर्वज्ञ जे होय ठे ते जाणेठे के आ शिष्य विपरीत समज्यो ठे अने आ सम्यक् समज्यो ठे. तेथी जे विपरीत समज्यो होय तेने मना करे अने नगवानें गौतमादिने मना करी नथी तेथी सिद्ध थाय ठे के गौतमादिए जे जाणेल ठे ते सम्यक् जाणेलुं ठे वली जे कह्युं हतु के गौतमादि ठद्मस्थ ठे इत्यादि तेपण असार ठे, कारण के ठद्मस्थपण उक्त रीतिथी नगवानना उपदेशथीज यथार्थ वक्ता निश्चये थइ शके ठे तेमज विचित्र अर्थोवाला शब्द पण नगवानेंज कहेल ठे. ते शब्द जेवुं जेवुं प्रकरण होय तेवा तेवा अर्थना प्रतिपादक थइ शके ठे. ते कारणथी कांइपण तेमां दूषण नथी कारण के ते ते प्रकरणने अनुसारें तेवो तेवो अर्थ निश्चयपूर्वक थइ शके ठे, अने गौतमादिए जे जे स्थलें जे जे शब्दनो जेवो जेवो अर्थ करेल ठे, ते नगवानें निषेध करेल नथी, ते उपरथी जणाय ठे के गौतमादिए यथार्थ जाणेलुं ठे, अने शब्दोना अर्थपण यथार्थज करेला ठे अने जे कांइ गौतमादियें कहेलु ठे तेना अर्थनो पण आचार्योनी अविछिन्न परपराथी आज पर्यंत तेवोज वोध थाय ठे एम तो नज केहेवु के आचार्योनी परंपरा अमने प्रमाण नथी ? कारण के अविपरीत याने सम्यक् अर्थ कथन करनारी आचार्योनी परंपराने जूठी ठरावबाने कोइ पण समर्थ नथी.

१ ठगवाना कारण रूप

वली एक एवो सवाल छे के तमारो जे मत छे ते आगममूल छे के अनागममूल छे ? जो कहो के आगममूल छे तो तो आचार्योनी परंपरा केवी रीतें अप्रामाणिक थइ शके छे ? आचार्योनी परपरा विना आगमनो अर्थज केवी रीतें जाणी शकाय ? जो कहो के अनागममूल छे, तो तो उन्मत्तना विचित्र वचननी पेठे प्रामाणिक थशे नहि

पूर्वपक्षः– अगर जो अमारो मत अनागममूल छे तोपण युक्तिसंयुक्त छे तेथी अमे मानियें छिये

उत्तरपक्ष.– अहो "दुरंत स्वदर्शनानुराग." केवो पोताना मतउपर तीव्र राग छे कारण के आ पूर्वापरविरुद्ध भाषण तो अज्ञान मतनु भूषण हशे ?

पूर्वपक्ष – केवीरीतें अमारु बोलवु पूर्वापरविरुद्ध छे

उत्तरपक्ष – युक्तियो जे होय छे ते ज्ञानमूलज होय छे, अने तमे तो अज्ञाननेज श्रेय मानो छो, तो पछी तमारा मतमां युक्तियो सत्य केवी रीतें होवानो संभव छे ? तेथी तमे पूर्वापरविरुद्ध अर्थना भापक छो, ते कारणथी तमारो मत कांइ पण कामनो नथी इति अज्ञानवादिमतखडन

हवे विनयवादिना मतनु खंडन लखियेछियें जे विनयथीज मुक्ति माने छे तेपण मोहथी एकांतवादीज छे जे मुक्तिमार्गमा प्रवर्त्तनारा छे तेउनो जे विनय करवो, तेज विनय मुक्तिनु अग छे

अने "सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग्गइति वचनात्" मुक्तिमार्ग तो सम्यग् दर्शन, ज्ञान, अने चारित्ररूप छे, एम तत्वार्थ सूत्रनु प्रमाण छे तेकारणथी ज्ञान आदिनो तथा ज्ञान आदिना आधारभूत बहुश्रुत आदि जे पुरुष छे, तेउनो विनय, बहुमान, तथा ज्ञान आदिनी वृद्धि करवी ते परंपराए मुक्तिनु अग थइ शके छे परतु सुर, नृपति आदिनो विनय तो ससारनो हेतु छे कारण के जे जेनो विनय करे छे, ते तेना गुणोनु बहुमान करेछे अने सुर, नृपति प्रमुखमा विषयभोग प्रधान गुण छे ज्यारे तेउनो विनय कर्यो त्यारे तो विनय करनारे भोगोने बहुमान आप्यु, अने ज्यारे भोगोने बहुमान आप्युं त्यारे दीर्घ ससार मार्गनी प्रवृत्ति करी ते कारणथी एकात विनयथी जे मुक्ति मानेछे तेपण असत् वादीछे कारण के ज्ञान आदिथी रहित साक्षात् मुक्तिनुं अंग नथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रथी रहित पुरुष, केवल पादपतन आदि विनयथी मुक्ति

प्राप्त करी शकतो नथी, परंतु ज्ञानआदिसहित होय तोज प्राप्त करी शके-छे. तेथी ज्ञान आदिज साक्षात् मुक्तिनां अग थयां, विनय नहि.

पूर्वपक्ष.– अमे केम जणिये के ज्ञान आदिज मुक्तिनां अंग छे ?

उत्तरपक्षः– आ संसारमां मिथ्यात्व, अज्ञान, अने अविरति, आ त्रणथी आत्माने कर्मवर्गणानो संबंध थाय छे अने कर्मनो जे क्षय थवो तेज मुक्ति छे "मुक्तिः कर्मक्षयादिति वचनप्रामाण्यात्" अने कर्मनो क्षय तो त्यारे थशे के ज्यारे कर्मबंधनां कारणोनो उछेद थशे, अने कर्मनां कारण तो मिथ्यात्व आदि उपर बतावेलां त्रण छे तेथी मिथ्यात्वना प्रतिपक्षि सम्यक्दर्शन, अज्ञानना प्रतिपक्षि सम्यक्ज्ञान, अने अविरतिना प्रतिपक्षी सम्यक् चारित्र, जे छे, तेउनी सेवा करतां थकां ज्यारे ते त्रणे प्रकर्ष भावने प्राप्त थशे, त्यारेज कर्मनां कारणो सर्वथा दूर थशे, अने ज्यारे कारणो दूर थशे, त्यारे निर्मूल कर्मोछेद थवाथी मुक्ति थशे ते कारणथी ज्ञान आदिज मुक्तिनां अग छे, परंतु विनय मात्र नथी. अने ज्ञान आदिनो विनय, ते परंपराथी मुक्तिनु अंग छे, परंतु सक्षात् मुक्तिना हेतु तो ज्ञान आदिज छे- अने जैनशास्त्रमां कइक स्थलें "सर्वकल्याणभाजनं विनय." एम जे लखेलु छे ते ज्ञान आदिनी प्रवृत्ति निमित्ते छे. अने जो विनयवादीपण ए प्रमाणे माने तो विनयवादीपण अमारा मतमांज प्रवर्त्ते छे अने विवादनो अभाव थाय छे इति विनयवादिमतखंडन आ समुच्चय (३६३) मतनुं किंचित्मात्रस्वरूप लखेल छे

हवे भव्यजीवोने शीघ्रबोध थवावास्ते षड्दर्शनोनु कांइक स्वरूप लखियें छिये तेमां प्रथम बौद्धदर्शननुं स्वरूप कहियें छिये. बौद्धमतमां गुरुनु लिंग आ प्रमाणे छे १ मस्तकमुंडित २ चर्मआसन ३ कमंडलु ४ धातुरक्त वस्त्र, आ तेउनो वेष छे अने शौचक्रिया अतिशय छे कोमल शय्यापर सुवुं, सवारमां उठी पेय पीवुं, मध्याह्नकालें भात खावो, दिवसना बीजा भागमां पाणी पीवु, द्राक्ष, खांड, साकर, खावी अर्धरात्रिमां मरण थाय तो मोक्ष, आ बौद्धोनुं वर्त्तन छे तथा मनगमतां भोजन करवां, मनगमती शय्यापर सुवु, आसनपर बेसवु, स्थानमां रेहेवु, एवी सुंदर सामग्रीथी मुनि सुंदर ध्यान करी शकेछे, तथा भिक्षापात्रमां जे कांइ पडे ते सर्व शुद्ध एम मानी मांसपण खाइ जाय छे, अने व्र-

ह्मचर्यादि पोतानी क्रियामां बहुज दृढ होय छे आ तेउनो आचार छे. १ धर्म, २ बुद्ध, ३ संघ, आ त्रणने रत्नत्रय कहेछे, अने शासनना विघ्नने नाशकरनारी तारा देवी छे एम माने छे तेमज विपश्यादि सात बौद्ध अवतार, जेउनी मूर्त्तिउना कंठमां त्रण त्रण रेखानां चिह्न होय छे, तेउने जगवान् माने छे, सर्वज्ञ माने छे

वली बुद्ध जगवानने जे जे नामथी वर्णन करे छे ते लखियें छियें, १ बुद्ध, २ सुगत, ३ धर्म्मधातु, ४ त्रिकालवित् ५ जिन, ६ बोधिसत्त्व, ७ महाबोधी, ८ आर्य, ९ शास्ता, १० तथागत, ११ पचज्ञान, १२ पमजिज्ञ, १३ दशार्ह, १४ दशनूमिग, १५ चतुस्त्रिंशज्जातकज्ञ, १६ दशपारमिताधर, १७ द्वादशाक्ष, १८ दशबल, १९ त्रिकाय, २० श्रीघन, २१ अद्वय २२ समतजड, २३ संगुप्त, २४ दयाकूर्च, २५ विनायक, २६ मारजित्, २७ लोकजित्, २८ मुखजित्, २९ धर्मराज, ३० विज्ञानमात्रक, ३१ महामैत्र, ३२ मुनींद्र आ बत्रीश नाम बुद्ध जगवाननां कहेछे वली सात बुद्धपण माने छे १ विपशी, २ शिखी, ३ विश्वनू ४ क्रकुछद, ५ कांचन, ६ काश्यप, ७ शाक्यसिंह छेला शाक्यसिंह बुद्धना नाम १ शाकसिंह, २ अर्कबांधव, ३ राहुलसू ४ सर्वार्थसिद्ध, ५ गौतम, ६ मायासुत, ७ शुद्धोदन सुत, ८ देवदत्ताग्रज तथा १ जिक्षु, २ सौगत, ३ शाक्य, ४ शौद्धोदनी, ५ सुगत, ६ तथागत, आ शून्यवादि बौद्धना नाम छे तथा १ शौद्धादनी, २ धर्मोत्तर, ३ अर्वट, ४ धर्मकीर्त्ति, ५ प्रज्ञाकर, ६ दिग्नाग, ७ रामट इत्यादि तेमना ग्रंथ करनारा गुरु छे तथा १ तर्कजापा, २ न्यायबिंदु, ३ हेतुबिंदु, ४ अर्वट, ५ तर्ककर्मलशैत, ६ न्यायप्रवेश, ७ ज्ञानपारं इत्यादि तेउनां तर्कशास्त्रोनां नाम छे तथा बौद्धोनी चार शाखा छे १ वैजापिक, २ सौत्रांतिक ३ योगाचार, ४ माध्यमिक

हवे बौद्धमतनु स्वरूप लखियें छिये बौद्ध चार वस्तु माने छे १ दुःख, २ समुदाय, ३ मार्ग, ४ निरोध तेमां जे दुःख छे ते पांच स्कध रूप छे तेना नाम १ ज्ञान स्कंध, २ वेदना स्कंध, ३ सज्ञा स्कध, ४ संस्कार स्कध, ५ रूप स्कध आ पाच विना आत्मा आदि बीजो कोइपण पदार्थ नथी आ पांच स्कधनो अर्थ, १ रूपविज्ञानं, रसविज्ञानं, इत्यादि निर्विकल्प जे विज्ञान छे, ते ज्ञान स्कध २ सुखादुःखा, अदुःखसुखा,

आ वेदना स्कंध ठे, आ वेदना पूर्वकृत कर्मथी थायठे. ३ सविकल्पक ज्ञान ते संज्ञास्कंध. ४ पुण्य, अपुण्यादि धर्म समुदाय ते संस्कार स्कंध, आ संस्कारना प्रवोधथी पूर्वे अनुनवनुं स्मरणादि थाय ठे. ५ पृथ्वी, धातु आदि, तेमज रूपादि, आ रूपस्कध ठे. आ पांचेथी न्यारो आत्मादि कोई पदार्थ नथी आ पांचे स्कंध, सर्व एक क्षणमात्र रहे ठे, नित्य नथी, तेम विशेष वखत पण रेहेनारां नथी. आ डुःख तत्वना पांच नेद कह्या

हवे डुःख तत्वनां कारणनूत समुदाय तत्वनुं स्वरूप लखियें ठियें आ जगत्मां रागद्वेषनो जे समूह उत्पन्न थाय ठे, ते रागद्वेषनो समूह केवो ठे ? "आत्मा आत्मीयन्नावास्य " आ हु हुं आ मारुं ठे, एवो जे संवध, तथा आ परठे, आ परनी वस्तु ठे, एवो जे संवंध तेज ठे नाम जेनुं, तेनाथी जे राग द्वेषादि उत्पन्न थाय ठे, तेनुं नाम समुदाय तत्व ठे आ डुःख अने समुदाय वेज संसारनी प्रवृत्तिना हेतु ठे

आ वंनेना विपक्षीनूत १ मार्ग, २ निरोध, तत्व ठे, तेनुं स्वरूप लखियें ठियें " परमनिःकृष्टं कालं क्षणं " क्षणमां जे थाय ते क्षणिक ठे सर्व पदार्थ क्षण मात्र रही नाश पामे ठे. आत्मा के कोई सर्वकाल स्थायीनथी पूर्व क्षणनो नाश थवाथी तेना सरखो उत्तरक्षण उत्पन्न थायठे. पूर्व ज्ञानमां उत्पन्न थयेली वासना ते उत्तर ज्ञानमां शक्ति ठे अने क्षणोनी परंपरापूर्वक जे मानसी प्रतीति थाय तेनुं नाम मार्ग्ग ठे. ते निरोधनुं कारण जाणवु हवे निरोध तत्वनु स्वरूप लखियें ठियें निरोध एटले मोक्ष चित्तनी जे नि क्लेश अवस्था तेनुं नाम निरोध ठे. नामांतरथी मोक्ष केहेवाय ठे आ डु खादि चारेने आर्यसत्व कहे ठे अने आ जे चारे तत्व अनंतर कहेल ठे ते सौत्रांतिक वौद्धमतनी अपेक्षाथी ठे.

हवे जो नेदरहित समुच्चय वौद्धमतनी विवक्षा करिये तो वौद्धमतमां वार पदार्थ ठे तेमां १ श्रोत्र, २ चक्षु, ३ घ्राण, ४ रसन, ५ स्पर्शन, आ पांच इंद्रिय, अने पांच इन्द्रियना पांच विपय, तथा १ चित्त, २ शव्दायतन. धर्म जे सुख डु.खादि तेनुं जे आयतन (घर). ते शुं ठे. आ सर्व वारतत्वनु नाम आयतन कहे ठे. अने आ वारे आयतन क्षणिक ठे. पूर्वोक्त प्रकारें चार आयतन सौत्रांतिक मतनां, अने सामान्य प्रकारें वार आयतन वौद्धमतनां कह्यां. वौद्धमतमा प्रमाण वे ठे. एक प्र-

त्यक्ष, वीजु अनुमान आ बे प्रमाणज माने छे इतिसंक्षेपमात्र बौद्धदर्शनं.

हवे नैयायिकदर्शन लखियें छिये नैयायिकमतनु बीजुं नाम गौतम मत पण छे आ नैयायिकोना गुरु १ दंड राखे छे, २ मोटी कोपीन पेहेरेछे, ३ कांवली उढेछे, ४ जटा राखेछे, ५ शरीरें जस्म लगावेछे, ६ नीरस आहार करेछे, ७ खजापर तुंबी राखेछे, ८ प्राय वनमां रहेछे, ९ आतिथ्य कर्ममां तत्पर होय छे, १०कंद मूल, फल खाय छे, ११ केटलाएक स्त्री राखेछे, अने केटलाएक स्त्री राखता नथी,१२ जे स्त्री राखता नथी ते उत्तम गणायछे, १३ पचाग्नि तापेछे,१४ जटामां प्राणलिंग धरे छे,१५ उत्तर संयम अवस्था ज्यारे प्राप्त थाय छे त्यारे नग्न थई परिभ्रमण करेछे, १६ सवारमां दांत, हाथ, पग विगेरे धोई शिवनु ध्यान करेछे, १७ जस्म त्रण त्रण वखत अंगने स्पर्श करे छे, १८ जक्तजन तेउंने वंदना करे, ते " ॐ नमः शिवाय कहेछे, १९ गुरुजाईने शिवाय नम एम कहे छे, तेउंनु एम पण केहेवु छे के जे पुरुष शैवी दीक्षा वार वर्ष सुधी पाली पछी ते छोडी दीये, अने दास दासी थई जाय तो पण निर्वाण पद प्राप्त करेछे तेउंना देव शकर छे, ते शकर सर्व सृष्टिना संहारकर्त्ता छे

शकरना अढार अवतार माने छे, तेनां नाम लखिये छियें १ नकुलीश, २ कौशिक, ३ गार्ग्य, ४ मैत्र, ५ कौरुष, ६ ईशान, ७ अपरगार्ग्य, ८ कपिलांड, ९ मनुष्यक, १० अपरकुशिक, ११ अत्रि, १२ पिंगलाक्ष, १३ पुष्पक, १४ वृहदाचार्य, १५ अगस्ति, १६ सतान, १७ राशिकर, १८ विद्यागुरु आ अढार तेना तीर्थंशछे तेनी वहुज सेवा करेछे, तेनो पूजन, प्रणिधानविधि तेना शास्त्रथी जाणी लेवो

अक्षपाद मुनि अर्थात् गौतममुनि तेमना गुरुछे तेना मतमां जरट पूजनीय छे, ते कहेछे के, देवतानी सन्मुखरही नमस्कार न करवो नैयायिक मतमा जेवु लिंग, वेष देवादि स्वरूपछे, तेवुज वैशेषिक मतमां पण छे कारणके नैयायिक, वैशेषिक मतना प्रमाण तथा तत्वोमा थोडोज नेद छे तेवास्ते आ वने मत सरखांज छे आ वने तपस्वी केहेवाय छे अने तेना शैवादिक चार नेद छे १ शैव, २ पाशुपत, ३ महाव्रतधर ४ कालमुख तेना अवांतर नेद जरट, जक्तलैंगिक, तापसादि छे, जरटादिउंने व्रत ग्रहणमा ब्राह्मणादि वर्णोनो नियम नथी, परतु जेनी शिवविषे जक्ति

होय, ते व्रती ज्ञरटादि थायछे, परंतु नैयायिक सदा शिवज्ञक होवाथी तेउंनुं नाम शैव केहेवाय छे, अने वैशेपिको पाशुपत केहेवाय छे.

आ नैयायिकोना मतमां १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रमाण छे अने तेउं १ प्रमाण, २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत,६ सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंमा, १३ हेत्वाज्ञास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान. आ सोल पदार्थ मानेछे तेनो विस्तार अतिशय होवाथी अहिंयां करेल नथी. आत्यंतिक फुःखोनो जे वियोग तेने मोक्ष कहेछे तेना अक्षपाद मुनिकृत न्यायसूत्र, २ वात्स्यायनमुनिकृत ज्ञाष्य, ३ उद्योतकर मुनिकृत न्यायवार्तिक, ४ वाचस्पतिकृत तात्पर्यटीका, ५ उदयनकृत तात्पर्यपरिशुद्धि ६ श्रीकंठाज्ञयतिलकोपाध्यायकृत न्यायालंकारवृत्ति, ७ ज्ञासर्वज्ञप्रणीत न्यायसार, तेनापर अढार टीका छे, तेमां न्यायज्ञूपण नामनी टीका प्रसिद्ध छे ८ जयतरचित न्यायकलिका, ९ न्यायकुसुमांजलि आ नैयायिकना तर्कग्रंथछे इति नैयायिकमतसंक्षेपवर्णन.

हवे वैशेपिकमत पण अत्र लखियें छियें. वैशेपिक मत नैयायिक तुल्य छे, परंतु विशेप एटलो छे के आ मतवाला बे प्रमाण माने छे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान. अने तत्व ठ माने छे १ द्रव्य,२ गुण,३ कर्म,४ सामान्य, ५ विशेप, ६ समवाय. आ ठ ज्ञावरूप मानेछे तेउंनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवुं होय तो वैशेपिक मतना ग्रथो तथा तपगछाचार्य श्रीगुणरत्नसूरिविरचित, षड्दर्शनसमुच्चय ग्रथनी टीका जोवी वैशेपिक मतना तर्कग्रथ १ श्रीधर आचार्यकृत कंदली ६००० श्लोक २ वैशेपिक सूत्र ३००० श्लोक, ३ प्रशस्तकरज्ञाप्य ७०० श्लोक, ४ व्योमशिवाचार्यकृत व्योममती टीका ९००० श्लोक, ५ उदयनकृत किरणावली ६००० श्लोक, ६ श्रीवत्स आचार्यकृत लीलावती टीका ५००० श्लोक ८ आत्रेय तंत्र, हाल विछेद गयेलछे वैशेपिक मतवाला कहेछे के शिवजीए उलूकनुं रूप धरीने कणाद मुनिपासे वैशेपिक मत प्रकाश कर्यो तेथी तेनुं बीजुं नाम औलुक्य पण छे. इति वैशेपिकमतवर्णन

हवे सांख्य मत लखियें छिये सांख्य मतना साधुउंनुं स्वरूप जाणवा माटे प्रथम तो तेमनां लिंगादि लखियें छियें तेउं त्रिदंमी पण होय छे,

कोपीन पेहेरे छे, धातुरक्त वस्त्र राखे छे, कोई शिरपर शिखा राखे छे, कोई जटा राखे छे, कोई मस्तक पर क्षौरमुंडकरावे छे, मृगचर्मनु आसन राखे छे, ब्राह्मणना घरनु अन्न खाय छे, कोई पांचज ग्रास खाय छे, बार अक्षरनो जाप करे छे, तेउना भक्त ज्यारे गुरुने वंदना करेछे त्यारे " ॐ नमो नारायणाय " एम कहे छे, त्यारे गुरु तेउने " नमो नारायणाय " एम कहे छे, अने महाभारतमां जेनुं नाम " वीटा " लखेल छे, काष्ठनी मुखवस्त्रिका मुखना निःश्वासना निरोध वास्ते राखे छे, जेथी मुखश्वास-थी जीवहिंसा न थाय ॥ श्लोक ॥ ते प्राणादनुयातेन, श्वासेनैकेन ज-तव. ॥ हन्यते शतशो ब्रह्म, ह्मणुमात्राक्षरवादिन. ॥१॥ सांख्य गुरु जल-ना जीवोनी दया वास्ते पाणी गलवा सारु पोताना पासे गलणु राखेछे, अने पोताना भक्तोने पाणी गलवा सारु त्रीश आंगल लांबु अने वीश आगल पोहोलु अने जाडु एवु गलणु राखवानो उपदेश करेछे वली जे जीव पाणी गलवा पछी निकले ते तेज पाणीमां पाछा प्रक्षेप करे छे, कारण के मीठापाणीना पूरा खारा पाणीमां मरी जाय छे, अने खारा पाणीना पूरा मीठा पाणीमां मरी जाय छे तेथी जुदां जुदां पाणी एक-ठा करता नथी पाणीना सूक्ष्म एक बिंदुमां जेटला जीव छे ते जीवोनी काया जो भ्रमर समान बनाववामा आवे तो ते जीवो त्रण लोकमां स-माय नहि आ तेउनो पाणी गलवानो विचार छे

सांख्य बे प्रकारना छे, एक प्राचीन, बीजा नवीन. नवीननुं बीजु नाम पातजलपण छे प्राचीन सांख्य ईश्वरने मानता नथी नवीन सांख्य ईश्वरने माने छे जे निरीश्वर छे ते नारायणने पर माने छे, अने तेना जे आचार्य छे ते विष्णु प्रतिष्ठाकारक चैतन्यप्रमुख शब्दोथी केहेवाय छे सांख्य मतनु स्वरूप बतावनारा आचार्यनां नाम कपिल, आसुरि, पचशिख, भार्गव, उलूक, ईश्वर, कृष्ण तेउ शास्त्रकर्त्ता छे सांख्यमत वा-ला कापिलपण केहेवाय छे तथा कपिलनु परमर्षि एवु बीजु नाम छे, तेथी तेउ पारमर्षा पण केहेवाय छे बनारसमां तेउ संख्याबंध छे मास उपवास पण करे छे ब्राह्मण जे छे ते अर्चिर्मार्गथी विरुद्ध धूममार्गानु-गामी छे, अने सांख्य अर्चिर्मार्गानुयायी छे, ब्राह्मणोने वेद पर प्यार छे तेथी यज्ञमार्गानुयायी छे, अने सांख्य हिंसाथी पूर्ण, एवा जे वेद ते-

नाथी निवर्त्तेला छे. अध्यात्मवादी सांख्य पोताना मतनो महिमा आ प्रमाणे माने छे ॥ श्लोक ॥ हस पिव च खाद मोदं, नित्यं भुंक्ष्व च भोगान् यथाऽभिकामं ॥ यदि विदितं कपिलमतं, तत् प्राप्स्यसि मोक्षसौख्यमचिरेण ॥ १ ॥ एम माठर शास्त्रना प्रांतमां लखेलुं छे. अर्थः– जो तमे कपिलमत जाण्यो होय तो पछी हसो, खेलो, पीओ, खाओ, सदा खुशी रहो, जेवी रुचि थाय तेवा सदा भोग भोगवो तो पण तमने अल्प कालमां मुक्ति, सुखें प्राप्त थशे. तेमना बीजा शास्त्रमां पण कह्युं छे के ॥ श्लोक ॥ पंचविंशतितत्त्वज्ञो, यत्र तत्राश्रमे रत. ॥ शिखी मुंडी जटी वापि, मुच्यते नात्र संशय. ॥ १ ॥ अर्थः– पचवीश तत्त्वने जाणनार, पछी चाहे ते कोई आश्रममा रहेतो होय, के शिखावालो होय, वा मुंडित होय, के जटा राखे, तो पण ते उपाधिथी मुक्त थाय तेमां संशय नथी

सांख्य मतमां सर्व सांख्य पचीश तत्त्व माने छे. ज्यारे पुरुष त्रण दुःखथी हणाय छे, त्यारे ते त्रण दुःखने दूर करवा वास्ते तेने जिज्ञासा उत्पन्न थाय छे. ते त्रण दुःखनां नाम १ आध्यात्मिक, २ आधिदैविक, ३ अधिभौतिक; आध्यात्मिक दुःख वे प्रकारनुं छे १ शारीरिक २ मानसिक तेमां वायु, पित्त, श्लेष्म, आ त्रणनी विषमताथी शरीरमां जे अतिसारादि रोग थाय छे ते शारीरिक, अने काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, इत्यादि, विषयो जोवाथी जे थाय ते मानसिक. आ बंने आभ्यंतर उपायथी दूर थई शके छे तेथी ते आध्यात्मिक दुःख केहेवाय छे २ आधिभौतिक, तथा ३ आधिदैविक, आ बंने बाह्य उपायथी दूरकरी शकायछे तेमां जे दुःख मनुष्य, पशु, पक्षी, मृग सर्पादि, स्थावरादिना निमित्तथी थाय छे ते आधिभौतिक, अने जे यक्ष, राक्षस, भूतादिना प्रवेशथी, तथा महामारी, अनावृष्टि अतिवृष्टि इत्यादिथी थायछे ते आधिदैविक केहेवायछे आ त्रण दुःखथी, रज परिणामना भेदथी प्राणिओने दुःख दूर करवा वास्ते तत्त्व जाणवानी इछा थाय छे ते तत्त्व पचीश प्रकारनां छे

प्रथम पचीश तत्वोनुं स्वरूप लखियेंछियें तेमां प्रथम सत्त्वादि गुणोनु स्वरूप कहियेंछिये ते त्रण गुण छे १ सत्त्व गुण, सुखलक्षण, २ रजोगुण दुःखलक्षण, ३ तमोगुण, मोहलक्षण, आ त्रण गुणनां त्रण लिंग छे. १ स-

त्वगुणनुं चिह्न प्रसन्नता, २ रजोगुणनु चिह्न सताप, ३ तमोगुणनु चिह्न दीनपणु हुवे १ प्रसाद, २ बुद्धिपाटव, ३ लाघव, ४ प्रश्रय. ५ अनभिष्वंग, ६ अद्वेष, ७ प्रीत्यादि, आ सत्वगुणनां कार्यलिंग छे, १ ताप, २ शोष, ३ भेद ४ चलचित्त, ५ स्तंभ, ६ उद्वेग, आ रजोगुणनां कार्यलिंग छे तथा १ दैन्य, २ मोह, ३ मरण, ४ असादन, ५ बीभत्सा, ६ अज्ञान गौरवादि, ७ आ तमोगुणनां कार्यलिंग छे कार्योथी सत्त्वादि गुणनो भास थाय छे तथा लोकमां जे कांइ सुख उपलब्ध थाय छे, जेम के १ आर्जव, २ मार्दव, ३ सत्य, ४ शौच, ५ लज्जा, ६ बुद्धि, ७ क्षमा, ८ अनुकंपा, प्रसादादि, आ सर्वे सत्त्वगुणनां कार्य छे, तेमज जे कांइ दुःख उत्पन्न थाय छे जेम के १ द्वेष, २ द्रोह, ३ मत्सर ४ निंदावचन, ५ वधन, तापादिस्थान, आ सर्वे रजोगुणनां कार्य छे, तेमज जे कांइ मोह उपलब्ध थाय छे, जेमके १ अज्ञान, २ मद, ३ आलस्य, ४ भय, ५ दैन्य, ६ कृपणता, ७ नास्तिकता, ८ विषाद, ९ उन्माद, स्वप्नादि आ सर्वे तमोगुणनां कार्य छे आ सत्त्वादि परस्पर उपकारी त्रण गुणोथी सर्व जगत् व्याप्त छे, परंतु ऊर्ध्वलोकमां देवताउंमा प्रधानपणे सत्त्वगुण छे, अने अधोलोक तिर्यंच, नरकविषे प्रधानपणे तमोगुण छे, तथा मनुष्यमां प्रधानपणे रजोगुणछे आ त्रणे गुणोनी जे सम अवस्था तेनु नाम प्रकृतिछे ते प्रकृतिना अपरनाम प्रधान, अव्यक्त एमपण छे प्रकृति नित्यस्वरूप छे " अप्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावं कूटस्थं नित्य " आ नित्यनु लक्षण छे तथा आ प्रकृति जे छे, ते अन्वय, असाधारणी, अशब्दा, अस्पर्शा, अरसा, अगंधा, अव्यया, केहेवाय छे जे मूल सांख्यछे ते दरेक आत्मानी साथ जुदा जुदा प्रधान मानेछे, अने जे नवीन सांख्यछे ते सर्वे आत्माउंमां एक, नित्य, प्रधान मानेछे प्रकृति अने आत्माना संयोगथी सृष्टि थाय छे, ते कारणथी सृष्टि थवानो क्रम लखिये छियें

ते प्रकृतिथी बुद्धि उत्पन्न थायछे गाय आदि सन्मुख देखवाथी, आ गायछे, घोडो नथी, तथा आ स्थाणु छे, पुरुष नथी, एवो जे निश्चयरूप अध्यवसाय थाय छे तेने बुद्धि कहेछे बीजु तेनु नाम महत्पण कहेछे ते बुद्धिना आठ रूप छे १ धर्म, २ ज्ञान, ३ वैराग्य, ४ ऐश्वर्य, आचार सात्विक

१ सुकुकाष्ठ

बुद्धिनां रूपछे . तथा १ अधर्म, २ अज्ञान, ३ अवैराग्य, ४ अनैश्वर्य, आचार तामसी बुद्धिरूपछे ते बुद्धिथी अहंकार उत्पन्न थायछे ते अहंकारथी सोल गुणनो समूह उत्पन्न थाय छे ते सोल गुण आ छे १ स्पर्शनं, त्वक्, २ रसनं जिव्हा, ३ घ्राण, नासिका, ४ चक्षुः, लोचन, ५श्रोत्रं, श्रवण, आ पांचेने बुद्धींद्रिय कहेछे, कारण के आ पांचे पोत पोताना विषयने जाणेछे तथा पांच कर्मेंद्रियछे १ पायु, गुदा, २ उपस्थ, पुरुष स्त्रीनुं चिह्न ३ वच, कंठादि आठस्थानथी उच्चाराय ते शब्द, ४ हाथ, ५ पग, आ पांचेथी पांच काम थायछे, १ मलोत्सर्ग, २ संजोग ३ वचन, ४ ग्रहण, ५ चलन, ते कारणथी आ पांचने कर्मेंद्रिय कहेछे ११ मन, मन ज्यारे बुद्धींद्रियने मलेछे, त्यारे बुद्धींद्रियरूप थइ जायछे, अने कर्मेंद्रियने मलेछे त्यारे कर्मेंद्रियरूप थइ जायछे आ मन जे छे ते संकल्पवृत्तिछे तथा अहंकारथी पाच तन्मात्रा जेनी सूक्ष्म संज्ञा छे ते उत्पन्न थायछे १ रूप तन्मात्रा, ते शुक्लकृष्णादि रूपविशेष, २ रसतन्मात्रा, ते तिक्तादि रस विशेष, ३ गधतन्मात्रा, ते सुरभ्यादि गंधविशेष, ४ शब्दतन्मात्रा, ते मधुरादि शब्दविशेष, ५ स्पर्शतन्मात्रा, ते मृदुकाठिन्यादि स्पर्शविशेष, आ षोडशक गण छे हवे पांचतन्मात्राउथी पांचभूत उत्पन्न थायछे, ते कहेछे १ रूप तन्मात्राथी अग्नि उत्पन्न थायछे, २ रसतन्मात्राथी जल उत्पन्न थायछे, ३ गध तन्मात्राथी पृथ्वी उत्पन्न थायछे, ४ शब्द तन्मात्राथी आकाश उत्पन्न थायछे ५ स्पर्श तन्मात्राथी वायु उत्पन्न थायछे एम पांच तन्मात्राओथी पच भूत उत्पन्न थायछे. एम सर्व मली चोवीश तत्व प्रधान निवेदन कस्यां "अने अकर्त्ता विगुण भोक्ता" एवु पुरुष तत्व पचीशमु नित्य चिद्रूप मानेछे चोवीश तत्व रूप प्रधान १ प्रकृति- २ महान्, ३ अहंकार ८ पांच ज्ञानेंद्रिय, १३ पांच कर्मेंद्रिय, १४ मन, १९ पाच तन्मात्रा, २४ पाच भूत एम चोवीश तत्व छे तेमांथी प्रथम जे प्रकृति छे ते अनुत्पन्न होवाथी बुद्धि आदि सात प्रथमनां कारण छे, अने सोल पाछलनां कार्य छे, तेथी प्रथमनी सात प्रकृति विकृति केहेवाय छे, अने षोडशकगण कार्यरूप होवाथी विकृतिरूपछे, अने पुरुष जे छे ते न प्रकृति, न विकृति छे नथी कोइथी उत्पन्न थयेल के नथी कोइने उत्पन्न करतो, ते कारणथी तेवो छे. ॥ तथाचेश्वर कृष्णः

सांख्यसप्ततौ ॥ " मूलप्रकृतिरविकृति, महदाद्या प्रकृतिविकृतय. सप्त ॥ षोडशकश्च विकारो, न प्रकृतिर्नविकृति पुरुष इति ॥ अर्थ –ईश्वर कृष्ण, सांख्य मतना आचार्य सांख्यसप्ततिग्रंथमां लखेठे के. मूलप्रकृति अविकृति ठे महत् आदि सात प्रकृतिविकृति ठे, षोडशक विकार विकृति ठे, अने पुरुष न प्रकृति, न विकृतिठे तथा महदादि, प्रकृतिना विकार ठे, ते व्यक्त थइने फरी अव्यक्तपण थइ जाय ठे ते अनित्यहोवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थइ जायठे, अने प्रकृति अविकृति रूप होवाथी पोताना स्वरूपथी भ्रष्ट थती नथी तथा महत् आदिनु अने प्रकृतिनु स्वरूप सांख्य मतवाला आ प्रमाणे मानेठे १ हेतुमत्, २ अनित्य, ३ अव्यापक,४ सक्रिय, ५ अनेक, ६ आश्रित, ७ लिंग, ८ सावयव, ए परतंत्र, १० व्यक्त प्रकृति तेनाथी विपरीत ठे १ हेतुमत्, कारण वाला ठे, महत् आदि, २ अनित्य, उत्पत्ति धर्मवालाठे, ३ अव्यापक, बुद्धि आदि अव्यापि ठे, सर्वगत नथी, ४ सक्रिय, अध्यवसायसंयुक्त वर्तेठे, ते हेतुथी क्रिया सहित, सव्यापार चालवा वालांठे, ५ अनेक, त्रेवीश प्रकारना ठे, तेथी, ६ आश्रित आत्माना उपकार वास्ते प्रधानने अवलवीने रहेठे ७ लिंग, जे जेमाथी उत्पन्न थायठे ते तेमाज लय पामे ठे, "लयंकय गच्छतीति लिंग," पांच भूत, पांच तन्मात्राउमां लय पामेठे, पाच तन्मात्रा, दश इंद्रिय, अने मन, अहंकारमां लयपामेठे, अहंकार बुद्धिमा लयपामेठे, अने बुद्धि प्रकृतिमा लय पामेठे, प्रकृतिनो कोइमा पण लय थतो नथी ८ सावयव, शब्द रूप, रस, गध, स्पर्शादि सयुक्त ठे, ए परतत्र, कारणने आधीन होवाथी, १० व्यक्त, तेवीज रीतें महदादि व्यक्त ठे, प्रकृति तेनाथी विपरीत, सुगम ठे आ अल्पमात्र स्वरूप बतावेल ठे, विस्तारथी जाणवु होयतो सांख्य सप्तति आदि शास्त्रो जोवां

हवे पचीशमा पुरुष तत्त्वनु स्वरूप कहिये ठियें पुरुष " अकर्त्ता विगुणोभोक्ता, नित्यचिदभ्युपेतश्च" ठे पुरुषतत्त्व आत्माने कहे ठे १ आत्मा, विषय सुखादिनां कारण पुण्यादि करतो नथी तेथी " अकर्त्ता ठे, कारण के आत्मा तृणमात्र पण तोडवाने समर्थ नथी, अने कर्त्ता प्रकृति ठे, कारण के प्रकृतिमां प्रवृत्तिस्वभाव ठे, तथा २ " विगुण. " सत्त्वादि गुणरहित ठे, कारण के सत्त्वादि प्रकृतिना धर्म ठे, तथा ३ " भो-

क्ता " आत्मा नोक्ता, नोगवनार ठे, नोक्ता पण साक्षात् नथी, परंतु प्रकृतिना विकारनूत उनय मुख दर्पणाकार जे बुद्धि ठे, तेमां संक्रमण थयां थकां निर्मल आत्मस्वरूपविषे सुख दुःखोना प्रतिबिंब उदय मात्रथी नोक्ता केहेवाय ठे " बुद्ध्यवसितमर्थं पुरुष श्चेतत " इतिवचनात्॥ जेम जासुस फुलनी समीप रेहेवाना कारणथी स्फटिकमां रक्तादि केहेवामां आवे ठे, तेम प्रकृतिना निकट संबंधथी पुरुषपण सुख दुःखोनो नोक्ता केहेवाय ठे सांख्य मतना वादमहार्णवमां पण कहे ठे " बुद्धिदर्पणसंक्रांत, समर्थप्रतिबिंबकं ॥ द्वितीयं दर्पणं कल्पे, पुंसिअध्यारोहति ॥ १ ॥ तदेव नोक्तृत्वमस्य नत्वात्मनोविकारापत्तिरिति ॥ आनो तात्पर्य उपर बतावेल ठे

तथा कपिलनो शिष्य आसुरिपण कहे ठे ॥ श्लोक ॥ विविक्तेदृक्परिणतौ, बुद्धौ नोगोऽस्य कथ्यते ॥ प्रतिबिंबोदयः स्वछे, यथा चंद्रमसोंनसि ॥ १ ॥ तथा विंध्यवासी सांख्याचार्य आत्माने तेवीज रीतें नोक्ता कहे ठे पुरुष अविकृत आत्माज ठे, स्वनिर्नास अचेतन मन कर्त्ता ठे. ते मननी निकटताथी उपाधि स्फटिकवत् देखाय ठे, "नित्या या चिचेतना तयाऽन्युपेत " आ केहेवाथी पुरुषज चैतन्यस्वरूप ठे. " नतु ज्ञानस्य " परंतु ज्ञान नथी, कारण के ज्ञाननो धर्म बुद्धि ठे तथा पतंजलि पण एमज कहे ठे तथा " पुमान् " आ जे एक वचन ठे ते जातिनी अपेक्षाथी ठे, परंतु आत्मा अनंत ठे, कारण के जन्म मरणादि कारणोना नियम, तथा धर्मादि अनेक प्रवृत्ति देखवामां आवे ठे ते सर्व अनंत आत्मा सर्वगत तेमज नित्य ठे. ॥ उक्तं च ॥ अमूर्त्तिश्चेतनो नोगी, नित्य. सर्वगतोऽक्रियः ॥ अकर्त्ता निर्गुण सूक्ष्म, आत्मा कापिलदर्शनइति॥

सांख्यमत त्रण प्रमाण माने ठे. १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द. ते मतनु नाम सांख्य अथवा शांख्य शा वास्ते कहे ठे ? तेनो हेतु एवो ठे के, संख्या प्रकृति तत्व पचीश रूप तेने जे जाणे अथवा नणे ते सांख्य. तथा जो तालु शकारथी बोलियें तो शांख्य एम केहेवाय तेउना मतमां शंखध्वनि ठे एम वृद्धोनो आम्नाय ठे तेथी शांख्य नाम ठे. वली शख नामे कोई आद्य पुरुष थया ठे "तस्यापत्य पौत्रादिरिति गर्गा

दित्वादय स्त्री प्रत्यये शांख्या पामि इदं दर्शनं शांख्य शांख वा " ॥ इति सांख्यमतसंक्षेपवर्णनं

हवे मीमासकमत लखियें छियें तेनु वीजु नाम जैमिनीय पण कहे-छे आ मतवाला सांख्यमतनी पेठे एकदंडी, त्रिदंडी होय छे, धातुरक्त वस्त्र पहेरे छे मृगचर्मासन पर बेसे छे, कमंडल राखेछे, शिरमुंडित करावेछे, सन्यासी प्रमुखद्विज आ मतमां होय छे, वेद तेमना गुरु छे, परंतु बीजा कोई वक्ता गुरु नथी ते पोते पोताने सन्यस्त सन्यस्त कहे छे, यज्ञोपवीतने धोईने त्रणवार तेनुं जल पीयेछे आ मीमांसक वे प्रकारना छे, एक याज्ञिकादि, ते पूर्वमीमासक छे, अने बीजा उत्तरमीमासावादी छे याज्ञिकादि, कुकर्मना तजनार, यजनादि षट्कर्मना करनार, ब्रह्म सूत्रना धारक, गृहस्थाश्रममा स्थित, शूद्रनु अन्नादि तजनार छे, तेना पण वे भेद छे, एक भट्ट, बीजा प्रभाकर, भट्ट छ प्रमाण माने छे, अने प्रभाकर पाच प्रमाण माने छे उत्तरमीमांसक वेदान्ति छे, ब्रह्म अद्वैतज माने छे " सर्वमेवेदं ब्रह्मेति भापंते " तेपर प्रमाण आपे छे के एकज आत्मा सर्वशरीरोमां उपलब्ध थाय छे ॥ श्लोक ॥ एक एवहि भूतात्मा, भूते भूते व्यवस्थित ॥ एकधा बधुधा चैव, दृश्यते जलचन्द्रवत् ॥ १ ॥ इति वचनात् ॥ " पुरुष एवेदं सर्वयद्भूत यच्चभाव्यमिति वचनात् ॥ आत्मामाज लयथवु तेनु नाम मुक्ति छे बीजी कांइ मुक्ति नथी ते मीमासक द्विजज जेनुनाम भगवत् छे, ते चार प्रकारना छे, १ कुटीचर, २ बहूदक, ३ हंस, ४ परमहंस तेमां १ त्रिदंडी, सशिखा, ब्रह्मसूत्री, गृहत्यागी, यजमान, परिगृही, एकवार पुत्रना घरमा भोजन करे छे, कुटीमा वसेछे तेने कुटीचर कहेछे, २ तुल्यवेष, पूर्वोक्त विप्रना घरमां नीरस भिक्षा भोजी विष्णुजापपर नदीना तीरपर रहे छे, तेने बहूदक कहे छे, ३ ब्रह्मसूत्र, शिखारहित, कषाय वस्त्र, दडधारी, गाममां एकरात्रि अने नगरमां त्रण रात्रि रहे छे, अग्नि ज्यारे धूमरहित थाय त्यारे ब्राह्मणना घरमा भोजन करे छे अने तपथी शरीर शोषण करी, देशोमां फरता रहे छे, तेने हस कहे छे हंसनेज ज्यारे ज्ञान थाय छे, त्यारे चारे वर्णना घरमा भोजन करे छे, पोतानी इच्छाथी दड राखे छे, ईशान दिशा सन्मुख जाय छे जो शक्तिहीन थई जाय तो अनशन ग्रहण करे छे, ४ वेदात एकध्यायी, ते

परमहंस:केहेवाय छे; आ चारेमां पूर्वथी परस्पर अधिक चारे केवल ब्रह्माद्वैतवाद साधवामां व्यसनी छे, इत्यादि आ मतनु स्वरूप छे

हवे पूर्वमीमांसावादिउनो मत विशेषथी लखिये छिये. जैमिनीय वाला कहे छे के, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी वीतराग, सृष्टिआदिना कर्त्ता, आ पूर्वोक्त विशेषणयुक्त कोइपण देव नथी, के जे देवनु वचन प्रामाणिक होय, प्रथम तो देवज कोइ वक्ता नथी, के जेनु कहेलुं वचन प्रमाण थाय. अनुमानथी पुरुष सर्वज्ञ नथी, मनुष्य होवाथी, रथ्यापुरुषवत्.

पूर्वपक्ष.– किंकर थई जेनी सुर, असुर सेवा करेछे, तेमज त्रण लोकमां ऐश्वर्यना सूचक, छत्र, चामरादि जेनी विभूति छे, ते सर्वज्ञ केम न होई शके?

उत्तरपक्ष.–आ विभूति तो इंद्रजालीआ पण रची शके छे, ते वातना साक्षी जैनमतना सामंतभद्र आचार्य पण छे ॥ श्लोक ॥ देवागमनभोयान, चामरादिविभूतय. ॥ मायाविष्वपि दृश्यंते, ह्यतस्त्वमसि नो महान्

पूर्वपक्ष.– जेम अनादि सुवर्णनो मेल, क्षार प्रमुख अग्नि पुटादि क्रियाविशेषथी शोधातां, सुवर्ण सर्वथा निर्मल थई जाय छे, तेम आत्मा पण निरंतर ज्ञानादि अभ्यासथी निर्मल थवाथी तेने सर्वज्ञपणांनो संभव केम न होय ? अवश्य होयज

उत्तरपक्ष.–आ तमारुं केहेवु ठीक नथी; कारण के अभ्यास करवाथी शुद्धिनी तरतमताज थाय छे, परंतु परम प्रकर्ष अवस्था थती नथी, कारण के जे पुरुष चालवानो अभ्यास करे, अर्थात् कूदवानो, छलंग मारवानो, ठेकडो मारवानो अभ्यास करे,ते दशहाथ वीशहाथ कुदी शकशे, परंतु सो योजन कूदवानी शक्ति ते कदापि मेलवी शकशे नहि, अने सर्व लोक कूदी जवानो अभ्यास तो कदापि तेनाथी थइ शकशे नहि. तेवीज रीते आत्मापण अभ्यासद्वारा सर्वज्ञ थइ शकतो नथी

पूर्वपक्ष – मनुष्यने सर्वज्ञता भले न होय, परतु ब्रह्मा विष्णु, महेश्वरादिने तो सर्वज्ञता होय छे, कारण के तेमने तो जगत् ईश्वर माने छे. ते वात कुमारिल पण कहे छे "दिव्य देह होवाथी" ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तेउने सर्वज्ञता होय , मनुष्यने सर्वज्ञता केवीरीते होय ?

उत्तरपक्ष.–जे रागद्वेषमां मग्न छे निग्रह अनुग्रहमां ग्रस्तछे, काम सेवनमां तत्पर छे, एवा लक्षणवाला ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, सर्वज्ञ केवी

रीतें होइ शके छे ? कारण के प्रत्यक्ष प्रमाण तो सर्वज्ञसाधक नथी, कारण के तेतो (इंद्रियो) वर्तमान वस्तुनेज ग्रहण करेछे, अने अनुमानथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकज प्रवृत्त थइ शके छे, तेमज आगम पण सर्वज्ञनी सिद्धि करनारुं कोइ नथी, कारण के आगम सर्वे विवादास्पद छे, वली उपमान पण नथी, कारण के वीजा सर्वज्ञ कोइ होय तो उपमान बने, तेवीज रीते अर्थापत्तिथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अन्यथा अनुपपद्यमान एवो कोइ पदार्थ नथी, जे होवाथी सर्वज्ञ सिद्ध थाय ज्यारे भावग्राहक पांचे प्रमाणथी सर्वज्ञ सिद्ध न थया, त्यारे सर्वज्ञ अभाव प्रमाणना विषय थया सर्वज्ञ प्रत्यक्षादि गोचरने अतिक्रांत होवाथी, शशशृंगवत् ज्यारे कोइ देव सर्वज्ञ नथी, अने तेवा सर्वज्ञ देवनु कथन करेलु ज्यारे कोइ शास्त्र नथी, त्यारे अतींद्रिय अर्थनु ज्ञान केम थाय ? एवी मनमां आशका करीने जैमिनि कहे छे के " तस्मात् " ते कारणथी अतींद्रिय इंद्रियोना विषयरहित जे, आत्मा, धर्म अधर्म, काल, स्वर्ग, नरक, परमाणु प्रमुख पदार्थो छे, तेउना करतल आमलकवत् साक्षात् देखनार कोइ नथी ते हेतुथी नित्य जे वेदवाक्य छे, तेनाथीज यथार्थ तत्त्वनो निश्चय थाय छे कारण के वेद, अपौरुपेय छे, अर्थात् कोइये रचेला नथी, अनादि नित्य छे, ते वेदवचनोथी अतींद्रिय पदार्थोनु ज्ञान थाय छे, परंतु कोइ सर्वज्ञना कहेला आगमथी थतु नथी, कारण के सर्वज्ञ कोइपण पूर्व कालमां थया नथी, वर्त्तमानमां छे नहि, अने भविष्यमा थवाना नथी ॥ यथाहुस्ते ॥ अतींद्रियाणामर्थाना, साक्षात् द्रष्टा न विद्यते ॥ वचनेनहि नित्येन, य· पश्यति सपश्यति ॥ १ ॥

प्रश्न·—अपौरुपेय वेदना अर्थ केवीरीते जाणी शकाय ?

उत्तर·— अमारी परपरा जे अव्यवछिन्न छे तेनाथी जाणी शकाय छे, ते कारणथी तथा सर्वज्ञादिनो अभाव होवाथी प्रथम वेदनाज पाठ प्रयत्नथी करवा जोइयें वेद चार छे, १ ऋग्, २ यजुप, ३ साम, ४ अथर्व ए चारनो पाठ करी, पछी धर्मजिज्ञासा करवी जोइये ? धर्म अतींद्रि-

१ विवादनास्थानरूप २ बीजे प्रकारे ३ उपपन्न नहि (सिद्धन) थयेलो ४ हथेलीमा ५ आमलानी पेठे

य छे. वली धर्म छे ते केवो छे ? तथा क्या प्रमाणथी जाणिये ? एवी जे जाणवानी इच्छा, तेनु नाम जिज्ञासा छे. ते जिज्ञासा केवी छे ते जिज्ञासा धर्म साधवानो उपाय छे, तेनुं नाम नोदना छे, ते नोदनानां निमित्त बेछे, एक जनक, बीजो ग्राहक छे अहियां ग्राहक निमित्त जाणवु. तेनुज विशेष स्वरूप कहियेंछिये

श्रेयः साधकद्रव्यादिविषे जीवोने प्रेरियें जेनाथी, ते नोदना, वेद वचननी करेली प्रेरणा छे ॥ इत्यर्थः ॥ धर्म नोदनाथी जणाय छे. ते कारणथी नोदनालक्षण धर्म छे, धर्म अतींद्रिय होवाथी नोदनाथीज जाणिये छिये प्रत्यक्षादि बीजा कोइ प्रमाणथी जाणी शकातो नथी, कारण के प्रत्यक्षादि विद्यमाननाज उपलंभक छे अने धर्म कर्त्तव्यतारूप छे अने कर्त्तव्यता त्रणेकाल स्वभाव वाली छे ते कर्त्तव्यतानु ज्ञान नोदनाज उत्पन्न करी शके छे. आ मीमासकोनो अभ्युपगम छे

हवे नोदनानु व्याख्यान करिये छिये. अग्निहोत्र, सर्व जीवोनी अहिंसा, दानादि क्रिया ते करवावास्ते जे प्रवर्त्तक, प्रेरक वेदोनां वचन छे तेज नोदना छे जेम के " अग्निहोत्र जुहूयात् स्वर्गकामः" एवां जे प्रवर्त्तक वेदवचन छे, ते नोदना जाणवी यथा ॥ " न हिंस्यात् सर्वभूतानि, तथा नवै हिंस्रो भवेत् " आ वचनोथी प्रेर्यां थकां द्रव्य, गुण, कर्मोथी हवनादिविषे जे प्रवृत्त थवुं, ते धर्म छे, अने आ वेदवचनो प्रेर्यां थकां पण जे न प्रवर्त्ते, अथवा विपरीत प्रवर्त्ते, तेने नरकादि अनिष्टफल थायछे शाबरभाष्यमां पण एमज कहेल छे

आ जैमिनीय छ प्रमाण माने छे १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द, ४ उपमान, ५ अर्थापत्ति, ६ अभाव. तेउनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवु होय तो षड्दर्शन समुच्चयनी टीका जोवी इति सक्षेपथी मीमांसकमत.

आ पांच दर्शन आस्तिक केहेवाय छे, अने छठु जैनदर्शन छे. तेनुंस्वरूप आगलना परिच्छेदमां लखवामां आवशे नास्तिकमत दर्शनमां नथी "नास्तिकं तु न दर्शनमिति राजशेखरसूरिकृतषड्दर्शनसमुच्चयवचनात्" ॥ तो पण भव्य जीवोने जाणवा वास्ते तेनु कांइक स्वरूप लखिये छिये

कपाली, भस्म लगावनार, योगी, ब्राह्मणादि, अंत्य जातिना लोक जेउने लोको वाममार्गी कहेछे, तेउ, तथा कौलिक इत्यादि नास्तिक

रीतें होइ शके छे ? कारण के प्रत्यक्ष प्रमाण तो सर्वज्ञसाधक नथी, कारण के तेतो (इंद्रियो) वर्तमान वस्तुनेज ग्रहण करेछे, अने अनुमानथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकज प्रवृत्त थइ शके छे, तेमज आगम पण सर्वज्ञनी सिद्धि करनारुं कोइ नथी, कारण के आगम सर्वे विवादास्पद छे, वली उपमान पण नथी, कारण के बीजा सर्वज्ञ कोइ होय तो उपमान बने, तेवीज रीते अर्थापत्तिथी पण सर्वज्ञ सिद्ध थता नथी, कारण के अन्यथा अनुपपद्यमान एवो कोइ पदार्थ नथी, जे होवाथी सर्वज्ञ सिद्ध थाय ज्यारे भावग्राहक पाचे प्रमाणथी सर्वज्ञ सिद्ध न थया, त्यारे सर्वज्ञ अभाव प्रमाणना विषय थया सर्वज्ञ प्रत्यक्षादि गोचरने अतिक्रांत होवाथी, शशशृंगवत् ज्यारे कोइ देव सर्वज्ञ नथी, अने तेवा सर्वज्ञ देवनु कथन करेलु ज्यारे कोइ शास्त्र नथी, त्यारे अतींद्रिय अर्थनु ज्ञान केम थाय ? एवी मनमां आशका करीने जैमिनि कहे छे के " तस्मात् " ते कारणथी अतींद्रिय इंद्रियोना विषयरहित जे, आत्मा, धर्म अधर्म, काल, स्वर्ग, नरक, परमाणु प्रमुख पदार्थो छे, तेउना करतल आमलकवत् साक्षात् देखनार कोइ नथी ते हेतुथी नित्य जे वेदवाक्य छे, तेनाथीज यथार्थ तत्त्वनो निश्चय थाय छे कारण के वेद, अपौरुपेय छे, अर्थात् कोइये रचेला नथी, अनादि नित्य छे, ते वेदवचनोथी अतींद्रिय पदार्थोनु ज्ञान थाय छे, परंतु कोइ सर्वज्ञना कहेला आगमथी थतु नथी, कारण के सर्वज्ञ कोइपण पूर्व कालमां थया नथी, वर्त्तमानमां छे नहि, अने भविष्यमां थवाना नथी ॥ यथाहुस्ते ॥ अतींद्रियाणामर्थाना, साक्षात् द्रष्टा न विद्यते ॥ वचनेनहि नित्येन, य पश्यति सपश्यति ॥ १ ॥

प्रश्न —अपौरुपेय वेदना अर्थ केवीरीते जाणी शकाय ?

उत्तर – अमारी परपरा जे अव्यवछिन्न छे तेनाथी जाणी शकाय छे, ते कारणथी तथा सर्वज्ञादिनो अभाव होवाथी प्रथम वेदनाज पाठ प्रयत्नथी करवा जोइयें वेद चार छे, १ ऋग्, २ यजुप, ३ साम, ४ अथर्व ए चारनो पाठ करी, पछी धर्मजिज्ञासा करवी जोइये ? धर्म अतींद्रि-

---

१ विवादना स्थानरूप २ बीजे प्रकारे ३ उपपन्न नहि (सिद्धन) थयेलो ४ हथेलीमा ५ आमलानी पेठे

य छे. वली धर्म छे ते केवो छे ? तथा क्या प्रमाणथी जाणियें ? एवी जे जाणवानी इच्छा, तेनु नाम जिजासा छे ते जिज्ञासा केवी छे ते जिज्ञासा धर्म साधवानो उपाय छे, तेनुं नाम नोदना छे, ते नोदनानां निमित्त वेछे, एक जनक, वीजो ग्राहक छे. अहियां ग्राहक निमित्त जाणवु तेनुंज विशेष स्वरूप कहियेछियें

श्रेय. साधकद्रव्यादिविषे जीवोने प्रेरिये जेनाथी, ते नोदना, वेद वचननी करेली प्रेरणा छे ॥ इत्यर्थः ॥ धर्म नोदनाथी जणाय छे ते कारणथी नोदनालक्षण धर्म छे, धर्म अतीन्द्रिय होवाथी नोदनाथीज जाणिये छिये. प्रत्यक्षादि वीजा कोइ प्रमाणथी जाणी शकातो नथी, कारण के प्रत्यक्षादि विद्यमाननाज उपलंभक छे अने धर्म कर्त्तव्यतारूप छे अने कर्त्तव्यता त्रणेकाल स्वभाव वाली छे ते कर्त्तव्यतानु ज्ञान नोदनाज उत्पन्न करी शके छे. आ मीमांसकोनो अभ्युपगम छे

हवे नोदनानुं व्याख्यान करिये छियें अग्निहोत्र, सर्व जीवोनी अहिंसा, दानादि क्रिया ते करवावास्ते जे प्रवर्त्तक, प्रेरक वेदोनां वचन छे तेज नोदना छे. जेम के " अग्निहोत्र जुहूयात् स्वर्गकाम." एवां जे प्रवर्त्तक वेदवचन छे, ते नोदना जाणवी यथा ॥ " न हिंस्यात् सर्वभूतानि, तथा नवै हिंस्रो भवेत् " आ वचनोथी प्रेर्यां थकां द्रव्य, गुण, कर्मोथी हवनादिविषे जे प्रवृत्त थवुं, ते धर्म छे, अने आ वेदवचनो प्रेर्यां थकां पण जे न प्रवर्त्ते, अथवा विपरीत प्रवर्त्ते, तेने नरकादि अनिष्टफल थायछे शावरभाष्यमां पण एमज कहेल छे

आ जैमिनीय छ प्रमाण माने छे १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ शब्द, ४ उपमान, ५ अर्थापत्ति, ६ अभाव तेउनुं विस्तारथी स्वरूप जाणवु होय तो षड्दर्शन समुच्चयनी टीका जोवी इति संक्षेपथी मीमांसकमत.

आ पांच दर्शन आस्तिक केहेवाय छे, अने छठु जैनदर्शन छे. तेनुस्वरूप आगलना परिच्छेदमां लखवामां आवशे नास्तिकमत दर्शनमां नथी "नास्तिकं तु न दर्शनमिति राजशेखरसूरिकृतषड्दर्शनसमुच्चयवचनात्" ॥ तो पण भव्य जीवोने जाणवा वास्ते तेनु कांइक स्वरूप लखिये छिये

कपाली, भस्म लगावनार, योगी, ब्राह्मणादि, अत्य जातिना लोक जेउने लोको वाममार्गी कहेछे, तेउ, तथा कौलिक इत्यादि नास्तिक

ठे, तेना मतनु नाम नास्तिक चार्वाक ठे. तेर्ज जीव, पुण्य पापादि कांई मानता नथी, चार जौतिक देह माने ठे, तेमज सर्वजगत्ने पण चार जौतिक मानेठे

वली केटला एक चार्वाक एक देशी, आकाशने पांचमुं जूत माने ठे पचजूतात्मक जगत् ठे एम कहे ठे जूतोथीज मद्य शक्तिमत् चैतन्य उत्पन्न थाय ठे एम तेर्जनो मत ठे पाणीना परपोटानी जेम, शरीर ठे तेज जीव ठे एम तेर्जनु मानवु ठें आ मतवाला मद्य, मांस, खायठे, माता, वेहेन, दिकरी आदि जे अगम्यठे, तेर्जनी साथे गमन करे ठे ते नास्तिक वामी, दरेक वरसे एक दिवस सर्वे, एकस्थलें एकठा थायठे स्त्रीर्जने नग्न करी तेर्जनी योनिनी पूजा करेठे,तेमज विषय सेवनपण करेठे इत्यादि, एवां बुरां काम करेठे के आ पुस्तकमां तेनु वर्णन करतां मने शरम लागे ठे तेथी लखेल नथी ते नास्तिक कामसेवन उपरांत बीजो धर्म मानता नथी, मतलब के कामनेज धर्म मानेठे

आ मतनी उत्पत्ति जैनमतना शीलतरंगिणी नामना शास्त्रमां जे प्रमाणे लखेलीठे ते प्रमाणे कहियें ठिये बृहस्पति नामनो एक ब्राह्मण हतो तेनुं बीजु नाम देवव्यास हतु तेने एक वेहेन हती ते बाल्यावस्थामां विधवा थइ हती जेना आश्रयथी पोतानी जींदगी सपूर्ण करे एवु कोइ तेणीना सासराना घरमां साधन न होतु, तेथी निराधार थइने पोताना जाइना घरमा आवी रही ते अत्यत स्वरूपवती तेमज यौवनवती हती, आ समये बृहस्पतिनी पत्नी मृत्यु पामी हती,बृहस्पतिने काम वासनाथी पीडा थावा लागी, तेथी विषयासक्त थवाने लीधे पोतानी वेहेननी साथे विषयसेवन करवानी इच्छा थइ विधवा वेहेनने प्रार्थना करी के हे वेहेन ? मारी साथे तु विषयसेवन कर्य, त्यारे तेनी वेहेनें कह्यु के हे जाइ? आ वात उजयलोकविरुद्ध ठे, तेथी केम करी शकु ? कारण के प्रथम तो हु तारी वेहेन हु तेथी जाइनी साथे विषयजोग करुं तो अवश्य हु नरकमां जाउ,अने आ वातजो जगत्मा प्रसिद्ध थाय तो, सर्वलोकने धिक्कार पात्र थाउ एवी वात श्रवण करी बृहस्पतिए पोताना मनमा विचार कर्यो के,ज्या सुधी तेणीना मनमांथी पाप, तेमज नरकादि डुखनो जय दूर थशे नहि, त्यासुधी ते मारी साथे कदापि संजोग

करशे नहि. एवो विचार करी पोते बृहस्पतिसूत्रनी रचना करी ते सूत्रोथी, पुण्य पाप, स्वर्ग नरकनो अभाव सिद्ध करी, पोतानी बेहेनने ते शास्त्र श्रवण करावी प्रतिबोध कर्यो. ते बोधथी तेनी बेहेनें विचार कर्यो के आ शरीर ज्यारे पांचभौतिक छे, अने आ शरीरथी अतिरिक्त एवो आत्मा नामे बीजो कोइ पदार्थ नथी, त्यारे पुण्य पाप, नरक स्वर्ग कांइपण सिद्ध थतुं नथी तेथी हवे आ मूर्ख लोकोनी शरम राखी मारी यौवन अवस्था शामाटे वृथा गुमावु एम निश्चय करी पोताना भाइनी साथे विषय भोग करवामां अत्यत लुब्ध थइ गइ ज्यारे लोकोना जाणवामां आ हकीकतआवी, त्यारे लोको तेउंनी बहुज निंदा करवा लाग्या ते सांभली बृहस्पतियें निर्लज्ज थइ लोकोने नास्तिक मतनो उपदेश करवो शरु कर्यो ते उपदेशथी जे अत्यंतविषयी तथा अज्ञानी हता, तेउ तेना शिष्य थया केटलोएक काल व्यतीत थयापछी तेना शिष्यो पोताना मतनुं बहुमान करवा वास्ते केहेवा लग्या के, आ अमारो मत देवताउंना गुरु जे बृहस्पति नामना आकाशमां ग्रहछे तेमनो प्रवर्त्तावेलो छे बृहस्पति करतां बीजो कोइ विशेष बुद्धिमान् नथी, तेथी अमारो मत सत्य छे. आ बृहस्पतिनी उत्पत्ति अमारा चोवीशमा तीर्थंकर श्रीमहावीर स्वामिनी पेहेलां थयेली सिद्ध छे, कारण के श्रीमहावीर स्वामियें कथन करेला शास्त्रोमां चार्वाक मतनु निरूपण करेलुं छे चार्वाक मतनी उत्पत्ति ए प्रमाणे छे. तेमनां नाम चार्वाक, लोकायितादि छे "चर्व अदने चर्वति, भक्षयंति तत्वतोनमन्यंते पुण्यपापादिकं परोक्षवस्तुजातमिति चार्वाकाः" मयाकश्यामाकेत्यादि सिद्ध, छे उणादिदंडकेन शब्दनिपातनं. लोका निर्विचाराः सामान्यालोकास्तद्वदाचरंति स्मेति लोकायिता लोकायितकाइत्यपि ॥ बृहस्पतिप्रणीतमतत्त्वेन बार्हस्पत्याश्चेति" चर्व धातु भक्षण अर्थमां छे चर्वण (भक्षण) करे अर्थात् जे पुण्य पापादि परोक्ष वस्तु समूहने न माने ते चार्वाक, मयाक श्यामाक इत्यादि सिद्धछे श्रीहेमव्याकरणना उणादि दंडक प्रयोगथी निपातथी सिद्धछे तथा लोक निर्विचारी छे, सामान्य लोकोनी पेठे जे आचरण कर्या करेछे ते लोकायिता लोकायितका एम पण केहेवाय छे. तेमज बृहस्पतिनी प्ररूपणाथी ते मतनुं नाम बार्हस्पत्य पण कहेछे.

हवे चार्वाकना मतनु स्वरूप लखियें छियें नास्तिक एम कहेछे के परलोकमां गमन करनार जीव, चेतनालक्षण कांइ छे नहि पांच भूतथी जे चेतन उत्पन्न थायछे, ते पण भूतोनो नाश थतां अहींयांज नाश पामी जाय छे जो जीव परलोकथी आव्यो होय तो परलोकनु ते स्मरण होवुं जोइये, परंतु ने तो थतु नथी, ते कारणथी जीव परलोकथी आव्यो नथी तेमज परलोकमा जानारपण नथी तथा जीवस्थानमां जो देव शब्द स्थापन करियें तो सर्वज्ञादिविशेषणविशिष्ट कोइ देव नथी, तथा मोक्षपण नथी, धर्म अधर्म नथी, पुण्य पाप नथी, पुण्य पापनु जे फल स्वर्ग नरक, तेपण नथी "तथाच तन्मतं ॥ एतावानेव लोकोय, यावानिंद्रिय गोचर ॥ भद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदंत्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ अर्थ –जेटलो प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे,तेटलोज मनुष्यलोकछे. कारण के जे पदार्थ इन्द्रियोथी ग्रहण थायछे तेज पदार्थछे, ते उपरांत बीजा कोइ पदार्थ नथी ज्यारे लोक शब्दनो उच्चार करियें त्यारे लोकमां जे विद्यमान पदार्थछे तेज ग्रहण करवा, अने जे आ लोकथी पर एवा जीव, पुण्य, पाप, अने तेनां फल स्वर्ग, नरकादि छे एम मानेछे ते अप्रत्यक्ष होवाथी, असत्यछे जो अप्रत्यक्षपण मानियें तो शशशृंग, वंध्यापुत्र आदिपण मानवा जोइयें पाच प्रकारे प्रत्यक्षथी अनुक्रमें १ मृदु कठोरादि वस्तु, २ तिक्त कटु कषायादि द्रव्य, ३ सुरभि दुरभिरूप गध, ४ भू, भूधर, भुवन, भूरूह, स्तंभ, कुंभ, अंभोरुहादि, नर, पशु, श्वापदादि, स्थावर, जगम पदार्थोना समूह, ५ विविध, वेणु वीणादिनी ध्वनि, आ पाच विना बीजी कोइपण वस्तुनी प्रतीति यती नथी पांच भूतोथी व्यतिरिक्त नरक, स्वर्गमां गमन करनार एवो जीवज ज्यारे प्रत्यक्ष प्रमाणथी सिद्ध न थयो, त्यारे जीवना सुख दुःखनां कारण धर्म, अधर्म, अने ते धर्म, अधर्मनि, उत्कृष्ट फल भोगववानी भूमि, स्वर्ग नरक, तथा सर्वथा पुण्य पापनो क्षयथवाथी उत्पन्न थनारूं जे मोक्षसुख तेनु जे वर्णन, ते सघलुं वर्णन आकाशमा चित्रामण करवा जेवुछे, कारण के जीवनो नथी कोइये स्पर्श कर्यो, नथी कोइये तेनो स्वाइने स्वाद चाख्यो, नथी कोइयें तेने सूघ्यो, नथी कोइयें तेने दीठो, के नथी कोइयें तेने शब्दवत् सांभल्यो, तेम छता मूढमति शा वास्ते, जीवने मानीने, स्वर्गादि सुखोनी इछाकरी, मस्तक, दाढी, मूछ मुंडावी

अनेक प्रकारनां डुष्कर तप तपी, शीत, आतप, सहन करी फोगट आ शरीरने संकटोमां नाखी मनुष्यजन्म खराब करी रह्याछे ? आ तेमनी समजणनुंज डुःखछे ॥ तडुक्त ॥ तपांसि यातनाश्चित्राः, संयमोजोग वंचना ॥ अग्निहोत्रादिकं कर्म, बालक्रीडेव लक्ष्यते ॥ १ ॥ यावज्जीवं सुखं जीवेत्, तावद्वैषयिकं सुखं ॥ जस्मीजूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कुतः ॥ २ ॥ अर्थ – सुगम छे, सारांश उपर बताव्यो छे. इत्यादि कारणथी सिद्ध थाय छे के जे इंडियगोचर (इंद्रयगम्य प्रत्यक्षछे) तेज तात्विक छे सारांश बीजां सुख कल्पित छे.

हवे जे परोक्ष, अनुमान, आगम प्रमाण आदिथी जीव, अने पुण्य पाप आदिनुं स्थापन करे छे, तेमज स्थापन करवामां कोई पण रीते ठगता नथी, तेउने प्रतिबोध करवा वास्ते दृष्टांत कहे छे " जद्रे वृकपदं पश्येत्यत्राय संप्रदायः " कोई पुरुष नास्तिक मतथी, अथवा सत्य अतःकरणथी पोतानी जार्याने आस्तिक मतविषे दृढ प्रतिज्ञावाली जाणीने पोतानी शास्त्रोक्त युक्तियोथी निरंतर प्रतिबोध करे छे, ज्यारे तेणीने प्रतिबोध लाग्यो नहि, त्यारे तेना पतिये विचार कर्यो के हवे उपायथी तेणीने प्रतिबोध लागे तेम छे, एम पोताना चित्तमां चितवन करीने रात्रिना पाछलना पहोरमां ते स्त्रीनी साथे नगरथी बहार निकली, पत्नीने केहेवा लाग्यो, हे वल्लजे ! नगरमां वसनारा जे लोको परोक्ष पदार्थोने अनुमान आदि प्रमाणोथी सिद्ध करे छे, अने लोकोमां पोताने बहुश्रुत कहेवरावे छे, तेउनी चतुराई हवे अवलोकन कर एम कही, नगरना दरवाजाथी चोकसुधी झीणी धूलमां पोताना हाथथी वरुना पजाना आकार पाडीदीधा प्रातःकालमां ते वरुना पजा देखीने बहुलोको राजमार्गमां एकठा थईगया. तेटलामां बहुश्रुत पण त्यां आवीगया ते बहुश्रुत लोकोने केहेवा लाग्या के हे जाईयो ! वरुना पगोनी अन्यथा अनुपत्तिथी, निश्चयें कोईक वरु रात्रिमां वनथी अहींया आव्युं हतुं आ सांजली नास्तिकमति पोतानी पत्नीने ए प्रमाणे केहेनारने बतावी, केहेवा लाग्यो के हे जद्रे ! " वृकपदं " (वरुनापजा) तु जो जे पजाने वरुना पंजा अबहुश्रुत कहे छे लोकरुढिथी आ टोक बहुश्रुत कहेवरावे छे, परंतु परमार्थथी तेउ महाठोठ छे. कारण के तेउ परमार्थ तो कांई जाण-

ता नथी. केवल देखा देखी रोलो करवा लागी रह्या छे, परमार्थथी तो तेउनुं वचन मानवा योग्य नथी तेवीज रीते घणा मतवाला धार्मिक, ठग्न (धूतारा) वीजाउने ठगवामां तत्पर एवा तेउ कांइक अनुमान, आगमादिथी दृढपणें जीवादि पदार्थनी अस्ति सिद्ध करीने जोला लोकने वृथाज स्वर्गादि सुखोनो लोज देखाडी जदयअजदय, गम्य अगम्य, हेय उपादेय, आदि संकटोमां नाखे छे बहु मूर्ख लोकोने धार्मिकपणानो व्यामोह उत्पन्न करेछे, तेथी बुद्धिमानोये तेमनां वचन न मानवां जोइये ते सांजली ते स्त्री पोताना पतिनां सर्व वचन मानवा लागी, तेथी तेणे पोतानी पत्नीने जे उपदेश कस्यो ते हवे लखियें छियें

॥ श्लोक ॥ पिब खाद च चारुलोचने, यदतीतं वरगात्रि तन्न ते ॥ नहि जीरु गत निवर्त्तते, समुदायमात्रमिद कलेवर ॥ १ ॥ व्याख्या ॥ हे सुदरलोचन वालि ! तु पेय अपेयनी व्यवस्था तजी दई मदिरापान कस्य, न केवल मदिराज पी, परतु जदय अजदयनी दरकार कस्या विना मांसादि पण खा, तेमज गम्य अगम्यनो विचार दूर करी जोगोने जोगवी पोतानी युवावस्था सफल कस्य यौवनादि जे कांइ व्यतीत थई गयेल छे ते, हे वरगात्रि ! हे प्रधानांगि (उत्तमांगि !) फरी तने मलवानां नथी अत्यत काम राग जणाववा वास्ते बहु सबोधन पद कहेलां छे, तेथी पुनरुक्ति दोप नथी कोईनी आशका मनमां लाविने बृहस्पति मतवाला कहेछे के पोतानी इछाथी जे खान, पान, जोग, विलास करशे, तेउने परलोकमा कष्टपरंपरा पामवा सुलज थशे, अने जे सुकृत करशे तेउने सुख यौवनादि जवातरमां पामवा सुलज थशे, आ प्रमाणेनी परनी आशंका दूर करवा वास्ते बृहस्पति कहे छे के हे जीरु ! वीजाना केहेवा मात्रथी नरकादि दु खोनी प्राप्ति नथी आ लोकना यौवनादिथी निवृत्त थवु, अर्थात् आ लोकमां विपयजोगथी यौवननु सुख न जोगववु, अने परलोकमां अमने यौवनादि सुख फरी मलशे, एम परलोकना सुखनी इछाथी, तप, चारित्रादि कष्ट क्रिया करीने जे आ लोकना सुखनी उपेक्षा करे छे तेउ महामूढ छे

वलि शुजाशुज कर्मना योगथी आ जीवने अवश्य परलोकमां पण स्वकर्म हेतुक सुखदु खादि वेदना थशे, एवि आशका करनारनी शंका

मनमां लाविने बृहस्पति कहे छे के समुदायभूत चारेनो संयोगमात्र ज आ कलेवर (शरीर) छे, परंतु चारे भूतोना संयोगमात्रथी जुदो, बीजो भवांतरमां जावावालो, शुभाशुभ कर्मविपाकने भोगववा वालो एवो जीव नामनो कोइ पदार्थ नथी, अने चारे भूतनो जे संयोग छे ते विजलिना प्रकाशनी पेठे क्षणमात्रमां नाश पामी जाय छे. ते कारणथी परलोकनो भय तजी दे. हे हरिणाक्षि ! जेम मन माने तेम खा, पी भोग विलास कस्य

हवे प्रमेय प्रमाण बंने कहे छे ॥ श्लोक ॥ पृथ्वी जलं तथा तेजो, वायुर्भूतचतुष्टयं ॥ आधारोभूमिरेतेषां, मानं त्वक्षजमेव हि ॥ १ ॥ अर्थः १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, आ चार भूत छे आ चारेनी आधार पृथ्वी छे अने कोई जगाये एवो पण पाठ छे के " चैतन्यभूमि रेतेषां " आ चारेने चैतन्यभूमि कहे छे, आ चारेना एकत्र रसथी चैतन्य उत्पन्न थाय छे. वली आ चार्वाकमतमां, आ चारे भूत, प्रमाणनी भूमिका, प्रमाणनो विषय तात्विक छे तेमज आ चार्वाकमतमां प्रमाण तो एक प्रत्यक्षज छे

हवे भूतचतुष्टयथी देहने चेतनता केम प्राप्त थाय छे ? एवी आशंका मनमां लावी कहे छे. ॥ श्लोक ॥ पृथ्व्यादिभूतसंहत्या, तथा देहपरीणतेः ॥ मदशक्तिः सुरांगेभ्यो, यद्वत्तद्वच्चिदात्मनि ॥ १ ॥ अर्थः–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, तेउना संयोगथी थयेलो देह परिणाम, ते देहमां,जेम मदिरानां अंगोथी उन्मादशक्ति उत्पन्न थाय छे तेम, चैतन्यशक्ति उत्पन्न थाय छे. परंतु देहथी अन्य जीव पदार्थ कोइ छे नहि आदि शब्दथी पर्वतादि सर्वपदार्थ चारे भूतोथीज उत्पन्न थाय छे ते कारणथी दृष्ट सुखनो त्याग न करवो अने अदृष्टसुख वास्ते प्रवृत्त थवुं, आ तो लोकोनी मोटी मूर्खता छे, तेमज शांतरसमां मग्न थइमोक्ष सुखनुं वर्णन करेछे ते पण महामूढ छे कारण के मैथुनसेवनथी बीजो कोइ पण धर्मनथी तेमज कोइ मोक्ष नथी, तेमज सुख नथी इति चार्वाक मत संक्षेपवर्णन.

पूर्वोक्त मतोनुं जे वर्णन करेल छे, तेउना उपदेशक सर्व कुगुरु छे.कारण के तेउना मत युक्ति प्रमाणथी खंडित थइजाय छे तेमज तेउ पूर्वापरव्याहत अने विरोधी छे.

गथी उठावतां घटनो एक जागज उठवो जोइये, परंतु संपूर्णघट नहि उठवो जोइये तथा ज्यारे घटने तेनो कांठोप कडी अमे खेंचीये, त्यारे घटनो एकदेशज अमारीपासे आववो जोइए, परंतु संपूर्ण घट न आववो जोइये, अने जलादिधारणरूप घटने अर्थक्रियालक्षण सत्व, अंगीकार करवा थकी सौगतोए परमाणुउंनु मलवु मानेलछे, अने तेना मतमां परमाणुउंनु मलवु छे नहि, ते कारणथी आ नवमो पूर्वापरविरोध छे इत्यादि बौद्धमतमां अनेक पूर्वापरविरोधछे.

हवे बौद्धमतनु थोडु खडन पण लखियें छियें बौद्धोनो एवो मत छे के सर्व पदार्थ नैरात्म्य छे, अर्थात् आत्मस्वरूपे, पोताना स्वरूपथी सदा स्थिर रेहेवावाला नथी, एवी जे जावना, तेनु नाम नैरात्म्यजावना छे नैरात्म्यजावना रागादि क्लेशोनो नाश करनारी छे जुउ ज्यारे नैरात्म्यजावना थशे त्यारे पोताने पोताविषे, तथा पुत्र, जाई, जार्या, आदिविषे पण आत्मीय अजिनिवेश नहि थाय, अर्थात् "आ मारां छे" एवो मोह नहि थाय कारण के जे पोताने उपकारी छे ते आत्मीय छे, अने जे पोताने प्रतिघातक छे ते द्वेष छे ज्यारे आत्माज नथी, परतु पूर्वापर क्षण तुटेलाउंनु अनुसधान छे, अने पूर्व पूर्व हेतुथी प्रतिबद्ध ज्ञान क्षण, तेज तेवी रीते उत्पन्न थाय छे, त्यारे कोण कोनो उपकारक तथा उपघातक छे ? कारण के क्षणो, क्षणमात्र रेहेवाथी परमार्थथी उपकार, अनुपकार करीशकता नथी ते वास्ते तत्ववेदियोने पोताना पुत्रादिमां आत्मीय अजिनिवेश नथी तेमज वैरीयोविषे द्वेष नथी अने लोकोने अनात्मीय पदार्थोमा जे आत्मीय अजिनिवेश छे, ते अतत्वमूल होवाथी अनादि वासनाना परिपाकें करेल छे एम जाणवु

प्रश्न.—जो परमार्थथी उपकार्युपकारक जाव नथी तो एम केम कहो छो के जगवान् सुगत करुणावडे सर्व जीवोना उपकारवास्ते देशना आपता हवा ? अने क्षणिकपणु पण जो एकांतज छे तो तो तत्ववेत्ता पण एक क्षणपछी नाश पाम्या, अने तत्ववेत्ता पण जाणता हता के हु जूतकालमा हतो नहि अने जविष्यमा होवानो नथी, तो पछी मोक्षवास्ते शा माटे यत्न करे ?

उत्तर —तमे जे कह्युं ते अमारो अजिप्राय नहि जाणवाथी अयुक्त छे.

जगवान् प्राचीन अवस्थाविषे अवस्थित ठे, अने सकल जगत्ने राग-द्वेषादिदु:खोथी संकुल जाणतां थकां, केवीरीतें आ सर्व जगत्नु दु:ख माराथी दूर थाय एवी दया उत्पन्न थवाथी नैरात्म्य क्षणिकत्वादि जाणतां ठतांपण ते उपकार करवा योग्य जीवोने नि क्लेशक्षण उत्पन्न करवावास्ते स्वप्रजाहितकर राजानीपेठे पोतानी संतति बुद्धिविषे, सकल जगत् साक्षात् करवाने समर्थ एवी पोतानी संततिगत विशिष्टक्षणनी उत्पत्तिवास्ते यत्न आरंज करेठे कारण के सफल जगत् साक्षात्कार कस्याविना सर्वने अक्षणविधान उपकार करवो अशक्य थाय तेथी समुत्पन्न केवल ज्ञान पूर्वस्थापन कृपाना विशेष सस्कारवशथी जगवान् कृतार्थज ठे तोपण देशना देवामां प्रवृत्त थायठे तेथी ते देशना सांजलीने निर्मल बुद्धिथी नैरात्म्यतत्त्व विचारतां थकां जीवनेजावनाप्रकर्षे विशेषथी वैराग्य उत्पन्न थायठे, तेथी अनुक्रमे मुक्तिलाज थायठे अने जे आत्माने मानेठे तेने मुक्तिनो संजव नथी, कारण के परमार्थथी आत्मा विद्यमान ते आत्मा स्नेहना वशथी ते आत्माने सुखी थवानी तृष्णा थशे, अने तृष्णाने वश थवाथी सुखनां साधनोविषे ते प्रवृत्त थशे, एम ज्यारे गुणोमां राग करशे, ते रागथी ज्यांसुधी आत्माजिनिवेश रहेशे त्यांसुधी संसार ठे ॥ आह च ॥ श्लोक ॥ ये पश्यंत्यात्मान, तत्रास्याहमिति शाश्वत स्नेह· ॥ स्नेहात् सुखेषु तृष्यति, तृष्णा दोषांस्तिरस्कुरुते ॥ १ ॥ गुणदर्शि परितृष्यन्, ममेति ततुसाधनान्युपादत्ते ॥ तेनात्माजिनिवेशो, यावत्तावत्ससंसार· ॥ २ ॥ इति बौद्धमत पूर्वपक्ष

हवे जैनमतनी तरफथी उत्तरपक्ष – आ सर्व कहेवुं तमारा अंत करणमां वासकरेला महामोहना विलासनु सूचक ठे आत्मानो अजाव थतां बध मोक्षादिनुं एकाधिकरणत्व नहि थाय ते बतावियें ठियें.

हे बौद्धो! तमे आत्मा मानता नथी, परंतु पूर्वापर क्षण तूटेलानुं अनुसधान ज्ञान क्षणोनेज मानोठो ज्यारे एम मानशो त्यारे बध अन्यने थयो, अने मुक्ति अन्यनी थइ, क्षुधा अन्यने लागी, तृप्ति अन्यने थइ, अनुजव अन्यने थयो, अने स्मरण अन्यने थयु, जुलाव अन्ये लीधो, अने रोगरहित अन्य थयो, तप·क्लेश अन्यने थयो, अने स्वर्गादिफल अन्यने प्राप्त थयु, अज्यासनी प्रवृत्ति अन्यने थइ, अने अज्यासनुं फल

अन्यने थयु, आ सर्व हकीकत अतिप्रसंग होवाथी युक्तियुक्त नथी जो एम कहो के संताननी अपेक्षाथी बध, मोक्षादिनुं एक अधिकरण थइशकेछे, तो तेपण ठिक नथी. कारण के संतानपण तमारा मतमां थइ शकतां नथी-जुर्उ संतान जे छे ते संतानिथी भिन्नछे के अभिन्नछे? जो कहो के भिन्नछे तो पछी वे विकल्प अमे तमने सोंपियें छियें. ते संतान नित्य छे के अनित्य छे? जो कहो के नित्य छे तो तेने वंध मोक्षादिनो संभव नथी, कारण के सर्वकाल एकस्वभाव होवाथी तेनी अवस्था विचित्र थइ शकती नथी अने तमेतो नित्य मानता नथी " सर्वं क्षणिकमिति वचनात् " हवे जो कहो के अनित्य छे तो-तो तेज प्राचीन बधमोक्षादि वैय्यधिकरण दूषण प्राप्त थयु जो कहो के अभिन्न छे, तो तो तेनाथी अभिन्न होवाथी तेना स्वरूपनी पेठे सतानिज थया, संतान थया नहि. ज्यारे एम थया त्यारे तो तदवस्थज पूर्वनुं दूषण छे जो कहो के क्षणथी अन्य संतान कोइ नथी परंतु जे कार्यकारणभाव प्रवधथी क्षण भावछे, तेज संतान छे, ते वास्ते दोष नथी, आ पण तमारु केहेवुं अयुक्त छे, कारण के तमारा मतमां कार्यकारणभावपण घटतो नथी तेज बतावियें छियें प्रतीत्यसमुत्पादमात्र कार्यकारणभाव छे, तेथी यथाविवक्षित घटक्षण अनंतर घटक्षण छे, तेमज पटादिक्षणपण छे, अने जेम घटक्षणथी पेहेला अनंतर विवक्षित घटक्षण छे तेमज पटादिक्षणपण छे, त्यारे तो केवीरीतें प्रतिनियत कार्यकारणभावनो अवगम थाय ?

एक वीजु पण दूषण छे ते ए छे के कारणथी जे कार्य उत्पन्न थाय छे, ते सत् उत्पन्न थाय छे के असत् उत्पन्न थाय छे ? जो कहो के सत् उत्पन्न थाय छे तो कार्योत्पत्तिकालमां पण कारण सत् थयु, त्यारे तो कार्य कारणने समकालतानो प्रसंग वन्यो, अने एककालमां वे पदार्थोना कार्यकारणभाव मान्या नथी, नहि तो माता पुत्रनो व्यवहार बनशे नहि घटपटादिने पण परस्पर कार्यकारणभावनो प्रसग थइ जशे जो असत् पक्ष मानशो तो तेपण अयुक्त छे, कारण के जे असत् छे, ते कार्य थइ शकतु नथी नहि तो खरशृगथीपण कार्य उत्पन्न थवु जोइये. वली अत्यताभाव, प्रध्वंसाभाव, वने जगाए वस्तुसत्तानो संभव होवाथी, आ वनेनु काइपण विशेष थयु नहि, जो कहो के प्रध्वंसा-

नावमां वस्तु हती, ते कारणथी हेतु छे, त्यारे तो ज्यारे हती त्यारे है
न होतो, अन्यदा हेतु थयो, एम तो बहु सारी तत्वव्यवस्था थइ.
वली एक बीजी वात छे के– तद्भावे नाव एवा अवगममां कार्य क
रणनावनो अवगम छे, ते जो तद्भावे नाव छे, ते शुं प्रत्यक्षथी प्रती
थाय छे के अनुमानथी प्रतीत थाय छे? प्रत्यक्षथी तो प्रतीत थतो
थी, कारण के पूर्ववस्तुगत प्रत्यक्षथी पूर्ववस्तु परिछिन्न थइ, अने उ
वस्तुगतथी उत्तरवस्तु परिछिन्न थइ, अने आ बनेनुं अनुसंधान करन
त्रीजुं स्वरूप तो कोइ मानता नथी, ते कारणथी ते अनंतर तेनो न
छे, एवो केम अवगम थाय? ते तो तेने पण प्रत्यक्षपूर्वक होवाथी
नुमानथी पण न थाय, अने अनुमान तो लिंगलिंगिसंबंधग्रहणपूर्व
प्रवृत्त थाय छे, अने लिंगलिंगिनो संबंध तो प्रत्यक्षथी ग्राह्य छे, जो
नुमानथी संबंधग्रहण करियें, तो अनवस्था दूषण आवे छे, अने क
कारणनावविषे प्रत्यक्ष प्रवृत्त थतु नथी, ते कारणथी अनुमाननी प
प्रवृत्ति नथी. तेवीजरीतें ज्ञानना बनेक्षणोना परस्पर कार्यकारणनाव
अवगमपण निषेध थयो जाणवो. त्यांपण स्वसंवेदनथी पोतपोताना स
ग्रहणमां परस्परस्वरूप अनवधारणथी तदनंतर हु उत्पन्न थयो छुं, अ
हुं तेनो जनक छुं, एवी अवगति नहि होवाथी तमारा मतमां कार्य क
रणनाव नथी, तेमज तेनो अवगमपण नथी, तेथी, एक संतति पतित
वाथी बधमोक्षनु एकाधिकरण छे, आ केहेवु तमारु मृषा छे. आ के
वाथी जे कहेछे के उपादेय उपादान क्षणोनो परस्पर वास्यवासकन
होवाथी, उत्तरोत्तर विशिष्ट विशिष्टतर क्षणोत्पत्तिथी मुक्तिनो सनव
तेपण उपादेय उपादान नावना उक्तरीतिथी अनुपपद्यमान होवाथी
तिक्षिप्त जाणवां, अने जे वास्यवासकनाव कहेल छे, तेपण तलफू
नीपेछे एककालमां बंने होय त्यारे होइ शके छे "उक्तं चान्यैरपि" "
वस्थिताहि वास्यते, नावान्नावैरवस्थितै." तो केवीरीतें उपादेय उपाद
क्षण बंनेने परस्पर असाहित्य होवाथी वास्यवासकनाव होय? उक्तं
॥ वास्यवासकयोश्चैव, मसाहित्यान्नवासता ॥ पूर्वक्षणैरनुत्पन्नो, वास्य
नोत्तर क्षणः ॥ १ ॥ उत्तरेण विनष्टत्व, न्न च पूर्वस्य वासना ॥ इति ॥
एक बीजी वात एवी छे के वासना वासकथी निन्न छे के अनिन्न छे

प्रबलमोहविजृंभितं ॥ श्लोक ॥ दग्धेंधन पुनरुपैति नवं प्रमथ्य, निर्वाणमप्यनवधारितभीरनिष्ट ॥ मुक्त स्वय कृततनुश्च परार्थशूर, स्त्वच्छासन प्रतिहतेष्विह मोहराज्यं ॥ १ ॥ इत्यलं विस्तरेण ॥

पूर्वपक्ष.–सुगतादि, ईश्वर भले न होय, परंतु सृष्टिना कर्त्ता तो महादेव ईश्वर छे, ते केम मानता नथी ?

उत्तरपक्ष.–जगत्कर्त्ता ईश्वरनी सिद्धिमां प्रमाणनो अभाव छे, ते कारणथी मानता नथी

पूर्वपक्ष.–जगत्कर्त्तानी सिद्धिमां प्रमाण छे पृथिव्यादि कोइ बुद्धिमाननां करेला छे घटादि जेम कार्यरूप होवाथी, आ हेतु असिद्ध नथी पृथिव्यादि सावयव होवाथी कार्यत्वनी प्रसिद्धि होवाथी, तेमज जुओ पृथिवी, पर्वत, वृक्षादि सर्व सावयव होवाथी घटवत् कार्यरूप छे, वली आ हेतु विरुद्ध पण नथी, निश्चयपूर्वक करेला घटादिविषे कार्यत्वहेतु देखवाथी, वली जेनो कर्त्ता नथी तेनाथी व्यावृत्त होवाथी अनेकांतिक पण नथी, तेमज प्रत्यक्ष आगमपूर्वक अबाधित विषय होवाथी कालात्ययापदिष्ट पण नथी, आ निर्दोष हेतुथी जगत्कर्त्ता ईश्वर सिद्ध थाय छे

उत्तरपक्ष – प्रथम पृथिव्यादि बुद्धिमानना बनावेलां छे, आ सिद्ध करवा वास्ते कार्यत्वहेतु जे तमे कहोछो, ते हेतु शु सावयवत्व छे ? के प्राग्वत् स्वकारणसत्ता समवाय छे ? के "कृत" एवा प्रत्ययनो विषयत्व छे ? के विकारित्व छे ? जो एम कहो के सावयवत्वस्वरूप छे, तो आ सावयवपणु शु अवयवोविषे वर्त्तमानत्व छे ? के अवयवोथी आरभ्यमाणत्व छे ? के प्रदेशत्व छे ? के सावयव एवी बुद्धिविषयत्व छे ?

प्रथम पक्षविषे अवयव सामान्य होवाथी आ हेतु अनेकांतिक छे तथा अवयवोविषे वर्त्तमान पण निरवयव तेमज अकार्य कहे छे, तथा बीजा पक्षमा हेतु साध्य समान छे जेवी रीते पृथिवी आदिने कार्यत्व साध्य छे, तेवीजरीते परमाणु आदिने अवयव आरभ्यत्व छे त्रीजा पक्षमा आकाशनी साथे हेतु अनेकातिक छे, कारण के आकाश प्रदेशवालु छे, परतु कार्य नथी चोथा पक्षमां आकाशनी साथे हेतु व्यभि-

चारी छे, कारण के जे व्यापक होय छे, ते निरवयव होता नथी, अने जे निरवयव होय छे ते परमाणुवत् व्यापक होता नथी

तथा प्रागसत. (असत्थी पूर्वे) स्वकारण सत्ता समवाय कार्यत्व पण नथी, कारण के तेनां लक्षणनो अन्नाव होवाथी तेनुं नित्यपणुं छे जो तेनुं लक्षण हशे तो तो पृथ्वी आदिना कार्यत्वने पण नित्यतानो प्रसंग आवशे, त्यारे तो बुद्धिमाननु बनावेल केवीरीतें सिद्ध करशो ? एक बीजुं पण दूषण ए छेके योगियोना सर्व कर्मक्षय थयां थकां पक्षांतपातिविषे अप्रवृत्त होवाथी आ हेतु असिद्ध छे, कारण के सत्ता, स्वकारणसमवाय आ बंनेना अन्नावथी, योगिप्रत्यक्ष प्रध्वंसान्नावरूप थइ जायछे.

तथा "कृत" एवा प्रत्ययनुं जे विषयत्वछे, ते पण कार्यत्व थइ शकतुं नथी. खनन उत्सेचनादिथी कृतं आकाश एवां अकार्य आकाशमांपण वर्त्तमान होवाथी अनेकांतिक छे

तथा विकारित्वने पण कार्यत्वनो अनुषंग छे सत् वस्तुनो जे अन्यन्नाव, ते विकारित्व छे, तो तो ईश्वरने पण विकारित्व पणु छे, अपर बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसंग आववाथी अनवस्था थइ जशे जो एम कहो के ईश्वर विकारी नथी, तो तो कार्यनुं कारित्वपणुं दुर्घट छे एवी रीतें कार्यस्वरूपने विचारतां थकां उपपद्यमान होवाथी " कार्यत्वात्" आ हेतु असिद्ध छे. वली एक बीजुं दूषण ए छे के कदी थाय कदी न थाय, तेने लोकमां कार्यत्वनी प्रसिद्धि छे, परंतु आ जगत् तो तमारा महेश्वरनी पेठे सदा सत्य होवाथी तेनुं केवीरीतें कार्यत्व होय?

पूर्वपक्षः– ते जगत्नी अंतर्गत तृणादिने कार्यत्व होवाथी जगत्ने पण कार्यत्व छे

उत्तरपक्ष.– महेश्वर अंतर्गत बुद्धि आदिने तथा परमाणु आदि अंतर्गत पाकज रूपादिने कार्यत्वरूप होवाथी, महेश्वरने तथा परमाणु आदिने कार्यत्वनो अनुषग थशे, त्यारे तो आ ईश्वरने बुद्धिमत् हेतुकत्व प्रसगथी अनवस्था दूषण आवेछे, तथा अपसिद्धांतनो अनुषग थायछे तथा हे ईश्वरवादि! जेम तेम करी जगत्ने कार्यत्वपणुं न्नले हो, परंतु कार्यमात्र हेतु तमे अहियां मानेल छे ? के कार्यविशेष हेतु मानेलछे.

जो प्रथमपक्ष मानशो तो तो तेथी बुद्धिमत् कर्तृविशेपसिद्धि नथी, कारण के तेनी साथे व्याप्तिनी सिद्धि नथी, परंतु कर्तृ सामान्यनी सिद्धि थायछे जो एमज मानशो तो तो हेतु अकिंचित्कर छे साध्यनी विरुद्ध साधवाथी हेतु विरुद्ध छे, ते कारणथी कार्यत्वकृत बुद्धि उत्पादक बुद्धिमत् कर्त्तानी गमक नथी, अने जो सर्व सारूप्यमात्रथी गमकत्व होय तो तो बाष्प आदिने पण अग्नि प्रति गमकत्वनो प्रसंग थशे, अने महेश्वर आत्मत्वपणे सर्वजीव सदृश होवाथी १ संसारिपणानो, २ किंचित्सत्त्वपणानो, ३ संपूर्ण जगत्‌ना अकर्तृत्वपणाना अनुमापकनो तेने अनुपग छे, कारण के तुल्य आक्षेप समाधान होवाथी, ते कारणथी बाष्प तेमज धूम आ बने कोइ अंशे साम्य पण छे, तोपण कांइक एवु विशेप छे के जेथी धूम अग्निनो गमक छे, परतु बाष्पादि नथी तेवीज रीतें पृथ्वी आदिने बीजां कार्योंथी पण काइक विशेष अंगीकार करो

जो बीजो पक्ष मानशो तो हेतु असिद्ध छे, कार्यविशेपना अभावथी अथवा जीर्णकूप प्रासाद आदिनी पेठे अक्रिया देखनारानेपण कृत बुद्धि उत्पादकनो प्रसग छे, जो एम कहो के समारोपथी प्रसंग थतो नथी, तोपण बने जगाए एक सदृश होवाथी केम थतो नथी? बंने जगाए कर्त्ताने अतीन्द्रियत्वना अविशेपथी

पूर्वपक्ष – प्रामाणिकने अहियां कृतबुद्धि छे

उत्तरपक्ष.– केवीरीतें त्यां तेने कृतत्वनो अवगम होय? अनुमानथी अथवा अनुमानांतरथी आद्य पक्षमां परस्पर आश्रय दूपणछे जुओ सिद्ध विशेपण हेतुथी आ अनुमाननु उत्थान छे, तेनु उत्थान थवाथी हेतुना विशेपणनी सिद्धि छे, अने बीजापक्षमां अनुमानांतरने पण सविशेपण हेतुथी उत्थान थशे, त्यापण अनुमानातरथी तेनी सिद्धिछे एवी रीतें अनवस्था दूपण आवेछे ते कारणथी कृतबुद्धि उत्पादकत्वरूप विशेपण सिद्धि नथी, त्यारे तो विशेपण असिद्ध हेतु छे

वली जे कहेछे के खातप्रतिपूरित पृथ्वीना दृष्टांतथी कृतकोने आत्मविपें कृतबुद्धि उत्पादकत्वनो अभाव छे, तेपण असत् छे त्या आकृति भूभागादि सारूप्यने तेना उत्पादकना अभावथी, तेना अनुत्पादकनी उत्पत्तिथी

वली एम पण न केहेवु के पृथ्वी आदिमांपण अकृत्रिम संस्थान

सारूप्यछे, जेनाथी आकृतिमत्त्वबुद्धि उत्पन्न थायछे, तेनेज न मानवाथी अपसिद्धांतनी प्रसक्ति थशे, एवी रीतें कृतबुद्धि उत्पादकत्वरूप विशेषण असिद्ध थवाथी हेतुविशेषण असिद्ध छे, ते सिद्ध थाउ तोपण आ हेतु घटादिनी पेठे शरीरादिविशेषनेज बुद्धिमत्कर्त्ताने अहियां साधवाथी हेतुविरुद्ध छे.

प्रश्नः– एवीरीते दृष्टांत दार्ष्टांतिक साम्य अन्वेषणमां सर्व जगाए हेतुउनी अनुपपत्ति थशे.

उत्तरः– एम नथी, धूमादि अनुमानथी महानसथी वीजा साधारण अग्निनी प्रतिपत्तिथी, अहियांपण एवीजरीतें बुद्धिमत् सामान्य प्रसिद्धिथी हेतुविरोध नथी, एमपण केहेवुं अयुक्तछे, कारण के दृश्यविशेष आधारनेज ते सामान्यने कार्यत्वहेतुनी प्रसिद्धि छे, परंतु अदृश्यविशेष आधारने नथी, तेनी स्वप्नामांपण प्रतिपत्ति नथी. ते सामान्यवालाने खरशृंग आधार छे. तेवास्ते जेवा कारणथी जेवुं कार्य उपलब्ध थायछे, तेवुज अनुमान करवुं योग्य छे. यथावत् धर्मात्मक अग्निथी यावत् धर्मात्मकस्य धूमनीउत्पत्ति छे, सुदृढ प्रमाणथी प्रतिपन्नछे, तेवाज धूमथी तेवाज अग्निनुं अनुमान छे. एम कहीने साध्य साधन बंनेने विशेषणथी व्याप्तिविषे ग्रहण करतां थकां सर्व अनुमाननी उछेद प्रसक्ति छे इत्यादि जे केहेवु छे तेपण खंडन थयुं.

तथा वीजने वाव्याविना जे तृणादि उत्पन्न थायछे, तेनी साथे आ कार्यत्वहेतु व्यभिचारी छे. अनेक कार्य देखवामां आवेछे, तेउमांथी केटलांएकतो बुद्धिमान्नां करेलां देखायछे, जेमके घटादि.

वली केटलांएक तेनाथी विपरीत देखायछे, जेम के वाव्याविनानां तृणादि जो एम कहो के अमे सर्वने पक्षमां लइ लेशुं, तो तो "सश्यामस्तत्पुत्रत्वादितरतत्पुत्रवत्" इत्यादि पण गमक होवां जोइये, पछी तो कोईपण हेतु व्यभिचारी थशे नहि ज्यां ज्यां व्यभिचार थशे, त्यां त्या तेने पक्षमां करी लेशे. तथा आ हेतु ईश्वर बुद्धि आदिथीपण व्यभिचारी छे, ईश्वर बुद्धि आदिने कार्यत्व थयां थकांपण समवायि कारणथी ईश्वरादिथी भिन्न बुद्धिमत् पूर्वकत्वना अभावथी. जो अहींयां पण एवीरीतें मानशो तो अनवस्था दूषण आवशे. तथा आ कार्यत्वहेतु कालात्ययापदिष्ट पण छे. वाव्याविना उत्पन्न थयेलां तृणादिविषे बुद्धि-

मत् कर्त्तानो अजाव प्रत्यक्ष प्रमाणथी, अग्निना अनुष्णत्व साध्यविषे ड्रव्यत्व हेतुवत् मालम पडेछे

प्रश्न.– अंकुर तृणादिनापण अदृश्य ईश्वर कर्त्ताछे

उत्तरः– आ पण ठीक नथी त्यां अदृश्य ईश्वरनु होवु आज प्रमाणथीछे? के कोइ बीजा प्रमाणथी छे? प्रथम पक्षमां चक्रक दूषण छे आ प्रमाणथी तेनो सद्भाव सिद्ध थाय, तो अदृश्य होनार ईश्वरना अनुपलंजनी सिद्धि थाय, तेनी सिद्धि थतां कालात्ययापदिष्टनो अजाव सिद्ध थाय, तेनी पछी आ प्रमाणनी सिद्धि थाय, बीजो पक्ष तो अयुक्तछे ईश्वरना जाव अवेदिक प्रमाणना अजावथी होय, त्यां प्रमाणनो सद्भाव तोपण १ईश्वर अदृश्य होवामां शु शरीरनु अविद्यमानपणु कारण छे? २ के विद्यादि प्रजावछे? ३ के जातिविशेषछे? प्रथम पक्षमां अशरीरी होवाथी मुक्त आत्मावत् कर्त्तापणानी अनुपपत्ति छे

प्रश्नः– शरीरनो अजाव छतां पण ज्ञानेछा प्रयत्न आश्रयत्वथी शरीर उत्पन्न करीने ईश्वर कर्त्ता थइ शकेछे

उत्तर.– आ पण आपनु विना विचारनुज केहेवुं छे, कारण के शरीर संबधथीज तेनी प्रेरणा थवाथी शरीरनो अजाव थतां मुक्त आत्मानी पेठे तेनो असंजव थवाथी तेमज शरीरना अजावथी ज्ञानादि आश्रयत्वनो पण असजव छे, तेनी उत्पत्तिमां तेने निमित्त थवाथी अन्यथा मुक्तात्माने पण तेनी उत्पत्ति थशे वली विद्यादि प्रजाव अदृश्यपणामां हेतु थतां सर्वदा तो नहि, परंतु कोइक वखत तो देखावा जोइये कारणके विद्यावान् सदा अदृश्य रेहेता नथी पिशाचादिनी पेठे जातिविशेष पण अदृश्यमां हेतु नथी, कारण के ईश्वर एकछे, एकमां जाति होती नथी, जाति जेद जे थायछे, ते अनेकव्यक्तिनिष्ठ थायछे. ईश्वर दृश्य अथवा अदृश्य जले होय, परंतु १ शु सत्ता मात्रथी? २ के ज्ञानवत्त्व होवाथी? ३ के ज्ञानेछा प्रयत्नवत्त्व होवाथी? ४ के तत्पूर्वक व्यापारथी? ५ के ऐश्वर्यथी पृथिव्यादिनु कारण छे?

प्रथम पक्षमां कुलाल आदिनेपण सत्व अविशेष होवाथी जगत्कर्त्तानो अनुपग थशे बीजा पक्षमां योगियोनेपण जगत्कर्त्तानी आपत्ति आवशे त्रीजो पक्ष ठीक नथी, कारण के अशरीरने प्रथमज ज्ञानादि

आश्रयत्वनो प्रतिषेध करेलछे. चोथानोपण संजवनथी, कारण के अशरीरनो कायवचनना व्यापारपणानो असंजव छे, अने ऐश्वर्यपण शुं ज्ञातपणुंछे? के कर्त्तापणुछे? के बीजुं कांइछे? जो कहो के ज्ञातपणुछे, तो शुं ज्ञातृत्व मात्रछे? के सर्वज्ञातृपणुछे ? प्रथम पक्षमां तो ज्ञाताज थशे, परंतु ईश्वर थशे नहि, अमारा सरखा बीजा ज्ञाताउनी जेम. बीजा पक्षमां, सर्वज्ञपणुं तो तेने थशे, परंतु सुगतादि जेम ईश्वरपणुं नहि थाय

हवे जो एम कहो के कर्त्तृत्वपणुंछे, तो तो कुंजकारादिनेपण अनेक कार्य करवाथी ऐश्वर्यनी प्रसक्ति थशे, अने इछा प्रयत्न विना बीजी कोइपण वस्तु ईश्वरना ऐश्वर्यने बधनकारक नथी.

एक बीजी बात ए छे के, ईश्वरने जगत् बनाववामां शुं यथारुचि प्रवृत्तिछे? के कर्मवशथी ते जगत् बनावेछे? के दयाथी बनावेछे? के क्रीडावास्ते बनावेछे? के निग्रह अनुग्रह करवावास्ते बनावेछे ? के स्वजावें बनावेछे? प्रथम पक्षमां, कदाचित् बीजी तरेहनी सृष्टि थइ जशे. बीजा पक्षमां, ईश्वरनी स्वतंत्रतानो नाश थशे त्रीजा पक्षमां, सर्व जगत् सुखीज करवुं जोइये

पूर्वपक्षः– ईश्वर शुं करे? जेवां जेवां जीवोए कर्म करेलां छे, तेवां तेवां दुःख सुख ते कर्मना कारणथी ईश्वर तेउने आपेछे.

उत्तरपक्षः– त्यारे तेमां ईश्वरनो पुरुषार्थ शुं? जो कर्मनीज अपेक्षाथी कर्त्ताछे, तो तो ईश्वरनी कल्पना करीने शुं करवुछे? कर्मनाज वशथी सर्व कांइथइजशे चोथा, पांचमा पक्षमां, ईश्वर, रागी द्वेषी थइ जशे, त्यारे तो ईश्वर केवीरीतें सिद्ध थशे? जुउ क्रीडा करवाथी बालकनी पेठे ईश्वर रागवान् छे, अने निग्रह, अनुग्रह करवाथी राजानी पेठे ईश्वर रागी, द्वेषीछे.

जो एम कहो के ईश्वरनो स्वजावज जगत् रचवानो छे, तो तो जगत् स्वजावथीज थयेल छे एम मानी ल्यो हवे ईश्वरनी कल्पना शा वास्ते करो छो? ते वास्ते कार्यत्वहेतु बुद्धिमत्कर्त्ता ईश्वरने सिद्ध कर्त्ता नथी. तेज कारणथी नैयायिक, वैशेषिक जे जगत्कर्त्ता ईश्वरने माने छे ते अज्ञानतासूचक छे. विशेषथी जगत् कर्त्ता ईश्वरनुं खंडन जोवुं होय तो सम्मतितर्क ग्रंथ जुउ.

हवे नैयायिक जे सोल पदार्थ माने छे, ते पण बालकनो खेल छे, सो-

ल पदार्थ घटता नथी सोल पदार्थनां नाम– १ प्रमाण २ प्रमेय, ३ संशय, ४ प्रयोजन, ५ दृष्टांत, ६ सिद्धांत, ७ अवयव, ८ तर्क, ९ निर्णय, १० वाद, ११ जल्प, १२ वितंडा, १३ हेत्वाभास, १४ छल, १५ जाति, १६ निग्रहस्थान

हेय उपादेय प्रवृत्तिरूपें पदार्थोनी जेनाथी परिछित्ति करियें ते प्रमाण " तत्त्वमीयतेऽनेनेति प्रमाणं " ते प्रमाण १ प्रत्यक्ष, २ अनुमान, ३ उपमान, ४ शब्द, आ चार प्रकारे छे " तत्रेंद्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्न ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षं इति गौतमसूत्र" भावार्थः– इंद्रिय अने अर्थना संबधथी जे उत्पन्न थयेल, व्यपदेशरहित, व्यभिचाररहित, निश्चयात्मक, तेने प्रत्यक्ष प्रमाण कहे छे. प्रत्यक्ष प्रमाणनु आ लक्षण सत्य नथी. ज्यां आत्मा अर्थ ग्रहण प्रति साक्षात् व्यापारियें तेज प्रत्यक्ष प्रमाण छे ते अवधि, मन:पर्यव, अने केवल छे, अने नैयायिकोयें जे प्रत्यक्ष बतावेल छे ते तो उपाधिद्वारा प्रवृत्ति थवाथी अनुमाननी पेठे परोक्ष छे. जो उपचारें प्रत्यक्ष मानियें तो तो वास्तविक छे, परंतु तत्वचिंतामा उपचारनो व्यापार थइ शकतो नथी

अनुमान प्रमाण त्रण प्रकारें माने छे १ पूर्ववत्, २ शेषवत्, ३ सामान्यतोदृष्ट कारणथी कार्यनु जे अनुमान ते पूर्ववत्, कार्यथी कारणनु जे अनुमान ते शेषवत् तथा एक आम्र वृक्ष फलरूप देखीने, जगत्मां आम्रवृक्षो फलरूप थयेला छे, एम जाणवु, अथवा देवदत्तादिमां गति पूर्वक स्थानथी, स्थानांतरनी प्राप्ति देखीने सूर्यमां पण गतिनु अनुमान करवु ते, सामान्यतोदृष्ट छे त्यां पण अन्यथानुपपत्तिज गमक छे, कारणादि नथी, कारण के अन्यथानुपपत्ति विना कारणने कार्यप्रति व्यभिचार थाय छे, अने ज्या अन्यथानुपपत्ति छे त्यां कार्य कारणादि विनापण गमक भाव देखियें छियें ते बतावियें छियें कृत्तिकाने देखवाथी अनुमान थाय छे के रोहिणीनो उदय थशे ॥ श्लोक ॥ अन्यथानुपपन्नत्वं, यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ नान्यथानुपपन्नत्वं यत्र तत्र त्रयेण किं ॥ ॥ १ ॥ तथा एक बीजी वात ए छे के, ज्यारे नैयायिकनु करेलु प्रत्यक्ष प्रमाणज प्रमाण न थयु तो अनुमान जे प्रत्यक्षपूर्वक छे ते केवी रीतें प्रमाण होय ? तथा " प्रसिद्धसाधर्म्यात् " अर्थात् प्रसिद्ध साधर्म्यथी जे साध्यनुं साधन छे ते उपमान प्रमाण छे जेवी गाय छे तेवु

रोक छे. अहीयां पण संज्ञा संज्ञी संबधनी प्रतिपत्ति उपमाननो अर्थ छे. तेमज अन्यथानुपपत्ति सिद्ध थवाथी उपमाननो पण अनुमानमां अंतरजावज छे, परंतु पृथक् प्रमाण नथी. जो एम कहो के अहीयां अन्यथानुपपत्ति नथी, तो तो व्यजिचारी होवाथी उपमान प्रमाणज नथी. शाब्द पण सर्वे, प्रमाण नथी. परंतु आप्तप्रणीत जे आगम छे, तेज प्रमाण छे, अने अर्हंत विना बीजा कोइ आप्त नथी, ते वातनो निर्णय देखवो होय तो सम्मतितर्क, नंदीसिद्धांत, आप्तमीमांसादि शास्त्र जोइ लेवां वली एक बीजी वात ए छे के आ चारे प्रमाण, आत्मानुं ज्ञान छे, अने ज्ञान वस्तुना गुणोने पृथक् पदार्थ मानिये, तो तो रूप रसादिने पण पृथक् पदार्थ मानवा जोइयें. जो एम कहो के प्रमेय ग्रहण करवाथी, तेमज इंद्रियार्थ होवाथी तेपण ग्रहण कराय छे आ पण तमारुं केहेवुं युक्तियुक्त नथी, कारण के द्रव्यथी पृथक् गुणोनो अजाव छे द्रव्यग्रहण करवामां गुणोनुं ग्रहण थइ जाय छे ए सिद्ध छे ते कारणथी गुणने पृथक् पदार्थ मानवा वास्तविक नथी.

२ प्रमेयना जेद, १ आत्मा, २ शरीर, ३ इंद्रिय, ४ अर्थ, ५ बुद्धि, ६ मन, ७ प्रवृत्ति, ८ दोष, ए प्रेत्यजाव, १० फल, ११ दुःख, १२ अपवर्ग. १ आत्मा सर्वनो दृष्टा तेमज जोक्ता छे, अने इछा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख, ज्ञान, तेउनाथी अनुमेय छे, ते तो अमे जीवतत्वमां ग्रहण करेल छे. २ शरीर आत्मानुं जोगायतन छे, इंद्रिय जोगनां साधन छे ३-४ इंद्रिय अर्थ (विषय) जोग्य छे, ते पण शरीरादि जीव अजीवग्रहणरूपे अमे ग्रहण करेल छे ५ बुद्धि, ते उपयोगरूप ज्ञानविशेष छे, तेनो जीवस्वरूप ग्रहण करवामां समास थाय छे अर्थात् जीवतत्वमां ते आवी जाय छे ६ मन, ते सर्व विषय अंतःकरण छे युगपत् ज्ञाननु न होवु ते मननु लिंग छे, तेमां द्रव्यमन पौद्गलिक छे, तेनो अजीव तत्वमां समावेश थाय छे. अने जाव मन, ज्ञानरूप आत्मानो गुण छे, ते जीवतत्वमां ग्रहण कराय छे ७ आत्मानी इछानु नाम प्रवृत्ति छे, ते सुख दुःख थवानुं कारण छे, ते ज्ञानरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समास थाय छे. ८ आत्माना अध्यवसाय, जे राग, द्वेष, मोहादि दोष छे, ते दोष पण जीवना अजिप्रायरूप होवाथी तेनो जीवतत्वमां समावेश थाय छे ते वास्ते पृथ-

क् पदार्थ नथी ए प्रेत्यभाव, परलोकनो सद्भाव, ते पण जीव अजीव वि
ना बीजुं कांइ पण छे नहि, १० फल, जे सुख दुःखनु भोगववु, तेनोपण
जीवना गुणमां अंतर्भाव छे, तेथी पृथक् पदार्थ मानवु वास्तविक नथी
११ दुःख, आ पण फलथी जुदुं नथी १२ जन्म मरणप्रबध उछेदरू
सर्व दुःखनु दूर करवु, ते मोक्षनुं लक्षण छे, ते अपवर्ग तो अमे नवत
त्वमां मानेल छे

३ आ शु छे ? एवा अनिश्चयरूप प्रत्ययने संशय कहे छे, ते प
निर्णय ज्ञानवत् आत्मानोज गुण छे

४ जेनाथी प्रयुक्त थया थकां प्रवर्ते छे, तेनु नाम प्रयोजन छे, ते प
इच्छाविशेष होवाथी आत्मानो गुण छे

५ अविप्रतिपत्ति विषयमां प्राप्त जे अर्थ ते दृष्टांत छे, ते पण जी
अजीव पदार्थथी पृथक् नथी, तेथी न्यारो पदार्थ नथी, कारण के अवय
ग्रहण करवामां तेनु पण ग्रहण थइ जशे

६ सिद्धांत चार प्रकारेछे १ सर्वतंत्राविरुद्ध सर्व शास्त्रोमां अविरुद्ध
जेम के स्पर्शनादि इंद्रियछे, अने स्पर्शादि इन्द्रियार्थछे, तथा प्रमाणथ
प्रमेयनु ग्रहण थायछे. २ समानतंत्रसिद्ध' परतंत्रासिद्ध प्रतितंत्रासि
द्धांत. जेमके सांख्य मतवालानो असत् आत्मलाभ प्राप्त थतो नथी
अने सतुनो सर्वथा विनाश नथी ३ अधिकरणसिद्धांत, जेनी सिद्धि
थतां बीजापण अर्थ अनुषंगथी सिद्ध थइ जाय ते ४ "अपरीक्षितार्थाभ्यु
पगमत्वात्तद्विशेषपरीक्षणमभ्युपगमसिद्धांत" जेमके कोइयें कह्युं के, शब्द
शु वस्तुछे? कोइक कहेछे, शब्द द्रव्यछे ते शब्द नित्यछे? के अनि
त्यछे ? इत्यादि विचार आ चारे प्रकारना सिद्धांत ज्ञानविशेषथी अति
रिक्त नथी, अने ज्ञानविशेष, आत्मानो गुणछे, गुणिने ग्रहण करवाथ
ग्रहण करेलछे तेथी पृथक् पदार्थ नथी.

७ अवयवाः, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय, निगमन, आ पांचे
अवयवने जो शब्दमात्र मानिये तो तो पुद्गलरूप होवाथी तेनो अ
जीवतत्त्वमां समावेश थायछे, अने जो ज्ञानरूप मानिये तो जीवतत्त्वम
तेनो समावेश थायछे तेथी तेमने पृथक् पदार्थ केहेवा ठीक नथी

जो ज्ञानविशेषने पृथक् पदार्थ मानियें तो तो पदार्थ अनेक थइ जशे, कारण के ज्ञानविशेष अनेक प्रकारना छे.

८ संशयथी उपरांत नवितव्यता प्रत्ययरूप सत् अर्थ पर्यालोचनात्मक तेने तर्क कहेछे जेमके आ स्थाणु अथवा पुरुष जरूर हशे आ पण ज्ञानविशेषजछे; ज्ञानविशेष ज्ञाताथी अभिन्नछे, तेथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी

ए संशय, तेमज तर्कथी उत्तरकालनावि निश्चयात्मक एवुं जे ज्ञान, तेनुं नाम निर्णय छे आ पण ज्ञानविशेषछे अने निश्चयरूप होवाथी, प्रत्यक्षादि प्रमाणनाअंतर्जाव थवाथी पृथक् पदार्थ कल्पवो वास्तविक नथी.

१०–११–१२ वाद, जल्प, वितंडा, प्रमाण तर्क साधन उपालंन सिद्धांत अविरुद्ध पच अवयवसंयुक्त पक्ष, प्रतिपक्षनुं जे ग्रहण करवुं तेनु नाम वादछे ते वादतत्व शिष्य अने आचार्यनो ज्ञानवास्ते थायछे. तथा तेज वाद बीजाने जीतवावास्ते, तेनीसाथे छल, जाति निग्रहस्थानथी साधन उपालंन ते जल्पछे. तथा ते वादज प्रतिपक्षस्थापनारूपेज वितंडा छे. आ वाद, जल्प, वितंमा ए त्रणेनो नेदज थइ शकतो नथी; कारण के तत्वनुं चिंतवन करवामां तत्वना निर्णयार्थे वाद करवो जोइये, परंतु छल, जाति आदियी तत्वनो निश्चय थइ शकतो नथी; कारण के छलादि बीजाने ठगवावास्ते करवामां आवेछे. तेनाथी तत्वनिर्णयनी प्राप्ति थइ शक्ती नथी. जो तेउनो नेदपण मानशो, तोपण तेउ पदार्थ थइ शकता नथी कारण के जे परमार्थथी वस्तु छे, तेज पदार्थछे. वाद तो पुरुषनी इछाने आधीन छे, नियतरूप नथी, ते कारणथी पदार्थ नथी वली कुकडां, कुतरां, मेंढां एउना वादमांपण पक्ष, प्रतिपक्ष ग्रहण करिये तो तेउनेपण तत्वज्ञाननी प्राप्ति थवी जोइये, परंतु ते तो तमे मानता नथी, तेथी वाद, जल्प, वितंमा, पदार्थ नथी

१३ हेत्वाजास १ असिद्ध, २ अनेकांतिक, ३ विरुद्ध. आ त्रण प्रकारेछे हेतु तो नथी, परंतु हेतुनी जेम जासन थायछे, तेथी हेत्वाजास कहेछे ज्यारे सम्यक् हेतुउनीज तत्व व्यवस्थिति नथी, त्यारे हेत्वाजासोनु तो केहेवुंज शु? कारणके जे नियत स्वरूपथी रहे ते वस्तुछे, अने

हेतु तो कोइ साध्य वस्तुमां हेतु छे, अने बीजी साध्य वस्तुमां अहेतुछे, ते कारणथी नियत स्वरूपवालो नथी

१४–१५–१६ छल, जाति, निग्रहस्थान आ त्रणे पदार्थ नथी कारण के आ त्रणे वास्तवमां कपटरूपछे जेओए तेमने तत्वरूपे कथन करेल छे, तेओना ज्ञान, वैराग्यमाटे शुं कहेवु ? आ संसारमां जे चोरी, ठगाइ, हाथफेरी प्रमुख शिखवे, तेओनेपण तत्वज्ञानना उपदेशक मानवा सरखुछे, ए प्रमाणे नैयायिक मतना सोल पदार्थनु खडन समजवु. विशेष जाणवा इछनारें न्यायकुमुदचन्द्र अवलोकन करवो आ खंडन सूत्रकृतांग सिद्धांतथी लखेल छे. जुओ बारमु अध्ययन इति नैयायिकदर्शनखंडन

हवे वैशेषिकमतखन्डन लखिये छिये वैशेषिकनां कहेलां तत्व पण तत्व नथी तेओए १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, एम छ तत्व मान्यां छे तेमा द्रव्य नव छे, १ पृथिवी, २ अप्, ३ तेज, ४ वायु, ५ आकाश, ६ काल, ७ दिक्, ८ आत्मा, ९ मन. प्रथमनां चारे द्रव्योने भिन्न भिन्न द्रव्य मान्यां छे ते वास्तविक नथी, कारण के परमाणु जे छे ते प्रयोग विश्रसाथी पृथिवी आदिना रूप पणें परिणमे पण छे, तो पण पोताना द्रव्यपणाने तजता नथी, अने अति प्रसंग होवाथी अवस्थाभेदें द्रव्यना भेद मानवा ते योग्य नथी वली आकाश तथा कालने तो अमे पण द्रव्य मानियें छिये, अने दिशा तो आकाशनु अवयव भूत छे तेथी पृथक् द्रव्य नथी. आत्मा शरीरमात्रव्यापी उपयोग लक्षण तेने अमे द्रव्य मानियें छियें द्रव्यमन पुद्गलद्रव्य अंतर्भावि छे, अने भावमन जीवनो गुण होवाथी, आत्मा अतर्भावी छे. वैशेषिक कहे छे के जेम पृथिवीत्वना योगथी पृथिवी छे, इत्यादि आ पण तेओनु केहेवु स्वप्रक्रियामात्र छे कारण के पृथिवीथी अन्य बीजुं कोई पृथिवीपणुं नथी, जेना योगथी पृथ्वी थाय परंतु सर्व जे कांइ छे ते सामान्य विशेषात्मक छे, नरसिंहाकारवत् उभयस्वभाव छे

नान्वय सहि भेदत्वा,न्नाभेदोन्वयवृत्तित. ॥ मृद्भेदद्वयसंसर्ग, वृत्ति जात्यतर घट' ॥ १ ॥ भावार्थ – घटमां मृत्तिकानो अन्वय नथी, पृथु बुध्न उदराकारादि हेतुथी भेद छे, तेमज अन्वयवर्त्ति होवाथी घटनो मृत्तिकाथी एकात भेद पण नथी, अर्थात् घट मृत्तिका रूपज छे अन्वय

व्यतिरेक बंनेना मलवाथी घट जात्यंतर रूप छे, अर्थात् मृत्तिकाथी कथंचित् भेदाभेदरूप छे. यथा ॥ न नरः सिंहरूपत्वा, न्न सिंहोनररूपतः ॥ शब्दविज्ञानकार्याणां, भेदोजात्यतरं हि सः ॥ १ ॥ भावार्थः—सिंहरूप होवाथी नर नथी, अने नररूप होवाथी सिंहपण नथी, तो शु छे? १ शब्द, २ विज्ञान, ३ कार्य, तेउंना भेद होवाथी नरसिंह, त्रीजी जातिछे

२ रूप, रस, गंध, स्पर्श, तेउंनी रूपि द्रव्यमां प्रवृत्ति छे, अने विशेष गुण छे, तथा १ संख्या, २ परिमाण, ३ पृथक्त्व, ४ संयोग, ५ विभाग, ६ परत्व, ७ अपरत्व, आ सामान्य गुण छे, तेउंनी सर्वद्रव्यमां प्रवृत्ति छे तथा १ बुद्धि, २ सुख, ३ दुःख, ४ इच्छा, ५ द्वेष, ६ प्रयत्न, ७ धर्म, ८ अधर्म, ९ संस्कार, आ आत्माना गुण छे तथा गुरुत्व पृथ्वी तथा जलमां छे, द्रव्यत्व पृथ्वी, जल, तेमज अग्निमां छे, स्नेह जलमांज छे, वेगनाम संस्कार ते मूर्त्त द्रव्योमांज छे, अने शब्द आकाशनो गुण छे. तेमां संख्यादि सामान्य गुण रूपादि पेठे द्रव्यस्वभाव होवाथी परउपाधिथी गुणज नथी. वली गुण जो द्रव्यथी पृथक् थइ जाय तो द्रव्यना स्वरूपनो नाश थइ जशे " गुणपर्यायवत् द्रव्यं " आ केहेवाथी गुण द्रव्यथी भिन्न नथी. द्रव्यग्रहण करवामां गुणनुं ग्रहण थइ जाय छे, तेज युक्त छे परंतु गुणने पृथक् पदार्थ मानवो, युक्त नथी. तथा शब्द आकाशनो गुण नथी, कारण के ते तो पौद्गलिक छे, अने आकाश तो अमूर्त्त छे बाकी जे वैशेषिकें कहेल छे ते प्रक्रियामात्र छे, साधन दूषणोनुं अंग नथी

३ कर्म पण गुणनी पेठे पृथक् पदार्थ मानवो अयुक्त छे

४ सामान्य बे प्रकारें छे एक पर, बीजुं अपर. तेमां पर सामान्य महासत्ता नाम छे द्रव्यादि त्रण पदार्थोमां व्यापि छे, अने अपर ते द्रव्यत्व, गुणत्व, कर्मत्वादि छे तेमां महासत्ताने पृथक् पदार्थ मानवु अयुक्त छे, कारण के सत्तामां जे सत् प्रत्यय छे, ते शु कोइ बीजी सत्ताना योगथी छे? के स्वरूपथी छे? जो कहो के बीजी सत्ताना योगथी छे तो ते सत्तामां सत्प्रत्यय वली बीजी सत्ताना योगथी होवो जोइये. एम करतां अनवस्था दूषण आवे छे. वली जो कहो के स्वरूपथी, सत् छे तो तो द्रव्यादि पण स्वरूपथी सत् छे. त्यारे हवे बकराना, गलाना स्तनोनी पेठे निष्फल सत्तानी कल्पना करवानु शुं प्रयोजन छे वली द्रव्यादि स-

त्ताना योगथीज सत् केहेवाय छे ? के सत्तासंबध विनाज सत्स्वरूप छे ? जो कहो के स्वत.ज सत्स्वरूप छे, तो सत्तानी कल्पना करवी व्यर्थ छे जो कहो के सत्ताना योगथी सत् छे तो तो शशविषाणपण सत्ताना योगथी सत् होवां जोइये. यथा ॥ स्वतोऽर्था· संतु सत्ताव, त्सत्तया किं सदात्मना ॥ असदात्मसु नैषा स्या, त्सर्वथातिप्रसंगतः ॥ १ ॥ इत्यादि आ दूषणो तुल्य योगक्षेम होवाथी अपर सामान्यमांपण जोडी देवां वली अमे पण वस्तुउं सामान्य विशेषरूप होवाथी तेउंने कथचित् सामान्यरूप मानियेजछिये ते वास्ते द्रव्यग्रहण करवामां सामान्यनुं ग्रहण थइगयुं, तेहेतुथी सामान्य, द्रव्यथी पृथक् पदार्थ नथी

५ विशेष अत्यंत व्यावृत्ति बुद्धिनो हेतु होवाथी वैशेषिकोए मानेल छे हवे जुउं ते विशेषमा जे विशेषबुद्धि छे, ते अपर विशेषोथी छे ? के स्वत ज स्वरूपथी छे ? अपर विशेषहेतु तो लागतो नथी, अनवस्था, तेमज विशेषमां विशेषनो अगीकार नथी जो कहो के स्वत.ज विशेषबुद्धिनो हेतु छे, तो पछी विशेषोने द्रव्यथी अतिरिक्त पदार्थ कल्पवा व्यर्थ छे अने द्रव्यथी अव्यतिरिक्त विशेषोने, सर्व वस्तुउं सामान्य विशेषात्मक होवाथी, अमे पण मानिये छिये

६ समवाय, अयुतसिद्ध आधार आधेयभूतोना जे इह प्रत्ययनो हेतु छे, ते समवाय केहेवाय छे वली समवाय नित्य, तेमज एक छे, एम वैशेषिक माने छे ते समवाय नित्य होवाथी, समवायी पण नित्य होवा जोईये जो समवायी अनित्य छे, तो समवाय पण अनित्य होवो जोइये ? कारण के समवायनो आधार समवायी छे तथा समवाय एक होवाथी समवायी पण एकज होवो जोइये अथवा समवायी अनेक होवाथी समवाय पणअनेक होवा जोइये वली समवाय जे पदार्थोनो समवायी संवध करे छे, ते समवाय ते पदार्थोनी साथे पोतानो संबंध बीजा समवायना योगथी करे छे ? के पोतेज पोतानो संवध करे छे ? जो कहो के बीजा समवायथी करे छे, तो तो अनवस्था दूषण छे, अने समवायपण बीजो छे नहि जो कहो के पोतानो संवध करे छे, तो तो गुण क्रियादि पण द[illegible] भावसंवधथी सवंधी छे तो हवे समवाय

एवीरीतें वैशेषिक मतमां पण सम्यक् पदार्थोनुं कथन आप्तोक्त नथी. तथा नैयायिक, वैशेषिक मतमां जे मोक्ष माने छे तेपण प्रेक्षावानोने मानवा योग्य नथी तेर्ज तो ज्यारे आत्मा ज्ञानथी रहित थाय, अर्थात् जडरूप थइजाय, त्यारे आत्मानो मोक्ष मानेछे. एवा मोक्षने कयो बुद्धिमान् उपादेय माने? कारण के एवो कोण बुद्धिमान् होय के सर्वसुख तेमज ज्ञानथी रहित थइ पाषाणतुल्य पोतानो आत्मा करवा चाहे? तेकारणथी कोइयें वैशेषिकनु उपहास्य पण करेल छे यथा॥ श्लोक॥ वरं वृंदावने रम्ये, क्रोष्टुत्वमभिवांछति ॥ न तु वैशेषिकीं मुक्तिं, गौतमोगतुमिछति ॥ १ ॥ स्वर्गनां सुख उपाधिसहितछे, अवधिवालां छे, तेमज परिमित आनंदरूप छे, अने मोक्ष तो निरुपाधिक, निरवधिक, अपरिमित आनंद ज्ञानसुखस्वरूप, विचक्षण पुरुष कहेछे जो मोक्ष होवुं पाषाण तुल्य छे, तो एवो मोक्ष प्राप्त करवानुं कांइ प्रयोजन नथी तेनाथी तो संसारज सारो छे के जे संसारमां दुःखमिश्रित सुख भोगववामां आवेछे. जरा विचार तो करो के थोडा सुखने भोगववु ते सारूं छे? के सर्वसुखनो उछेद सारो छे? इत्यादि विशेष चर्चा, स्याद्वादमंजरीनी टीकाथी जाणवी ते कारणथी नैयायिक, वैशेषिक बने मत उपादेय नथी.

हवे सांख्यमतनुं खंडन लखियें छिये सांख्यमत वास्तविक नथी. जुउ. परस्परविरोधी एवां सत्व, रज, तमोगुणोनु प्रकृति रूपोनु गुणीविना एकत्र अवस्थान अर्थात् रेहेवुं ते युक्त नथी जेम कृष्ण, श्वेतादि गुण, गुणिविना एकत्र रही शकता नथी तथा महत् आदि विकार होवामां, प्रकृतिमां विषमता उत्पन्न करनार कोइपण कारण नथी, कारण के प्रकृति विना बीजी कोइ वस्तु सांख्य मानता नथी आत्माने अकर्त्ता, अकिंचित्कर मानेछे जो स्वभावथी वैषम्य मानशो, तो निर्हेतुकतानी आपत्ति आवशे, कारण के कार्य कदी होय, अने कदी न होय, ते हेतु विना थइ शकतां नथी. तेमज खरशृंगादि जे नित्य असत् छे, अने आकाशादि जे नित्य सत्छे ते हेतुथी नथी यथा॥ नित्यसत्त्वमसत्त्वं वा, हेतोरन्यानपेक्षणात् ॥ अपेक्षातोहिभावाना, कदाचित्त्वसंभव ॥ १ ॥

वली स्वभाव प्रकृतिथी भिन्न छे? के अभिन्न छे? भिन्न तो नथी,

कारण के प्रकृति विना सांख्योए वीजी कांइवस्तु मानेली नथी जो कहो के अभिन्न छे तो तो प्रकृति छे, स्वभाव नथी

वली महत् तेमज अहंकार ज्ञानथी भिन्न अमे देखता नथी जुओ बुद्धि अध्यवसायमात्र छे, अने अहंकार हु सुखी, हु दुःखी, एवा स्वरूपवालो छे आ बनेमां चिद्रूप होवाथी आत्मानु गुणपणु छे, परंतु जडरूप प्रकृतिनो विकार नथी

वली तन्मात्राथी भूतोनी जे उत्पत्ति मानेछे, जेम के १ गधतन्मात्राथी पृथ्वी, २ रसतन्मात्राथी जल, ३ रूपतन्मात्राथी अग्नि, ४ स्पर्शतन्मात्राथी वायु, ५ शब्द तन्मात्राथी आकाश, आ तेओनु मानवु युक्त नथी जो बाह्यभूतनी अपेक्षाथी कहेता होतो अयुक्तछे आ बाह्य पांच भूतो निरतर विद्यमान होवाथी तेनी उत्पत्ति नथी "न कदाचिदनीदृश जगत् इतिवचनात्" अर्थात् आ जगत् प्रवाहथी अनादि कालथी एवुज चाल्यु आवे छे

जो एम कहोके दरेक शरीरनी अपेक्षाए अमे मानियें छिये तेओमां, त्वचा, हाड, कठणलक्षण पृथिवीछे, श्लेष्म, रुधिर, द्रव लक्षण जल छे, पक्ति (जठर) लक्षण अग्नि छे, पानापान (श्वासोच्छ्वास) लक्षण वायु छे, सुपिर (पोलाण) लक्षण आकाश छे आ पण केहेवु ठीक नथी, कारण के तेमा पण केटलाएक शरीरोनी उत्पत्ति पितानु शुक्र अने माताना रुधिरथी थायछे, त्यां तन्मात्राओनो गधपण नथी, अने अदृष्ट वस्तुओने कारण कल्पवामां अतिप्रसंग दूषण छे वली इडां, उद्भिज्ज, अंकुरादिनी उत्पत्ति पण वीजी वस्तुओथी थती देखवामा आवेछे ते कारणथी महत्, अहकार आदिनी उत्पत्ति सांख्योए जे पोतानी प्रक्रियाथी मानी छे, ते युक्तिरहित मानी छे केवल पोताना मतना रागथीज मानेली छे, वली आत्माने अकर्त्ता माने छे, तेथी तो कृतनाश, अकृत अभ्यागमनु दूषण आवेछे, तेमज बध मोक्षनो अभाव थायछे, अने निर्गुण होवाथी आत्मज्ञानशून्य थइ जायछे पूर्वोक्त सर्व युक्तिहीन होवाथी बालप्रलापमात्र छे

हवे साखमतना मोक्षनो विचार करियें "प्रकृति पुरुषांतरपरिज्ञानान् मुक्ति" अर्थात् प्रकृति पुरुषथी अन्य छे एवुं ज्यारे ज्ञान थाय छे, त्यारे मुक्ति थायछे यथा ॥ शुद्धचैतन्यरूपोय, पुरुष. पुरुषार्थत ॥ प्रकृत्यतरमज्ञात्वा, मोहात्संसारमाश्रित ॥ २ ॥ भावार्थ— पुरुष परमार्थथी शुद्ध

चैतन्यरूप छे. पोते पोताने प्रकृतिथी एकमेक समजेछे आ मोहथी संसारने आश्रित थइ रहेल छे ते हेतुथी प्रकृति सुखादिस्वभावथी ज्यांसुधि विवेकपूर्वक ग्रहण करशे नहि, त्यांसुधि मुक्ति नथी, तेमज केवलज्ञाननो उदय थवायीज मुक्ति छे, ए पण असत् छे. कारण के आत्मा एकांत नित्यछे, अने सुखादि, उत्पाद, व्यय स्वभाववालां छे, त्यारे तो विरुद्ध धर्म संसर्गथी आत्माथी प्रकृतिनो भेद प्रतीतज छे, तो हवे मुक्ति केम नहि?

हवे ते तो संसारी विचार करतो नथी, तेवास्ते मुक्ति नथी, जो एम कहेशो तो तो तमारा केहेवाथी कदापि मुक्ति थशे नहि एवो विवेक अध्यवसाय संसारिने कदापि थइ शकतो नथी, तेज बताविये छियें.

ज्यां सुधी संसारी छे त्यां सुधी विवेक परिभावनाथी संसारीपणुं दूर थतुं नथी तेवास्ते विवेक अध्यवसायना अभावथी कदापि संसारथी छुटवानुं नथी

तथा आ सृष्टि पेहेलां तो केवल आत्मा छे, एम तमे मानो छो, तो पछी आत्माने संसार क्यांथी लपटायो? जो कहो के निर्मल आत्माने संसार लपटाय छे, तो तो मोक्ष थया पछी पण संसार लपटाशे, हवे विचारो के मोक्ष शुं थयो? केवल विटवना थइ.

पूर्वपक्ष.–सृष्टि पेहेलां आत्माने दिदृक्षा थइ, ते दिदृक्षाना जोरथी प्रधाननी साथे पोतानु एकरूप देखायुं, तेथी ससारी थयो ज्यारे प्रकृतिनुं कुरूपणुं ध्यानमां आव्युं, त्यारे प्रकृतिथी वैराग्य थयो. पछी प्रकृति विषे दिदृक्षा न रही, त्यारे ससारपण न रह्यो

उत्तरपक्षः–आ तमारुं केहेवु स्वकृतांतविरुद्ध होवाथी अयुक्त छे. जुओ. दिदृक्षा, देखवानी अभिलाषानुं नाम छे ते अभिलाषा पूर्वे देखेला पदार्थोमां तेना स्मरणथी थाय छे. प्रकृति तो पूर्वे कदापि तेणे देखी नथी, तो केवीरीतें तेनेविषे स्मरण अभिलाषा होय? जो एम कहो के अनादि वासनाना बलथी प्रकृतिमांज स्मरण अभिलाषा छे, तोपण असत् छे, कारण के वासनापण प्रकृतिनो विकार होवाथी प्रकृति पेहेलां न होती जो एम कहो के वासना आत्माना स्वभावरूप छे. तोतो आत्मस्वरूपनी जेम वासनानो कदापि अभाव थशे नहि, अने मोक्षपण क-

दापि थशे नहि, ए प्रमाणे सांख्य मतपण बालकना खेलसमान थयो. इति सांख्यमतखडन

हवे मीमांसक मतनु खडन लखतां, तेना मतनु स्वरूप तो पूर्वे वताववेल छे, अने वेदांतियोना ब्रह्म (अद्वैत) नु खडन ईश्वरवादमां बीजा परिछेदमां विस्तारपूर्वक करेलु छे, तेथी आ स्थलें वर्णन करेलुं नथी इति मीमांसकमत

हवे जैमिनीय मतनुं खडन लखियेंछियें, जैमिनीय कहे छे के " हिंसागाध्यात् " जे हिसा इद्रियोना रसवास्ते, अथवा कुव्यसन निमित्तें करिये तेज हिसा अधर्मनो हेतु छे प्रमादना उदयथी कसाइ, माछिउनी जेम अने वेदोमां जे हिंसा कही छे ते हिसा नथी, परंतु धर्मनो हेतु छे, देवता, अतिथि, पितृउनी प्रीति संपादक होवाथी, तथाविध पूजा उपचारनी पेठे वली आ प्रीतिनु संपादन करवु असिद्ध नथी कारण के कारीरी प्रमुख यज्ञोना स्वसाध्य विषे वृष्टि आदि फलोनुं जे अव्यभिचारिपणु छे, ते यज्ञ करवाथी जे देवता तृप्त थाय छे, ते वृष्टि आदिनो हेतु छे तेवीजरीतें " त्रिपुरार्णववर्णित छगल " अर्थात् बकराना मांसनो होम करवाथी परराज्यनु जे वश थवु छे, तेपण तेमांसनी आहुतियोथी तृप्त थयेला देवताउनोज प्रभाव छे, अने अतिथि प्रति पण " मधु सपर्कसस्कारादिसमास्वादजा " प्रत्यक्षज देखाय छे अने पितृउने माटे जे श्राद्ध करवामां आवे छे, ते श्राद्धथी पितृउ तृप्त थतां, स्वसंताननी वृद्धि प्रत्यक्षज देखाय छे वली ते बाबतमां आगम पण प्रमाण आपेछे आगममां देवनी प्रीतिवास्ते, अश्वमेध, नरमेध, गोमेध, आदि यज्ञ करवा कहेल छे, अने अतिथिविषय " महोक्ष वा महाज वा, श्रोत्रियाय प्रकल्पयेदिति " एवु कहेलु छे वली पितृउनी प्रीति वास्ते आ प्रमाणें लखेलु छे

द्वौ मासौ मत्स्यमांसेन, त्रीन् मासान् हारिणेन तु ॥ औरभ्रेणाथ चतुर , शाकुनेनेह पच तु ॥ १ ॥ षण्मासश्छागमांसेन, पार्षतेनेह सप्त वै ॥ अष्टावेणस्य मांसेन, रौरवेण नवैव तु ॥ २ ॥ दशमासांस्तु तृप्यति, वराहमहिषामिषै ॥ शशकूर्मयोर्मांसेन, मासानेकादशैव तु ॥ ३ ॥ संवत्सर तु गव्येन, पयसा पायसेन तु ॥ वाध्रीणसस्य मांसेन, तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ ४ ॥ आ श्लोक स्मृतिना छे अर्थ —जो

पितृर्ठने मत्स्यनुं मांस आपे तो, पितृउ बे माससुधी तृप्त रहेछे. जो हरिणनुं मांस आपे तो, त्रणमाससुधी तृप्त रहेछे, जो मेंढानु मांस तेउने आपे तो, चारमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो जंगली कुकडानुं मांस तेउने आपे तो, पांचमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, जो बकरानुं मांस तेउने आपे तो, छमास सुधी तेउ तृप्त रहेछे, पृषतबिंदुयुक्त जे हरिण होय, ते पार्षत कहेवायछे, तेनुं मांस जो पितृउने देवामां आवे तो, पितृउ सातमास सुधी तृप्त रहेछे, जो एणमृगनुं मांस देवामां आवेतो, आठमास-सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो मोटा काला मृगनुं मांस देवामां आवे तो, नवमाससुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो सूअर, अने महिषनुं मांस देवामां आवेतो, दशमास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो ससला अने काचबा बनेनुं मांस देवामां आवे तो, अग्यार मास सुधी पितृउ तृप्त रहेछे, जो गायनु दुध अथवा खीर देवामां आवे तो, बार माससुधी पितरो तृप्त रहेछे, अने बहुज बूढा थयला लांबा कानवाला धोला बकरानुं मांस आपवामां आवे तो, बार वर्षसुधी पितरो तृप्त रहेछे. आ प्रमाणे मीमांसको माने छे.

हवे तेनु खंडन लखियें छियें. हे मीमांसक? वेदोमां जे हिंसा कहिछे, ते धर्मना हेतुरूप कदापि थइ शकेछे? तमारा केहेवामां प्रत्यक्ष स्ववचन विरोध छे जुउ जो धर्मनो हेतु छे, तो हिंसा केवी रीतें छे? जो हिंसा छे, तो धर्मनो हेतु ते केवी रीतें थइ शकेछे? यथा ॥ श्रूयतां धर्मसर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यतां ॥ आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां न समाचरेत् ॥ १ ॥ इत्यादि. जो धर्म कहेलो छे, तो हिंसा केवी रीतें धर्म थइ शकेछे? कारण के मातापण छे, अने ते वंध्यापण छे, एम कदी थइ शकतुं नथी

पूर्वपक्ष.—हिंसा कारणछे, अने धर्म तेनु कार्य छे

उत्तरपक्ष.—आ तमारूं केहेवुं असत् छे कारण के जे जेनी साथे अन्वय व्यतिरेकवालु होय छे, ते तेनुं कार्य थायछे जेम माटीना पिंड प्रमुखनुं घटादि कार्यछे, तेम धर्म कांइ हिंसाज करवाथी थतो नथी, कारण के तप, दान, स्वाध्याय प्रमुखपण धर्मनां कारण छे

पूर्वपक्ष.—अमे सामान्य हिंसाने मानता नथी, परतु विशिष्ट हिंसा-नेज धर्म कहियेंछियें. विशिष्ट हिंसा तेज छे, जे वेदोमां करवी कही छे.

उत्तरपक्ष —जो वेदनी हिंसा धर्मनी हेतु छे, तो शुं जे जीव यज्ञादिमां

मारवामां आवेछे, ते मरता नथी? ते कारणथी धर्म छे? अथवा शुं मरण समये तेउने आर्त्तध्याननो अजाव छे? ते कारणथी धर्म छे? अथवा जे जीव यज्ञादिमा मारवामां आवेछे ते मरीने स्वर्ग प्राप्त करेछे? ते कारणथी धर्मछे? प्रथम पक्ष तो वास्तविक नथी, कारण के प्राणनो त्याग करतां तो ते जीवने प्रत्यक्ष देखियें छिये बीजो पक्ष पण असत् छे, कारण के बीजाना मननु ध्यान डुर्लक्ष्य छे, ते कारणथी आर्त्तध्याननो अजाव कहेवो, तेपण परमार्थशून्य वचनमात्र छे, आर्त्तध्याननो अजाव तो शुं थवानो हतो परतु अरे डु खी छियें ? छे कोइ करुणासागर के अमने छोडावे? एम पोतानी जाषामां कहेतां कहेतां पोतानी जाषाथी विरस अरराट करतां, दीनमुखवालां, तेमज चक्षु फाडी चारे दिशाए जोतां, इत्यादि चिह्न देखवाथी, ते विचाराउनु आर्त्तध्यान स्पष्ट उपलब्ध थाय छे

पूर्वपक्ष.– जेम लोढानो गोलो पाणीमां डुबी जाय छे, तेनां जो पातलां पतरां करवामां आवे तो ते जेम पाणीमां नहि डुबतां तरे छे, तेमज जेम विष मृत्यु पमाडनार छे, तो पण मंत्रोथी सस्कार करतां थकां गुणकारि थाय छे, तथा जेम अग्नि दाहकस्वजाववालो छे, तो पण सत्यशीलादिना प्रजावथी दाहक थतो नथी, तेवीज रीते वेदमंत्रादिथी सस्कार पामेली हिंसा दोषनुं कारण नथी तेमज वेदोक्त हिसा निदनीय कदापि नथी, कारण के ते हिंसा करनारा याज्ञिक ब्राह्मणो जगत् मां पूजनीय देखाय छे

उतरपक्ष.– पूर्वोक्त तमारु सर्व कथन असत् छे, कारण के जेटलां दृष्टांत तमे कह्यां ते सर्व वैषम्य छे, तेथी सिद्धि काइपण यई शकती नथी लोढानो गोलो पतरांरूप थई जल उपर जे तरे छे ते परिणामातर थवाथी तरे छे, इत्यादि, परतु वेदमंत्रोथी सस्कार करीने ज्यारे पशुउने मारवामां आवे छे, त्यारे तेउमां परिणामांतर शु थाय छे ? शु ते परिणामांतरथी, ते पशुउने मारतां डु ख थतु नथी ? डु खथी तो तेउ प्रगट अरराट शब्द करे छे तो हवे लोहपत्रनु दृष्टात केवी रीतें समीचीन थइ शके छे ?

पूर्वपक्ष – यज्ञमां जे पशु मारवामां आवे छे, ते सर्व देवता थई जाय छे, आ यज्ञ करवामां परोपकार छे

उत्तरपक्षः— आ कथनमां प्रमाण शुं छे ? प्रत्यक्ष प्रमाण तो नथी, कारण के ते तो इन्द्रिय संबंध वर्त्तमान वस्तुनुं ग्राहक छे "संबंधोवर्त्तमानं च, गृह्यते चक्षुरादिनेति वचनात्." तेमज अनुमान पण नथी, कारण के तत्प्रतिबद्ध लिंग कोइपण देखातु नथी. वली आगम प्रमाण पण नथी, कारण के आगम तो झगडानुं घर छे, तेथी तमारु कथन सिद्ध थयुं नहि. तथा अर्थापत्ति अने उपमान आ बंने अनुमाननी अंतर्गत छे, तेथी अनुमानना खंडनथी ते बंनेनुं पण खंडन थइ गयुं

पूर्वपक्षः— जेम तमे जिनमंदिर बनावतां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा थतां परिणामविशेषथी तेने पुण्यरूपे कल्पोछो, तेम अमे पण यज्ञमां जे हिंसा कराय छे, ते पुण्यनिमित्त थाय छे, एम मानियें छियें, कारण के वेदोक्त विधि विधानरूप परिणामविशेष अहीयां पण निःसंदेह होवाथी केम पुण्य न थाय ?

उत्तरपक्षः— परिणामविशेष पण तेज, पुण्यनु कारण थाय के ज्यां बीजो कोइ उपाय न होय, तेमज यत्नाथी प्रवृत्ति होय तेवी प्रवृत्ति जिनमंदिरमां थइ शके छे वली जिनमंदिर विना श्री भगवान्नी प्रतिमा रही शकती नथी, जे स्थानमां प्रतिमा राखवामां आवे तेनुं नाम जिनमंदिर छे जो कहो के जिनप्रतिमा पूजवाथी शुं लाभ छे ? तो अमारो सवाल ए छे के पुस्तकमां ककारादि अक्षर लखोछो, ते लखवाथी शु लाभ छे ? जो कहो के ककारादि अक्षरोनी स्थापना देखवाथी वस्तुनुं ज्ञान थाय छे, तो तेवीजरीते जिनप्रतिमा देखवाथी जिनेश्वर भगवान्ना स्वरूपनु ज्ञान थाय छे जो कहो के प्रतिमा तो कारीगरें पाषाणनी बनावी छे, तेथी शु ज्ञान थाय छे? तो अमे पुछियेछियें के वेद, कुरान, इंजील प्रमुख पुस्तक लिखारीओए शाही तेमज कागलोथी बनावेलां छे, तेउनाथी शुं ज्ञान थाय छे ? जो कहो के ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, अक्षरोनी स्थापना अमारा ज्ञाननु निमित्त कारण छे, तेवीज रीतें जिनेश्वर देवना स्वरूपनुं ज्ञान तो अमारी समजणथी थाय छे, परतु ते स्वरूपनु निमित्त कारण प्रतिमा छे कारण के जो बुद्धिमान् पुरुष, कोइ वस्तुनो नकशो अर्थात् चित्र नहि देखे तो ते वस्तुनुं स्वरूप कदापि जाणी शकशे नहि. ते कारणथी जे बुद्धिमान् छे ते अवश्य स्थापना माने छे.

जो एम कहो के परमेश्वर तो निराकार, ज्योति स्वरूप,सर्वव्यापक छे तेनी मूर्त्ति केवीरीतें वनी शके ?

उत्तर – आ तमारु केहेवु अवास्तविक छे कारण के जो तमे परमेश्वरनु रूप, आकार, (मूर्त्ति) मानता नथी, तो तो वेद, कुरान, इंजील तेउने परमेश्वरनां वचन मानवा केवीरीतें सत्य थइ शके छे ? मुखविना साक्षरशब्द कदापि थइ शकता नथी

जो कहो के ईश्वर मुख विनाज शब्द करी शके छे, तो ते वातमां कांइ प्रमाण नथी ते कारणथी साक्षर शब्द मुखविना निकलता नथी, अने शरीर विना मुख होतु नथी, तेवास्ते जो कोइ वादी कोइ पुस्तकने ईश्वरवचन मानशे, तो जरुर तेने ईश्वरनुं मुख तेमज शरीर मानवु पडशे, अने ज्यारे शरीर मानशे, त्यारे भगवान्‌नी प्रतिमा पण जरुर मानवी पडशे, ज्यारे प्रतिमा मानवी सिद्ध थइ, त्यारे मंदिरपण जरुर वनाववु पडशे ते कारणथी जिनमंदिर वनाववु ते अवश्य कर्त्तव्य छे वली जिनमंदिर वनावनारा यत्नापूर्वक वनावे छे, तेमज जिनमंदिर वनावतां पृथ्वीकायादि जीव जे अस्पष्ट चैतन्य छे, तेउनी हिंसा थता अल्प पाप अने वहु निर्जरा छे, तेथी जिनमंदिर तथा जिनप्रतिमा अवश्य उपादेय छे वली तमारा मतनां श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास प्रमुखमा यम, नियमादिथी पण स्वर्गप्राप्ति कही छे, तो पछी कृपण, दीन, अनाथ एवा पंचेंद्रिय जीवोनो वध यज्ञमा शा वास्ते करो छो ? तमे निरपराधी, कृपण, दीन, अनाथ जीवोनो यज्ञादिमां वध करोछो तेथी तो सिद्ध थाय छे के तमे तमारा सर्वपुण्यनो नाश करी दुर्गतिमां जशो तमारा शुभ परिणाम थवा ते अत्यंत दुर्लभ छे

जो कहो के जिनमंदिर वनाववामां पण हिंसा थाय छे, ते कारणथी ते वनाववामा पण पुण्य नथी

उत्तरपक्ष –आ तमारु केहेवु अयुक्त छे, कारण के जिनमंदिर तेमज जिनप्रतिमा देखवाथी, तेमना दर्शनथी, तेमज भगवान्‌ना गुणानुरागथी अनेक भव्यजीवोने वोधिलाभ (सम्यक्त्व) थाय छे वली पूजातिशय देखवाथी मन प्रसाद थाय छे, मन प्रसादथी समाधि थाय छे, अनुक्रमे नि श्रेयस अर्थात् मोक्षनी प्राप्ति थाय छे ॥ तथा च भगवान् पंचलिंगी

कार. ॥ पुढवाइयाण जइविहु, होइ विणासो जिणालयाहिंतो ॥ तव्वि-
सयावि सुदिठिस्स, नियम उंअत्थि अणुकपा ॥ १ ॥ ए आहि तो बुद्धा,
विरिया रक्कंति जेण पुढवाई ॥ इत्तो निव्वाणगया, अवाहया आजवम-
णंतं ॥ २ ॥ रोगसिरावेहोव्व, सुविज्ज किरियाव सुप्पउत्ताउ ॥ परिणाम
सुंदरच्चिय, चिठासे वाह जोगेविति ॥ ३ ॥ भावार्थः— यद्यपि जिनमंदिर
बनाववामां पृथिवीकायादि जीवोनी हिंसा थाय छे, तोपण सम्यक् दृष्टि
जीवोनी ते जीवो उपर निश्चयपूर्वक अनुकपा छे ॥ १ ॥ तेउनी हिंसाथी
निवृत्त थइने ज्ञानियो निर्वाण पामेला छे. केवा निर्वाणने ? अनंतकाल-
सुधी रेहेनारा अव्याबाध सुखमय निर्वाणने ॥ २ ॥ जेम रोगिनी नाडी
प्रमुखने बहुज कालथी वैद्य विंधे छे, ते वैद्यना प्रयोगमां परिणामनी
सुदरताथी कदाचित् ते रोगी मरणपण पामे तोपण वैद्यने जेम पाप नथी,
तेमज जिनमंदिर बनाववामां यत्नपूर्वक प्रवर्त्तता पुरुषोने, ते जीवो उ-
पर अनुकपाज छे, अने वेदकथन मुजब वध करवामां किंचित् मात्र प-
ण पुण्य अमे देखता नथी.

पूर्वपक्षः— ब्राह्मणोने पुरोडाश (यज्ञमां होमवानु बलिदान) आदि
प्रदान करवाथी पुण्यानुबंधी गुण थाय छे

उत्तरपक्षः—आ तमारू केहेवु वास्तविक नथी कारण के पवित्र सुव-
र्णादिप्रदान मात्रथी पण पुण्यउपार्जननो संभव थायछे, अने कृपण, दीन
अनाथ, पशुगणने मारवां, तेमज तेउना मांसनुं दान करवु, आ केवल त-
मारी निर्दयता तेमज मांसलोलुपताज बतावी आपेछे

पूर्वपक्षः—अमे नि.केवल प्रदानमात्रज पशुवध क्रियानुं फल मानता
नथी, परंतु भूति (लक्ष्मी) आदिपण प्राप्त थायछे यदाह श्रुतिः " श्वेत-
वायव्यमजमालभेत भूतिकामइत्यादि " भावार्थ —श्वेतवर्णना बकराने,
जेनो स्वामीवायु देवताछे, एवा बकराने आलभेत हिंसेत् अर्थात् मारे,
कोण मारे? लक्ष्मीना कामी मारे

उत्तरपक्ष —आ तमारू केहेवु पण व्यभिचार पिशाचथी ग्रस्त थवाथी
अप्रामाणिक छे कारण के भूति (लक्ष्मी) अन्य उपायथी पण साध्यमानछे

पूर्वपक्ष — परंतु यज्ञमां बकराप्रमुख जे मारवामा आवेछे, ते मरीने
देवगति प्राप्त करेछे, आ यज्ञमां मरनार जीवो उपर उपकार छे.

उत्तरपक्ष.–आ तमारूं केहेवु पण प्रमाणना अन्नावथी वचनमात्र ठे, कारण के यज्ञमां मारवामां आवेला पशुर्उमांथी कोइ पण सज्जतिनो लाज थवाथी हर्षवत थइ आ लोकमां पाठो आवी स्वर्गना सुखनुं निरूपण करतो देखातो नथी.

पूर्वपक्ष –आ कथनमां आगम प्रमाण ठे यथा ॥ औपध्य.पशवोवृक्षा, स्तिर्यंच पक्षिणस्तथा ॥ यज्ञार्थं निधन प्राप्ता. प्राप्नुवंत्युच्छ्रित पुनरित्यादि॥ न्नावार्थ.–ओषधी, अजादि पशु, किंजल्क (कमलनाफुलमारेहेनार) आदि पक्षी, जेर्उनो यज्ञमां होम करवामां आवेठे, तेर्उ उन्नति प्राप्त करेठे

उत्तरपक्ष –आ पण तमारू केहेवु वास्तविक नथी तमारू आगम पौरुषेय ठे के अपौरुषेय ठे, इत्यादि विकल्पोनु हवे पठी खडन करवामां आवशे वली श्रौत (वैदिक) विधिथी पशुर्उने मारवाथी जो स्वर्ग प्राप्ति थती होय तो तो कसाइ प्रमुख पण स्वर्गवासी थइ जशे तथाच पठन्ति पारमर्षा ॥ यूप ठित्वा पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमं ॥ यद्येवं गम्यते स्वर्गे, नरके केन गम्यते ॥ १ ॥ वली जो अपरिचित, अस्पष्टचैतन्य, अनुपकारी पशुर्उने मारवाथी स्वर्गप्राप्ति थती होय तो, परिचित, स्पष्ट चैतन्य, तेमज परमोपकारी मातपितादिने मारवाथी याज्ञिकोने तेनाथी विशेष पदनी प्राप्ति थशे तेथी तेमपण करवु जोइयें

पूर्वपक्ष –"अचिंत्योहि मणिमंत्रौपधीना प्रज्ञावइति वचनात्" ते कारणथी वेदना मंत्रोनी अचित्य शक्ति होवाथी ते मंत्रोथी सस्कार करायेला पशुने मारवाथी अवश्य स्वर्गप्राप्ति थायठे

उत्तरपक्ष –आ कथन पण व्यज्ञिचारी ठे कारण के आ लोकमा जेम विवाह,गर्न्नाधान,जन्मसमयादिविषे ते मंत्रोनो व्यज्ञिचार देखवामां आवेठे, तेम अदृष्ट स्वर्ग आदिमां पण तेर्उना व्यज्ञिचारनु अनुमान करियें ठियें कारण के वेदोक्तमत्रोथी संस्कार करायेला विवाहनी अनतरज स्त्री, विधवा, अल्पायुष्य, दरिद्रताप्रमुख उपद्रवथी वियोगी रहेली, देखवामा आवेठे तेमज वेदमत्रोना संस्कार विना पण केटलाएक विवाह (लग्न) करनारा सुखी, धनवान् इत्यादि देखवामा आवेठे.

पूर्वपक्ष –जे विवाहआदिमा विधवा आदि थइ जायठे, त्या क्रियाना वैगुण्य (खामी) थी विसवाद (विरुद्धता) थायठे.

उत्तरपक्ष.—आ तमारा केहेवाथी ते संशय कदी दूर थशे नहि शुं त्यां क्रियानुं वैगुण्य विसंवादनो हेतुछे? के वेदमंत्रोनी असमर्थता विसंवादनो हेतु छे?

पूर्वपक्षः—जेम तमारा मतमां "आरोग्ग बोहिलाभ समाहिवरमुत्तमं दितु" इत्यादि वचनोनुं कालांतरेंज फल चाहोछो, तेम अमारा अभिमत वेदवचनोना फलनी पण आ लोकमां कल्पना करता नथी, परंतु लोकांतरमांज तेनुं फल थायछे, ते कारणथी विवाह आदिना उपालंभनो अवकाश नथी

उत्तरपक्ष.—अहो विचित्रवादि! जेम वर्त्तमान जन्मविषे विवाह आदिमां प्रयुक्त मंत्रसंस्कारथी तेनुं फल भविष्य जन्ममां थाय छे, तेमज बीजा, त्रीजा आदिजन्ममां पण विवाहआदिना पुण्यहेतु मानवाथी अनंतभवोनुं अनुसंधान थशे, एम तो कदापि संसारनी समाप्ति जेम थशे नहि, तेम कोइने मोक्षप्राप्ति पण थशे नहि. तेथी सिद्ध थयु के वेदज अपर्यवसित (अनंत) संसार वल्लरी (वेल) नु मूल छे जैननी आरोग्यादि प्रार्थना, असत्य, अमृषा भाषा छे, परिणाम विशुद्धिनुं कारण होवाथी दोष कर्ता नथी, कारण के तेमां भावआरोग्य प्रमुखनी जे विवक्षा छे, अने ते आरोग्यपणुं, चतुर्गति संसाररूप भावरोगने क्षय करवारूप होवाथी, उत्तम फल छे, तेने वास्ते जे प्रार्थना करवी ते विवेकवान्ने केम आदरवा योग्य न होय? एम पण न केहेवुं के परिणामशुद्धिथी ते फलनी प्राप्ति नथी, कारण के सर्ववादिओने भावशुद्धिथी फल पामवामां विवाद नथी, वली एमपण न कहेवुं के वेदविहित हिंसा बुरी नथी, कारण के सम्यक्दर्शन, ज्ञानसंपन्न, अर्चिमार्गप्रतिपन्न वेदांतवादियोये पण तेने निंदी छे "तथाच तत्त्वदर्शिनः पठन्ति ॥ श्लोक ॥ देवोपहारव्याजेन, यज्ञव्याजेन वाथवा ॥ घ्नति जंतून् गतघृणा, घोरां ते याति दुर्गति ॥ १ ॥ वेदांतिकाअप्याहुः ॥ अंधे तमसि मज्जाम., पशुभिर्ये यजामहे ॥ हिंसा नाम भवेद्धर्मो, न भूतोन भविष्यति ॥ तथा अग्निर्मामेतस्मात् हिंसाकृतादेनसोमुंचतुछांदसत्वान्मोचयतु इत्यर्थः" व्यासेनाप्युक्त ॥ ज्ञानपालिपरिक्षिप्ते, ब्रह्मचर्यदयाभसि ॥ स्नात्वातिविमले तीर्थे, पाप पंकापहारिणि ॥ १ ॥ ध्यानाग्नौ जीवकुंडस्थे, दयामारुतदीपिते ॥ असत्

कर्म समित्क्षेपे, रग्निहोत्र कुरूत्तम ॥ २ ॥ कषायपशुभिर्दुष्टे, धर्मकामार्थ नाशके.॥ शममंत्रहुतैर्यज्ञं, विधेहि विहितं बुधे. ॥३॥ प्राणिघातात्तुयोधर्म, मीहते मूढमानस ॥ सवाछति सुधावृष्टि, कृष्णादिमुखकोटरात् ॥४॥ ५०

वली यज्ञ करनाराउं पूजाय छे एम जे तमे कह्यो छो ते पण असार छे, कारण के अज्ञानि जनोज तेउंनी पूजा करे छे, परतु बुद्धिमान् करता नथी, मूर्खोनु पूजन अप्रामाणिक छे, कारण के मूर्ख तो कुतरा, गधे-डाने पण पूजेछे

वली तमे कह्युं के वेदविहिता हिंसा, देवता, अतिथि, पितृप्रीतिसं-पादक होवाथी दोपरूप थती नथी, आ पण असत्य छे, कारण के देव-ताउंने तो सकल्पमात्रथीज अभिमत आहारना रसनो स्वाद प्राप्त थइ जाय छे, वली देवताउंना शरीर वैक्रिय रूप छे, ते तमारी जुगुप्सित प-शुमासादि आहुति लेवाने इच्छावान् थताज नथी जो देवताउंने पण केवल आहारी मानशो, तो देवताउंना शरीर तमे जे मत्रमय मान्या छे, तेने विरोध आवशे, तेमज अन्युपगम (करेला निर्णय)ने वाध आवशे, देवताउंना शरीर मंत्रमय तमारा मतमां असिद्ध नथी "चतुर्थ्यंत पदमेव देवता इति जैमिनीयवचनप्रामाण्यात् ॥ तथाच ॥ मृगेन्द्र शब्देतरत्वे यु-गपद्भिन्नदेशेपु यष्टृपु न सा प्रयाति सानिध्यं मूर्त्तत्वादस्मदादिवदिति "

तथा जे वस्तुनी आहुति देवताउंने आपो छो, ते तो जस्म जावमात्र थई जाय छे, तो पछी देवता शु ते जस्म अर्थात् राख खाय छे ? तेथी तमारु कहेवु प्रलापमात्र छे

वली आ जे त्रेताग्नि छे ते तेत्रीश क्रोड देवताउंनु मुख छे, " अग्नि मुखावै देवा इति श्रुते " त्यारे तो उत्तम, मध्यम, अधम सर्व देवता एकज मुखथी खानारा सिद्ध थया, सर्वे पोतपोतामा जूठ (अजीठु) खा-नारा वनी गया, तेथी तो अनार्योथी पण अधिक थईगया,कारण के अ-नार्यो जो के एकपात्रमा एकठा खाय छे, परतु एक मुखथी खाता नथी

वली एक शरीरमां अनेक मुख छे, ए वात तो अमे आगल पण सां-जलता हता, परतु अनेक शरीरोनु एक मुख, आ तो मोटु आश्चर्य छे, ज्यारे सर्व देवताउंनुं एक मुख मान्यु, त्यारे कोईपुरुपे जो एक देवतानु पूजादिथी आराधन कर्यु, अने वीजा देवताउंनी निंदा करी विराधना

करी, तो तो एक मुखथी युगपत् अनुग्रह, निग्रह वाक्यना उच्चारणमांज व्यभिचारनो प्रसंग आवशे.

वली मुख देहनो नवमो भाग छे, ज्यारे देवताउनां मुखज दाहात्मक छे, त्यारे एकेक देवतानुं शरीर दाहात्मक होवाथी त्रणे भुवन भस्मीभूत थईजवां जोइये ? आटली चर्चाथी सर्युं

वली कारीरी यज्ञादिमां वृष्टयादि फलनो जे अव्यभिचार छे, ते फलमां आहुतिथी संतुष्ट थयेला देवतानो अनुग्रह जे तमे कहोछो ते पण अनेकांतिक छे, कोइस्थलें व्यभिचार पण देखवामां आवे छे ज्यां व्यभिचार नथी, त्यां पण आहुतिनुं भोजन करवाथी अनुग्रह नथी, परंतु ते देवताविशेष, अतिशय ज्ञानी छे, पोताने उद्देशीने करेला पूजा उपचारने देखीने, पोताना स्थानमांज स्थित थया थका, पूजा करनारउपर प्रसन्न थईने, तेनुं कार्य पोतानी इछाथी करी आपे छे. अनुपयोगथी नहि जाणता, अथवा जाणता थका पण, पूजकना अभाग्यथी कार्य नथी पण करता ? कारण के द्रव्य, क्षेत्र, काल भावआदिनी सहायताथी कार्यनुं थवु नजरे पडेछे, अने ते जे पूजा उपचार छे, ते निःकेवल पशुउनाज मारवाथी थई शके छे एम नथी, परंतु बीजी रीतें पण थइ शके-छे, तो पछी जेनुं फल एक पापरूपज छे एवी सौनिक (कसाइ) वृत्ति करवाथी शु लाभ छे ?

वली जे छगल अर्थात् बकरानुं मांस होमवाथी परराज्य वश करनारी सिद्धादि देवीने संतुष्ट करवानुं जे अनुमान छे, तेमां शुं आश्चर्य छे ? केटलाएक क्षुद्र देवताउ तेवीज रीतें संतुष्ट थाय छे, त्यां पण ते दुष्ट देवता पोतानी पूजा देखीने राजी थाय छे, परंतु मलिन मांस खावाथी राजी थता नथी जो कदी होम करेली वस्तुने खाता होय तो निंबपत्र कडवांतेल, आरनाल (वाकला) धूमांश आदि होम करेलां द्रव्य पण तेउनुं भोजन थई जशे वाह ! शुं तमारा देवता सुंदर भोजन करे छे ?

वली अतिथिनी परोणागत सुंदर संस्कार करेला पक्वान्न आदिथी पण थई शके छे, तो पछी तेउने वास्ते महोक्ष, महाअजादिनी कल्पना करवी, ते नि केवल तमारी निर्विवेकता बतावी आपे छे

वली श्राद्धादि करवाथी पितरोनी जे प्रीति मानो छो, ते पण अने-

कांतिक छे, कारण के केटलाएक श्राद्ध करता नथी तो पण तेउनी संतान वृद्धि देखवामां आवे छे जुंमनाटोलानी जेवी वृद्धि देखाय छे. तेथी श्राद्ध आदि जे करवु छे, ते मुग्ध लोकोने विप्रतारण (ठगवा) मात्रज फल थाय छे जे पितरो लोकांतर पामेला छे, ते पोताना शुज अशुज कर्मोने अनुसारे देव, नारकादि गतियोमां सुख दुःख जोगवी रह्या छे, तो पछी तेउ पुत्र प्रमुखें आपेला पिंडोने केवी रीतें जोगववानी इछा करी शके छे ? " तथाच युष्मद्यूथिनः पठन्ति ॥ मृतानामपि जतूना, श्राद्धं चेत्तृप्तिकारणं ॥ तंनिर्वाणप्रदीपस्य, स्नेहः सवर्द्धयेच्छिखामिति ॥

तथा श्राद्ध करवाथी ते पितरोने पुण्य केवीरीतें पहोंचे छे ? कारण के पुण्यतो बीजाए करेलु छे, वली पुण्य पोते जड रूप छे, तथा पगरहित छे, तेथी पितरोने पहोंची शकतुं नथी जो कहो के उद्देश तो पितरोनो छे, परंतु पुण्य, श्राद्धकरनारा पुत्रादिने थाय छे, ते पण केहेवु वास्तविक नथी पुत्रादिने पुण्य थतु नथी, तेनु कारण ए छे के पुत्रादिना मनमां वासना एवी नथी के जे कार्य अमे करिये छियें तेनु फल अमने मले, तो पछी पुण्यनी जावना विना पुण्य फल मलतु नथी ते कारणथी पितरो के पुत्रादि कोइने श्राद्ध करवानु फल मलतुं नथी, परंतु अधरथीज त्रिशकुना दृष्टांतनी पेठे विलीन थई जाय छे

वली पापानुबंधि जे पुण्य छे, 'ते तत्त्वथी पापरूपज छे' जो कहो के ब्राह्मण जे कांइ खाय छे, ते पितरोने गमे छे, ते वात सत्य छे एवी प्रतीति तो तमनेज थती हशे, अमारी नजरमां तो ब्राह्मणोनुं मोटु पेट थयेलुं आवे छे, परंतु तेउना पेटमां प्रवेश करीने, पितरो खाता होय एम कदापि देखता नथी जोजन अवसरे ब्राह्मणोना उदरमां प्रवेश करता पितरोनु कांइपण चिह्न अमारी दृष्टिए पडतु नथी केवल ब्राह्मणोज तृप्त थता देखियें छिये

वली तमे कह्यु हतु के अमारी पासे आगम प्रमाण छे, तो पुछिये छियें के, ते तमारु आगम पौरुपेय छे ? के अपौरुपेय छे ? जो कहो के पौरुपेय छे, तो शु ते सर्वज्ञनु करेलु छे ? के असर्वज्ञनु करेलु छे ? जो प्रथम पक्ष मानशो तो तमारा मतने व्याहति थशे, कारण कें तमारो आ सिद्धांत छे " अतींद्रियाणामर्थानां, साक्षाद्दृष्टा न विद्यते ॥ नित्ये-

भ्योवेदवाक्येभ्यो, यथार्थत्वविनिश्चय. ॥ १ ॥ सारांश के अतींद्रिय पदार्थोनो कोइ साक्षात् द्रष्टा नथी. बीजो पक्ष मानशो तो दूषणवाला (असर्वज्ञ) कर्त्तानां शास्त्रो उपर विश्वास थतो नथी जो कहो के अपौरुपेय छे, तो संभवज थइ शकतो नथी स्वरूप निराकरणथी घोडाना शृंगरूप पुरुष क्रियानुगत तेनुं रूप छे, सारांश के पुरुषक्रिया विना ते केवी रीतें थइ शके छे ? ते कारणथी जे साक्षर वचन छे, ते पौरुपेयज छे, कुमार संभवादि वचननी जेम वेद पण वचनात्मकज छे " तथा चाहु. ॥ ताल्वादिजन्मा ननु वर्णवर्गो, वर्णात्मकोवेद इति स्फुटं च ॥ पुंसश्च ताल्वादिरत. कथ स्या, दपौरुपेयोयमिति प्रतीति. ॥ १ ॥ इति " श्रुतिने अपौरुपेय अंगीकार करी, तो पण तदर्थव्याख्याने पौरुपेयज अगीकार करी छे. अन्यथा " अग्निहोत्रं जुहुयात् स्वर्गकामः " तेनो अर्थ " स्वमांसं भक्षयेत् इति " एम नियामकना अभावथी केम न थई जाय ? ते कारणथी शास्त्रने पौरुपेयज मानवां ते श्रेय छे तमारा हठथी कदी वेद अपौरुपेय मानियें, तो तेथी वेदनी प्रमाणता थशे नहीं, कारण के प्रमाणता आप्त पुरुपने आधीन छे ज्यारे वेद प्रमाण न थया, त्यारे ते वेदनुं कथन, तथावेदानुसारिणी स्मृतियो पण प्रमाणभूत थयां नही, तेथी हिंसामय यज्ञ तथा श्राद्धादिविधि पण प्रमाणथी विरुद्ध थया.

पूर्वपक्ष.– " न हिंस्यात् सर्वभूतानि " इत्यादिथी जे हिंसानो निषेध करेलो छे, ते औत्सर्गिकमार्ग छे, अर्थात् सामान्य विधि छे, अने वेदविहिता जे हिंसा छे ते अपवाद मार्ग छे अर्थात् विशेष विधि छे ते कारणथी, तथा अपवाद उत्सर्गथी वलवान् होवाथी वेदविहिता हिंसा दोषनुं कारण नथी " उत्सर्गापवादयोरपवादविधिर्वलीयानिति न्यायात् " तमारा जैनमतमां पण हिंसाना एकांत निषेध नथी केटलाएक कारणोमां पृथ्वीकायादि जीवोनी हिंसा करवानी आज्ञा छे. वली ज्यारे साधु रोग पीडित थाय छे, तेमज असमर्थ अने ग्लान थाय छे, त्यारे आधाकर्मादि आहार ग्रहण करवानी पण आज्ञा छे, तेवीज रीतें अमारा मतमां याज्ञिकी हिंसा देवता, अतिथिनी प्रीतिवास्ते पुष्ट आलंबनरूप होवाथी अपवादरूप छे, ते कारणथी तेमां दोष नथी.

उत्तरपक्ष.– अन्यकार्यवास्ते उत्सर्गवाक्य, अने अन्यकार्यवास्ते अप-

वादवाक्य, केहेवां, ते उत्सर्ग, अपवाद कदी पण थइ शकतां नथी परंतु जे अर्थवास्ते शास्त्रमां उत्सर्ग कहेल होय तेज अर्थवास्ते अपवाद केहेवो जोइये, त्यारेंज उत्सर्ग अपवाद थइशके छे. ते बने उन्नत निम्नादि (उचां नीचा) व्यवहारवत् परस्पर सापेक्ष होवाथी एक अर्थनां साधक थइ शके छे जेम के जैनोए संयम पालवा अर्थे नवकोटि विशुद्ध आहार ग्रहण करवो, ते उत्सर्गमार्ग छे तेवीज रीते द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी आपत्तिमां पडता गत्यंतरना अभावथी, पचकादि यत्नापूर्वक अनेपणीय आहारादिने ग्रहणकरवा ते अपवादमार्ग छे, तेपण संयम पालवाने वास्तेज छे एमपण न केहेवु के जेसाधुने मरणज एक शरण छे, तेने गत्यंतर अभावनी असिद्धि छे ॥ उक्त चार्षेपि. ॥ सव्वठ संजम स जमाउ, अप्पाणमेवरखिज्जा ॥ मुच्चइ अइ वायाउ, पुणो विसोहीनया विरइ ॥१॥ इत्यागमात् ॥ भावार्थ —सर्वरीते संयम पालवो, जो संयममां दूषण लागवाथी प्राणनी रक्षा थती होय तो संयममां दूषण पण लगावीने रक्षण करवु, प्राण रेहेवाथी प्रायश्चित्तद्वारा ते पापथी मुक्त थइ शुद्ध थवाशे, अने अविरतिपणु पण रहेशे नहि वली आयुर्वेदमां पण कह्यु छे के, जे वस्तु कोइ रोगमां कोइ अवस्थामां अपथ्य छे, तेज वस्तु तेज रोगमां बीजी अवस्थामां देश, काल जोइ आपे तो पथ्य छे देशादि अपेक्षाए ज्वरवालाने दही पण खावा देवामां आवे छे तथा च वैद्याः ॥ कालाविरोधि निर्दिष्ट, ज्वरादौ लंघन हितं ॥ क्षतेऽनिलश्रमक्रोध , शोककामकृतज्वरात् ॥ १ ॥ जेम प्रथम अपथ्यनो परिहार करवो, अने बीजी अवस्थामा तेनेज भोगवाववां, आ बने प्रसंगे रोगनु निवारण करवानु प्रयोजन छे. तेथी एम सिद्ध थाय छे के एकज वस्तुविषयक उत्सर्ग अपवाद छे

तमारो उत्सर्ग एक अर्थवास्ते छे, अने, अदवाद बीजा अर्थ वास्ते छे जुउ " न हिंस्यात् सर्वभूतानि " आ जे उत्सर्ग छे, ते दुर्गतिना निषेध वास्ते छे, अने जे तमारी अपवाद, हिंसा छे, ते देवता, अतिथि, पितृउनी प्रीतिसंपादन अर्थे छे ते कारणथी परस्पर निरपेक्ष होवाथी, उत्सर्ग, अपवाद विधि थइ शकता नथी हवे विचारो के तमारो अपवाद, उत्सर्गविधिथी केवीरीतें बलवान् थइ शके छे ?

एम पण न कहेवु के वैदिक हिंसानो जे विधि छे, ते स्वर्गहेतु हो-

वाथी, दुर्गतिना निषेधवास्तेज छे. वैदिक हिंसा स्वर्गनो हेतु नथी. ते उपर सारी रीतें लखी आव्या छियें. वैदिक हिंसा विना पण स्वर्गप्राप्ति थइ शके छे. गत्यंतरना अन्नावमांज अपवाद थइ शके छे. यज्ञ करवाथी स्वर्गनो निषेध थाय छे, एम अमेज मात्र कहेता नथी, परंतु व्यासजी पण कहे छे. यदाह व्यासमहर्षिः ॥ पूजया विपुलं राज्य, मग्निकार्येण संपदः ॥ तप. पापविशुद्ध्यर्थं, ज्ञानं ध्यानं च मुक्तिदं ॥ १ ॥ अहिंयां अग्निकार्य शब्दवाच्यना यागादि विधि उपायांतरथी जे संपत् साध्य छे, तेनोज हेतु कहेतां थकां, आचार्य ते यागने सुगतिनो हेतुज कदर्थन करी गया छे, तथा तेज व्यासजी न्नाव अग्निहोत्र " ज्ञान पाली " इत्यादि श्लोकोथी स्थापन करी गया छे. इति मीमांसकमतखंडन. ॥ ५ ॥

हवे चार्वाकमतनु खंडन लखियेंछिये चार्वाक कहेछे के आत्माज नथी तेथी मतावलंबी पुरुषो शा वास्ते वचन कलह करे छे ? ज्यारे आत्मानोज अन्नाव छे, त्यारे जैन, बौद्ध, सांख्य, नैयायिक, वैशेषिक, तेमज जैमिनीय, आ जे छ दर्शनो छे, तेउ शा वास्ते निःकेवल लोकोने भ्रममां नाखीने न्नोगविलासथी छोडावे छे ? वास्तवमां आत्मा एवी कोइ वस्तुज नथी,ते कारणथी अमारो मत सुंदर छे जो आत्मा होय तो तेनी सिद्धि बतावो?

उत्तरपक्ष.– प्रतिप्राणी स्वसंवेदन प्रमाण चैतन्यनी अन्यथा अनुपपत्तिथी सिद्ध छे जुउ आ जे चैतन्य छे, ते न्नूतोनो धर्म नथी, जो न्नूतोनो धर्म होय, तो तो पृथिवीनी कठिनतानी पेठे सर्व कालें, सर्व स्थलें उपलब्ध थवो जोइयें, ते सर्वदा उपलब्ध थतो नथी, कारण के लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां चैतन्य उपलब्ध थतु नथी

पूर्वपक्ष.– लोष्टादिमां, तेमज मृत अवस्थामां पण चैतन्य छे, केवल शक्ति रूपें छे, ते कारणथी उपलब्ध थतु नथी.

उत्तरपक्ष.–बे विकल्प न उल्लंघन करवाथी आ तमारु कहेवुं अयुक्त छे जुउ. ते शक्ति चैतन्यथी विलक्षण छे ? के चैतन्यज छे ? जो कहो के विलक्षण छे, तो तो शक्तिरूपें चैतन्य छे एम कहो नहि. कारण के पट विद्यमान छतां, पटरूपें घट रहेतोज नथी " आह च ॥ प्रज्ञाकरगुप्तोपि ॥ रूपांतरेण यदित, त्तदेवास्तीति मारटीः ॥ चैतन्यादन्यरूपस्य, न्नावे तद्धियते कथम् ॥ १ ॥ जो बीजो पक्ष मानशो तो तो चैतन्यज ते श-

क्ति छे पछी ते शक्ति उपलब्ध केम थती नथी ? जो कहो के आवृत थवाथी उपलब्ध थती नथी, तो ते पण ठीक नथी, कारण के आवृति शब्दनो अर्थ आवरण छे ते आवरण शुं विवक्षित परिणामनो अन्नाव छे ? के परिणामांतर छे ? के जूतोथी अतिरिक्त बीजी वस्तु छे ? तेमा, विवक्षित परिणामनो अन्नाव तो नथी कारण के एकांत तुछ होवाथी ते विवक्षित परिणाम अन्नावने आवरण शक्ति नथी, अन्यथा तेनु अतुन्नरूप होवाथी, ते पण न्नावरूप थइ जाय. ज्यारे न्नावरूप थाय, त्यारे पृथिवी आदिमांथी अन्यतम थाय, कारण के " पृथिव्यादीनि जूतानि तत्त्वमिति वचनात् " अने पृथिवी आदि जे जूत छे ते चैतन्यनां व्यजक छे, परंतु आवरक नथी, तेथी, केवीरीतें आवरणपणुं सिद्ध थाय ?

जो कहो के परिणामातर छे, तो तेपण अयुक्त छे, कारण के परिणामांतर पण जूतस्वन्नाव होवाथी जूतोनी पेठे चैतन्यव्यजकज थइ शके छे, आवरक थइ शकतु नथी.

जो कहो के जूतोथी अतिरिक्त वस्तु छे, तो ते कहेवु वहुज असंगत छे. कारण के जूतोथी अतिरिक्त (न्यारी) वस्तु मानवाथी " चत्वार्येव पृथ्व्यादिजूतानि " तत्त्वसंख्याने व्याघात थइ जशे

वली जुओ के आ जे चैतन्य छे ते एक एक जूतनो धर्म छे ? के सर्व जूतसमुदायनो धर्म छे ? एक एक जूतनो धर्म तो लागतो नथी, कारण के एक एक जूतमां देखातो नथी, तेमज एक एक परमाणुमां सवेदन उपलब्ध थतु नथी. जो दरेक परमाणुमा होय तो पुरुष, सहस्र चैतन्य वृंदनी पेठे परस्परन्निन्नस्वन्नाव थाय, परतु एकरूप चैतन्य नज थाय, अने देखवामां तो एकरूप आवे छे " अहं पश्यामि " अर्थात् हु देखुं छु हु करूछुं, एवो सकल शरीर अधिष्ठाता एक उपलब्ध थाय छे

जो समुदायनो धर्म मानो तो पण प्रत्येकमा अन्नाव होवाथी असत् छे कारण के जे प्रत्येक अवस्थामां असत् छे, ते समुदायमां थइ शकतु नथी जेम रेती समूहमांथी तेल

जो कहो के मद्यागोमा मदशक्ति नथी समुदायमां थइ जायछे, तेम चैतन्यपण थइ जाय तो, शुं दोष छे ? आ पण अयुक्त छे कारण के प्रत्येक मद्य अगमा मदशक्ति अनुयायी माधुर्यादि गुण देखाय छे, जुओ.

माधुर्यादि इक्षुरसमां धातकी फूलोथी थोडी विकलता उत्पादक शक्ति देखियें ठियें, तेवी रीतें चैतन्य, सामान्य प्रकारथी भूतोमां उपलब्ध थतुं नथी , तो केवीरीतें भूतसमुदायथी चैतन्य थइ शकेछे? प्रत्येकमां असत् छे ते समुदायमां थइ जाय तो, सर्व समुदायथी सर्व कांइ बनी-जवां जोइयें ए अति प्रसंग थशे.

वली जो तमे चैतन्यने धर्म मानेल छे, तो धर्मने अनुरूप धर्मीपण अवश्य मानवो जोइशे. जो अनुरूप नहि मानशो तो तो जल अने कठिनता आ बंनेने धर्म, धर्मि मानवा जोशे एमपण न कहेशो के भूतज धर्मि छे, कारण के भूत, चैतन्यथी विलक्षण छे जुओ चैतन्य बोधस्वरूप, तेमज अमूर्त्त छे, अने भूत तेनाथी विलक्षण छे, तो केवीरीतें तेओनो परस्पर धर्म, धर्मिभाव थइ शकेछे? वली आ चैतन्य भूतोनुं कार्यपण नथी, कारण के अत्यत विलक्षण होवाथी कार्यकारणभाव कदापि थइ शकतो नथी. उक्तं च ॥ काठिन्याबोधरूपाणि, भूतान्यध्यक्षसिद्धितः॥ चेतना च न तद्रूपा, सा कथं तत्फलं भवेत् ॥ १ ॥

वली जो चैतन्य भूतकार्य होय, तो तो सर्वजगत् प्राणिमय होवुं जोइये जो कहो के परिणतिविशेष सद्भावना अभावथी सकल जगत् प्राणिमय थइ जतुं नथी, तो ते परिणतिविशेष सद्भाव सर्वत्र शा वस्ते थतो नथी? ते परिणति पण भूतमात्र निमित्तज छे, तो केवी रीतें तेनुं कोइ स्थलें होवु न होवु सिद्ध थइ शकेछे? वली ते परिणतिविशेष केवा स्वरूपवालो छे? जो कहो के कठिनादिरूप छे, कारण के घुणादि जंतु काष्टादिमां उत्पन्न थता देखियें ठियें, ते कारणथी ज्यां कठिनत्वादि विशेष छे, ते प्राणिमय छे, बीजा नहि आ पण व्यभिचार देखवाथी असत् छे. जुओ. अशिष्टपण कठिनत्वादि विशेष छतां कोइ स्थलें होयछे, अने कोइ स्थलें होता नथी, अने कोइस्थलें कठिनत्वादि विशेष विनापण संस्वेदज घन आकाशमां संमूर्छिम उत्पन्न थायछे

वली केटलाएक जीव समानयोनिकपण विचित्रवर्ण संस्थानवाला देखाय छे. जुओ. गोबरआदि एकयोनिवालां पण केटलांएक कालां शरीरवालां तो केटलांएक पीलां शरीरवालां होयछे, बीजां विचित्रवर्णवालां होयछे. संस्थानपण तेओनां परस्पर भिन्न छे. जो भूतमात्रनिमित्त चैतन्य

होय तो तो एकयोनिवाळां सर्व एकवर्ण, संस्थानवाळा होवां जोइये परतु तेम तो थतां नथी ते कारणथी आत्माज तेवा तेवा कर्मना वशथी तेवा उत्पन्न थायछे एम निश्चये मानवु जोइये.

जो कहो के आत्मा होय तो गमनागमन करतां केम न उपलब्ध थवो जोइये? कारणके केवल देह विद्यमानज सवेदन उपलब्ध थायछे, अने देहनो अजाव थतां जस्म अवस्थामां देखातो नथी, ते कारणथी आत्मा नथी, परंतु सवेदनमात्रज एक छे, ते सवेदन देहनु कार्य छे, देहमांज आश्रित छे जींतना चित्रनी जेम. चित्र जींत विना रही शकतुं नथी, तेमज वीजी जींतपर सक्रमण पण थइ शकतु नथी, अने जींतनी साथेज तेनो विनाश थायछे सवेदननु पण तेवीज रीतें जाणी लेवु आ कथनपण असत् छे कारणके आत्मा स्वरूपथी अमूर्त्त छे, अने आतर शरीर अति सूक्ष्म छे, तेकारणथी दृष्टिगोचर नथी तदुक्त ॥ अतराजावदेहोपि, सूक्ष्मत्वान्नोपलज्यते ॥ निष्क्रामन् प्रविशन् वात्मा, नाजावोऽनीक्षणादपि॥ ॥ १ ॥ ते कारणथी आंत'शरीरयुक्त पण आत्मा, जतां आवतां देखातो नथी, परंतु लिंगथी उपलब्ध थायछे जुर्ज तत्काल उत्पन्न थयेला कृमि जीवने पण पोताना शरीरविपे ममत्व थायछे घातकने जाणीने दोडी जायछे, जेने जेनेविपे ममत्व छे, ते पूर्व ममत्व अज्यास पूर्वक छे तेवुज देखायछे केम के ज्या सुधी कोइ वस्तुना गुण दोप जाणता नथी, त्यां सुधी ते वस्तुमा कोइने पण ममत्व थतु नथी ते कारणथी जन्मनी आदिमा जे शरीरपर ममत्व छे, ते शरीर परिशीलन अज्यासपूर्वक सस्कार निवधन छे ते सववथी आत्मानु जन्मांतरथी आववुं सिद्ध थायछे उक्त च ॥ शरीरग्रहरूपस्य, चेतस सजवो यदा ॥ जन्मादौ देहिनां दृष्ट., किन्न जन्मातरा गति ॥ १ ॥

हवे आगति प्रत्यक्षथी देखाती नथी, तो केवीरीते तेनो अनुमानथी वोध थाय? आ तमारा केहेवाथी कांइ दूपण आवतु नथी कारण के अनुमेय अर्थविपे प्रत्यक्षनी प्रवृत्ति थइ शकती नथी परस्पर विपयने परिहार करीने प्रत्यक्ष, अनुमाननु प्रवर्त्तवु बुद्धिमान लोको मानेछे हवे तमारूं दूपण केवीरीतें लागेछे? आह च ॥ अनुमेयेस्ति नाध्यक्ष, मिति केवात्रदुष्टता ॥ अध्यक्षस्यानुमानस्य, विपयो विपयो नहि ॥ १ ॥

वली जे चित्रनुं दृष्टांत तमे आप्यु छे, ते पण विषम होवाथी अयुक्त छे जुउं. चित्र तो अचेतन, तथा गमनस्वजावरहित छे. आत्मा तो चैतन्य छे, तथा कर्मवशथी गमनागमन करे छे, तो केवीरीतें दृष्टांत तेमज दार्ष्टांतिकनी साम्यता थई ? जेम देवदत्त कोइ विवक्षित गाममां केटलाएक दिवस रहीने, पछी वीजे गाम जई रहे छे, तेम आत्मा पण विवक्षित जवमां देहनो त्याग करी जवांतरमां देह रचीने रहे छे

वली तमे कह्युं के संवेदन देहनु कार्य छे ते पण वास्तविक नथी. कारण के चक्षुरादि इन्डियद्वारा उत्पन्न थवाथी चाक्षुषादि संवेदन कथंचित् देहथी पण उत्पन्न थाय छे, परंतु जे मानस ज्ञान छे, ते केवी रीतें देहनुं कार्य थई शकेछे ? तथा ते मानसज्ञान देहथी उत्पद्यमान थतु होय तो, इंडिय रूपथी उत्पन्न थाय छे ? के अनिंडिय रूपथी उत्पन्न थाय छे ? के केश नखादि लक्षणथी उत्पन्न थाय छे ? प्रथम पक्ष तो ठीक नथी. जो इन्डियरूपथी उत्पन्न थतुं होय, तो तो इन्डिय बुद्धिवत् वर्त्तमामान अर्थनुंज ग्राहक होवु जोइये इंडियज्ञान वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शके छे, ते सामर्थ्यथी उत्पन्न थतु मानस ज्ञान पण इंडिय ज्ञानवत् वर्त्तमान अर्थनेज ग्रहण करी शकशे.

हवे ज्यारे चक्षु रूप विषय व्यापार करे छे, त्यारेज रूपविज्ञान उत्पन्न थाय छे, वीजे वखते थतु नथी हवे ते रूपविज्ञान वर्त्तमान अर्थ विषय छे, कारण के वर्त्तमान अर्थ विषयज चक्षुनो व्यापार थाय छे. अने रूपविषयव्यावृत्तिना अजावमा मनोज्ञान छे, ते कारणथी ते नियत कालविषयक नथी. तेवीज रीतें वीजी इन्डियोमां पण जाणी लेवु हवे केवीरीतें मनोज्ञानने वर्त्तमान अर्थग्रहण प्रसक्ति होय ? उक्त च ॥ अक्ष व्यापारमाश्रित्य, जवदक्षजमिष्यते ॥ तदव्यापारोन तत्रेति, कथमक्षजवं जवेत् ॥ १ ॥

जो कहो के अनिंडिय रूपथी छे, तो पण ते अचेतन होवाथी अयुक्त छे वली केश नखादि तो मनोज्ञानथी स्फुरित चिद्रूप उपलब्धज थतो नथी, तो केवीरीतें तेउंनाथी मनोज्ञान होय ? आह च ॥ चेतयंतो न दृश्यंते, केशश्मश्रुनखादय. ॥ ततस्तेज्यो मनोज्ञानं, जवतीत्यति साहसं॥१॥

जो केशनखादिथी प्रतिवद्ध मनोज्ञान होय तो तो तेउंनो उछेद थतां

मनोज्ञान मूलथीज रहेशे नहि वली केशनखादिनो उपघात थतां ज्ञानपण उपहत थवुं जोईये ? परंतु ते तो थतु नथी, ते कारणथी त्रीजो पक्ष पण ठीक नथी

वली वीजी वात ए छे के मनोज्ञानमा सूक्ष्म अर्थ पृथक् करणपणु तेमज स्मृतिपाटवादि जे विशेष छे, ते अन्वयव्यतिरेकथी अभ्यासपूर्वक देखाय छे जुओ तेज शास्त्र इहां, अपोहादि प्रकारथी जो वारवार विचारिये, तो सूक्ष्म, सूक्ष्मतर अर्थाववोध उल्लास थाय छे, अने स्मृति पाटव अपूर्व वृद्धि पामे छे एवीरीते एकशास्त्रविषे अभ्यास करतां करता सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरण शक्ति थतां, तेमज स्मृतिपाटव वधतां, अन्य शास्त्रोमा पण स्वाभाविक रीतें सूक्ष्म अर्थाववोध तेमज स्मृतिपाटव उल्लास पामे छे, ए प्रमाणे अभ्यासहेतुक सूक्ष्मार्थ स्पष्टीकरणादि मनो ज्ञानमा विशेष देखिये छियें वली कोइने अभ्यास विना पण देखियें छिये ते वास्ते अवश्य परलोकनो अभ्यास हेतु छे शा कारणथी ? कारणनी साथे कार्यनु अन्यथा अनुपपन्नपणुं छे, ते प्रतिबंधथी तेना अदृष्ट कारणनी पण सिद्धि छे ते कारणथी जीवनुं परलोक गमन सिद्ध थायछे

वली देह, क्षयोपशमनो हेतु छे, तेथी देहने पण कथचित् ज्ञाननो उपकारी अमे मानिये छियें. देह दूर थवाथी सर्वथा ज्ञाननी निवृत्ति थती नथी जेम के अग्निथी घटमा काइक विशेषता थाय छे, परंतु अग्निथी घटमा कांइक विशेषता थाय छे, परतु अग्निनी निवृत्ति थतां, घटनो मूलथीज उच्छेद थतो नथी केवल कांइक विशेष छे ते दूर थई जाय छे, जेम के सुवर्णनी द्रवता तेवी रीते अहींयापण देहनी निवृत्ति थतां तत्प्रतिवद्धज कांइक ज्ञानविशेष निवृत्त थाय छे, परतु ज्ञाननो समूल उच्छेद थतो नथी जो देहनेज ज्ञाननु निमित्त मानशो, तेमज देहनी निवृत्ति थता ज्ञाननी निवृत्ति मानशो, तो तो स्मशानमां देह भस्म थता तो ज्ञान नाश पामे, परंतु देह विद्यमान छता मृत अवस्थामां केम होतु नथी ?

जो कहो के प्राण अपान पण ज्ञानना हेतु छे तेओना अभावथी ज्ञान रेहेतु नथी ते कहेवुपण वास्तविक नथी कारण के प्राण अपान ज्ञानना हेतु थई शकता नथी, परतु ज्ञानथीज तेओनी प्रवृत्ति थाय छे. जुओ ज्यारे

प्राण अपान करनारो मंद करवानी इछा करे छे, त्यारे मंद थाय छे, अने ज्यारे दीर्घनी इछा करे छे, त्यारे दीर्घ थाय छे जो देहमात्र नैमित्तिक प्राणापान होय, अने प्राणापान नैमित्तिक विज्ञान होय, तो तो इछाने आधीनपणे प्राणापाननी प्रवृत्ति थशे नहि. कारण के जेनु निमित्त देह छे, एवी जे उज्वलता तेमज श्यामता, ते इछाने आधीन थइ प्रवृत्त थती नथी जो प्राणापान ज्ञाननु निमित्त होय, तो प्राणापान मंद तेमज दीर्घ थवाथी, ज्ञानपण अल्प तेमज विशेष थवु जोइये कारण के जेनु कारण हीन अथवा अधिक थशे, तेनुं कार्यपण हीन अथवा अधिक थशे जेम माटीनो पिंड मोटो अथवा नानो हशे, तो घट पण मोटो अथवा नानो थशे नहि तो ते कारण थशे नहि. तमने पण प्राणापान न्यून अधिक थवाथी, ज्ञान न्यून अधिक थतुं नथी परंतु तेथी उलटुं थतुं तो देखाय छे कारण के मरण अवस्थामां प्राणापान अधिक थाय छे तो पण विज्ञान घटी जाय छे.

जो कहो के मरण अवस्थामां वातपित्तादि दोषोथी देह विगुणी थई जवाथी प्राणापाननी वृद्धि थतां पण ज्ञाननी वृद्धि थती नथी तेवीज रीतें मृतअवस्थामां पण देह विगुणीभूत थवाथी चैतन्य नथी आ पण तमारुं कथन असमीचीन छे जो एम थाय तो तो मरीजनारां पण जीवतां थवा जोईये ॥ तथा हि ॥ "मृतस्य दोषाः समीभवंति" अर्थात् मरण पछी वातपित्तादि दोष रहेता नथी, अने ज्वरादि विकार न देखावाथी दोषोनु अविद्यमानपणु प्रतीत थाय छे वली दोषोनुं जे समपणु छे तेज आरोग्यता छे, "तेषां समत्वमारोग्य क्षयवृद्धिविपर्यय." ॥ इति वचनात् ॥ आरोग्यलाभथी देहने फरीथी जीवतां थवुं जोईयें, नहि तो देह कारणज नथी चित्तनी साथे देहने अन्वय व्यतिरेक नथी. जो मरेलो जीवतो थाय तो अमे पण देहने कारण मानी लहियें

पूर्वपक्षः– आ फरी जीवतां थई उठवानो प्रसंग तमारो अयुक्त छे. कारण के, अगर जो के दोष तो देहने वैगुण्यें करीने निवृत्त थइ गयेल छे, तो पण वैगुण्यपणानो परिणाम निवृत्त थतो नथी जेम के अग्निथी काष्टमां करायेलो विकार, अग्नि निवृत्त थया छतां पण ते निवृत्त थतो नथी.

उत्तरपक्षः– आ तमारु केहेवु अयुक्त छे. कारण के विकारपण वे प्र-

कारना छे एक विकार निवृत्त थइ जाय छे, अने बीजो निवृत्त थतो नथी निवृत्त विकार जेम के अग्निकृत सुवर्णमा द्रवता. अनिवृत्त विकार जेम के अग्निकृत काष्ठमां श्यामता वायुआदि जे दोष छे, ते निवृत्त विकार छे चिकित्सा प्रयोगथी देखियें छिये जो वायुआदि दोषपण अनिवृत्त विकार होय तो तो चिकित्सा विफल थई जाय एमपण न कहेवु के मरणनी पहेलां दोष निवृत्तविकार आरंभक छे, अने मरण समये दोष अनिवृत्त विकार आरंभक छे, कारण के एकने एकज जगाए निवृत्त, अनिवृत्तरूप बने विकार थइ शकता नथी

पूर्वपक्ष —व्याधि बेप्रकारना छे, एम लोकमां प्रसिद्ध छे- एक साध्य, बीजा असाध्य साध्यव्याधि, चिकित्साथी दूर थइ जायछे असाध्य, चिकित्साथी दूर थता नथी हवे जुओ बे प्रकारना व्याधि सिद्ध छे के केम ?

उत्तरपक्ष —आ कथन असत् छे तमारा मतपूर्वक असाध्य व्याधिज थईशके नहि व्याधिनु असाध्यपणु, आयुना क्षयपणाथी थायछे, कारणके ते व्याधिमां वैद्यनो योग, तथा समान औषध छता पण कोइ मरी जायछे, अने कोइ मरतु नथी, अने जे प्रकृतिल कर्मोना उदयथी चित्रादि व्याधिछे, ते हजार औषधोथी पण साध्य थइ शकता नथी आ बने प्रकारना व्याधिनु स्वरूप परमेश्वरनां वचन जाणनाराओना मतमाज सिद्ध छे, परंतु तमारा भूतमात्र तत्त्ववादियोना मतमा सिद्ध थइ शकतु नथी दोषकृत विकार दूर करवामां, वैद्यना तेमज समर्थ औषधिना अभावथी व्याधि वृद्धिमान थइ जायछे, त्यारे ते व्याधि असाध्य थइ जायछे, अने तेथी सर्व आयुष्यनो अपक्रम अर्थात् क्षय ते करी नांखेछे, केटला एक दोषो उपशात थवाथी अकस्मात् मृत्यु पामे छे अने केटलाएक अत्यतदुष्ट दोषोथी पीडाता छतांपण मृत्यु पामता नथी आ वात तमारा मतमा सिद्ध थइ शकती नथी आह च ॥ दोषस्योपशमेप्यस्ति, मरण कस्यचित् पुन ॥ जीवन दोषदुष्टत्वे,ऽप्येतन्न स्याद्भवन्मते॥१॥ अमारा मतमा तो ज्यासुधी आयुष्य होय, त्यां सुधी दोषोथी पीडातांछता पण प्राणी जीवतो रहेछे, अने ज्यारे आयु क्षय थइ जायछे, त्यारे दोषोना विकार विनापण मृत्यु पामेछे ते कारणथी देह ज्ञाननुं निमित्तनथी

वली एक सवाल छे के, देहने जे तमे ज्ञाननुं कारण मानो छो, तेशु

सहकारि कारण मानोछो? के उपादान कारण मानो छो? जो सहकारि कारण मानोछो तो तो अमे पण देहने क्षयोपशमनो हेतु तो मानिये छिये, कथचित् विज्ञाननो हेतु मानियेंछियें जो उपादान कारण मानशो तो तो अयुक्तछे उपादान कारण तो ते थइ शके, जे कारण विकारि थतां कार्यपण विकारि थइ जाय, जेम के मृत्तिका तेमज घट, अने अहिंयां तो देह विकार पामतां छतां पण संवेदन विकार पामतो नथी, तेमज देह विकार पाम्या विनापण भय शोकादिथी, संवेदन विकार पामेलो देखायछे ते कारणथी देह संवेदननुं याने ज्ञाननुं उपादान कारण थइ शकतो नथी उक्तं च॥ अधिकृत्य हि यद्वस्तु, य. पदार्थोविकार्यते ॥ उपादानं न तत्तस्य, युक्त गोगवयादिवत् ॥ १ ॥ आ केहेवाथी जे कहेछे के मातापितानुं चैतन्य, पुत्रना चैतन्यनुं उपादान कारण छे, तेपण खंडन थइ जायछे जुओ मातापिता विकारी थतां पुत्र विकारी थतो नथी, अने जे जेनु उपादान कारण छे, ते ते कार्यथी अभेद होयछे, जेमके माटी तथा घट जो माता, पितानां चैतन्य, पुत्रनां चैतन्यथी अभेदरूप होय तो तो, पुत्रनु चैतन्य, पण माता पिताना चैतन्यथी अभेद थवु जोइये तेम नथी, तेथी तमारूं कथन प्रमाणरहित छे ए प्रमाणेसर्व हेतु जोतां भूतोनो धर्म, अथवा भूतोनुं कार्य चैतन्य नथी परंतु आत्मा स्वतः सिद्ध छे. विशेषथी चार्वाकमतनुं खंडन जोवु होय तो संमतितर्क तथा स्याद्वादरत्नाकरादि ग्रंथो जोइ लेवा इति चार्वाकमत खंडन आ परिच्छेदमां कुगुरुनां जे लक्षणो कह्यां छे, ते चाहेलो जैनना साधुमा होय के चाहे तोअन्यमतना साधुओमां होय, ते सर्वने कुगुरु कहेवा जोइये

इति श्रीतपागछीयमुनिश्रीवुद्धिविनयशिष्यमुन्यानंदविजयात्माराम विरचितजैनतत्त्वादर्शगुर्जरभाषांतरे कुगुरुस्वरूपनिर्णयनामा चतुर्थ परिच्छेद. समाप्त. ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचम परिच्छेद प्रारंभः ॥

पांचमा परिछेदमां धर्मतत्त्वनु स्वरूप लखियेछिये दुर्गतिमां पडतां जीवने धारण करी राखे, अर्थात् दुर्गति प्राप्त न थवा दे ते धर्म कहेवाय छे धर्मना त्रण भेद छे १ सम्यक्ज्ञान, २ सम्यक् दर्शन, ३ सम्यक्चारित्र. प्रथम सम्यक् ज्ञाननुं स्वरूप संक्षेपथी लखिये छिये यथा ॥ य-

थावस्थिततत्त्वाना, संक्षेपाद्विस्तरेण वा ॥ योवबोधस्तमत्राहु , सम्यक् ज्ञानं मनीषिण ॥ १ ॥ अर्थ.—यथावस्थित नयप्रमाणयुक्त प्रतिष्ठित ठे स्वरूप जेनु एवां जे जीव, अजीव, आश्रव, संवर, निर्जरा, बध, मोक्षरूप सात तत्त्व, प्रकारांतरें पुण्य, पाप अधिक होवाथी नवतत्त्व, तेनो जे अवबोध अर्थात् ज्ञान, ते सम्यक् ज्ञान जाणवु ते ज्ञान क्षयोपशमविशेषथी कोइ जीवने सक्षेपथी, तेमज कोइ जीवने विस्तारपूर्वक थाय ठे ते नवतत्त्वमांहेना प्रथमजीवतत्त्वनुं स्वरूप कहिये ठिये, जीव कहो अथवा आत्मा कहो आ बने एकज वस्तुना नाम ठे

प्रश्न —जैनमतमां आत्मानुं शु लक्षण ठे ?

उत्तर.—चैतन्य लक्षण ठे

प्रश्न – जैनमतमां जीव, प्राणी, आत्मा कोने कहेठे, जरा विस्तारथी स्वरूप बतावो ?

उत्तरः—य कर्त्ता कर्मभेदानां, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥ संसर्त्ता परिनिर्वाता, सह्यात्मा नान्यलक्षण ॥ १ ॥ भावार्थ. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद अने योगथी कलुषित, अर्थात् मलीन थइने वेदनी आदि कर्मोनो कर्त्ता, तथा ते करेलां कर्मोनां सुखदुःखादि फल तेनो भोक्ता, तथा नरक, तिर्यंच आदि गतिविषे कर्मोना विपाकना उदयथी भ्रमणकरनार, तेमज सम्यक् दर्शनादि रत्नत्रयीथी उत्कृष्ट पुरुषार्थपूर्वक सपूर्ण कर्मांशने दूर करनार अर्थात् निर्वाण प्राप्त करनार तेज आत्मा ठे, तेज प्राणी ठे, तेज जीव ठे जुओ नदीसूत्र आत्मानी सिद्धि चार्वाकमतखडनमां लखी आव्याठियें जो विशेषथी आत्मानी सिद्धि जोवी होय तो शब्दाभोनिधि, गधहस्तिमहाभाष्य जोवा आत्मा सर्वव्यापी पण नथी एकात नित्य, कूटस्थपण नथी एकात अनित्य क्षणिकपण नथी परतु शरीरमात्रव्यापी कथचित् नित्यानित्यरूप ठे तेनु खंडन मडन विस्तारथी जोवु होय तो स्याद्वादरत्नाकर, रत्नाकरावतारिका, अनेकातजयपताका प्रमुख शास्त्रथी अवलोकन करवु अहींयां विस्तार करवाथी ग्रथ वधि जाय, तेमज वाचनार आलस करे ते सववथी, विशेष वर्णन कर्युं नथी

जीव बे प्रकारना ठे एक मुक्तरूप, बीजा ससारी बने प्रकारना जीव अनादि अनंत ठे ज्ञान, दर्शन तेउनु लक्षण ठे. मुक्तस्वरूप आत्मा (परमा-

त्मा) सर्व एक स्वजाव छे जन्मादि क्लेशोथी वर्जित छे. अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतवीर्य, अनंत आनंदमय स्वस्वरूपमां स्थित छे. निर्विकार निरंजन, ज्योतिःस्वरूप छे.

संसारी जीव वे प्रकारना छे एक स्थावर. वीजा त्रस स्थावरना पांच न्नेद छे १ पृथिवीकाय, २ अप्काय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, ५ वनस्पतिकाय. वली त्रसना चार न्नेद छे १ द्वीडिय, २ त्रीडिय, ३ चतुरिंडिय, ४ पंचेंडिय. स्थावर सर्व एक स्पर्शेंडिय वालाज छे. शंख, गंडोला, जलो, चदणग, कृमि, अलसीयां प्रमुख जीव, एक स्पर्शेंडिय अर्थात् शरीर, तेमज रसनेंडिय अर्थात् मुख, एम वे इंडियवाला छे मांकड, जू, कीडी, घीमेल, उधी, मंकोडाप्रमुखजीव, पूर्वोक्त वे इडिय, तथा एकनासिका, एम त्रण इडियवालां छे. माखी, मछर, डांस, कसारी, वींछी, तीड, न्नमरा प्रमुख जीव पूर्वोक्त त्रण इडिय तथा एक चक्षु एम चार इंडियवालां छे. नारकी, तिर्यंच, मनुष्य, देवता ए पचेंडिय जीव छे स्पर्शन, रसना, घ्राण नेत्र, कान, आ पांचेडियवालां छे स्थावर जीव पण वे प्रकारना छे एक सूक्ष्म नामकर्मना उदयथी सूक्ष्म वीजा वादर नामकर्मना उदयथी, वादर स्थावर तथा त्रस जीव, समुच्चय छपर्याप्ति वालां छे, छपर्याप्तिनां नाम. १ आहार पर्याप्ति, २ शरीरपर्याप्ति, ३ इडियपर्याप्ति, ४ श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, ५ न्नाषापर्याप्ति, ६ मन.पर्याप्ति.

हवे पर्याप्तिनुं स्वरूप लखियेछियें पर्याप्ति अर्थात् शक्ति १ आहार ग्रहण करवानी जे शक्ति, ते आहारपर्याप्ति, २ शरीर रचवानी जे शक्ति, ते शरीरपर्याप्ति, ३ इडिय करवानी शक्ति, ते इंडियपर्याप्ति छे, एम छए पर्याप्तिनुं स्वरूप जाणवु पूर्वोक्त छ पर्याप्तिमध्येथी जे जे जीवने जेटली जेटली पर्याप्ति होवी जोइये ते करतां उंछी पर्याप्ति होय तो ते जीव अपर्याप्ति कहेवाय छे, स्थावर जीवमां प्रथमनी चार पर्याप्ति छे, वे इडियवाला, त्रण इडियवाला, अने चार इडियवाला जीवोमां मनविना पांचपर्याप्ति छे. पंचेंडिय जीवमां छ पर्याप्ति छे. १ पृथिवीकाय, २ जलकाय, ३ तेजस्काय, ४ वायुकाय, आ चारेमां असख्य जीव छे वनस्पति कायना वे प्रकार छे. प्रत्येक वनस्पतिकायमां असंख्य जीव छे, साधारण वनस्पतिकायमां अनंतजीव छे. स्थावर तथा त्रसजीवना जघन्य (१४) न्नेद

छे, मध्यम (५६३) जेद छे, अने उत्कृष्ट अनंत जेद छे मध्यमना जेदो मां (१४) जेद नरकगतिवालांना छे, (४८) जेद तिर्यंच गतिवालाना छे, (३०३) जेद मनुष्य गतिवालाना छे, (१९८) जेद देवगतिवालाना छे मध्यमना सर्व मली एम (५६३) जेद छे तेउंनु विस्तारथी स्वरूप जोवु होय तो प्रज्ञापन्नसिद्धांत, तथा जीवविचार प्रकरण आदि शास्त्रो जोवां

प्रश्न – हे जैन ? बे इंद्रियादि जीव तो जीवलक्षणसयुक्त होवाथी जीव सिद्ध थाय छे परंतु पृथिवी आदि पाच स्थावरोमां अमे जीव केवी रीतें मानिये ? पृथिवी आदिमां जीवनु कांइ पण चिह्न उपलब्ध थतु नथी

उत्तरपक्ष– अगर जो पृथिवी आदिमां जीवनुं प्रगट चिह्न देखातु नथी, तो पण अव्यक्त रूपे जीवनु चिह्न छे तेथी जीव सिद्ध थाय छे जेम धत्तुराथी, अने मदिरापान आदिना निस्साथी मूर्छित थयेला जीवमां अव्यक्तलिंग थइ जवा छतां जीवपणु छे, तेम पृथिवी आदिमां पण जीवपणु मानवु जोइये

प्रश्न – मदिरानी मूर्छामां श्वासोच्छ्वास देखवाथी अव्यक्तपणामां पण चेतना लिंग छे, परतु पृथिवी आदिमां तेवु चेतनतानु लिंग काइ पण नथी, तेथी तेउंने केम चैतन्य मानवामां आवे ?

उत्तरपक्ष– तमे कहो छो तेवु चैतन्य नथी, परतु पृथ्वीकायमां आयमां, स्वआकारमां रहेला लवण, विद्रुम, पाषाण आदिमा, अर्षे मांस अकुरनी जेम समानजातीय अकुर उत्पत्तिपणु छे वनस्पति जेम चेतनपणानु चिह्न छे ते कारणथी अव्यक्त उपयोगादिलक्षण होवाथी पृथ्वी सचेतन छे एम सिद्ध थाय छे

प्रश्न –विद्रुम पाषाणादि पृथ्वी कठणरूप छे सवव कठिनरूप होवाथी पृथ्वी सचेतन केम होइशके ?

उत्तर.–जेम शरीरमां अस्थि अर्थात् हाड अनुगत छे, ते कठण छे तो पण सचेतन छे तेम जीवानुगत पृथ्वीनु शरीरपण सचेतन छे, वली पृथ्वी, अप्, तेज वायु, वनस्पति, तेउंनां शरीर जीव सहित छे, छेद्य, जेद्य, उत्क्षेप्य, जोग्य, घ्रेय, रसनीय, स्पृश्य द्रव्य होवाथी साला (वलदना गलांनी नीचेनी फूल ' गलधी ') तथा विषाण (शींगडां) नीपेछे संघातवत्

पृथिवी आदिमां छेद्यत्वादि जे देखियें छियें, तेने कोइ पण गोपवी शकतु नथी वली एमपण न कहेवुं के पृथिवी आदिनां जीवशरीर जे साधवां छे ते अनिष्ट छे, कारण के सर्व पुद्गल द्रव्यने द्रव्यशरीर एम पण मानियेछियें. तेमां जीवसहित, तथा जीवरहित जे विशेष छे ते आ प्रमाणे छे, शस्त्रथी अनुपरत जे पृथिवी आदि छे, ते हाथ पगना संघातवत् संघात न होवाथी कदाचित् सचेतन छे, तेवीज रीतें शस्त्रथी उपहत थवाथी हाथ आदि पेठे अचेतनपण छे, ते अचेतनज छे

प्रश्न.– प्रश्रवणवत् अर्थात् मूत्रनी पेठे जीवनुं लक्षण न होवाथी जल जीव नथी

उत्तरपक्ष.– हेतु असिद्ध होवाथी, आ पण कहेवुं वास्तविक नथी जुर्ज हाथीनु शरीर कलल अवस्थामां (तरत उत्पन्न थयेली स्थितिमां) द्रवरूप तेमज सचेतनरूप देखाय छे तेवीज रीते जलमां पण जाणवु वली इंडामां रसमात्र छे, परंतु अवयव कोइपण उत्पन्न थयेल नथी, तेमज व्यक्त हायपगादि पण नथी, तो पण सचेतन छे, ते उपमाए जलपण सचेतन छे आ तेमां प्रयोग छे द्रवरूप होवाथी शस्त्रथी अनुपहत थकुं हाथीना शरीरना उपादानभूत कललवत् जल सचेतन छे. आ हेतुमां विशेषणना उपादानथी अर्थात् ग्रहणथी प्रश्रवण दूधादिमां व्यभिचार नथी तथा अनुपहतद्रव्य होवाथी इंडामां रहेला कललवत् जल सात्मक छे वली हिमादि कोइक अवस्थामां अप्काय होवाथी बीजा उदकनी जेम सचेतन छे तथा कोइ जगाए भूमि खोदवाथी स्वाभाविक संभव होवाथी मेडकवत् जल सचेतन छे. तेमज आकाशमां उत्पन्न थतुं जल, वादलादि विकारथी थयेलु स्वत.ज उत्पन्न थइने पडवाथी मत्स्यवत् सचेतन छे तथा शीतकालमा नदीप्रमुखमां वहु शीत पडतां, वहु, अने अल्प शीत पडतां अल्प, उष्मा देखाय छे, ते उष्मा सजीव हेतुकज छे अल्प विशेष मलेलां मनुष्योना शरीरोनी जेम अल्प वहु उष्मा थाय छे जलमां शीतस्पर्शज छे एम वैशेषिक कहे छे तथा शीत कालमां शीत वहुज पडवाथी प्रात कालमा तलाव आदिनी पश्चिम दिशामां उभा रही, तलाव आदि जोइये, तो ते तलावमांथी निकलतो वाष्पसमूह देखाय छे, तेपण जीव हेतुकज छे तेनो प्रयोग एवो छे के शीतकालमां

जे बाष्प थाय छे, ते उष्ण स्पर्शवाली वस्तुथी थाय छे शीतजलथी सेचनकरेला शीतकालमां मनुष्य शरीरनी बाष्पनी जेम वली उकरडामा कूडा कचवरमांथी धूआ (बाष्प) निकले छे, त्यां पण अमे पृथ्वीकायना जीव मानियेछिये आ हेतुउथी जल सजीव सिद्ध थाय छे

प्रश्न – तेजस्कायमां जीव केवीरीते सिद्ध थाय छे ?

उत्तरपक्ष – जेम रात्रिमां खद्योत (आगीआ कीडा) नु शरीर जीवशक्तिथी बनेलुं प्रकाशवान् छे, तेम अंगारादिपण प्रकाशमान होवाथी सचेतन छे तथा जेम ज्वरनी उष्मा जीवना प्रयोग विना अर्थात् अस्तित्व विना होती नथी, तेम अग्निमां पण जीवविना गरमी थती नथी जुउ के मृतकशरीरमां ज्वर कदापि होतो नथी एवा अन्वयव्यतिरेकथी अग्नि सचेतन जाणवो वली प्रयोग आ छे, आत्माना सयोगथी प्रगट थयो छे अगाराप्रमुखने प्रकाश परिणाम, शरीरस्थ होवाथी खद्योत शरीर परिणामवत् तथा आत्मा सयोगपूर्वक शरीरस्थ होवाथी ज्वर उष्मवत् अगाराप्रमुखमां उष्णता छे एमपण न कहेवु के सूर्यनी उष्मा साथे अनेकातिक हेतु छे सूर्यमां जे उष्मा छे ते पण आत्मसयोग पूर्वकज अमे मानियेछिये तथा अग्नि सचेतन छे, कारण के यथायोग्य आहार करवाथी वृद्धि आदि विकार मालम पडवाथी पुरुपना शरीरनी जेम इत्यादि लक्षणोथी अग्नि सचेतन छे

प्रश्न – वायुकाय (पवन) मां जीवसत्ता केवी रीते सिद्ध करो छो ?

उत्तरपक्ष.– जेम देवताउनां शरीर शक्ति प्रज्ञावथी, तेमज मनुष्योनां शरीर अजनादि विद्यामंत्रना प्रज्ञावथी, अदृश्य थइजवाथी नेत्रथी देखाता नथी, तोपण विद्यमान चेतनावालां छे, तेम वायुकाय सूक्ष्म परिणाम होवाथी, परमाणुनी जेम, नेत्रथी देखाता नथी तोपण विद्यमान चेतनावाला छे तेमज अग्निथी दग्ध पाषाणखडगत अग्निवत्, प्रयोग आ छे बीजाउनी प्रेरणाविना, नियमपूर्वक तिर्यक् गति होवाथी वायु चेतनावान् छे गवाश्वादिवत् तिर्यक् गतिना नियमथी, परमाणुनी साथे व्यभिचार नथी वली शस्त्रथी अनुपहत होवाथी वायु सचेतन छे

वनस्पतिकायमा तो प्रत्यक्ष प्रमाणथी जीव सिद्धज छे ते कारणथी अहिया तेनो विस्तार कर्यो नथी सर्वज्ञना कथन करेलां आगमपण पृ-

थिवी जल, अग्नि, पवन, वनस्पतिमां जीवसत्ता कहे छे. तेम छतां कदापि कोइ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, तेमज पंचेन्द्रियमां पण जीव नहि माने तो तेउनी अमान्यताथी अमने कांइ हानि नथी. आ संक्षेपथी जीवस्वरूप वर्णन कर्युं, विस्तारनी अभिलाषावालाए जैनसिद्धांत जोवा

हवे बीजु अजीवतत्व कहियेछिये अजीवनां लक्षणो जीवनां लक्षणोथी विपरीत छे. जे ज्ञानथी रहित होय, रूप, रस, गंध, स्पर्शवाला होय, नर, अमरादिगतिमां न गमन करनार होय, ज्ञानावरणीयादि कर्मना कर्त्ता न होय, तेमज ते कर्मफलना भोक्ता न होय, अने जडस्वरूप होय, ते अजीव छे ते अजीवना पांच प्रकार छे १ धर्मास्तिकाय, २ अधर्मास्तिकाय, ३ आकाशास्तिकाय, ४ पुद्गलास्तिकाय, ५ काल

१ धर्मास्तिकायनु स्वरूप आ प्रमाणे छे जेम मत्स्यना संचारनु अपेक्षाकारण पाणी छे, तेम जीव तथा पुद्गलने गतिपणे परिणमतां जे अपेक्षाकारण होय ते धर्मास्तिकाय छे यद्यपि जीव तथा पुद्गल स्वशक्तिथी चाले छे, परं तु तेउने गतिसहायक गुणप्रदाता धर्मास्तिकाय पदार्थ छे. ते लोकव्यापी छे, नित्य छे, अवस्थित छे, अरूपीछे असंख्यप्रदेशी छे ज्यां सुधी आ धर्मास्तिकाय द्रव्य छे, त्यांसुधी लोकनी मर्यादा छे जो धर्मास्तिकाय द्रव्य न मानिये, तो लोक अलोकनी मर्यादा रहे नही ज्यां सुधी धर्मास्तिकाय द्रव्य वर्त्तेछे, त्यांसुधी जीव, पुद्गल गति करेछे तेनु संपूर्ण स्वरूप जैनमतना ग्रथो अध्ययन कर्या शीवाय जाणी शकाय नहि.

२बीजु अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे तेनु स्वरूप धर्मास्तिकाय सदृश जाणवु, परंतु तफावत ए छे के, आ द्रव्य जीव, पुद्गलने स्थिति सहायक छे जेम पथीजन रस्तामां चालतां थाकी जायछे, त्यारे विश्राम लेवा सारू वृक्षादिनी छायामां बेसेछे, ते प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु आश्रय विना स्थिति थइ शकती नथी, तेम जीव पुद्गल गतिकरतां करतां स्थिति करवा प्रसंगे स्थिति तो पोतेज करेछे, परंतु अपेक्षाकारणरूप वृक्षनी छाया जेम अधर्मास्तिकाय द्रव्य छे

३ त्रीजु आकाशास्तिकाय द्रव्य छे तेनु स्वरूप पण धर्मास्तिकाय सदृश छे परंतु विशेष आ प्रमाणे छे आ द्रव्य लोकालोकव्यापीछे अवकाशदानलक्षण छे जीव, पुद्गलने रहेवामां अवकाश आपेछे. आ

त्रणेद्रव्य एक वीजामां मली गयेलांछे. ज्यांसुधी आकाशास्तिकाय, धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय छे, त्यांसुधी लोक छे, अने ज्यां केवल आकाशास्तिकाय छे, अने वीजु कांइ नथी, ते अलोक छे

चोथु पुद्गलास्तिकाय द्रव्य छे परमाणुउंनु नाम पण पुद्गल छे, तेमज परमाणुउंना समूहनां घट, पटादि कार्य छे, तेउंने पण पुद्गलज कहेछे एक परमाणुमां, एकवर्ण, एकरस, एकगध, वे स्पर्श छे, कार्य तेनु लिंग छे वर्णथी वर्णांतर, रसथी रसांतर, गंधथी गधांतर, अने स्पर्शथी स्पर्शांतर थइ जायछे परमाणु द्रव्यरूपे अनादि अनंत छे, पर्यायरूपे सादि सांत छे परमाणुउंनां जे कार्य छे, तेउंमां कोइकतो प्रवाहथी अनादि अनंत छे, अने कोइ सादि सांत छे जे जडरूप देखाय छे, ते सर्व परमाणुउंनां कार्य छे सुकेली वनस्पति, तेमज अग्निप्रमुख शस्त्रोथी परिणामांतर प्राप्त थयेलां पृथिवी आदि सर्व पुद्गल छे समुच्चय पुद्गल द्रव्यमां, पाच वर्ण, पाच रस, वे गध, आठ स्पर्श, पाच सस्थान, छे कालो, लीलो, रातो, पीलो, धोलो, आ पाच वर्ण छे तीखो, कडवो, कपायेलो, खाटो, मीठो, आ पांच रस छे सुगध, दुर्गंध, आ वे गध छे खरखरो, सुवालो, हलवो, भारे, टाढो, उनो, चीकणो अने लूखो आ आठ स्पर्श छे तेना विशेषवर्णादि थाय छे, ते सर्व एक वीजाना मेलापथी थाय छे, पुद्गलोमा अनत शक्तिउ छे, अनत स्वभाव छे १ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाव, इत्यादि ते ते निमित्तोना मलवाथी विचित्र परिणाम तेना थाय छे

५ पाचमुं कालद्रव्य छे ते प्रसिद्धछे आ पाचे द्रव्य अजीव छे इति

हवे पाच निमित्तनु स्वरूप लखियेछिये १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति, ४ पूर्वकृत, ५ पुरुषकार, तेउंनु स्वरूप श्रीसिद्धसेन दिवाकर आचार्यकृत सम्मतितर्क ग्रथमां विस्तारथी वतावेल छे ते पाचमांथी जो एकने माने तो ते मिथ्याज्ञान, अने मिथ्या दृष्ट छे जो पांचेना समवायने माने तो सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक् दृष्ट छे आ पाचे निमित्तमाहेना १ काल, २ स्वभाव, ३ नियति, आ त्रण निमित्तोनु स्वरूप क्रियावादिना मतमा लखी आव्या छिये, ४ पूर्वकृत (कर्म) नु स्वरूप आगल कर्म स्वरूपनो विस्तार करवामा आवशे त्यां करवामा आवशे ५ पुरुषकार, ते जीवोनो उद्यम छे, आ पांचे निमित्तोथी जगत् प्रवृत्ति निवृत्ति थइ

रहीछे आ पांच निमित्तोथीज जीव नरकादि गतियोमां जायछे, तेमज सुख दुःखनां फल भोगवे छे आ पांच निमित्त विना फल प्रदाता ईश्वरादि कोइ पण नथी, जो कोइ वादि आ पांच निमित्तोना समवायने ईश्वर माने, तो तो अमे पण ईश्वर कर्त्ता मानी लेशुं, कारण के जैनमतनी तत्त्वगीतामां लखेलुं छे के, द्रव्यमां जे अनादिद्रव्यत्व शक्ति छे, तेज सर्वपदार्थोने उत्पन्न करेछे, तेमज लय करेछे, ते शक्ति चैतन्य अचैतन्यादि अनंत स्वभाववाली छे तेने ईश्वर कर्त्ता मानवाथी जैनमतने कांइ हानि थती नथी

३ हवे पुण्यतत्वनुं स्वरूप लखिये छियें "येन शुभप्रकृत्या आत्मक कर्म जीवान् सुख ददाति तत् पुण्य" इत्यादि जेणे करी अर्थात् जे शुभ प्रकृतिथी पोते करेलां कर्म जीवोने सुख आपे छे ते पुण्य पुण्य उपार्जन करवानां नव कारण छे, "उक्त च स्थानांगे" अन्नपुन्ने पाणपुन्ने लेणपुन्ने सयणपुन्ने मणपुन्ने वयपुन्ने कायपुन्ने नमोक्कारपुन्ने इति सूत्रं ॥ व्याख्या १ पात्रने अन्ननु दान आपवाथी जे तीर्थंकरनामादि पुण्य प्रकृतिनो वध थाय ते अन्नपुण्य छे, तेवीजरीतें २ पीवाने जल आपवु, ३ वस्त्र आपवां, ४ रहेवाने स्थानक आपवां ५ सुवा, वेसवाने आसन आपवां, ६ गुणीजनने देखी मनमां संतोष, खुशी मानवी, ७ गुणिजनोनी वचनथी प्रशंसा करवी कायाथी पर्युपासना अर्थात् सेवा करवी ए गुणि जनोने नमस्कार करवो आ पुण्य उपार्जन करवानी वावतो कही, ते कांइ जैनमतवालाउने देवावास्ते कही, एटलुज नहि परतु कोइपण मतवालो अथवा कोइपण दान देवायोग्य प्राणी होय, तेने अनुकपाथी जे कोइ दान आपे ते अवश्य पुण्य उपार्जन करे परंतु तफावत एटलो छे, के पात्रने जे दान आपवामां आवशे, ते पुण्य तेमज मोक्ष वनेनो हेतु थशे, अने अनुकपाथी जे वीजाने दान देवामां आवशे, ते केवल पुण्य उपार्जन करवानोज हेतु थशे जैनमतना कोइ शास्त्रमां पुण्य करवानो निषेध नथी कारण के जैनमतना ऋषभदेवादि चोवीश तीर्थंकरो थयेला छे, तेउए दीक्षा लेतां पहेलां एकक्रोड आठ लाख सोनैया दिन दिन प्रति एकवर्षसुधी दान आपेल छे. ते कारणथी जैनमतमां प्रथम दान-

धर्म छे. जैनमतना शास्त्रमां बीजी केटलीएक रीतथी पुण्य उपार्जन थायछे एम लखेलुं छे

४ हवे पुण्यना फल बेंतालीश प्रकारें जोगववामां आवेछे ते बेंतालीश प्रकार लखियेंछिये १ जेना उदयथी जीव शाता जोगवे छे ते शाता वेदनीय, २ जेना उदयथी जीव क्षत्रियादि उचा कुलमां उत्पन्न थाय छे ते उच्चगोत्र, ३ जेना उदयथी जीव मनुष्यगतिमा उत्पन्न थाय छे ते मनुष्यगति, ४ जेना उदयथी जीव देवगतिमां उत्पन्न थाय छे ते देवगति, ५ वक्रगतिए पराजवमां जता, बलदने नाथ घालीने सिद्धो चलाववानी जेम, जे उपजवाने स्थानकें जीवने पहोंचाडे तेने आनुपूर्वी कहे छे मनुष्य गतिमां जीवने लाववाने उदयमां आवे ते मनुष्यानुपूर्वी, ६ देवानुपूर्वी, ७ जेना उदयथी जीव पचेंड्रियपणु पामे छे ते पचेंड्रियजाति, हवे पांच जातना शरीर कहियेंछिये ८ जेना उदयथी जीव औदारिक वर्गणानां पुद्गलो ग्रहण करीने औदारिक शरीरनी रचना करे छे, अर्थात् औदारिक शरीरपणे परिणमावे छे, ते औदारिक शरीर, तेवीजरीते ए वैक्रियशरीर. १० आहारक शरीर, ११ तेजसशरीर, १२ कार्मणशरीर, एम पाच शरीरनी प्रकृतिर्उनो अर्थ समजवो तथा अंगोपांग त्रण छे तेमां अग, शिरप्रमुख, उपांग, आंगली प्रमुख, बाकीना अगोपांग छे जेम के १ शिर, २ छाति, ३ पेट, ४ पीठ, ५-६ बने हाथ ७-८ बने साथल, आ आठ अंग छे, आंगली प्रमुख उपाग छे, नखादि अगोपाग छे जेना उदयथी जीवने प्रथमना त्रण शरीरना अगोपांगनी उत्पत्ति थाय, तेना नाम, १३ औदारिक अगोपांग, १४ वैक्रिय अगोपाग, १५ आहारक अगोपांग, १६ जेना उदयथी जीव प्रथमनु सहनन जेनु नाम वज्रऋषभ नाराच छे, ते प्राप्त करे छे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे वज्रनाम कीलिका (खीली) छे, तथा ऋषभ एटले परिवेष्टन पट्ट अर्थात् उपर लपेटवाना हाडरूप पाटो, तथा नाराच, ते मर्कटबध, आ त्रणे रूपथी जे उपलक्षित छे तेने वज्रऋषभ नाराच सहनन कहे छे, हाडना सचय सामर्थ्यनु नाम संहनन छे आ सहनन औदारिक शरीरवालार्उमांज होय छे १७ जेना उदयथी जीवने प्रथमना समचतुरस्र सस्थाननी प्राप्ति थाय, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे सम अर्थात् तुल्य, जेनु शरीर चारे बाजुएथी तुल्य, लक्षणयुक्त, प्रमाण

सहित, सुंदर आकार, पोताना आंगल प्रमाणे एकसो आठ आंगल प्रमाणशरीर थाय ते, हवे वर्ण, रस, गध, अने स्पर्श, कहिये छिये १७ कृष्णादिवर्ण, १९ तिक्तादिरस, २० सुरन्यादिगंध, २१ मृडु आदि स्पर्श, जेना उदयथी शुन्न होय, २२ जेना उदयथी मध्यम वजनदार शरीरनी प्राप्ति थाय, अर्थात् लोहनी जेम अत्यत नारे नहि, अने आकडाना कपासनी जेम अति हलकुं पण नहि, परंतु मध्यमपरिणामी होय, तेने अगुरु लघु नामकर्म कहीयें २३ जेना उदयथी बीजाने हणीशके, तथा शरीरनी आकृति एवी होय के जेने देखीने बीजाउने अनिन्नव अर्थात् असामर्थ्यता थाय ते पराघातनामकर्म कहीये, २४ जेना उदयथी उन्वासनलब्धि, अर्थात् श्वासोच्वास लेवानी शक्ति जीवने थाय छे, ते उच्चासनामकर्म, २५ जेना उदयथी जीवनु शरीर प्रकाशवालु तथा सूर्यना बिंबनी जेम बीजाने ताप उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय छे, ते आतपनामकर्म, २६ जेना उदयथी चन्द्रबिंबनी जेम शीतलताने उत्पन्न करवाना हेतुरूप तेजयुक्त शरीरनी प्राप्ति थाय, ते उद्योतनाम कर्म, २७ जेना उदयथी जीवने विहायस्नाम आकाश, तेमां जे गति, ते विहायोगति, ते गति राजहंससदृश होय, ते सुविहायोगति नामकर्म, २८ जेना उदयथी जीवने शरीरनां अगोपाग आदिने नियतस्थानमां स्थापन करनार सूत्रधार (कारीगर) समान, अर्थात् नसो, जाल, मस्तकनी खोपरी, हाड, चक्षु, कान, केश, नखादि शरीरना सर्व अवयवो योग्यस्थानें रचनार नामकर्मनी प्राप्ति थाय ते निर्माणनामकर्म, २९ जेना उदयथी जीवने त्रसपणानी प्राप्ति थाय, ते त्रसनामकर्म, उष्णप्रमुखथी तप्त थता विवक्षित स्थान तजी छाया प्रमुखमां गति करे, तेमज द्वीन्द्रियादि पर्यायनां फल नोगवे, ते त्रस ३० जेना उदयथी जीव बादर (स्थूल) शरीरवाला थाय, ते बादर नामकर्म, ३१ जेना उदयथी जीव पूर्वे कहेली छ पर्याप्ति पूर्ण करे छे, ते पर्याप्त नामकर्म, ३२ जेना उदयथी एक एक जीवने एक एक शरीर प्राप्त थाय छे, ते प्रत्येक नामकर्म, ३३ जेना उदयथी जीवने हाडप्रमुख अवयवो स्थिर, निश्चल होय छे, ते स्थिरनामकर्म, ३४ जेना उदयथी जीवने मस्तकप्रमुख अवयवो शुन्न होय छे ते शुन्ननामकर्म, ३५ जेना उदयथी सौन्नाग्यवान्

अर्थात् सर्वलोकने प्रिय जीव थाय, ते सुजगनामकर्म, ३६ जेना उदयथी जीवनो स्वर कोयलनी सदृश मीठाशवालो थाय ते सुस्वरनामकर्म, ३७ जेना उदयथी जीवनु वचन उपादेय अर्थात् सर्वलोकने माननीय थाय, ते आदेयनामकर्म, ३८ जेना उदयथी विशिष्ट कीर्त्ति तथा यश जगत्मा जीवनी विस्तार पामे ते यश कीर्त्तिनामकर्म, ३ए जेना उदयथी जीवनी चोसठ इन्द्रो पूजा करे, तेमज त्रिभुवनमा पूज्यपणु जेनाथी जीवने प्राप्त थाय, तेमज धर्म तीर्थनी प्रवर्त्तना जेनाथी थाय, ते तीर्थंकर नामकर्म, ४० तिर्यंचोनु आयु, ४१ मनुष्यआयु, ४२ देव आयु, आ त्रण आयुनी प्रकृति आयुकर्मनी छे जेना उदयथी जीव ते ते गतिमा जइ ते ते नवमां स्थिति करे छे, आ बेतालीश प्रकारथी पुण्यफल जीवने भोगववामां आवे छे

४ हवे पापतत्वनु स्वरूप लखिये छिये येनाशुभप्रकृत्या आत्मकं कर्म जीवान् दुःखं ददाति तत् पाप " जे अशुभप्रकृतिथी पोते करेला कर्म जीवोने दुःख आपे ते पाप, तेमज आत्माना आनदरसने पीये (नस्म करे) ते पाप तथा पुण्यथी विपरीत, ते पाप, आ पाप नरकादिफल प्रवर्त्तक होवाथी अशुभ छे, पुण्यनी जेम तेनो आत्मानी साथेज संबध छे, कर्मपुद्गलरूप छे अगर जो के बंधतत्त्व अतर्भूतज पुण्यपापा छे, तो पण तेउनु स्वरूप पृथक् पृथक् नानाविध, परमतभेदनिरासार्थ कहेवामां आवेलु छे परमतभेद आ प्रमाणे छे केटलाएक मतवाला कहेछे के केवल एक पुण्यज छे, परतु पाप नथी, कोइमतवादी कहेछे के एक पापज छे, पुण्य नथी वली कोइ मतवादी एम पण कहेछे के मेचकमणि जेम पुण्य पाप बने परस्पर अनुविद्ध स्वरूपछे, तेथी मिश्र सुखदुःखफलना हेतु छे, ते कारणथी साधारण पुण्यपाप एकवस्तुज छे, वली केटलाएक कहेछे के मूलथी कर्मज नथी जगत्मा सर्व विचित्रता स्वभावथीज सिद्ध छे पूर्वोक्त सर्वमतो मिथ्या छे कारण के सुख दुःख बने पृथक् पृथक् अनुभववामा आवेछे ते कारणथी तेउना कारणभूत पुण्य पाप पण स्वतंत्रज अंगीकार करवा योग्य छे, परतु एकलु पुण्य, के एकलु पाप, के एकलुं पुण्यपाप मिश्र मानवु ठीक नथी

कर्मअभाववादी नास्तिक तेमजवेदाती कहे छे के पुण्यपाप, आका-

गनां फुलसमान असत् छे, सत् नथी तो हवे पुण्यपापनां फल जोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक केम मानी शकाय ?

उत्तरपक्ष.– पुण्यपापनो अजाव मानशो तो सुख डुःख निर्हेतुक उत्पन्न मानवां पडशे, तेम मानवामां प्रत्यक्ष विरोध आवे छे. जुर्उ. मनुष्यपणुं सदृश छे, परंतु कोइ स्वामीछे, कोइ सेवकछे, कोइ लाखोनां उदर पोषण करेछे, कोइ पोतानु पण उदर पोषण करी शकतो नथी, कोइ देवतानी पेठे निरंतर सुख जोगविलास करे छे, कोइ नारकीनी पेठे निरंतर डुःख जोगवी रह्या छे ते कारणथी अनुजूयमान सुख डुःखना निबंधनजूत पुण्य पाप अवश्य मानवां जोइये. ज्यारे पुण्य पाप मान्यां, त्यारे तेर्उना अत्यत उत्कृष्ट फल जोगववानां स्थान स्वर्ग, नरक पण मानवां जोइशे जो तेम नहि मानशो तो अर्द्धजरतीय न्यायनो प्रसंग आवशे, अर्धुं शरीर वृद्ध, अर्धुं जुवान ते वावतमां प्रयोग अर्थात् अनुमानपण छे सुख डुःख कारणपूर्वक छे, अंकुर जेम कार्य होवाथी, तेवास्ते जे सुख डुःखनां कारण छे, ते मानवां जोइयें, जेम अंकुरनां वीज.

पूर्वपक्षः–नीलादि जे मूर्त्त पदार्थ छे, ते स्वप्रतिजासि अमूर्त्त ज्ञाननां जेम कारण छे, तेम अन्न, फूलमाला, चदन, स्त्रीप्रमुख मूर्त्त दृश्यमानज सुख अमूर्त्तनां कारण छे, सर्प, विष, कडू (खस) आदि डुःखनां कारण छे तो हवे शावास्ते अदृश्य पुण्यपापनी कल्पना करोछो ?

उत्तरपक्षः–आ तमारूं कहेवु अयुक्त छे, कारण के ते कथनमां व्यजिचार छे. जुर्उ वे पुरुषोनी पासे तुल्य साधन छे, तोपण फलमां अत्यंत तफावत देखवामां आवेछे तुल्य अन्नादि जोगववामांपण कोइने आह्लाद (हर्ष) तथा शरीरपुष्टि थायछे, अने वीजाने रोगोत्पत्ति थायछे. आ फलजेद अवश्य सकारणछे; नहितो नित्य सत् नित्य असत् थवु जोइयें, कारण के जे वस्तु (कार्य) कदी थाय, कदी न थाय, ते कारणविना कदापि तेम थतां नथी, अथवा कारणानुमानथी कार्य, पुण्य पाप जाणी शकायछे, त्या कारणानुमान आ छे, दानादि शुज क्रियानां, तेमज हिंसादि अशुज क्रियानां फलजूत कार्य, कृष्यादि क्रियावत् कारण होवाथी छे. जे आ क्रियार्उना फलजूत कार्य छे, ते पुण्य पाप जाणवां जेम खेती करवानी क्रियानां फल, कमोद, जुवार, घउ प्रमुख छे.

पूर्वपक्ष –जेम कृष्यादि क्रियानां दृष्ट फल कमोद प्रमुखछे, तेम दानादि, तेमज पशुहिंसादि क्रियानां दृष्टफल श्लाघा, मांसजक्षण, निर्दयता आदिछे, तो हवे शावास्ते अदृष्ट पुण्यपापनां फल कल्पवां जोइये? कारणके जनसमुदाय विशेषे करी दृष्ट फलमांज प्रवृत्त थायछे, खेती, वेपार प्रमुख हिंसादि क्रियामा वहु लोको प्रवर्त्ते छे, अने अदृष्ट दान फलादि क्रियामां थोडा लोक प्रवर्त्तेछे ते कारणथी कृषि हिंसादि अशुन्न क्रियाउंना अदृष्ट फल पापरूप अमे मानता नथी

उत्तरपक्षः–जो आ तमारूं कथन वास्तविक होय, तो तो परजवमां फलना अजावथी मरण अनंतरज सर्व जीव प्रयत्नविना मोक्ष प्राप्त करशे तथा ससार प्राय· शून्य थइ जशे, ससारमां कोइपण डुःखी होशे नहि, मात्र दानादि शुज्ज क्रियाना करनारा, तेमज तेनां फल जोगवनारा रहेशे, परतु तेम नथी, संसारमां डुःखी वहुज देखवामां आवेछे, अने सुखी थोडाज देखायछे, ते कारणथी सावीत थायछे के कृषि, वाणिज्य, हिंसादि क्रिया निवधन अदृष्ट पापरूप फल डु·खी जीवोने छे, अने दानादि अदृष्ट पुण्यफल सुखी जीवोने छे

प्रश्न·–जे सुखीछे ते हिंसादि क्रियाथी, अने जे डु·खीछे ते दानादि क्रियाथी एम केम न वने?

उत्तर –एम वनतुं नथी, कारणके हिंसादि अशुन्न क्रिया करनारा वहु छे, अनेदानादि शुन्न क्रिया करनारा थोडाछे, आ कारण अनुमानछे हवे कार्य अनुमान कहिये छिये जीवोमां आत्मत्व समान छतां नर पशु आदि देहोमा कारणनी विचित्रताथी कार्य विचित्र देखायछे, जेमके घटनां दंड, चक्र, चीवरादि सामग्री संयुक्त कुजकार, हवे एम पण कहेवाय के, देखाय छे जे माता, पिता ते आ देहना कारण छे,परंतु पुण्य पाप नथी, कारण के मातापिता एकज छे छतापि पुत्रोना देहोमां विचित्रता देखायछे, आ विचित्रता, अदृष्ट (शुन्नाशुन्न कर्म) विना थइ शकती नथी ते कारणथी जे शुन्न देह छे, ते पुण्यनु कार्य छे,अने अशुन्नदेहछे ते पापनु कार्यछे, आ कार्यानुमान सिद्धछे सर्वज्ञ वचन प्रमाणथी पुण्यपापनीसत्ता पण सिद्धछे विशेष जाणवानी इच्छावालाए विशेषावश्यकनी टीका जोवी

पाप, प्राणातिपात आदि अढार पापस्थानकोथी वधायछे, अने ते

व्याशी प्रकारथी जोगववामां आवेछे. ते व्याशी प्रकार आ प्रमाणे छे. पांच ज्ञानावरण, पांच अंतराय, नव दर्शनावरण, छवीश मोहनीय प्रकृति, चोत्रीश नामकर्मप्रकृति, एक अशाता वेदनी, एक नरकायु. एक नीचगोत्र, सर्व मली व्याशी प्रकार थया तेउनुं विस्तारथी स्वरूप लखियेंछियें.

ज्ञानावरण कर्मनी पांच प्रकृति छे. ज्ञानना पांच प्रकार छे १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, आ बंने अजिलाप प्लावितार्थ (वाणीतर्क) ग्रहण रूप ज्ञान छे. ३ अवधिज्ञान, इंद्रियोनी अपेक्षाविना आत्माने रूपी विषयक साक्षात् अर्थग्रहण करनारु ज्ञान, ४ मन. पर्यवज्ञान, मनमां चिंतित अर्थने साक्षात् ग्रहण करनारुं ज्ञान, ५ केवलज्ञान, लोकालोकना सकल पदार्थस्वरूपजासन करनारुं ज्ञान. आ पांचे ज्ञाननां जे आवरण ते ज्ञानावरण छे, १ मतिज्ञानावरण, २ श्रुतज्ञानावरण, ३ अवधिज्ञानावरण, ४ मनः पर्यवज्ञानावरण, ५ केवलज्ञान आवरण १ जेना उदयथी जीव मतिहीन, निःप्रतिजा होय ते मतिज्ञानावरण, २ जेना उदयथी जीवने कांइपण जणतां न आवडे ते श्रुतज्ञानावरण, ३ जेना उदयथी अवधिज्ञान न थाय, ते अवधिज्ञानावरण, ४ जेना उदयथी मन' पर्यवज्ञान न थाय ते मनःपर्यवज्ञानावरण, ५ जेना उदयथी केवल ज्ञान न थाय ते केवलज्ञानावरण.

हवे अतराय कर्मनी पांच प्रकृति कहिये छिये. १ जेना उदयथी, आपवानी वस्तु पण छे, गुणवान् पात्र पण छे, दाननु फल पण आपनार जाणे छे, परंतु दान आपी शकतो नथी, ते दानांतराय, २ जेना उदयथी, देवा योग्य वस्तु पण छे, दातारपण बहुज प्रसिद्ध छे, मागनारपण मागवामां अत्यंत कुशल छे छतांपि मागनारने कांइ पण न मले, ते लाजांतराय, ३ जेना उदयथी, एकवार जोगववायोग्य वस्तु आहारादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते जोगांतराय, ४ जेना उदयथी, वारंवार जोगववा योग्य वस्तु शयन, अंगनादि विद्यमान पण छे, परंतु जीवथी जोगवी न शकाय, ते उपजोगांतराय, ५ जेना उदयथी युवान, रोगरहित, पुष्टाग, तथा बलवान् छतां पण पोतानी शक्ति फोरवी शकाय नहि, ते वीर्यांतराय

हवे दर्शनावरण कर्मनी नव प्रकृति कहिये छीये. सामान्य अवबो-

धनु नाम दर्शन छे, तेनुं जे आवरण ते दर्शनावरण दर्शनावरणना नव भेद मध्येथी प्रथमना चार भेद मूलथीज दर्शन लब्धिना आवरक छे जेम के १ चक्षुदर्शनावरण, २ अचक्षुदर्शनावरण, ३ अवधिदर्शनावरण, ४ केवलदर्शनावरण, तथा निद्रा पांच छे, ते आवरण क्षयोपशमथी लब्ध आत्मलाभनी दर्शनलब्धियोने आवरक छे तेउनुं विशेषस्वरूप आ प्रमाणे छे चक्षुथी सामान्यग्राही जे बोध, ते चक्षुदर्शन, जेना उदयथी ते लब्धिनो जे व्याघात थाय, ते चक्षुदर्शनावरण, तेमज जेना उदयथी चक्षु विना चार इन्द्रिय, तथा मनथी पोत पोताना विषयनु जे सामान्यपणे ग्रहण थाय, एवा अचक्षुदर्शननु जे आछादन थाय, ते अचक्षुदर्शनावरण, जेना उदयथी सामान्यपणे जे रूपि द्रव्यनु मर्यादा पूर्वक ग्रहण थाय छे, एवा अवधिज्ञाननु जे आछादन थाय ते अवधिदर्शनावरण, जेना उदयथी समस्त वस्तुनु सामान्यपणे, वर प्रधान क्षायकभावे प्रगट थवाथी देखवु थाय ते केवल दर्शन, तेनु जे आछादन थाय ते केवलदर्शनावरण चैतन्यने सर्व प्रकारे अतिकुत्सित करे, सामान्य ग्रहणरूप दर्शन उपयोग तेनो विघ्न करे ते निद्रा जाणवी तेना पांच भेद छे १ निद्रा, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचला, ४ प्रचला प्रचला, ५ स्त्यानर्द्धि १ जेमा चपटी वजावता निद्रा लेनार जागी उठे ते सुखप्रतिबोध निद्रा, २ जेमां वहुज हलाववाथी, कपडा खेंचवाथी, निद्रा लेनार दुःखें जागे, अर्थात् जेथी अतिशय निद्रा आवे ते निद्रानिद्रा, ते कर्म प्रकृतिनां नाम पण तेज छे, ३ वेठा वेठां तथा उभां उभा जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला, ४ चालतां, चालतां जीवने जे निद्रा आवे ते प्रचला प्रचला, ५ स्त्याना नाम पिंडीभूत, ते पिंडीभूत थइ छे ऋद्धि अर्थात् आत्मशक्ति जे निद्रामां ते स्त्यानर्द्धि ते निद्रामा जीवने वासुदेवना बलथी अर्ध बल थाय छे, आ निद्रामां जीव केटलांएक कार्य पण करे छे, परतु ते कार्यनु तेने काइ भान रहेतु नथी पाछलनी त्रणे निद्रानी कर्मप्रकृतिना नाम पण तेज छे

हवे मोहनीय कर्मनी प्रकृति लखियें छियें तत्त्वार्थ श्रद्धानने जे विपरीत करे ते मोहनीय छे तेमा १ मिथ्यात्वज जे मोह ते मिथ्यात्व मोहनीय कहीए, मिथ्यात्व, मोहकर्मनी उत्तर प्रकृति छे यद्यपि मिथ्यात्व

१ अनिग्रहिक, २ अनभिग्रहिक, ३ सांशयिक, ४ अभिनिवेशिक, ५ अनाभोगादि, अनेक प्रकारथी छे, तो पण यथावस्थित वस्तुतत्वना अश्रद्धानथी सर्व भेदो एक मिथ्यात्वरूपज गणाय छे, मिथ्यात्व, मोहनीय कर्मनी प्रथम प्रकृति छे, तथा कषाय मोहनीयना सोल भेद छे. कारण के क्रोधादि पण तत्वश्रद्धानथी आत्माने भ्रष्ट करे छे ते सोल भेद आ प्रमाणे छे. १ अनंतानुवंधी क्रोध, २ अनंतानुवधीमान, ३ अनंतानुवंधीमाया, ४ अनंतानुवंधीलोभ, तेवीजरीते ४ अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तेमज प्रत्याखानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा ४ संज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, सर्व मली सोल कषाय मोहनीय छे

जे क्रोधादि अनंत संसारना मूल कारण छे, तथा जेनुं अनंत भवानुबधिशील छे, तेमां जेनो स्वभाव एवो छे के जेवी पथ्थरनी रेखा, जेनी साथे क्केश थाय, तेनी साथे ते ज्यां सुधी जीवे त्यां सुधी रोष छोडे नहि, ते अनंतानुवधी क्रोध छे तथा जे मान, पथ्थरना स्थंभनी जेम कदापि नमे नहि, तथा जे माया, वांसनी जडसमान कदापि सरल न होय, तथा जे लोभ कृमीना रंगसमान कदापि दूर न थाय एवा जे क्रोध, मान, माया अने लोभयुक्त परिणाम, तेनु नाम अनंतानुवधि क्रोधादि कर्म प्रकृति छे. तथा अप्रत्याख्यान, जेमां नञ् अल्पार्थ वास्ते छे, तेथी, जेना उदयथी थोडु पण प्रत्याख्यान थतुं नथी, तेने अप्रत्याख्यान कहे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे, क्रोध पृथ्वीनी रेखा समान, मान हाडना स्थभ समान, माया वकराना शीग समान, लोभ कर्दमना डाघ समान, तेनी स्थिति एक वर्षनी छे तथा जेना उदयथी सर्व विरतिपणु जीवने प्राप्त न थाय, ते प्रत्याख्यानावरण कषाय छे तेमां क्रोध, रेणु (धूल) नी रेखा समान, मान काष्टना स्थंभ समान, माया गोमूत्रनी धारावाही समान, लोभ खंजनना रग समान, तेनी स्थिति चार मासनी छे तेमज जेना उदयथी केवलज्ञान प्राप्त न थाय ते संज्वलन कषाय छे, तेमां क्रोध, पाणीमां लींटी समान, मान नेतरना स्थभसमान, माया वांसनी छोल समान, लोभ हलदरना रंग समान, तेनी स्थिति पदर दिवसनी छे. ए प्रमाणे सक्षेपथी सोल कषायनु स्वरूप छे

हवे नव नोकषायनुं स्वरूप लखियें छियें. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुसकवेद,

हास्य, रति, अरति, शोक, जय, जुगुप्सा, आ नव नोकषाय मोहनीय प्रकृतिठे नो एटले सहकारीपणु कषायने जे सहायकारी थाय ते नोकषाय कहेवाय ठे तेनु स्वरूप कहीये ठियें. १ जेम पित्तना उदयथी मिठी वस्तुनीअजिलापाथायठे, तेम जेना उदयथी स्त्री पुरुषनी अजिलापा करे ठे, ते स्त्रीवेद उदय, आ वेद उदय फुफक (धुणीना) अग्नि समानठे, जेम धुणीनो अग्नि खोजवाथी वधतो जायठे, तेम स्त्रीना स्तन कक्षास्पर्शथी स्त्रीवेद प्रवल उदय पामेठे तथा २ जेम कफना उदयथी खाटी वस्तुनी अजिलापा थायठे, तेम जेना उदयथी पुरुष, स्त्रीनी अजिलापा करेठे, ते पुरुषवेद उदय, आ वेद उदय तृणना अग्नि समानठे, जेम तृणनो अग्नि एकजवार प्रज्वलित थइ, तत्काल शांतपण थइ जायठे, तेम पुरुषवेद तत्काल एकवार उदय थायठे, अने तत्काल शांतपण थायठे तथा ३ जेम पित्त अने कफना उदयथी खाटी मीठी वस्तुनी अजिलापा थायठे, तेम जेना उदयथी स्त्री तेमज पुरुष बनेनी अजिलापा थायठे ते नपुंसकवेद ठे आ वेदनो उदय नगरदाहना अग्निसमानठे. तथा ४ जेना उयदथी निमित्तसह, तेमज निमित्तविना पण हसवु आवे, ते हास्य, मोहकर्मनी प्रकृतिठे तथा ५ जेना उदयथी रमणीय वस्तुउमां जीव रमे, खुशी थाय, ते रतिनामा मोहकर्मनी प्रकृति ठे तथा ६ जेना उदयथी रतिथी विपरीतपणुं थाय ते अरतिनामा मोहकर्मनी प्रकृतिठे तथा ७ जेना उदयथी प्रियवियोगादिमा विकल मन, ग्लानि, क्रदन, परिदेवनादि जीव करे, ते शोकनाम मोहकर्मनी प्रकृति ठे. तथा ८ जेना उदयथी सनिमित्ततथा निमित्त विना जीवने बीक (जीति) लागे ते जयनामा मोहकर्मनी प्रकृति ठे तथा ए जेना उदयथी गदी, मलीन वस्तु देखवाथी नाक चढाववु थाय, ते जुगुप्सानामा मोहकर्मनी प्रकृति ठे सर्व मली पीसतालीश जेद कह्या

हवे नामकर्मनी चोत्रीश प्रकृति पापरूप ठे, तेनां नाम कहियें ठिये. १ नरकगति, २ तिर्यंचगति, ३ नरकानुपूर्वी, ४ तिर्यचानुपूर्वी, ५ एकेंड्रिय जाति, ६ डींड्रिय जाति, ७ त्रींड्रियजाति, ८ चतुरिंड्रिय जाति, १३ पाच सहनन, १८ पांच संस्थान, १ए अप्रशस्तवर्ण, २० अप्रशस्त गंध, २१ अप्रशस्तरस, २२ अप्रशस्तस्पर्श, २३ उपघात, २४ कुविहायोगति,

२५ स्थावर, २६ सूक्ष्म,२७ अपर्याप्त, २८ साधारण, २९ अस्थिर, ३० अशुन्न, ३१ असुन्नग, ३२ डुःस्वर, ३३ अनादेय, ३४ अयशःकीर्त्ति.

तेर्ठनुं स्वरूप आ प्रमाणे १ जेना उदयथी जीवनुं नारकीनाम पडे, तथा नरक स्थानमां जाय ते नरकगति, २ तेवीज रीतें तिर्यंचगति पण जाणवी, ३ जेना उदयथी नरकगतिमां जतां जीवने वे समयादि विग्रहगतिथी अनुश्रेणीमां नियत गमन परिणति थाय, ते नरकगतिने सहचारी होवाथी नरकानुपूर्वी कहेवाय, ४ तेवीज रीतें तिर्यंचानुपूर्वीपण जाणवी. ५ जेना उदयथी पृथिवी, जल, अग्नि, पवन, वनस्पति, मां जीव उत्पन्न थाय ते एकेंड्रिय जाति. ६ जेना उदयथी जीवने वे इंड्रिय प्राप्त थाय ते द्वींड्रियजाति, ७ तेवीज रीतें त्रीड्रियजाति, ८ तेमज चतुरिंड्रिय जाति.

१३ प्रथम संहनन वर्जिने बाकीनां पांच संहनन, ऋषन्ननाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलिका सेवार्त्त छे, तेनु स्वरूप कहियें छियें. ऋषन्नपरिवेष्टनपट्टः नाराचउन्नयतोमर्कटबध." जेमां बने पांसे वे हाडोने मर्कट बंधथी बांधीने पट्टनी आकृति समान हाडनी पट्टी उपर विटेलि होय ते ऋषन्ननाराच संहनन छे; तथा जेमां वज्रऋषन्नहीन, बंने पासें मर्कटबंध होय, ते नाराच संहनन छे, तथा जेमां एक पासें मर्कटबध, अने बीजे पासे, खीलीथी बंधेलुं हाड होय, ते अर्धनाराच संहनन छे, तथा जेमां ऋषन्ननाराच, बंनेथी वर्जित, मात्र कीलिकाथी बंधेलां बने हाड, एवो जे हाडनो संचय, ते कीलिका संहनन छे, तथा जेमां बने हाडकां स्पर्शमात्र लक्षणयुक्तछे, अने चपी मुठी कराववाथी जेमां आर्त्ति (पीडा) थाय, ते सेवार्त्त संहनन छे

१८ आद्य संस्थान वर्जिने, बाकीनां पांच संस्थाननुं स्वरूप कहियें छियें. १ न्यग्रोधपरिमंडल, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ हुंडक. तेमां १ न्यग्रोधवत् अर्थात् वडवृक्षनी जेम परिमंडल, ते न्यग्रोध परिमंडल, जेम वडनुं जाड उपरना न्नागमां संपूर्ण अवयववालुं होयछे, अने नीचेना न्नागमां तेवु होतुं नथी, तेम जेनो नान्निनी उपरनो विस्तार संपूर्ण लक्षणवालो, अने नीचेनो तेवा लक्षणसयुक्त नहि ते न्यग्रोध परिमंडल संस्थान. तथा २ सादि, आ संस्थानमां नान्निनी नीचेना शरीरनो न्नाग सुंदराकार लक्षणो सयुक्त, परंतु नान्निनी उपरनो न्नाग विसंवादी, ते सादिसंस्थान,

तथा ३ हाथ, पग, मस्तक, ग्रीवा यथोक्त लक्षणादियुक्त अने बाकीनो शरीरनो कोठो अर्थात् उदरादि मध्यभाग लक्षणादि रहित, ते वामन संस्थान, तथा ४ उदरादि लक्षणसंयुक्त, अने हाथ पगादि लक्षणो रहित ते कुब्ज सस्थान, तथा ५ जेमां शरीरनु एकपण अवयव सुदर न होय ते हुंड संस्थान, जाणवा

२२ जेना उदयथी वर्णादि चारे अप्रशस्त होय, तेनुं स्वरूप कहियें छिये जेनु दर्शन अतिवीभत्स छे, एवा कृष्णादि वर्णवाला प्राणियो थाय छे, ते अप्रशस्त वर्णनाम, ते वर्ण पाचप्रकारना छे, तेणे करी जे जीव युक्त होय, ते अप्रशस्तवर्ण नाम, तथा जेना उदयथी मुएला तेमज सडेला उंदरादिनी दुर्गंध जेवी गध जे प्राणियोना शरीरमां होय ते अप्रशस्त गध नाम, तथा जेना उदयथी प्राणियोना शरीरमा रसनेंद्रियने दु खदायी स्वभाववाला एलीआ जेवा कडवा तिखाआदि असार रस होय, ते अप्रशस्तरसनाम, तथा जेना उदयथी स्पर्शेंद्रियने उपतापना हेतुरूप एवा कर्कशादि स्पर्शविशेष जीवोना देहमां होय ते अप्रशस्त स्पर्शनाम जाणवा

२३ जेना उदयथी पोतानाज शरीरना अवयवोथी प्रतिजिह्वा, (पडजीभी) गलवु, मेदवृद्धि थवी, अतिलांबा थवु, चोर दांतादि शरीरमां वधवाथी शरीरने पीडा आपे, ते उपघातनाम, तथा २४ जेना उदयथी जीवोनी खर तथा उटना जेवी चाल थाय, ते कुविहायोगति, तथा २५ जेना उदयथी पृथिवीआदि एकेंद्रियमां जीव उत्पन्न थाय ते स्थावरनाम, तथा २६ जेना उदयथी लोकव्यापि सूक्ष्म, पृथिवी कायादिमां जीव उत्पन्न थाय, ते सूक्ष्मनाम, तथा २७ जेना उदयथी आहारप्रमुख पूर्वोक्त पर्याप्ति पुरी न थाय, ते अपर्याप्तनाम, तथा २८ जेना उदयथी अनंतजीवोनु साधारण एक शरीर होय, ते साधारणनाम, तथा २९ जेना उदयथी जिह्वादि अवयवो शरीरमा अस्थिर होय, ते अस्थिरनाम, तथा ३० जेना उदयथी नाभिनी नीचेना अवयवो अशुभ होय, ते अशुभनाम, तेनुं कारण ए छे के, कोइनो हाथ लागी जाय तो ते रोष करतो नथी, परतु पग लागवाथी क्रोध करे छे, ३१ जेना उदयथी जीवने जे जे देखे, तेने ते जीव अनिष्ट लागे, उद्वेगकारी लागे ते असुभगनाम, ३२ जेना उदयथी जीवनो स्वर कठोर, अप्रिय, घोघरा जेवो लागे, ते दु स-

र नाम, २३ जेना उदयथी जीव सप्रमाण. युक्तियुक्त बोले तोपण तेनुं कहेवु कोइ न माने, ते अनादेयनाम, २४ जेना उदयथी जीव. ज्ञान. विज्ञान, विनय, दानादिगुणयुक्त छे, तोपण जगत्मां तेनी यश. कीर्तिने बदले निंदा प्रमुख थाय ते अयशःकीर्त्ति नाम एरीते [illegible].

जेना उदयथी जातिप्रमुखथी विकल, जीव थाय छे [illegible] चांमाल ढेढ जंगी वाघरी प्रमुख जातिमां जन्मेछे ते [illegible] वायछे "कुलं गूयते संशब्द्यतेऽनेन हीनोयमजातिरि[illegible] कुलं नीचमिति विशेषणाऽन्यथानुपपत्त्या नीचैर्गोत्र[illegible]

प्रश्नः— नीचगोत्रना उदय, नीचकुलमां जन्मवुं [illegible] पान न करवां, तेउनी दूल मानवी, अने निंदा [illegible] तमे जे मानोछो तथा करोछो, ते तमारी मोटी [illegible] मनुष्यत्वधर्ममां सहु सरखां छे, हाथपगादि [illegible] हवे एकने उच मानवो, अने बीजाने नीच [illegible] ब्राह्म- ण तथा जैनिउए जारतवर्षमां बहुकालथी [illegible] छे, ए मान्यतामां मुक्तिनु शुं अंग छे ? वली जुउ [illegible] हिंदुउ शिवाय सर्व अन्यदेशोना वसनाराउ, [illegible] नथी सर्व एकसाथे खानपानकरवामां [illegible] मान्य- ता, मूढता अर्थात् अंधपरंपरावाली छे. [illegible] नीच नथी.

उत्तर.—आ तमारु कथन, [illegible] समज- वालुं छे अमारो अभिप्राय एवो छे [illegible] थाय छे ते निमित्तविना थतुं नथी जुउ आ [illegible] चोरी. जंगी. ढेढ, चंडाल, कसाइप्रमुख [illegible] के जंगलोमां रहेछे, तेउ अनेक [illegible] पाय, निरंतर करे छे, तेउ अतिदुर्गंधि [illegible] विरति, लनारां, तेमज महाबुरा [illegible] द कर्मना हार करनारां, हमेशा [illegible] नीच [illegible] दि शुजा- मित्त छे, हवे ते निमित्तोने [illegible] नहि समजवाथी नास्तिको [illegible] म होय तो अमे पूर्वे [illegible] अ.

येठिये, तो तो तेउंनां एवी असन्यजाति तथा कुलमां उत्पन्न थवानां कारणो पण मानवां जोइयें जे कर्मना उदयथी एवा कुल, जातिमां तेउं उत्पन्न थाय ठे, ते कर्मनु नामज नीच गोत्र कर्म ठे, आ नीचगोत्रना प्रजाववथी वीजापण वहुपाप प्रकृतिउंनो उदय थाय ठे, जेथी तेउं क्लेशादि दुःखो अत्यत पामे ठे, बुद्धिहीनता, क्रोधयुक्त स्वजाव, निर्दयता, कुत्सित आहार, पशुउंनी जेम जंगलवास, धर्मकर्मथी पराङ्मुख, सत्सगरहित, गम्यागम्यविवेकरहित, जक्ष्याजक्ष्य, पेयापेयविचारशून्य, आ सर्वनु मुख्य कारण नीचगोत्र ठे जेम धनवान् तेमज निर्धन अनेक वावतोमा एकसरखा यतां नथी, तेम नीचगोत्रवाला उचगोत्रवालां साथे समान थइ शकतां नथी

जो एम कहो के विलायतमां सर्व एकसरखां ठे, तो ते वातमां अमे आश्चर्य मानता नथी, कारण के ज्यां सर्व जीवोना, गोत्रकर्मनो एकसरखो वंध होय, त्यां सर्व एकसरखा थइ शके ठे, अने मान्यता पण सर्वेनी एकसरखी थाय ठे, परंतु ज्यां उंचनीचपणानी मान्यता, पूर्वोक्त कारणसर थाय ठे, त्यां उंचनीच गोत्रनो व्यवहारपण अवश्य थाय ठे परतु असन्य, हीन जातिउंने जे बुरी (जुमी) माने ठे, तेउंने अमे बुद्धिमान् कहेता नथी, कारण के अमारो एवो निश्चय ठे के बुराइ तो खोटां कर्म करवाथी थाय ठे जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य थइ बुरां काम, जेवां के जीवहिंसा, असत्यता, चोरी, परस्त्रीगमन, परनिंदा, विश्वासघात, कृतघ्नता, मांसजक्षण, मदिरापान, जुगार प्रमुख करशे, तेउंने अवश्य अमे बुरा मानशुं, अने नीचजातिवाला हशे, ठतापि जो तेउं सुकर्म जेवां के, दया, सत्य, चोरीनो त्याग, परस्त्रीत्याग इत्यादि करशे तो तेउंने अमे उत्तम मानीशुं हवे विचारो के अमारी समज बुरी केवीरीते होइ शके ठे? वली नीचगोत्रवालां साथे जे खानपाननो व्यवहार राखता नथी, तेनु कारण तो कुलरुढि ठे, अने तेउंनी जे निंदा करे ठे तेउं तो महाअज्ञानी ठे, कारण के अमारो सिद्धात एवो ठे के निंदा कोइनी पण करवी न जोइये, वली तेउंनी जे ढूत माने ठे तेपण कुलाचार ठे, वली एक एवु पण कारण ठे के, जो के मनुष्यत्व धर्मथी सर्व सरखां ठे, तोपण जेम माता, वहेन, दीकरी, जार्या, सर्व स्त्रीत्व स्वरूपें समान ठे, तोपण

तेउंमां गम्य अगम्यनो विचार छे, तेवीजरीतें उचनीचपणाना विभागनो विचार छे आ व्यवहार ब्राह्मण तथा जैनियोये चलाव्यो नथी, परंतु ते जीवोना भलां, बुरां कर्मोना उदयथी चालेलो छे आ प्रमाणे परस्पर जातियोमां खान पान नहिं करवानो व्यवहार मिसर देशमां पण हतो, तेथी सिद्ध थाय छे के उच नीच गोत्रना प्रभावथीज उच नीच जाति, कुल थाय छे

तथा आयुकर्मनी नरक आयुनी प्रकृति पापमां गणायछे नरकशब्दनी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे "नरान् प्रकृष्टपापफलभोगाय गुरुपापकारिणः प्राणिनोनरानित्युपलक्षणत्वात् कायंति शब्दयंतीति नरकास्तेष्वायुस्तद्भवप्रायोग्यसकलकर्मप्रकृतिविपाकानुभवकारणं प्राणधारणं यत्तन्नरकायुष्कं तद्विपाकवेद्यकर्मप्रकृतिरपि नरकायुष्कमिति ॥"

तथा वेदनीकर्मनी अशाता वेदनी पापप्रकृतिमां गणायछे अशाता-नाम दुःखनुं छे, जेना उदयथी जीव दुःख भोगवे छे ते अशातावेदनी छे आ प्रमाणे

ज्ञानावरण पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरण नव, मोहनी छवीश, नामकर्मनी चोत्रीश, नीच गोत्र एक, नरकायु एक, अशातावेदनी एक, सर्व मली ब्याशीभेदे पापफल भोगववामां आवेछे इति

हवे आश्रवतत्त्वनु स्वरूप लखियें छिये "आश्रवन्ति, आगछन्ति कर्माणि जीवेषु येन सआश्रवः" जेनाथी जीवोने कर्मनी प्राप्ति थाय ते आश्रव १ असत् देव, २ असत् गुरु, ३ असत् धर्म, तेउंविषे सत् देव, सत् गुरु अने सत् धर्म एवी जे रुचि ते मिथ्यात्व, तथा हिंसादिथी न निवर्त्तवु, ते अविरति, तथा मद्यप्रमुख ते प्रमाद, तथा क्रोधादि ते कषाय, अने मन, वचन, कायानो व्यापार ते योग, आ मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय, योग, पांचे पुनर्बंधक जीवना ज्ञानावरणीय आदि कर्मना बंधना हेतु छे, तेउंने जैनमतमां आश्रव कहेछे. ते मिथ्यात्वादि शुभाशुभ कर्मबंधना हेतु होवाथी तेज आश्रव छे आ तात्पर्य छे

प्रश्न –प्रथम, बंधोनो अभाव छतां, आश्रवनी उत्पत्ति केम होय? जो कहो के आश्रवथी पहेलां बंध छे, तो तो ते बंध पण आश्रवहेतु

विना थइ शकतो नथी. कारण के जे जेनो हेतु छे, ते तेनो अभाव छतां थइ शकतो नथी, जो होय तो, अतिप्रसंग दूपण आवशे

उत्तर.–आ कहेवु असत् छे, कारणके आश्रवने पूर्वबंधनी अपेक्षाए कार्यपणु छे, अने उत्तरबंध अपेक्षाए कारणपणु छे, तेवीजरीते बंधने पण पूर्वउत्तर आश्रवनी अपेक्षाए कार्यत्व, कारणत्व जाणवु, बीजांकुरनी जेम बंध, आश्रव बंनेने परस्पर कार्यकारणभावनो संबंध छे, तेथी अहींया इतरेतर दूपण नथी प्रवाह अपेक्षाए बंने अनादि छे

आश्रव पुण्यपापनो बंधहेतु होवाथी बे प्रकारें छे आ बने प्रकारना मिथ्यात्वादि उत्तर भेदोना उत्कर्ष, अपकर्ष अर्थात् अधिक, न्यूनपणाथी अनेक प्रकार छे आ शुभाशुभ मन, वचन, कायाना व्यापार रूप आश्रवनी सिद्धि पोताना आत्मामां स्वसंवेदनादि प्रत्यक्षथी छे, अने बीजाउमां वचन अने कायाना व्यापारनी प्रत्यक्षथी सिद्धि छे, बाकीनाउनी तेना कार्यथी उत्पन्न थता अनुमानथी जाणवी, तेमज आप्तप्रणीत आगमथी पण जाणवी

आश्रवना उत्तरभेद बेंतालिश छे पांच इन्द्रिय चार कपाय, पांच अव्रत, पचीशक्रिया, त्रणयोग

जीवरूप तलावमां, कर्मरूप पाणी जेनाथी आवे, ते आश्रव ते गरनालां प्रथम तो पाच इन्द्रिय छे तेनु स्वरूप कहिये छिये १ स्पर्शिये स्वविषय स्पर्शलक्षण, जेनाथी, ते स्पर्शनेंद्रिय, २ "रस्यते आस्वाद्यते रसोऽनयेति" आस्वादिये, रस लहिये जेनाथी, ते रसना (जिव्हा) इन्द्रिय, ३ सूंघीए गंध जेनाथी, ते घ्राणेंद्रिय, ४ चक्षु ते नेत्रेंद्रिय, ५ सांभलीये शब्द जेनाथी, ते श्रोत्रेन्द्रिय मूलभेदनी अपेक्षाथी आ पांच इन्द्रिय, आश्रवना पांच कारण छे

"क्रुध्यति कुप्यति" सचेतन, अचेतन वस्तुउ उपर जेणे करी प्राणी सनिमित्त, निर्निमित्त कोप करे ते क्रोध मोहनीयकर्म छे, तेनो उदय ते पण क्रोध छे तथा मान ते मृदुतानो अभाव, तेना बे प्रकार छे प्राप्त थयेली वस्तुउवडे जे अहंकार थाय ते मद, अने अप्राप्त छता अहंकारी वृत्ति ते मान ते मदना आठ प्रकार छे १ जातिमद, २ कुलमद, ३ बलमद, ४ रूपमद, ५ ज्ञानमद, ६ लाभमद, ७ तपमद, ८ ऐश्वर्यमद,

१ पोतानी माताना पक्षनो अहंकार करे, जेम के मारी माता मोटा घरवालानी दीकरी छे, इत्यादि. एवीरीतें पोताने उंचा मानी श्लाघा करे अने वीजाउंनी ते वावतमां निंदा करे ते जातिमद २ पोताना पिताना पक्षनुं अभिमान करे, जेमके मारा पितानुं कुल उंचु छे, अने वीजाउंनी ते वावतमां निंदा करे, ते कुलमद ३ पोताना वलनु अभिमान करे, अने वीजाना वलनी निंदा करे ते वलमद ४ पोताना रूपनु अभिमान करे, अने वीजाना रूपनी निंदा करे ते रूपमद ५ पोताने महाज्ञानी माने, अने वीजाने लुब्धमति माने ते ज्ञानमद, ६ तप करीने अभिमानथी पोताना मनमां माने के मारा समान कोइ तपस्वी नथी ते तपमद ७ पोते पोताने मोटो नशीवदार माने, अने वीजाने हीनपुण्यवाला समजे ते लाभमद ८ पोतानी ठकुराइनु अभिमान करे अने वीजाने घास फुस समान गणे ते ऐश्वर्यमद. ते प्रमाणे मानना पण समजवा तथा "मयति गछति" जायछे. जे जे विकारोथी वीजाने ठगवावास्ते जीव ते माया कहेवाय छे तथा जेनाथी परधन प्राप्त करवामां जीवने गृद्धिपणुं होय, ते लोभ कहेवाय छे ते चारे कषाय कहेवाय छे

हवे पांच अव्रतनुं स्वरूप कहिये छिये पांच इन्द्रिय, त्रण वल, मनवल, वचन वल, कायवल, तथा श्वासोश्वास अने आयु, आ दश प्राण छे ते दश प्राणना योगथी जीवने पण प्राण कहिये. ते प्राणोनो जे वध अर्थात् नाश ते प्रथम प्राणवध याने जीवहिंसा जाणवी २ मृषावाद अर्थात् जुठुं वोलवु ३ अदत्तादान अर्थात् वीजानी वस्तु चोरी लेवी ४ मैथुन (अव्रह्मसेवन) स्त्री पुरुषनुं जोडु ते मिथुन, ते वंनेना मेलापथी जे कर्म थाय ते मैथुन ५ परिग्रह सर्व वाजुएथी ग्रहण याने एकत्र करीये, चार गतिना निवंधन कर्म जेनाथी ते परिग्रह आ पांच अव्रतना चार चार भांगा छे तेनुं स्वरूप लखिये छिये

प्रथम हिंसाना चार भांगानु स्वरूप, १ द्रव्ये हिंसा, परंतु भावे नहि, २ द्रव्ये हिंसा नहि, परंतु भावे छे, ३ द्रव्ये हिंसा अने भावे पण हिंसा, ४ द्रव्यें हिंसा नहि, अने भावे पण नहि प्रथमना भंगनुं स्वरूप एवु छे के साधुने समाचारी, प्रतिलेखना करतां, मार्गमां विहार करतां, नदी प्रमुख उतरता, नावमांवेसी नदी ओलंगता, नदीमां साध्वी आदिने

तणाता, काढतां, वरसाद वरसते थडील जतां, ग्लान साधुउनी वरसादमां लघुशकाने परठवता, गुरुनां शरीरने वातप्रमुख व्याधिने प्रसंगें तथा थाक लागवाथी मुठी चपीकरतां जे हिंसा थाय छे ते द्रव्यहिंसा छे तथा श्रावकोने पण जिनमंदिर बनावतां, जिनपूजा करता साधर्मिवात्सल्य करतां, तीर्थयात्रा करतां, रथयात्रा करतां, अष्टाह्महोत्सव करतां, प्रतिष्ठा तेमज अंजन शलाका करतां, भगवान् तेमज गुरूनी सन्मुख सामैयु करी जतां, इत्यादि कर्तव्य करतां जे हिंसा थाय छे ते सर्वे द्रव्यहिंसा छे, परंतु भावहिंसा नथी तेनुं फल अल्प पाप अने बहु निर्जरा छे, एम श्रीभगवतीसूत्रमां कहेलु छे आ हिंसा थाय छे ते प्रसगे साधुआदिना परिणाम बहुज सुदर छे, माठा अध्यवसाय नथी, अने उपयोगयुक्त वर्त्तन छे तेथी द्रव्यहिसा छे

प्रश्न.—यज्ञादिमा गो, अश्वप्रमुख जीव मारवामां आवेछे, तेपण द्रव्य हिंसा केम नहि ? तेनो उत्तर मीमासक मतखंडनमां लखेलो छे

बीजा भगनु स्वरूप एवु छे के जे पुरुष उपरथी तो शांतरूप देखाय छे, परंतु तेना अत करणना अध्यवसाय महामलीन, हिंसामय छे, जेम के तेनी चाहना एवी थाय के, मारा शत्रुनुं मरण थाय, तेना कुटुबमां मरकी चाले, तेना घरमा आग लागे, ते नदीमा डुबी जाय, तेना पुत्र स्त्रीनो नाश थाय, तथा बीजा अनेक प्रकारे जीवहिसा करवाना कामनो संकल्प विकल्प करे, तेवा विचारोमां प्रवर्त्तवाथी, हिंसा तो करतो नथी, तेथी द्रव्ये हिंसा नथी, परतुतेना अध्यवसाय हिसामय होवाथी ते भावे हिसा छे, अने तेथी ते जीव हिसक छे तेनु फल अनंताकाल सुधी ससारमां परिभ्रमण करवु तेज छे

त्रीजा भगमां इंद्रियोना विषयोमां तेमज कषायमा अत्यत गृद्ध थइ जीवहिसा करवी, जेमके कसाइ थवु, शिकार करवा, विश्वासघातप्रमुख करी जीव जाय तेवां काम करवां, तथा पदर कर्मादान प्रमुख अनाचरणीय जीव हिसाना काम करवा, अने तेथी लाभ थता मनमां आनद मानवो आ द्रव्यें हिसा तथा भावे पण हिंसा छे,तेनु फल, ससार परिभ्रमण तथा दुर्गति छे

चोथा भंगमां द्रव्ये पण हिंसा नहि, अने भावे पण हिंसा नहि. आ भंगशून्य छे. आ भंगवालो जीव संसारमां कोइ पण न होय

मृषावादना पण चार भंग छे तेनुं स्वरूप कहिये छिये १ साधु रस्तामां चाल्या जायछे, तेनी आगल थइ जगलनी गायो तथा मृग प्रमुखनुं टोलुं चाल्युं जायछे टोलानी शोध करतो कोइ शिकारी बंदुक प्रमुख शस्त्र लइ चाल्यो आवे छे, ते शिकारी ते जीवोनो शिकार करवा वास्ते साधुने पुछे छे के तमे अमुक जीवोने जता देख्या छे? साधु ते शिकारीना सवालनो जवाब नहि देता मोन रहे छे शिकारी जवाब मेलववासारू साधुपर हुमलो करे छे तथा मारेछे, तेवे प्रसंगे साधु कहे छे के में तो टोलाने जतां देखेल नथी यद्यपि साधुनु आ बोलवुं द्रव्यें जूठुं छे, परंतु भावे जूठु नथी, कारण के जे इंद्रियोना भोगने वास्ते तेमज लोभादि कषायथी जूठु बोले छे तेज भावे जूठु छे, परंतु साधुनुं जूठुं बोलवु तो निरपराधी प्राणीउंनी दयावास्तेज थयेलु छे, तेथी वास्तवमां ते मृषावाद नथी

बीजा भंगमां कोइ मनुष्य मुखथी तो कांइ बोलतो नथी, परंतु बीजाने ठगवावास्ते मनमां अनेक विकल्प करेछे आ द्रव्यथी मृषावाद नथी परंतु भावे मृषावाद छे त्रीजाभंगमां मुखथी असत्यवचनो बोले छे, अने अंतःकरणमां छलकपट करवाना मलीन अध्यवसाय पण छे आ द्रव्यें तथा भावे मृषावाद छे चोथो भंग पूर्ववत् शून्य छे

हवे चोरीना चार भंगनुं स्वरूप कहिये छियें प्रथम भंगमां—एक स्त्री शीलवंती छे, तेनो शील भंग करवा कोइ दुष्ट परिणामवालो राजा ते स्त्रीने पकडी पोताना कबजामां राखेछे, ते हकीकत कोइ धर्मि पुरुषना जाणवामां आवतां, ते स्त्रीना शीलनुं रक्षण करवावास्ते, ते स्त्रीने, ते पुरुष, ते राजाना कबजामांथी राज्य बहार लइ जाय तो व्यवहारथी तो ते राजानी ते पुरुषे आज्ञाभंगरूप चोरी करी छे, परंतु वास्तवमां ते चोरी नथी वली कोइपुरुष पोताना घरमा द्रव्य राखी, घरनां द्वार बंध करी परदेश गयेल छे, गाममां चोरनो उपद्रव थवाथी, ते परदेश गयेला सरसनु द्रव्य चोराइ जशे, एम तेना कोइ हितचितकने लागवाथी, रात्रिने समये ते परदेश गयेलाना घरनां द्वार खोली तेनु सघलु द्रव्य,

ते पोताने घेर पाछो आवेथी तेने आपवानी बुद्धिपूर्वक लइ, पोताना घरमां राखेछे, आ दृष्टांतमा बीजानु द्रव्य, तेनी रजा शिवाय, तेना कबजामांथी लइ लेवाथी द्रव्ये चोरी थायछे, परंतु वदयानतनो अभाव होवाथी भावेचोरी थती नथी तेवीरीतें बीजी बाबतमां पण समजवुं

बीजाभंगमा कोइ पुरुष चोरी तो करतो नथी, परंतु चोरी करवाना अध्यवसाय तेना मनमा थया करेछे, ते द्रव्यथी चोरी नहि, परंतु भावें चोरी छे वळी वीतराग सर्वज्ञ परमात्मानी आज्ञाना भग करनाराउने पण भावचोर कहेलांछे त्रीजा भगमां, कोइ पुरुष चोरी करेछे, तेमज तेनो अध्यवसाय पण चोरी करवानो छे ते द्रव्यें तथा भावे चोरी छे चोथो भग पूर्ववत् शून्य छे

हवे मैथुनना चारभग कहिये छिये जे साधु जलमां डुबती साध्वीने देखीने, तेने काढवाने वास्ते पकडे, तेमज कोइ गृहस्थ उचेथी पडीजती कोइ स्त्रीने तेना रक्षणार्थे पकडे, तेमज कोइगाडी थइ गयेली नुकशान करती स्त्रीने पकडे, तेवा प्रसगोमां पकडवु ते द्रव्ये मैथुन छे परतु भावे नथी बीजा भगमां–कोइ पुरुष, स्त्रीने भोगवतो नथी, परंतु तेना मनमां स्त्रीसेवन करवानी अभिलाषा बहुज रह्या करेछे, ते द्रव्ये मैथुन नहि, परतु भावे मैथुन छे त्रीजा भगमां–स्त्रीसाथे मैथुन अभिलाषापूर्वक करवु ते द्रव्ये तथा भावे मैथुन छे चोथो भग पूर्ववत् शून्य छे

हवे परिग्रहना चार भग कहिये छिये कायोत्सर्गमा स्थित रहेला कोइ मुनिना गळामा कोइ सरस हारादि आभूषण पहेरावी दे, ते जोइने बीजा अजाण्या पुरुषो, मुनिने परिग्रहवाळा धारे, परतु मुनिने ते पदार्थपरपरिग्रहबुद्धि नथी तेवा प्रसगमां द्रव्ये परिग्रह कहेवाय, परतु मुनि भावे परिग्रही नथी बीजा भगमां–कोइपुरुष पासे एक कोडी पण नथी परंतु धन मेळववानी बहुज अभिलाषा रह्या करे, ते भावे परिग्रही छे द्रव्ये नहि त्रीजा भंगमा–धनपण पासे होय, अने धन मेळववानी अभिलाषा पण रह्या करे, ते द्रव्ये तथा भावे परिग्रही छे चोथो भग पूर्ववत् शून्य छे सर्वभगमा बीजो तथा त्रीजो भग निश्चयथी अविरतिरूप छे

हवे पचीश क्रियानु स्वरूप लखिये छिये १ शरीरथी जे क्रिया थया

करे, ते कायिकी क्रिया २ कसाइ प्रमुख शस्त्रथी परजीवोने उपघात करी पोताना आत्माने नरकगतिमां जवाना अधिकारी करे ते अधिकरण क्रिया ३ जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चिंतवना करवी ते प्राद्वेषिकी क्रिया. ४ पोताने तथा परने जे परिताप उपजाववो ते पारितापनिकी क्रिया. ५ एकेंद्रिय प्रमुख जीवोने हणवा तथा हणाववानी जे क्रिया ते प्राणातिपातिकी क्रिया ६ पृथ्वीकायादि जीवना उपघात कराववा तथा करवा सारू कर्षण प्रमुख करवु, कराववुं ते आरंभिकी क्रिया ७ धनधान्यादि नवविध परिग्रह मेलवतां, तथा तेना रक्षणसारू मूर्छाना परिणाम बनेला राखवा सारू जे क्रिया करवी पडे ते पारिग्रहिकी क्रिया ८ बीजाने ठगवा सारू कपट युक्त जे क्रिया करवी पडे ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ए जिनवचन असद्दहतां विपरीत प्ररूपणा प्रमुख करवाथकी जे क्रिया लागे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० संयमने विघातकारक कषायोना उदयथी पच्चखाण कीधा विना जे सर्ववस्तुनी क्रिया लागे ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ११ कौतुकेंकरी अश्वादि जोवां तेमज रागादि कलुषित चित्तथी जीव, अजीवने जोवा ते दृष्टिकी क्रिया. १२ राग, द्वेष, मोह संयुक्त चित्तथी स्त्री आदिना शरीरने स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीव तथा अजीवसंबंधी जे राग द्वेष थाय, जेम के बीजाने घेर हस्ती, घोडा, वस्त्र प्रमुख देखी द्वेष धरे, जे ए वस्तुउ तेनी पासे क्यांथी? एम चिंतवता कर्म बंध करे ते प्रातित्यकी क्रिया १४ पोताना अश्वप्रमुखने जोवावास्ते आवेला स्त्री पुरूषोने प्रशंसा करता जोइने हर्ष धारण करे, तेमज स्त्री प्रमुखने भोजन करवा आवतां जे क्रिया लागे ते, अथवा दुध, दहीं, घी, तेल प्रमुखनां भाजन उघाडां रहेतां तेमां त्रस जीव आवी पडे ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया १५ परउपदेशित पापमां लांबा वखतसुधी प्रवर्तवु, तथा पापना भावथी अनुमोदना करवी ते नैसृष्टिकी क्रिया, १६ कोइ पुरुष अत्यंत अभिमानथी उइकेराइने क्रोधित चित्त थयो थको, जे काम नोकरपासे कराववा जेवु होय ते पोताना हाथथी करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ अर्हंत भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करीने पोतानी बुद्धिथी जीवाजीवादि सूक्ष्म पदार्थोनी प्ररूपणा करवासारू जे क्रिया करे ते आज्ञापनिकी क्रिया. १८ बीजाना अछतां खोटां आचरणो

करे, ते कायिकी क्रिया. २ कसाइ प्रमुख शस्त्रथी परजीवोने उपघात करी पोताना आत्माने नरकगतिमां जवाना अधिकारी करे ते अधिकरण क्रिया. ३ जीव तथा अजीव उपर द्वेषनी चितवना करवी ते प्राद्वेषिकी क्रिया. ४ पोताने तथा परने जे परिताप उपजाववो ते पारितापनिकी क्रिया. ५ एकेंद्रिय प्रमुख जीवोने हणवा तथा हणाववानी जे क्रिया ते प्राणातिपातिकी क्रिया. ६ पृथ्वीकायादि जीवना उपघात कराववा तथा करवा सारू कर्षण प्रमुख करवु, कराववु ते आरंभिकी क्रिया. ७ धनधान्यादि नवविध परिग्रह मेलवतां, तथा तेना रक्षणसारू मूर्छाना परिणाम वनेला राखवा सारू जे क्रिया करवी पडे ते पारिग्रहिकी क्रिया. ८ बीजाने ठगवा सारू कपट युक्त जे क्रिया करवी पडे ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ९ जिनवचन असद्दहतां विपरीत प्ररूपणा प्रमुख करवाथकी जे क्रिया लागे ते मिथ्यादर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० संयमने विघातकारक कषायोना उदयथी पच्चखाण कीधा विना जे सर्ववस्तुनी क्रिया लागे ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ११ कौतुककरी अश्वादि जोवां तेमज रागादि कलुषित चित्तथी जीव, अजीवने जोवा ते दृष्टिकी क्रिया. १२ राग, द्वेष, मोह संयुक्त चित्तथी स्त्री आदिना शरीरने स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया. १३ जीव तथा अजीवसंबंधी जे राग द्वेष थाय, जेम के बीजाने घेर हस्ती, घोडा, वस्त्र, प्रमुख देखी द्वेष धरे, जे ए वस्तुउ तेनी पासे क्यांथी? एम चिंतवता कर्म बंध करे ते प्रातित्यकी क्रिया. १४ पोताना अश्वप्रमुखने जोवावास्ते आवेला स्त्री पुरुषोने प्रशंसा करता जोइने हर्ष धारण करे, तेमज स्त्री प्रमुखने भोजन करवा आवतां जे क्रिया लागे ते, अथवा दुध, दहीं, घी, तेल प्रमुखनां भाजन उघाडां रहेतां तेमां त्रस जीव आवी पडे ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया १५ परउपदेशित पापमां लांबा वखतसुधी प्रवर्तवुं, तथा पापना भावथी अनुमोदना करवी ते नैसृष्टिकी क्रिया, १६ कोइ पुरुष अत्यत अभिमानथी उइकेराइने क्रोधित चित्त थयो थको, जे काम नोकरो पासे कराववा जेवु होय ते पोताना हाथथी करे ते स्वहस्तिकी क्रिया ए १७ अर्हंत भगवंतनी आज्ञानुं उल्लंघन करीने पोतानी बुद्धिथी जीवाजीवादि सूक्ष्म पदार्थोनी प्ररूपणा करवासारू जे क्रिया करे ते आज्ञापनिकी क्रिया. १८ बीजाना अवतां खोटां

प्रगट करवां, तेमनी पूजानो नाश करवो, तेम करवाथी जे उत्पन्न थाय ते वैदारणिकी क्रिया १९ जे उपयोगथी विपरीत ते अनाभोग, तेनाथी उपलक्षित जे क्रिया ते अनाभोगक्रिया देख्या विना तेमज पूजन, प्रमार्जन कर्याविना भीत तेमज भूमि प्रमुखउपर शरीरादिनो निक्षेप करवो ते अनाभोगक्रिया २० पोतानी तेमज परनी अपेक्षा तेनुं नाम अवकांक्षा छे, तेनाथी जे विपरीत ते अनवकांक्षा, तेज कारण छे जेनु ते अनवकांक्षा प्रत्ययिकी क्रिया, तात्पर्य एमछे के, जिनोक्त कर्त्तव्य विधियोमां जे पोताने तेमज परने जे क्रिया हितकारी होय तेमां प्रमादने वश थइ जे आदर न करवो ते अनवकाक्षा प्रत्ययिकी क्रिया २१ चालवा, दोडवा प्रमुख कायाना व्यापार, तथा हिंसाकारी, कठोर जूठ बोलवाना वचनना व्यापार, अने परद्रोह, ईर्ष्या, अभिमानादि मनोव्यापार, ए त्रणेनु जे करवुं ते प्रयोग क्रिया. २२ जेनाथी विपयग्रहण करिये ते समुदान इन्द्रिय तेनी जे क्रिया, देश तेमज सर्व उपघातरूप व्यापार ते समुदान क्रिया कोइ एवुं मोटु पाप करिये के जेथी आवे ते ... समुदायपणे ग्रहण थाय ते समुदान क्रिया २३ माया तेमज लोभवतो... क्रिया थाय ते प्रेम प्रत्ययिकी क्रिया २४ क्रोध तेमज मानथी ... क्रिया थाय, ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया २५ चालवाथी जे क्रिया लागे ते इर्यापथिकी क्रिया. आ क्रिया वीतरागने लागे छे तेमज अप्रमत्त मुनियोने पण लागे छे.

हवे आ पचीश क्रियानु व्याख्यान करिये छिये १ ... क्रिया बे प्रकानी छे, एक अनुपरता कायिकी क्रिया अने बीजी अनुपयुक्त कायिकी क्रिया, तेमां अत्यत दुष्ट एवा मिथ्या...ष्ट जीवोनो, मन वचननी अपेक्षारहित परजीवने पीडा कारक कायानो उद्यम ते प्रथम भेद तथा प्रमत्त सयतनो उपयोग विना अनेक कर्तव्य रूप कायानो व्यापार ते बीजो भेद २ आधिकरणिकी क्रियाना बे प्रकार छे एक संयोजना, बीजी निवर्त्तना तेमा विप, गरल, फांसी, धनुप, यत्र, तलवार, प्रमुख शस्त्रोने, जीवोने मारवावास्ते संयोजन अर्थात् एकत्र करवां, जेम धनुपने तीरनो मेलाप करवो इत्यादि, ते प्रथम भेद, तथा तलवार, तोमर, शक्ति, तोप, बधुक इत्यादिने नवा सरस बनाववां, ते बीजो भेद ३ जे निमित्तथी क्रोध उत्पन्न थाय ते निमित्त जीव तथा अजीव बे छे तेमा जीव ते प्राणी,

अने अजीवमां खुटो, कांटो, पथ्थर प्रमुख, तेउंना उपर द्वेष करे ते प्रदोष क्रिया. ४ पोताना हाथथी, तेमज वीजाना हाथें जीवोने मार मारवो पीटवो ते परितापना, तेना वे भेद छे पुत्रकलत्रादिना वियोगथी दुःखी थइने पोताने हाथें छाती तेमज शिर कुटवु ते प्रथम भेद तथा पुत्र, शिष्यादिने मार मारवो ते वीजो भेद ५ प्राणातिपातिकी क्रिया वे प्रकारे छे एक तो पोताने हाथे पोतानो घात करवो जेम के कुवामां पडी मरवु, पर्वतउपरथी गरीपडवु, अग्निमां झंपापात करवो, झेर खावुं प्रमुख स्वात्मघातिकी क्रिया ते महापापरूप क्रिया छे ते प्रथम भेद तथा कषायने आधीन थइ वीजा जीवोनो नाश करवो ते वीजो भेद ६ जीव अजीवनो आरंभ करवो जेथी पृथ्वी कायादि छकायना जीवोनो उपघात थाय, एवां लक्षणो जे क्रियामां होय ते आरंभिकी क्रिया. ७ जीव अजीवनो परिग्रह करवो, तेनामां अत्यत मूर्छा राखी प्रवर्त्तवु ते परिग्रहिकी क्रिया ८ माया (कपट) गुप्तरीते स्वार्थवृत्ति साधवी ते मायाप्रत्ययिकी क्रिया. ए विपरीत वस्तुनुं श्रद्धान तेज छे निमित्त जेनु, ते मिथ्यात्वदर्शनप्रत्ययिकी क्रिया १० जीवने हणवाना, तेमज मद्यमांसादि पिवा खावानो जेमां त्याग नहि, एवा जे असंयति जीवनी क्रिया ते अप्रत्याख्यानिकी क्रिया ११ घोडाप्रमुख जीव तथा रथप्रमुख अजीवोने जोवा वास्ते जवुं ते दृष्टिकी क्रिया. १२ जीव, अजीव, स्त्री, पुतली आदिने रागथी स्पर्श करवो ते स्पृष्टिकी क्रिया १३ जीवनी तेमज अजीवनी अपेक्षाथी जे कर्मबंध थाय ते प्रातीत्यकी क्रिया १४ जीव ते पुत्र, स्त्री, भाइप्रमुख, अने अजीव ते, घर, आभूषण प्रमुख तेउंने जोवासारू लोको आवे, तेउंनी प्रशंसाथी ते वस्तुउंनो स्वामी हर्षित थाय ते सामंतोपनिपातिकी क्रिया १५ जीव मनुष्यादि, अजीव पथ्थरादि तेउंने फेंकवा ते नैसृष्टिकी क्रिया १६ पोताना हाथथी जीव तेमज अजीवनी प्रतिमाने ताडन प्रमुख करे ते स्वहस्तिकी क्रिया. १७ जीव, अजीवनी मिथ्या प्ररूपणा करवी, तेमज जीव, अजीवने मंत्रथी वोलाववां ते आज्ञापनिकी क्रिया १८ जीव, अजीवने विदारवा, ते वैदारणिकी क्रिया १ए उपयोग विना वस्तु लेवी, तेमज भूमि प्रमुख उपर मुकवी ते अनाभोग क्रिया २० इह लोक विरुद्ध तेमज परलोकविरुद्ध चोरी, परस्त्रीगमनादि दुराचण सेववां,

मनमां करवु नहि ते अनवकांक्षा प्रत्यय क्रिया. २२ अष्टविध कर्मपरमाणुर्जनु जे ग्रहण करवु ते समुदान क्रिया २३ रागजनक वीणादिना शब्दादिनो जोग करवो ते प्रेमप्रत्ययिकी क्रिया २४ पोताउपर तेमज परउपर द्वेष करवो ते द्वेषप्रत्ययिकी क्रिया २५ मात्र योगोथी जे क्रिया लागे ते केवली तेमज अप्रमत्त मुनिनी ईर्या पथिकी क्रिया आ पचीश क्रियानुं बहुज सक्षेपथी स्वरूप कहेलु छे विस्तारथी जाणवानी अभिलाषावालाए शब्दाम्भोनिधि गंधहस्तिमहाभाष्य जोवा आ पचीश क्रियार्जमां केटलीएक जोतां एकसरखी लागे, परतु ते एक सरखी नथी. दरेकनु स्वरूप तदन पृथक् पृथक् छे

हवे त्रण योगनु स्वरूप लखिये छियें १ मननो व्यापार ते मनोयोग २ वचननो व्यापार ते वचनयोग ३ कायानो व्यापार ते काययोग एप्रमाणे सर्व मली आश्रवना बेंतालीश भेद थया तेनाथी जीवने शुभाशुभ कर्मनी आमदानी थायछे इति

हवे सवरतत्वनु स्वरूप लखिये छिये पूर्वोक्त आश्रवथी जीवने आवतां कर्मने रोकनार अर्थात् आश्रवनु रूधन करनार ते संवर छे ते संवरना सत्तावन भेद छे पाच समिति, त्रण गुप्ति, दश यतिधर्म, बार भावना, बावीश परिसह, पांच चारित्र, सर्वे मली सत्तावन थया तेनाथी पांच समिति, त्रण गुप्ति, दशविध यतिधर्म, अने बार भावनानु स्वरूप तो गुरूतत्व वर्णनमां लखि आव्या छिये तेथी त्यांथी जाणवु

हवे बावीश परीसहनुं स्वरूप लखियें छियें १ क्षुधा परिसह क्षुधा एटले भूख भूखनी वेदना सर्ववेदनाथी अधिक छे ज्यारे भूख लागे, त्यारे पोतानी प्रतिज्ञाथी भग थाय नहि तेमज आर्त्तध्यान पण करे नहि सम्यक् परिणामे क्षुधा सहन करे, २ तेमज पिपासा जे तृषा तेपण सम्यक् परिणामे सहन करे ३ शीतपरीसह ज्यारे अत्यत शीत पडे, त्यारे पण अकल्पनिक वस्त्रोनी वांछा न करे जेवा जीर्णप्राय वस्त्र होय तेनाथी टाढ सहन करे, अग्नि तापे नहीं, सम्यक् प्रकारें शीतसहन करे, ४ उष्णपरीसह—सूर्यना सरत तडकामां पण चालता थकां उपानह प्रमुखनी वाछा करे नहि, तेमज सख्त गरमी, उकलाट छता पवनपखानी इच्छा करे नहीं, परतु सम्यक् प्रकारें आताप सहन करे. ५ दश मशकपरीसह डांस तथा

मछर अने मांकड प्रमुख करडे त्यारे धूमाडो करी, तथा उष्णजल प्रमुख रेडी तेउंनुं निवारण न करे परंतु सम्यक् परिणामें तेउंए करेली वेदना सहन करे ५ अचेल परीसह–सर्वथा वस्त्रनो अजाव, ते अचेल परीसह नहि, वस्त्रादि पण आगममां जे प्रमाणे राखवाने कह्यां छे तेप्रमाणे राखे तो ते परिग्रह नहि वस्त्रादि उपर मूर्छा रह्या करे तो ते परिग्रह छे. उक्तं च ॥ जंपि वछंच पायं च, कवलं पायपुछणं ॥ सोपि संजम लज्जाठा, धारिंति परि हरंति य ॥ १ ॥ नसो परिग्गहो वुत्तो, नाइ पुत्तेण ताइणा ॥ मुछा परिग्गहो वुत्तो, इछवुत्त महेसणत्ति ॥ २ ॥ चेलनाम वस्त्रनुं छे, ते शीर्ण अर्थात् फाटेलां तेमज जीर्ण होय, तोपण अकल्पनिक वस्त्र न लहे, ते अचेल परिसह. ७ अरतिपरीसह. संयम पालतां अरति जे उत्पन्न थाय ते सम्यक् प्रकारे सहन करे, ते सहन करवानो उपाय श्रीदशवैकालिकनी प्रथम चूलामां अढार वस्तुनुं स्वरूप चितवन करवुं, ते छे, तेथी अरति दूर थाय छे ८ स्त्रीपरीसह स्त्रियोनां अंगोपांग, संस्थान, मुखाकृति, हास्य, विनोद, सौंदर्यता प्रमुखनु मनमां चिंतवन न करे, स्त्रियोने मोक्ष मार्गमां अर्गला समान जाणी तेउंना तरफ विकार बुद्धिथी नेत्र फेरवे नहि ए चर्यापरीसह. चर्या एटले चालवुं, घररहित, ग्राम नगरादिमां अनियतवास, ममत्वरहित मासकल्पादि करवा ते १० निषद्यापरीसह. निषद्या एटले रहेवानु स्थान, जे स्थान स्त्री, पंडग रहित होय ते स्थानमां रहेतां थकां इष्ट अनिष्ट उपसर्ग थाय तोपण पोताना मनमां चारित्रथी चलायमान न थाय ते. ११ शय्यापरीसह जेने विषे शयन करीए ते शय्या, संस्तारक, वसति; संस्तारक एटले सुवानुं आसन, ते शय्या तथा आसन, कोमल, कठिन, उचु, नींचु, धूल, कांकरावालुं अथवा कुडी जगामा होय, तेमज वसति एटले स्थान, शीत अथवा गरमीवालुं होय तो पण मनमां उद्वेग न करे अने दुःख सम्यक् प्रकारें सहन करे ते. १२ आक्रोश परीसह कोइ अनिष्ट वचन कहे त्यारे विचारे के, ते पुरुष साची वातने वास्ते मने अनिष्ट कहेछे, तेथी तेना उपर मारे कोप करवो ते वास्तविक नथी. कारण के ते सख्स मारो हितचितक होवाथी मने शिखामण आपेछे तेथी हवेथी मारे तेवी जूल करवी नहि जो ते सख्स जुठी वात जाणी मने अनिष्ट कहेछे, तो पण

ते वात जूठी होवाथी मारे तेना उपर कोप करवो वास्तविक नथी एम विचारी सम्यक् प्रकारे सहन करे १३ वधपरीसह हस्तादिथी कोइ मार मारे तो सम्यक् परीणामे सहन करे, जेम के आ मारु शरीर अवश्य एकवखत नाश पामवानु छे.

तेथी जे सरुस मने ताडन करेछे, तेथी जे दु ख मने थाय छे, ते मारा करेलां कर्मनु फल छे, ते तो फक्त निमित्तमात्र छे, एम विचारी वध थतां सुधी सहन करे ते १४ याचनापरीसह. याचना एटले मागवु साधुने, अन्न, वस्त्रादि सर्व वस्तुओ मागवाथीज मलेछे, तेथी तेवी बुद्धिथी सम्यक् प्रकारें परीसह सहन करे १५ अलाभपरीसह साधुने कोइवस्तुनी इछा थइ छे, ते वस्तु गृहस्थना घरमां बहु छे, साधु मागवा गया, परतु गृहस्थें आपी नहि, साधु मनमा खेद धरे नहि, तेमज नहि आपनारनु बुरू पण चिंतवे नहि, तेमज कठोरवचनपण तेने कहे नहि, समता धारण करे, मनमां विचारे के आजे न मली तो आवती काले मली जशे इत्यादि १५ रोग परीसह ज्वर अतिसारादि रोग ज्यारे थाय, त्यारे जे साधु गछ बहार होय, ते तो औषध पण न खाय, अने जे साधु गछवासी होय ते गुरु लाघवता विचारीने शास्त्रमा कहेली रीतमुजब औषधोपचार करे, अने रोग सम्यक् विचारणाथी सहन करे १७ तृणस्पर्शपरीसह दर्भादि कठोर तृणनो स्पर्श सम्यक् प्रकारें सह १८ मलपरीसह साधुना शरीरमा परसेवो थवाथी रजप्रमुख शरीरे लागी कठिन मेल चोटी जाय छे, तेवामा उनालाना तापथी ते मेल पललतां दुर्गंध उत्पन्न थवाथी उद्वेग थाय, तोपण स्नानादिथी शरीरनी विभूषा साधु न करे ते १९ सत्कारपरीसह. सेवक जनोए वस्त्र, अन्न, पानादिथी साधुने बहुज सत्कार कर्यो होय, तोपण मनमा अभिमान न करे, तेमज बीजा मतना साधुओनी तेमना भक्तलोक पूजा भक्ति करे छे, अने जैनमतना साधुनी कोइ दरकार पण करतु नथी एम जाणे तोपण मनमां विषाद न करे ते २० प्रज्ञापरीसह अत्यत बुद्धिशाली थया छता मनमा अभिमान न करे, तेमज अल्पबुद्धिवंत छतां "हु महामूर्ख छु, सर्वने पराभवनु स्थान छुं" एवी दीनता तेमज शोक मनमा लावे नहि २१ अज्ञानपरीसह मे चौद पूर्वनु अथवा तो अगीयार अगनु अध्ययन कर्यु छे,

तेमज उपांग, छेद, प्रकरण प्रमुख अनेकग्रथो मने कंठस्थ छे, तथा हुं ज्ञाननो समुद्र छुं एम साधु अभिमान न करे, अथवा हु आगम ज्ञानरहित छुं धिक्कार छे निरक्षर कुक्षिंभर एवा मने। एवी दीनता पण न करे, परंतु विचार करे के नि.केवल ज्ञानावरण कर्मना क्षयोपशमथी मारूं आ स्वरूप छे, स्वकृतकर्मनुं फल छे, कां तो भोगवतां दूर थशे, अथवा तो तप अनुष्ठानथी दूर थशे? एम विचारपूर्वक परीसह सहे. २२ दर्शनपरीसह, शास्त्रमां देवता तथा तेमना इंद्र सांभलवामां आवेछे, परतु प्रसंगे सहाय कोइ करतुं नथी, तेथी शु खबर पडे के देवता के इंद्र छे? के नहि? तेमज अन्यमतवालाओनी ऋद्धि, वृद्धि देखीने जिनोक्त तत्वमां संदेह न करे, तेमज मनमां विकलता न पामे ते आ बावीश परीसह सहन करतां साधु संवरभावी कहेवाय छे तेनु विस्तारथी स्वरूप जोवु होय तो श्रीशांतिसूरिकृत उत्तराध्ययन सूत्रनी बृहद्वृत्ति, तथा तत्त्वार्थसूत्रनी वृत्ति अवलोकन करवी

हवे पांच प्रकारना चारित्र लखियें छियें. १ सामायक चारित्र, २ छे. दोपस्थापनीय चारित्र, ३ परिहार विशुद्धि चारित्र, ४ सूक्ष्म संपराय चारित्र, ५ यथाख्यात चारित्र आ पांच चारित्रना धारण करनारा साधु पण पांच प्रकारना छे आ कालमां प्रथमना बे प्रकारना चारित्रने धारण करनार साधु छे त्रण प्रकारना पाछलनां चारित्र विछेद गयां छे आ पांचे चारित्रनुं विस्तारथी स्वरूप जोवुं होयतो देवाचार्यकृत नवतत्त्वप्रकरणनी टीका, तथा श्रीभगवती, अने पन्नवणा सूत्रनी वृत्ति जोवी. संवरना एप्रमाणे आश्रवने रोकनार सत्तावन भेद थया

हवे निर्जरातत्त्वनुं स्वरूप लखियें छियें जेनाथी जीवनी साथे बधायेला कर्म देशथी तेमज सर्वथी क्षय थाय, ते निर्जरा ते निर्जरा जेनाथी अर्थात् जे साधनथी थाय तेनुं नाम तप छे ते तपना बार प्रकार छे. तेनुं सक्षेपथी स्वरूप गुरुतत्त्व निर्णयमां कथन करेलु छे, विस्तारथी जोवानी इच्छावालाए, नवतत्त्व प्रकरण वृत्ति, श्रीवर्द्धमानसूरिकृत आचारदिनकर शास्त्र, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप, श्रीभगवती सूत्र तथा श्रीउववाइ सूत्र जोवां. इति निर्जरातत्त्व

हवे बधतत्त्वनुं स्वरूप कहियें छिये बधना चार प्रकार छे, १ प्रकृति-

बंध, २ स्थितिबंध. ३ अनुभाग (रस) बंध, ४ प्रदेशबंध जीव प्रदेश अने कर्म पुद्गलोनुं परस्पर दुध अने पाणी जेम एकत्र मली जवु ते बंध कहेवाय छे. बंध शब्द बंदीवान वाचक छे जेम बधवो केदमा स्वतंत्र रही शकतो नथी, तेम आत्मा ज्ञानावरणीयादि कर्म जंजीरथी स्वतंत्र रही शकतो नथी. आ कर्मबंधमां ३ विकल्पो छे, ते कहिये छिये.

१ कोइ वादी कहेछे के, जीव निर्मल, पुण्यपापना बंधरहित हतो, पछी पुण्यपापनो तेने बंध थयो छे. आ प्रथम विकल्प छे आ विकल्प मिथ्या छे कारण के निर्मलजीव कर्मनो बंध करी शकतो नथी वली कर्म विना संसारमां उत्पन्न पण थइ शकतो नथी जो निर्मल जीव कर्मनो बंध करे, तो तो मोक्षस्थ जीवपण कर्मनो बंध करी ले जो मोक्षस्थ जीवने कर्म बंध थयो, तो मोक्षनो अभाव थयो जो मोक्ष नहि, तो मोक्षना उपाय जे शास्त्र तेमज शास्त्रना बनावनारा सर्व मिथ्यावादी थशे तेमज तेउं नास्तिकमति बनी जशे. वली एम पण छे के निर्मल आत्मा संसारमां शरीरना अभावथी कर्मबंध केवीरीतें करी शकशे?

२ बीजो विकल्प कर्म पहेलां हता, अने जीव पछीथी बन्योछे, आ विकल्प पण मिथ्या छे, कारण के जीव विना कर्म कोणे कर्यां हता, केमके कर्त्ता विना कर्म थइशकतां न[illegible] [illegible]. कर्मोनु फल पण आ जीवने मली शके नहि, कारण [illegible] [illegible] जो कर्म कर्या विना कर्मनु फल मले [illegible] [illegible] कर्म कर्या विना ईश्वरपण कर्म फल [illegible] [illegible]. वली जीव पाछलथी बन्योकेवीरी[illegible] [illegible] नथी जो कहो के ईश्वर जीवनुं उ[illegible] [illegible] कार्य पण थवु जोइयें. जेम ईश्वर [illegible] [illegible] तेम जी[illegible] होवो जोइये परंतु जीव[illegible] [illegible] उपा[illegible] कारण होय, तो तो [illegible] जन्ममरण, गर्भावासादि [illegible] तेज पोताना पगमा [illegible] ससारनी विडबनामां [illegible] वास्ते वेद द[illegible] [illegible]

शावास्ते वताव्या? ते कारणथी सिद्ध थायछे के पूर्वोक्त सर्वकथन अज्ञानतासूचक छे.

३ त्रीजो विकल्प जीव अने कर्म वंने एकसाथे उत्पन्न थयां. आ विकल्पपण मिथ्या छे कारण के जे वस्तुओ समकाले उत्पन्न थायछे, ते परस्पर कार्यकारणरूप थइ शकती नथी जो कर्म जीवनां करेलां सिद्ध न थयां तो कर्मफलपण जीव भोगवशे नहि. आ प्रत्यक्षविरोध छे, कारण के जीव तो कर्म भोगवता देखिये छिये. वली आ पक्षमां जीव तथा कर्मनुं कोइ उपादान कारण नथी तेथी आ विकल्पपण असत्य छे

४ चोथो विकल्प जीव तो छे, परतु जीवने कर्म नथी आपण मिथ्या छे कारण के जो जीवने कर्म नथी तो जीव सुखदुःख केवीरीतें भोगवी शके? कर्म विना संसारनी विचित्रता कदापि थइ शकशे नहि, ते कारणथी आ विकल्पपण मिथ्या छे.

५ पांचमो विकल्प जीव तेमज कर्म, वंने नथी आ विकल्प तदन असत्य छे. ज्यारे जीवज नथी, त्यारे जीव अने कर्म नथी एम कहेनार कोण छे? एम कहेनार जीव छे? के कोइ वीजो छे? सवव आ स्ववचन विरोध छे तेथी आ पक्षपण मिथ्या छे

६ छठो विकल्प, जीव अने कर्म, आ वने अनादि, अपश्चानुपूर्वी छे.

प्रश्न.— जो जीव अने कर्म वंने अनादि छे, तो जीवनी जेम कर्मनो पण कदापि नाश न थवो जोइये?

उत्तरः— कर्म जे अनादि छे ते प्रवाह अनादि छे, ते कारणथी तेनो क्षय थइ जाय छे

प्रश्न.— तमे जे वंध कहोछो ते निर्हेतुक छे? के सहेतुक छे? जो कहो के निर्हेतुक छे, तो तो "नित्यसत्वं" अथवा "नित्य असत्वं" थइ जशे, कारण के जे वस्तुनो हेतु नथी ते आकाशवत् नित्य सत् होय छे, अथवा खरशृंगवत् नित्य असत् होय छे. तेमज निर्हेतुक होवाथी मोक्षनो अभाव थइजशे जो कहो के सहेतुक छे, तो कहो के ते वधनो शुं हेतु छे?

उत्तरपक्ष.— आ वधना मूलहेतु चार छे, अने उत्तर हेतु सत्तावन छे. प्रथम चारप्रकारनो वंध कहिएछीए. ते चारमां प्रथम तो प्रकृतिवंध

ठे ते प्रकृति कइ कइ ठे? तेमज तेनो बंध शु ठे? जुर्ज मूलप्रकृति आठ ठे १ मत्यादि ज्ञाननु जे आवरण, आच्छादन, ते ज्ञानावरण २ सामान्य बोध, चक्षुआदिनु जे आवरण ते दर्शनावरण ३ सुख डुःख वेदियें (जोगवियें) ते वेदनीय ४ मोहे, जीवने विचित्रता प्राप्त करावे ते मोह. ५ सर्वथा जे कर्म चाल्यां जाय "एति याति चेत्यायु" जेना उदयथी जीव जीवे ठे ते आयु ६ नमावे, जे शुजाशुज गत्यादि रूपे आत्माने, ते नामकर्म. ७ गोत्र शब्दनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे "गा वाच त्रायत इति गोत्र" जेना उदयथी जीव उच नीच कुलवालो कहेवाय ठे, ते गोत्र ८ अंतर एटले वचमां आववु, लाजादिना वचमां आववु, अर्थात् दान, लाजादि जीवने प्राप्त थतां न थवा दे, ते अतराय आ आठ स्वजावरूप कर्म, जे जीवनी साथे क्षीर, नीरनीपेठे मिथ्यात्वादि हेतुर्जथी बंधाइ जाय तेनुं नाम प्रकृतिबंध ठे २ तेज आठ प्रकृतियोनी स्थिति अर्थात् कालमर्यादा, जेम के आ प्रकृति आटला वखतसुधी आत्मानी साथे रहेशे, पठी नहि रहे, जेनाथी एवी स्थिति थाय ते स्थितिबंध ३ तेज आठ प्रकृतियोमां तीव्र, मंद रस जे करे, ते अनुजागबंध ४ कर्म प्रदेशनु जे प्रमाण, जेम के आटला परमाणु आ प्रकृतिमा ठे, ते परमाणुर्जनो आत्मानी साथे जे बंध ते प्रदेशबंध

हवे ते चार प्रकारनां बंधनो विस्तारथी बोध थवा लाडवानु दृष्टांत लखियेठियें जेम कोइ लाडवो त्रिकटुनो बनावेलो होय अर्थात् सुंठ, पीपर, अने मरीनो बनावेलो होय, ते त्रिकटुथी बनेली वस्तुनो स्वजाव वायुने हरण करवानो ठे, तेवीज रीतें शीतद्रव्योथी बनेली वस्तुर्जनो स्वजाव पित्तहरण करवानो ठे, तथा अरडुसो अने क्षारादि वस्तुर्जनो स्वजाव कफहरण करवानो ठे, तेजप्रमाणे कर्मोनो पण स्वजाव ठे, कोइ कर्मनो ज्ञानावरण स्वजाव ठे, तो कोइनो दर्शनावरणस्वजाव ठे, ते प्रकृति (स्वजाव) बंध २ कोइ लाडवो एक दिवस रही बगडी जाय ठे कोइ बे दिवस, कोइ चार, ठ, आठ, दश, पंदर तो कोइ पक्ष, माससुधी रहे ठे अने पठी बगडे ठे, तेवीजरीते कोइ कर्मनी स्थिति अंतर्मुहूर्त्त, तो कोइनी प्रहर, दिवस, पक्ष, मास यावत् सीत्तेर कोटाकोटी सागरोपमसुधीनी ठे, ते प्रमाणे स्थिति करी फल दइ चाली जाय ठे, ते

स्थितिबंध ३ जेम कोइ लाडवानो रस कडवो तो कोइनो मीठो, कपायलो छे, तेमज कोइ कर्मनो रस सुखरूप तो कोइनो दुःखरूप; संसारमां जे जे अवस्था जीवोनी थया करे छे ते ते सर्वे कर्मना अनुभाग (रस) थीज थाय छे, ते रसबंध ४ जेम कोइ लाडवो वजनमां पांच तोलानो. तो कोइ पाशेर, अडधो शेर, शेरनो होय छे, तेम कोइ कर्मना प्रदेश गणतरीमां थोडा तो कोइ घणा एम होय छे, ते प्रदेशबंध आ दृष्टांत कर्मग्रंथनुं छे

हवे बंधहेतुउनुं स्वरूप लखियेंछियें १ मिथ्यात्व, ते तत्त्वार्थ श्रद्धानरहित थवु २ अविरति, ते पापथी निवृत्त थवाना परिणामनो अभाव ३ कषाय, तेमां कष अर्थात् संसार अथवा कर्म, तेनो जे आय कहेतां लाभ ते कषाय, क्रोध, मान माया, लोभरूप ४ योग, ते मन, वचन, कायानो व्यापार. आ चारनो विस्तार, सत्तावन भेद छे

हवे ते उत्तरहेतु सत्तावननु स्वरूप लखियेंछियें, १ मिथ्यात्वना पांच प्रकार छे. १ अभिग्रहमिथ्यात्व, २ अनभिग्रहमिथ्यात्व, ३ अभिनिवेश मिथ्यात्व, ४ संशयमिथ्यात्व, ५ अनाभोगमिथ्यात्व

१ अभिग्रहमिथ्यात्वनुं स्वरूप जीव एम जाणे के, जे कांइ हुं समजेलो हुं ते सत्य छे, बीजानी समज ठीक नथी, एम मनमां धारी सत्य, असत्यनी परीक्षा करवानी मनमां अभिलाषा नहि, तेमज सत्य असत्य स्वरूपनो निरधार करवानो विचार पण नहि आ मिथ्यात्व दीक्षित शाक्यादि अन्यमतममत्वधारकोने होय छे, ते पोताना मनमां एम विचारे छे के मत अमे अंगीकार कर्यो छे ते सत्य छे, बीजा सर्वमत असत्य छे एवा जेना परिणाम ते अभिग्रहमिथ्यात्व.

२ अनभिग्रहमिथ्यात्व जीव एम माने के सर्वमतो सारा छे, सर्व मतोथी मोक्षप्राप्ति थाय छे, तेथी कोइ पण मतने बुरो कहेवो ते वास्तविक नथी सर्वने नमस्कार करवा आ मिथ्यात्व सर्व बाल गोपालादि जेउए कोइपण दर्शनने अंगीकार करेल नथी तेउने छे कारण के तेउ अमृत तथा विष बनेने एकसरखुं माननारा छे

३ अभिनिवेशमिथ्यात्व जे पुरुष जाणीने जूठु बोले, जेम के प्रथम तो स्मृतिदोषथी, वा अज्ञानताथी, शास्त्रार्थमां भूलपडी, पछी कोइ वि-

ठे ते प्रकृति क … ते प्रमाणे वरावर
ठे १ मत्यादि … नत्यवादमा कदाग्रह
न्य वोध, चक्षु … नां न माने, विरुद्ध
(जोगविये) ते … करेला मतने सिद्ध
५ सर्वथा जे … कदाग्रहवाला जीव,
जीव जीवे ठे … मिथ्यात्व प्राय जे जैनी
ते नामकर्म ७ … ठे तेवा कदाग्रही
इति गोत्र" जे … अजयदेवसूरि नवागी-
त्र ८ अतर … के 'गोठा माहिलमाइणं,
दान, लाजा … शिवजूतिने पण आजि-
जावरूप कर्म
वधाइ जाय … करवी, जेम के जीव अ-
अर्थात् का … सर्व पदार्थमा शका क-
साथे रहेशे … मिथ्यात्व. "तदाह जाष्यकृत् ॥
३ तेज आ … त्वति" ॥ सशय
मे प्रदेशनु … नशतकमां
रमाणुर्जन … ते का-
हवे …
लखियेति … काल,
पीपर, … ५
वायुने
स्वजाव … जे
स्वजा
कर्मन

ए प्रमाणे मिथ्यात्वना पांच भेद छे, तेउना पण बीजा अनेक भेद थाय छे, परंतु ते सर्वे आ पांचनी अंतर्भूत समजवा ते आ प्रकारे छे

१ प्ररूपणामिथ्यात्व. जिनवाणीरूप जे सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, टीका, तेनाथी विपरीत प्ररूपणा करवी ते

२ प्रवर्त्तनामिथ्यात्व. जे काम मिथ्यादृष्टि जीवो धर्म जाणीने करे छे, तेउनी देखादेखीए, तेउना करवा मुजब करे ते

३ परिणाममिथ्यात्व. मनना परिणाम विपरीत रहे, मनमां कदाग्रह होय ते टले नहि, तेमज शुद्ध शास्त्रार्थ माने नहि ते

४ प्रदेशमिथ्यात्व मिथ्यात्वना प्रदेश जे सत्तामां छे, तेनुं नाम प्रदेशमिथ्यात्व, आ चार भेदोना पण अनेक भेद छे, तेमांथी केटला एक लखियेंछियें

१ धर्म जे वीतराग, सर्वज्ञें प्ररूपेलो छे, तेने अधर्म माने २ जे हिंसा प्रवृत्ति प्रमुख आश्रवमय अशुद्ध अधर्म छे, तेने धर्ममाने, ३ जे सत्यमार्ग छे तेने मिथ्यात्व (असत्य) मार्ग माने ४ जे विषयियोनो मार्ग छे तेने सत्यमार्ग माने. ५ जे साधु सत्तावीश गुणें विराजमान छे तेने असाधु कहे, ६ जे आरंभ परिग्रह, कषायमां रक्त, तेमज जेना उपदेशथी लोकोने सांसारिक विषयोमां मस्तपणु, कुवासना, कुबुद्धि इत्यादि उत्पन्न थाय, एवा पथ्थरनी नावसमान अन्यलिंगी कुलिंगी, तेमने साधु कहे ७ छकायना जीवोमां अजीवपणुं माने ८ सुवर्ण, काष्ठ प्रमुख अजीवने जीव माने. ए मूर्त्तपदार्थोने अमूर्त्त माने. १० अमूर्त्त पदार्थोने मूर्त्त माने आ दशभेदमिथ्यात्वना छे

वली छ भेद मिथ्यात्वना छे ते कहियें छियें. १ लौकिकदेव, २ लौकिक गुरु, ३ लौकिक पर्व, ४ लोकोत्तर देव, ५ लोकोत्तर गुरु, ६ लोकोत्तर पर्व.

१ लौकिक देवगत मिथ्यात्व जे देव रागद्वेषथी भरेला छे, एक उपर कृपावान् थाय छे, बीजानो विनाश करे छे, स्त्रीना भोगविलासमां मग्न छे, जेणें अनेक प्रकारनां शस्त्र धारण करेलां छे, पोतानी ऐश्वर्यताना जे अभिमानी छे, जेना हाथमां जपमाला छे, सावद्यभोग भोगवे छे, पंचेंद्रियवध चाहाय छे, एवा देवने परमेश्वर मानवा, परमेश्वरना अंश अवतार मानवा, तेउनुं पूजन करवु. इत्यादि ते लौकिक देवगत मि-

छान् कहे के तमे आ वातमां आ प्रमाणे जूल खाउंछो. ते प्रमाणे बराबर पोताना जाणवामां आवतां छतां, पोतें कहेला असत्यवादमां कदाग्रह ग्रहण करे, जात्यादि अजिमानथी वारंवार कहेवा छतां न माने, विरुद्ध स्वकपोलकल्पित कुयुक्तियो बनावीने, पोताना कथन करेला मतने सिद्ध करे, वादमां हार पामे तोपण मत मुके नहि एवा कदाग्रहवाला जीव, अतिपापी, तेमज बहुलससारी थाय छे एवु मिथ्यात्व प्राय जे जैनी जैनमतने विपरीत कथन करे छे तेनामां थइ जाय छे तेवा कदाग्रही गोष्ठामहिल प्रमुख थाय छे जाष्यकार श्री अजयदेवसूरि नवांगीवृत्तिकारक, नवतत्वप्रकरणना जाष्यमां कहेछे के "गोठा माहिलमाइण, ज अजिनिविसितु तय" आदिशब्दथी बोटिक शिवजूतिने पण आजिनिवेशिक मिथ्यात्ववाला जाणवा

४ संशयमिथ्यात्व ते जिनोक्त तत्वमां शंका करवी, जेम के जीव असंख्य प्रदेशी छे ? के नथी ? इत्यादि एवीरीतें सर्व पदार्थमां शंका करवी, तेनाथी जे उत्पन्न थाय ते सांशयिक मिथ्यात्व "तदाह जाष्यकृत् ॥ सांशयिक मिथ्यात्वं तदशेपया शकासंदेहोजिनोक्ततत्वेष्विति" ॥ सशय मिथ्यात्व होवानां कारणो श्रीजिनजद्रगणि क्षमाश्रमण ध्यानशतकमां लखे छे के प्रथम तो जैनमत स्याद्वादरूप अनतनयात्मक छे, ते कारणथी समजवोज कठिन छे, तेमज सप्तजगीनु सकलादेशी, विकलादेशी स्वरूप, अष्टपक्ष, सातसे नयस्वरूप, चार निक्षेप, द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव, तथा १ उत्सर्ग, २ अपवाद, ३ उत्सर्गापवाद, ४ अपवादोत्सर्ग, ५ उत्सर्गोत्सर्ग, ६ अपवादापवाद, तथा विधिवाद, चारित्रानुवाद, इत्यादि अनंतनय अपेक्षाए जैनमतना शास्त्र कथन करेलां छे, ज्या सुधी जे अपेक्षाथी जे शास्त्रस्वरूप कथन करेलु छे ते अपेक्षाथी ते स्वरूपने न समजे, त्यां सुधी जैनमतनी यथार्थ समज पामवी अतिकठिन छे, तेवी समजण पामवावास्ते बहुज निर्मलबुद्धि जोइये ते प्रायःथोडा जीवोने छे, तेमज शास्त्रना अर्थ बतावनारा सपूर्ण विद्वान् गुरु जोइए, ते देखाता नथी इत्यादि निमित्तोथी सशयमिथ्यात्व थाय छे

५ अनाजोगमिथ्यात्व जे जीवोने उपयोग नथी के धर्म, अधर्म शु वस्तु छे ? एवा जे विकलेंद्रियादि जीव, तेउने अनाजोगमिथ्यात्व होय छे

ए प्रमाणे मिथ्यात्वना पांच भेद छे, तेउना पण बीजा अनेक भेद थाय छे, परंतु ते सर्वे आ पांचनी अंतर्भूत समजवा ते आ प्रकारे छे

१ प्ररूपणामिथ्यात्व जिनवाणीरूप जे सूत्र, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी, टीका, तेनाथी विपरीत प्ररूपणा करवी ते.

२ प्रवर्त्तनामिथ्यात्व. जे काम मिथ्यादृष्टि जीवो धर्म जाणीने करे छे, तेउनी देखादेखीए, तेउना करवा मुजब करे ते

३ परिणाममिथ्यात्व. मनना परिणाम विपरीत रहे, मनमां कदाग्रह होय ते टले नहि, तेमज शुद्ध शास्त्रार्थ माने नहि ते

४ प्रदेशमिथ्यात्व मिथ्यात्वना प्रदेश जे सत्तामां छे, तेनु नाम प्रदेशमिथ्यात्व, आ चार भेदोना पण अनेक भेद छे, तेमांथी केटला एक लखियेंछियें

१ धर्म जे वीतराग, सर्वज्ञें प्ररूपेलो छे, तेने अधर्म माने २ जे हिंसा प्रवृत्ति प्रमुख आश्रवमय अशुद्ध अधर्म छे, तेने धर्ममाने, ३ जे सत्यमार्ग छे तेने मिथ्यात्व (असत्य) मार्ग माने ४ जे विषयियोनो मार्ग छे तेने सत्यमार्ग माने. ५ जे साधु सत्तावीश गुणें विराजमान छे तेने असाधु कहे, ६ जे आरंभ परिग्रह, कषायमां रक्त, तेमज जेना उपदेशथी लोकोने सांसारिक विषयोमां मस्तपणु, कुवासना, कुबुद्धि इत्यादि उत्पन्न थाय, एवा पथ्थरनी नावसमान अन्यलिंगी कुलिंगी, तेमने साधु कहे ७ छकायना जीवोमां अजीवपणुं माने ८ सुवर्ण, काष्ठ प्रमुख अजीवने जीव माने ९ मूर्त्तपदार्थोने अमूर्त माने. १० अमूर्त्त पदार्थोने मूर्त्त माने आ दशभेदमिथ्यात्वना छे

वली छ भेद मिथ्यात्वना छे ते कहियें छिये १ लौकिकदेव, २ लौकिक गुरु, ३ लौकिक पर्व, ४ लोकोत्तर देव, ५ लोकोत्तर गुरु, ६ लोकोत्तर पर्व.

१ लौकिक देवगत मिथ्यात्व जे देव रागद्वेषथी भरेला छे, एक उपर कृपावान् थाय छे, बीजानो विनाश करे छे, स्त्रीना भोगविलासमां मग्न छे, जेणें अनेक प्रकारनां शस्त्र धारण करेलां छे, पोतानी ऐश्वर्यताना जे अभिमानी छे, जेना हाथमां जपमाला छे, सावद्यभोग भोगवे छे, पंचेंद्रियवध चाहाय छे, एवा देवने परमेश्वर मानवा, परमेश्वरना अंश अवतार मानवा, तेउनुं पूजन करवुं. इत्यादि ते लौकिक देवगत मि-

थ्यात्व छे. तेना अनेक भेद छे, तेनु स्वरूप मिथ्यात्वसित्तेरी प्रमुख ग्रंथथी जाणवु

२ लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व. जे अढार पापस्थाकोनुं सेवन करे, नव प्रकारना परिग्रह राखे, गृहस्थाश्रम पाले, स्त्री, पुत्रपरिवारवाला होय, कुलिंगीहोय, मन कल्पित नवा नवा वेष बनावी स्वकपोलकल्पित मत चलावे, आडंबर राखे, बाह्य परिग्रह तो कदाच त्यागेल होय, तो पण अभ्यंतर ग्रंथिउंमां मग्न होय, तजे नहि, गुरुनाम धरावी मंडल परिवारें विचरे, जेनी अनादिनी भूल मटेली न होय, जेने शुद्धसाध्यनी पिछान न होय तेवाउंने गुरु माने, तेउंनुं बहु मान करे, तेउंने मोक्षप्रदाता जाणी दान दे, तेउंने परम पात्र जाणे, एवाज जीवना परिणाम ते लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व छे

३ लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व १ आजापडवो, २ प्रेतबीज, ३ गुरुत्रीज, ४ गणेशचोथ, ५ नागपांचम, ६ झीलणांछठ, ७ शीली सातम, ८ बुध अष्टमी, ९ नोली नवमी, १० विजयदशमी, ११ व्रत एकादशी, १२ वत्स बारश, १३ धनतेरश, १४ अनंतचौदश, १५ अमावास्या, १६ सोमवती अमावास्या, १७ रक्षाबध, नालीएरी पुनम, १८ होली, १९ आदित्यवारादि, २० सोमप्रदोष, २१ उत्तरायण, २२ अन्य सक्रांति, २३ ग्रहण, २४ नवरात्रि, २५ श्राद्ध, २६ पीपलेपाणी सेचन, २७ अश्व, गर्दभपूजन, २८ गोत्राटी, २९ अन्नकूट, ३० दसुरा, ३१ स्मशानपूजन, ३२ कबरमेला, इत्यादि अनेक लौकिक पर्वगत मिथ्यात्व छे

४ लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व ते देव श्री अरिहंत, धर्मना आकर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार, परमपूज्य, सकलदोपरहित, एवा शुद्ध, निरंजन देवनी स्थापना रूप जे प्रतिमा, तेनी पासे, आ लोकना अनेकप्रकारना पौद्गलिक सुखभोग मेलववानी वांछा करे, जेम के हे भगवन्! जो आ मारु काम थशे तो, तमारी मोटी पूजा, आंगी रचावीश, छत्र चडावीश, दीपमाल, रोशनी करावीश, इत्यादि, तेमज परभवमां मने आपनी भक्ति पूजाथी इंद्र, चक्रवर्त्तिपणु, तथा देव, नरपतिनी पदवी प्राप्त थाय इत्यादि, तथा मारा तथा पुत्र स्त्री प्रमुखना रोग प्रमुखनो नाश थाय इत्यादि पौद्गलिक सुखवास्ते, तेमज दु खना

निवारणवास्ते भावपूर्वक वीतराग देवने मानवा, ते लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व छे दृष्टांत जे पुरुष चिंतामणी रत्नो दातार होय, तेनी पासे काचना कटकानी मांगणी करवी ते जेम हास्यास्पद तेमज अज्ञानता छे, ते समान आ इछा छे, तेथी अयोग्य छे, जेने कर्मप्रकृति स्वरूपनु ज्ञान तेमज अनुभव न होय तेज एवी मागणी करे छे

५ लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व पोते निर्गुणी छतां साधुनो वेष राखे, जीववाणीने उथापी, पोताने मनःकल्पित उपदेश आपे सूत्रना साचा अर्थने भोडे, एवा उत्सूत्रना प्ररूपक तेउने गुरु जाणी, तेउनुं बहुमान भक्ति पूजा करवी ते तथा जे साधु गुणवान् होय, तपस्वी होय, चारित्रपात्र होय, आचारवंत, तेमज यथोक्तक्रियावंत होय, तेमनी आ लोकना सुखवास्ते, तेमज परलोकना पौद्गलिक सुखवास्ते, सेवा करे बहुमान करे, मनमां एम पण जाणे के जो तेमनी बहु सारी रीतें सेवा करीश तो तेमनी मेहेरबानीथी, धन ऋद्धि स्त्रीपुत्रादि परिवार मने प्राप्त थशे, एवा परिणाम ते लोकोत्तर गुरुगत मिथ्यात्व.

६ लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व जिनेश्वर भगवानना पांच कल्याणकनी तिथियोने दिनें, तथा बीजा पर्वने दिने, धन, स्त्री, पुत्रादिवास्ते तप, जपादि धर्मकरणी करवी ते लोकोत्तर पर्वगत मिथ्यात्व छे इत्यादि मिथ्यात्वना अनेक भेद छे, परंतु ते सर्वे पूर्वोक्त अभिग्रहादि मिथ्यात्वमां अंतर्भूत छे

हवे बार प्रकारनी अविरतिनु स्वरूप कहियें छियें पांच इंद्रिय, अने छठुं मन, तेमज छ काय, मली बार प्रकार छे, तेमनुं स्वरूप एवु छे के, पांचे इंद्रियोने पोत पोताना विषयोमां प्रवर्त्तावबी, ते पांच तथा कोइ पण पापमय वस्तुथी मननो निरोध न करवो ते, तथा छ जीवनिकायनी हिंसामां प्रवृत्ति करवी, ते सर्व मली बार अविरति छे.

हवे कषाय वधना पचीश भेदनु स्वरूप कहियें छियें. अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ, तथा सज्वलन क्रोध, मान, माया, लोभ, मली सोल, तथा नव नोकषाय, १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ भय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ स्त्रीवेद, ८ पुरुषवेद, ९ नपुंसकवेद

मली पचीश कषाय, संसार स्थितिनां मूल कारणो छे, तेमनु विस्तारथी कथन आगल करेलुं छे

हवे योगनामे बध हेतुनुं स्वरूप लखियें छिये ते मन, वचन, काय, एम योगना त्रण प्रकार छे आ त्रणना उत्तर नेद पदर छे मनोयोगना चार नेद, वचनयोगना चार नेद तथा काययोगना सात नेद सर्व मली पंदर नेद छे.

मननाम अत करणनु छे, तेना चार प्रकार छे १ सत्य मनोयोग, २ असत्य मनोयोग, ३ मिश्र मनोयोग, ४ व्यवहार मनोयोग, मन शु वस्तु छे ? कायाना व्यापारथी पुद्गल ग्रहण करीने, ते पुद्गलोने चितन धर्मरूपे काढवा ते द्रव्यमन छे, अने ते पुद्गलोना संयोगथी जे ज्ञान उत्पन्न थाय तेनु नाम नावमन छे ते ज्ञानथी व्यवहार सिद्ध थाय छे, अने ते व्यवहारथी मन पण सत्यादि व्यपदेशने प्राप्त थाय छे. वली उपचारे द्रव्यमन पण ज्ञायक छे वली मन शब्दथी मनोयोग, तेनो इन्द्रियावरण कर्मना क्षयोपशमथी उत्पन्न थयुं जे मनोज्ञान, तेनाथी परिणत आत्माने बलाधान करवावाली मनोवर्गणाना सबधथी उत्पन्न थयु जे वीर्य विशेष, ते अहींया मन जाणवु तेवीज रीतें वचनयोग, ते वचननी वर्गणा अर्थात् परमाणुर्जनो समूह, ते वचन वर्गणाथी उत्पन्न थयुं जे सामर्थ्यविशेष, आत्मानी परिणति, ते वचनयोग जाणवां ते मनोयोग तथा वचनयोगना मली आठ प्रकार छे

प्रथम मनमा जे सत्य व्यवहारनुं चितवन करवु, ते सत्यमन, जेमके जीवादि पदार्थ द्रव्यरूपें नित्य, पर्यायरूपे अनित्य, एम अनेकांतपणें चितववु, ते सत्यमनोयोग तेनाथी विपरीतपणे जीवादि पदार्थोनु स्वरूप वचन निरपेक्षपणे चितववु, तेमज धर्म नथी, पुण्यपाप नथी स्वर्ग नरक नथी इत्यादि चितवन करवु ते असत्य मनोयोग तेवीजरीते सत्यचितवन वचनरूपे बोलवु ते सत्यवचनयोग, अने असत्यचितवन वचनरूपे बोलवु ते असत्यवचनयोग तथा कांइक असत्य, जेम के आ गाममां आजे दश जन्म्या, तथा दश मुआ, तेमा कांइक साचु अने कांइक जुवु चितवन करवुं तथा गोवर्गने देखीने चितववु के आ सर्व गायो छे, पछी तेमां बलद पण होय ते मिश्रमनोयोग, अने ते प्रमाणे

बोलवु ते मिश्र वचन योग तथा आमंत्रणा, याचना, जेम के हरिचंड अहियां आवे, दामोदर आ वस्तु आपे, इत्यादि जे चिंतववुं, तेथी जिनवचन विरोधाय नहि, तेथीअसत्यपण नहि, अने आराधक पण नहि, तेथी सत्यपण नहि जेथी ए प्रमाणे चिंतवन करवुं ते व्यवहार मनोयोग अर्थात् असत्य मृषा मनोयोग, अने तेज प्रमाणें बोलवु ते व्यवहार वचनयोग. ए प्रमाणे मनोयोग तथा वचनयोगना आठ नेद थया.

हवे सत्यवचनना दशप्रकार छे तेनुं स्वरूप कहिएछिए १ जनपद सत्य, जे देशमां जे वस्तुने जे नामथी बोलता होय, ते देशमां ते नाम सत्य छे, जेम के कोकणदेशमां पाणीने पिछ कहेछे, कोइ देशमां मोटा पुरुषने बेटो कहे छे, वली बेटाने काको कहे छे, पिताने जाइ कहेछे, सासुने आइ कहेछे, इत्यादि ते जनपद सत्य छे. २ सम्मत सत्य, जेम के पकथी (कादवथी) मेरूक, शेवाल, कमलादि उत्पन्न थाय छे, तोपण पंकज शब्दे कमलज विद्वान् पुरुषोए सम्मत करेल छे, परंतु मेडक, शेवाल तेउ मानता नथी. ३ स्थापना सत्य, जे प्रतिमा जेनी होय, तेने तेना नामथी बोलवी ते स्थापना सत्य, जेम के महावीर, पार्श्वनाथजी आदि अर्हंतनी प्रतिमा होय, ते प्रतिमाने, महावीर, पार्श्वनाथजी कहे तो ते सत्य छे, परंतु तेने पथ्थर कहेनार मृषावादी छे, जेम के शाहीथी कागल उपर अक्षरोनी स्थापना करवाथी तेउने ऋग्, यजु, साम, अथर्व वेद कहेवाय छे, तेमज आचारांगादि अग कहेवाय छे, तथा काष्ठना आकारविशेषने कमाड कहेवाय छे, इंट, चुना, पथ्थरना आकार विशेषने स्थंज कहेवाय छे, पुस्तकमां त्रिकोणादि चित्र काढ्यां होय, तेने आर्यावर्त्त, जरतखंड, हिंदुस्थान, अमेरिका इत्यादि कहेवाय छे, तथा श्याहीथी कागलपर आकृति करवाथी ककार, खकार कहेवाय छे. ए प्रमाणे बोलवु ते सत्य छे ए प्रमाणेनी स्थापनाउ जोवाथी मनुष्यनी कार्य सिद्धि अवश्य थाय छे, ते सर्वेने अनुजव थयेल छे ए प्रमाणे सिद्धि थती न होय तो मनुष्यो स्थापना शावास्ते करे? ते कारणथी महावीर तथा पार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने श्रीमहावीर तथा श्रीपार्श्वनाथजी कहेवा ते स्थापना सत्य छे, तेमां विशेष ए छे के, जे देव शुद्ध छे, तेनी स्थापना पण शुद्ध छे, अने जे देव शुद्ध नथी, तेनी स्थापना पण शुद्ध नथी;

परंतु ते स्थापनाने, ते देव कहेवा ते वात सत्य छे ४ नाम सत्य, कोइ पुरुषे पोताना पुत्रनु नाम कुलवर्द्धन राखेलु छे, अने जे दिवसथी ते पुत्रनो जन्म थयेल छे, ते दिवसथी तेना कुलनो नाश थतो जाय छे, तो पण ते पुत्रने कुलवर्द्धन नामथी बोलावे तो ते सत्य छे ५ रूप सत्य कदापि गुणोथी भ्रष्ट होय तो पण साधुना वेषवालाने साधु कहे तो ते सत्य छे ६ प्रतीत अर्थात् अपेक्षा सत्य जेम के मध्यमानी अपेक्षाए अनामिका आगलीने नानी कहेवी ते ७ व्यवहार सत्य जेम के पर्वत बले छे, रस्तो चाले छे, इत्यादि ८ भावसत्य जेम के तोतामां पांच रंग छे, तोपण तोताने लीला रंगवालो कहेवो इत्यादि ९ योगसत्य जेम के दंडना योगथी दंडी कहेवो, इत्यादि १० उपमा सत्य जेम के मुख चन्द्र समान छे, इत्यादि दशप्रकारनां सत्य छे

हवे दशप्रकारनां जूठ कहियेछिये १ क्रोधमिश्रित अर्थात् क्रोधने वश थइ वचन बोलवां ते असत्य, २ मानना उदयथी बोलवा, ३ मायाना उदयथी बोलवां, ४ लोभना उदयथी बोलवां, ५ रागना बधनथी बोलवां, ६ द्वेषना उदयथी बोलवां, ७ हास्यने वश थइ बोलवां, ८ भयने वश थइ बोलवां, ९ विकथा करवी, १० जे बोलवाथी जीवनी हिंसा थाय. आ दश प्रकारनां असत्य वचन छे

हवे दश प्रकारनां मिश्रवचन कहियेंछिये, १ उत्पन्न मिश्रित जेम के खबर विना कहेवु के आजे आ गाममा दशबालक जन्म्या छे, इत्यादि २ विगतमिश्रित, जेम के खबर विना कहेवु के आजे आ गाममां दशमाणस मुआं छे, इत्यादि ३ उत्पन्न विगत मिश्रित जेम के खबर विना कहेवुं के आजे आ गाममां दश जन्म्या छे, अने दशज मुआ छे, ४ जीवमिश्रित. ते जीव अजीवना राशिने कहेवु के आ जीव छे ५ अजीव मिश्रित. ते अन्नना राशिने कहेवु के आ अजीव छे ६ जीवाजीवमिश्रित ते जीव अजीव बने माटे मिश्रभाषा बोलवी ते ७ अनंतमिश्रित ते मूल आदि अवयवोमां केटलीएक जगाए अनंत जीव छे, अने कोइजगाए प्रत्येक जीव छे, तेउने प्रत्येक वनस्पतिकाय कहेवु ते, ८ प्रत्येक मिश्रित ते प्रत्येकजीवोने अनंतकाय कहेवां ते ९ अद्धामिश्रित ते बे घडी तडको थया छतां कहे के दिवस उग्यो छे. १० अद्धा-

मिश्रित एक घडीरात्रि गइ होय तथापि कहेके दिवसनो उदय छे. आ दश प्रकारनां मिश्रवचनो छे

हवे व्यवहार वचनना बार भेद कहियेंछियें. १ आमंत्रण करवुं के हे भगवन्! २ आज्ञापना, ते आ काम करो, आ वस्तु लावो, ३ याचना–आ वस्तु आपशो, ४ पृछना–आ गाम जवानो रस्तो कयो छे? ५ प्रज्ञापना–धर्मस्वरूप आ प्रमाणे छे. ६ प्रत्याख्यानी–आ काम अमने करवुं कल्पे नहि. ७ इछानुलोम–यथा सुखं. ८ अनभिगृहीत–ते वातनी मने खबर नहि ९ अभिगृहीत–मने ते वातनी खबर छे. १० संशय–तेनुं स्वरूप एम केम होय? ११ स्पष्ट प्रगट अर्थ कहेवा. १२ अस्पष्ट अप्रगट अर्थ कहेवा

हवे काययोगना सातभेदनुं स्वरूप कहियेछियें–काययोग अर्थात् आत्माना निवासभूत पुद्गल द्रव्य घटित, जेम वृद्ध तथा दुर्वलने अवष्टंभ भूत लाकडी छे, तेम विषम काममां जेना योगथी जीवना वीर्यनुं परिणाम सामर्थ्य, जेम अग्निना संयोगथी घडानी रक्तता थाय छे, तेवीजरीतें आत्माने कायाना करण संवधथी वीर्यपरिणाम छे आ काययोगना सात भेद १ औदारिक काययोग, २ औदारिक मिश्र काययोग, ३ वैक्रिय काययोग, ४ वैक्रिय मिश्र काययोग, ५ आहारक काययोग, ६ आहारक मिश्र काययोग, ७ कार्मण काययोग. प्रथमना बे काययोग, मनुष्य अने तिर्यंचमां होय छे त्रीजो चोथो काययोग स्वर्गवासी देवताउंमां होय छे पांचमो, छठ्ठो काययोग चौदपूर्वधर साधुउंमां होय छे. सातमो काययोग, जीव ज्यारे काल करी परभव गमन करे छे, त्यारे रस्तामा तेनी साथे होय छे, तेमज समुद्घात अवस्थामां केवलीने होय छे, आहार पाचन करवामां समर्थ एवु तैजस शरीर, कार्मण योगनी अंतर्भूत होवाथी तेनु पृथक् ग्रहण करवामां आव्यु नथी. ए प्रमाणे सात भेद काययोगना वताव्या सर्व मली बधतत्वना उत्तरभेद सत्तावन थया.

हवे मोक्ष तत्वनुं स्वरूप कहियेछियें प्रथम मोक्षनी व्याख्या कहियेछिये "जीवस्य कृत्स्नकर्मक्षयेण यत्स्वरूपावस्थानं तन्मोक्ष उच्यते" ॥ भावार्थ.–जीवनां ज्ञानावरणादि सर्वकर्मनो क्षय थवाथी तेनु जे स्वरूप अवस्थान ते मोक्ष छे. ते मोक्ष, जीवनो धर्म छे अने धर्म, धर्मी क-

थचित् अभेद होवाथी, धर्मी जे सिद्ध, तेनी जे प्ररूपणा ते पण मोक्षप्ररूपणा छे, कारण के मोक्ष जे छे ते जीवपर्याय छे, ते जीवपर्याय कथंचित् सिद्ध जीवथी अभिन्न छे, जीवना पर्याय सर्वथा जीवथी भिन्न थइ शकता नथी यदुक्तं ॥ द्रव्य पर्यायवियुतं, पर्यायाद्रव्यवर्जिता ॥ क्व कदा केन किंरूपा, दृष्टा मानेन केन वेति ॥ १ ॥ भावार्थ–द्रव्य पर्यायोथी रहित, अने पर्यायो द्रव्यथी रहित एम कोइ जगाए, कोइ अवसरे, कोइ प्रमाणे, कोइरूपे कोइपुरुपे देखेल छे ?

हवे सिद्धोनु स्वरूप नवप्रकारें, सूत्रकार तेमज भाष्यकार कहे छे. १ सत्पदप्ररूपणा, २ द्रव्यप्रमाण, ३ क्षेत्र, ४ स्पर्शना, ५ काल, ६ अंतर, ७ भाग, ८ भाव, ए अल्पबहुत्व आ नव द्वार छे १ सत्पदप्ररूपणा द्वार मोक्षपद सत्पद छे, विद्यमान पद छे, छतु पद छे, शा कारणथी ? एक पद छे तेथी, कारण के जगत्मां जेटला एकपदवाची घटपटादि पदार्थ छे, ते सर्वे अवश्य छता छे, अने जे जे बे बे पदवाची पदार्थ छे, ते ते पदार्थ छता पण छे, अने अछता पण छे जेम अश्वशृग, वंध्यापुत्र, आकाशकुसुम आ बे पदनां नाम छे ते अछतां छे, तेमज गोशृग, राजपुत्र, केतकीकुसुम, आ बे पदनां नाम छतां छे ते न्यायें मोक्षपद एकपदवाची होवाथी विद्यमान पद छे. ते मोक्षपद याने सिद्धपद गति आदि चौद पदोमां जोडवा जेम के १ गति पांच छे, १ नरकगति, २ तिर्यग्गति, ३ मनुष्यगति, ४ देवगति, ५ सिद्धगति, तेमां सिद्धगति शिवाय बाकीनी चारगतिमां सिद्ध नथी. यद्यपि १ कर्म सिद्ध, २ शिल्पसिद्ध, ३ विद्यासिद्ध, ४ मन्त्रसिद्ध, ५ योगसिद्ध, ६ आगमसिद्ध, ७ अर्थसिद्ध, ८ यात्रासिद्ध, ए अभिप्रायसिद्ध, १० तप.सिद्ध, ११ कर्मक्षयसिद्ध. एम अनेक प्रकारना सिद्ध, आवश्यक निर्युक्तिकारें कथन करेल छे, तो पण अहींयांतो जे कर्मक्षयथी सिद्ध थया छे तेनोज अधिकार छे तेउनेज मोक्ष पर्याय छे, बीजाउने नहि २ इंद्रियो पाच छे, एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पचेंद्रिय, आ पांचे प्रकारमां सिद्ध नथी, कारण के शरीरनो सर्वथा नाश थाय छे त्यारे सिद्ध थवाय छे, ज्यां शरीर छे, त्या इंद्रियो छे, सिद्धने शरीर नथी तेथी ते अतींद्रिय छे ३ छकाय १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेउकाय, ४ वाउकाय, ५ वनस्पतिकाय, ६ त्रस-

काय, आ छए कायमां सिद्धपणुं नथी, कारण के सिद्ध कायरहित छे अर्थात् अशरीरी छे ४ योग. त्रणप्रकारे योग छे, मन, वचन, काययोग; तेमां केवल काययोग एकेंद्रिय जीवने छे, अने दींद्रियादिथी असंज्ञी पंचेंद्रिय पर्यंत जीवने, काययोग तथा वचनयोग छे, अने सज्ञी पचेंद्रिय पर्याप्त जीवने त्रणे योग छे, आ त्रणे योगमां सिद्धपणु नथी, अने सिद्ध तो मन वचन, काययोगनो अन्नाव थाय छे त्यारे थवाय छे तेथी सिद्ध अयोगी छे. ५ वेद. त्रणप्रकारें छे, स्त्री, पुरुष, नपुसक, आ त्रणे वेदमां सिद्धपणांनो अन्नाव छे, त्रणे वेदनो क्षय करवामां आवे त्यारे सिद्धपणु प्राप्त थाय छे, तेथी सिद्ध अवेदी छे ६ कषाय चार प्रकारें छे. क्रोध, मान, माया, लोन्न आ चारेनो अन्नाव थाय त्यारे सिद्धपणु प्राप्त थाय छे तेथी सिद्ध अकपायी छे ७ ज्ञान ते मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, आ पांच प्रकारें ज्ञान छे, अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विन्नगज्ञान, आ त्रण अज्ञान छे, तेमां प्रथमना चार ज्ञानमां अने त्रण अज्ञानमां सिद्धपणुं नथी, एक केवल ज्ञानमां सिद्धपणु छे, ते केवलज्ञान अहियां सिद्धपणानु जाणवुं, परंतु सयोगी अवस्थानु नहि. ८ चारित्र. सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, यथाख्यात, आ पांच चारित्र, तेमज तेना प्रतिपक्षी देशसंयम तथा असंयम, ते पांचे चारित्रमां तेमज बने विपक्षमां सिद्धपणु नथी, कारण के ते सर्वे शरीर विद्यमान होय छे, त्यारे होय छे, अने सिद्ध तो शरीररहित छे ए दर्शन, चक्षु, अचक्षु, अवधि अने केवल, आ चार दर्शनोमां प्रथमना त्रणमां सिद्धपणुं नथी, परंतु केवल दर्शनमां केवलज्ञाननी पेठे सिद्धपणु छे. १० लेश्या. कृष्ण, नील कापोत, तेजु, पद्म, शुक्ल, आ छए लेश्यामां सिद्धपणु नथी, कारण के लेश्या न्नवस्थजीवनो पर्याय छे, अने सिद्ध अलेशी छे ११ न्नव्य, अन्नव्य, आ बने अवस्थामां सिद्धपणुं नथी, कारण के जेने सिद्धपदनी प्राप्ति थशे ते न्नव्यजीव कहेवाय छे, अने सिद्धोने नवी पदवी तो कांइ प्राप्त करवानी नथी, तेथी न्नव्यपणुं सिद्धमां नथी वली जेने सिद्ध थवानी योग्यता कोइपणकालमां न होय ते अन्नव्य कहेवाय छे, सिद्धना जीव एवा नथी, कारण के अतीतकालमां तेउमां एवी योग्यता हती, तेथी सिद्ध अन्नव्य

स्वरूपमां संशय तथा जिनोक्ततत्त्वमां दूपणोनो आरोप इत्यादि, व्यक्त मिथ्यात्व छे तथा आभिग्रहिकादि जे पांच मिथ्यात्व छे, तेमांथी अनाजोगिक मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व छे, अने बाकीनां चार व्यक्त मिथ्यात्व छे, तथा "अधम्मे धम्मसन्ना इत्यादि" दश प्रकारनां जे मिथ्यात्व छे, ते सर्व व्यक्त मिथ्यात्व छे बीजु अनादि कालथी मोहनीय प्रकृतिरूप मिथ्यात्व, आत्माना सत् दर्शनरूप गुणनुं आछादक, जीवनी साथे निरंतर अविनाभावि ते अव्यक्त मिथ्यात्व छे

हवे मिथ्यात्व गुणस्थानक शा कारणथी कहेवामां आवे छे, ते लखियेछियें अनादि अव्यक्त मिथ्यात्व, अव्यवहार राशिवर्ती जीवमां निरंतर होय छे, ते जीवने व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिनी जे प्राप्ति तेज मिथ्यात्व गुणस्थानक छे

प्रश्न.–मिथ्यात्व गुणस्थानकमां सर्व जीवोनां स्थान मले छे, एम जैनशास्त्रनु कथन छे, छतापि व्यक्त मिथ्यात्वनी बुद्धिने गुणस्थानरूपता कहो छो तेनु शु कारण छे ?

उत्तर –सर्वभाव सर्व जीवोए पूर्वे अनंतवार प्राप्त करेला छे, ते वचन प्रमाणथी जे प्राप्तव्यक्तमिथ्यात्वबुद्धिवाला जीवो व्यवहार राशिवर्ती छे तेवोज प्रथम गुणस्थानकवाला कहेवाय छे परंतु अव्यवहार राशिवर्त्ति जीव तेवा नथी, कारण के तेओ अव्यक्तमिथ्यात्ववाला छे, ते कारणथी दोप नथी

हवे मिथ्यात्वरूप दूपणनु स्वरूप कहियेंछिये. जेम कोइ मनुष्य मदिराना उन्मादथी नष्टचैतन्य थवाथी हित, अहित कांइ पण जाणतो नथी, तेवीज रीते मिथ्यात्ववासित जीव सम्यक् धर्म अधर्म जाणतो नथी ॥ यदाह ॥ मिथ्यात्वेनालीढचित्तानितांतं, तत्वातत्वं जानते नैव जीवा ॥ किं जात्यधा कुत्रचिद्वस्तुजाते, रम्यारम्य व्यक्तमासादयेयुः ॥ १ ॥ भावार्थ.–जेम जन्मांध पुरुषो वस्तुओनी जाति, तेमज रम्य अरम्य स्वरूपने जाणी शकतो नथी, तेमज मिथ्यात्वथी जे जीवोनां अंत करण वासित छे, ते तत्वातत्वना स्वरूपने बिलकुल जाणि शकता नथी

हवे मिथ्यात्वनी स्थिति कहियेछिये अभव्य जीवोनी अपेक्षाए, तेमज सामान्य प्रकारे अव्यक्त मिथ्यात्वनी स्थिति अनादि अनंत छे, भ

व्यजीवोनी अपेक्षाए तेज स्थिति अनादि सांत छे आ स्थिति सामान्य प्रकारे बतावी छे, हवे जो मिथ्यात्व गुणस्थानकनी स्थिति विचारियें तो जव्यजीवोनी अपेक्षाए अनादि सांत छे, तेमज सादि सांत पण छे, अने अजव्य जीवोनी अपेक्षाए अनादि अनंत छे ज्यारे मिथ्यात्व गुणस्थानकमां जीव वर्त्ते छे, त्यारे एकसो वीश बंध प्रायोग्य कर्म प्रकृतियोमांथी १ तीर्थंकरनाम कर्मनी प्रकृति, २ आहारक शरीर, ३ आहारक अंगोपांग, आ त्रण प्रकृतिनो बंध करतो नथी बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा एकसो बावीश कर्मप्रकृति जे उदय प्रायोग्य छे, तेमांथी १ मिश्र मोहनीय, २ सम्यक्त्व मोहनीय, ३ आहारक शरीर, ४ आहारक उपांग, ५ तीर्थंकरनाम, आ पांच प्रकृति शिवाय, बाकीनी एकसो सत्तर प्रकृतिनो तेने उदय छे, अने एकसो अडतालीश कर्म प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे सास्वादन गुणस्थानकनुं स्वरूप लखिए छीये. तेमां प्रथम आ गुणस्थानकनु कारणभूत उपशम सम्यक्त्व छे, तेनुं स्वरूप कहीए छियें. जीवमां अनादिकालथी रहेला मिथ्यात्व कर्मनी उपशांति थवाथी, ग्रंथि भेदकरणकाल पछी औपशमिक सम्यक्त्व, जीवने प्राप्त थाय छे आ सामान्यस्वरूप कथन कर्युं विशेपस्वरूप आ प्रमाणे छे औपशमिक सम्यक्त्व बे प्रकारनु छे १ अंतरकरण औपशमिक सम्यक्त्व, २ स्वश्रेणीगत अर्थात् उपशमश्रेणीगत औपशमिक सम्यक्त्व हवे अपूर्वकरण करीने जेणे ग्रथिभेद कर्यो छे, ते मिथ्यात्व कर्म पुद्गलनी राशिना त्रण पुंज करे छे, ते त्रण पुंज आ प्रमाणे छे १ शुद्ध, २ अर्द्धशुद्ध, ३ अशुद्ध, तेमां शुद्ध पुंज सम्यक्त्व मोहनीय छे, अर्द्धशुद्ध पुंज मिश्रमोहनीय छे, अने अशुद्धपुंज मिथ्यात्वमोहनीय छे १ जेम मदन कोद्रवा, जे खावाथी मीणो चडे, तेने खांडी, तुस उतारी, छाण पाणी दइ, शुद्ध करतां, ते कोद्रव खावाथी, जेम खानारने विशेप मादकता न थाय, तेम जीवने विकल करे, जेथी संदेह, विपर्यय अने मूढताथी जीवतत्वनी परीक्षा करी शके नहि,एवां जे मिथ्यात्वनां दल, तेने यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अने अनिवृत्तिकरण ए त्रणकरणना प्रयोगे शोधतां ते दलनो मात्र एकठाणीउं रस रहे, जेथी जीवतत्वनी परीक्षा विपे मुंझाय नहि, परंतु आत्मस्व-

नावरूप औपशमिक तेमज क्षायिक सम्यक्त्व, तेने उदयें न होय, अने सूक्ष्मपदार्थनेविषे देश शकाये मेल उपजावे तेथी ते शुद्धदल (पुज) नु नाम सम्यक्त्व मोहनीय छे २ जे मिथ्यात्वदल अर्द्धखांड्या मदनकोद्रवानी पेठे अर्द्धविशुद्ध जे दल, जेथी वेठाणीउं रसमात्र रहे, अने तेम थवाथी जीवने तत्वरुचि न होय, अने अतत्वरुचि पण न होय, एवी मिश्ररुचि जे कर्मदल उपजावे ते मिश्र मोहनीय कर्म छे ३ अशुद्धपुज, ते जेवो बांध्यो हतो तेवोज चोठाणीउं, त्रण ठाणीउं तेमज वेठाणीउंरस जे अनुपहत सर्वघाति रसयुक्त कर्मदल, तुपसहित अणखांड्या मदन कोद्रवानी पेठे उन्मादजन्य होवाथी, तत्वसद्दहणामां विपर्यास पणुं करे तेथी ते दल (पुज) नु नाम मिथ्यात्व मोहनीय छे आ त्रण पुज जे जीव करे नहि, परतु उदय आवेला मिथ्यात्वने जे क्षय करे छे, अने जे उदय नथी आव्या तेने उपशमावे छे, एवा अतर्मुहूर्त्त काल सुधी सर्वथा मिथ्यात्वना अवेदक जीवने अंतरकरणमां औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, आ प्रथमभेद छे तथा उपशम श्रेणि प्रतिपन्नने मिथ्यात्व अनंतानुबधीनो उपशम थता स्वश्रेणिगत औपशमिक सम्यक्त्व थाय छे, ते बीजो भेद आ बने प्रकारनु उपशम सम्यक्त्व, सास्वादननी उत्पत्तिमां मूल कारण छे

हवे सास्वादननु स्वरूप लखिये छियें औपशमिक सम्यक्त्ववालो जीव, शांत थयेला अनतानुबधी चारे कषायोमांथी क्रोधादि एक पण उदय पाम्या थकां औपशमिकरूप गिरिशिखरथी पडतां, ज्यां सुधी मिथ्यात्वरूप भूतलने प्राप्त थतो नथी, त्यां सुधी, एक समयथी लइने छ आवलिका सुधी सास्वादन गुणस्थानकवर्त्ती होय छे

प्रश्न – व्यक्त बुद्धि प्राप्ति रूप प्रथम, तेमज मिश्रादि गुणस्थानोना उत्तरोत्तर चढण रूपोने तो गुणस्थानकपणु योग्य छे, परतु सम्यक्त्वथी पडनार सास्वादनने गुणस्थानपणानो केम सभव होय ?

उत्तर –मिथ्यात्व गुणस्थानकनी अपेक्षाए सास्वादन पण उर्ध्व आरोहण रूप होवाथी गुणस्थान छे वली मिथ्यात्व गुण अभव्य जीवोने पण थाय छे, परतु सास्वादन तो भव्य जीवोनेज थइ शके छे, भव्य जीवोमा पण जेउनेज ससार, अर्ध पुद्गल परावर्त्तन जेटलो बाकी रह्यो

होय, तेउनेज थाय छे, ते कारणथी सास्वादनने पण मिथ्यात्व गुणस्थानकथी आरोहणरूप गुणस्थानकत्व थइ शके छे सास्वादन गुणमां वर्तंतो जीव १ मिथ्यात्व, ४ नरकत्रिक, ७ एकेंद्रियादि जातिचार, ९ आतपनाम, १० स्थावर नाम, ११ सूक्ष्म नाम, १२ अपर्याप्त नाम, १३ साधारणनाम, १४ हुडक संस्थान, १५ सेवार्त्तसंहनन, १६ नपुसक वेद. आ सोल प्रकृतिनो बधव्यवछेद करे छे, बाकीनी एकसो एक प्रकृतिनो बध करे छे, तथा ३ सूक्ष्मत्रिक, ४ आतप, ५ मिथ्यात्वोदय, ६ नरकानुपूर्वी, आ छ प्रकृतिनो उदय व्यवछेद होवाथी १११ प्रकृति वेदे छे, तथा तीर्थंकर नामनी सत्ता विना १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे त्रीजा मिश्रगुणस्थानकनुं स्वरूप लखियें छियें दर्शनमोहनीय प्रकृतिरूप मिश्रमोहकर्मना उदयथी जीवविषये जे समकाल, समरूपें, सम्यक्त्व मिथ्यात्वना मलवाथी अतर्मुहूर्तसुधी मिश्रित जाव ते मिश्रगुणस्थानक कहेवाय छे जे जीव सम्यक्त्व मिथ्यात्व बनेना एकत्र मलवाथी मिश्रजावमां वर्त्ते छे, ते मिश्रगुणस्थानस्थ कहेवाय छे, कारण के मिश्रपणु जे छे ते बनेना मेलापनु एक जात्यतररूप छे ते बने जावोनुं जात्यतर एक रूप होवामां दृष्टांत आ प्रमाणे छे जेम घोडी तथा गधेडाना सयोगथी जात्यतर खच्चर उत्पन्न थाय छे, तथा जेम साकर अने दहींना मेलापथी जात्यतर शिखड उत्पन्न थाय छे, तेम जीवने, सर्वज्ञ तेमज असर्वज्ञ, बंनेना कहेला धर्मोमां समबुद्धिथी एकसरखी श्रद्धा उत्पन्न थाय, ते जात्यतर जेदात्मक होवाथी मिश्रगुणस्थानक थाय छे, ज्यारे जीव मिश्र गुणस्थानस्थ होय छे, त्यारे परजवना आयुनो बध करतो नथी, तेमज मिश्रगुणस्थानकमां छतां जीव मृत्यु पण पामतो नथी, क्यां तो सम्यक् दृष्टि थइ सम्यक् दृष्टि गुणस्थानकमां आवी मरे छे, अथवा तो कुदृष्टि थइ मिथ्यात्वगुणस्थानमां पाछो जइ मरे छे आ मिश्रनी जेम बारमा क्षीणमोह, तेमज तेरमा सयोगी गुणस्थानोमां पण जीव मृत्यु पामतो नथी बाकीना अगियार गुणस्थानकोमां जीव मृत्यु पामे छे. वली मिथ्यात्व, सास्वादन अने अविरति सम्यक्दृष्टि, आ त्रण गुणस्थानकोज जीवनी साथे परजवमां जाय छे बाकी अगियार जातां नथी तथा जे जीवोए मिथ्यात्वादि गुणस्थानोमां पूर्व आयु बांधेल छे, अने पछी तेउने

जो मिश्रगुणस्थान प्राप्त थाय छे,तो ज्यारे तेओ मरे छे त्यारे जे गुणस्थानमां तेओए आयु बांधेल छे, ते गुणस्थानमां जइने तेओ मरेछे, अने तेओनी गतिपण मृत्यु पामेलाना गुणस्थानकने अनुसारे थाय छे वली मिश्रगुण स्थानकवाला जीव, १ तिर्यंच गति, २ तिर्यंचायु, ३ तिर्यंचानुपूर्वी, ६ स्त्यानर्द्धित्रिक, ७ दुर्जग, ८ दु:स्वर, ए अनादेय, १३ अनंतानुबंधी चार, १७ मध्यनां चार संस्थान, २१ मध्यनां चार संहनन, २२ नीचगोत्र, २३ उद्योतनाम, २४ अप्रशस्त विहायोगति, २५ स्त्री वेद आ पच्चीश प्रकृतिनो बंधव्यवछेद करेछे, तथा मनुष्यायु अने देवायु आ बने आयुष्यना बंध करता नथी, आ सत्तावीश प्रकृतिविना बाकीनी चम्मोतेर प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा ४ अनतानुबंधी चार, ५ स्थावरनाम, ६ एकेंद्रिय, ए विकलत्रिक, तेओनो उदय व्यवछेद थवाथी, तेमज मनुष्यानुपूर्वी, अने तिर्यगानुपूर्वी आ बनेनो उदय न होवाथी, एकसो प्रकृतिनो उदय वेदेछे, अने पूर्वोक्त १४७ प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे चोथा अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानकनु स्वरूप लखियेछिये तेमां प्रथम सम्यक्त्व प्राप्तिनु स्वरूप आ प्रमाणे छे सङ्गी पचेंद्रिय जव्य जीवने यथोक्त तत्व, यथावत् सर्ववित्प्रणीत तत्त्वोमां, जीवादि पदार्थोमां, निसर्गथी अर्थात् पूर्वजव अन्यासविशेषथी उत्पन्न थयो जे अत्यत निर्मल गुणात्मकरूपस्वजाव, ते स्वजावथी, अथवा गुरुना उपदेशश्रवणथी, रुचिजावना जे प्रगट--उत्पन्न थाय छे, ते सम्यक्त्व, सम्यक्श्रद्धान लक्षण कहेवाय छे यदाह ॥ रुचिर्जिनोक्ततत्वेषु, सम्यक् श्रद्धानमुच्यते ॥ जायते तन्निसर्गेण, गुरोरधिगमेन वा ॥ १ ॥ हवे अविरति सम्यक्दृष्टिपणानी उत्पत्ति कहियेछियें बीजो कषाय जेनु नाम अप्रत्याख्यान छे, एवा जे क्रोध, मान, माया, लोज, जेना उदयथी दूर रह्यु छे विरतिपणु, ते कारणथी केवल सम्यक्त्वमात्र जेओने होय, एवा गुणस्थानवाला जीवोने, चोथु अविरति सम्यक्दृष्टि गुणस्थानक होय छे तात्पर्य ए छे के, जेम कोइ पुरुष, न्यायोपार्जित धन, जोग, विज्जव आ-दर्यतायुक्त उत्तमकुलमा जन्म्यो छे, परंतु दुरत जुगारआदि जव्य जीवोने सेवन करता, अनेक अन्यायि कार्यो करवाथी, अपराधी थाके छे, जव्य जीज्यदम याने शिक्षा जोगवता, जेनाथी अजिमान जेटलो बाकी रह्यो

थ्यात्वनो क्षय करे, अने नहि उदय आवेला मिथ्यात्वने उपशमावे, त्यारे क्षायोपशमिक सम्यक्त्वनी तेउने प्राप्ति थाय छे. ज्यारे जीवोने क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न थाय छे, त्यारे मनुष्यगति अने देवगतिनी प्राप्ति थाय छे. तथा अपूर्वकरण करीने, जेउए त्रण पुज कर्या छे, एवा जीवो चोथा गुणस्थानकथीज क्षपकपणानो जो आरंभ करेछे, तो अनंतानुवंधी चार कषाय तथा मिथ्यात्व मोह, अने सम्यक्त्व मोह, रूप त्रण पुंज ए सातेनो क्षय करतां तेउने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे हवे ते क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव जो ते वखते अवद्धायु होय तो तेज भवमां मोक्ष प्राप्त करे छे, अने जो आयुनो वध कर्या पछी क्षायिक सम्यक्त्ववान् थया होय तो त्रीजा भवमा मोक्ष पामे छे, अने जो असंख्यात वर्ष जीवनारा मनुष्य, वा तिर्यंचनु आयु वांध्या पछी क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयु होय तो चोथे भवे मोक्ष प्राप्त करे छे

हवे अविरति गुणस्थानवर्त्ती जीवनां कृत्य लखियें छियें व्रतनियम तो तेउने कांइपण होतु नथी, परंतु देवश्रीवीतराग, भगवान्, परत्मानी तथा पूर्वोक्त लक्षणवाला गुरुमहाराजनी तथा चतुर्विध श्रीसघनी पूजा, भक्ति, नमस्कार, वात्सल्यादि कृत्यो करे छे, तथा प्राभाविक श्रावक होवाथी शासननी उन्नति तथा शासननी प्रभावना करे छे चतुर्थ गुणस्थानकवालो जीव, १ तीर्थंकर नामकर्म, २ मनुष्यायु, ३ देवायु, आ त्रण, प्रकृति त्रीजा गुणस्थानवालाथी अधिक वांधे छे, तेथी सत्तोतेर प्रकृतिनो वध करे छे, तथा मिश्र मोहनो व्यवच्छेद थवाथी, अने चार आनुपूर्वी, तथा सम्यक्त्व मोहनो उदय थवाथी, एकसो चार कर्मप्रकृतिने वेदेछे क्षायिक सम्यक्त्ववालाने १३० कर्मप्रकृतिनी सत्ता होय छे अने उपशम सम्यक्त्ववालाने चोथा गुणस्थानकथी ते अग्यारमा गुणस्थानकपर्यंत १४० कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे, अने क्षायिक सम्यक्त्ववालाने जे जे गुणस्थानकमां जेटली जेटली कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे ते यथानुक्रम लखवामां आवशे

हवे पाचमा देशविरति गुणस्थानकनु स्वरूप लखीये छीयें सम्यक् तत्त्वाववोधथी उत्पन्न थयो जे वैराग्य, ते वैराग्यथी जीवने सर्व विरतिपणानी वांछा थायछे, परतु सर्व विरतिघातक प्रत्याख्यान नामना कषायना उदयथी तेनामा सर्वविरतिपणुं अगीकार करवानुं सामर्थ्य होतु

ध्यवसाय विशेषथी जे ग्रंथिने, घननिविड रागद्वेष परिणति रूप कहे छे ते ग्रथिने भेदवानो जे आरम्भ. ते अपूर्वकरण कहेवाय छे तथा ३ जे अध्यवसायविशेषथी ग्रथिभेद करीने अनिवृत्त थकां परमआनंद जनक सम्यक्त्व प्राप्त करे छे तेनु नाम अनिवृत्तिकरण छे आ त्रणे करणनु स्वरूप श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमणआचार्य आवश्यकना शुद्धांभोनिधि गधहस्ती महाभाष्यमां त्रण पथीजनना दृष्टांतथी आ प्रमाणे व्याख्यान करे छे त्रण पथीजनो एक नगर जवा सारु निकलनां जगलना उजाड रस्तापर चाल्या जता हता चालता चालतां विकाल वेला थइ गइ अर्थात् सूर्यअस्त थयो पथीजनो मनमां बहुज करवा लाग्या तेटलामां तत्काल बे चोर तेउंनी नजीक आवी पहोच्या चोरोने देखी त्रण मांहेनो एक पथी जन फरीजवाथी दोडी पाछो भागी गयो एकने बने चोरोए पकडी लीधो, अने त्रीजो पथीजन बंने चोरो साथे लडतां लडतां तेउने मारी कुटीने मुद्दाम नगरे पहोची गयो आ दृष्टातने दार्ष्टांत (सिद्धांत) रूप आ प्रमाणे घटाववु उजड जगल ते मनुष्यभव छे, कर्मोनी स्थिति ते लाबो रस्तो छे, भयनु स्थानक ते गांठ छे, रागद्वेष ते बने चोर छे, नगर ते मोक्षस्थान छे जे पुरुष चोरथी डरी पाछो भागी गयो, तेनी ससारमां परिभ्रमण करवानी स्थिति अधिक छे, जे पुरुषने चोरोए पकडी लीधो, तेमज चोरथी लुटायो ते पण दुःखी तेमज परिभ्रमण करनार छे, अने जे पुरुष चोरोने मारी कुटी नगर पहोंचीगयो ते सम्यक्दृष्टि मोक्षनगर पहोंचनार तथा सुख प्राप्त करनार छे

हवे कीडीउंना दृष्टातथी त्रण करणनु स्वरूप कहियेछियें जेम कीडीउंनो समूह बिलमांथी निकली एक खुटानी आसपास फर्या करे छे, तेमाथी केटलीएक कीडिउं खुटा उपर चडे छे, अने केटलीएक खुटा उपर पहोंचता पाख आववाथी उडी चाली जाय छे, तेवी रीते आ त्रण करणनी बाबतमा पण जाणी लेवु ज्यारे जीवो यथाप्रवृत्ति करण करीने ग्रथि देशने प्राप्त थाय छे, अने अपूर्वकरण करी ग्रथिनो भेद करे छे, त्यारे ग्रथिभेदकर्या पछी कोइक जीव मिथ्यात्व पुद्गलनी राशिने वेहेचीने १ मिथ्यात्वमोह, २ मिश्रमोह, ३ सम्यक्त्वमोह, रूप त्रण पुज करे छे, अने ज्यारे अनिवृत्तिकरण करी विशुद्धमान थता, उदय आवेला मि-

थ्यात्वनो क्षय करे, अने नहि उदय आवेला मिथ्यात्वने उपशमावे, त्यारे क्षयोपशमिक सम्यक्त्वनी तेउने प्राप्ति थाय छे. ज्यारे जीवोने क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न थाय छे, त्यारे मनुष्यगति अने देवगतिनी प्राप्ति थाय छे. तथा अपूर्वकरण करीने, जेउए त्रण पुंज कर्या छे, एवा जीवो चोथा गुणस्थानकथीज क्षपकपणानो जो आरंभ करेछे, तो अनतानुवधी चार कपाय तथा मिथ्यात्व मोह, अने सम्यक्त्व मोह, रूप त्रण पुज ए सातेनो क्षय करतां तेउने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे. हवे ते क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव जो ते वखते अवद्धायु होय तो तेज भवमां मोक्ष प्राप्त करे छे, अने जो आयुनो वध कर्या पछी क्षायिक सम्यक्त्ववान् थया होय तो त्रीजा भवमा मोक्ष पामे छे, अने जो असंख्यात वर्ष जीवनारा मनुष्य, वा तिर्यंचनु आयु वांध्या पछी क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयु होय तो चोथे भवे मोक्ष प्राप्त करे छे.

हवे अविरति गुणस्थानवर्त्ती जीवनां कृत्य लखिये छिये व्रतनियम तो तेउने काइपण होतु नथी, परंतु देवश्रीवीतराग, भगवान्, परत्मानी तथा पूर्वोक्त लक्षणवाला गुरुमहाराजनी तथा चतुर्विध श्रीसंघनी पूजा, भक्ति, नमस्कार, वात्सल्यादि कृत्यो करे छे, तथा प्राभाविक श्रावक होवाथी शासननी उन्नति तथा शासननी प्रभावना करे छे चतुर्थ गुणस्थानकवालो जीव, १ तीर्थंकर नामकर्म, २ मनुष्यायु, ३ देवायु, आ त्रण, प्रकृति त्रीजा गुणस्थानवालाथी अधिक वांधे छे, तेथी सत्तोतेर प्रकृतिनो वध करे छे, तथा मिश्र मोहनो व्यवछेद थवाथी, अने चार आनुपूर्वी, तथा सम्यक्त्व मोहनो उदय थवाथी, एकसो चार कर्मप्रकृतिने वेदेछे क्षायिक सम्यक्त्ववालाने १३० कर्मप्रकृतिनी सत्ता होय छे. अने उपशम सम्यक्त्ववालाने चोथा गुणस्थानकथी ते अग्यारमा गुणस्थानकपर्यंत १४० कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे, अने क्षायिक सम्यक्त्ववालाने जे जे गुणस्थानकमा जेटली जेटली कर्मप्रकृतिनी सत्ता छे ते यथानुक्रम लखवामां आवशे

हवे पाचमा देशविरति गुणस्थानकनु स्वरूप लखीयें छीयें सम्यक् तत्त्वाववोधथी उत्पन्न थयो जे वैराग्य, ते वैराग्यथी जीवने सर्व विरतिपणानी वाछा थायछे, परंतु सर्व विरतिघातक प्रत्याख्यान नामना कषायना उदयथी तेनामां सर्वविरतिपणुं अगीकार करवानुं सामर्थ्य होतु

नथी, परंतु जघन्य, मध्यम उत्कृष्टरूप देशविरति ते थइ शकेछे जघन्य देशविरतिपणामां आकुट्टि स्थूलहिंसा प्रमुखनो त्याग, मद्यमांसादि परिहार, तेमज पंचपरमेष्ठि नमस्कार स्मरणादि छे यदाह ॥ आउट्टि थूल हिंसाइ, मद्यमसाइ चायउं ॥ जहन्नो सावउ होइ, जो नमुक्कार धारउं ॥ १ ॥ तथा मध्यम देशविरति अक्षुद्रादि न्यायसपन्न वैभवादि धर्मयोग्यताना गुणोसहित, तथा गृहस्थ उचित षट्कर्मधर्ममा तत्पर, द्वादश व्रतना पालक, सदाचारवान्, एवा होय ते मध्यम श्रावक जाणवा तथा उत्कृष्ट देशविरति सचित्तआहारना त्यागी होय, प्रतिदिन एकासणुं करे, ब्रह्मचारी होय, महाव्रत अगीकार करवानी इच्छावाला होय, अने गृहस्थनो धधो त्यागेलो होय ते उत्तम श्रावक जाणवा आ त्रण प्रकारनी विरतिमाथी एकपण प्रकारनी विरति होय ते श्रावक कहेवाय छे देशविरति गुणस्थानकनी उत्कृष्टी स्थिति देशउणी कोटिपूर्वनी छे

हवे देशविरतिपणामां ध्याननो संभव कहीये छिये आ गुणस्थानक वाला जीवोमां १ अनिष्टयोगार्त्त, २ इष्टयोगार्त्त, ३ रोगचितार्त्त, ४ अग्रशौचार्त्त, आ चार पादरूप आर्त्तध्यान, तथा १ हिंसानंदरौद्र, २ मृषानद रौद्र, ३ चौर्यानंदरौद्र, ४ सरक्षणानंदरौद्र, आ चार पादरूप रौद्रध्यान, मद होय छे जेम जेम देशविरतिपणु विशेष थतु जायछे तेम तेम आर्त्त रौद्रध्यान मंद मंदतर थतु जाय छे वली जेम जेम देशविरतिपणुं अधिक थतु जाय छे, तेम तेम धर्मध्यान अधिक अधिक थतु जाय छे, परतु मध्यमरूपेंज रहेछे, उत्कृष्ट धर्मध्यान देशविरतिपणामा होतु नथी जो उत्कृष्ट धर्मध्यान थइ जाय तो, सर्व विरतिपणु थइ जाय

प्रश्न.—पाचमा गुनस्थानमा धर्मध्यान केवी तरेहनु होय?

उत्तर — गृहस्थधर्म उचित षट्कर्म, एकादश प्रतिमा, तथा श्रावक व्रतपालनरूप होय षट्कर्म आ प्रमाणे छे १ तीर्थंकर भगवत वीतराग सर्वज्ञनी प्रतिमाद्वारा पूजा करवी, २ गुरुनी सेवा करवी, ३ स्वाध्याय, ४ सयम (इंद्रियदमन) ५ तप, ६ दान यदाह ॥ देवपूजा, गुरूपास्ति, स्वाध्याय सयमस्तप ॥ दानं चेति गृहस्थाना, षट्कर्माणि दिने दिने ॥ १ ॥ तथा प्रतिमा ते अभिग्रहविशेषने कहेवामा आवे छे ॥ गाथा ॥ दसण वयसामाइय, पोसहपडिमा अवभ सचित्ते ॥ आरंभपेस उदिठ, व-

जाए समण जूए य ॥१॥ प्रतिमानु विस्तारथी स्वरूप जोवु होय तो श्रीपंचाशक नामा शास्त्रमां प्रतिमा पचाशक जोवुं तथा श्रावकनां व्रत बार छे. तेनुं विस्तारथी कथन हवे पछी करवामां आवशे आपद्कर्म एकादश प्रतिमा अने बार व्रत पालवामां मध्यम, धर्मध्यान होय छे. देशविरति गुणस्थानस्थ जीव, अप्रत्याख्यान चार कषाय, मनुष्यगति, मनुष्यायु, मनुष्यापूर्वी, आद्यसंहनन, औदारिक शरीर, औदारिक अगोपांग, सर्व मली दशकर्मप्रकृतिनो बधव्यवछेद करवाथी, सडसठ कर्म प्रकृतिनो बंध करे छे. तथा अप्रत्याख्यान चार, मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी, नरकत्रिक, देवत्रिक, वैक्रियद्विक, डुर्जग, अनादेय, अयशःकीर्त्ति, आ सत्तर कर्म प्रकृतिनो उदयव्यवछेद थवाथी सत्याशी कर्म प्रकृतिनुं फल जोगवे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे.

पांचमा गुणस्थान उपरनां जे जे गुणस्थानको छे तेमांथी तेरमुं गुणस्थानक बाद करीने बाकीनां सर्व गुणस्थानकोनी पृथक् पृथक् अंतर्मुहूर्त्तमात्र स्थिति छे, अने छठुं तथा सातमुं गुणस्थानक हिंडोला समान होवाथी तेनु उत्कृष्ट कालमान देश उण पूर्व कोटि वर्ष छे

हवे छठा प्रमत्त संयत गुणस्थानकनुं स्वरूप लखियेछियें सर्व विरति साधु छठा प्रमत्त गुणस्थानकवाला होय छे, ते साधु केवा होय छे ? अहिंसादि पाचमहाव्रतना धारक होय छे ते साधु प्रमत्त शा कारणथी थाय छे ? प्रमादसेवन करवाथी प्रमत्त थाय छे ते प्रमाद पांच प्रकारे छे. ॥ गाथा ॥ मज्जं विषय कसाय, निद्दा विगहीय पंचवी जणिया ॥ ए ए पच पमाया, जीवं पाडंति ससारे ॥ १ ॥ जावार्थः– मद्य, विषय, कषाय, निद्रा, तेमज विकथा, आ पांच प्रमाद छे ते जीवने संसारमा नाखे छे जे साधु आ पाच प्रमादसंयुक्त होय, तथा जो तेने संज्वलन चोथा कषायनो उदय होय, तो महाव्रतधारक साधु पण अंतर्मुहूर्त सुधी अवश्य सप्रमाद होवाथी प्रमत्त थाय छे जो अंतर्मुहूर्त्तथी उपरांत प्रमाद सहित वर्ते तो ते प्रमत्त गुणस्थानकथी पण नीचे पडी जाय छे, जो अंतर्मुहूर्तमां प्रमाद रहित थाय तो फरी अप्रमत्त गुणस्थानमां आरोहण करे छे

हवे प्रमत्त संयत गुणस्थानमां ध्याननो संजव कहियेछियें. आ गुण-

स्थानमां मुख्य तो आर्त्तध्यान छे, उपलक्षणथी रौद्रध्याननो पण संभव छे, कारण के हास्यादि छ नोकषायनु प्रवर्त्तवु छे तथा आज्ञा आदि आलंबनयुक्त धर्मध्याननी गौणता छे धर्मध्यानना चार पाद छे १ आज्ञा, २ अपाय, ३ विपाक, ४ सस्थान, यथा ॥ आज्ञापायविपाकानां, सस्थानस्य विचितनात् ॥ इत्थ वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यानं चतुर्विधं ॥ १ ॥ सर्वज्ञ अर्हंत भगवंतें जे कांइ कथन करेल छे, ते सर्व सत्य छे, मारी समजमां जे जे वस्तुस्वरूप यथार्थ आवतुं नथी, तेनु मुख्य कारण मारी बुद्धिनी मंदता छे, वली दुषम कालना प्रभावथी तेमज संशय परास्त करनारा गुरुना अभावथी इत्यादि अनेक कारणोथी जिनेश्वर भगवानें कथन करेला तत्वनी सूक्ष्मता मारी समजमा आवती नथी, परतु अर्हंत भगवंतनु कथन नि स्वार्थि, एकांत हितकारक, तथा मृषा बोलवाना निमित्त विनानु इत्यादि जे चिंतवन करवु ते आज्ञाविचयनामा प्रथम भेद छे २ राग द्वेष कषायादि जे आश्रव छे, तेनाथी इहलोक परलोकमा अपाय (कष्ट) उत्पन्न थाय छे, ते महाअनर्थना हेतु छे, एवु जे चिंतवन करवु ते अपायविचयनामा बीजो भेद छे ३ क्षणे क्षणे कर्मफलोदय जे विचित्ररूप उत्पन्न थाय छे, तेनाथी सुखदु खादि भोगवता, हर्ष, शोक नहि करता, पूर्वकृत कर्मनो विपाक छे इत्यादि जे चिंतववु ते विपाक विचयनामा त्रीजो भेद छे ४ आ लोक अनादि अनत छे सर्व पदार्थ उत्पाद, व्यय, ध्रुवरूप छे, तथा पुरुषाकार लोकनु संस्थान छे, एवु जे चिंतवन करवु ते संस्थानविचय नामा चोथो भेद छे इत्यादि आलंबनयुक्त धर्म ध्याननी गौणता प्रमत्त गुणस्थानमां छे, परतु सप्रमाद होवाथी मुख्यता नथी

हवे जो कोइ प्रमत्त गुणस्थानमा निरालंबन धर्मध्यान कहेता होय तो तेनो निषेध करेलो छे, जिनभास्कर (जिनसूर्य) एम कहीगया छे के ज्या सुधी साधु प्रमादसयुक्त होय, त्यासुधी तेने निरालंबन धर्मध्यान होतु नथी कारण के प्रमत्तगुणस्थानमा मध्यम धर्मध्याननी पण गौणता कही छे, मुख्यता कही नथी, ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानमां निरालंबन धर्मध्याननो संभव नथी

हवे जेउं आ अर्थ (कथन) नो स्वीकार न करे तेने कहिये छियें

के जे साधु सप्रमादी थइने आवश्यक, सामायिकादि षडावश्यक साधक अनुष्ठाननो परिहार करीने, निश्चल, निरालंबन धर्मध्याननो आश्रय करे, ते साधु मिथ्यात्व मोहित जावथी मूढ थयो थको, श्रीसर्वज्ञ प्रणीत जैनागम (सिद्धांत) जाणतो नथी ते व्यवहारनो त्याग करी दूर बेठो छे, अने निश्चयने प्राप्त करी शक्यो नथी, अने जे जैन सिद्धांतना ज्ञाता छे, तेउं तो व्यवहारपूर्वक निश्चयने साधे छे यदाह ॥ जइ जिणमय पवज्जह, तामा विवहारनिछए मुयह ॥ विवहार नउं छे ए, तित्थछेउं जउं जणिउं ॥ १ ॥ अर्थः– जो जैनमतने अंगीकार करता हो, तेमज जैनमतना साधु थता हो तो व्यवहार, निश्चयनो त्याग करो नहि, जो व्यवहारनो उछेद करशो तो तीर्थनो उछेद थइ जशे, आ कथन उपर दृष्टांत कहीये छिये. कोइ पुरुष पोताना घरमां निरंतर बाजरानी रोटली खाय छे, एकाद दिवस कोइ गृहस्थें तेने निमंत्रण करी अपूर्व मिष्टान्न आहारनु जोजन कराव्यु आ मिष्टान्न आहारथी स्वादनो लोलुपी थइने ते पोताना घरनी बाजरानी रोटली निःस्वाद जाणी खातो नथी, अने अंतःकरणमां दुःप्राप्य मिष्टान्ननी अजिलाषा करी रह्यो छे, मिष्टान्न मलतु नथी, अने बाजरानी रोटली अरुचिकर थवाथी खातो नथी, तेथी उजयभ्रष्ट थइ अंते दुःखी थाय छे, तेवीज रीतें आ जीव पण कदाग्रहरूप जूत वलगी जवाथी प्रमत्त गुणस्थानसाध्य स्थूलमात्र पुण्य पुष्टिनां कारण, षडावश्यकादि कष्टक्रिया करतो नथी, अने कदाचित् प्रमत्त गुणस्थानमां जेनो लाज छे, एवु निर्विकल्प मनोजनित, समाधिरूप निरालंबन, ध्यानांश अमृत आहारतुल्य प्राप्त थाय छे, तेनाथी उत्पन्न थयो जे परमानंद सुखस्वाद, ते चित्तमां रेहेवाथी प्रमत्त गुणस्थानगत षडावश्यकादि कष्टक्रियाकर्म बाजरानी रोटली समान जाणी, तेनुं सम्यक् रीतें आराधन करतो नथी, अने मिष्टान्न तुल्य निरालंबन ध्यानांश तो प्रथम संहननना अजावथी प्राप्त करी शकतो नथी, तेथी आवश्यकादि क्रिया नहि करवाथी उजयभ्रष्ट थाय छे आ पंचम कालमा महामुनि, ऋषिउए निरालंबन ध्याननो मनोरथज करेलो छे ॥ तथा च पूर्वमहर्षय ॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्धश । तत् संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समा-

स्थानमां मुख्य तो आर्तध्यान ठे, उपलक्षणथी रौद्रध्याननो पण संभव ठे, कारण के हास्यादि ठ नोकषायनु प्रवर्त्तवु ठे तथा आज्ञा आदि आलंबनयुक्त धर्मध्याननी गौणता ठे धर्मध्यानना चार पाद ठे १ आज्ञा, २ अपाय, ३ विपाक, ४ सस्थान, यथा ॥ आज्ञापायविपाकानां, संस्थानस्य विचिंतनात् ॥ इत्थ वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यानं चतुर्विधं ॥ १ ॥ सर्वज्ञ अर्हंत भगवंतें जे काइ कथन करेल ठे, ते सर्व सत्य ठे, मारी समजमा जे जे वस्तुस्वरूप यथार्थ आवतु नथी, तेनु मुख्य कारण मारी बुद्धिनी मंदता ठे, वली दुषम कालना प्रभावथी तेमज सशय परास्त करनारा गुरुना अभावथी इत्यादि अनेक कारणोथी जिनेश्वर भगवानें कथन करेला तत्वनी सूक्ष्मता मारी समजमां आवती नथी, परंतु अर्हंत भगवतनु कथन नि स्वार्थि, एकांत हितकारक, तथा मृषा बोलवाना निमित्त विनानु इत्यादि जे चितवन करवु ते आज्ञाविचयनामा प्रथम भेद ठे २ राग द्वेष कषायादि जे आश्रव ठे, तेनाथी इहलोक परलोकमां अपाय (कष्ट) उत्पन्न थाय ठे, ते महाअनर्थना हेतु ठे, एवु जे चितवन करवु ते अपायविचयनामा बीजो भेद ठे ३ क्षणे क्षणे कर्मफलोदय जे विचित्ररूप उत्पन्न थाय ठे, तेनाथी सुखदु खादि भोगवतां, हर्ष, शोक नहि करतां, पूर्वकृत कर्मनो विपाक ठे इत्यादि जे चितववु ते विपाक विचयनामा त्रीजो भेद ठे ४ आ लोक अनादि अनंत ठे सर्व पदार्थ उत्पाद, व्यय, ध्रुवरूप ठे, तथा पुरुषाकार लोकनु सस्थान ठे, एवु जे चितवन करवु ते सस्थानविचय नामा चोथो भेद ठे इत्यादि आलंबनयुक्त धर्म ध्याननी गौणता प्रमत्त गुणस्थानमां ठे, परंतु सप्रमाद होवाथी मुख्यता नथी

हवे जो कोइ प्रमत्त गुणस्थानमां निरालवन धर्मध्यान कहेता होय तो तेनो निषेध करेलो ठे, जिनभास्कर (जिनसूर्य) एम कहीगया ठे के ज्या सुधी साधु प्रमादसयुक्त होय, त्यासुधी तेने निरालवन धर्मध्यान होतु नथी कारण के प्रमत्तगुणस्थानमां मध्यम धर्मध्याननी पण गौणता कही ठे, मुख्यता कही नथी, ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानमा निरालवन धर्मध्याननो संभव नथी

हवे जेउ आ अर्थ (कथन) नो स्वीकार न करे तेने कहिये ठियें.

के जे साधु सप्रमादी थइने आवश्यक, सामायिकादि षडावश्यक साधक अनुष्ठाननो परिहार करीने, निश्चल, निरालंबन धर्मध्याननो आश्रय करे, ते साधु मिथ्यात्व मोहित नावथी मूढ थयो थको, श्रीसर्वज्ञ प्रणीत जैनागम (सिद्धांत) जाणतो नथी ते व्यवहारनो त्याग करी दूर वेगो छे, अने निश्चयने प्राप्त करी शक्यो नथी, अने जे जैन सिद्धांतना ज्ञाता छे, तेउं तो व्यवहारपूर्वक निश्चयने साधे छे. यदाह ॥ जइ जिणमय पवज्जह, तामा विवहारनिछए मुयह ॥ विवहार नउं छे ए, तिछुछेउं जउं नणिउं ॥ १ ॥ अर्थ.– जो जैनमतने अंगीकार करता हो, तेमज जैनमतना साधु थता हो तो व्यवहार, निश्चयनो त्याग करो नहि, जो व्यवहारनो उछेद करशो तो तीर्थनो उछेद थइ जशे, आ कथन उपर दृष्टांत कहीये छियें. कोइ पुरुष पोताना घरमां निरंतर वाजरानी रोटली खाय छे, एकाद दिवस कोइ गृहस्थें तेने निमंत्रण करी अपूर्व मिष्टान्न आहारनु नोजन कराव्युं आ मिष्टान्न आहारथी स्वादनो लोलुपी थइने ते पोताना घरनी वाजरानी रोटली नि.स्वाद जाणी खातो नथी, अने अतःकरणमां दु.प्राप्य मिष्टान्ननी अनिलाषा करी रह्यो छे, मिष्टान्न मलतु नथी, अने वाजरानी रोटली अरुचिकर थवाथी खातो नथी, तेथी उनयभ्रष्ट थइ अते दु खी थाय छे, तेवीज रीतें आ जीव पण कदाग्रहरूप नूत वलगी जवाथी प्रमत्त गुणस्थानसाध्य स्थूलमात्र पुण्य पुष्टिनां कारण, षडावश्यकादि कष्टक्रिया करतो नथी, अने कदाचित् प्रमत्त गुणस्थानमां जेनो लान छे, एवु निर्विकल्प मनोजनित, समाधिरूप निरालंबन, ध्यानांश अमृत आहारतुल्य प्राप्त थाय छे, तेनाथी उत्पन्न थयो जे परमानंद सुखस्वाद, ते चित्तमां रेहेवाथी प्रमत्त गुणस्थानगत षडावश्यकादि कष्टक्रियाकर्म वाजरानी रोटली समान जाणी, तेनुं सम्यक् रीतें आराधन करतो नथी, अने मिष्टान्न तुल्य निरालंबन ध्यानांश तो प्रथम संहननना अनावथी प्राप्त करी शकतो नथी, तेथी आवश्यकादि क्रिया नहि करवाथी उनयभ्रष्ट थाय छे. आ पचम कालमा महामुनि, ऋषिउंए निरालंबन ध्याननो मनोरथज करेलो छे ॥ तथा च पूर्वमहर्षय. ॥ चेतोवृत्तिनिरोधनेन करणग्रामं विधायोद्वशं । तत् संहृत्य गतागतं च मरुतो धैर्यं समा-

श्रित्य च ॥ पर्यंकेन मया शिवाय विधिवत्, स्थित्वैक नूनृद्दरी मध्य. स्थेन कदाचिदर्पितदृशा, स्थातव्यमंतर्मुख ॥ १ ॥ चित्ते निश्चलतांगते प्रशमिते, रागादि निद्रामदे । विद्राणेऽक्षकदंबके विघटिते, ध्वांतभ्रमारंजके ॥ आनंदे प्रविजृंभिते पुरपते, ज्ञाने समुन्मीलिते । मां रक्ष्यति कदा वनस्थमजितो डुष्टाशया. श्वापदा' ॥ २ ॥ तथा श्रीसूरप्रजाचार्या चित्तावदातैर्नवदागमानां, वा नेष जैरागरुज निवर्त्य ॥ मया कदा प्रौढसमाधिलक्ष्मी, इत्यादि ॥ तथा श्रीहेमचंद्रसूरय ॥ वनपद्मासनासीन, क्रोडस्थितमृगार्जक ॥ कदा घ्रास्यति वक्रो मां, चरंतो मृगयूथपा ॥ १॥ शत्रौ मित्रे तृणे स्त्रैणे, हेम्नेऽश्मनि मणौ मृदि ॥ मोक्षे जवे जविष्यामि, निर्विशेषमति कदा ॥ २ ॥ जावार्थ.– चित्तवृत्तिनो निरोध करीने, इंद्रियसमूह अने तेना विषयोने दूर करीने पवन अर्थात् श्वासोच्छ्वासनी गत्यागतिनु रोधन करीने, धैर्यतानु अवलंबन करीने, पद्मासन वेसीने, कल्याण करवा निमित्ते, विधियुक्त, कोइ, पर्वतनी कदरा (गुफा) मां वेसीने, एकवस्तु उपर स्थिर दृष्टि करी मुजने अंतर्मुख रहेवु योग्य ठे ॥ १ ॥ चित्त निश्चल थता, राग, द्वेष, कषाय, निद्रा अने मद शात थतां इंद्रियसमूहकृत विकार दूर थता, भ्रमारजक अंधकार प्रलय थतां, ज्ञाननो प्रकाश थतां, अने आनंद प्रगट वृद्धिमान् थता, आत्म अवस्थामां स्थित एवा मारा जीवने वनमां रहेता, डुष्टाशयवाला सिंह क्यारे रक्षा करशे ? ॥ २ ॥ वली श्रीसूरप्रजाचार्य पण कहे ठे, हे जगवन् ! तमारा आगम रूप जेषजथी, राग रूप रोगनिवर्त्तवाथी, निर्मल चित्तयुक्त थये, क्यारे एवो दिवस आवशे के जे दिवसे हु समाधिरूप लक्ष्मीनु दर्शन करीश ? इत्यादि तथा श्री हेमचंद्र सूरि कहे ठे के, वनमा पद्मासनथी वेठां थकां, मारा खोलामा मृगनु बच्चु आवी वेसे, अने हरणनो स्वामि कालियार मारा मुखने सूघे, ते समये हु मारी समाधिमां निश्चल रहु ॥ १ ॥ तथा शत्रुमां, मित्रमा, तृणमा, स्त्रियोमा सुवर्णमां तेमज पाषाणमा, मणिमां तेमज माटिमां, अने मोक्षमां तेमज संसारमा एकसरखी मतिवालो क्यारे हु थइश ? ॥ २ ॥ तेवीजरीते मंत्री वस्तुपाल, तथा परमतमा जर्तृहरिए पण मनोरथ करेला ठे, अने मनोरथ जे लोक करे ठे ते डु प्राप्य वस्तुनोज करे ठे जे वस्तु कष्टविना

सुखे मलती होय तेनो मनोरथ कोइ पण करतुं नथी. जे निरंतर मिष्टान्न खाय छे, अने मोटुं राज्य भोगवे छे, ते कदापि मिष्टान्न भोजन तथा राज्य भोगववानो मनोरथ करता नथी. ते कारणथी प्रमत्त गुणस्थानस्थ विवेकि पुरुषोए, परमसंवेग भावथी अप्रमत्त गुणस्थानकनो स्पर्श कर्यो होय ते पण सर्व प्रकारे परम शुद्ध परमात्मतत्व संवित्तिनो मनोरथ करवो, परंतु षट्कर्म, षडावश्यकादि व्यवहार क्रियानो परिहार न करवो, अने जे मूढ (अज्ञानी) योग ग्रहथी ग्रस्त छे, तेमज सदाचार व्यवहारथी पराङ्मुख छे, तेनो योगपण कांइ कामनो नथी, तेमज तेनो आ लोक पण नथी, अने परलोक पण नथी, अर्थात् ते जीवो जडात्मा होवाथी उभयभ्रष्ट थाय छे ॥ यतः॥ ये तु योगग्रहग्रस्ता., सदाचार पराङ्मुखाः ॥ एष तेषां च योगोऽपि, न लोकोपि जडात्मनां ॥ १ ॥ इत्यादि ते कारणथी साधुये दिवसे तेमज रात्रिमां जे जे दूषणो तेमने लाग्यां होय, तेनो उछेद करवा वास्ते अवश्य षडावश्यकादि क्रिया करवी जोइयें. ज्यां सुधी उपरनां गुणस्थानकोथी साध्य जे निरालंबन ध्यान छे, ते प्राप्त न थाय, त्यां सुधी करवी जोइयें

प्रमत्त गुणस्थानस्थ जीव, चार प्रत्याख्याननो बंध व्यवछेद होवाथी त्रेसठ प्रकृतिनो बंध करे छे, तथा तिर्यग्गति, तिर्यगानुपूर्वी, नीचगोत्र, उद्योत तथा प्रत्याख्यान चार आ आठप्रकृतिनो उदय व्यवछेद थवाथी अने आहारक शरीर तेमज आहारक अंगोपांगनो उदय होवाथी एकाशी प्रकृति वेदे छे, अने एकसो आडत्रीश प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे सातमा अप्रमत्तगुणस्थानकनु स्वरूप लखिये छिये पांच महाव्रतधारी साधु पांच प्रमादना अभावे, अप्रमत्तगुणस्थानस्थ होयछे तेने संज्वलन चार कषायनो, तेमज नोकषायनो पण उदय मंद होयछे, तात्पर्य के, संज्वलन कषाय तेमज नोकषायनो जेवो जेवो मंद उदय होय तेवो तेवो साधु अप्रमत्त होय यदाह ॥ यथा यथा न रोचंते, विषया सुलभा अपि ॥ तथा तथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ १ ॥ यथा यथा समायाति, संवित्तौ तत्वमुत्तमं ॥ तथा तथा न रोचंते, विषया. सुलभा अपि ॥ २ ॥ अर्थ—जेम जेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी, तेम तेम उत्तमतत्त्व संवित्तिनो लाभ थतो जाय छे, तथा जेम जेम उत्त-

मतत्त्व संविचिनो लाभ थतो जाय छे, तेम तेम सुखें प्राप्त थता विषयो रुचता नथी. वली अप्रमत्तगुणस्थानकवाला जीव जेम जेम मोहनीयकर्मनो उपशम करवामा तेमज क्षय करवामा निपुण थता जाय छे तेम तेम सद्ध्याननो आरंभ करे छे

दूर कर्योछे सर्वप्रमाद जेणें एवा जे जीव, तथा पचमहाव्रतधारक साधु, अष्टादश सहस्र शीलांग लक्षण संयुक्त, सदागमअभ्यासी ज्ञानवान् एकाग्रध्यानवान् (ज्ञान ध्यान रूप धन होवाथी) मौनी मौनवान् (कारण के मौनवान्ज ध्यानरूप धनवान् होइ शके छे) एवा पवित्रमुनि पूर्वोक्त सम्यक्त्वमोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह अने अनंतानुबधी चार, आ सात प्रकृति विना एकवीश प्रकृतिरूप मोहनीय कर्मने उपशम करवामां तेमज क्षय करवामा ज्यारे सन्मुख थायछे, त्यारे सालंबन ध्यान तजीने निरालंबन ध्यानमां प्रवेश करवानो आरंभ करेछे आ निरालंबन ध्यानमा प्रवेश करनारा योगी त्रण प्रकारना छे १ यथा प्रारंभका, २ तन्निष्ठा, ३ निष्पन्नयोगा ॥ यदाह ॥ सम्यग् नैसर्गिकीं वा, विरतिपरिणतिं, प्राप्य सासर्गिकीं वा ॥ क्वाप्येकांते निविष्टा, कपिचपलचलन्मानसस्तंभनाय, शश्वन्नासाग्रपाली, घनघटितदृशो, धीरवीरासनस्था । ये निष्पापा समाधे, विंदधति विधिनाऽरंभमारंभकास्ते ॥ १ ॥ कुर्वाणोम रुतासनेन्द्रियमनः क्षुत्तर्षनिद्राजय।योंतं जल्पति रूपणान्निरसकृत्,तत्त्वं समभ्यस्यति॥ सत्वानामुपरि प्रमोदकरुणा मैत्रीभृश मन्यते। ध्यानाधिष्ठितचेष्टयाऽभ्युदयते, तस्येह तन्निष्ठता ॥ २ ॥ उपरतबहिरतर्जल्पकल्लोलमाले, लसदविकलविद्या पद्मिनीपूर्णमध्ये ॥ सततममृतमंतर्मानसे यस्य हंस, पिबति निरुपलेप सोत्र निष्पन्नयोगी ॥ ३ ॥

हवे अप्रमत्तगुणस्थानमा ध्याननो संभव कहीये छिये, सर्वज्ञनुं कथन करेलु धर्मध्यान मैत्रीप्रमुख अनेक भेदरूप छे ॥ यदाह ॥ मैत्र्यादिभिश्च तुर्भेदं, यद्वाज्ञादि चतुर्विध ॥ रूपस्थादि चतुर्द्धा वा, धर्मध्यान प्रकीर्त्तितम् ॥ १ ॥ मैत्रीप्रमोद कारुण्य, माध्यस्थानि नियोजयेत् ॥ धर्मध्यानमुपस्कर्तुं, तद्धि तस्य रसायनं ॥ २ ॥ आज्ञापायविपाकानां, सस्थानस्य विचिंतनात्॥ इत्थ वा ध्येयभेदेन, धर्मध्यान प्रकीर्त्तितं ॥ ३ ॥ धर्मध्यान मैत्रीभावप्रमुख चार भेद छे तथा आज्ञाविचयप्रमुख चार भेद छे, अने

रूपस्थ प्रमुख चार भेदे छे प्रथम मैत्रीभावादि चार भेदनुं स्वरूप कहीये छियें १ सर्वजीव साथे प्रेमभावनु चिंतवन करवुं, सर्व जीवनु भलुं चाहवु, कोइ जीवनु बुरु चाहवु नहि, सर्व जीव उपर हितबुद्धि राखवी ते मैत्रीभावना, २ गुणवंत प्राणीउपर तेमज ज्ञानीप्रमुख उत्तम जीवोनां शुभकार्योथी तेउनु बहुमान करवुं तथा हर्ष करवो ते प्रमोद भावना, ३ दुःखी तेमज दीन प्राणीउनुं शुभ चिंतवन करी तेउनु दुःख दूर करवानी, तेमज धर्महीन प्राणीने धर्म पमाडवानी अभिलाषा ते करुणाभावना, ४ हिंसादि अघोर कर्मना करनारा तेमज देवगुरु अने धर्मनी निंदा करनारा एवा दुष्ट आशयवाला जीवोनुं बुरुं नहि चाहतां, तेउ पोतपोताना कर्मवश छे, एम विचारी तेउना उपर रागद्वेष नहि राखतां मध्यम परिणामे वर्त्तवु ते माध्यस्थ भावना बीजा आज्ञाविचय प्रमुख चार भेदनु स्वरूप छठा गुणस्थानक विचारमां वर्णन करेलुं छे. हवे रूपस्थादि चार भेदनुं स्वरूप कहीयें छियें १ रूपमां रह्या छतां पण आमारो जीव अरूपी अनंतगुणी छे, परंतु अरिहंतना अतिशयनु अवलंबन करी ते स्वरूप साथे आत्मस्वरूपनी एकता ते रूपस्थध्यान, २ शरीरमां रह्यो जे आपणो जीव, तेमां अरिहंत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय अने साधुपणाना सर्व गुणछे, एम निर्धार करी गुणीना गुणरूप पिंडनु ध्यान, करवु ते पिंडस्थध्यान, ३ अरिहंतादि पचपरमेष्टीना गुणनुं स्मरण करी तेनुं वाणी व्यापाररूप ध्यान ते पदस्थध्यान, ४ निरजन, निर्मल, संकल्प विकल्परहित, अभेद एक शुद्ध सत्तास्वरूप, चिदानंद, तत्वामृतरूप, असग, अखड, अनंत गुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुं ध्यान ते रूपातीतध्यान. ए प्रमाणे जिनेश्वरभगवानें कथन करेलु धर्मध्यान अप्रमत्तगुणस्थानमां मुख्य वृत्तिए अर्थात् प्रधानपणे होयछे रूपातीतभेद शुक्लध्यानरूप होवाथी अशमात्र गौणपणे रहेछे, अप्रमत्तगुणस्थानमां आवश्यक क्रियानो अभाव छे, छतांपि शुरूपणु छे ते कहीयें छियें

अप्रमत्तगुणस्थानमां सामायिकादि षट् आवश्यक नथी व्यवहार क्रियारूप नथी, परंतु निश्चयसामायिकादि छे सामायिकादि सर्व आत्माना गुण छे "आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे" अ-

र्थात् आत्माज सामायिक ठे, आत्माज सामायिकनो अर्थ ठे. आ सिद्धांतना वचन ठे.

प्रश्न—अप्रमत्तगुणस्थानमां व्यवहार क्रियारूप षट्कावश्यक शा वास्तेनहि?

उत्तर—अप्रमत्त गुणस्थानमां सत् ध्यानना योगथी निरंतर ध्यनमाज प्रवृत्ति ठे. स्वाजाविकी, सहज, नित्य संकल्पविकल्परूपमालानो अ-जाव होवाथी आत्मा निर्मल एकस्वजावरूप रहेठे, आ गुणस्थानमा वर्त्तता जीव, जावतीर्थस्नान करीने परमशुद्धि प्राप्त करेठे यदाह ॥ दाहोवसमं तण्हाइ, ठेयण मलप्पवाहण चेव ॥ तिहि अठेहिं निउत्त, तम्हातं दव्वउ तिछ ॥ कोहंमिउ निग्गहिये, तण्हाइ ठेयण जाण ॥ २ ॥ अठविहं कम्मरय, वहुएहिं जवेहि संचिय जम्हा ॥ तव सयमेण धोयइ, तम्हांतं जावओ तिछ ॥ ३ ॥ अर्थ—दाह उपशांत करे, तृषा ठीपावे, शरीरनो मल दूर करे, आ त्रण अर्थने सिद्ध करनारां गंगा, मागधादि ड्रव्यतीर्थ कहेवाय ठे, १ क्रोधनो निग्रह करवाथी दाहउपशम थाय ठे, लोजनो निग्रह करवाथी तृषानो ठेद थाय ठे, अने अनेक जवनी संचय करेली अष्टकर्मरूप रजथी आत्मस्वरूपने लागेलो मेल, तप संयमथी धोवाथी, आ गुणस्थान जावतीर्थ कहेवाय ठे अन्यच्च ॥ रुद्धप्राणप्रचारे, वपुषि नियमिते, संवृतेऽक्षप्रपंचे । नेत्रस्पंदे निरस्ते, प्रलय मुपगतें, तर्विकल्पेंद्रजाले ॥ जिन्ने मोहांधकारे, प्रसरति महसि, कापि विश्वप्रदीपे । धन्योध्यानावलंबी, कलयति परमानंदसिंधौ प्रवेशं ॥ १ ॥ अर्थ.—श्वासोछ्वासनु गमनागमन जेणें रोकेलु ठे, जेणे पोताना शरीरने स्वाधीन कर्यु ठे, जेणें पांचे इंद्रियोने पोतपोताना विषयथी रोकेली ठे जेणे नेत्रोनो संचार बंध करेलो ठे, जेणे अंतर्विकल्परूप इंद्रजालनो नाश करेलो ठे, जेणें मोहरूप अंधकारनो लय करेलो ठे, अने जेने त्रिजुवनप्रकाशक ज्ञानप्रदीप प्रगट थयेल ठे, एवा ध्यानावलंबी पुरुषने धन्य ठे, जे परमानंदरूपसमुद्रमां प्रवेश करे ठे

अप्रमत्त गुणस्थानस्थ जीव, १ शोक, २ रति, ३ अरति, ४ अस्थिर, ५ अशुद्ध, ६ अयश, ७ अशाता वेदनी, आ सात प्रकृतियोनो बंधव्यवछेद करे ठे, १ आहारक, २ आहारक उपांग, अने जो देवायु न बांधे तो अठावन प्रकृतिनो बंध करे ठे, अने देवायु बांधे तो ठंगणसाठ प्र-

कृतिनो बंध करे छे, तथा स्त्यानर्द्धित्रिक अने आहारकद्विकनो उदय व्यवछेद करे तो छोतेर प्रकृतिनु फल वेदे छे, अने १३० प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे आठमा अपूर्वकरण, नवमा अनिवृत्तिबादर, दशमा सूक्ष्म संपराय, अगीआरमा उपशांतमोह, बारमा क्षीणमोह, आ पांच गुणस्थाननु स्वरूप सामान्य प्रकारें लखिये छियें.

चारित्रमोहनीयनी एकवीश प्रकृति उपशमाववा तेमज क्षय करवा वास्ते, अत्यंत विशुद्ध अध्यवसायथी, वीर्यविशेष उल्लसित थये थके, तेनो रसघात, स्थितिघात, गुणश्रेणि, गुणसंक्रम, अपूर्वस्थितिबंध, जेम धूरसमयथी थवा मांडे ते अपूर्वकरणनामा आठमुं गुणस्थान छे, तेनुं नाम अपूर्वकरण कहेवानो हेतु ए छे के आ गुणस्थानमां अपूर्व आत्म गुणनी प्राप्ति थाय छे

जे जोग दीठा होय, सांजल्या होय, तेमज अनुजव्या होय, तेनी कांक्षारूप संकल्प विकल्पनो ज्यां अन्नाव थवाथी, निश्चय, प्रधान परिणतिरूप, परमात्मैकत्वरूप जावनी जे स्थानमां निवृत्ति थती नथी, ते कारणथी तेनु नाम अनिवृत्ति गुणस्थान कहेवाय छे, तेनुं नाम अनिवृत्ति बादर कहेवानो हेतु ए छे के अहींयां अप्रत्याख्यानादि बार कषाय, तथा नव नोकषायने उपशमाववा वास्ते तेमज क्षय करवा वास्ते बहुज उद्यम थाय छे, तेथी ते नवमुं अनिवृत्ति बादर छे.

तथा सूक्ष्म परमात्मतत्त्व जावना बलथी सत्तावीश प्रकृतिरूप मोह उपशांत थतां तथा क्षय थतां, एक सूक्ष्म खंडजूत लोजनुं अस्तित्व ज्यां छे ते सूक्ष्मसंपराय नामा गुणस्थानक छे. संपराय, कषायनामवाची छे, ते कारणथी आ गुणस्थानकनु नाम सूक्ष्मसंपराय छे.

तथा उपशमकज उपशम मूर्त्तिरूप सहजस्वजावबलथी सकल मोह कर्म उपशांत करवाथी उपशांतमोहनामक अगीआरमु गुणस्थान तथा क्षपकनेज क्षपकश्रेणि मार्गथी दशमा गुणस्थानथीज निःकषाय, शुद्ध, आत्मजावना बलथी, सकल मोहनो क्षय करवाथी क्षीणमोह नाम बारमु गुणस्थानक होय छे.

हवे अपूर्व करणादि अशथीज बने श्रेणी आरोहनुं स्वरूप कहियेछियें.

अपूर्व करण स्थानमां आरोह समयमां अपूर्वकरणना प्रथम अशथीज उपशमक, उपशमश्रेणिए चढेछे, अने क्षपक, क्षपकश्रेणिए चढेछे.

हवे प्रथम उपशम श्रेणिए चढवानी योग्यता कहियेछिये उपशमक मुनि शुक्ल ध्याननो प्रथम पायो, जेनु स्वरूप हवे पछी कथन करवामां आवशे, तेनुं ध्यान करता उपशमश्रेणि अगीकार करे छे केवी स्थिति-वाला ते मुनि छे ? पूर्वगत श्रुतना धारक, निरतिचार चारित्रवान्, प्रथ-मना त्रण सहननयुक्त, एवा मुनि उपशम श्रेणि करे छे

उपशमश्रेणिवाला मुनि जो अल्प आयुष्यवाला होय तो काल करीने पांच अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे, परंतु जेउने प्रथम संहनन होय तेज अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे बीजा संहननवाला अनुत्तर विमानमा उत्पन्न थता नथी, सेवार्त्त सहननवाला चोथा महेन्द्रदेव लोकसुधी जइ शके छे, अर्थात् त्यां सुधी उत्पन्न थाय छे बाकीना की-लिकादि चार संहननवाला बबे देवलोक उत्तरोत्तर वृद्धि करतां, त्यां सुधी गमन करी शके छे प्रथम संहननवाला मोक्ष सुधी गमन करी शके छे; अने जेनुं आयुष्य सात लव अधिक होत तो ते अवश्य मोक्षे जात तेज सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थाय छे, यदाह ॥ सत्तलवा जइ आउ, पहुप्पमाण तउंहु सिज्झता ॥ तित्तियमित्तं नहुय, तत्तो लवस-त्तमा जाया ॥१॥ सव्वठ सिद्धनामे, उक्कोसठिसु विजय माईसु ॥ एगावसे-सगब्भा, हवंति लवसत्तमा देवा ॥ २ ॥

प्रश्न —उपशम श्रेणिवाला मोक्षयोग्य केवीरीते थइ शके छे ?

संज्वलन लोभ वर्जिने बाकीनी मोहनीय कर्मनी वीश प्रकृति, अपूर्व करण तथा अनिवृत्तिबादर, आ बे गुणस्थानमां उपशमावे छे, त्यार पछी अनुक्रमें सूक्ष्म संपराय गुणस्थानमां संज्वलन लोभने सूक्ष्म करे छे, त्यार पछी अनुक्रमे उपशांतमोह गुणस्थानमां ते सूक्ष्म लोभने सर्वथा उपशमावे छे आ उपशांतमोह गुणस्थानमां जीव, शातावेदनीयरूप एक प्रकृतिनोज बंध करे छे उंगणसाठ प्रकृति वेदे छे, तथा १४० प्रकृतिनी उत्कृष्टी सत्ता छे

उपशांतमोह गुणस्थानकमां उपशम सम्यक्त्व छे, उपशम चारित्र छे, अने भाव पण उपशमज छे, परंतु क्षायिक भाव, तेमज क्षायोपशमिक भाव थतो नथी

हवे उपशांतमोह गुणस्थानकथी केवीरीतें नीचे पडे छे, तेनुं स्वरूप कहियें छीयें उपशांत मुनि तीव्र मोहोदयथी अर्थात् चारित्र मोहनीयनो तीव्र उदय थवाथी उपशांतमोहगुणस्थानकथी पडी जाय छे, फरी मोहजनित प्रमादथी पतित थायछे. जेम पाणीमां मल नीचे बेसी जाय छे, त्यारे उपरनुं पाणी निर्मल थाय छे, अने फरी निमित्त पामीने मलीन थाय छे, तेम आ गुणस्थानकमां थाय छे ॥ यदाह ॥ सुयकेवलि आहारग, रुजुमइ उवसतगाविहु पमाय ॥ हिंरुति भव मणंतं, तं अणंतर मेव चउ गइया ॥ १ ॥ अर्थ –१ श्रुत केवली, २ आहारक शरीरी, ३ ऋजुमति मनःपर्यवज्ञानी, ४ उपशांतमोहवाला, आ सर्वे प्रमादने वश थइ अनंतभव करे छे, चार गतिमां वास करे छे

हवे उपशमक जीवो गुणस्थानकोमा केवीरीतें चडे छे, तथा पडेछे तेनुं स्वरूप कहियें छीये अपूर्वकरणगुणस्थानथी, अनिवृत्तिबादरगुणस्थानमां जाय छे, अनिवृत्तिबादरथी, सूक्ष्मसंपरायमां जाय छे, अने सूक्ष्मसंपरायथी, उपशांतमोहगुणस्थानमां जाय छे, तथा अपूर्वकरणादि चारे गुणस्थानकथी पडतां थकां उपशमश्रेणिवाला, मिथ्यात्व गुणस्थानकमां आवी जाय छे, अने जो चरमशरीरी होय तो, सातमा गुणस्थानकसुधी आवीने, फरी सातमा गुणस्थानकथी क्षपक श्रेणि मांडेछे, परंतु एकवार जेणे उपशम श्रेणि करी होय, तेज क्षपक श्रेणि करी शके छे, अने जेणे एक भवमां बे वार उपशम श्रेणि करी होय, ते क्षपक

अपूर्व करण स्थानमां आरोह समयमां अपूर्वकरणना प्रथम अशथीज उपशमक, उपशमश्रेणिए चढेछे, अने क्षपक, क्षपकश्रेणिए चढेछे.

हवे प्रथम उपशम श्रेणिए चढवानी योग्यता कहियेछिये उपशमक मुनि शुक्ल ध्याननो प्रथम पायो, जेनु स्वरूप हवे पछी कथन करवामां आवशे, तेनु ध्यान करता उपशमश्रेणि अगीकार करे छे केवी स्थितिवाला ते मुनि छे ? पूर्वगत श्रुतना धारक, निरतिचार चारित्रवान्, प्रथमना त्रण सहननयुक्त, एवा मुनि उपशम श्रेणि करे छे

उपशमश्रेणिवाला मुनि जो अल्प आयुष्यवाला होय तो काल करीने पांच अनुत्तर विमानमां उत्पन्न थाय छे, परतु जेउने प्रथम संहनन होय तेज अनुत्तर विमानमा उत्पन्न थाय छे बीजा संहननवाला अनुत्तर विमानमा उत्पन्न थता नथी, सेवार्त्त संहननवाला चोथा महेंद्रदेव लोकसुधी जइ शके छे, अर्थात् त्यां सुधी उत्पन्न थाय छे बाकीना कीलिकादि चार संहननवाला बबे देवलोक उत्तरोत्तर वृद्धि करतां, त्यां सुधी गमन करी शके छे प्रथम संहननवाला मोक्ष सुधी गमन करी शके छे, अने जेनु आयुष्य सात लव अधिक होत तो ते अवश्य मोक्षे जात तेज सर्वार्थसिद्ध विमानमां उत्पन्न थाय छे, यदाह ॥ सत्तलवा जइ आउ, पहुप्पमाण तउहु सिज्झता ॥ तित्तियमित्तं नहुय, तत्तो लवसत्तमा जाया ॥१॥ सव्वठ सिद्धनामे, उक्कोसठिसु विजय माईसु ॥ एगावसेसगब्भा, हवंति लवसत्तमा देवा ॥ २ ॥

प्रश्न –उपशम श्रेणिवाला मोक्षयोग्य केवीरीते थइ शके छे ?

उत्तर –सात लव, एक मुहूर्त्तनो अगीआरमो भाग छे हवे लव सात बाकी रह्युं छे आयुष्य जेने, एवा उपशम श्रेणि खडित करनारा, पराङ्मुख थयेला, सातमा गुणस्थानकमा आवीने फरी क्षपक श्रेणि मांडीने सातलवनी वचमाज क्षीणमोह गुणस्थानक प्राप्त करी अंत कृत केवली थइ मोक्ष गमन करे छे ते कारणथी दूपण नथी तथा जे पुष्टायुवाला उपशम श्रेणि करे छे ते अखडित श्रेणिथी चारित्र मोहनीयनो उपशम करीने अगीआरमा गुणस्थानके पहोंची उपशम श्रेणि समाप्त करी नीचे पडे छे

हवे उपशमकज अपूर्वादि गुणस्थानकोमा जे करे छे ते कहियेछीयें,

संज्वलन लोभ वर्जिने बाकीनी मोहनीय कर्मनी वीश प्रकृति, अपूर्व करण तथा अनिवृत्तिबादर, आ बे गुणस्थानमां उपशमावे छे, त्यार पछी अनुक्रमें सूक्ष्म संपराय गुणस्थानमां संज्वलन लोभने सूक्ष्म करे छे, त्यार पछी अनुक्रमे उपशांतमोह गुणस्थानमां ते सूक्ष्म लोभने सर्वथा उपशमावे छे. आ उपशांतमोह गुणस्थानमां जीव, शातावेदनीयरूप एक प्रकृतिनोज बंध करे छे. उंगणसाठ प्रकृति वेदे छे, तथा १४७ प्रकृतिनी उत्कृष्टी सत्ता छे

उपशांतमोह गुणस्थानकमां उपशम सम्यक्त्व छे, उपशम चारित्र छे, अने भाव पण उपशमज छे, परंतु क्षायिक भाव, तेमज क्षायोपशमिक भाव यतो नथी.

हवे उपशांतमोह गुणस्थानकथी केवीरीतें नीचे पडे छे, तेनु स्वरूप कहियें छीये. उपशांत मुनि तीव्र मोहोदयथी अर्थात् चारित्र मोहनीयनो तीव्र उदय थवाथी उपशांतमोहगुणस्थानकथी पडी जाय छे, फरी मोहजनित प्रमादथी पतित थायछे जेम पाणीमां मल नीचे बेसी जाय छे, त्यारे उपरनुं पाणी निर्मल थाय छे, अने फरी निमित्त पामीने मलीन थाय छे, तेम आ गुणस्थानकमां थाय छे. ॥ यदाह ॥ सुयकेवलि आहारग, रुजुमइ उपसतगाविहु पमाय ॥ हिंरुति भव मणंतं, तं अणंतर मेव चउ गइया ॥ १ ॥ अर्थ.–१ श्रुत केवली, २ आहारक शरीरी, ३ रुजुमति मन.पर्यवज्ञानी, ४ उपशातमोहवाला, आ सर्वे प्रमादने वश थइ अनंतभव करे छे, चार गतिमां वास करे छे

हवे उपशमक जीवो गुणस्थानकोमां केवीरीतें चडे छे, तथा पडेछे तेनुं स्वरूप कहियें छीये. अपूर्वकरणगुणस्थानथी, अनिवृत्तिबादरगुणस्थानमां जाय छे, अनिवृत्तिबादरथी, सूक्ष्मसंपरायमां जाय छे, अने सूक्ष्मसंपरायथी, उपशांतमोहगुणस्थानमां जाय छे, तथा अपूर्वकरणादि चारे गुणस्थानकथी पडता थकां उपशमश्रेणिवाला, मिथ्यात्व गुणस्थानकमां आवी जाय छे, अने जो चरमशरीरी होय तो, सातमा गुणस्थानकसुधी आवीने, फरी सातमा गुणस्थानकथी क्षपक श्रेणि माडे छे, परतु एकवार जेणे उपशम श्रेणि करी होय, तेज क्षपक श्रेणि करी शके छे, अने जेणे एक भवमां बे वार उपशम श्रेणि करी होय, ते क्षपक

श्रेणि ते जवमां करी शकता नथी यदाह ॥ जीवोहु एक जम्मंमि, इक्कसिं उवसामगो ॥ खयति कुज्जानो कुज्जा, दोवारे उवसामगो ॥ १ ॥

हवे उपशम श्रेणिवालाना जवोनी सख्या कहिये ठिये. आ संसारमां एकजीव आश्रयी अनेक जवमां थइ चार वार उपशम श्रेणि थाय ठे, अने एकजवमां बे वार थाय ठे यदाह ॥ उवसम सेणि चउक्क, जायइ जीवस्स आजवं नूण ॥ तो पुण दो एगजवे, खवगे स्सेणी पुणोएगा ॥ १ ॥ उपशम श्रेणिनी स्थापना आ आगलना मन्त्रथी जाणी लेवी आ मंत्रनी संवादक आ गाथा ठे गाथा ॥ अणदसण पुसिछी, वेयठक्कं च पुरिसवेय च ॥ दोदो एगतरिए, सरिसे सरिस उवसमेइ ॥ १ ॥ अर्थ.— प्रथम अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया, अने लोजनो उपशम करे ठे, पठी मिथ्यात्वमोह, मिश्रमोह, अने सम्यक्त्व मोहने उपशमावे ठे, पठी नपुसकवेद, पठी स्त्रीवेद, पठी हास्य, रति, अरति, जय, शोक, जुगुप्सा, ठ नोकपायने उपशमावे ठे, पठी पुरुषवेद, पठी अप्रत्यारव्यानी क्रोध, तथा प्रत्याख्यानी क्रोध, पठी सज्वलन क्रोध, पठी अप्रत्यारव्यानी मान, तथा प्रत्याख्यानी मान, पठी सज्वलन मान, पठी अप्रत्यारव्यानी माया तथा प्रत्यारव्यानी माया, पठी संज्वलन माया, पठी अप्रत्यरव्यानी लोज, तथा प्रत्याख्यानी लोज, पठी सज्वलन लोज ए प्रमाणे अनुक्रमे उपशात करे ठे.

हवे क्षपक श्रेणिनु स्वरूप कहियेठिये आठमा गुणस्थानकनी पेहेलां योगी (क्षपक मुनि) क्षपक श्रेणिए चडीने कर्मक्षय करवामां प्रवृत्त थतां जे जे कर्म प्रकृतिनो क्षय करे ठे, ते लखीए ठीये चरमशरीरी, अबद्धायु, अल्पकर्मीने क्षपकमुनिनो चोथा गुणस्थानमां नरकायुनो क्षय थइ जवाथी, तथा पांचमा गुणस्थानमां तिर्यगायुनो क्षय थइ जवाथी, सातमा गुणस्थानमां देवायुनो क्षय थइ जाय ठे वली अहींयां सातमा गुणस्थानमां दर्शनमोहसप्तकनो पण क्षय थइ जाय ठे त्यार पठी क्षपकमुनिने एकसो आडत्रीश कर्मप्रकृतिनीज सत्ता रहे ठे त्यारे, आठमा गुणस्थानकनी प्राप्ति थाय ठे केवी रीते थाय ठे ? उत्कृष्ट धर्मध्यान, रूपातीत लक्षणरूप, तेनु वारवार सेवन करता अभ्यासरूप थइ जवाथी तत्त्वप्राप्ति थाय ठे यदाह ॥ अभ्यासेन जिताहारो, ऽभ्यासेनैव जितासन ॥ अभ्यासेन जितश्वासो, ऽभ्यासेनैवानितत्रुटि. ॥ १ ॥

अभ्यासेन स्थिरं चित्त, मभ्यासेन जितेंद्रिय ॥ अभ्यासेन परानंदा- ऽभ्यासेनैवात्मदर्शनं ॥ २ ॥ अभ्यासवर्जितैर्ध्यानै., शास्त्रार्थै फलमस्ति न ॥ भवेन्नहि फलैस्तृप्तिः, पानीयप्रतिबिंबितैः ॥ ते कारणथी अभ्यास- थीज विशुद्धतत्वानुयायिनी बुद्धि थाय छे.

हवे आठमा गुणस्थानमां शुक्लध्यान जेनुं स्वरूप हवे लखवामां आ- वशे तेनो आरंभ थाय छे ते कहिये छियें शुक्लध्यानना प्रथम पायो पृ- थक्त्व वितर्क सप्रविचार नामनो छे तेनु ध्यान करनार मुनि वज्रऋप- भनाराच नामा प्रथम संहननयुक्त होय छे.

हवे ध्यान करनारनुं स्वरूप कहियेंछिये योगीन्द्र, क्षपकमुनींद्र, व्य- वहार अपेक्ष्य, ध्यान करवाने योग्य थाय छे, शुं करीने ? निविड, हठ, पर्यंकासन करीने, केवी रीतें ? निश्चल आसन करीने, कारण के आ- सन जयज ध्यानना प्रथम प्राण छे. यदाह ॥ आहारासण निद्दा, जयं च काऊण जिणवर मएण ॥ जाइज्ज निय अप्पा, उवइठं जिणवरिंदेण ॥ १ ॥ पर्यंकासन जघाना अधोभागमां पग उपर करवाथी थाय छे वली केटलाएक सिद्धासन करेछे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे. ॥ योनि वाम- पदा परेण निविड, संपीड्य शिश्न हनु । न्यस्योरस्यचलेंद्रियः स्थिरमना लोलां च ताल्वंतरे ॥ वंशस्थैर्यतया सुनिश्चलतया, पश्यन् भ्रुवोरंतरं । योगी योगविधिप्रसाधनकृते, सिद्धासनं साधयेत् ॥ १ ॥ वली आस- ननो काइ नियम नथी एम पण बतावेलुं छे, जे आसनथी चित्तनी स्थि- रता थाय, एवु गमे तेवा प्रकारनुं आसन होय, ते वास्तविक छे वली ते योगीन्द्र केवा होय छे ? नासिकाना अग्रभागमां जेणे नेत्रनी दृष्टि स्थापन करेली छे, एवा प्रसन्ननेत्रवाला छे, कारण के नासाग्रन्यस्त लो- चनवालाज ध्यानना साधक होय छे ॥ यदाह ॥ ध्यानदंडकस्तुतौ ॥ नासावशाग्रभाग, स्थितनयनयुगो, मुक्तताराप्रचार । शेषाक्षक्षीणवृत्ति, स्त्रिभुवनविवरो, द्भ्रातयोगैकचक्षु ॥ पर्यंकातंकशून्य, परिगलितघनो, च्छ्वासनिःश्वासवात ।सद्ध्यानारब्धमूर्त्ति, श्चिरमवतु जिनो,जन्मसंभूतिभीतेः ॥ १ ॥ वली ते योगीन्द्र केवा होय छे ? किंचित् उन्मीलित अर्द्धविक- सित नेत्र छे जेनां, कारण के योगियोनां समाधिसमयमां नेत्र अर्द्धवि- कसित होय छे ॥ यदाह ॥ गम्भीरस्तंभमूर्ति, र्व्यपगतकरण, व्यापृ-

श्रेणि ते भवमां करी शकता नथी. ॥
उवसामगो ॥ खवति कुज्ञानो कु
हवे उपशम श्रेणिवालाना
एकजीव आश्रयी अनेक
अने एकजनमा बे वार था
जीवस्स आत्तव नूण ॥
॥ १ ॥ उपशम श्रेणिनी
मंतनी सवादक आ ग
पुरिमवेय च ॥ दोदो
प्रथम अनतानुबंधी
मिथ्यात्वमोह,
नकवेद, पछी
नोकषायने
प्रत्याख्यानी
प्रत्याख्यानी
प्रत्याख्यान
प्रत्याख्यान
, तंतुवत्सूक्ष्मरूपं ।
॥ नीत्वा शून्
ओको, कलयति
पूरक प्राणायामतु
अतिप्रयत्नपूर्वक सर्व
बार आंगल सुधी प
थकी बार आंगलप्रमा
तारा लग वहेतां थकां
थकां चार आंगल
वहेतो ब आंगल
वहेतो थकां आठ
जल लग वहेतो

रि. ॥
। अने
केवा छे ते
कर्मो छे.
. यदाह ॥ शुभाशुभ
, बंधना तेन कर्म-
॥ भवार्सरोऽसुसंज्ञा,
ते योगी केवा छे ? संसारनो उछेद
छे, कारण के भवने उछेद करवानी
योगथी सिद्धि थाय छे. यदाह ॥ तस्मा-
॥ मुनेर्जनपदत्यागा, त्पदनियोग
तथा योगीऽमुनि पवनने उर्ध्व प्रचारति दन-
करे छे. शु करीने प्राप्त करे छे ? अपानद्वार मार्गथी
थकी निकलता पवनने संकोचीने, मूलबंध युक्ति
मूलबंध आ छे ॥ पार्ष्णिभागेन सपीड्य, योनिमाकुंच-
, मूलबंधोनिगद्यते ॥ १ ॥ आ आकुंचन क-
मूल छे. ॥ यदुक्त ॥ ॥ संकोच्यापानरंध्रं
गलके ता-
समंतात्,
यो-
शु

रीते बार आंगल पर्यंत वारुण मंडल प्रचार अमृतमय पवन आकर्षणथी तेनुं नाम पूरकध्यानकर्म कहेवाय छे.

हवे रेचक प्राणायाम कहिये छियें. पूरक ध्याननी अनंतर साधक योगी, योगसामर्थ्यथी तेमज प्राणायाम अभ्यासबलथी रेचकनामा पवन, नाभिकमल उदरथी हलवे हलवे बहार काढे छे, तेनुं नाम रेचक ध्यान छे यदाह ॥ वज्रासनः स्थिरवपुः स्थिरधीः सचित्त, मारोप्य रेचक समीरणजन्मचक्रे ॥ स्वांतेन रेचयति नाडिगतं समीरं, तत्कर्म रेचक मिति प्रतिपत्तिमेति ॥ १ ॥

हवे कुंभक ध्यान कहियें छियें. योगी कुंभकनामा पवन, नाभिपंकज कुंभक ध्यान अर्थात् कुंभककर्मप्रयोगथी कुंभवत् अर्थात् घडारूपें अतिशयेकरी स्थिर करे छे. ॥ यदाह ॥ चेतसि श्रयति कुंभकचक्रं, नाडिकासु निबिडीकृतवातः ॥ कुंभवत्तरति यज्जलमध्ये, तद्वदंति किल कुंभककर्म ॥ १ ॥ इति लेशमात्र प्राणायामस्वरूपं

हवे पवन जीतवाथी मन वश थाय छे, तेनु स्वरूप कहियेछियें. ज्यां मन छे, त्यां पवन छे, अने ज्यां पवन छे, त्यां मन छे यदाह ॥ दुग्धांबुवत् संमिलितौ सदैव, तुल्यक्रियौ मानसमारुतौ हि ॥ यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्ति, र्यावन्मरुत्तत्र मन.प्रवृत्तिः ॥ १ ॥ तत्रैकनाशादपरस्य नाश, एकप्रवृत्तेरपरप्रवृत्ति. ॥ विध्वस्तयोरिंद्रियवर्गशुद्धि, स्तद्ध्वंसनान्मोक्षपदस्य सिद्धिः ॥ २ ॥ आ प्रमाणे पूरक, रेचक, कुंभक पवनोनां अनुक्रमें आकुंचन, निर्गमन साधीने, वायुनो संग्रह, तेमज चित्तनुं एकाग्रपणुं चिंतन करीने समाधिविषे निश्चलपणुं धारण करे छे, कारण के पवन जीतवाथीज मन निश्चल थाय छे. यदाह ॥ प्रचलति यदि, क्षोणी चक्रं, चलंत्यचला अपि । प्रलयपवन, प्रेंखालोला, श्चलंति पयोधय ॥ पवनजयिनः, स्वावष्टंभ, प्रकाशितशक्तय. । स्थिरपरिणते, रात्मध्याना, च्चलंति न योगिन. ॥ १ ॥

हवे भावनीज प्रधानतानुं स्वरूप कहीयें छियें क्षपक श्रेणि आरोह करतां प्राणायामनो क्रम अर्थात् प्रौढ पवननो अभ्यासक्रम जे कहेलो छे, ते प्रागल्भ्यता अर्थात् रूढिपूर्वक जे प्रसिद्ध छे, तेम बतावेलो छे परंतु प्राणायाम करे तोज क्षपकश्रेणिए चडी शके एवो कांइ नियम नथी,

तिर्मंदमंदं । प्राणायामोललाट, स्थलनिहितमना, दत्तनासाग्रदृष्टिः ॥ नाऽत्युन्मीलन्निमील, न्नयनमतितरा, बद्धपर्यंकबधो । ध्याने प्रध्याय शुक्लं, सकलविदच्चव, य सपायाज्जिनोव. ॥ १ ॥ वली केवा छे ते योगींद्र ? मन, चित्त, अंत.करणना विकल्परूप व्यापारने वध कर्यो छे, जेणे कारण के विकल्पज दृढकर्म बधननो हेतु छे यदाह ॥ शुन्नावाह्यशुन्नावापि, विकल्पा यस्य चेतसि ॥ सस्वं वध्नात्यय. स्वर्ण, बधना तेन कर्मणा ॥१॥ वरं निद्रा, वरमूर्छा, वरं विकलताऽपि वा ॥ नत्वार्त्तरौद्रदुर्लेश्या, विकल्पाकुलितं मन ॥ २ ॥ वली ते योगी केवा छे ? संसारनो उच्छेद करवा वास्ते उद्यम छे जेनो एवा छे, कारण के नवने उच्छेद करवानी अनिलापावाला ध्यानवाननेज योगनी सिद्धि थाय छे यदाह ॥ उत्साहान्निश्चयाद्धैर्या, त्संतोषात्तत्त्वदर्शनात् ॥ मुनेर्जनपदत्यागा, त्षड्न्निर्योग' प्रसिद्ध्येदिति ॥ १ ॥ तथा योगीद्रमुनि पवनने उर्ध्व प्रचारात्ति दशमद्वार गोचर प्राप्त करे छे शु करीने प्राप्त करे छे ? अपानद्वार मार्गथी गुदाने रस्ते पोतानी इच्छाथी निकलता पवनने सकोचीने, मूलवध युक्तिपूर्वक करे छे ते मूलवध आ छे ॥ पार्ष्णिन्नागेन सपीड्य, योनिमाकुचयेद्गुद ॥ अपानमूर्ध्वमाकृष्य, मूलवधोनिगद्यते ॥ १ ॥ आ आकुचन कर्मज प्राणायामनु मूल छे. ॥ यदुक्त ॥ ध्यानदंडस्तुतौ ॥ सकोच्यापानरंध्रं हुतवह सदृश, तंतुवत्सूक्ष्मरूप । धृत्वा हृत्पद्मकोशे, तदनु च गलके तालुनि प्राणशक्ति ॥ नीत्वा शून्या, पुनरपि खगति, दीप्यमानं समंतात्, लोकालोकावलोका, कलयति सकला यस्य तुष्टो जिनेश ॥ १ ॥

हवे पूरक प्राणायामनु स्वरूप कहियेंछिये योगी पूरक ध्यानना योगथी अतिप्रयत्नपूर्वक सर्व देहगतनाडीसमूहने पवनथी पूरे छे शु करीने ? बार आगल सुधी पवननु आकर्षण करीने, अर्थात् बहारथी सर्व बाजुंएथी बार आगलप्रमाणे पवनने खेचीने पूरेछे तात्पर्य ए छे के आकाश तत्व वहेतां थका नासिकानी अदरज पवन होयछे, अग्नितत्व वहेतां थका चार आंगल प्रमाण बहार पवन उर्ध्वगति स्फुरे छे, वायु तत्व वहेतां छ आंगल प्रमाण बहार पवन तिर्यग् स्फुरे छे, पृथ्वीतत्व वहेतां थका आठ आंगल प्रमाण बहार पवन मध्यम नागमा रहे छे, अने जल तत्व वहेतां थकां बार आंगल प्रमाण पवन नीचे वहे छे. एवी

रीते वार आंगल पर्यंत वारुण मंडल प्रचार अमृतमय पवन आकर्षणथी तेनुं नाम पूरकध्यानकर्म कहेवाय छे.

हवे रेचक प्राणायाम कहियें छियें पूरक ध्याननी अनंतर साधक योगी, योगसामर्थ्यथी तेमज प्राणायाम अभ्यासबलथी रेचकनामा पवन, नाभिकमल उदरथी हलवे हलवे वहार काढे छे, तेनुं नाम रेचक ध्यान छे. यदाह ॥ वज्रासन स्थिरवपुः स्थिरधी. सचित्त, मारोप्य रेचक समीरणजन्मचक्रे ॥ स्वांतेन रेचयति नाडिगतं समीरं, तत्कर्म रेचक मिति प्रतिपत्तिमेति ॥ १ ॥

हवे कुंभक ध्यान कहियें छियें. योगी कुंभकनामा पवन, नाभिपंकज कुंभक ध्यान अर्थात् कुंभककर्मप्रयोगथी कुंभवत् अर्थात् घडारूपे अतिशयेंकरी स्थिर करे छे ॥ यदाह ॥ चेतसि श्रयति कुंभकचक्र, नाडिकासु निविडीकृतवात ॥ कुंभवत्तरति यज्जलमध्ये, तद्वदंति किल कुंभककर्म ॥ १ ॥ इति लेशमात्र प्राणायामस्वरूप.

हवे पवन जीतवाथी मन वश थाय छे, तेनुं स्वरूप कहियेंछियें. ज्यां मन छे, त्यां पवन छे, अने ज्यां पवन छे, त्यां मन छे यदाह ॥ दुग्धांबुवत् संमिलितौ सदैव, तुल्यक्रियौ मानसमारुतौ हि ॥ यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्ति, र्यावन्मरुत्तत्र मन.प्रवृत्ति· ॥ १ ॥ तत्रैकनाशादपरस्य नाश, एकप्रवृत्तेरपरप्रवृत्ति. ॥ विध्वस्तयोरेंद्रियवर्ग्गशुद्धि, स्तद्ध्वंसनान्मोक्षपदस्य सिद्धि ॥ २ ॥ आ प्रमाणे पूरक, रेचक, कुंभक पवनोनां अनुक्रमें आकुंचन, निर्गमन साधीने, वायुनो संग्रह, तेमज चित्तनुं एकाग्रपणुं चिंतन करीने समाधिविषे निश्चलपणुं धारण करे छे, कारण के पवन जीतवाथीज मन निश्चल थाय छे यदाह ॥ प्रचलति यदि, क्षोणी चक्रं, चलंत्यचला अपि । प्रलयपवन, प्रेखालोला, श्चलंति पयोधय ॥ पवन जयिन , स्वावष्टंभ, प्रकाशितशक्तय. । स्थिरपरिणते, रात्मध्याना, श्चलंति न योगिन. ॥ १ ॥

हवे भावनीज प्रधानतानु स्वरूप कहीयें छियें क्षपक श्रेणि आरोह करतां प्राणायामनो क्रम अर्थात् प्रौढ पवननो अभ्यासक्रम जे कहेलो छे, ते प्रागल्भ्यता अर्थात् रूढिपूर्वक जे प्रसिद्ध छे, तेम बतावेलो छे परंतु प्राणायाम करे तोज क्षपकश्रेणिए चडी शके एवो कांइ नियम नथी,

कारण के क्षपकनो जावज क्षपक श्रेणिनु कारण छे, परंतु प्राणायामादि जे आडवर छे ते कारण नथी. यथा चर्पटिनापि ॥ नासाकंदं नाडीवृंदं, वायोश्चार. प्रत्याहार ॥ प्राणायामो वीजग्रामो, ध्यानान्यासो मंत्रन्यास ॥ १ ॥ हृत्पद्मस्य भ्रूमध्यस्य, नासाग्रस्थ श्वासांत स्थ ॥ तेज' शुद्धं ध्यानं बुद्धं., ॐकाराख्य सूर्यप्रजाख्य ॥ २ ॥ ब्रह्माकाश शून्याजास, मिथ्याजल्प चिंताकल्प ॥ कायाक्रांत चित्तभ्रान्तं, त्यक्त्वा सर्वं, मिथ्या गर्वं ॥ ३ ॥ गुर्वादिष्ट चिंतितमिष्ट, देहातीतं जावोपेतं ॥ त्यक्त्वा द्वंद्व, नित्यानंदं, शुद्ध तत्वं जानीहि त्व ॥ ४ ॥ अन्यच्च ॥ ओंकाराऽन्यसनं विचित्रकरणै., प्राणस्य वायोर्जया । तेजश्चिंतनमात्मकायकमले, शून्यांतरालवन ॥ त्यक्त्वा सर्वमिदं कलेवरगतं, चिंतामनोविभ्रमं । तत्त्वं पश्यत जल्पकल्पनकला, ऽतीतं स्वजावस्थितं ॥ १ ॥ आ सर्व रूढिपूर्वक क्षपक श्रेणिना आडवर छे, परंतु तत्वथी तो मरुदेवादिवत् जावज प्रधान छे

हवे शुक्ल ध्यानना प्रथम पायानु नाम कहीयें छियें मन, वचन, कायाना योगने वशकरनार मुनिने शुक्लध्याननो प्रथम पाद थाय छे, ते पाद केवो छे ? वितर्कसहित जे वर्ते ते सवितर्क, विचारसहित जे वर्ते ते सविचार, पृथक्त्वसहित जे वर्ते ते सपृथक्त्व. आ त्रणविशेषणयुक्त होवाथी शुक्लध्यानना प्रथम पायानु नाम सपृथक्त्व, सवितर्क, सप्रविचार छे

हवे आ त्रणे विशेषणोनु स्वरूप कहीये छीयें पूर्वोक्त प्रथम शुक्लध्यान त्रयात्मक क्रमोक्रमें गृहीत विशेष त्रण रूपे छे तेमां श्रुतचिंतारूप वितर्क छे, तथा शब्द अर्थ योगांतरमां जे सक्रमण करवु ते विचार छे, अने द्रव्य, गुण, पर्यायादिथी जे अन्यपणु छे ते पृथक्त्व छे

हवे आ त्रणे विशेषणना प्रगट अर्थ कहियेंछिये, जे ध्यानमां अंतरंगध्वनिरूप वितर्क, विचार रूप होय ते सवितर्क ध्यान छे, कारण के स्वकीय निर्मल परमात्मतत्व अनुजवमय अंतरंग जावगत आगमना अवलवनथी आ सवितर्कध्यान थाय छे जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क विचारणरूप अर्थथी अर्थांतरमां संक्रमण होय, शब्दथी शब्दांतरमा संक्रमण होय, तथा योगथी योगांतरमां सक्रमण होय ते सविचार सक्रमण कहेवाय छे. तथा जे ध्यानमां पूर्वोक्त वितर्क सविचार अर्थ व्यजन योगा-

तर संक्रमणरूप पण शुद्धात्मानी पेठे ड्रव्यथी ड्रव्यांतरमां जाय ठे, अथवा गुणोथी गुणांतरमां जाय ठे, अथवा पर्यायोथी पर्यायांतरमां जाय-ठे, तेमां सहजावी ते गुण ठे, जेम के सुवर्णमां स्निग्धता, पीतता ठे, इत्यादि, अने क्रमजावी ते पर्याय ठे, जेमके सुवर्णमां मुद्रा, कुडलादि ते ड्रव्यगुण पर्यायांतरोमां जे ध्यानमां अन्यत्व पृथक्त्व ठे ते सपृथक्त्व ठे

हवे शुक्ल ध्यानथी जे शुद्धि थाय ठे ते कहियें ठियें. समाधिवान् योगी पूर्वोक्तत्रयात्मक पृथक्त्व वितर्क सप्रविचार शुक्ल ध्यानने ध्यातां थकां परम प्रकृष्ट विशुद्धिने प्राप्त थाय ठे, ते शुद्धि केवी ठे ? मुक्ति रूप लक्ष्मीना मुखने देखाडनारी ठे.

हवे तेनुं कांइक विशेष स्वरूप कहियें ठियें यद्यपि आ शुक्लध्यानने पायो प्रतिपाती (पतनशील) उत्पन्न थाय ठे, तो पण अति विशुद्ध होवाथी अर्थात् अत्यत निर्मल होवाथी उपरना गुणस्थानमां आरोह करवानी चाहना रह्या करे ठे, अर्थात् उपरना गुणस्थानमां दोडेठे

अपूर्वकरण गुणस्थानस्थ जीव निद्राद्धिक, देवद्धिक, पंचेंद्रियजाति, प्रशस्त विहायोगति, त्रसनवक, वैक्रिय, आहारक, तैजस, कार्मण, वैक्रिय उपांग, आहारक उपांग, आद्यसंस्थान, निर्माणनाम, तीर्थंकरनाम, वर्णचतुष्क, अगुरुलघु, उपघात, उज्वास आ बत्रीश कर्मप्रकृतिनो बंधव्यवछेद थवाथी, ठवीश कर्म प्रकृतिनो बध करेठे तथा ठेली त्रण सहनन, अने सम्यक्त्व मोह, आ चारनो उदयव्यवछेद थवाथी बोंतेर कर्म प्रकृति वेदे ठे अने १३८ कर्म प्रकृतिनी सत्ता ठे. इति क्षपक श्रेणि आठमा गुणस्थाननु स्वरूप

हवे क्षपक, अनिवृत्तिनामा नवमा गुणस्थानकपर आरोह करेठे त्यारे जे जे कर्म प्रकृतिनो ज्या ज्यां क्षय थाय ठे, ते कहियेंठिये. क्षपकमुनि नवमा गुणस्थानकना नवजाग करे ठे प्रथम जागमां सोल कर्म प्रकृतिनो क्षय करे ठे, ते आ प्रमाणे ठे, १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ तिर्यग्गति, ४ तिर्यंचानुपूर्वी, ५ साधारणनाम, ६ उद्योतनाम, ७ सूक्ष्म, ८ द्वींद्रियजाति, ९ त्रींद्रियजाति, १० चतुरिंद्रिय जाति, ११ एकेंद्रियजाति, १२ आतपनाम, १५ स्त्यानर्द्धित्रिक, १६ स्थावरनाम. तथा बीजा जागमां अप्रत्याख्यान कषायनी तथा प्रत्याख्यान क-

पायनी चोकडी क्षय करे छे. त्रीजा जागमां नपुंसक वेदनो अने चोथा जागमां स्त्रीवेदनो क्षय करे छे, पांचमा जागमा हास्य, रति, अरति, जय, शोक, जुगुप्सा छ नोकषायनो क्षय करे छे, बाद ध्याननी अति निर्मलताथी छठा जागमां पुरुषवेदनो, सातमा जागमा सज्वलन क्रोधनो, आठमा जागमा संज्वलन माननो, अने नवमा जागमा संज्वलन मायानो क्षय करे छे, तथा आ गुणस्थानमां वर्त्तता मुनि हास्य, अरति, जय, जुगुप्सा, आ चारनो व्यवछेद होवाथी, बावीश प्रकृतिनो बंध करे छे, अने हास्यषट्कनो उदयव्यवछेद थवाथी छासठ प्रकृतिने वेदेछे तथा नवमा अंशमा मायापर्यंत प्रकृतियोनो क्षय करवाथी, पात्रीश प्रकृति व्यवछेद थवाथी एकसो त्रण प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे क्षपकना दशमा गुणस्थानकनु स्वरूप लखीये छियें पूर्वोक्त नवमा गुणस्थानक अनतर क्षपकमुनि सूक्ष्म संपराय नामा दशमागुणस्थानपर आरोह करे छे शु करीने? क्षणमात्रमा सज्वलनना स्थूल लोजनो क्षय करतां थका आरोह करे छे. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानस्थ जीव, पुरुषवेद तथा संज्वलन चतुष्कनो बंधव्यवछेद थवाथी सत्तर प्रकृतिनो बंध करे छे, अने त्रण वेद तथा त्रण कषायनो उदयव्यवछेद थवाथी साठ प्रकृति वेदे छे, मायानी सत्ता व्यवछेद थवाथी एकसो बे प्रकृतिनी सत्ता छे

हवे क्षपकमुनिने अगीआरमुं गुणस्थानक प्राप्त थतु नथी, परतु दशमा गुणस्थानकथी सूक्ष्म लोजना अशोना सूक्ष्म खंड करता करता क्षपक, बारमा क्षीणमोहवीतराग गुणस्थानमां जाय छे अहींया क्षपक श्रेणि समाप्त करे छे तेनो अनुक्रम आ प्रमाणे छे प्रथम अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षय करे छे, पछी मिथ्यात्व मोहनीयनो, पछी मिश्रमोहनीयनो, पछी सम्यक्त्व मोहनीयनो, पछी अप्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी प्रत्याख्यान चार कषायनो, पछी नपुसक वेदनो, पछी हास्यषट्कनो, पछी पुरुषवेदनो, पछी सज्वलन क्रोधनो, पछी सज्वलन माननो, पछी संज्वलन मायानो अने छेवटे सज्वलन लोजनो क्षय करे छे

हवे बारमा गुणस्थानमा शुक्लध्याननो बीजो पायो प्राप्त थाय छे तेनु स्वरूप कहियें छियें क्षपकमुनि क्षीणमोही थवाथी बारमा गुणस्थान

मार्गमां परिणतिमान् थइने प्रथम शुक्लध्याननी रीतिमुजव वीजा शुक्लध्याननो आश्रय करे छे केवी रीते ? वीतराग थइजवाथी "वीतराग" अर्थात् विशेषेण इतो (गतो), रागोयस्मात् सवीतराग., वली ते क्षपक मुनि केवा छे ? महायति, यथाख्यातचारित्री, शुद्धतर भावसंयुक्त एवा क्षपक शुक्लध्यानना वीजा पायानो आश्रय करे छे

हवे तेज शुक्लध्यानना विशेषण नामसहित कहियें छियें. ते क्षीण मोहगुणस्थानवर्त्ती क्षपकमुनि, वीजा शुक्लध्यानने एकयोगथी ध्याय छे, यदाह ॥ एक त्रियोगभाजा, माद्य स्यादपरमेकयोगवतां ॥ तनुयोगिनां तृतीयं, नियोगानां चतुर्थं हि ॥ १ ॥ केवु ध्यान छे ? "अपृथक्त्वं पृथक्त्ववर्जितं, अविचारं विचाररहितं, सवितर्कगुणान्वितं वितर्कभाव गुणसंयुक्त" एवां वीजो शुक्लध्यानने ध्यायछे.

हवे अपृथक्त्वनु स्वरूप कहियें छिये तत्वज्ञाता एकत्व अर्थात् अपृथक्त्व ज्ञानने धारण करे छे, ते एकत्वपणुं शु छे ? जे केवल निजात्मद्रव्य अर्थात् विशुद्ध परमात्मद्रव्य छे तेज अथवा तेज परमात्मा द्रव्यनो केवल एक पर्याय, अथवा केवल एकगुण ए प्रकारें एक द्रव्य, एक गुण, एक पर्याय, निश्चल अर्थात् चलनरहित ज्यां ध्यान करवामां आवे ते एकत्व छे

हवे अविचारनुं स्वरूप कहीये छीये जे सद्ध्यानकोविदोए शास्त्र आम्नायथी शुक्लध्याननुं रहस्य जाण्यु छे, तेउंए अविचार विशेषणसंयुक्त वीजा शुक्लध्याननुं स्वरूप आ प्रमाणे कह्युं छे पूर्वोक्तस्वरूपोमां व्यजन अर्थयोगोमां अर्थात् शब्दार्थ योगरूपोमां परावर्त्तविवर्जित शब्दथी शब्दांतर इत्यादि क्रमथी रहित एवु चितन श्रुत अनुसारेज करवामां आवे ते अविचार छे आ कालमां सद्ध्यानकोविद अर्थात् शुक्लध्यानना जेउं ज्ञाता छे, तेउं पूर्वमुनिप्रणीत शास्त्र आम्नाय विशेषथी छे; परंतु आ कालमां शुक्लध्यानना कोइ अनुभवी नथी. यदाहु. ॥ श्रीहेमचन्द्रसूरिपादा ॥ अनविछित्त्याम्नाय, समागतोऽस्येति कीर्त्यतेऽस्माभि. ॥ दुष्कर मप्याधुनिकें, शुक्लध्यानं यथाशास्त्र ॥ १ ॥

हवे सवितर्कनुं स्वरूप कहियेंछिये. सवितर्कगुणसयुक्त वीजुं शुक्ल-

ध्यान जावश्रुतना आलंबनथी थाय ठे, सूक्ष्म अतर्जल्प जावगत अवलंबनमात्र चितवनथी थाय ठे

हवे शुक्लध्यानजनित समरसीजावनु स्वरूप कहियें ठियें वीजा शुक्लध्यानमा वर्त्तता ध्यानी समरसीजाव धारण करे ठे. समरसीजाव एटले तदेकशरणता कारण के आत्माने अपृथक्त्वरूपे परमात्मामां लीन करीए त्यारेज समरसीजाव धारण थाय ठे समरसीजाव केम करे? आत्माना अनुजवथी करे

हवे क्षीणमोहगुणस्थानकने अते शु करे ठे? ते कहिये ठिये. पूर्वोक्त ध्यानथी तेमज वीजा शुक्लध्यानना योगथी कर्मेंध्धनोनु दहन करीने योगींद्रमुनि अतना प्रथमसमये अर्थात् वारमा गुणस्थानकना वीजा चरमसमयमां निद्रा अने प्रचला आ वे प्रकृतिनो क्षय करे ठे

हवे अतसमये जे करे ठे ते कहियेंठियें क्षीणमोह गुणस्थानकें अतसमयमां १ चक्षुदर्शन, २ अचक्षुदर्शन, ३ अवधिदर्शन, ४ केवलदर्शन, आ चार दर्शनावरणीय, तथा पांचप्रकारनां ज्ञानावरणीय, अने पाचप्रकारना अंतराय, ए चौद प्रकृतिनो क्षय करीने क्षीणमोहाश थइने केवल स्वरूप थाय ठे तथा क्षीणमोहगुणस्थानस्थ जीव, दर्शनचतुष्क, ज्ञानातरायदशक, उच्चगोत्र, यशनाम, ए सोल प्रकृतिनो वधव्यवछेद थवाथी एक शातावेदनीयनो वध करे ठे. तथा १ संज्वलनलोज, २ रुपजनाराच सहनन, बे प्रकृतिनो उदयव्यवछेद थवाथी सत्तावन प्रकृति वेदे ठे तथा सज्वलन लोजनी सत्ता दूर थवाथी एकसो एक प्रकृतिनी सत्ता ठे

हवे क्षीणमोहांत प्रकृतियोनी सख्या कहिये ठीये चोथा गुणस्थानकथी क्षय थती थती त्रेसठ प्रकृति क्षीणमोहमा सपूर्ण थाय ठे. एक प्रकृति चोथा गुणस्थानकमा, एक पाचमामां, आठ सातमामां, ठत्रीश नवमामां, सत्तर वारमामां, एम सर्व मली त्रेसठ थइ वाकीनी पचाशी प्रकृति जीर्ण वस्त्रनी जेवी तेरमा सयोगी केवली गुणस्थानकमा रहे ठे,

हवे सयोगीकेवलीने जे जाव तथा सम्यक्त्व, अने चारित्र थाय ठे ते कहियेठिये ते केवली जगवंत आत्माने आ गुणस्थानकमा क्षायिक शुरूजाव प्रगट थाय ठे, परम उत्कृष्ट क्षायिक सम्यक्त्व थाय ठे, अने

यथाख्यातनामा क्षायिक चारित्र थाय छे, मतलब के उपशम अने क्षयोपशम आ वे भाव रहेता नथी.

हवे ते केवली आत्माना केवलनी विभूति कहियेंछियें ते केवलज्ञान रूप सूर्यना प्रकाशथी चराचर जगत् केवलज्ञानी आत्माने हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष भासन थाय छे आ स्थले केवलज्ञानने सूर्यनी उपमा मात्र व्यवहारथीज कही छे. निश्चय स्वरूपें तो केवलज्ञान अने सूर्यमां अपार अंतर छे

हवे जे आत्माउ तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे तेनुं विशेष स्वरूप कहियेंछिये अर्हत्भक्तिप्रमुख वीशपुण्यस्थानकोनुं जे आत्माउ विशेष आराधन करे छे, तेउ तीर्थंकरनाम कर्म उपार्जन करे छे ते वीशस्थानक आ छे गाथा ॥ अरिहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर वहुस्सुए तवस्सीसु ॥ वछलयाइएसु, अभिक्खणंणो वउग्गेय ॥ १ ॥ दंसण विणए आवस्सए सीलवए निरइयारे ॥ खणलवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीयं ॥ २ ॥ अपुव नाणग्गहण, सुयभत्ती पवयण पभावणया ॥ एएहि कारणेहिं, तिछयरत्त लहइ जीवो ॥ ३ ॥ आ गाथाउनो अर्थ आगल लखशुं. आ गुणस्थानकमां, तीर्थंकर नामकर्मना उदयथी ते केवली त्रिभुवनपति जिनेंद्र थाय छे जिन अर्थात् सामान्य केवली, तेउना जे इन्द्र ते जिनेंद्र कहेवाय छे.

हवे तीर्थंकरना महिमानुं वर्णन करिये छियें ते भगवान् तीर्थंकर, प्रथम परिच्छेदमां वर्णन कर्या मुजव चोत्रीश अतिशययुक्त होय छे सर्व देवताउ तथा मनुष्यो जेमने नमस्कार करेछे, एवा सर्वोत्तम, सकलशासनमां प्रधान एवुं तीर्थप्रवर्त्तन करे छे, अने उत्कृष्टथी देशोनपूर्वकोटि सुधी विद्यमान रहे छे

हवे ते तीर्थंकरनामकर्म केवीरीतें वेदवामां आवे छे तेनु स्वरूप कहियेछिये पृथ्वीमंडलमां विहार करतां भव्यजीवोने प्रतिवोधी, तेउने सर्वविरति तेमज देशविरति करवाथी तीर्थंकरनाम कर्म वेदवामां आवे छे. जो तीर्थंकरनामकर्मनो उदय न होयतो भगवान् कृतकृत्य थवाथी तेमने उपदेश करवानुं शु प्रयोजन छे ? ते कारणथी जे वादी भगवानने नि शरीरी, नैरुपाधिक, मुखरहित, सर्वव्यापी माने छे, ते भगवान् देहादिना अभावथी धर्मना उपदेशक थइ शकता नथी. जो उपाधिरहित,

सर्वव्यापी परमेश्वर पण उपदेशक थइ शकता होय तो तेवा परमेश्वर आ कालमां अमारा जेवाने केम उपदेश करता नथी ? कारण के ते वादीना कथनमुजब पूर्वकालमां अग्नि आदि ऋषियोने तेमणे प्रेर्या हता, तथा ब्रह्मादिद्वारा चार वेदादिनो उपदेश तेमणे कर्यो हतो, तथा मूसा इसाद्वारा जगत्ना जीवोने उपदेश कर्यो, तो हाल केम उपदेश नथी करता ? परोपकारीने उपदेश करवामां शु विलंब छे ? जो कहो के आ कालमां सर्वजीव उपदेश देवा योग्य नथी, तेथी उपदेश आपता नथी तो पूर्वकालमा पण सर्वजीवोए परमेश्वरनो उपदेश मानेलो नथी जुओ प्रथम तो कालासुर प्रमुख अनेक जीवोए उपदेश मानेलो नथी बीजो अजाजीले पण मानेलो नथी, तेमज यहूदाए तेमज केटलाएक इसराइलियोए पण मानेलो नथी, ते कारणथी पूर्वकालमां पण परमेश्वरने उपदेश देवो योग्य न होतो जो कहो के, परमेश्वरे ते वखते उपदेश केम आप्यो, अने हाल केम आपता नथी, ते बाबतमां तेनी वात ते जाणे, तो पछी तमे एम केम कहोछो के परमेश्वरने मुख नथी ? ते कारणथी तेज सत्य छे के तीर्थंकरनाम कर्मने वेदवा वास्ते जगवान् उपदेश आपे छे, अने जे वखते उपदेश आपेछे ते वखते देहधारी होय छे आटली चर्चा बस

केवलज्ञानवान् पृथ्वीमंडलमां उत्कृष्ट आठ वर्ष न्यून एक कोटि पूर्व प्रमाण विचरे छे देवताए रचेला कचन कमलोपर पग राखी चाले छे आठ प्रातिहार्यसयुक्त अनेक सुरासुरकोटिससेवित विहार करे छे आ स्थिति सामान्यप्रकारथी केवलज्ञानवान्नी कही छे जिनेन्द्र तो मध्यस्थितिवाला होय छे

हवे केवली समुद्घातकरण कहियेंछिये केवलज्ञानवान् ज्यारे वेदनी कर्मनी स्थितिथी आयुकर्मनी स्थिति अल्प जाणे छे, त्यारे बने स्थितिओने तुल्य करवावास्ते, केवली समुद्घात करे छे ते समुद्घातनु स्वरूप आ प्रमाणे छे प्रथम समुद्घातशब्दनो अर्थ कहियें छियें यथास्वजावस्थित आत्मप्रदेशोने वेदनादि सात कारणोथी समतात् उद्घातन अर्थात् स्वजावथी अन्यजावपणे परिणमन करवु तेनु नाम समुद्घात छे समुद्घातना सात प्रकार छे १ वेदना स०, २ कषाय स०, ३ मरण स०,

४ वैक्रिय स०, ५ तेजः स०, ६ आहारक स०, ७ केवलि स०. आ सात समुद्घातमांहेनी केवलिसमद्घात अहीआ ग्रहण करवी केवली जगवान् केवलिसमुद्घात करतां प्रथम समयमां वेदनी आयुकर्मने सम करवावास्ते आत्मप्रदेशोथी ऊर्ध्वलोकांतसुधी दंडाकार आत्मप्रदेश लंबावे छे, बीजा समयमां पूर्व, पश्चिमदिशामां आत्मप्रदेशोथी कपाट आकार करे छे, त्रीजा समयमां उत्तर दक्षिण आत्मप्रदेशोनो मंथनाकार करे छे, चोथासमयमां अतरो पूर्ण करवाथी सर्वलोकव्यापी थइ जाय छे, एवीरीतें केवली चोथे समये विश्वव्यापी थाय छे.

हवे अहींआथी निवृत्ति करे छे ते कहिये छिये ए प्रमाणे केवली आत्मप्रदेशोनो विस्तार करवाना प्रयोगथी कर्मलेशने सम करे छे, समकर्या पछी समुद्घातथी पाछा निवर्त्तन करे छे पांचमा समयमां जगत् पूर्णताना अंतरोथी निवर्त्ते छे, छठे समये मंथानपणुं दूर करे छे, सातमे समये कपाटाकार दूर करे छे, अने आठमे समये दंडत्व उपसंहार करतां थकां स्वजावस्थ थाय छे ॥ यदाहुर्वाचकमुख्याः। दंड प्रथमे समये, कपाटमथ चोत्तरे तथा समये ॥ मंथानमथ तृतीये, लोकव्यापी चतुर्थे तु ॥ १ ॥ संहरति पंचमे त्व, तराणि मंथानमथ पुन. षष्ठे ॥ सप्तमके तु कपाटं, संहरति तथाऽष्टमे दड ॥ २ ॥

हवे केवली समुद्घात करतां थकां जेवा योगवान् तथा अनाहारक थाय छे ते कहियेछियें प्रथम अने अंतसमयमां औदारिक काययोगवाला थाय छे, बीजा अने छठा समयमां मिश्र औदारिक काययोगी थाय छे अहीया मिश्रपणु कार्मणसाथे औदारिकनु छे त्रीजा, चोथा अने पाचमा समयोमां केवल कार्मण काययोगवाला थाय छे जे समयोमां केवली मात्र कार्मणकाययोगवाला होय छे ते समयोमां अनाहारक होय छे

हवे जे केवली समुद्घात करे छे, अने जेउ करता नथी, ते कहियें छिये जेउने छ महिनाथी अधिक आयु विद्यमान छतां केवल ज्ञान थाय तेउ तो निश्चयें समुद्घात करे छे, अने जेउनु आयुष्य छ महिनानी अंदर होय ते वखते जेउने केवलज्ञान थाय तेउनी बाबतमां जजना छे, अर्थात् तेउ समुद्घात करे अथवा नहिपण करे. यदाह ॥ छम्मासाउ

सेसा, उप्पन्न जेसिं केवलं नाण ॥ ते नियमा समुग्घाइय, सेसा समुग्घाय नइयवा ॥ १ ॥

हवे समुद्घातथी निवृत्त थइ केवली जे कांइ करे ठे ते कहियेठियें. केवली समुद्घातथी निवृत्त थइ मन, वचन, काययोग निरोधवा वास्ते शुक्लध्यानना त्रीजा पायाने ध्याय ठे शुक्लध्याननो त्रीजो पायो सूक्ष्मक्रिया निवृत्ति नामनो ठे ते पायाथी कपनरूप क्रियाने सूक्ष्म करे ठे

हवे मन, वचन, कायाना योगने जेवीरीते सूक्ष्म करे ठे ते कहियेठियें ते केवली सूक्ष्मक्रिया निवृत्तिनामा त्रीजुं शुक्लध्यान ध्यातां अचिंत्य आत्मवीर्यनी शक्तिथी वादरकाययोगस्वन्नावमा स्थित थइने, वादर वचनयोग तथा वादर मनोयोगना पुजलोने सूक्ष्म करे ठे, त्यार वाद वादर काययोगने सूक्ष्म करे ठे. पठी सूक्ष्मकाययोगमा क्षण मात्र रहीने तत्काल सूक्ष्मवचन, मनोयोगना पुजलोनो अपचय करे ठे त्यारपठी सूक्ष्मकाययोगमां क्षणमात्र रहीने ते केवली प्रगट निज आत्मानुन्नव सूक्ष्मक्रिया चिद्रूपनो अर्थात् स्वयमेव पोताना स्वरूपनो अनुन्नव करे ठे.

हवे जे सूक्ष्मक्रियावाला शरीरनी स्थिति तेज केवलीजंनु ध्यान ठे ते कहिएठिए जेप्रकारे ठद्मस्थ योगीजंना मननी स्थिरताने ध्यान कहीए ठीए, तेजप्रकारे शरीरनी निश्चलतानु केवलीजंने ध्यान थाय ठे शैलेशीकरण आरन्न करनारा सूक्ष्मकाययोगी ह्रस्वाक्षर पाच उच्चारण करता जे काल लागे तेटलु आयुष्य पोतानु वाकी रहे ठे त्यारे शरीरने शैलवत् निश्चल करवावास्ते अपरिपातरूप चोथु शुक्लध्यान शैलेशीकरणरूप थाय ठे त्यारपठी ते केवली शैलेशीकरणारन्नी सूक्ष्मकाययोगमा रहेतां थका शीघ्र अयोगी गुणस्थानमा जवानी इछा करे ठे.

हवे ते केवली नगवान् सयोगी गुणस्थानना अंत समयमा औदारिकद्विक, अस्थिरद्विक, विहायोगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, संस्थान षट्क, अगुरु लघुचतुष्क, वर्णादिचतुष्क, निर्माण, तैजस, कार्मण, प्रथम संहनन, स्वरद्विक, एक वेदनीय आ त्रीश प्रकृतिनो उदयविछेद करेठे. अहींआं अंगोपांगनो उदयव्यवछेद थवाथी अत्यांग संस्थान अवगाहनाथी त्रीजो नागन्यून अवगाहना करे ठे केवीरीतें ? पोताना आत्मप्रदेशोने घनरूप करवाथी चरम शरीरना अंगोपागमा जे नासिकादि ठिद्र ठे.

तेउने पूर्ण करे छे. तेथी आत्मप्रदेशो घनरूप थइ जाय छे अने अवगाहना त्रीजो जाग न्यून थाय छे हवे सयोगी गुणस्थानस्थ जीव एक विध बध, उपांत्य समय सुधी अने ज्ञानांतराय पच तथा दर्शन चतुष्क उदयव्यवछेद थवाथी वेंतालीश प्रकृति वेदे छे. तथा १ निद्रा, २ प्रचला, १२ ज्ञानांतराय दशक, १६ दर्शनचतुष्क, आ सोलप्रकृतिनी सत्ता व्यवछेद थवाथी पचाशी प्रकृतिनी सत्ता छे.

हवे अयोगी गुणस्थानकनी स्थिति कहिये छियें. चौदमा गुणस्थानकमां रहेतां थकां जिनेंद्रनी लघु पचाक्षर "अ इ उ ऋ लृ" उच्चारणमात्र अर्थात् आ पांच अक्षर बोलतां जेटलो काल लागे तेटली स्थिति छे. अयोगी गुणस्थानकमां अनिवृत्तिनामें शुक्लध्याननो चोथो पाद छे. तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे. जे ध्यानमां सूक्ष्म काययोग क्रिया पण "समुछिन्न" सर्वथा निवृत्त थइ जाय छे, ते समुछिन्नक्रिया नामें शुक्लध्यानतुं चोथु ध्यान छे ते ध्यान केवुं छे ? मुक्ति मेहेलना द्वारसमान छे.

शिष्य पुछे छे के मारा मनमां बे शका छे तेनुं समाधान कृपा करी करो ! प्रथम शंका हे प्रजु ! देह विद्यमान छतां अयोगी केवी रीतें होइ शके ? वीजी शका. जो सर्वथा काययोगनो अजाव थयो छे तो देहनो अजाव छतां ध्यान केवीरीतें घटे ?

आचार्य जगवान् उत्तर आपे छे जो शिष्य ! अयोगी गुणस्थानमां सूक्ष्मकाययोग विद्यमान छतां अयोगी कहेवाय छे तेनु कारण ए छे के ते काययोगथी जे क्रिया थाय छे ते अति सूक्ष्मरूप छे, तथा ते काययोग शीघ्र क्षय पामनार छे, वली कायानु कार्य करवामां असमर्थ होवाथी काय होवा छतां पण अयोगी छे. वली शरीर आश्रय होवाथी ध्यान पण छे. ते कारणथी बने बाबतमां विरोध नथी ते विरोध कोने नथी ? अयोगीगुणस्थानवर्त्ती परमेष्टि जगवंतने. ते परमेष्टि जगवंत केवा छे ? निजशुद्धात्मचिद्रूप तन्मय पणे उत्पन्न, निर्भर, परमानंद विराज मान छे

हवे ध्यानना निश्चय, व्यवहारनु स्वरूप कहियें छिये तत्त्वथी अर्थात् निश्चय नयथी आत्माज ध्याता छे, आत्माज करण रूप छे, आत्माज कर्म

रूपतापन्नने ध्याय छे तेनाथी अन्य, उपचाररूप अष्टांगयोग प्रवृत्ति लक्षण ते सर्व व्यवहारनयथी ध्यान जाणवु

हवे अयोगी गुणस्थान वर्त्तिना उपात्य समयना कृत्य कहिये छियें केवल चिद्रूपमय आत्मस्वरूपना धारक योगी, अयोगी गुणस्थानवर्ती स्फुट प्रगट उपांत्य समयमां शीघ्र युगपत् समकालें वहोंतेर कर्मप्रकृतिनो क्षय करेछे ते आ छे शरीर पाच, वधन पांच, सघात पांच, अंगोपांग त्रण, संस्थान छ, वर्ण पांच, रस पांच, संहनन छ, अस्थिर छ, स्पर्श आठ, गध वे, नीचगोत्र, अगुरुलघु चतुष्क, देवगति, देवानुपूर्वी, खगतिद्विक, प्रत्येकत्रिक, सुस्वर, अपर्याप्तिनाम, निर्माणनाम, वेमांथी कोइपण एक वेदनी, आ वहोंतेर कर्मप्रकृति मुक्तिपुरीना द्वारनी अर्गलाभूत छे, ते उपात्य समय अर्थात् द्विचरम समयमां क्षय करेछे

हवे अयोगी परमात्मा अतसमयमा जे जे प्रकृति क्षय करीने जे कांइ करेछे ते कहिये छियें अतसमये एकवेदनी, आदेयनाम, पर्याप्तिनाम, त्रसनाम, वादरनाम, मनुष्यायु, यशनाम, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, सौभाग्य उच्चगोत्र, पचेन्द्रियत्व, तीर्थंकरनाम आ तेर प्रकृति क्षय करीने तेज समयमां सिद्धपर्यायने प्राप्त थायछे ते सिद्धपरमेष्ठी, सनातन भगवान् शाश्वत लोकांत पर्यंत जायछे तथा अयोगीगुणस्थानस्थ जीव अवधक छे तथा एकवेदनी, आदेय यश, सुभग, त्रसत्रिक, पचेन्द्रियत्व, मनुष्यगति, मनुष्यायु, उच्चगोत्र, तीर्थंकरनाम, आ वार प्रकृति वेदेछे अतना वे समय पहेलां पचाशीनी सत्ता रहेछे, उपांत्य समयमा तेर प्रकृतिनी सत्ता रहेछे अने अंतसमये सत्तारहित थायछे इति अयोगी चतुर्दशगुणस्थान स्वरूप ॥

आशका –"नि कर्म" कर्मरहित आत्मा ते समये लोकांतमां केवी रीतें जाय छे ?

समाधान –कर्मरहित सिद्धनी ऊर्ध्वगति थायछे कया हेतुथी थायछे ? पूर्वप्रयोगथी अर्थात् अचिंत्य आत्मवीर्यथी उपांत्य वे समयमां पचाशी कर्मप्रकृति क्षय करवावास्ते जे व्यापार प्रारभ कर्यो हतो तेनाथी ऊर्ध्वगति थायछे आ प्रथम हेतु छे तथा कर्मसगतिरहित थवाथी ऊर्ध्वगति थायछे आ बीजो हेतुछे तथा गाढतर वधनोथी रहित थवाथी

ऊर्ध्वगति थायछे आ त्रीजो हेतुछे. तथा कर्मरहित जीवनो ऊर्ध्वगमन स्वभाव छे आ चोथो हेतु छे आ चारहेतु चारदृष्टांतथी बतावीए छीए १ जेम कुंभकारनु चक्र पूर्वप्रयोगथी फर्याकरे छे, तेम आत्मानी पूर्वप्रयोगथीऊर्ध्वगति थाय छे २ जेम माटीना लेपथी रहित थतां तुंबडानी जलमां ऊर्ध्वगति थाय छे तेम अष्टकर्मरूप लेपरहित थतां धर्मास्तिकायरूप जलथी आत्मानी ऊर्ध्वगति थाय छे ३ जेम एरंडफल बीजादिबंधनोथी छुटुं थतां ऊर्ध्वगमन करे छे, तेवीजरीते कर्मबीजादि बध विछेद थतां सिद्धपण ऊर्ध्वगमन करे छे ४ जेम अग्निनो ऊर्ध्वज्वलन स्वभाव छे तेम आत्मानो पण ऊर्ध्वगमन स्वभाव छे

हवे कर्मरहित आत्मानी अधोगति तथा तिर्छी गति केम थती नथी ते कहिए छिए सिद्ध आत्मा कर्मगौरव अभावथी अधोगमन धरतो नथी, तथा प्रेरककर्म अभावथी तिर्छो पण गति करतो नथी, तेमज धर्मास्तिकायना अभावथी लोकनी उपर पण गमन करी शकतो नथी लोकमांज धर्मास्तिकाय होवाथी ते जीव पुद्गलनी गतिनो हेतुरूप छे. मत्स्यादिने जेम जल छे तेम ते धर्मास्ति अलोकमां नथी, तेथी सिद्ध अलोकमां जइ शकता नथी.

हवे सिद्धशिला उपर लोकांतमां सिद्ध रहेछे तेनु स्वरूप कहिएछिए. ईषत्प्राग्भारा नामनी सिद्धशिला चौद राजलोकना मस्तक उपर व्यवस्थित छे, तेनाथी सिद्धो पासे होवाथी ते सिद्धशिला कहेवाय छे. परंतु सिद्ध परमात्मा कांइ ते शिला उपर बेठेला नथी सिद्ध तो ते शिलाथी उंचे लोकातमां विराजमान छे ते शिला केवी छे? मनोज्ञ, मनोहारिणी छे, वली ते शिला केवी छे? सुरभि कपुरथी पण अधिक सुगंधवाली छे, कोमल छे, जेना सूक्ष्म अवयवो छे. वली ते शिला केवी छे? पुण्या, पवित्र, परम भासुरा, प्रकृष्ट तेजवंत छे, मनुष्यक्षेत्र समान लाबी पहोली छे, श्वेत छत्राकार छे, उत्तान छत्राकार छे, अत्यंत शुभरूप छे, सर्वार्थसिद्धविमानथी बार योजन उपर छे वली ते पृथ्वी मध्यभागमां आठ योजन जाडी छे, तथा प्रांतमां घटती घटती मांखीनी पांखथी पण पातली छे. ते शिलानी उपर एक योजन लोकात छे, ते योजननो जे चोथो कोस छे, ते कोसना छठाभागमां सिद्धोनी अवगाहना छे, अ-

र्थात् बे हजार धनुष्प्रमाण, कोशना छठा भागमां एटले त्रणसे तेत्रीश धनुष् अने बत्रीश आंगलनी सिद्धोना आत्मप्रदेशोनी अवगाहना छे

हवे सिद्धोना आत्मप्रदेशनी अवगाहनानो आकार केवो छे ते लखीए छिए जेम मूस (कुलडी) मां मीण भरीने गालीए, ते गलीजवाथी आकाशनो जेवो आकार थाय छे तेवो सिद्धोनो आकार छे.

हवे सिद्ध परमात्माना ज्ञान दर्शननो विषय लखीये छिये त्रैलोक्योदरवर्त्ती, चौद रज्ज्वात्मकलोकमां गुणपर्यायसयुक्त जे जे वस्तुओ छे, ते ते जीवाजीव सर्व पदार्थोने सिद्ध परमात्मा जाणे छे सामान्यरूपें देखे छे, विशेषरूपें जाणे छे कारण के वस्तुमात्र सामान्य विशेषात्मक छे

हवे सिद्धोना आठ गुण कहियेछियें. १ ज्ञानावरण कर्मना क्षयथी केवलज्ञान प्रगट थयेल छे, २ दर्शनावरण कर्मना क्षयथी केवल दर्शन प्रगट थयेल छे, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अव्याबाध अनंतसुख थयेल छे, ४ दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीयनो क्षय थवाथी शुद्ध सम्यक्त्व चारित्र क्षायकरूप थयेल छे, ५ आयुकर्मनो क्षय थवाथी अक्षयगति थयेल छे, ६ नामकर्मनो क्षय थवाथी अमूर्त्तपणुं प्रगट थयेल छे, ७ गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी अनत अवगाहना प्रगट थयेल छे, ८ अंतरायकर्मनो क्षय थवाथी अनंतवीर्य प्रगट थयेल छे

हवे सिद्धोना सुखनु स्वरूप कहियें छिये चक्रवर्त्तिनी पदवी तेमज इंद्रनी पदवीना सुख करता सिद्धनु सुख अनंतगणु छे वली ते सुख केवु छे ? क्लेशरहित छे "अविद्यास्मिता" राग, द्वेष, अभिनिवेश इत्यादि क्लेश जेमा नथी वली ते सुख केवु छे ? अव्यय छे, स्वस्वभाववथी व्यय न थाय तेवु छे

हवे सिद्धभगवते जे प्राप्त करेल छे तेनो सार कहिये छिये सिद्धभगवंते परमपद प्राप्त करेल छे, ते परमपद केवु छे ? आराधकोने आराध्य छे, साधकोए सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रादियी साधेल छे, ध्यायकोने ध्येय छे, निरतर अनेकप्रकारना ध्यानना उपायथी ध्यावबा योग्य छे; जे पद अभव्यजीवोने सदा दुर्लभ छे, केटलाएक भव्यजीवोने पण दुर्लभ छे, दुर्भव्योने कष्टथी प्राप्त थाय छे, एवु परमपद सिद्धभगवंतें प्राप्त करेल छे. वली ते पद केवु छे ? चिदानदमय चिद्रूप परमानंदरूप छे

हवे मुक्तिनुं स्वरूप कहियेंठियें. कोइ वादी अत्यताजावरूप मुक्ति माने ठे, ते वौद्धोनी मुक्ति ठे कोइ वादी जडमयी, ज्ञान अजावमयी मुक्ति माने ठे ते नैयायिक, वैशेषिकमतवालानी मुक्ति ठे कोइ वादी मुक्ति प्राप्त कर्यापठी फरी ते आत्मा संसारमां अवतार धारण करेठे, फरी मुक्तरूप थाय ठे एवी मुक्ति माने ठे, ते आजीविका मतवालानी मुक्ति ठे. कोइ वादी क्लिष्ट कर्मथी विषयसुखमय मुक्ति माने ठे, ते कहे ठे के, मोक्षमां जोग जोगववा वास्ते बहु अप्सराउं मले ठे, खावा-वास्ते बहु स्वादिष्ट वस्तुउं मले ठे, पीवा वास्ते स्वादिष्ट मदिरा मले ठे, रहेवा वास्ते सुंदर वाग मले ठे, इत्यादि कोइवादी कहे ठे के, आत्मानी मुक्ति कदापि थती नथी, ते जैमिनी मुनिनो मत ठे. खरडज्ञानी कहे ठे के जे वेदोक्त अनुष्ठान करे ठे, ते सर्वथा उपाधिरहित तो थतो नथी, परंतु शुजपुण्यना फलथी सुंदर देह प्राप्त करीने, ईश्वरनी साथे मलीने, केटलाएक कल्पो सुधी सुख जोग जोगवे ठे, ज्यां इछा थाय त्यां उडीने चाल्या जाय ठे, फरी संसारमां जन्म लहे ठे, फरी पूर्ववत् सुख जोग जोगवे ठे, ए प्रमाणे अनादि अनंतकाल सुधी कर्या करे ठे, परंतु एक स्थलें स्थिति करता नथी, एवी तेमनी मुक्ति ठे, सर्वज्ञ अ-र्हंत परमेश्वरे सत्रूप, ज्ञानदर्शन रूप, असाररूप, जे आ संसार ठे तेनाथी विरुद्ध, साररूप, निस्सीम आत्यंतिक सुखरूप, अनंत, अतीं-द्रिय आनंद अनुजवस्थान, अप्रतिपाति, स्वस्वरूपावस्थानरूप, मुक्ति कही ठे. बृहद्गछीय श्रीवज्रसेनसूरिना शिष्य श्रीहेमतिलक सूरि पट्टप्र-तिष्ठित श्रीरत्नशेखर सूरिए चौदगुणस्थानकनु स्वरूप लखेल ठे, तेने अ-नुसारें जाषामय किंचित् गुणस्थानक स्वरूप मे लखेल ठे.

प्रश्न – हे जेन! तमे सर्व वादिउंनी कहेली मुक्ति अनुपादेय स-मज्या, अने अर्हंतनी कहेली मुक्ति उपादेय समज्या, तेनुं शु कारणठे?

उत्तर.– हेजव्य! सर्व वादिउंनी मुक्ति, षड्दर्शननुं निरूपण चतुर्थ परिछेदमां करेल ठे, त्यां बतावेल ठे, ते जोतां आ वादिउंनी मुक्ति वा-स्तविक नथी जुउं ज्यारे अत्यताजावरूप मुक्ति थाय त्यारे आत्मानो ज अजाव थयो, हवे मोक्षफल कोने प्राप्त थयु? एवो कोण होय के जे आत्माना अत्यंताजाववास्ते यत्न करे? तथा ज्ञानाजावरूप जे मुक्ति

र्थात् बे हजार धनुष्प्रमाण, कोशना छठा भागमां एटले त्रणसे तेत्रीश धनुष् अने बत्रीश आंगलनी सिद्धोना आत्मप्रदेशोनी अवगाहना छे

हवे सिद्धोना आत्मप्रदेशनी अवगाहनानो आकार केवो छे ते लखीए छिए जेम मूस (कुलडी) मा मीण भरीने गालीए, ते गलीजवाथी आकाशनो जेवो आकार थाय छे तेवो सिद्धोनो आकार छे

हवे सिद्ध परमात्माना ज्ञान दर्शननो विषय लखीये छिये त्रैलोक्योदरवर्त्ती, चौद रज्ज्वात्मकलोकमां गुणपर्यायसयुक्त जे जे वस्तुओ छे, ते ते जीवाजीव सर्व पदार्थोने सिद्ध परमात्मा जाणे छे सामान्यरूपें देखे छे, विशेषरूवें जाणे छे कारण के वस्तुमात्र सामान्य विशेषात्मक छे

हवे सिद्धोना आठ गुण कहियेंछियें १ ज्ञानावरण कर्मना क्षयथी केवलज्ञान प्रगट थयेल छे, २ दर्शनावरण कर्मना क्षयथी केवल दर्शन प्रगट थयेल छे, ३ वेदनीय कर्मना क्षयथी अव्याबाध अनंतसुख थयेल छे, ४ दर्शन मोहनीय तथा चारित्रमोहनीयनो क्षय थवाथी शुद्ध सम्यक्त्व चारित्र क्षायकरूप थयेल छे, ५ आयुकर्मनो क्षय थवाथी अक्षयगति थयेल छे, ६ नामकर्मनो क्षय थवाथी अमूर्त्तपणु प्रगट थयेल छे, ७ गोत्रकर्मनो क्षय थवाथी अनंत अवगाहना प्रगट थयेल छे, ८ अंतरायकर्मनो क्षय थवाथी अनतवीर्य प्रगट थयेल छे.

हवे सिद्धोना सुखनु स्वरूप कहिये छिये चक्रवर्त्तिनी पदवी तेमज इंद्रनी पदवीना सुख करतां सिद्धनु सुख अनंतगणु छे वली ते सुख केवु छे ? क्लेशरहित छे "अविद्यास्मिता" राग, द्वेष, अभिनिवेश इत्यादि क्लेश जेमा नथी वली ते सुख केवु छे ? अव्यय छे, स्वस्वभावथी व्यय न थाय तेवुं छे

हवे सिद्धभगवंते जे प्राप्त करेल छे तेनो सार कहिये छिये सिद्धभगवंतें परमपद प्राप्त करेल छे, ते परमपद केवु छे ? आराधकोने आराध्य छे, साधकोए सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रादिथी साधेल छे, ध्यायकोने ध्येय छे, निरतर अनेकप्रकारना ध्यानना उपायथी ध्याववा योग्य छे, जे पद अभव्यजीवोने सदा दुर्लभ छे, केटलाएक भव्यजीवोने पण दुर्लभ छे, दुर्भव्योने कष्टथी प्राप्त थाय छे, एवु परमपद सिद्धभगवंतें प्राप्त करेल छे. वली ते पद केवु छे ? चिदानंदमय चिद्रूप परमानंदरूप छे

हवे मुक्तिनुं स्वरूप कहियेछिये. कोइ वादी अत्यताजावरूप मुक्ति माने छे, ते बौद्धोनी मुक्ति छे कोइ वादी जडमयी, ज्ञान अजावमयी मुक्ति माने छे. ते नैयायिक, वैशेषिकमतवालानी मुक्ति छे कोइ वादी मुक्ति प्राप्त कर्यापछी फरी ते आत्मा संसारमां अवतार धारण करेछे, फरी मुक्तरूप थाय छे एवी मुक्ति माने छे, ते आजीविका मतवालानी मुक्ति छे कोइ वादी क्लिष्ट कर्मथी विषयसुखमय मुक्ति माने छे, ते कहे छे के, मोक्षमां जोग जोगववा वास्ते बहु अप्सराउं मले छे, खावा-वास्ते बहु स्वादिष्ट वस्तुउं मले छे, पीवा वास्ते स्वादिष्ट मदिरा मले छे, रहेवा वास्ते सुदर बाग मले छे, इत्यादि कोइवादी कहे छे के, आत्मानी मुक्ति कदापि थती नथी, ते जैमिनी मुनिनो मत छे खरडज्ञानी कहे छे के जे वेदोक्त अनुष्ठान करे छे, ते सर्वथा उपाधिरहित तो थतो नथी, परंतु शुजपुण्यना फलथी सुदर देह प्राप्त करीने, ईश्वरनी साथे मलीने, केटलाएक कल्पो सुधी सुख जोग जोगवे छे, ज्यां इछा थाय त्यां उडीने चाल्या जाय छे, फरी संसारमां जन्म लहे छे, फरी पूर्ववत् सुख जोग जोगवे छे, ए प्रमाणे अनादि अनंतकाल सुधी कर्या करे छे, परंतु एक स्थलें स्थिति करता नथी, एवी तेमनी मुक्ति छे, सर्वज्ञ अर्हंत परमेश्वरें सत्रूप, ज्ञानदर्शन रूप, असाररूप, जे आ संसार छे तेनाथी विरुद्ध, साररूप, निस्सीम आत्यंतिक सुखरूप, अनंत, अतींद्रिय आनंद अनुजवस्थान, अप्रतिपाति, स्वस्वरूपावस्थानरूप, मुक्ति कही छे. वृहद्गछीय श्रीवज्रसेनसूरिना शिष्य श्रीहेमतिलक सूरि पट्टप्रतिष्ठित श्रीरत्नशेखर सूरिए चौदगुणस्थानकनुं स्वरूप लखेल छे, तेने अनुसारें जाषामय किंचित् गुणस्थानक स्वरूप मे लखेल छे.

प्रश्न – हे जैन! तमे सर्व वादिउंनी कहेली मुक्ति अनुपादेय समज्या, अने अर्हंतनी कहेली मुक्ति उपादेय समज्या, तेनु शु कारणछे?

उत्तर – हेजव्य! सर्व वादिउंनी मुक्ति, षड्दर्शननुं निरूपण चतुर्थ परिछेदमां करेल छे, त्यां बतावेल छे, ते जोतां आ वादिउंनी मुक्ति वास्तविक नथी जुउ ज्यारे अत्यताजावरूप मुक्ति थाय त्यारे आत्मानो ज अजाव थयो, हवे मोक्षफल कोने प्राप्त थयु? एवो कोण होय के जे आत्माना अत्यंताजाववास्ते यत्न करे? तथा ज्ञानाजावरूप जे मुक्ति

माने छे, ते पण वास्तविक नथी, कारण के ज्यारे ज्ञाननो अभाव मुक्तने थाय त्यारे पाषाण पण मोक्षरूप थइ जाय हवे एवो कोण प्रेक्षावान् छे जे पोताना आत्माने पाषाणतुल्य बनाववा चाहे ? तथा जे आत्मानी सर्वव्यापिरूप मुक्ति माने छे, अर्थात् ज्यारे आत्मानी मुक्ति थाय छे, त्यारे आत्मा सर्वव्यापी मोक्षरूप थइ जाय छे आ कहेवु पण प्रमाण अनभिज्ञ मतवालानु छे, कारण के आत्मा कोइ प्रमाणथी सर्व लोकव्यापी सिद्ध थइ शकतो नथी तेनी विशेष चर्चा जोवी होय तो स्याद्वादरत्नाकरावतारिका अवलोकन करवी तथा आत्मानो मोक्ष थया पछी फरी संसारमां जन्म लेवो, फरी मुक्त थवु, आ तो मोक्ष शेनो ? आ तो (भांडो) नो वेश थयो, ते कारणथी आ मत पण वास्तविक नथी तथा जे मतवाला मोक्षमा स्त्रियोनो भोग माने छे, ते विषयना लोलुपी छे तथा खरडज्ञानीनी मुक्ति पण अप्रमाणिक छे, कोइ प्रमाणथी सिद्ध थती नथी ते कारणथी अर्हंत भगवतें जे मुक्ति कही छे, ते निर्दोष छे ॥ इतिश्रीतपागच्छीयमुनिश्रीदगणिमणिविजयतच्छिष्यमुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्यमुन्यात्मारामानदविजयविरचितजैनतत्त्वादर्शधर्मतत्त्वनिरूपणाधिकारे (तद्गुर्जर भाषांतरे) चतुर्दशगुणस्थानज्ञाननिर्णयनामा षष्ठ० परिच्छेदः संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ अथ सप्तमपरिच्छेदप्रारंभ ॥

आ परिच्छेदमां सम्यक् दर्शननु स्वरूप लखियें छिये सम्यक् दर्शननु स्वरूप पूर्वे काइक लखी आव्या छिये, परतु भव्यजीवोने बोध थवा वास्ते विस्तारथी लखवानी जरुर छे तेथी विशेष लखिये छियें सम्यक्त्वना बे प्रकार छे १ व्यवहार सम्यक्त्व, २ निश्चय सम्यक्त्व यथार्थ तत्त्वरूप विज्ञानपूर्वक रुचि, ते सम्यक्त्व ते सम्यक्त्व, त्रण तत्त्व उपर यथार्थ रुचि थवाथी थाय छे. त्रण तत्त्व आ छे, १ देवतत्त्व, २ गुरुतत्त्व, ३ धर्मतत्त्व. तेनेविषे श्रद्धा (प्रतीति) जे पुरुष करे ते सम्यक्त्ववान् थाय छे ते श्रद्धाना बे भेद छे १व्यवहार, २ निश्चय तेउ मध्येनी प्रथम व्यवहारश्रद्धानु स्वरूप लखिये छियें

व्यवहार श्रद्धामा देव श्री अरिहत, जेनु स्वरूप प्रथम परिच्छेदमां वर्णवेलु छे, ते अहिंआ जाणी लेवु. अरिहतना चार निक्षेप अर्थात् स्व-

रूप छे १ नामनिक्षेप, २ स्थापनानिक्षेप, ३ द्रव्यनिक्षेप, ४ भावनिक्षेप आ चारे निक्षेपनुं विस्तारपूर्वक स्वरूप जोवुं होय तो विशेषावश्यक अवलोकन करवु. प्रथम निक्षेप, नाम अर्हंत अर्थात् "नमो अरिहंताण" एम कहेवुं आ पदनो जप करवाथी अनेक जीव संसारसमुद्र तरी गयेल छे. बीजो स्थापनानिक्षेप, ते अरिहंतनी प्रतिमा, समस्त दोष चिह्नोथी रहित सहज सुभग, समचतुरस्त्र संस्थानवाली, पद्मासन, कायोत्सर्ग मुद्रारूप, शांतरसमय जिनबिंब देखीने, तेनी सेवा, पूजा, भक्ति करवाथी अनंत जीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे,

प्रश्नः–अरिहंतनी प्रतिमा पूजवी तथा तेने नमस्कार करवो, एम स्थापना निक्षेपने मानी, प्रतिमाने मुक्तिदायक समजवी, आ नि.केवल मूर्खतानुं चिह्न छे, कारण के प्रतिमा जडरूप होवाथी शुं आपी शके छे?

उत्तर –हे भव्य? आप कोइ पण शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानोछो के नहि? जो शास्त्रने परमेश्वरनां वचनरूप मानता हो, तेमज ते शास्त्रने सत्यस्वरूपें ससारसमुद्रथी पार उतारनार मानता हो तो, तेवीज रीतें परमेश्वरनी प्रतिमाने मानवामां शा वास्ते लज्जा धारण करोछो? जेवु शास्त्र जडरूप छे, अर्थात् तेमां स्याही अने कागल शिवाय बाकी कांइ पण नथी, तेवी परमेश्वरनी प्रतिमा पण छे, जो एम कहो के कागलो उपर स्याहीथी अक्षर संस्थान पडेलां वांचवाथी परमेश्वरना कथननो बोध थाय छे, तो तेवीज रीते परमेश्वरनी मूर्त्ति देखवाथी पण परमेश्वरना स्वरूपनो बोध थाय छे

प्रश्न.–प्रतिमा देखवाथी अरिहंत स्वरूप तो स्मरण थाय छे, परंतु प्रतिमानी भक्ति करवाथी शु लाभ छे?

उत्तर–शास्त्र श्रवण करवाथी परमेश्वरना वचननो बोध थयो तो पण भक्तजनो जेम शास्त्रने उच्चस्थानमां राखे छे, कोइ शिरपर लइ फरे छे, कोइ गलामां लटकावी राखे छे, केटलाएक सिंहासन उपर, केटलाएक सुंदर बाजोठ उपर शास्त्रोने सुंदर सुदर रुमालोमां लपेटी राखे छे, अने शास्त्रोनी पूजा, भक्ति, बहुमान, नमस्कार प्रमुख करे छे. जेम शास्त्रनां वचनो विनय, बहुमानपूर्वक श्रवण करवाथी तेथी थता अनेक लाभनो भक्तजनो अनुभव करे छे, तेवीजरीते जिन प्रतिमानी विनय, बहुमानपू-

वेक जक्ति करवाथी तेनी शांतमुद्रा सेवकजनने परमशांतरस प्रमुख श्र
नेक लान उत्पन्न करावे ठे

प्रश्न –जेम पङरनी गायथी दूधनी गरज सरती नथी, तेम प्रतिमाथ
पण कांइ गरज सरती नथी, तो हवे प्रतिमाने शावास्ते मानवी जोइयें

उत्तरः–जेम कोइ पुरुप मुखथी गाय, गाय, एम सत्यरूपें उच्चारकरत
ठतां पण तेनु उदर दूधथी जरातुं नथी, तेम परमेश्वरनुं नाम लेवाथ
तेमज तेनो जाप करवाथी पण कांइ लान थतो नथी ते कारणथी प
मेश्वरनु नाम पण न लेवु जोइये ?

प्रश्न.–परमेश्वरनु नाम लेवाथी तो अमारु अंत करण शुद्ध थाय ठे

उत्तर'–तेवीजरीतें परमेश्वरनी प्रतिमा देखवाथी पण परमेश्वरन
स्वरूपनो वोध थाय ठे तेथी अंतःकरणनी शुद्धि अहिंआ पण सरखीज ठे

प्रश्न.–परमेश्वरनुं नाम लेवाथी पुण्य ठे तो पठी प्रतिमा शावास्ते पूजवी

उत्तर –जेवी स्थापना (प्रतिमा) देखवाथी आत्मानी शुद्ध परिण
थाय ठे, तेवी नामथी थती नथी कारण के जेम कोइ सुदर यौवनवंत
स्त्रीनु नाम लेवाथी राग तो उत्पन्न थाय ठे, परतु जो ते सुदर यौवन
वती स्त्रीनी मूर्त्ति प्रगट सर्वाकारवाली सन्मुख देखीए तो अधिक
तर विपयराग उत्पन्न थाय ठे, तेटलाज कारणसर श्री दशवैकालिक सू
त्रमा लखेलु ठे के " चित्तजित्ती न निज्झाए नारी वासुलंकिय " अर्था
स्त्रीना चित्रामणवाली जींत देखवाथी पण विकार उत्पन्न थाय ठे अ
वात तो प्रगट (प्रसिद्ध) ठे के रागीनी मूर्त्ति देखवाथी राग उत्प
थाय ठे, तथा कोकशास्त्रोक्त स्त्री, पुरुपना विपय सेवनना चोराश
आसन देखवाथी तत्काल विकार उत्पन्न थाय ठे, तेवीज रीतें निर्विका
स्थापना रूप शातमुद्रा, श्री वीतराग परमात्मानी देखवाथी जेवो निर्वि
कार शातिजाव उत्पन्न थाय ठे, तेवो नाम लेवाथी थतो नथी

प्रश्न –जेम कोइ स्त्रीना जर्त्तारनु नाम देवदत्त ठे, ते देवदत्त मरी
गयो, वाद ते स्त्रीए पोताना पति देवदत्तनी मूर्त्ति वनावी, ते मूर्त्तिथ
जेम ते स्त्रीनु सुहाग, संतानोत्पत्ति तथा कामइन्छा पूर्ण थतां नथी, ते
वीज रीतें जगवाननी मूर्त्तिथी पण काइ लान थतो नथी

उत्तर'–देवदत्तनी स्त्री देवदत्तना मरण पठी आसन विठावीने देवद

त्तना नामनी माला फेरवे, तेथी जेम ते स्त्रीनुं सुहाग रहेतुं नथी, तथा पतिनु नाम लेवाथी जेम संतानोत्पत्ति थती नथी, तथा कामेछा तृप्त थती नथी, तेवीज रीतें जो कहेवामां आवशे तो तो नगवाननुं नाम लेवाथी पण कांइ सिद्धि थशे नहि आ दृष्टांतथी तो नगवाननु नाम पण न लेवु जोइए ?

प्रश्न –प्रतिमा तो कारीगर बनावे ठे, ते कारीगरने पण पूजवा जोइये ?

उत्तर –वेदादि शास्त्र लिखारी (लहीआ) लखे ठे, तेउने पण पूजवा जोइए तेमज साधुनां मात पिताने साधुथी अधिक पूजवां जोइए.

प्रश्न –आ कालमां कोइपण बुद्धिमान् स्थापना मानता नथी.

उत्तर –बुद्धिमान् तो सर्व माने ठे, परंतु मूर्ख मानता नथी

प्रश्न –कया बुद्धिमान् स्थापना माने ठे ? बतावो तेउना नाम ?

उत्तर –प्रथम तो सांसारिक विद्यावाला सर्व बुद्धिमान्, नूगोल, खगोल, द्विप, अर्थात् युरोपखंड आदिमां इग्लंड प्रमुखनां चित्र सर्व, स्थापनारूप माने ठे, तेमज बनावे ठे, तथा ककार आदि जे अक्षरो ठे ते सर्व पुरुषना (ईश्वरना) शब्दनी स्थापना करे ठे वली जैनिउना मतमां एकसो आठ मणका, मालामां राखवामां आवे ठे, परंतु न्यूनाधिक राखवामा आवता नथी तेनो हेतु ए ठे के जैन, बारगुण अरिहंत पदना माने ठे, आठगुण सिद्ध पदना माने ठे, ठत्रीश गुण आचार्यपना माने ठे, पचीश गुण उपाध्याय पदना माने ठे, अने सत्तावीश गुण साधु पदना माने ठे, सर्व मली एकसो आठ गुण थाय ठे, ते वास्ते जैनीउना मतमां मालामां जे मणका ठे, ते एकेक मणका एकेक गुणनी स्थापना ठे, तेथी आ माला पण स्थापना ठे, तेवीज रीते बीजा मतोमां पण माला, तसवीर ठे, ते सर्व कोइने कोइ वस्तुनी स्थापना ठे, नहि तो एकसो आठ अथवा एकसो एकनो नियम नहि जोइए वली पादरी लोकोपण पोताना ठापेला पुस्तकोमां इसामसीह (जीससक्राइस्ट) नी मूर्त्ति तेज वखतनी ठपावे ठे, के जे वखते मसीहने शूली उपर देवाने लइ जता हता ते मूर्त्तिने देखवाथी इसामसीहनी सर्व अवस्था ख्यालमा आवी जाय ठे बस ! स्थापनानु प्रयोजन तो एज ठे के ते देखवाथी असल वस्तुनु स्वरूप याद आवी जाय ठे आश्चर्य तो एज ठे

के वर्तमानमां केटलाएक तुच्छबुद्धिवाला पोताना बनावेला पुस्तकमां यज्ञशाला तथा यज्ञोपकरणनी स्थापना पोताना हाथथी करीने पोताना शिष्योने जणावे छे के यज्ञोपकरण आ आकृतिनां जोइए, छतां फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी हवे विचार करवो जोइए के ते उंना करतां अधिक मदमति कोइ जगत्मा छे ? पोते स्थापना करे छे, छतांपि फरी कहे छे के अमे स्थापनाने मानता नथी ते कारणथी जे पुरुष पोताना शास्त्रना कर्त्ताने देहधारी मानशे, ते अवश्य तेनी मूर्त्तिने पण मानशे, अने जेउं पोताना शास्त्रना उपदेष्टाने देहरहित माने छे, तेउं अल्पबुद्धिमंत होवाथी प्रमाण अनभिज्ञ छे, कारण के जेने देह नथी, ते शास्त्रना उपदेष्टा कदापि होइ शकता नथी, कारण के देह रहित होवु, अने शास्त्रना उपदेश देवावाला थवु, ए वातमां कोइ पण प्रमाण नथी वली निराकार, सर्वव्यापी परमेश्वरनु ध्यानपण कोइ करी शकतुं नथी, दृष्टांत, जेम आकाशनु ध्यान ते कारणथी अढार दूषणोथी रहित जे परमेश्वर छे, तेनी मूर्त्ति अवश्य मानवी तथा पूजवी जोइए, एवा देव तो अर्हंतज छे, ते कारणथी अर्हंतनी प्रतिमा मानवी जोइए, परंतु कोइ दुर्बुद्धिमान्ना कुहेतुउंथी तजवी न जोइए इति स्थापना

हवे त्रीजा द्रव्यनिक्षेपनु स्वरूप एवु छे के, जे जीवे तीर्थंकर नाम कर्मनो निकाचित बंध करेलो छे, ते जीवमा भावि गुणोनो आरोप, अर्थात् भविष्यमां तीर्थंकर भगवान् आ प्रमाणे थशे, एवो वर्त्तमानमां तेनामां आरोप करीने वंदन, पूजन करवाथी अनेक भव्यजीवोए मोक्ष प्राप्त करेल छे

चोथो भावनिक्षेप वर्त्तमानकालमां सीमंधर प्रमुख तीर्थंकर केवलज्ञानसंयुक्त, समवसरणमा विराजमान, भव्यजीवोना प्रतिबोधक, चतुर्विधसंघना स्थापक, एवा भाव अर्हंत, जेना चरणकमलनी सेवा करीने अनेक जीव मोक्ष प्राप्त करेछे, आ भावनिक्षेप छे आ चारे निक्षेपे संयुक्त, एवा जे अरिहंत, देवाधिदेव, महागोप, महामाहण, महानिर्यामक, महासार्थवाह, महावैद्य, महापरोपकारी, करुणासमुद्र, इत्यादि अनेक उपमा लायक, भव्यजीवोनो अज्ञान अंधकार दूर करवाने सूर्य समान, जेमना वचन प्रमाणथी अविरोधि, एवा मुनिमनमोहन, योगी-

श्वर, चिदानंदघनरूप, अरिहंतने हुं देव अर्थात् परमेश्वर मानुहुं, तेनी सेवा करु, तेनी आज्ञा शिरपर धारण करु, एम जे मानवुं ते प्रथम व्यवहार शुद्ध देवतत्त्व छे.

बीजा निश्चय शुद्ध देवतत्त्वनुं स्वरूप कहीये छीयें. जे शुद्ध आत्मस्वरूपनो अनुभव करवो, ते शुद्धआत्मस्वरूपज निश्चय देवतत्त्व छे. केवु छे ते आत्मस्वरूप? पांचवर्ण, बे गध, पांच रस, आठ स्पर्श, शब्द, क्रिया, तेउथी रहित, तथा योगथी रहित, अतींद्रिय, अविनाशी, अनुपाधि, अवधी, अक्लेशी, अमूर्त्ति, शुद्ध चैतन्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि अनंतगुणोनु भाजन, सच्चिदानंद स्वरूपी एवो मारो आत्मा छे, तेज निश्चय देव छे

हवे बीजा गुरुतत्त्वनु स्वरूप कहीयें छीये तेना पण बे भेद छे १ शुद्ध व्यवहार गुरु, २ शुद्धनिश्चय गुरु तेमां शुद्ध व्यवहारगुरुनुं स्वरूप तो गुरुतत्त्व निरूपण परिछेदमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणी लेवुं. एवा साधुने गुरु करी माने एवा गुरुनी आज्ञा मुजब प्रवर्त्ते. एवा मुनिने पात्र बुद्धिथी शुद्ध अन्नादि आपे इति व्यवहारशुद्धगुरुतत्त्वस्वरूप.

निश्चय गुरुतत्त्व तो शुद्धात्मविज्ञानपूर्वक छे हेयोपादेय उपयोगयुक्त जे परिहार प्रवृत्तिज्ञान ते निश्चय गुरुतत्त्व छे

त्रीजा धर्मतत्त्वनु स्वरूप कहीये छीये धर्मतत्त्वना पण बे भेद छे. १ व्यवहारधर्मतत्त्व, निश्चयधर्मतत्त्व तेमां व्यवहाररूपधर्म दया मुख्य छे. अने सत्यादि व्रत सर्व दयानी रक्षावास्ते छे, ते कारणथी दयानुं स्वरूप लखीए छीए दयाना आठ भेद छे १ द्रव्यदया, २ भावदया, ३ स्वदया, ४ परदया, ५ स्वरूप दया, ६ अनुबध दया, ७ व्यवहार दया, ८ निश्चय दया

१ द्रव्यदयानु स्वरूप एवु छे के सर्वकाम यत्नापूर्वक करवां जैनमत वालाउनो आ कुलधर्म छे सर्व जैनसमुदाय प्राणी गलीने पीए छे, अन्न शोधीने खाय छे, जे कोइ जैनी छल कपट करे छे, असत्य बोले छे, विश्वासघात करे छे, ते पापी जीव छे, अने ते जैनमतने कलंकित करे छे. ते सर्वदोष, ते जीवनाज छे, जैनमतनो तेमां काइपण दोष नथी. जैनमत तो एवो पवित्र छे के जेमां काइपण अनुचित उपदेश नथी. आ

वात सर्वसुज्ञ जनोने विदित छे ते कारणथी जे जे काम करवां ते सर्व यत्नापूर्वक जीवरक्षार्थी करवा ते द्रव्यदया समजवी

२ बीजी भावदया बीजा जीवोने गुणप्राप्ति वास्ते, तथा दुर्गतिमां पडतां जीवोना रक्षणवास्ते, अंत करणमा अनुकंपा बुद्धिसंयुक्त तेउने हितोपदेश करवो ते भावदया छे.

त्रीजी स्वदया पोताना आत्मानी अनादि कालथी मिथ्यात्व अशुद्ध उपयोग, अशुद्धश्रद्धानपूर्वक अशुद्धप्रवृत्ति, तथा कपायादि भाव शस्त्रोथी समये समये, आत्माना ज्ञानादिगुणोरूप भावप्राणोना घातरूप, हिंसा थया करे छे, एवी जिनेश्वर भगवान्नी वाणी श्रवण करवाथी पूर्वोक्त भावशस्त्रोनो त्याग करीने, स्वसत्तामां प्रवृत्ति करीने, शुद्धोपयोग धारण करीने, विषय, कपायथी दूर रहीने, अने शुभ अशुभ कर्मफलना उदयमा अव्यापक रहीने अर्थात् सुखदु खमा हर्षविषाद न करतां, प्रतिक्षण अशुभ कर्मने निदान दूर करवानी जे चिंता तेनु नाम स्वदया छे आ स्वदयानी रुचिवाला जीव पोतानी परिणति शुद्ध करवा वास्ते जिनपूजा, तीर्थयात्रा, रथयात्रा प्रमुख शुभप्रवृत्ति करे, बहुमान पूर्वक जिनगुणामृतनु पान करे, असत् प्रवृत्तिथी चित्तने हठावी तत्त्वावलंबी करे, पुद्गलावलंबीपणु हठावे, आ शुभ आश्रवमा यद्यपि देखवामां केटलाएक जीवोनी हिंसा मालम पडे छे, तोपण आत्मानी अशुद्ध परिणति दूर थवाथी आत्मा गुणग्राही थाय छे, ज्यारे गुणग्राही थाय छे, त्यारे ज्ञानवान् थाय छे, ते कारणथी सर्वसाधक जीवोने आ स्वदया परम साधन छे आ स्वदया वास्ते साधुपण नवकल्पी विहार करे छे, उपदेश आपे छे, चर्चा करेछे, तथा पूजन, प्रतिलेखन करे छे यद्यपि नदी नालां उतरता तथा अन्य कार्यपरत्वे योगोनी चपलताथी आश्रव थाय छे, तोपण चेतनस्वरूप अनुयायी रहेछे, जिनाज्ञा पाले छे, कपाय स्थानमंद करे छे, स्वछदता दूर करे छे, अने धर्म प्रवृत्तिनी वृद्धि करे छे आ स्वदया वास्ते साधुपण शुभाश्रव पोताना कल्पप्रमाणे आचरण करे छे, परतु आ आश्रव साधक दशामा बाधक नथी

४ चोथी परदया, अर्थात् छ कायना जीवोनी रक्षा करवी ज्या स्वदया छे त्या परदया निश्चयपूर्वक छे, अने ज्या परदया छे, त्यां

स्वदयानी नजना छे, अर्थात् होय पण खरी अने न होय पण खरी
५ पांचमी स्वरूपदया इह लोक, परलोकना विषयसुखवास्ते तथा लोकोनी देखादेखीथी जे जीवनी रक्षा करवी ते स्वरूपदया छे आ दयाथी विषयसुख तो प्राप्त थायछे, परतु देडकाना चूर्णनी जेम संसारनी वृद्धि थाय छे स्वरूपदया देखवामां दया छे, परंतु नावें हिंसाज छे

६ छठी अनुवधदया श्रावक मोटा आडवरथी मुनिने वांदवा वास्ते जाय, तथा उपकार बुद्धिथी बीजा जीवोने सन्मार्गमां लाववावास्ते ताडना तर्जना करे, कोइने शिक्षा पण आपे ए प्रमाणे करतां, देखवामां तो हिंसा छे, परंतु अते स्वपरने लाजनु कारण होवाथी दया छे वळी साधु, आचार्य पोतानां शिष्य शिष्याउने तेउनी नूल याद करावे छे, योग्य प्रसंगे शिक्षा करे छे, कोइने अनुचित करतां निवारे छे, कोइने एकवार कहे छे, कोइने वारवार कहे छे, तथा शिक्षा करे छे, कोइ उपर क्रोधपण करे छे, शासनना प्रत्यनीकने पोतानी लब्धिथी दंडपण आपे छे, इत्यादि कामोमां यद्यपि हिसा देखाय छे, तो पण फल दयानां छे

७ सातमी व्यवहारदया जे विधिमार्ग अनुयायी जीवदया पाळे, सर्व क्रियाकलाप उपयोगपूर्वक करे ते व्यवहारदया छे

८ आठमी निश्चयदया शुद्ध साध्य उपयोगमां एकत्वनाव, अन्नेद उपयोग, साध्यनावमां एकताज्ञान, ते निश्चयदया आ दयाथी उपरना गुणस्थानकोमा जीव आरोह करे छे, तेथी आ दया उत्कृष्ट छे, इत्यादि अनेक प्रकारथी दयाना स्वरूपविज्ञानपूर्वक, सूत्र, निर्युक्ति, नाष्य, चूर्णी, वृत्ति पचांगी सम्मत, प्रत्यक्षादि प्रमाणपूर्वक, नैगमादि नय, नामादि निक्षेप, सप्तनगी, ज्ञाननय, क्रियानय, निश्चय व्यवहार नय, तथा द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय, इत्यादि उनय नावमां यथावसरें अर्पित, अनर्पित नयनिपुणताथी, मुख्य गौण नावें उनयनयसम्मत, शुद्धस्याद्वादशैलीविज्ञानपूर्वक, श्रीसिद्धातोक्त दान, शील, तप, नावनारूप शुनप्रवृत्ति तेनु नाम शुद्धव्यवहार धर्म कहियें

बीजो निश्चय धर्म ते पोताना आत्मस्वरूपने जाणवु तथा वस्तुना स्वनावने जाणवो, जेम के मारो आत्मा शुद्ध चैतन्य रूप, असंख्यात प्रदेशी, अमूर्त्त, स्वदेहमात्रव्यापी, सर्व पुजलोथी निन्न, अखंड, अलिप्त,

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, सुख, वीर्य, अव्यावाध, सत्चिदानंदादि अनंत गुणमय, अविनाशी, अनुपाधि, अविकारी ठे तेनाथी विलक्षण जे परपुद्गलादि ते मारा नथी. ते पुद्गलना पाच विकार ठे, १ शब्द, २ रूप, ३ रस, ४ गध, ५ स्पर्श आ पांचना उत्तर भेद अनेक ठे आलोकाकाशमां उद्योत, अधकार, शब्द, सर्वरूपी वस्तुनी ठाया, रत्ननी कान्ति, शीत, धूप, नानाप्रकारना रग, रूप, सस्थान, नानाप्रकारना सुगध, दुर्गंध, नानाप्रकारना रस, सर्वससारी जीवोना देह, भाषा, मनना विकल्प, दशप्राण, ठ पर्याप्ति, हास्य, रति, अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, खुशी, उदासि, कदाग्रह, हठ, लडाइ, क्रोधादि चार कषाय, शाता, अशाता, उच, नीच, निद्रा, विकथा, सर्वपुण्य प्रकृति, सर्वपापप्रकृति, रीझ, मोज, खीज, खेद, ठ लेश्या, लाभालाभ, यश, अपयश, मूर्खता, त्रणप्रकारना वेद, कामचेष्टा, गति, जाति, कुल, इत्यादि आठे कर्मना विपाक फल आ सर्व वावतो जीवने अनुभवसिद्ध ठे, अने सूक्ष्मपुद्गल इन्द्रिय अगोचर ठे, ते परमाणु आदि अनेक तरेहना ठे पूर्वोक्त पुद्गलना सयोगथी जीव चारे गतिमां भटके ठे आ पुद्गल मारी जाति नथी, आ पुद्गलनो मारी साथे कांइ वास्तव सवध नथी, आ पुद्गल सर्व त्यागवा योग्य ठे, जे आ पुद्गलनो ससर्ग ठे तेज ससार ठे, आ पुद्गलनी सगतथी ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि गुण वगडी जाय ठे, जे आ पुद्गल द्रव्यनी रचना ठे ते मारा आत्मानो स्वभाव नथी, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल, आ चारे द्रव्य ज्ञेयरूप ठे, परतु हुं ते सर्वथी अन्य हुं, तेउ मारा नहि, हु तेउनो नहि, हु तेउनो साथी पण नहि, हु मारा स्वरूपनोज स्वामी हु, मारो स्वभाव सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्ररूप ठे, वर्णरहित, गधरहित, रसरहित, स्पर्शरहित, चैतन्यगुण, अनंत, अव्यावाध, अनत दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्यादि अनतगुणस्वरूप ठे, तेउनी श्रद्धा, भासन, रमणतारूप चिदानदघन मारो स्वभाव ठे एवो जे मारो पूर्णानद स्वभाव, ते प्रगट करवावास्ते सर्व शुद्ध व्यवहारनय निमित्तमात्र ठे, परतु मुख्य तो मारा स्वभावमा जे रमणता करवी तेज शुद्ध साधन ठे, तेज धर्म ठे इति निश्चयधर्मस्वरूप

आ त्रणे तत्त्वनी जे निश्चल परिणतिरूप श्रद्धा ते सम्यक्त्व कहेवाय छे. जे जीवनें ए प्रमाणे बोध न होय ते जीव जो कदी पक्षपात रहित, एम मनमां धारे के "तं सच्च निस्संकं, जं जीणेहिं पवेइयं इत्यादि" जे जिनेश्वर भगवाने अर्थ कह्या छे ते सर्व निःशंकित सत्य छे, तो तेनी एवी तत्त्वार्थश्रद्धा पण सम्यग्दर्शन कहेवाय छे तेनाथी विपरीत ते मिथ्यात्व कहेवाय छे आ मिथ्यात्वनुं स्वरूप नवतत्त्वस्वरूपमां लखी आव्या छीए त्यांथी जाणवु मिथ्यात्वनो त्याग तेज सम्यक्त्व कहेवाय छे. इति व्यवहारसम्यक्त्वस्वरूप.

हवे निश्चय सम्यक्त्वनु स्वरूप लखीए छीए पूर्वे निश्चय देव, गुरु अने धर्मनुं जे स्वरूप कह्युं छे, तेज निश्चय सम्यक्त्व छे. जे जीव चार अनंतानुबंधी कषाय, सम्यक्त्व मोह, मिश्रमोह, मिथ्यात्वमोह, आ सात प्रकृतिनो उपशम, क्षयोपशम, तथा क्षय करे तेने निश्चय सम्यक्त्व थाय छे निश्चय सम्यक्त्व परोक्षज्ञाननो विषय नथी, केवली जाणी शके छे, के आ जीवने निश्चय सम्यक्त्व छे. आ सम्यक्त्व प्रगट थतां जीवने नरक, तिर्यच, आ बने गतिना आयुनो बंध थतो नथी

हवे सम्यक्त्वनी करणी लखीये छीये सम्यक्त्वी जीव नित्य योगवाइ मलता, तथा शरीरमां व्याधिनो अभाव छते, जिनप्रतिमानां दर्शन कर्या पछी भोजन करे, जो जिनप्रतिमानो योग न मले तो पूर्व दिशि सन्मुख बेसी वर्त्तमान तीर्थकरोनु चैत्यवंदन करे जो रोगादि विघ्नथी दर्शन न थाय तो जेउने आगार छे, तेउना नियमनो भग थतो नथी जिनेश्वर भगवान्ना मंदिरमां दश मोटी आशातना अवश्य वर्जे तेउना नाम १ तंबोल, फल प्रमुख खावानी वस्तु भगवान्ना मंदिरमां खाय नहि, २ पाणी, दुध, छाश, अर्क प्रमुख पीये नहि, ३ भोजन करे नहि, ४ मंदिरनी अंदर उपानह प्रमुख लावे नहि, ५ स्त्री आदि संग मैथुन सेवे नहि, ६ शयन करे नहि, ७ थुके नहि, ८ लघुशंका करे नहि, ९ जंगल (दिशा) जाय नहि, १० मंदिरमां जुगार, चोपट, चित्तरंज प्रमुख खेले नहि. आ दश आशातना टाले, तथा उत्कृष्टी चोराशी आशातना वर्जे वली एक मासमां आटला फुलहार चढावुं, एकमासमां आटलुं घी आपु, एकवर्षमां आ-

टला अगलूहणां आपु, वर्षमां आटलुं केशर, चदन, बरास, कपुरप्रमुख भगवान्नी पूजामां वापरु, धूप, अगरवत्ति उखेवु, अक्षत, नैवेद्य, फल पूजा आ प्रमाणे करुं, धनने अनुसारे वर्षमां आटली अष्टप्रकारी, सत्तर प्रकारी पूजा रचावु, वर्षमा आटला रुपैया साधारणद्रव्यमां खरचु, वर्षमा आटलु द्रव्य पूजावास्ते खरचु, दिनदिन प्रति एक नवकारवाली अर्थात् माला पचपरमेष्ठि मंत्रनी, मोक्षनिमित्त जपु, दिनप्रति रोगना अभाव छते नमस्कार सहित बे घडी दिन चडे त्यासुधी चार आहारनु प्रत्याख्यान करु, रात्रिमां डुविहार प्रत्याख्यान करुं, रोगादिकारणे न थइ शके तो आगार, वर्षप्रति आटला साधर्मी बधुउने जमाडु, ए प्रमाणे सम्यक्त्व पालु, तथा सम्यक्त्वना पाच अतिचार छे ते टालुं ते पाच अतिचानु स्वरूप कहिये छिये

१ प्रथम शका अतिचार जिनवचनमां शका न करवी, कारण के जिनवचन बहुज गंभीर छे, ते सर्वना यथार्थ अर्थ समजावनारा आ कालमां कोइ गुरु नथी, वली शास्त्रो जे छे ते अनतनयात्मक छे तेउमां गणतरी तथा सज्ञा विचित्र तरेहनी छे कोइ स्थले कोडीशब्द क्रोडनो वाचक छे, तो कोई स्थलें रूढी वस्तुवाचक छे, कारण के श्रीचद्रगणि क्षमाश्रमण सर्वसघना सम्मत आचार्य, सघयणनामा पुस्तकमा तथा विशेषणवती ग्रंथमा लखेछे के, कोइक आचार्य कोडी शब्दने क्रोडनो वाचक मानता नथी, परंतु सज्ञांतर मानेछे, वर्तमान कालमा वीशने पण कोडी कहेछे, तथा सोरठ देशमा पाच आनाने पण कोडी कहेछे जेवो आ कोडी शब्दमां मतातर छे, तेवी रीते शत, सहस्र शब्दोपण कोइ संज्ञाना वाचक होय तो काइ दोप नथी वली शत्रुजय तीर्थमा ज्या मुनिउ मोक्ष गयेला छे, त्या पण पांच कोडी आदिशब्दोनी कोइ सज्ञा छे, तेवीजरीते छप्पन कुलकोडी जादव कहेवायछे, त्यापण यादवोना छप्पन कुलोनी कोडी कोइ सज्ञाविशेप छे, एजप्रमाणे शास्त्रोमां सर्वस्थलें चक्रवर्त्तिनी सेना, तथा कोणिक चेटक राजाउनी सेनामा जे कोडी तथा शत सहस्र शब्दो छे, ते संज्ञाविशेपवाचक सभव थायछे, ते कारणथी सर्व शब्दोना सर्वस्थले एकसरखा अर्थ मानवा युक्त नथी आ कथनमा पूज्यश्री जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण पुरा साक्षी आपनारछे

वळी केटलाएक जव्यजीवोए सामान्य प्रकारे एम पण सांजळेलुं छे के पांचमा आरामां उत्कृष्ट एकसो वीश वर्षनु मनुष्यनु आयु छे; ज्यारे ते जीवो कोइ अंग्रेज प्रमुखना मुखथी एम सांजळे छे के दोढसो, बसो तथा अढीसो वर्षनी आयुवाळा मनुष्य जोट्टानादि देशमां विद्यमान छे, त्यारे दृढश्रद्धावाळा, जोळा जीव तो तेउनु कहेवु सत्य मानता नथी, कदापि मोटी आयुवाळो मनुष्य तेउनी सन्मुख लावी उजो राखिए, तो पण तेउ तो ते वात जूठीज मानशे, कारण के तेउ एम माने छे के अमारा जिनेन्द्र देवनु कथन कदापि असत्य नथी, परंतु जेउने जैनमतनी दृढश्रद्धा नथी, अने सांसारिक विद्यामां कांइक निपुण छे, पछी तेउ कदापि जैनमतवाळा होय तो पण, तेउना मनमां अवश्य शका पडी जाय छे, कारण के तेउए पण जैनमतनां सर्व शास्त्र श्रवण कर्यां नथी. सारांश ए छे के शास्त्रमां जे कथन छे, ते सापेक्षक छे, वाहुल्यताथी कहेल छे, ते कथचित् अन्यथा होय तो तेमां आश्चर्य मानवुं नहि, कारण के बहु शास्त्रोमां लखेलुं छे के ज्योतिष चक्र अर्थात् तारामंडळना सर्व तारा मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा दीए छे आ वात सर्व जैनी माने छे, परंतु ध्रुवना तारा कोइ स्थळे फरता नथी, अने ध्रुवनी पासेना ताराउ जे सप्तऋषि रुढिमां प्रसिद्ध छे, जेउने वाळको मंजी, पहेरेदार, कुत्ता, तेमज चोर कहे छे, तथा बीजा केटलाएक तारा ध्रुवनी नजीक छे, ते सर्व ध्रुवनी प्रदक्षिणा फरे छे, परंतु मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा देता नथी, आ विना अमे जाते अनुजवेली छे, अने बीजाउने बतावी शकीए छीए, तो पछी प्रथम जे शास्त्रकारें कहेलुं छे के सर्वतारा मेरुनी प्रदक्षिणा दीए छे, आ कथन जैनी केम सत्य माने छे?

समाधान एम छे के, प्रथमनुं जे कथन छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षाए छे, कारण के बहु तारामंडल एवु छे के ते मेरु पर्वतनी प्रदक्षिणा फरेछे, अने केटलुएक एवु छे के जेउ ध्रुवनीज आस पास चक्र दीए छे आ समाधान पूज्यश्री जिनजद्रगणि क्षमाश्रमणजीए संघयण तथा विशेषणवती ग्रथमा लखेलु छे, एवीरीते के मेरु पर्वतनी चारे बाजुए चार ध्रुवछे, अने ते चारे ध्रुवोनी पासे एका एका ताराउ छे जे निरंतर ते चारे ध्रुवोनीज आसपास चक्र दीए छे. तेथी एम सिद्ध थयु के शास्त्रनुं

जे कथन छे ते बाहुल्यताए तेमज कोइ अपेक्षार्थी संयुक्त छे, अने कोइस्थले स्थूल व्यवहार नयने मते कथन करेलु छे, परतु सूक्ष्म तेमज अधिकन्यूनतानी विवक्षा करेली नथी तेवीजरीतें सो वर्षथी अधिक आयु जे पचम कालमां कहेलु छे, ते बाहुल्यतानी अपेक्षा तथा आर्यखड अर्थात् मध्यखडनी अपेक्षा छे, जो कोइ मनुष्यनुं दोढसो, बसो, तेमज अढीसो वर्षनु आयुष्य थइ जाय तो मनमा जिनवचन माटे शका न करवी, जेमके कोण जाणे जिनवचन सत्य हशे के असत्य हशे ? हेतु ए छे के शास्त्रना आशय अति गभीर छे, अने वर्तमानमा यथार्थ बतावनारा गीतार्थ गुरु कोइ नथी

आयुनी बाबतमा समाधान एम छे के भगवान् श्री महावीर स्वामिना निर्वाण पछी (५७५) वर्षे लगभग जैनमतना आचार्य श्री आर्य रक्षितसूरि नवपूर्वना पाठक थया तेमनी पासे शक्र इन्द्र निगोदना जीवनु स्वरूप श्रवण करवा आव्या शक्र इन्द्रे प्रथम वृद्ध ब्राह्मणनु रूप धारण करीने श्रीआर्यरक्षित सूरिजीने पुच्छ्यु, हे भगवन् ! हु वृद्ध थयो छुं, जो मारु आयुष्य थोडु होय तो मने कृपा करी बतावो, जेथी हु अनशन करुं, ते सांभली सूरिजीए दशमा पूर्वना यवका अध्ययनमा उपयोग दइने जोयु तो तेनु आयुष्य सो वर्षथी अधिक मालम पड्यु, फरी उपयोग देतां बसो वर्षथी अधिक जाणवामां आव्युं, फरी उपयोग देता त्रणसो वर्षथी अधिक जणायु, ते वखते सूरिजीए विचार कर्यो के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी आ कथानक आवश्यक सूत्रनी सामायक अध्ययननी उपोद्घात निर्युक्तिमां छे आ कथानकथी एम साबीत थाय छे के भारतवर्षना मनुष्यनु आयुष्य त्रणसो वर्ष सुधीनुं होय तो आश्चर्य नहि, कारण के श्री आर्यरक्षित सूरिजीए वृद्ध ब्राह्मणनु आयु त्रणसो वर्षथी अधिक देख्यु त्यारे कह्यु के आ भारत वर्षनो मनुष्य नथी आ कथनथी कथचित् त्रणसो वर्षसुधीनु आयुष्य भारतवर्षमां मनुष्यनु होय तो शु आश्चर्य छे ?

केटलाएक मनुष्यना मनमां एवी पण शका छे के जैनमतवाला भरतखड क्या सुधी माने छे ? आ कालमां जे कांइ लोकोना देखवामां अथवा साभलवामा आवे छे के अमेरीकादि देश तेमज रूशीआ तथा

चीनादि देश जारतवर्षमां गणाय के नहि? समाधान मात्र एटलुज ठे के अमेरिका तथा विलायतादि सर्वमुलकोनी वचमां जे समुद्र पडेला ठे ते ऋषजदेव तेमज जरत चक्रवर्त्तिना समयमां हता नहि, परंतु जगती वहार जे महासमुद्र ठे तेज हतो ते कारणथी अर्थात् समुद्र अदर आवी जवाथी असल जरतक्षेत्रनु स्वरूप वगडी गयु, केटलाएक जाग समुद्र थइगयो, अने केटलाएक द्विपो वनी गया.

आ वावतमां जैनमतना शत्रुंजय माहात्म्यनामा ग्रथमां लख्यु ठे के सगरनामा वीजा चक्रवर्त्ती जारतवर्षमां आ समुद्रने जबूद्वीपनी दक्षिणदिशाना विजयतनामा दरवाजाना रस्तेथी लावेल ठे, तेम लाववाथी वर्वरादि हजारो देश तो जलमां डुवी समुद्रनी जूमि वनी गया, जे जे उंचा देशो हता ते विलायतादि द्वीपो वनी गया. असल देशोनां नाम नष्ट थवाथी वहु देशोनां नाम कल्पित राखवामां आव्यां, अने जरत खडनुं स्वरूप तद्दन फरीगयु, केटलाएक देशोनी चारे वाजुए समुद्रफरी गयो, केटलाएक देशोना उत्तर जागमां वरफ पडवाथी, तेमज समय वदलाइ जवाथी, सर्वथा पाणी जामी गयुं, तेमज समुद्रसाथे मलीगयु, तेथी चारे वाजुए समुद्रज देखाय ठे गमनागमन पण तेज कारणथी वंध थइगयां शास्त्रकारें तो प्रथम आरामां तथा ऋषजदेवजी अने जरत चक्रवर्त्तिना समयमां जारतवर्षनुं जे स्वरूप हतु तेज प्रमाणे अद्यापि पर्यंत वतावेलुं जणाय ठे, परतु जारतवर्षनु स्वरूप वगडीने कांइनुं कांइ स्वरूप केवीरीतें थइगयुं तेनु विस्तारथी वर्णन यथार्थ रीतें करेलुं देखवामां आवतु नथी. कदापि कोइए लखेलु हशे तो पण जैनमतनी उपर एवी एवी मोटी विपत्तिउं पडेली ठे के तेथी लाखो तो शुं वलके क्रोडो ग्रथ नाश पामी गया ठे, ते कारणथी आ स्थलें सर्ववृत्तांत यथार्थरीते वतावी शकतो नथी, परंतु जैनमतना जेटला ग्रंथ मारा वांचवामां आव्या ठे, तेउमांथी पण मने जे ठीक लाग्यु ठे ते आ ग्रथमां मे लखेलुं ठे

सर्वक्षेत्र ते प्रमाणे अदल वदल थइ गयां, गंगा, सिंधु असल स्थान वहेती वहेती रही गइ. आगलनो प्रवाह समुद्रे रोकी लीधो, अने पाठलथी पाणी आववु वध थइ गयु वाद जे पर्वतथी अधिक नदीनी प्र-

वृत्ति थइ ते नदी ते पर्वतथी निकलती लोकोए मानी लीधी गंगा अने सिंधुमां क्षुल्लक हेमवत पर्वतथी जल आववु बंध थइ गयु, नाममात्र सिंधु रही गइ. नगरीओमां वनिता नगरीनी कल्पनापर अयोध्या मानी, अने काबुलमा तक्षिला अर्थात् बाहुबलनी नगरीनी कल्पना करी, जेनु नाम गिजनी प्रसिद्ध छे, ते तक्षिला पण आज रही नथी कारण ए छे के जैनिओनी श्रद्धा अनुसारे प्रथम आराने तेमज ऋषभदेव अने भरत राजाना समयने व्यतीत थयां असंख्य वर्ष थइ गयां छे, तो ते दरमीआन देश, पर्वत, नदी, नगरादि उलट पालट थइ जाय तेमां शुं आश्चर्य छे!

वली समुद्रनु देशो उपर फरवु तो तौरेत ग्रंथथी पण ठीक ठीक सिद्ध थाय छे. पुराणादि ग्रंथोमां पण लखेलुं छे के कोइ एवो समय हतो, जे वखते समुद्रमां पाणी नहोतु, पाछलथी आवेलु छे ते कारणथी शत्रुंजय माहात्म्यमा जे लखेलु छे के भरतक्षेत्रमा सगर चक्रवर्ती समुद्रनु पाणी लाव्या छे, ते कहेवु वास्तविक लागे छे.

श्रीतपगछना आचार्य विजयसेन सूरिपण पोताना प्रश्नोत्तरमां लखे-छे के मागध, वरदाम अने प्रभासनामना त्रण जे तीर्थ छे, ते जगतीनी बहारना समुद्रमां छे, तेथी पण सिद्ध थाय छे के भरत चक्रवर्त्ती छ खंड साधवा तेमज मागधादि तीर्थ साधवा गया हता, त्यारे आ समुद्रनु पाणी रस्तामा नहोतु, अने शास्त्रकारोए तो सर्व शास्त्रोनी शैली श्री ऋषभदेवजीना समयानुसार राखेली छे, ते कारणथी चक्रवर्ती तमामनां कथन भरत चक्रवर्ती सदृश वर्णन करेल छे

आ कालमां केटलाएक विद्वानोए भूगोलना हिसावथी पृथ्वीनु स्वरूप लखेलु छे, तथा ते अनुसारें शरद् तथा गरम देशोना विभाग करेला छे, ते जोता, अगर जो के तेओना देखवा, सांभलवा, तथा अनुमान मुजब वर्तमान समयमा ए प्रमाणेज हशे, परंतु सदा काल एमज हतु, एम कहेवु वास्तविक नथी भूगोल हस्तामलक पुस्तकमा लखेलु छे के रुशीआना उत्तर भागमां ज्या बरफ शिवाय बीजु कांइ छे नहि, त्या गरमीना दिवसोमा बरफ गलवाथी तथा केटलाएक स्थले बरफना ढग ढली पडवाथी तेओनी नीचेथी एक जातना हाथी निकले छे, हाथी पण सेंकडो निकले छे, जेनु नाम ते देशवाला मेमाथ कहे छे मोटु आ

श्चर्य तो ते मेंमाथोने देखवाथी ए लागे छे के ते जानवर गरम मुलकना रहेनारां छे, तेउं आ शरद्मुलकमां क्यांथी आव्या ? तेउंने खावावास्ते पण त्यां कांइ नथी आ कालमा जो एकपण हाथी ते मुलकमां लही जइ वांधीए तो थोडा वखतमां ते मरी जाय, उतां लाखो मेंमाथ ते मुलकमां क्यांथी जाता हशे ? तेमज शुं खाता हशे ? ते वावतमां मात्र एज खुलासो आपी शकाशे के कोइ समयमां ते मुलक गरमदेश हशे, वाद पवननी तसीर वदलावाथी शरद् मुलक थइ गयो आ वृत्तांतथी एम सिद्ध थाय छे के शरद् मुलक कोइ कालमां गरम थइ जाय छे,अने गरम मुलक शरद् थइ जाय छे, ते कारणथी जूगोलने अनुसारें शरदी, गरमीनी अवस्थानी जे कल्पना करवी, ते हमेशांने वास्ते डुरस्त नथी शु जाणीये देशोनी केवी केवी व्यवस्था वदलाइ चुकी छे ? अने हजी शु वदलावानी छे ? जूस्तरवेत्ताउं लखे छे के आफ्रिका खंडना मध्यजागमां आवेलुं शहरानु रेतीनु मोटुं रण जे हाल घणुंज उंचाणमां छे ते एकवखत महासागरनु तलीयुं हतुं. ते कारणथी जमिननी स्थितिनु पुरुं स्वरूप तो मात्र सर्वज्ञ जाणी शके छे.

वली आ पृथ्वीने जूगोल कहेवामां आवेछे, वली एम पण कहेवायछे के सूर्य फरतो नथी, परतु पृथ्वी सूर्यनी आसपास फरेछे आ वात अंग्रेजोएज शोधेली नथी परंतु अंग्रेजोनी पहेला पण आ वातना माननारा जारतवर्षमां हता, कारण के जैनमतना शीलंगाचार्य जे विक्रमना ७०० वर्ष लगजग थया छे, तेउं श्री आचारांगसूत्रनी वृत्तिमा लखेछे के, केटलाएक एम पण मानेछे के पृथ्वी गोल फरेछे अने सूर्य स्थिर रहेछे, परंतु आ मत जैनिउंनो नथी. जैनमतना शास्त्रोमा तो प्रगट लखेल छे के सूर्य चालेछे, अने पृथ्वी स्थिर रहेछे, वली सूर्यने फरवानां एकसो चोराशी मन्फल आकाशमा छे, ते मंन्फलोमां प्रवेश करवो, तथा दिनमान, रात्रिमानी वधघट थवी, तथा ऋतुउंनु वदलावुं, ग्रहणनु लागवुं, सूर्यना अस्त उदयमा मतोना विवाद, इत्यादि अनेक वात, सर्व सूर्यप्रज्ञप्ति वा चन्द्रप्रज्ञप्ति शास्त्रो अध्ययन करवाथी मालम पडेछे.

वली पृथ्वीने गोल सावीत करवामा समुद्रमां चालता वहाणना तलीयांने वदले वहाणना शढमात्र दूरजतां मालम पडेछे, इत्यादि जे जे कारणो

वतावेछे, ते ते कहेवावालाउंनी समजमां जेम जेम आवतुं हशे तेम तेम वतावता हशे, परंतु अमारी समजणमां एम आवेछे के, नेत्रमां एवीज योग्यता छे, जेथी वस्तुनी गोलाइज मालम पडे, कारण के ज्यारे अमे लांवी तथा सरखा स्थलवाली सीधी सडक उपर उना रहीए छीए, त्यारे अमारा पगनी जगाए सडक पहोली मालम पडेछे, अने ज्यारे दूरनो ते सडकनो नाग देखिये छियें त्यारे सडक साकडी मालम पडेछे वली तेज स्थलें आकाशमा मस्तकनी उपर सीधी लींटीए पक्षीने उंचे उडता देखिये छिये, त्यारे जेटली उचाइये दूर उडतु अमने लागेछे, तेज पक्षिने ज्यारे सीधी लींटीमां थोडे दूर जइ उडतां देखिये छिये, त्यारे ते पक्षी पृथ्वीनी वहु नजीक देखाय छे. मात्र आटला अतरना तफावतमां पृथ्वीनी एवी मोटी गोलाइ केम होय ? वली आकाशने ज्यारे देखिये छिये त्यारे घुमट जेवु देखायछे, ते वावतमा जे कोइ एम कहे के धरतीनी गोलाईना सववथी आकाशपण गोल देखाय छे, आ कहेवु वास्तविक नथी, कारण के, पृथ्वी थोडाज दूरमा एटली गोल थइ शकती नथी, ते कारणथी नेत्रोमां जे वस्तुने जाणवानी जेवी योग्यता छे तेवीज ते वस्तु देखाय छे एम कहेवु वास्तविक लागे छे

वली आ पृथ्वी, नरतखडनी वहु स्थले उंची, नीची मालम पडे छे, कारण के श्रीहेमचद्रसूरि प्रमुख आचार्य पद्मप्रनचारित्रादि ग्रथोमां लखेछे के लकाथी अमुक योजन पश्चिम दिशातरफ जइए तो आठ योजन नीचे पाताललका छे, जो ते योजन प्रमाण योजन होय तोतो शा माटे अमेरिकाज पाताललंका न होय ? वली नीची जगा होवाथी बुद्धिमानोने पृथ्वी गोल मालम पडती होय ते पाताललंकानी जेम वीजी जगाए पण धरती उची नीची होय तो तेमां शु आश्चर्य छे ? कारण के पश्चिम महाविदेहनी धरती एक हजार योजन उडी शास्त्रमां लखेली छे, तेवीजरीतें वीजी जगाए पण धरती उची नीची होवाथी कांइनु काइ मालम पडे, ते कारणथी जैनमतिए श्री अरिहत नगवंतना कथनमा शका न करवी जोइए

केटलाएक पुस्तकोमा लखेलु अमे वांचेलु तेमज सानलेलु पण छे के अमेरिकादि मुलकोमां एवी विद्या फेलायली छे के, जेथी वे हजार वर्ष

अगाउ जे मनुष्यो मरण पाम्या छे तेउने हाल, बोलाववामां आवे छे, वली तेउने ते वखतनो सर्व हेवाल पूछवामां आवेछे, त्यारे तेउ सर्व पोतानी व्यवस्था बतावेछे परंतु मात्र परोक्ष रीतें शब्द श्रवण तेउ करावेछे, प्रत्यक्ष तेउ देखाडता नथी, तथा अनेक तरेहना बीजा पण तमासा तेउ देखाडेछे, जे देखवाथी अल्पबुद्धिमानोनी बुद्धि अस्तव्यस्त थइ जायछे, अने तेउना मनमां अनेक शंका, कखा उत्पन्न थइ जायछे, जे कारणथी अर्हतकथित धर्ममा अनादर थइ जायछे, कारण के जेम ते जीवोए जैनमतना पुरां शास्त्रो वाच्यां नथी, तेम श्रवण पण कर्यां नथी, जेथी तेउना मनमां जलदी अधीरज पण थइ जायछे, परंतु पोताना मतनां सर्व पुस्तको वांच्या तेमज सांजल्या विना मात्र तुछ वस्तुने वास्ते एकवार जैनधर्ममां शंका लाववी ते दीर्घदृष्टिपणुं नथी पूर्वोक्त सर्व वृत्तांत इन्द्रजालनी पूर्णविद्या जेउने आवडती होय तेउ बतावी शकेछे मे अमुक ग्रंथमां लखेलुं वाच्यु छे के, कुमारपाल राजाना समयमा बोधिदेव नामनो एक ब्राह्मण हतो, तेणें कुमारपाल राजानी श्रद्धा जैनमतथी हगाववा वास्ते, कुमारपालनी अगाउ तेना वंशना मूलराज आदि जे सात राजाउ थइगया हता तेउने नरक कुंडमां पडेला, विलाप करता, ए प्रमाणे कहेता देखाड्या के हे पुत्र! जे दिवसथी तें जैनधर्म अंगीकार करेलो छे, ते दिवसथी अमे तारा सात वडवाउ नरक कुडमा पडेला छीए, जो तु अमारु जलु चहातो हो तो जैनधर्मने तजी दे आवी बीना देखीने कुमारपाल राजा पोताना चित्तमां गजराया, तत्काल जइ पोताना गुरु श्री हेमचन्द्र आचार्यने सर्व वृत्तांत कही पुछ्युं के हे महाराज! आनो शु हेतु छे? आचार्यजीए कह्युं के हे राजेन्द्र! आ सर्व इन्द्रजालनी विद्या छे, आवो हु पण तमोने कांइक तमासो देखाडु त्यार बाद राजाने मकाननी अन्दरना जागमां लइ जइ, चोवीश तीर्थंकर समवसरणमां जुदा जुदा बेठा छे, अने कुमारपाल राजाना तेज सात पुरुषो तीर्थंकरोनी सेवा करे छे, तेमज कुमारपालने कहे छे के हे पुत्र! तु मोटो पुण्यात्मा छे के जेणें जैनधर्म अंगीकार करेल छे जे दिवसथी तें जैनधर्म अगीकार करेल छे, तेज दिवसथी अमे नरक कुडमांथी निकली स्वर्गवासी थया छीए, ते कारणथी हे जाइ! तु जैनधर्ममां दृढ रहे जे. त्यार बाद श्री हेमचन्द्र

सूरि कुमारपाल राजाने बहार लाव्या राजायें पुच्छु के महाराज! तमासो बहुज आश्चर्यकारी ठे सूरिजीए कह्युं के हे राजन्! इन्द्रजालनी विद्या जेउने आवडती होय, ते एम करी शके ठे. इन्द्रजाल विद्यानां सत्तावीश पीठ ठे, तेमांथी सत्तर पीठ शसारमां प्रचलित ठे, परंतु सत्तावीशे पीठ हु जाणु छुं, हाल बीजो कोइपण जारतवर्षमां जाणतो नथी, अने जे गुरुउंए अमने ते विद्या आपी हती, तेमणें एवी आज्ञा पण करेली ठे के, जविष्यमां आ विद्या तमारे कोइने पण देवी नहि, कारण के आ विद्याथी मोटो अनर्थ उत्पन्न थशे, सारांश के आ कालमां जीव तुछ बुद्धिवाला होवाथी तेउने आ विद्या जरशे नहि, वली तेज कारणथी अमारा आचार्योए योनिप्राजृत शास्त्र विछेद करी दीधेलां ठे, ते योनि प्राजृतने अनुसारें आ इन्द्रजाल रची शकाय ठे आ योनिप्राजृतनु कथन व्यवहार जाप्यचूर्णीमां करेलु ठे, ज्यां लख्यु ठे के आ योनिप्राजृतमां तंत्रविद्या ठे, जेनाथी सर्प, घोडा, हाथी विगेरे जीवता जानवर, वस्तुउना मेलापथी बनी शके ठे, तथा सुवर्ण, मणि, रत्न प्रमुखपण बनी शके ठे आ मशालामांज एवी मिलनशक्ति ठे के मरजीमा आवे ते बनावी ल्यो? ते कारणथी वर्त्तमानमां नवीन वस्तुने देखीने कोइए जैनधर्मथी चलायमान न थवु जोइए. तत्त्वार्थना महाजाष्यमां सामतजद्र आचार्य पण लखे ठे के इन्द्रजालीआ तीर्थंकरनी समान बाह्यरूद्धि सर्व बनावी शके ठे, ते कारणथी कोइ बाबतमा चमत्कार देखी जिनवचनमा शका न करवी

वली केटलाएक जैनमतवालाउंने आ पण आश्चर्य ठे के, ज्यारे आर्यावर्त्तमा बे प्रहरदिन होय ठे, त्यारे अमेरिकामां अर्धरात्रि होय ठे, अने ज्यारे अमेरिकामा बे प्रहर दिवस थाय ठे, त्यारे आर्यावर्त्तमां अर्धरात्रि थाय ठे, ते बाबतना चोकस समाचार तारनी मददथी तेमज घडीआलना साधनथी मेलवी शकाय ठे आ वातनो यथार्थ उत्तर हु आपी शकु तेम नथी मारी श्रद्धा एवी पण नथी के पूर्व आचार्योनी शाहादत शिवाय समाधान करुं, कारण के मात्र मारी कल्पनाथी काइ जैनमत सत्य थइ शकतो नथी, जैनमत तो पोताना स्वरूपथीज सत्य बनशे, जो मारी कल्पनाज जैनमतनी सत्यतानु कारण होय तो, कोइ

पूर्वाचार्यनी अपेक्षाज रहेशे नहि, वली जेना मनमां जे अर्थ सारो लागशे ते अर्थ बनावी लेशे जेम वर्त्तमानमां कोइ पाखंडी मस्कराए ऋग् आदि वेदो उपर स्वकपोल कल्पित टीका बनावेली छे, ते अमे वांची पण छे तेउंए वेदमंत्रादि उपर जे भाष्य बनाव्यु छे, ते मंत्रोना अर्थमां एवुं लखेलुं छे के "अग्निबोट" अर्थात् बरालयंत्रथी चालनारां वहाण, तथा रेलगाडी चालवानो विधि, तथा पृथ्वी गोल छे, ते सूर्यनी चारे बाजुए फरे छे, अने सूर्य स्थिर छे, इत्यादि अंग्रेजोए पोतानी बुद्धिना बलथी जे नवीन शोधनी विद्या बहार पाडी छे, ते सर्व विद्याउंनु वेदोमां कथन छे. पोताना शिष्योने वेदनुं महत्त्व बतावबा वास्ते स्वकपोलकल्पित अर्थ बनावी लीधा छे, अने पूर्वे महीधरादि पंडितोए वेदो उपर जे दीपिका तथा भाष्यो रचेलां छे तेउंनी निंदा तेमज मूर्खता प्रगट करेली छे. जेमके तेउं मूर्ख हता, तेउंने वेदना अर्थ आवडता न होता.

प्रश्नः–पूर्वना अर्थ छोडीने नवीन अर्थनी रचना करवानुं शुं कारण छे?

उत्तरः–प्रथम तो वेदो उपरनां प्राचीन भाष्य, तेमज दीपिका मानवाथी वेदोनी सत्यता, ईश्वरोक्तता तेमज प्राचीनता सिद्ध थती न होती ते कारणथी ईशावास्य उपनिषद् वर्जीने, सर्व उपनिषदो, सर्व ब्राह्मण भाग, सर्व स्मृति, पुराणादि शास्त्र, भाष्य, दीपिकादि मानवां तजी दीधां, तेमणे एवो विचार कर्यो के पूर्वोक्त सर्व ग्रंथो मानवाथी अमारो मत बीजा मतवाला खंडित करी देशे, कारण के पूर्वोक्त सर्व ग्रथो युक्ति प्रमाणथी विकल छे, वली प्राचीनोए जे अर्थ करेला छे, तेमां केटलाएक अर्थ एवा छे के जे श्रवण करवाथी श्रोताजनोने लज्जा उत्पन्न थाय छे, कारण के महीधरकृत दीपिका जे वेदनी टीका छे, तेमां मंत्रादिना जे अर्थ लखेला छे, तेमां लख्युं छे के यज्ञपत्नी घोडानुं लिंग पकडीने पोतानी योनिमां प्रक्षेप करे, इत्यादि अर्थ छे तेनु वर्णन आगल उपर लखीश. ते अर्थोने छोडवावास्ते, अने वेदोनु खंडन न थाय ते वास्ते स्वकपोल कल्पित भाष्य बनावी अंग्रेजादि पाश्चिमात्यनी रीतिमुजब तथा इंजिल मतानुसार अर्थ बनाव्या छे, परंतु वेदादिवेत्ता बुद्धिमान् पुरुषो तो कोइ ते मानता नथी, अने जेउं माने छे तेउं कांइ

वेदादि जाणता नथी, कारण के ज्यारे पूर्वेना ऋषि मुनि, पंडित अ सत्यवादी तेमज तेउंना बनावेला अर्थ असत्य ठे, त्यारे वर्त्तमानना ब नावेलाउंना अर्थ केवीरीतें सत्य करी शकशे ? जे मूलमांज असत्य ठे ते नवीन रचनाथी कदापि सत्य थवाना नथी ते कारणथी पोतानी बु द्धिनो विचार सत्य मानवो, अने वेदोने माननारा प्राचीन सप्रदाय वालाना अर्थ जूठा मानवा, तेनाथी अधिक अविवेक तथा अन्याय शि रोमणि पण वीजुं कयु ठे ? वली ज्यारे प्राचीनोना बनावेला अर्थ जूठ करशे, त्यारे तेउंना बनावेला वेदो पण जूठाइ ठरशे, ते कारणथी जेउ मतधारी ठे, तेउंए कां तो पोताना प्राचीनोना कथन करेला अर्थ मा नवा जोइए, अथवा तो ते मतने तेमज तेमतनां शास्त्रने तजी देव जोइए, अने तेज कारणथी मारी एवी श्रद्धा ठे के जैनमतमां जे प्रा माणिक तेमज पचांगी कारक आचार्य लखी गया ठे तेउंने अनुसारज मारे कथन करवु जोइए, स्वकपोलकल्पित कदापि नहि जे स्वकपोल कल्पित करशे तेमज मानशे, ते कदापि जैनमतवालो बनी शकशे नहि अने तेनी कल्पना पण सर्वथा सत्य ठरशे नहि, कारण के पूर्वाचार्य ज्यारे जूठा ठे, त्यारे नवीन कल्पनावाला केवीरीतें साचा ठरशे ? ते सर्वे कारणथी पूर्वेना प्रश्ननो उत्तर पंचांगी प्रमाणथी हुं आपी शकतो नथी, कारण के १ शास्त्रो बहुज विछेद गया ठे, तथा २ आर्यरक्षितसू रिना समयमां चारे अनुयोग तोडीने पृथक् पृथक् अनुयोग रचवामां आव्या ठे, तथा ३ स्कंधिल आचार्यना समयमा बार वर्ष सुधी छुकाल पड्यो हतो ते वखतमां शास्त्रो बहुज विस्मृत थवा लाग्या, जेथी सर्वे साधुउंए दक्षि ण मथुरामां समाज करी, जे प्रसगे जे जे आचार्य तथा साधुउंने जे जे शास्त्रना जे जे स्थल, स्मृतिमां रह्यां हतां ते ते स्थल एकत्र करी लखवामां आव्यां, बाद ४ देवर्द्धिगणि क्षमा श्रमण प्रभृति आचार्योए पानाउपर एक क्रोड ग्रंथो लख्या, बाकीना तजी दीधा, ५ प्रभावकचारित्रमां लख्यु ठे के, सर्वे शास्त्रो उपर टीका लखी हती, जे सर्वे विछेद गइ, तथा ६ ब्राह्मणो अने बौद्धोए तो ग्रथोनो बहुज नाश कर्यो, तथा ७ मुसलमानो ए पोताना समयमा सर्वमतना शास्त्रो माटीमा मेलवी दीधां, अनेक स- लगावी दीधां, शेष रह्यां ते भंडारोमां गुप्त रहेवाथी गलीगयां, अने व-

र्त्तमानमां जे ज्ञंडारोमां पडेलां ठे, ते सर्व अमे वांचेलां नथी, आटला आटला उपद्रवो जैनशास्त्रो उपर वीतवाथी अमे सर्व शंकाउंनुं केवी रीतें समाधान करी शकीए ? ते कारणथी जैनमतमां शंका न करवी. अमे सर्व मतनां शास्त्रो अवलोकन करेलां ठे, परंतु जैनमतसमान अति उत्तम मत बीजो कोइपण मारा देखवामां आव्यो नथी, तेथी आ मतमां दृढ रहेवु जोइए १ शंका अतिचार ते कहेवाय ठे, जेम के जिनवचनोमां शंका करवी अर्थात् जिनेश्वर ज्ञगवानें कथन करेला ज्ञाव सत्य हशे के नहि ? आ प्रथम अतिचार ठे.

२ बीजो आकांक्षा अतिचार अन्यमतवालाउंनां अज्ञानकष्ट देखी, तेमज कोइ पाखंडीना विद्यामंत्रना चमत्कार देखी, तेमज पूर्वजन्मना अज्ञानकष्टथी फल पामेला अन्यमतवालाउने सुखी तेमज धनवान् देखी मनमां विचारे के अन्यमतवालाउंना धर्म तथा ज्ञान सारां ठे, जेना प्रज्ञावथी, तेउ धनवान्, सुखी, तथा पुत्रादि परिवारवाला थाय ठे, ते कारणथी हु पण तेउंनोज धर्म अंगीकार करुं, जेथी हुं पण धनवान् तेमज पुत्र परिवारवालो थाउं. आकांक्षा अतिचार तेज जीवोने लागेठे, जे जीवोने जैनधर्मनो बहुज सारी रीतें बोध होतो नथी. कारण के जैनधर्मवाला पण सर्व दरिद्री तथा पुत्रादि परिवारथी रहित नथी, तेमज अन्यमतवाला पण सर्वे धनवान् तेमज परिवारवाला नथी, सारांश के सर्व पोतपोतानां पूर्वनां तथा जन्मांतरनां करेलां पुण्य पापनां फल ज्ञोगवे ठे. जुउ के केटलांएक, मनुष्यजन्ममां साते कुव्यसननो सेवनारां ठतां धनवान्, अने केटलांएक कसाइ, खाटकी इत्यादि नीचधंधानां करनारां पण धनवान् तेमज पुत्रादि परिवारवालां तेमज सुखी ठे, अने केटलाएक आ अवस्थाथी विपरीत ठे, ते कारणथी मात्र तेज सत्य ठे के दरेकजीव पोताना पूर्वना तेमज जन्मांतरना सुकृत डुष्कृतनुं फल ज्ञोगवे ठे, मात्र आ जन्मनां कृत्योनुंज फल ज्ञोगवता नथी. सर्व मतोमां राजाउ थइ गया ठे, तेमज रंक पण बहुज ठे, ते कारणथी बीजा मतनी आकांक्षा न करवी. जो करी ए तो बीजो अतिचार.

३ त्रीजो वितिगिठा नामे अतिचार ठे जे जीव पोतानां पूर्वजन्मनां करेलां पापोना उदयथी डुःख ज्ञोगवे ठे, त्यारे एवो विचार करे

के हु जे धर्म करुं छुं, तेनुं फल मने शुं मलशे ? अर्थात् धर्मनुं फल मने मलशे के नहि ? वली जेउ धर्म करता नथी, तेउ सुखी छे, अने हुं धर्म करु छुं, छतांपि दुःखी छुं, ते कारणथी कोण जाणे धर्मनुं फल हशे के नहि ? तथा साधुनां मलिन शरीर तथा मलिन वस्त्र देखीने मनमां दुगछा करे के आ साधु सारा नथी, कारण के तेमनु शरीर गंदुं छे तथा तेमना वस्त्र पण गदां छे तेउ संसारथी केवी रीते तरी शकशे, जो तेउ उष्णजलथी स्नान करे तो तेथी कयु महाव्रत तेउनु भग थाय छे ?

उत्तर –जो धर्मनु फल न होय तो, संसारनी विचित्रता कदापि न होय, ते कारणथी धर्मनु फल अवश्यमेव छे वली साधु जे मलिन वस्त्र राखे छे, तेनु कारण ए छे के सुदरवस्त्र राखवाथी मन शृगार रसने चढाय छे. वली स्त्रियो पण सुंदर वस्त्रवालाउने देखीने तेउनी साथे भोग भोगववानी इच्छा करे छे ते कारणथी शियल पालवानी इच्छा राखनारा साधुए शृंगार करवो वास्तविक नथी. वली स्नान, कामनु प्रथम अग छे, तेथी साधुउने उचित नथी, अने कोइ कारण प्रसगे साधु हाथ, पगादि धोवे तो ते कांइ दूषण नथी, वली साधुउने पोतानां शरीर उपर ममत्व पण नथी, अने शुचिमात्र स्नान तो साधु करे छे परंतु शरीरना सुखवास्ते तथा शरीरने चमकाववा वास्ते स्नान करता नथी, कारण के जैनिउनी एवी श्रद्धाज नथी के स्नान करवाथी पाप दूर थइ जाय छे जलस्नानथी शरीरनो मेल दूर थाय छे, शरीरनो ताप मटी जाय छे, अने आलस दूर थाय छे, परंतु पाप तो दूर थतु नथी, जो जल स्नानथी पाप दूर थतु होय तो, अनायासें सर्व जीवनी मुक्ति थइ जाय, कारण के एवु कोइ नथी जे जल स्नान करतु नथी वली साधुने मेला समजवा, ते पण मोटी मूर्खता छे, कारण के शरीरे मेल होवाथी आत्मा मलिन थतो नथी आत्मातो मात्र पापकरवाथीज मलिन थाय छे वली जगत् व्यवहारमां मेलापणु स्त्री साथे सभोग करवाथी, तेमज कोइ मलिन वस्तुनो स्पर्श करवाथी मानवामां आवे छे, अने साधु तो ते सर्व वस्तुना त्यागी छे, तेथी मेला कहेवाय नहि, बलके साधुउने धन्यवाद देवो जोइए, केमके ताप पडे छे, लू वाय छे, पसीनो वहे छे, छतापि साधु उघाडा पगे तेमज खुल्ले मस्तके विहार करे छे, रात्रियें मात्र छाजेला मकानमा सुवेछे,

पंखा करता नथी, कोमल शय्या तेमज पलंग पर सुता नथी, रात्रिए जलपण पीता नथी, दिवसेंपण उष्ण जल पीये छे, आ प्रमाणे तेउनुं ज्ञारे तप छे. तेउथी उलटा जेउ साधु बनी बेठा छे, अने गरमी लागे त्यारे पाडानी पेठे सरोवरमां जइ पडे छे, एवा सुखशीलिआ शुं तरी जशे ? जेउने कोइ वातनो नियम नथी वली हाथी, घोडा, रेल प्रमुखनी स्वारि करवी, सर्व प्रकारनां फलज्ञक्षण करवां, धन राखवां, मकान बांधवां, खेती करवी, कराववी, गाय, ज्ञेस, हाथी, घोडा प्रमुख जानवर तथा रथादि अने शस्त्रादि सरंजाम राखवा, छल, बलथी लोको पासेथी धन लेवां, स्त्रीउं साथे विषयसेवन करवां, सुंदर खानपान करवां, मांसज्ञक्षण करवां, मदिरापान करवां, ज्ञांगना रगडा, चरसनी चलमो उडाववी, हाथपग तथा शरीरने वेश्यानी जेम चमकाववां, चित्तमां मोटा अज्ञिमान राखवां, दंड पीलवा, कुस्ती करवी, इत्यादि अनेक साधुउने अनुचित कामो करवां, छतां श्री श्री स्वामिजी महाराज बनीठणी बेसवुं, अमे महंत छइए, अमे गादिपति छइए, अमे ज्ञट्टारक छइए, अमे श्रीपूज्य छइए, अमे जगत्नो उद्धार करीए छइए, अमे महान् अद्वैतब्रह्मवेत्ता छइए, अमे शुद्ध ईश्वरनी उपासना बतावीए छइए, अमे मूर्त्तिपूजन पाखडनो नाश करीए छइए

हवे ज्ञव्य जीवोए विचार करवो जोइए के, पूर्वोक्त कुगुरुउं शुं जल स्नान करवाथी संसार समुद्रथी तरी जशे ? अने जेउं, जीवहिंसा, असत्य, चोरी, मिथुन तेमज परिग्रह, आ पांचेना त्यागी, शरीरना ममत्वरहित, प्रतिबंधरहित, कामक्रोधना त्यागी, महातपस्वी, मधुकर वृत्तिथी ज्ञिक्षा लेनारा, इत्यादि अनेक गुणोथी सुशोज्ञित, शु जल स्नान नहि करवाथी पातकी थइजशे ? कदापि थशे नहि ते कारणथी साधुउने देखी जुगुप्सा न करवी, जो करे तो त्रीजो अतिचार

चोथो मिथ्यादृष्टिनी प्रशसारूप अतिचार छे. जिनप्रणीत आज्ञाथी जे बहार छे ते मिथ्यादृष्टि छे, कारण के सर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो ते मानता नथी, अने असर्वज्ञनां कथन करेलां वचनो सत्य माने छे, वली असर्वज्ञप्रणीत शास्त्रोमां जे अयोग्य वातो कहेली छे, तेउने ढुपाववा वास्ते स्वकपोलकल्पित ज्ञाष्य, टीका, अर्थ बनावी मूर्ख लोकोने बहेकावी

गप्पां मारता फरे छे, वली जेउने धर्मनियम कांइ पण नथी, अने अनाथ पशुउने मारि जाणे छे, तथा धूर्त्तपणाथी साचो डोल धारण करी मूर्खोने मिथ्यात्व जालमां फसावे छे,एवा मिथ्यादृष्टि छे, तेउनी प्रशसा करवी, तथा जिनाज्ञा वहार एवा अज्ञान कष्ट करनाराउने कहेवु के, अहो ! केवा महान् तपस्वी छे ! महापुरुष छे ! महापडित छे ! तेउनी वरावरी करी शके तेवा कोण छे ? तेउए धर्मनी वृद्धि वास्तेज अवतार धारण करेल छे. वली मिथ्यादृष्टि कोइ व्रत यज्ञादि करे तो तेनी वहुज प्रशंसा करे, तमे वहुज सारां काम करो छो, तमारो अवतार सफल छे, इत्यादि प्रशसा करे, ते चोथो अतिचार छे

५ पांचमो मिथ्यादृष्टिनो परिचय करवो ते अतिचार छे मिथ्यादृष्टिनी साथे वहुज मेलाप राखे,खान पान करे, वास करे, इत्यादि अनेक प्रकारथी सहवास करवाथी मिथ्यादृष्टिनी वासना लागीजवाथी धर्मथी भ्रष्ट थवाय छे, ते कारणथी मिथ्यादृष्टिनो वहुपरिचय करवो ते वास्तविक नथी जो करे तो पांचमो अतिचार

ज्यारे गृहस्थने सम्यक्त्व आपवामां आवे छे, त्यारे तेने गुरु छ आगार वतावे छे जो छ कारणोमा तमने काइ अनुचित काम करवु पडे तो आ छ आगार राखी शकाय जेथी तमारु सम्यक्त्व कलकित थशे नहि, ते छ आगार नीचे मुजव छे

१ प्रथम "रायाभिउगेण" नगरना स्वामि जे राजा, ते कोइ अनुचित काम जोरावरीथी करावे तो सम्यक्त्वमा दूषण लागे नहि

२ वीजा "गणाभिउगेण" गण अर्थात् ज्ञाति तथा पचायत, ते कहे के आ काम तमे अवश्य करो, नहि तो तमने ज्ञाति तथा पचायत मोहोटो दड करशे तेवे प्रसगे जो ते काम करवु पडे तो सम्यक्त्वमां [illegible]पण नहि

[illegible] वला[illegible] वलवंत चोर, म्लेछादि तेउने वश पडतां, [illegible] काम करावे तो सम्यक्त्वमा अति-[illegible]

[illegible] देवत[illegible] ८, व्यतर शरीर- [illegible] कोइ देवता

मरणांत दुःख आपे, जेथी मनमां धैर्य न रहे, अने मरणांत कष्ट जाणी कांइ विरुद्ध काम करवुं पडे तो सम्यक्त्वमां अतिचार भंग नहि

५ "गुरुनिग्गहेण" गुरु ते मातपितादि तेमना आग्रहथी कांइ अनुचित काम करवु पडे; तथा गुरु ते धर्माचार्यादि तथा जिनमंदिर, ते उंने अर्थात् गुरुने कोइ दुष्ट संकट देतो होय, तथा जिनमंदिर तोडतो होय जिनप्रतिमानु खंडन करतो होय, तो गुरुनिग्रह छे, तेउंनी रक्षा वास्ते कांइ अनुचित काम करवु पडे तो सम्यक्त्वमां दूषण नहि

६ छठो "वित्तिकतारेणं" वृत्ति जे दुकालादि आपत्ति आवी पडे,त्यारे आजीविकावास्ते कोइ मिथ्यादृष्टिने अनुसारें चालवु पडे, तथा आजीविकावास्ते कोइ विरुद्ध आचरण करवुं पडेतो दूषण नहि. आ छ वस्तुना आगारोने छ छिंडी कहेछे तथा चार आगार बीजा छे तेपण कहियें छियें.

१ अन्नत्थणाभोगेण" कोइ कार्य अजाणपणे, उपयोग आप्या विना, कांइनु कांइ थइ जाय, ज्यारे याद आवे, त्यारे फरी ते कार्य न करवुं ते प्रथम आगार.

२ "सहस्सागारेणं" कोइ काम अकस्मात् थइ जाय, पोताना मनमां जाणेछे के आ काम मारे करवानुं नथी, योगोनी चपलताथी तथा निरंतरना बहु अभ्यासथी जाणता छतां पण विरुद्ध कार्य थइ जाय तो सम्यक्त्वमां भग नहि, आ बीजो आगार.

३ "महत्तरागारेण" कोइ मोटो लाभ थाय छे, परंतु सम्यक्त्वमां दूषण लागेछे, तथा कोइ मोटा ज्ञानीनी आज्ञाथी कमवेशी करवुं पडे तो, आ त्रीजो आगार छे

४ "सवसमाहि वत्तिआ गारेणं" सर्व समाधि व्यत्ययथी अर्थात् मोटा सन्निपातादि रोगोने प्रसंगें बावरा थइ जवाथी, तथा अतिवृद्धावस्थामां स्मृतिभंग थवाथी, तथा रोगादि संकट समये मनमां आर्त्तध्यान थइ जवाने प्रसंगे, तथा सर्पादि डंख मारवाथी असमाधि थवाना समयमां, आ आगार छे तेथी सम्यक्त्व तथा व्रतभग थतां नथी. तेवे प्रसंगे, कोइ मूर्खना कहेवाथी आर्त्तध्यानमां प्राण त्यागवा ते योग्य नथी. केटलाएक जैनमतना अनभिज्ञोनु एम पण कहेवु छे के, गमे तेम थइ जाय तोपण, जे नियम लीधेलु छे, ते कदापि तोडवु नहि, आ कहेवुं स-

वैथा वास्तविक नथी, कारण के जो पहेलेथी आगार राख्या छे, तो पछी व्रतजंग केवीरीते थायछे ? अने जेठ आर्त्तध्यानमां मरी जायछे, तथा आगार राखता नथी, तेठ जैनमार्गनी शैलीना अजाण छे. ते कारणथी छ छिंडी अने चार आगार सर्व बारे व्रतमां जाणवा वली साधुना सर्व प्रत्याख्यानमां अनशन पर्यंत आज चार आगार जाणवा इतिश्री तपगच्छियगणिश्रीमणिविजय, तच्छिष्य मुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्य मुन्यात्मा रामानंदविजयविरचिते जैनतत्वादर्श (गुर्जर जाषांतरे) सम्यग्दर्शननिर्णयनामा सप्तमपरिच्छेदः संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथाष्टमपरिच्छेद प्रारंजः ॥

आ परिच्छेदमां चारित्रनु स्वरूप लखियें छिये, चारित्र धर्मना बे जेद छे. एक सर्वचारित्र बीजु देशचारित्र. तेमां सर्व चारित्र तो साधुमां होयछे तेनु स्वरूप आ परिच्छेदमां लखिये छिये. देशचारित्रना बार जेद छे देशचारित्र गृहस्थधर्म छे बार व्रतरूप छे तेनुं किंचित् स्वरूप लखतां प्रथम स्थूलप्राणातिपातविरमण व्रतनु स्वरूप लखिये छियें

१ स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रतना बे जेद छे एक ऽव्य प्राणातिपात व्रत, बीजु जाव प्राणातिपात व्रत. ऽव्यप्राणातिपात विरमणव्रतनु स्वरूप एवु छे के, परजीवने पोताना आत्मासमान जाणीने तेठना दश ऽव्यप्राणनी रक्षा करवी आ व्यवहार दयारूप छे बीजु जाव प्राणातिपातव्रत ते पोतानो आत्मा कर्मवश पड्यो थको दुःख पामेछे, वली जावप्राण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्रादि, तेठना, मिथ्यात्व, कषायादि अशुद्ध प्रवर्त्तनथी प्रतिक्षण घात थया करेछे, ते कर्मशत्रुठथी जावप्राणनो घात थतो अटकाववा वास्ते, तथा आत्माने कर्मशत्रुथी छोडाववावास्ते उपाय करवा ते उपाय आ प्रमाणे. आत्मरमणता करे परजाव रमणता त्यागे शुद्धउपयोगमा प्रवर्त्ते कर्मना उदयमा अव्यापक रहे एक स्वजाव मग्नता करे आ उपजोग समस्त कर्मशत्रुठनो उच्छेद करवाने अमोघ शस्त्रो छे. अर्थात् सकल परजाव इष्टता दूर करी, स्वरूप सन्मुखरूप उपयोगमा प्रवर्त्ताववु, तेनु नाम जावप्राणातिपात विरमणव्रत कहिये तेनुजनाम जाव

हवे स्थूल नाम मोटा दृष्टिगोचर, हाले, चाले तेवा जे त्रसजीव, तेठने सकल्पथी न हणु. अहींआ हिंसाना चार प्रकार बतावीए छीए.

आकुट्टी. ते निषेध वस्तुने उत्साहथी करवी जेमके संपूर्णफलना जडथां करवां, ते श्रावकने निषेध छे, तेथी जेणे जेटली जातनां फल खावामां राख्यां होय, तेउमांथी कोइपण फलनु जडथु न करवु, छतां मनमां उत्साहपूर्वक जडथां करे तो आकुट्टी हिंसा लागे २ दर्प्पहिंसा. ते चित्तना उछरंगथी, उन्मत्तपणाथी, गर्वधारण करीने, दोडे तेमज गाडी, घोडा प्रमुख दोडावे तो दर्प्पहिंसा लागे ३ कल्पहिंसा. ते शरीरना कामजोगवास्ते तीव्र अजिलाषापूर्वक, कामनो जोस चडाववावास्ते त्रस जीवनी हिंसा करी, गोली, माजम प्रमुख बनावी खाय तो कल्पहिंसा लागे ४ प्रमादहिंसा ते घरनां कामकाज, जेम के रांधवु, दलवु, जरडवुं प्रमुख अनेक काम करतां त्रसजीवनी हिंसा थइ जाय तो प्रमाद हिंसा लागे आ चारे हिंसामांहेनी प्रथमनी हिंसा, तथा बीजी हिंसा तो बिलकुल न करवी जोइए ते कारणथी संकल्पथी आकुट्टी तथा दर्प्पथी त्रसजीव हणवानो त्याग करे वली जेम आ कीडी जाय छे, तेने हु मारुं ? एवा संकल्पथी हणवु, हणाववु, ते आकुट्टी संकल्प कहेवाय छे, एवा संकल्पथी निरपराधी जीवोने, कारण विना हणुं नहि. हणावुं नहि, एवो नियम करे, अने सांसारिक आरंज, रांधवा प्रमुखनां काम करतां, तथा पुत्रादिना शरीरमां कीडा प्रमुख पडतां, व्याधिने प्रसंगे औषधोपचार करता यत्नापूर्वक प्रवर्त्ते वली घोडा, बलद प्रमुखने चाबक प्रमुख मारवा पडे तेनो आगार राखे तथा पेटमा कृमि, गडोला, पगमां नारां अर्थात् वाला, हरस, जू प्रमुख अनेक जीव शरीरमां उपजे, तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां उपजे, तेना उपचार करवानी जयणा राखे कारण के साधुने तो त्रस तथा स्थावर, सूक्ष्म तथा बादर, सर्वजीवोनी हिसा नवकोटी विशुद्ध अप्रमत्त योगोथी सर्व हिंसानो त्याग छे, तेथी साधुने वीश विश्वा दया छे, अने गृहस्थथी तो सवा विश्वा दया पली शके छे तेनु स्वरूप लखीए छीए

॥ गाथा ॥ जीवासुहुमा थूला, संकप्पा आरंजा जवे डुविहा ॥ सवराह निरवराहा, साविक्खा एव निरविक्खा ॥ १ ॥ अर्थ –जगत्मां जीव बे प्रकारना छे. १ स्थावर, २ त्रस तेमां स्थावरना बे जेद छे, १ सूक्ष्म, २ बादर. तेमां सूक्ष्मजीवोनी हिसा तो यतीज नथी, कारण के अति-

सूक्ष्म जीवोना शरीरने वाह्य शस्त्रना घा लागता नथी, परंतु अहींआ तो सूक्ष्मशब्द, स्थावर जीवो जे पृथ्वी, पाणी, अग्नि, पवन, वनस्पतिरूप पांच वादर स्थावर, तेउ सूक्ष्म वाचक छे, अने स्थूल जीव ते द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय पचेंद्रिय जाणवा आ वने भेदमां सर्वजीव आवी गया ते सर्व जीवोनी त्रिकरण शुद्धिथी साधु रक्षा करे छे, ते कारणथी साधुने वीश विश्वा (वसा) दया छे. श्रावकथी तो पांच स्थावरनी दया पलती नथी, सचित्त आहारादि करवाथी अवश्य हिंसा थाय छे, ते कारणथी दश विश्वा दया दूर थइ वाकी दश विश्वा रही सारांश के त्रसजीवनी दया रही. त्रसजीवनी हिंसाना पण वे भेद छे एक संकल्पथी हणवा, वीजा आरंभथी हणवा. तेमां सकल्पथी हणवानो त्याग छे, परंतु आरंभनी हिंसानो श्रावकने त्याग नथी, आरंभ हिंसामां यत्ना राखवानी छे, कारण के आरंभ हिंसा श्रावकने थाय छे, ते कारणथी दश विश्वामांथी पांच विश्वा वाद थइ, अर्थात् सकल्पथी त्रसजीवनी हिसानो त्याग छे वली तेना पण वे भेद छे एक सापराधी, वीजा निरपराधी तेमां निरपराधी जीवोने न हणवा, अने सापराधी जीवोने हणवानी जयणा छे कारण के सापराधी जीवनी दया श्रावकथी सदा सर्वथा पलती नथी जेम के घरमां चोर आवी चोरी करी धन, माल लइ जता होय, तेउने मार्या, कुट्या विना तेउ धन, माल छोडता न होय, तथा पोतानी स्त्रीनी साथे कोइ अन्यपुरुष दुराचार सेवतो देखवामा आवे, तेवे प्रसंगे मारवो पडे, तथा कोइ श्रावक राजा होय, अथवा तो राजाना हुकमथी युद्ध करवा जवु पडे, तेवे प्रसंगे श्रावक, प्रथम शस्त्र चलावे नहि, परतु ज्यारे शत्रु शस्त्र चलावी मारवा आवे ते समये शत्रुने मारवा पडे तथा सिंहादि जानवर खावा आवे, ते वखते तेउने मारवां पडे त्यारे सकल्पथी पण हिसानो त्याग नथी. ते कारणथी पांच विश्वामाथी अरधी वाद थइ, वाकी अढी विश्वा दया रही अर्थात् मात्र निरपराधी त्रसजीव दृष्टिगोचर आवे तेउने न मारुं एवो नियम रह्यो तेनापण वे भेद छे, एक सापेक्ष, वीजो निरपेक्ष तेमा पण सापेक्ष निरपराधी त्रसजीवनी दया श्रावकथी पलती नथी, कारण के श्रावक ज्यारे घोडा गाडी, वलद गाडी, घोडा, घोडी प्रमुखनी

स्वारि करे छे, त्यारे घोडाप्रमुखने हांकता चावकादि मारे छे; अहींआं घोडा तथा बलदोए कांइ तेउनो अपराध कर्यो नथी, तेउनी पीठ उपर तो चडी रह्या छे, अने जाणता नथी के ते विचाराउने चालवानी शक्ति छे के नहि ? ज्यारे ते जीवो हलवे हलवे चाले छे, तेमज चालता नथी, त्यारे अज्ञानना उदयथी तेउने गालो देछे, तथा मारे छे, एम निरपराधी जीवोने डु:ख आपे छे वली पोताना शरीरमां तेमज पोताना कुटुंबीउं तथा स्वजन, मित्रादिना शरीरमां अर्थात् मस्तकमां, मुखमां, कानमां इत्यादि अवयवोमां कीडा पडे, तेउने दूर करवावास्ते दवा लगाववी पडेछे, जेथी ते जीवोनो नाश थाय छे, आ जीवोए श्रावकोनो कांइ अपराध करेलो नथी, कारण के तेउं तो पोताना कर्मना वशथी एवी योनिमां उत्पन्न थाय छे कांइ श्रावकनुं बुरुं करवु, तेमने डुख देवु, एवा संकल्पथी उत्पन्न थता नथी परंतु तेउनी हिंसा श्रावकथी त्यागी शकाती नथी. ते कारणथी वली अरधी वाद थइ बाकी सवा विश्वा दया रही आ सवा विश्वा दया शुद्ध श्रावक होय ते पाली शके छे अर्थात् संकल्पथी निरपराधी त्रस जीवोने कारण विना हणुं नहि. आ प्रतिज्ञा ज्यांसुधी पोतानी शक्ति रहे त्यां सुधी पाले. निर्ध्वंसपणु न करे सदा मनमां एवी भावना राखे के रखे माराथी कोइ पण जीव हणाय ? वली घरमां आरंभ करतां पण यत्नाथी प्रवर्त्ते. लाकडां सलगाववा वास्ते लावे ते सडेलां लावे नहि. आगल उपर जेमां जीव न पडे एवा सुकां, पाकां लाकडां लावे, वली रसोइने वखते लांकडांने खंखेरी जीवरहित करी सलगावे. तथा घी तेल प्रमुख रस भरेली वस्तुउनां वासणोनां मुख बांधी यत्नाथी ते चीजो राखे उघाडां ते वासणो न राखे तथा चुलानी उपर अने पाणीआरा उपर चदरवा बांधे. खावाने जे अन्न अर्थात् अनाज लावे ते भींजेलुं लावे नहि शुद्ध नवुं अनाज लावे, कदापि एक वर्ष उपरांतनुं अनाज लावे तो जेमां जीव न पड्या होय तेवुं लावे तथा पाणी गलवा वास्ते वहुज जाडुं वस्त्र राखे दरेक पहोरे पाणी गले पाणीनो संखारो, जे कुवानु ते पाणी होय, ते कुवामां नाखे तथा वर्षाऋतुमां अनेक प्रकारना असख्य जीवोनी उत्पत्ति थायछे, तेथी ते ऋतुमां गाडी, रथनी स्वारि न करे, कारण के ज्यां

चक्र फरेछे त्यां असंख्य जीवोनो विध्वंस थइ जायछे हरिकाय, बहुवीजवालां फल, त्रससंयुक्त फल खाय नहि पलंग प्रमुखमा मांकड प्रमुख जीव पडे, ते पलगादि तडकामां राखे नहि, वीजो पलंग बदले वली सडेलां अनाज तडकामां राखे नहि. अन्नना ससर्गवालु एवु पाणी मोरीमां नाखे नहि, कारण के मोरीमा वहुज जीव उत्पन्न थायछे, वली मोरीमां सडो थाय तो घरमां विमारी थइ जायछे तथा फागण शुद १५ पछी आठ मास सुधी अर्थात् कारतक शुदी १५ सुधी पांदडावाला शाक भाजी खाय नहि, कारण के पत्रशाकमां वहुज त्रसजीव उत्पन्न थायछे, एक तो त्रसजीवनी हिंसा थायछे, अने वीजुं ते खावाथी अनेक रोग शरीरमां उत्पन्न थायछे तथा शीतकालमां एक मास, उनालामा वीश दिवस अने चोमासामा पदर दिवस उपरांतनी बनावेली मिठाइ (पकान्न) खाय नहि, कारण के तेमां त्रस, स्थावर जीव उत्पन्न थायछे, तथा खानारने रोगोत्पत्ति थायछे वली वासी अन्न, रोटली, अथाणां प्रमुख वासी खाय नहि, अन्न वासी खावाथी रोगोत्पत्ति थायछे, तेमज बुद्धि मंद थायछे, अने जीवोनो नाश थाय छे आर्द्रा नक्षत्र बेठा पछी केरी खाय नहि, कारण के त्यारथी केरीना रसमां वहुज जीवनी उत्पत्ति थायछे कठोल ठाशमा खाय नहि घरमा सावरणी राखे ते कोमल शण प्रमुखनी राखे, जेथी जीव मरे नहि. तथा स्नान करती वखते वहु जल ढोले नहि, रेतीवाली जमीनमां स्नान करे, मोटा वासणमां वेसी स्नान करे, अने स्नाननु पाणी मेदानमां थोडु थोडु छांटी दे मोरी (खाल) उपर वेसी स्नान करे नहि ज्यासुधी थोडा पापवाला व्यापार, तथा नोकरी मले त्यांसुधी महापापवाला व्यापार, नोकरी करे नहि कोइनो हक्क त्रोडे नहि घरमा जूठा अन्ननु पाणी वे घडी उपरात राखे नहि, कारण के तेमां जीव उत्पन्न थइ जायछे तथा जे वस्तु उपाडे तथा मुके ते वखते प्रथम ते जगाने देखीने तथा पुजीने ते वस्तु लहे तथा मुके मोटी मोरीमां पाणी ढोले नहि दिवाबत्ती सलगावे ते फानस प्रमुखमां जीवरक्षा वास्ते राखे जे वासणथी पाणी लहे, ते वासण जुठु फरी पाणीमा बोले नहि कारण के मुखनी लाल लागवाथी जीव उत्पन्न थायछे वली वहु साथे वेसी जुठु खावा, पिवाथी बुद्धि संकोच

पामे छे. वली केटलाएक रोग एवा होय छे के, जे रोगवालानुं जुठुं खावा, पिवामां आवे तो, ते रोगवालानो रोग, खानारा पिनाराने लागी जायछे. जेमके कोढ, क्षय, खस, शीतला प्रमुख ते कारणथी वस्तु एठी करवी नहि, अने वहुनी साथे एकठां वेसी खावुं नहि वली पाणीना माटलामांथी पाणी काढवावास्ते दांडीवालो लोटो राखे इत्यादि शुद्ध व्यवहारथी प्रवर्त्ते तो श्रावकने सवा विश्वा दया रहे. आ प्रमाणे श्रावकनुं प्रथम व्रत शुद्ध छे. आ व्रतना पांच अतिचार अर्थात् पांच कलंक छे, तेउने वर्जवा तेनुं स्वरूप लखिये छियें.

१ प्रथम वध अतिचार ते क्रोधना उदयथी तेमज वलना अभिमानथी, निर्दय थइने, घोडा, वलद, गाय प्रमुखने मारे कुटे तथा चलावे ते प्रथम अतिचार

२ वंध अतिचार. ते गाय, वलद, वाछडा प्रमुख जीवने, कठण जवरा वधनथी वांधे ते जीवो कठण वधनथी वहुज दुःख पामे छे, वली कदापि अग्निनो उपद्रव थयो होय तो जलदीथी छुटी शकतो नथी, अने मरी जायछे, ते कारणथी कठण वधन पण अतिचारछे. तेथी जनावरने वांधवा ते ढीला वंधनथी वांधवा जोइए वली कोइ गुन्हेगार मनुष्यने पण गाढ वधनथी वांधवो नहि जो वाधे तो वीजो अतिचार लागे.

३ त्रीजो छ विछेद अतिचार. ते वलद प्रमुखना नाक, कान छेदावे, नाथ नांखे, खांसी करे तो त्रीजो अतिचार लागे

४ चोथो अतिचार आरोपण अतिचार ते वलद प्रमुख जेटलो भार सहन करी शके तेना करतां विशेष भार नाखे श्रावकें निरंतर जे वलद, घोडा, खच्चर गाडीप्रमुखमां जेटलो भार वहन करी शकता होय, तेनाथी मण, वे मण भार उंछो नाखवो जोइए, तोज पोतानु व्रत शुद्ध रहे छे तेमां पण जो कोइ जानवरनी शक्ति मंद थइ होय तो, विवेक राखी, भार घणोज उंछो करी नाखे. वली जानवर दुर्बल थाय तो तेना घास, दाणा, पाणीनी पण वारवार खवर राखे, परंतु एवो विचार न करे के वीजाउ जेटलो भार लादता होय, तेटलो हु पण लाद्या करु. शक्तिप्रमाणे जानवर पासे भार वहन करावे तो व्यवहार शुद्ध रहे. पोतानी पासे अधिक भार होय तो वीजां भाडां करे, परंतु तुच्छ

विचार करी अतिचार जरे नहि श्रावक एवा व्यवहारथी प्रवर्त्ते नहि तो चोथो अतिचार लागे

५ पांचमो जात, पाणीनो व्यवछेद करवो ते अतिचार बलद, घोडा-प्रमुखने जे खावायोग्य होय, ते वध करी दे, अथवा थोडु थोडुं काढी लहे खावानो वखत वितावे इत्यादि करतां अतिचार लागे

वली कोइनी आजीविका, नोकरी वध करवी, तेपण आज अतिचारमां छे श्रावक तो दास दासी, कुटुबना नाना, मोटा सर्वेनी तथा गाय, बलद प्रमुखनी खावा, पीवानी खबर लइ, पछी पोते जोजन करे आ पांच अतिचार छे उपलक्षणथी हिंसाकारी मंत्र तंत्रादि कोइने करे तो श्रावकने अतिचार लागे आ पाचे अतिचार श्रावक जाणे, परतु करे नहि आ बारे व्रतना सर्व अतिचार जग होवाना सजव असजवनी विशेष चर्चा जोवी होय तो धर्मरत्नप्रकरणग्रथनी श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत टीका जोवी अहींआ तो मात्र हु अतिचारज लखुवु इति श्रावक प्रथम व्रत

बीजा स्थूल मृषावादविरमणव्रतनु स्वरूप लखीए छीए. स्थूल अर्थात् मोटु मोटा जूठानो (विरमण) त्याग करवो ते मोटां जूठां बोलवाथी जगत्मां बोलनारनी अप्रतीति थइ जाय छे, अपयश फेलाय छे, धर्मनी निंदा थाय छे, अने पोतानी मतलब वास्ते जे कमवेश करवु, तेनो जे त्याग, ते मृषावादविरमण व्रत कहेवाय छे मृषावादना बे जेद छे १ द्रव्यमृषावाद, २ जावमृषावाद तेमां सांसारिक तेमज धार्मिक व्यवहारमां जाणपणे तेमज अजाणपणे जे असत्य बोलवु ते द्रव्य मृषावाद छे, अने सर्वे परजाव वस्तुने अर्थात् पुद्गलादि जडवस्तुने आत्मत्व बुद्धिथी पोतानी कहेवी, तथा राग, द्वेष, कृष्णादि लेश्याथी आगम विरुद्ध बोलवु, शास्त्रना साचा अर्थ कुयुक्तिथी नष्ट करवा, उत्सूत्र बोलवु, ते जावमृषावाद कहेवाय छे.

आ व्रत सर्वव्रतोमा मोटु छे ते पालवामां बहुज शुद्धउपयोग तेमज होंशियारी जोइए, कारण के प्रथम व्रतमा तो मात्र जीवस्वरूपजाणवाथी दया पली शके छे बीजानी वस्तु तेनी परवानगी विना न लीधाथी अदत्त विरमण व्रत पली शके छे स्त्री मात्रनो संग त्यागवाथी मैथुन

विरमणव्रत पली शके ठे, अने नवविध परिग्रहनो त्याग करवाथी परि-
ग्रह विरमणव्रत पली शके ठे एवीरीते एकेक द्रव्यने जाणवाथी आ
चारे व्रत पाली शकाय ठे, अने मृषावाद विरमण व्रत तो ज्यां सुधी पट्
द्रव्यनी गुणपर्यायथी तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल, जावथी सारीरीतें वि-
ज्ञान न थइ होय, त्यां सुधी बराबर पालवु कठिन ठे, कारण के एक
पर्यायमात्रपण विरुद्ध जापण करवाथी आ व्रतजंग थइ जाय ठे. तेज-
कारणथी शास्त्रमां साधुउने बहु बोलवानो निषेध करेलो ठे. वली पूर्वो-
क्त चारे महाव्रतोमांथी एक महाव्रत जो जंग थाय, तो चारित्रनो जंग
थाय, अथवा नहि पण थाय, कारण के जो एकज कुशील सेवन करे,
तो सर्वथा चारित्रजंग थाय, बीजाव्रतोना खंडनथी चारित्रदेशजंगथा-
य, परंतु तेनु ज्ञान, दर्शनजंग न थाय. आ व्यवहारजाष्यनु कथन ठे,
अने जो मृषावाद विरमणव्रतजंग थाय तो तो ज्ञान, दर्शन तेमज चा-
रित्र, आ त्रणे जडमूलथी जतां रहे ठे अने बोलनार मरीने दुर्गतिमां
जाय ठे, अनंत संसारी, दुर्लजबोधी थइ जायठे, ते कारणथी जो
आ व्रत पालवु होय तो पट् द्रव्यना गुणपर्यायनुं स्वरूप जाणवा वास्ते
अति उद्यम करे. कदापि बुद्धिनी मंदता होय तो गीतार्थना वचन प्र-
माणे श्रद्धा प्ररूपणा करे. तात्पर्य ए ठे के द्रव्य मृषावादना त्यागी जीव
तो ठए दर्शनोमां प्राप्त थइ शके ठे, परंतु जाव मृषावादना त्यागी तो
मात्र श्रीजिनेंद्र देवना मतमांज मली शकशे. जे जीव श्रद्धा रुचि शुद्ध
धारण करशे, तेज तेवो थइ शकशे. आ मृषावादना पांच मोटा जेद
ठे, ते श्रावकें अवश्य वर्जवा जोइए, तेथी तेनु स्वरूप कहिये ठिये.

१ कन्यालीक जूठ. पोताना मेलापीनी कन्या होय अने तेनु वेश
वाल करवानो प्रसग होय, ते वखते कन्यानी मागणी करनारा पुठे के
आ कन्या केवी ठे ? ते प्रसंगे संबंधीनी प्रीतिना कारणथी, ते कन्यामां
जे दूषण होय ते ढुपावे, वली गुण न होय ठतांपि अधिक गुणवाली
कहे, तेमज कहे के आ कन्या निर्दोष ठे, आवी कुलवती, सुलक्षणवती,
साक्षात् देवांगना समान, तमने मलवी मुश्केल ठे वली जो कन्यानां
मातपिता साथे द्वेष होय तो, कन्या निर्दोष, होय, ठतापि कहेके आ
कन्यामां सारा लक्षण नथी, मांजरी आखवाली ठे, सापणवाली ठे, तेनी

साथे संवध करशो तो जरूर पश्चात्ताप करशो, ए प्रमाणे अछतां दूषणो कहेवां आ कन्यालीक जूठ छे प्रथम तो व्रतधारी श्रावक कोइना सगाइ संवधना ऊगडामां पडे नही, कदापि पोतानां सगां, मित्रादि होय, अने तेउ पुछे तो यथार्थ कहे, वली कहे के जाइ! तमे पोतानी मेले निश्चय करी ल्यो कारण के जन्मपर्यंतनु काम छे ए प्रमाणे कहे, परंतु असत्य न वोले, आ कन्यालीकमां उपलक्षणथी सर्व वे पगवालांनुं असत्य न वोले

२ गवालीक जूठ सर्व चौपद, ते हाथी, घोडा, वलद, गाय, भेंस प्रमुख, सवधी असत्य न वोले

३ भूम्यालीक जूठ ते वीजानी जमीनने पोतानी कहेवी, तेमज वीजानी जमीनने त्रीजानी कहेवी इत्यादि, तेमज घर, हवेली, वाडी, वाग, वृक्षादि संवधी, तथा सर्व परिग्रहसवंधी पण जूठ न वोले

४ थापणमोसानु जूठ कोइपुरुष श्रावकने प्रतीतवालो जाणीने तेने पोतानी कांइ वस्तु साक्षी राख्याविना, तेमज लखत कराव्याविना सोंपी गयो होय, पाछो सोपनार मागवा आवे, त्यारे राखनार इनकार करे, अने कहे के तमे कोने सोंपी गया छो? हु तो तमोने जाणतो पण नथी के तमे कोण छो? एम असत्य वोली तेनी वस्तु उलवे आ महापाप श्रावकें कदापि नहि करवु जोइए

५ जूठी साक्षी पुरवी वे सख्स आपसमां टटो करे छे, तेवामां एकनी पासेथी धन लइ, अथवा तो तेनी शरम खातर, जूठी साक्षी पुरवी आ कामपण श्रावकें नहीं करवु जोइए आ व्रतना पांच अतिचार छे, ते वर्जवा

१ सहसाभ्याख्यान अतिचार विचार कर्याविना कोइने कलंक देवां, जेम के तु व्यभिचारि छो, चोर छो, जूठो छो, इत्यादि श्रावक कदापि कोइनो प्रगट अवगुण देखे, तोपण पोताना मुखथी तेने जरापण दुःख थाय तेम न वोले, तो पछी जेमां महापाप छे एवु कलक तो केमज आपे?

२ रहसाभ्याख्यान अतिचार वे अथवा वधारे सरसो एकांतमां वेसी काइमत वाधे छे तेउने देखी कहे के तमे राज्य विरुद्ध प्रपच करो छो, एम कही तेउनी चुगली खाइ, तेउने राज्यदड अपाववो ते महापाप छे

३ स्वदारा मंत्रभेद अतिचार पोतानी स्त्रीए कांइ छानी वात कहेली होय, ते वात पति लोकोमां प्रकट करे उपलक्षणथी भाइ प्रमुखनी कहेली वात प्रगट करवी तात्पर्य ए छे के मर्मवाली वात प्रगटथवाथी स्त्री आदि कुवामां पडी डुबी मरे छे

४ मृषा उपदेश अतिचार. बीजाउने असत्य कामो करवानो उपदेश आपवो वली विषयसेववानां चोराशी आसन शिखववां, तथा बीजाउ जेथी दुःखमां आवी पडे तेवो उपदेश करवो वली वीर्यपुष्टिनां ओषधादि बतावववां, जेथी विषय, कषाय अत्यंत वृद्धि पामे, अने जेथी वहुज विषयसेवन करवामां आवे तेवो उपदेश करवो ते

५ कूट लेखकरण अतिचार जूठा दस्तावेज बनाववा, जूठी सही करवी, जूठी महोर छाप करवी, अक्षरो भुंसी नाखी, नवा अक्षरो दाखल करवा, इत्यादि बीजाने नुकशान थाय तथा दुःख थाय एवा हेतुथी कूटलेख करवा ते आ पांच आतिचार. तथा पूर्वोक्त पांचप्रकारनां असत्य नरकादि गतिनां कारण जाणी, श्रावक अवश्य वर्जे इति मृषावादविरमणव्रत

३ त्रीजा स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतनु स्वरूप लखियें छियें मोटी चोरी करवी, जेमके धाड चोरी करवी, रस्तानी लुट करवी. गणेशीउ मारी भीत फोडी खातर पाडवु, जबरदस्तिथी बीजानी वस्तु लेवी, छल कपटथी छगीने बीजानी वस्तु लेवी, विश्वासघात करी बीजानी वस्तु उलवी जवी, अपराधसहित मिलकतनो खोटो उपयोग करवो, मिलकतनी अदलाबदली करवी, इत्यादि अदत्तादान अर्थात् चोरीनु स्वरूप छे चोरी करवाथी परलोकमा नरकादि माठी गति प्राप्त थाय छे, अने आ लोकमां पण प्रगट थवाथी राज्यदंड, अपयश, तथा अप्रतीति थाय छे ते कारणथी श्रावक अदत्तादाननो त्याग करे. अदत्तादान व्रतना वे भेदछे, ते कहियें छिये.

द्रव्य अदत्तादान विरमण व्रत पूर्वोक्त प्रकारें बीजाउनी पडेली के विसरेली वस्तु लेवी नहि ते द्रव्य अदत्तादान विरमणव्रत छे.

२ भाव अदत्तादान विरमणव्रत. पर जे पुद्गल द्रव्य, तेनी रचना, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिरूप, त्रेवीश बिषय, तथा आठकर्मनी वर्गणा,

साथे संबध करशो तो जरूर पश्चात्ताप करशो, ए प्रमाणे अछतां दूषणो कहेवां आ कन्यालीक जूठ छे प्रथम तो व्रतधारी श्रावक कोइना सगाइ सबधना झगडामां पडे नही, कदापि पोतानां सगां, मित्रादि होय, अने तेउ पुछे तो यथार्थ कहे, वली कहे के भाइ! तमे पोतानी मेले निश्चय करी ल्यो कारण के जन्मपर्यंतनु काम छे ए प्रमाणे कहे, परंतु असत्य न बोले, आ कन्यालीकमां उपलक्षणथी सर्व बे पगवालांनुं असत्य न बोले

२ गवालीक जूठ. सर्व चौपद, ते हाथी, घोडा, बलद, गाय, भेस प्रमुख, संबंधी असत्य न बोले.

३ भूम्यालीक जूठ ते बीजानी जमीनने पोतानी कहेवी, तेमज बीजानी जमीनने त्रीजानी कहेवी इत्यादि, तेमज घर, हवेली, वाडी, बाग, वृक्षादि संबधी, तथा सर्व परिग्रहसंबधी पण जूठ न बोले

४ थापणमोसानु जूठ कोइपुरुष श्रावकने प्रतीतवालो जाणीने तेने पोतानी कांइ वस्तु साक्षी राख्याविना, तेमज लखत कराव्याविना सोंपी गयो होय, पाछो सोंपनार मागवा आवे, त्यारे राखनार इनकार करे, अने कहे के तमे कोने सोंपी गया छो? हुं तो तमोने जाणतो पण नथी के तमे कोण छो? एम असत्य बोली तेनी वस्तु ओलवे आ महापाप श्रावकें कदापि नहि करवु जोइए

५ जूठी साक्षी पुरवी बे सरस आपसमां टटो करे छे, तेवामां एकनी पासेथी धन लइ, अथवा तो तेनी शरम खातर, जूठी साक्षी पुरवी आ कामपण श्रावकें नहीं करवु जोइए आ व्रतना पांच अतिचार छे, ते वर्जवा

१ सहसाभ्याख्यान अतिचार विचार कर्याविना कोइने कलंक देवां, जेम के तु व्यभिचारि छो, चोर छो, जूठो छो, इत्यादि श्रावक कदापि कोइनो प्रगट अवगुण देखे, तोपण पोताना मुखथी तेने जरापण दुःख थाय तेम न बोले, तो पछी जेमां महापाप छे एवु कलंक तो केमज आपे?

२ रहसाभ्याख्यान अतिचार बे अथवा वधारे सख्सो एकांतमा बेसी काइमत बांधे छे तेउने देखी कहे के तमे राज्य विरुद्ध प्रपच करो छो, एम कही तेउनी चुगली खाइ, तेउने राज्यदड अपाववो ते महापाप छे.

३ स्वदारा मंत्रभेद अतिचार पोतानी स्त्रीए कांइ छानी वात कहेली होय, ते वात पति लोकोमां प्रकट करे उपलक्षणथी भाइ प्रमुखनी कहेली वात प्रगट करवी. तात्पर्य ए छे के मर्मवाली वात प्रगटथवाथी स्त्री आदि कुवामां पडी डुबी मरे छे

४ मृषा उपदेश अतिचार. बीजाउने असत्य कामो करवानो उपदेश आपवो वली विषयसेववानां चोराशी आसन शिखववां, तथा बीजाउं जेथी दुःखमां आवी पडे तेवो उपदेश करवो वली वीर्यपुष्टिनां ओषधादि बताववां, जेथी विषय, कषाय अत्यंत वृद्धि पामे, अने जेथी बहुज विषयसेवन करवामां आवे तेवो उपदेश करवो ते

५ कूट लेखकरण अतिचार जूठा दस्तावेज बनाववा, जूठी सही करवी, जूठी महोर छाप करवी, अक्षरो भुंसी नाखी, नवा अक्षरो दाखल करवा, इत्यादि बीजाने नुकशान थाय तथा दुःख थाय एवा हेतुथी कूटलेख करवा ते आ पांच आतिचार. तथा पूर्वोक्त पांचप्रकारनां असत्य नरकादि गतिनां कारण जाणी, श्रावक अवश्य वर्जे इति मृषावादविरमणव्रत.

३ त्रीजा स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतनुं स्वरूप लखिये छियें मोटी चोरी करवी, जेमके धाड चोरी करवी, रस्तानी लुट करवी. गणेशीउ मारी भीत्त फोडी खातर पाडवु, जबरदस्तिथी बीजानी वस्तु लेवी, छल कपटथी ठगीने बीजानी वस्तु लेवी, विश्वासघात करी बीजानी वस्तु उंलवी जवी, अपराधसहित मिलकतनो खोटो उपयोग करवो, मिलकतनी अदलाबदली करवी, इत्यादि अदत्तादान अर्थात् चोरीनु स्वरूप छे. चोरी करवाथी परलोकमां नरकादि माठी गति प्राप्त थाय छे, अने आ लोकमां पण प्रगट थवाथी राज्यदंड, अपयश, तथा अप्रतीति थाय छे. ते कारणथी श्रावक अदत्तादाननो त्याग करे. अदत्तादान व्रतना बे भेदछे, ते कहिये छिये.

द्रव्य अदत्तादान विरमण व्रत पूर्वोक्त प्रकारे बीजाउनी पडेली के विसरेली वस्तु लेवी नहि ते द्रव्य अदत्तादान विरमणव्रत छे.

२ भाव अदत्तादान विरमणव्रत. पर जे पुद्गल द्रव्य, तेनी रचना, वर्ण, गंध, रस, स्पर्शादिरूप, त्रेवीश विषय, तथा आठकर्मनी वर्गणा,

आ सर्वे पराइ वस्तु ढे, ते वस्तु तत्वज्ञानमां जीवने अग्राह्य ढे, ढतां तेमनी जे उदय नावथी वांढा करवी ते नाव चोरी समजवी जिनागम श्रवण करी तेमनो त्याग करवो, तथा पुद्गलानंदि पणानो अन्नाव करवो, तेज नाव अदत्तादान विरमण व्रत ढे. जे जे कर्मप्रकृतिनो बंध नाश पामेल होय, ते नाव अदत्त विरमण व्रत कहेवाय. सामान्य प्रकारें अदत्तना चार नेद ढे.

१ कोइनी वस्तु तेनी परवानगी विना लेवी ते स्वामि अदत्त. २ सचित्त वस्तु अर्थात् जीववाली वस्तु, फूल, फल, बीज, गुह्ना, पत्र, कंद मूलादि, बकरा, गाय, सुअरादि, तेउनो नाश करवो, ढेदवां, नेदवां, कापवां इत्यादि ते जीव अदत्त, हेतु ए ढे के फुलादि जीवोए पोताना शरीरने ढेदवा, नेदवानी आज्ञा आपी नथी, के अमारु ढेदन, नेदन करो, ते कारणथी ते जीव अदत्त ढे ३ जे वस्तु तीर्थंकर, अर्हंत नगवंतें निषेध करेली ढे, तेउनु जे ग्रहण करवुं, जेमके साधुने अशुरू आहार करवानो निषेध ढे, अने श्रावकने अन्नक्ष्य वस्तुग्रहण करवानो निषेध ढे, ढतां तेउ आज्ञाविरुद्ध ग्रहण करे तो ते तीर्थंकर अदत्त ४ कोइ साधु शास्त्रोक्त रीति मुजब निर्दोष आहार शुरू ग्रहण करी लावे, पढी ते आहारादिने गुरुनी आज्ञा विना उपनोगमां लहे तो ते गुरु अदत्त.

पूर्वोक्त चारे अदत्त संपूर्ण तो जैनना यतिज त्यागी शके, गृहस्थथी तो मात्र स्वामि अदत्तज त्यागी शकाय ढे, ते कारणथी तेनीज आ स्थले मुख्यता ढे सारांश के पराइ वस्तु पूर्वोक्त रीतें लेवी नहि, जो लहे तो चोर कहेवाय, राज्यदड पामे, अपयश, अपकीर्त्ति, अप्रतीति थाय, ते कारणथी पारकी वस्तु ग्रहण करवी नहि जे वस्तु यत् किंचित् मूल वाली ढे, अर्थात् जे लेवाथी तेना मालेकने एवु नुकसान थतुं नथी के कोइ समजु माणसना विचारमा ते नारे पडतु थाय, सारांश के जे लेवाथी चोर नाम पडतु नथी, तेवी वस्तु लेवानी जयणा राखे वली कोइनी पडीगयेली वस्तु हाथमां आवे, पढी जाणवामां आवे के ते वस्तु अमुक सख्सनी ढे, तो ते वस्तु तेने आपे, जो ते वस्तुना मालेकनो पत्तो न मले, अने पोतानु मन दृढ रहे तो ते वस्तु पोते राखे नहि, बहु मूल्यवान् वस्तु होय, अने मन दृढ रहे तो ते वस्तु

लइ पोताना स्वाधीनमां केटलाएक दिवस राखे, जो तेना मालेकनो पत्तो मले तो तेनी खात्री करी तेने सोपी दे, अने संपूर्ण रीतें शोध करतां छतां तेनो मालेक मालम न पडे तो धर्म खातामां ते धननो उपयोग करे. पोतानो स्वज्ञाव अत्यंत लोज्जी होय तो पण ते वस्तुनी अर्ध किमत तो धर्मना कामसांज वापरे. पोतानी जमीनमां खोदतां धनादि निकले तो ते राखवावो आगार छे. परंतु तेमां पण अर्ध हिस्सो, अथवा चोथो हिस्सो धर्ममां वापरे तो ते उत्तम छे. वली वीजानी जगा किंमत आपी लीधी होय, ते खोदतां जो धनादि निकले, अने पोताना मनमां संतोष होय तो ते जगा वेचनारने निकलेली वस्तु सोंपी दे, परंतु पोतानो स्वज्ञाव लोज्जी होय अने वेचनारने आपवानी मरजी न होय, तो पण अर्धज्ञाग धर्ममां वापरे, अने अर्धज्ञाग पोते राखे. वली कोइ सख्स पोतानी पाछल धन मुकी मरी गयो होय, अने तेनो कोइ वारस न होय, एवी वीना श्रावकना जाणवामां आवे तो उत्तम माणसोने पंचमां राखी तेउने ते वीना जाहेर करे, अने पंचना फरमान मुजव करे; ते प्रमाणे करतां कदापि देशकालनी विषमताथी राज्यसंबंधी क्लेश उठवानो संज्जव लागे, तथा कोइ लोज्जी राजा फरमान करे के तमारा घरमां आवीरीतनुं वीजुं धन छे इत्यादि विटंवना थवानो ज्जयलागे तो मौनपणे ते धन धर्मकार्योमां वापरे.

घरनी चोरीनुं स्वरूप आ प्रमाणे. घरनी सर्व वस्तुउनां मालेक मात पिता छे, तेउनी आज्ञा विना धनवस्त्रादि लेवानी जयणा राखे, तेमज जे उनी साथे प्रेम होय, तथा जेउ संवधी होय, अने जेउना घरमां जवा आववानो तेमज खावा पीवानो व्यवहार होय, तेउने पुछ्याविना कांइ वस्तु खावामां अथवा ज्जोगववामां आवे तो तेनो आगार राखे, परंतु जो ते वस्तुनो उपज्जोग करतां मालेकनुं मन दुःखाय तो ते वस्तु ग्रहण करे नहि. ए प्रमाणे त्रीजुं अदत्त व्रत पाले. आ शुरू व्यवहार अदत्तादानविरमण व्रत छे.

निश्चयथी अदत्तव्रत तो जेटलो अबंध परिणाम थयेल छे, अर्थात् गुणस्थानकनी वृद्धि थवाथी वधव्यवछेद थयो होय छे, तेज निश्चय अ-

दत्त विरमण व्रत कहेवाय छे. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते वर्जे, तेनु स्वरूप कहियें छियें.

१ स्तेनाहृत अतिचार चोरनी चोरेली वस्तु स्तेनाहृत कहेवाय छे. ते वस्तु लहे नहि, अर्थात् चोरनी वस्तु जाणीने लहे नहि, कारण के जे चोरीनी वस्तु जाणीने लहे छे, ते लेनार पण चोर छे, जैन मतना शास्त्रोमां चोरना सात प्रकार छे. यथा ॥ चौरश्चौरापकोमन्त्री, भेदज्ञः काणकक्रयी ॥ अन्नदः स्थानदश्चैव, चौरः सप्तविधः स्मृत ॥ १ ॥ आ प्रथम अतिचार

२ प्रयोग अतिचार ते चोरी करनाराउने प्रेरणा करवी जेमके अरे! तमे धधाविनाना छानामाना आजकाल केम वेसी रह्या छो? जो तमारी पासे खरची न होय तो हुं मदद करु. तमे लइ आवशो ते वस्तु हु वेची आपीश. तमे चोरी करवा जाउ इत्यादि वचनोथी चोरोने प्रेरणा करवी. आ बीजो अतिचार

३ तत् प्रतिरूपक व्यवहार अतिचार ते सारी वस्तुमां खराब वस्तु मेलवी वेचवी जेमके केशरमां कसुंबादि मेलववां, घीमां छासादि, हिंगमां गुंदरादि मेलववां खोटी कस्तूरी खरी दाखल वेचवी, अफीणमां नेल सन्नेल करी वेचवुं, जूनावस्त्रने रंगावी नवाना न्नावथी वेचवा, रूमां पाणी नाखी वेचवु, दुधमां पाणी न्नेलवी वेचवु इत्यादि काम करवा. आ त्रीजो अतिचार

४ राज्य विरुद्ध गमन अतिचार ते पोताना शेहेरना अथवा देशना राजाए फरमान कर्युं होय के अमुक गाम जवु आववु नहि, तेमज ते गामना लोको साथे व्यापार करवो नहि, छता राजानी आज्ञानु उल्लंघन करीने वैरी राजाना देश गाममा जवु आववु तथा व्यापार करवो आ चोथो अतिचार

५ खोटां तोला मापां राखवा ते अतिचार उछां तोलां, मापथी देवु, अने अधिक तोलां,मापथी लेवु आ पांचमो अतिचार इतितृतीयव्रतस्वरूप.

चोथु व्रत मैथुनसेवननो त्याग, ते मैथुन त्यागव्रत कहेवाय छे मैथुनना वे न्नेद छे १ द्रव्य मैथुन त्याग, २ न्नाव मैथुन त्याग द्रव्य मैथुन तो परस्त्री तथा परपुरुष साथे संगम करवो ते तेमां पुरुष स्त्रीनो

त्याग करे, अने स्त्री पुरुषनो त्याग करे, अर्थात् अरस परस रतिक्रीडा काम सेवननो त्याग करे, ते द्रव्यब्रह्मचारी तथा व्यवहारब्रह्मचारी कहेवाय छे

भाव मैथुननु स्वरूप एवु छे के चेतनरूप पुरुषे, परपरिणतिरूप विषय विलास, अने तृष्णा, ममतारूप कुवासना, एवी निश्चय परस्त्रीने मली तेनी साथे लालन, पालन, कामविलास करवो ते. तेनु जिनवाणीना उपदेशथी, तथा गुरुनी हितशिक्षाथी ज्ञान थयु, त्यारे जातिहीन जाणीने, तेमज भविष्यमा तेनु सेवन महादुःखदायक परिणामवालु थवानुं छे एम जाणीने, तथा पूर्वकालमां तेना सेवनथी अनंत जन्म मरणनां दुःख अनुभव्यां छे एम विचारीने ते विजातीय स्त्रीनो त्याग करवो ते ठीक छे, अने मारी परमभक्त, स्वजातीय, उत्तम, सुकुलवती स्त्री, समतारूप सुंदरी, तेनो संग करवो वास्तविक छे. वली विभाव परिणतिरूप परस्त्रीए मारी सर्वविभूति हरण करी छे, तेथी सद्गुरुनी सहायताथी हवे ते दुष्ट परिणतिरूप स्त्रीना संगनो थोडो निग्रह करुं, त्यागवानो भाव आदरुं, जेथी शुद्धस्वभाव घटरूप घरमां प्रवेश करुं, तथा मारा स्वरूपना तेजनी वृद्धि थाय एम प्रवर्तु, एवी समजण लावीने परपरिणति मग्नतानो त्याग करे, तेमज कर्मना उदयमां व्यापक न थाय, अने शुद्ध चेतनाना संगी थाय, ते भाव मैथुनत्यागी कहेवाय छे.

द्रव्य मैथुनना त्यागी तो छए दर्शनमां मली शके छे, परंतु भावमैथुनना त्यागी तो श्रीजिनवाणी श्रवण करवाथी, ज्यारे भेदज्ञान घटमां प्रगट थाय छे, त्यारे भवपरिणतिथी सहज उदासीनरूप भाव थाय छे, तेवा मैथुनना त्यागी जैनमतमांज होय छे

स्थूल परस्त्रीगमनविरमणव्रत ते परस्त्रीनो त्याग करवो, परपुरुषनी विवाहिता स्त्री, तथा परनी राखेली स्त्री, तेनी साथे अनाचार न सेववो, एवु जे प्रत्याख्यान, ते परदारगमन विरमण व्रत छे; अने पोतानी स्त्रीमां सतोष करवो एवु जे व्रत, ते स्वदारासंतोष व्रत छे

देवांगना तथा तिर्यचणी, तेउनी साथे कायाथी मैथुन सेवन करवानो निषेध आ व्रतमां छे वली वर्त्तमान स्त्रीनो त्याग करीने, वीजी स्त्री साथे विवाह न करे, तथा दिवसें पोतानी स्त्री साथे पण मैथुन सेवन न करे, कारण के दिनसंभोगथी जे संतान उत्पत्ति थाय छे, ते

निर्बल थाय छे. जो काम अभिलाषा अधिक होय तो दिवसनी पण मर्यादा करे तेवीजरीते स्त्रीपण पर पुरुषनो त्याग करे ए प्रमाणे चोथु व्रत पाले. आ व्रतना पांच अतिचार छे. ते वर्जे, ते लखियें छियें

१ अपरिगृहीतागमन अतिचार परण्या विनानी (कुमारी) तथा विधवा स्त्री अपरिगृहीता कहेवाय छे, कारण के तेउनो कोइ भर्त्तार नथी कोइ अल्पमति, विषयाभिलाषी मनमां एम विचारे के में तो परस्त्रीनो त्याग करेलो छे, अने अपरिगृहीता तो कोइनी स्त्री नथी, तेथी तेनी साथे विषयसेवन करवाथी मारु व्रतभंग नहि थाय, एवो विचार करीने कुमारी तथा विधवा स्त्रीनी साथे भोग विलास करे, तथा स्त्री पण व्रतधारण करीने कुवारा तथा रांडेला पुरुषनी साथे व्यभिचार सेवन करे तो आ अतिचार लागे आ प्रथम अतिचार

२ इत्वर परिगृहीतागमन अतिचार. इत्वर अर्थात् अल्पकाल कोइपुरुषे थोडी मुदत माटे कोइ वेश्याने पोतानी करी राखेली होय तेवे प्रसंगे ते पुरुष अज्ञानना उदयथी एवो विचार करे के मारे तो परस्त्रीनो त्याग छे, अने वेश्यानो संबंध तो मारे अल्पकाल माटे छे, तेथी वेश्यानी साथे सेवन करवाथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, एवा अज्ञानतायुक्त विचारथी विषयसेवन करे तो बीजो अतिचार लागे. वली स्त्री पण पोतानी शोक्यना वाराने दिवसे पोताना भर्त्तारनी साथे विषय सेवन करे ते एवा वीचारथी के मेंतो मारापति साथे विषय सेवन करेल छे, तेथी मारा व्रतनो भंग थशे नहि, तेवे प्रसगे स्त्रीने पण अतिचार लागे पूर्वोक्त बने रीतिमां श्रावक यथार्थ रीतें जाण्या पछी फरीथी ते प्रमाणे करे तो व्रतभग थाय, परंतु अतिचार नहि.

३ अनंगक्रीडा अतिचार अनंगनाम काम ते काम कंदर्प जाग्रत करवो आलिंगन चुंबन प्रमुख करवां नेत्रोना हाव भाव कटाक्ष, ठठा मस्करी प्रमुख, परस्त्री साथे करवां. मनमां एवो विचार वरवो के मे तो परस्त्री साथे परस्पर एक शय्या उपर विषयसेवननो त्याग करेलो छे, परंतु अनंगक्रीडानो त्याग करेलो नथी एवो विचार करनार मूढमति जाणतो नथी के पूर्वोक्त कामक्रीडाथी व्रत कदापि रहीशके नहि, कारण के तेवी मनोवृत्तिथी महापाप तो ते जीवे उपार्जन करी लीधु निश्चय नयना

मतथी तेनो व्रतजंग पण थइ गयो वली पोतानी स्त्रीसाथे चोराशी आस-नोथी विषयसेवन करे, तथा पंदर तिथिना विचारे स्त्रीनी साथे अंगमर्दनादि पूर्वक काम प्रदीप्त करे, अत्यंत कामाजिलाषी तथा पोतानी स्त्रीनो योग न प्राप्त थाय तो हस्तकर्म करे. स्त्रीपण अत्यंत कामव्याप्त थइ गुह्यस्था-नमां वस्तु संचारादि हस्तकर्म करे. तेवा प्रसंगे आ आतिचार लागे. ते कारणथी श्रावकें अनेक उपायथी काम इछा मंद करवी जोइयें, कारण के विषयवृत्ति मंद थवाथी, अने वीर्यनुं रक्षण करवाथी, बुद्धि, आरोग्य-ता, आयु, वल प्रमुख वृद्धि पामेछे, अने कामसेवन अधिक करवाथी तेउनी मंदता थतां मन मलिन थायछे, पापबुद्धि पामेछे, क्षय, भ्रम, मूर्छा, क्लम, स्वेदादि अनेक रोग उत्पन्न थायछे ते कारणथी मात्र जेथी वे-दविकार शांत थाय, तेटलुंज मैथुन सेवन करवु, एवी अजिलाषा जो-इए. वली ज्यारे काम उत्पन्न थाय, त्यारे स्त्रीनी कामसेवननी जगाने जाजरु समान गणे. एवो विचार मनमां लावे के स्त्रीनुं शरीर मलमूत्र-थी जरेलुं छे, विषयसेवननुं स्थान अत्यंत मलिन, दुर्गंधमय छे, मुखमां पण दुर्गंधमय लाल छे, नाकपण दुर्गंधयुक्त श्लेष्मवालु छे, कानमां मेल छे. पेटमां विष्टा मूत्र जरेल छे, नसोमां खानपाननो दुर्गंधमय रस रु-धिर, हाड, चाम, चरवी, वात पित्त, कफ जरेल छे, स्त्रीनुं शरीर अत्यंत अशुचिनुं पुतलु छे, ज्यांथी वास निकलशे त्यां महादुर्गंधमय वास निक-लशे, वली ते शरीर अनित्य, अशाश्वत, सडन, पडन, विध्वंसन जाव-वालुं छे, ए प्रमाणे स्त्रीना शरीरनो स्वजाव छतां दिलगिरि छे के चतुर पुरुषो पण कामाधीन थइ विषयसेवनमां मग्न रहेछे, तेथी पूर्वोक्त सत्य समजथी विचार करी कामने शांत करे आ त्रीजो अतिचार

४ परविवाहकरण अतिचार. पोताना पुत्र, पुत्री विना, यशवास्ते तथा पुण्यवास्ते, बीजाउना विवाह करे, करावे. आ चोथो अतिचार

५ तीव्रानुराग अतिचार. पुरुष, स्त्रीउपर, तेमज स्त्री, पुरुष उपर काम सेवन अजिलाषाथी अत्यत राग, स्नेह राखे परस्त्रीने देखी मनमां ते-नीसाथे मैथुन सेवननी वहुज चाहना राखे. रात दिन कामकाज करतां सुतां, वेसतां, उठतां, जतां, आवतां, स्त्रीमांज चित्तवृत्ति राखे, तेमज कामवृद्धिमाटे, अफीण, माजम, जांग, हरताल, पारा, त्रांबु प्रमुख

खाय, अने तेप्रमाणे खाइ कामवृद्धि करी, स्त्रीसाथे अत्यंत प्रीति करे स्त्रीपण कामवृद्धिमाटे अनेक औपधोपचार करे, हावजाव, विषय, लालसा करे आ पांचमो अतिचार पांचे अतिचारनु स्वरूप श्रावक जाणी तेने तजवानी अजिलाषा करे पाचे अतिचारनुं विशेष स्वरूप धर्मरत्न प्रकरणनी टीकाथी जाणवुं इति चतुर्थव्रतं

५ पांचमा स्थूलपरिग्रहपरिमाण व्रतनु स्वरूप लखियें ठियें. परिग्रहना वे जेदछे एक वाह्यपरिग्रह अधिकरणरूप, ते द्रव्य परिग्रह, नवप्रकारनो छे वीजो जाव परिग्रह, ते चौद अन्यतर ग्रथिरूप, परजाव ग्रहणरूप, समस्त प्रदेश सहित, सकषायीपणे वंध, ते जाव परिग्रह छे वली शास्त्रमां मुख्य वृत्तिथी, मूर्छाने जाव परिग्रह, कहेली छे तेमा चौद प्रकारना अन्यतर परिग्रह आ प्रमाणे छे १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ४ जय, ५ शोक, ६ जुगुप्सा, ७ क्रोध, ८ मान, ९ माया, १० लोज, ११ स्त्रीवेद, १२ पुरुषवेद, १३ नपुसकवेद, १४ मिथ्यात्व आ चौद अन्यतर ग्रथि छे आ ससारमा जीवने केवल अविरतिना वलथी इछा, आकाशसमान अनती छे कदापि तेनु माप थइ शकतु नथी अविरतिना उदयथी इछा, अने इछावलथी कर्मवधनमा पडतां थका चारे गतिमां आ जीव जमण करेछे जवितव्यताना योगे पुण्यना उदयथी मनुष्यजवादि सकल सामग्रीनो योग प्राप्त करीने सद्गुरुना सत्संगथी श्रीजिनेश्वर जगवाननी वाणी श्रवण करवामां आवी, अनुक्रमे चेतना, जाग्रतदशानो अनुजव करवा लागी, मनमा विचार थयो के अहो! हु समस्त परजावथी अन्य हु! अवधी, अछेद्य, अजेद्य, अदाह्य धर्मी हुं! परंतु इछाने अधीन वनवाथी समस्त छेदन, जेदन, परिज्रमणादि दुःखोने जोगवनार परधर्मी वनी रह्यो हु! ते वास्ते समस्त परजावनु मूल जे इछा छे, ते दूर करु वाद समस्त परजाव त्यागरूप चारित्र आदरे साधुवृत्ति अगीकार करे, अने जे जीव इछानुं प्रवल होवाथी एकदम सर्व परिग्रह त्यागवाने समर्थ न होय, अने दोषथी करतो होय, तो गृहस्थधर्म, इछा परिमाणरूप व्रत आदरे ते इछा परिमाण व्रत नवप्रकारे छे तेनुं स्वरूप

१ प्रथम धनइछा परिमाणव्रत धनना चार प्रकार छे १ गणिम धन नालीएर प्रमुख, जे गणत्रीथी वेचवामां आवे ते २ धरिम धन, गोल-

प्रमुख, जे तोलीने वेचवामां आवे ते ३ परिछेद्य धन, सोनुं, रूपुं, जवाहिरप्रमुख, जे परीक्षाथी वेचवामां आवे ते ४ मेय धन, डुधप्रमुख, जे मापीने वेचवामां आवे ते. आ चारे प्रकारना धननुं परिमाण करे, ते धन परिमाण व्रत.

२ धान्य परिमाण व्रत धान्यना चोवीश प्रकार छे १ कमोद, २ घउं, ३ जुवार, ४ वाजरी, ५ जव, ६ मग, ७ मठ, ८ अडद, ९ धुंट, १० चोडा, ११ मटर, १२ तुअर, १३ किसारी, १४ कोद्रवा, १५ कंगणी, १६ चणा, १७ वाल, १८ मेथी, १९ कलथी, २० मसूर, २१ तल, २२ मंडवा, २३ कुरी, २४ वटी. आ धान्य खावा वास्ते तेमज व्यवहार वास्ते उपयोगी छे, अने १ धाणा (धनीया), २ चींडी, ३ सोवा. ४ अजवायन, ५ जीरुं, आ पांच धान्यनी जाति छे, परंतु औषधादिमां काममां आवे छे. तथा १ शामक, २ मणकी, ३ चुरट, ४ चेकरीआ, आ चार मारवाड देशमां प्रसिद्ध छे. वीजां पण केटलांएक धान्य वाव्याविना उगे छे, जे लोको डुकालना वखतमां खाय छे आ सर्व जातिनां धान्यनु परिमाण करे.

३ क्षेत्रपरिग्रह व्रत. वाववाना खेतर, तथा वाग, वगीचादि जाणवां क्षेत्रना त्रण भेद छे १ वर्षादना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, २ कुवाना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र, ३ वने प्रकारना पाणीथी ववाय एवां क्षेत्र ए प्रमाणे क्षेत्र परिमाण करे.

४ वास्तुक परिमाण व्रत. घर, हाट, हवेली प्रमुख तेना पण त्रण भेद छे १ जमीन तल माल विनाना २ एकमाल, वे माल, त्रणमाल, यावत् सातमाल सुधी, ३ भोयरां तेनु परिमाण करे.

५ रूप्य परिग्रह परिमाणव्रत. सिक्का विनानुं काचुं रुपुं, तेना तोलनु परिमाण करे

६ सुवर्णपरिग्रहपरिमाण व्रत सिक्का विनानु सोनु, तेना तोलनु परिमाण करे.

७ कुपदपरिग्रहपरिमाण व्रत त्रांवुं, पीतल, जसत, कांसु, सीसुं, लोढु प्रमुख धातुनां वासणोना तोलनु परिमाण करे.

८ डुपदपरिग्रहपरिमाण व्रत दास, दासी, पगारदार मुनीम प्रमुख राखवां, तेनी संख्यानुं परिमाण करे.

ए चौपदपरिग्रहपरिमाण व्रत गाय, भेंस, घोडा, हाथी, बलद, बकरी प्रमुख जानवरो राखवानी संख्यानु परिमाण करे

हवे पोतानी इच्छा परिमाणथी परिग्रह केवीरीते राखे, ते कहीए छीए रुपु तथा सोनु, घडेलु तेमज नहि घडेलु आटला वजन राखु, तथा रुपैया, सोनामहोर, जवाहीर, आटलां राखुं, ते प्रमाणे परिमाण करे, ते उपरांत पुण्योदयथी धनवृद्धि थाय तो, वधेलु धन, धर्मकार्योमां वापरे वली वर्षप्रति आटली जातनां वस्त्र पहेरु, तथा एकवरसमां आटलु अन्न घर खरच वास्ते राखु, तथा आटलु व्यापार वास्ते राखु, इत्यादि यावतोनु स्वरूप विस्तारथी, सातमा व्रतना स्वरूपमां कथन करवामां आवशे क्षेत्र परिमाणमा, खेतरो, वाडी, वगीचा, सर्व मली आटलां सांती वा विघा जमीन राखु, तथा घर, चोकवध, खडकीवध, दुकान, तवेला, वखारो, तथा परदेश सबधी दुकानोनी जयणा तथा भाडे राखवाना मकानोनी जयणा, तथा भाडे राखेलां मकानो समरावववानी जयणा राखे, तथा कुटुंव सवधी घर वनाववाना उपदेशनी जयणा, वली पोताना संवंधी तेमज गुमास्ता परदेश गया होय, अने पाछल तेउना घर प्रमुखसमराववा पडे तो जयणा, आजीविकावास्ते कोइनी चाकरी करवी पडे, तेवे प्रसंगे शेठना घरप्रमुख समराववानी जयणा कुपद परिमाणमा त्रांवा, पितल, कांसा विगेरे धातुना वांसणो तथा धातु तुटी अमुक मण राखवानी जयणा, द्विपद परिमाणमां दास, दासी वेचाता लेवानो प्रतिवध, परंतु पगारवाला नोकरो गणत्रीथी राखवा जोइए, वली अमुक गुमास्ता राखवानी जयणा, चौपद परिमाण, गाय, भेंस, वकरी प्रमुख राखवानुं परिमाण सख्याथी करे आ व्रतना पांच अतिचार छे तेनु स्वरूप लखीए छीए

१ धन परिमाण अतिक्रम अतिचार ज्यारे इच्छा परिमाणथी अधिक धन थइ जाय, त्यारे तीव्र लोभना उदयथी मनमां एवो सकल्प करे के, मारो पुत्र मोटो थयो छे, तेने धननी जरुर छे, वलि ते कमाइ शके तेवो थयो छे, तेथी मारे तेने धन आपवु जोइए, एवो कुविकल्प करी पुत्रना नामथी अमुक रूपीआनी रकम जुदी राखे, ए प्रमाणे जुदी जुदी रीते धनना खाता राखे धान्य पोताना परिमाणथी अधिक राखवानी

रमणव्रतनी पुष्टि थइ, तेमज वहारना जीवो साथे असत्य बोलवानो प्रतिबंध थयो, तेथी सत्य व्रतने पुष्टि थइ वली क्षेत्रवहारनी वस्तु चोरवानो त्याग थयो, तेथी अस्तेय व्रतनी पुष्टि थइ तथा क्षेत्र वहारनी स्त्री साथे मैथुननो त्याग थयो तेथी ब्रह्मचर्य व्रतनी पुष्टि थइ तथा वहार क्रय, विक्रयनो निषेध थयो तेथी पांचमा व्रतनी पुष्टि थइ ए प्रमाणे पाचे व्रतने आ व्रतो गुणकारी छे

हवे दिशि परिमाण व्रतमां, चारे दिशि, तथा चारे विदिशि, ऊर्ध्व अने अधोदिशि, आ दशे दिशाओनुं परिमाण करे तेना वे भेद छे १ व्यवहारथी, २ निश्चयथी तेमां पोतानी कायाथी दशे दिशिमा जवा आववाना, तथा मनुष्य मोकलवाना, अने व्यापार करवानां परिमाण करे, तेने व्यवहार दिशि परिमाण व्रत कहीए

निश्चयथी दिशि परिमाणनुं स्वरूप ए एवु छे के, नरकादि गतिमा जे गमन छे, ते सर्व कर्मनो धर्म छे जेने वश पडवाथी आ जीव चारे गतिमां भटके छे. चेतन परानुयायी थइ रहेल छे, तेज कारणथी परभवानुसारी गति भ्रमण करे छे, परंतु जीव तो शुद्ध चैतन्य, अगतिस्वभाव, तथा निश्चलस्वभाव छे, एवु जिनप्रणीत सिद्धांतना उपदेशथी समजीने, चेतन शुद्धस्वरूप अनुयायी थाय, त्यारे पोतानो अगतिस्वभाव जाणीने सर्वत्रथी उदास रहे, समस्त क्षेत्रथी अप्रतिबंधक भावथी वर्त्ते, तेने निश्चयथी दिक्परिमाणव्रत कहीए आ दशे दिशिनुं प्रमाण करे तेना वे भेद छे

प्रथम जलमार्गे वहाणथी अमुकदिशामां अमुक योजनसुधी अमुक द्वीप, बंदरोसुधी गमन करुं जो पवन तथा वरसादना जोरथी अधिक जवाय तो आगार, अर्थात् व्रतभंग न थाय, तेमज अजाणपणे अथवा दिशाशून्य थवाथी अन्यस्थलें जवाय तो तेनो पण आगार छे

वीजो स्थलमार्गे जे जे दिशामां, जेटला जेटला योजन सुधि जवानुं परिमाण करेलु, छे, त्यां सुधी जइ शकाय, परंतु चोर, म्लेछादि पकडीने क्षेत्र नियमथी वहार लइ जाय तो तेनो आगार छे ऊर्ध्व दिशिमां बार कोशसुधी जवानी जयणा राखे, तथा अधोदिशिमा आठ कोश सुधी जवानी जयणा राखे तेमा ऊंचा चडीने नीचे उतरे ते अधोदि-

शिमां गणाय नहि. वली जेटला क्षेत्रनुं परिमाण राख्यु होय, तेटलाथी वहारना क्षेत्रना कोइ ओलखाणवाला पुरुषनो पत्र आवे तो, तेनो उत्तर लखवानी जयणा राखे, परंतु पोतानी तरफथी सारा काम विना पत्र लखे नहिं. वली परदेशनी विकथा श्रवण करवानो आगार राखे आ व्रतना पांच अतिचार छे ते नीचे मुजव

१ ऊर्ध्वदिशा परिमाण अतिक्रम अतिचार अनाजोगथी अथवा वे सुरतिथी अधिक चाल्यां जवाय तो आ अतिचार लागे.

२ अधोदिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार उपरमुजव

३ तिर्छी दिशि परिमाण अतिक्रम अतिचार. उपरमुजव जो नियम जगना जयथी गुमास्तो मोकले तो पण अतिचार लागे

४ एकदिशिमां सो योजन राखेला होय, अने वीजी दिशिमां पचास योजन राख्या होय, पाछलथी ज्यारे एकदिशिमां दोडसो योजन जवानु वन्यु होय त्यारे वीजी दिशाना पचास योजन ते दिशिमां जोडी दइ मनमां अज्ञानताथी एवो विचार करे के मारा नियम उपरांत हुं गयो नथी, एवो विचार करी जाय तो आ अतिचार लागे

५ स्मृति अतर्धान अतिचार पोताना नियम करेला योजननी संख्या जूली जाय, जेमके कोण जाणे, पूर्वदिशिमां केटला योजन राखेल छे? सो राखेल छे के पचास राखेल छे? इत्यादि, एवी शंका थतां नियम उपरांत योजन जाय तो आ अतिचार लागे. इति षष्ठव्रतं

हवे सातमा जोगोपजोग व्रतनुं स्वरूप लखीये छीये आ वीजुं गुणव्रत छे. आ व्रत अंगीकार करी सचित्त वस्तु खावानो त्याग करे, अथवा परिमाण करे वली जेमां वहु हिंसा होय एवो व्यापार न करे, तथा जे काममां अवश्य हिंसा वहुज करवी पडे, तेनो त्याग करे,अजक्ष्यनो त्याग करे चौद नियमपण आ व्रतमां गणाय छे ते कारणथी आ व्रत पूर्वोक्त पांचे अणुव्रतोने गुणकारी छे आ व्रतना वे जेद छे, ते कहीयें छिये

प्रथम व्यवहार जक्ष्य अजक्ष्य पदार्थोनु ज्ञान करी तेउनो त्यागकरे तथा आदर करे. वली आश्रव, संवरनु ज्ञान करी, खानपानादि जे इन्डियसुखनां कारण छे, तेमां पोतानी शक्तिने अनुसारें वहु आरंजनो त्याग करी अल्पारंजी थाय, तेनुं नाम व्यवहार जोगोपजोग विरमणव्रत.

बीजो निश्चय श्रीजिनवाणी श्रवण करी, वस्तुस्वरूपनु तत्त्वज्ञान मेलवी, अंत करणमां विचार करे के जगत्मां जे परवस्तु छे, ते सर्व हेय छे, ते कारणथी तत्त्ववेत्ता पुरुष परवस्तु खाय नहि, पीये नहि, तेमज पोतानी पासेपण राखे नहि, अने शुद्ध चैतन्यभाव धारण करीने, परम शांतरूप थइ, जे वस्तु, सडे, पडे, नाश पामे, जाती रहे, इत्यादि परवस्तु स्वरूप जाणीने, एवो विचार करे के आ सर्व पुद्गलपर्याय छे, जगत्नी सर्व जूठ छे, तेवी वस्तुनो भोगोपभोग करवो ते तत्त्ववेत्ताने उचित नथी एवा ज्ञानथी परभावनो त्याग करे, स्वगुणनी वृद्धि करे एवु ज्ञान पामीने आत्माने स्वस्वरूपानंदी करे चिद्विलासनो अनुभवी करे तेने निश्चय भोगोपभोग विरमणव्रत कहीयें.

भोगोपभोग शब्दनो अर्थ कहिये छियें आहार, पुष्प, विलेपनादि, जे एकवार भोगववामां आवे, ते भोग कहेवाय, अने भुवन, वस्त्र, स्त्रीआदि, जे वारवार भोगववामां आवे, ते उपभोग कहेवाय कर्माश्रयी, आ व्रतना अनेक भेद छे, ते आगल उपर लखवामां आवशे.

श्रावके उत्सर्गमार्गमां तो निरवद्य आहार लेवो एवो लेख छे, परंतु शक्ति न होयतो, सचित्तनो त्याग करे, जो तेपण त्यागी न शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकायनो तो अवश्य त्याग करवो जोइए प्रथम बावीश अभक्ष्यनु विस्तारथी कथन करिये छियें

१ वडनां फल, २ पीपरना फल, ३ पिलखणना फल, ४ कठवरनां फल, ५ गुलरना फल आ पाच फल अभक्ष्य छे, कारण के आ पांचे फलमा बहुज सूक्ष्म कीडा, त्रसजीव भरेला होयछे, जेहनी गणत्री थइ शकती नथी, ते कारणथी धर्मात्मा जीव, आ पांचे फलनो त्याग करे कदापि दुकालमां अन्न न मले तोपण विवेकी जीव आ पांच फलनु भक्षण न करे

६ मदिरा, ७ मांस, ८ मधु, ९ माखण. आ चारेमां तेज वर्णना असंख्यजीव उत्पन्न थायछे आ चारे विगय, महाविगय छे, तेमज अत्यंत विकार उत्पन्न करनारीछे तेमां प्रथम मदिरा छे, ते अनेक दूषणयुक्त होवाथी अवश्य त्यागवा योग्य छे ते दूषणो श्रीमद् हेमचन्द्रसूरिकृत योगशास्त्रमां दशश्लोकथी वर्णवेलां छे तेनो अर्थ अहींआ लखियें छिये

१ मदिरा पीवाथी चतुर पुरुषनी बुद्धि नाश पामेछे, जेम दुर्जागी पुरुषने सुंदर स्त्री तजी देछे,तेम चतुर पुरुषने, बुद्धि तजी देछे २ मदिरापानथी, पुरुष, पोतानी, माता, बेहेन, दीकरीने पण पोतानी जार्या समान समजी, जोराजोरीथी तेनी साथे विषयसेवनादि बलात्कार करेछे, पोतानी जार्याने, पोतानी मातासमान समजेछे, मदिरापानी एवा निर्लज्ज थइ महापाप करनारा थायछे ३ मदिरापानी, पोताने तेमज परने पण जाणता नथी ४ मदिरापानी, पोताना स्वामिने, किंकर समजेछे,अने पोताने स्वामि मानेछे, एवी निर्लज्ज बुद्धिवाला थायछे ५ मदिरापानी, चोकमां केफ करी पडेलो होय, तेवे प्रसगे कुतरो तेना म्हों उपर मुतरेछे ६ मदिरापानी, चोकमां नग्न थइ निर्लज्ज थइ आलोटे छे ७ मदिरापानी गम्य, अगम्य, चोरी, यारी, खुन प्रमुख, जे जे कुकर्मो तेणें करेला होय, ते सर्व, लोको सन्मुख प्रकाश करेछे. ८ मदिरा पीवाथी, शरीरनुं तेज, यश कीर्त्ति सर्व नाश पामेछे तेमज तात्कालिकी स्वाजाविकी बुद्धिपण क्षय पामे छे ९ मदिरापानी जूत वलग्यानी पेठे नाचे छे. १० मदिरापानी, कचरा, कादव तेमज गटीमां लोटे छे ११ मदिरा पीवाथी अंग शिथिल थइ जायछे १२ मदिरा पीवाथी इंद्रियनु तेज घटी जाय छे १३ मदिरा पीनार मोटी मूर्छाने प्राप्त थाय छे १४ विवेक जृष्ट थाय छे १५ संयम नष्ट थायछे, १६ ज्ञान नष्ट थायछे, १७ सत्य नष्ट थायछे १८ शौच नष्ट थायछे, १९ दया नष्ट थायछे, २० क्षमा नष्ट थायछे, जेम अग्निथी तृण जस्म थइ जायछे, तेम उपरना गुणो नाश पामेछे, २१ मदिरा, चोरी, तेमज परस्त्री गमनादि दुराचरणोनुं कारण छे, कारण के मदिरापानी कयां कुकर्म करता नथी २२ मदिरा, आपत्ति तेमज वध, बंधननु कारण छे, २३ मदिराना रसमां वहुज जीव उत्पन्न थायछे, ते कारणथी दयाधर्मीने मदिरा हेयछे २४ मदिरापानी, लीधानुं, न लीधु कहेछे २५ आप्यानु नहि आप्यु कहेछे २६ कर्यानुं न कर्युं कहेछे. २७ मदिरापानी, घरमा तेमज वहार परधननुं हरण करेछे २८ मदिरापानी, वाला, युवति, वृद्धा, ब्राह्मणी, चांडाली प्रमुख स्त्रीयोने जोगवी लेछे, २९ मदिरापानी अरराट करेछे, ३० गीत गायछे,३१ आलोटे छे, ३२ दोडेछे, ३३ क्रोध करेछे, ३४ रोवेछे, ३५ हसेछे, ३६ स्थंजात् थइ जायछे, ३७

१ मदिरा पीवाथी चतुर ७ देवता, पितरो तेमज अतिथिउने मांस
पुरुषने सुंदर स्त्री तजी देछे, ? तेमज परंपराये जीवना वधकरनारा छे. म-
रापानथी, पुरुष, पोतानी, मःहे छे के श्लोक ॥ अनुमंता विशसिता, नि-
मान समजी, जोराजोरीथी चोपहर्ता च, खादकश्चेति घातकाः ॥ १ ॥
छे, पोतानी जार्याने, पोता करनार, १ मारेला जीवनां अंगना विजाग
लेजा थइ महापाप करनकरनार, ४ मांस वेचनार, ५ मांस रांधनार, ६
पण जाणता नथी ४ मखानार, आ साते घातकी छे, अर्थात् जीवना
पोताने स्वामि मानेछे, स्मृतिमां कहेलुं छे के ॥ यथा॥ अकृत्वा प्राणिनां
चोकमां केफ करी पडे क्वचित् ॥ न च प्राणिवधात् स्वर्ग, स्तस्मान् मांसं
रेछे ६ मदिरापानी, चा -जीवनो वध न करवामां आवे त्यांसुधी मांस
रापानी गम्य, अगम्य, धथी स्वर्ग प्राप्त थतुं नथी, परंतु नरकगति था-
लां होय, ते सर्व, लोको ग करवो
तेज, यश कीर्त्ति सर्व ना
क्षय पामे छे ए मदियक कहेवानो हेतु ए के मांस खानारा न होय तो
पानी, कचरा, कादवते बीजा जीवोनो वध करे ? जे प्राणीउ पोताना
शिथिल थइ जायछे उना मांसथी पुष्टि करेछे, अर्थात् बीजा प्राणीउना
१३ मदिरा पीनार ाण करेछे, ते जीवो, थोडी जींदगीवास्ते पोतानो
१५ सयम नष्ट थायपोताना जीवनवास्ते करोडो जीवोने दुःख आपे छे.
शौच नष्ट थायछे, १ंतर रहेवानु छे ? जे शरीरमां सुंदर मिष्टान्न, विष्टा
ग्निथी तृण जस्म थइ अमृतवस्तुउ मूत्र थइ जाय छे, तेवा शरीरने वा-
रा, चोरी, तेमज परस्त्रीव वध, तेमज मांसजक्षण करे ?
दिरापानी कयां कुकर्म करवामां कांइपण दूषण नथी, एवुं लखी गया छे,
धननु कारण छे, ६ ववेकी, तेमज म्लेछ हता एम लागे छे, कारण के तेउ
रणथी दयाधर्मी ा ॥ न मांसजक्षणे दोषो, न मद्ये न च मैथुने ॥ प्रवृत्ति
हेछे २५ आप्र ृत्तिस्तु महाफला ॥ १ ॥ आ श्लोकना लखनार, वाघ
दिरापानी, घसंह, गीध प्रमुख मांसाहारी प्राणीना गुरु लागे छे, तेउ
वाला, युवत्हियतो उपदेश रूपें आ कथन करे नहि ? वली तेउ जो न
मदिरापानीपत तो आ प्राणीउने मांस खावानुं, कोण शीखवत मदिरा
३३ क्रोध अने मैथुनसेवनमां कांइपण पाप नथी, परंतु तेउनी निवृत्तिथी

महाफल छे हवे जुओ तेओनी अज्ञानता ? केवो स्ववचनविरोध छे? जे करवामां पाप नथी, ते त्यागवामां धर्मफल कदापि होइ शके ?

हवे निरुक्तिबलथी पण मांस त्यागवा योग्य छे, ते बाबतमां मनुजी कहे छे के ॥ श्लोक ॥ मांसभक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्म्यहं ॥ एतन्मामासस्य मांसत्वे, निरुक्तं मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ अर्थः—जेनु मांस हु खाउं, ते जीव, परभवमां मने भक्षण करशे, आ निरुक्तिथी मनुजी कहे छे के, मांसभक्षण करनारने महापाप लागे छे जे प्राणीओ मांस खावामां लंपट छे, तेओ जे जे जलचर मत्स्यादिजीवो, स्थलचरमृगादि जीवो, अने खेचर, तेतरादि जीवोने देखतांज, तेओने मारीने खावानी तेओनी मति थाय छे साक्षात् डाकणनी जेवी खावानी वृत्ति थाय छे मांस खानारा उत्तम पदार्थोनो परिहार करी नीच पदार्थोने ग्रहण करवामा उद्यत थाय छे साक्षात् कागडानी जेम अमृत छोडी विष्टामां चांच देछे तेनुज नाम निर्विवेकता छे ॥ श्लोक ॥ ये भक्षयन्ति पिशितं, दिव्यभोज्येषु सत्स्वपि॥ सुधारस परित्यज्य, भुंजते ते हलाहलं ॥ १ ॥ अर्थ.—सर्व धातुओने पुष्टि आपनार, तथा इंद्रिओने आल्हादकारक, दिव्य भोजन समान, दुध, खीर, दही प्रमुख, तथा मोदक, सुतरफेणी, घारी, खाजां, मोहनथाल, मेसुब, सक्करपारा, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा इक्षुरस, द्राक्ष, नारंगी, सफरजन, सतरा प्रमुख उत्तमफल तथा बदाम, पस्ता, एलची, जायफल, जावंत्री प्रमुख मुखवासी उत्तम वस्तु तजीने मूढमति, विस्रगंधि, सूगवाला, तथा वमन थाय तेवा बीभत्स मांसनु भक्षण करे छे तेओ जीवितव्यनी वृद्धिवास्ते अमृतरसने तजीने जीवितव्यनो नाश करनार हलाहल, विषनुं भक्षण करे छे बालक पण पथ्थरने छोडी, सुवर्णने ग्रहण करे छे, परंतु मांसाहारी पुरुष तो मांसथी अधिक पुष्टि आपनार दिव्य भोजननो त्याग करी मांसने ग्रहण करे छे, तेथी तेओ बालक करतां पण अज्ञानीछे.

मास खावाथी मनुष्यनी निर्दयी प्रकृति थइ जाय छे तेथी तेओ धर्मने योग्य रही शकता नथी धर्मनु मूल दया छे, आ सिद्धांत सर्व उत्तम पुरुषो तथा सतजनो अंगीकार करे छे, तेथी मांसाहारी, मांस खावाथी दयायुक्त रहीशकताज नथी, अने तेज कारणथी तेओने कसाइ समान कह्या छे, तेथी मासाहारीने धर्म नथी

प्रश्नः–मांसाहारी पोते पोताने अधर्मी केम बनावे छे?

उत्तरः–मांसना स्वादमां लुब्ध थवाथी, तेओ दया के धर्म कांइ पण जाणता नथी कदाचित् जाणवामां आवे तो पण मांसलुब्ध थइ जवाथी मांसने तजवाने समर्थ रहेता नथी ते कारणथी मनमा विचारे छे के आपणी समान बीजाओ थइ जाय तो कोइ निंदा करे नहि, तेथी पोते बीजाने मांसभक्षण नहि करवानो उपदेश करी शकता नथी

केटलाएक मूढमति पोते तो मांस खाता नथी, परंतु देवता, अतिथि अने पितरोने माटे मांसनो उपयोग करे छे तेओना शास्त्रकार कहेछे के ॥ यथा ॥ क्रीत्वा स्वयं वा उत्पाद्य, परोपहृतमेव वा ॥ देवान् पितॄन् समभ्यर्च्य, खादन् मांसं न दूष्यति ॥ १ ॥ अर्थ.–आ श्लोक मृगपक्षिओना विषयमां छे कसाइनी दुकान विना, पारधी तेमज शिकारी, अने जानवरोने मारनाराओ पासेथी मूल आपीने मांस लेवु अने ते देवता, अतिथि तेमज पितरोने आपवुं जोइए; कारण के कसाइनी दुकानना मांसथी देवता, पितरोनी पूजा थइ शकती नथी, तेथी पोते मांस उत्पन्न करीने पितृआदिने आपे तो तेओ प्रसन्न थायछे. पोते मांस आ प्रमाणे उत्पन्न करे ब्राह्मण, मागीने मांस लावे, क्षत्रिय शिकार करीने मांस लावे अथवा कोइए मांसनी भेट करी होय, तो ते मांसथी देवता पितरोनी पूजा करीने, पछी पोते मांस खाय तो दोष नथी. आ कथन, महामूढ तथा मिथ्यादृष्टिओनुंज छे; कारण के दयाधर्मी, आस्तिकमतवालाओने तो मांस दृष्टिथीपण जोवुं योग्य नथी, तो पछी देवता, अतिथिनु पूजन मांसथी करवु, आ विचार स्वप्नमांपण तेओने केम आवे? वली देवताओने मांस चढाववुं, ते बुद्धिमानूनुं काम नथी, कारण के देवताओ तो महापुण्यवान् छे, केवल आहार करता नथी, तो आवो दुगंछा उत्पन्न करे तेवो आहार देवता केम ग्रहण करे? तेथी जेओ देवताओने मांसाहारी कहे छे, तेओ महाअज्ञानी छे वली पितरो, पोतपोताना पुण्य पापने अनुसारे, सारी अथवा माठी गतिने प्राप्त थयेला छे, तेओ ते गतिमां पोताना कर्मनां फल भोगवे छे, अने पुत्रना करेला कर्मनां फल तेओने कांइपण लागतां नथी, तो हवे मांस आपवाना पापनुं तो शुज कहेवुं? पुत्रादिना सुकृतनां फलपण तेओने पहोंचतां नथी, कारण के आंबाने सेचन करवा-

महाफल छे हवे जुर्ज तेर्जनी अज्ञानता ? केवो स्ववचनविरोध छे? जे करवामां पाप नथी, ते त्यागवामां धर्मफल कदापि होइ शके ?

हवे निरुक्तिवलथी पण मांस त्यागवा योग्य छे, ते वावतमां मनुजी कहे छे के ॥ श्लोक ॥ मांसजक्षयिताऽमुत्र, यस्य मांसमिहाद्यहं ॥ एतन्मामांसस्य मांसत्वे, निरुक्तं मनुरब्रवीत् ॥ १ ॥ अर्थः—जेनुं मांस हुं खाउंछुं, ते जीव, परजवमां मने जक्षण करशे, आ निरुक्तिथी मनुजी कहेछे के, मांसजक्षण करनारने महापाप लागे छे. जे प्राणीर्ज मांस खावामां लंपट छे, तेर्ज जे जे जलचर मत्स्यादिजीवो, स्थलचरमृगादि जीवो, अने खेचर, तेतरादि जीवोने देखतांज, तेर्जने मारीने खावानी तेर्जनी मति थाय छे साक्षात् डाकणनी जेवी खावानी वृत्ति थाय छे मांस खानारा उत्तम पदार्थोनो परिहार करी नीच पदार्थोने ग्रहण करवामां उद्यत थायछे साक्षात् कागडानी जेम अमृत छोडी विष्टामां चांच देछे. तेनुज नाम निर्विवेकता छे ॥ श्लोक ॥ ये जक्षयन्ति पिशितं, दिव्यजोज्येषु सत्स्वपि॥ सुधारसं परित्यज्य, जुंजते ते हलाहलं ॥ १ ॥ अर्थ —सर्व धातुर्जने पुष्टि आपनार, तथा इंद्रिर्जने आल्हादकारक, दिव्य जोजन समान, दुध, खीर, दही प्रमुख, तथा मोदक, सुतरफेणी, घारी, खाजां, मोहनथाल, मेसुब, सक्करपारा, घेवर प्रमुख मिष्टान्न, तथा इक्षुरस, डाक्ष, नारंगी, सफरजन, सतरा प्रमुख उत्तमफल तथा बदाम, पस्ता, एलची, जायफल, जावंत्री प्रमुख मुखवासी उत्तम वस्तु तजीने मूढमति, विस्रगंधि, सूगवाला, तथा वमन थाय तेवा वीजत्स मांसनु जक्षण करे छे तेर्ज जीवितव्यनी वृद्धिवास्ते अमृतरसने तजीने जीवितव्यनो नाश करनार हलाहल, विषनु जक्षण करे छे वालक पण पथ्थरने छोडी, सुवर्णने ग्रहण करे छे, परंतु मांसाहारी पुरुष तो मांसथी अधिक पुष्टि आपनार दिव्य जोजननो त्याग करी मांसने ग्रहण करे छे, तेथी तेर्ज वालक करतां पण अज्ञानीछे.

मास खावाथी मनुष्यनी निर्दयी प्रकृति थइ जाय छे तेथी तेर्ज धर्मने योग्य रही शकता नथी धर्मनु मूल दया छे, आ सिद्धांत सर्व उत्तम पुरुषो तथा सतजनो अंगीकार करे छे, तेथी मांसाहारी, मांस खावाथी दयायुक्त रहीशकताज नथी, अने तेज कारणथी तेर्जने कसाइ समान कह्या छे, तेथी मासाहारीने धर्म नथी

हवे मांस खावामां जे अनुत्तर दूषण ठे ते कहीए ठीए तत्काल मांसमां समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय ठे, तेमज अनंत निगोदरूप जीव, तेनुं संतान वारंवार उत्पन्न थया करे ठे, ते कारणथी महादूषण ठे ॥ यदाहुः ॥ आमासु अपक्कासु, अविपच्चमाणासु मंसपेसीसु ॥ सयय चिय उववाऊ, जणिउं निगोय जीवाणं ॥ १ ॥ अर्थः– काची, तेमज अपक्व जे मांसनी पेशी रांधवामां आवे ठे, ते रंधाया ठतां पण तेमां निरंतर निगोदना जीव उत्पन्न थाय ठे ते कारणथी मांसजक्षण, नरक गमन करनार जीवोने पुरी खरची ठे, तेथी उत्तम जीवे कदापि मांस जक्षण करवु नहि

हवे मांसजक्षण करवानो उपदेश जेउए करेलो ठे, तेउनां नाम लखीए ठीए १ मांस खावाना लालचुउ. २ मर्यादारहितो, ३ नास्तिको, ४ अल्पबुद्धिमानो, ५ असत्य शास्त्र बनावनाराउ, ६ पशुना वैरीउ. मांसाहारी समान कोइपण निर्दय नथी मांस आहारथी अधिक, नरक अग्निमाटे इंधन नथी. गंदकी खाइने सूअरो जे पोतानां शरीर पुष्ट करे- ठे ते सारां ठे, परंतु जीवने मारीने मांस खानारा सारा नथी

प्रश्न.– सर्वजीवोनुं मांस खावुं, एम सर्व कुशास्त्रोमां लखेलुं ठे, परंतु मनुष्यनुं मांस खावु, एम कोइपण शास्त्रमां लख्यु नथी, तेनुं शु कारणठे ?

उत्तर.–पोताना शरीरना मांसनी रक्षावास्ते कोइपण कुशास्त्रिए मनुष्यनु मांस खावुं लख्यु नथी, कारण के तेउ जाणता हता के, मनुष्यनु मांस खावुं, एम शास्त्रमां लखशुं तो, मनुष्य कदी अमने पण मारीने खाइ जशे. तेथी लखेलुं नथी.

जेउ पुरुषना मांसमां तेमज पशुना मांसमां तफावत मानता नथी, तेउ समान कोइ धर्मी नथी, अने ते बाबतमा जेउ तफावत माने ठे, अने मांस खाय ठे, तेउ समान कोइ पापी नथी वली मांसनी उत्पत्ति रुधिरथी थाय ठे, तथा विष्टाना रसथी तेनी वृद्धि थाय ठे, वली लोही जेमां जरेलु रहे ठे, अने कृमि जेमां उत्पन्न थाय ठे, एवा मांसने बुद्धिमान् केम खाइ शके ? आश्चर्य तो एज ठे के ब्राह्मण लोको धर्म तो शुचिमूल कहे ठे अने सात धातुथी जे मांस हाड बने ठे, ते मांस हाडने मुखमां दांतथी चावे ठे. हवे तेवाउने कुतरा समान गणवा के शु-

थी केम फलीभूत थती नथी तथा अतिथिनी भक्ति वास्ते मांसनुं अर्पण नरकपातनो हेतु होवाथी, महा अधर्मनु कारण छे. आ बाबतमां कोइ एवो सवाल करे के, जे वात श्रुति, स्मृतिमां छे, ते मानवी जोइए.

उत्तर.— आ कथन वास्तविक नथी जे वात श्रुति, स्मृतिमां अप्रामाणिक होय, ते बुद्धिमान् कदापि मानेज नहि,कारण के श्रुतिमां अमे एम सांभलीए छीए के "वचांसि भूयांसि यथा पापघ्नोगोस्पर्श· द्रुमाण च पूजागादीनां च पूजागादीनां च वध. स्वर्ग्य. ब्राह्मण भोजनं पितृप्रीणनं मायावीन्यधिदैवतानि वह्नौ हुत देवप्रीतिप्रदं" आवु कथन जे श्रुतियोमां छे, तेने युक्तिकुशल पुरुष कदापि मानशे नहि, तेथी मांसथी देवतानी पूजा करवी ते महा अज्ञानता छे वली केटलाएक कहे छे के, जेम मन्त्रथी संस्कृत, अग्नि दाह करतो नथी, तेमज मंत्रथी संस्कार पामेलु मास दोपकारक रहेतु नथी आ कथन मनुजीनु छे। यथा ॥ असस्कृतान् पशून् मत्रै, नाद्याद्विप्र कथचन ॥ मन्त्रैश्च संस्कृतानद्या, छाश्वतं विधिमास्थित· ॥ १ ॥ अर्थ.— मंत्रथी असंस्कृत पशुओनु मांस ब्राह्मण न खाय, अने मंत्रथी संस्कृत पशुनु मांस खायतो, शाश्वता नित्य वैदिक विधिमां रहेलोछे एम जाणवो

आ बाबतमां समाधान ए छे के, मंत्रथी जे मांस पवित्र करवामां आव्यु होय, ते पण धर्मी पुरुप कदापि भक्षण न करे कारण के मंत्र जेम अग्निनी दाहकशक्तिने रोके, तेम नरकादिप्रापण शक्ति जे मांसनी छे, तेने दूर करवाने मंत्रमा शक्ति नथी. जो तेवी शक्ति मंत्रमा होय तो, दरेक पाप करीने, पछी ते पापना नाशकरनार मंत्रनु स्मरण करवा मात्रथीज ते पाप नाश थई जाय, जो ए प्रमाणे होय तो वेदोमा पापनो निपेध करेलो छे, ते कथन सर्व निरर्थक समजवु, कारण के सर्वपाप मंत्रस्मरणथीज नाश थाय छे, पछी निपेध करवानी शी जरुर हती ? ते कारणथी आ पण अज्ञानीओनुज कथन छे

वली केटलाएक कहे छे के जेम अल्प मद्यपानथी निस्सो चडतो नथी, तेम थोडु मास खावाथी पाप लागतु नथी

उत्तर — थोडु पण मास बुद्धिमान् खाय नहि जेम थोडु पण विपडु खदायक थाय छे, तेम थोडु पण मांस दोपरूप थाय छे

हवे मांस खावामां जे अनुत्तर दूषण छे ते कहीए छीए. तत्काल मांसमां समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे, तेमज अनंत निगोदरूप जीव, तेनुं संतान वारंवार उत्पन्न थया करे छे, ते कारणथी महादूषण छे. ॥ यदाहु. ॥ आमासु अपक्वासु, अविपच्चमाणासु मंसपेसीसु ॥ सयय चिय उववाऊ, ज्ञणिउं निगोय जीवाणं ॥ १ ॥ अर्थः– काची, तेमज अपक्व जे मांसनी पेशी रांधवामां आवे छे, ते रंधाया छतां पण तेमां निरंतर निगोदना जीव उत्पन्न थाय छे ते कारणथी मांसज्ञक्षण, नरक गमन करनार जीवोने पुरी खरची छे, तेथी उत्तम जीवे कदापि मांस ज्ञक्षण करवु नहि

हवे मांसज्ञक्षण करवानो उपदेश जेउंए करेलो छे, तेउंनां नाम लखीए छीए १ मांस खावाना लालचुउं. २ मर्यादारहितो, ३ नास्तिको, ४ अल्पबुद्धिमानो, ५ असत्य शास्त्र बनावनाराउं, ६ पशुना वैरीउं. मांसाहारी समान कोइपण निर्दय नथी. मांस आहारथी अधिक, नरक अग्निमाटे इंधन नथी. गंदकी खाइने सूअरो जे पोतानां शरीर पुष्ट करेछे ते सारां छे, परंतु जीवने मारीने मांस खानारा सारा नथी

प्रश्न – सर्वजीवोनुं मांस खावुं, एम सर्व कुशास्त्रोमां लखेलुं छे, परंतु मनुष्यनुं मांस खावुं, एम कोइपण शास्त्रमां लख्युं नथी, तेनुं शुं कारणछे ?

उत्तरः–पोताना शरीरना मांसनी रक्षावास्ते कोइपण कुशास्त्रिए मनुष्यनु मांस खावुं लख्युं नथी; कारण के तेउं जाणता हता के, मनुष्यनुं मांस खावुं, एम शास्त्रमां लखशुं तो, मनुष्य कदी अमने पण मारीने खाइ जशे. तेथी लखेलुं नथी.

जेउं पुरुषना मांसमां तेमज पशुना मांसमां तफावत मानता नथी, तेउं समान कोइ धर्मी नथी; अने ते बाबतमां जेउं तफावत माने छे, अने मांस खाय छे, तेउं समान कोइ पापी नथी. वली मांसनी उत्पत्ति रुधिरथी थाय छे, तथा विष्टाना रसथी तेनी वृद्धि थाय छे, वली लोही जेमां जरेलु रहे छे, अने कृमि जेमां उत्पन्न थाय छे, एवा मांसने बुद्धिमान् केम खाइ शके ? आश्चर्य तो एज छे के ब्राह्मण लोको धर्म तो शुचिमूल कहे छे अने सात धातुथी जे मांस हाड बने छे, ते मांस हाडने मुखमां दांतथी चावे छे. हवे तेबाउने कुतरा समान गणवा के शु-

चिधर्मवाला गणवा ? तेथी जे डुष्टोनी एवी समज छे के, अन्न तथा मांस, आ बने एक सरखां छे, तेउंनी बुद्धिमां, जीवित तथा मृत्यु आपनारां अमृत तेमज विष सरखांज छे

वली जे जडबुद्धिमानोनु एवु मानवु छे के, छंदननी जेम, मांस प्राणीनुं अंग होवाथी खावा योग्य छे आ तेउंनी मान्यता वास्तविक नथी, कारण के जो तेम होय तो गायनु मूत्र, तथा माता, पिता, स्त्री, पुत्री, ए सर्वेनुं मूत्र तेमज विष्टा, केम खाता पीता नथी, कारण के ते पण प्राणीना अगथी उत्पन्न थयेल छे. वली पोतानी स्त्रीनी जेम, पोतानी माता, बेहेन दीकरीनी साथे केम गमन करता नथी ? स्त्रीत्व तेमज प्राणी अगत्व सर्वे स्थले बराबर छे वली जेम गायनुं डुध पीउ छो, अने मातानुं पय पान करो छो, तेम गायनुं रुधिर तेमज मातानुं रुधिर केम पिता नथी ? कारण के प्राणी अग हेतु सर्वस्थलें तुल्य छे ते हेतुथी जेउ अन्न तथा मासने एक सरखां माने छे, तेउ महापापीउंना सरदारछे

वली शंखने पवित्र माने छे, परतु पशुना हाडने कोइ पवित्र मानता नथी, ते कारणथी अन्न तेमज मांस, प्राणी अग छे, तो पण अन्न जक्ष्य छे, अने मांस अजक्ष्य छे एक पंचेंद्रिय जीवनो वध करीने मांस खावाथी जेम खानारने नरकगति प्राप्त थाय छे, तेम तेवी माठी गति अन्नखानारनी थती नथी, कारण के अन्न, मांस थई शकतु नथी मांसनी तसीरोथी अन्ननी तसीरो ओर तरेहनी छे मांस महाविकार करे छे, अन्न तेम करतुं नथी इत्यादि विलक्षण स्वजाव छे, तेथी मास खानारनी नरकगति जाणीने सत पुरुषो अन्नना जोजनथी तृप्ति माने छे, अने उत्तम पद प्राप्त करे छे आ सर्व मांसनां दूषणो श्रीमद् हेमचंद्रसूरिकृत योगशास्त्रने अनुसारें लखेलां छे वली वर्त्तमानमा बुद्धिमान् पाश्चिमात्य लोकोए मांस खावाथी चोवीश डुर्गुण प्रगट थाय छे, एम बतावेलु छे, अने मदिराथी तो एटली खराबी थाय छे के जेनी गणत्री पण थई शकती नथी ते कारणथी मदिरा तेमज मांस आ बने अजक्ष्यनो श्रावक त्याग करे आ सातमुं अजक्ष्य कह्यु

० आठमु अजक्ष्य माखण छे जैनमतना शास्त्रानुसार छाशथी बहार काढेला माखणने ज्यारे अतर्मुहूर्त्त अर्थात् बे घडी काल व्यतीत

थाय छे, त्यारे ते माखणमां सूक्ष्म जीवो तेज वर्णना उत्पन्न थइ जाय छे, ते कारणथी माखण त्यागवा योग्य छे जैनलोकोए छाशथी माखण बहार काढीने, तत्काल अग्निसंयोगथी, बनावीने, गलीने, पछी खावु जोइए, कारण के ए रीतिथी शास्त्रोक्त जीव तेमां उत्पन्न थता नथी तेनी हिंसा थती नथी, वली माखी, कसारी, मछरादि जीवोना अवयव प्रमुख पण, घी गलवाथी निकली जाय छे; वली माखण कामनी पण वृद्धि करे छे, तेथी मनमां खोटा विकल्प उत्पन्न थाय छे, तेथी श्रावकें माखण न खावु जोईए वली एक जीवनो नाश करवाथी ज्यारे पाप थाय छे, त्यारे पूर्वोक्त रीतिथी माखण तो जीवोनुंज पिंड थई जाय छे. तेथी माखण खावाथी पापनी गणतरी केम थइ शके ?

प्रश्न.– माखणमां बे घडी पछी कोईपण जीव उत्पन्न थयेल अमे देखता नथी, तो केवीरीतें तमारुं कहेवुं सत्य मानी शकीए ?

उत्तर – जेउ जैनमतना शास्त्रोने सत्य मानशे, तेउ तो शास्त्रकारना कथनने सत्यज मानशे, अने जेउ जैननां शास्त्रोने सत्य मानता नथी तेउ कदापि आ कथन सत्यमानो अथवा न मानो, परंतु अमे तो आ बातमां आगम प्रमाण विना बीजु प्रमाण दई शकता नथी तात्पर्य ए छे के वस्तु बे प्रकारें सिद्ध थाय छे, एक हेतुगम्य, बीजी आगमगम्य माखणछिदलादिमां जे जीव उत्पन्न थाय छे, ते हेतुगम्य नथी, परंतु आगमगम्य छे ते कारणथी जे आगम सर्वज्ञ जिन अर्हंत वीतरागें कथन करेल छे, ते सत्य होवाथी मानवु जोईए जो कोइ पुरुष, कोइपण शास्त्रने सत्य नहि मानतां, आंखथी देखेली वस्तुनेज मानशे, तो तेनाथी स्वर्ग नरकादि, जे अदृष्ट छे, ते पण मानी शकाशे नहि. वली परमेश्वर सातमा अथवा चौदमा असमान उपर छे, तथा जीव, पुण्य, पाप करवाथी स्वर्ग, नरकमां जाय छे, आ पण नहिज मानी शकाशे इत्यादि अनेक बातो तेनाथी मानी शकाशे नहि. जो बीजी बातो, इन्द्रियोने अगम्य, मानशे तो, आगम प्रमाण पण मानवु पडशे, कारण के सर्व वस्तु अमारी दृष्टिमां आवि शकती नथी

ए नवमुं अभक्ष्य मधु अर्थात् मध अनेक जीवोनो घात थवाथी उत्पन्न थाय छे. आ परलोकविरुद्ध दोष छे; अने मुखनी लालना जे-

वु दुगंछा उत्पादक छे, आ इहलोकविरुद्ध दोष छे ते कारणथी धर्मी श्रावकें मध न खावु जोइए

हवे मधखानारनु पापीपणु बतावीए छीए. ॥ श्लोक ॥ जक्षयन् माक्षिक क्षुद्रं, जंतुलक्षक्षयोद्भवं ॥ स्तोकजंतुनिहंतृभ्य, सौनिकेभ्योऽतिरिच्यते ॥ १ ॥ अर्थ.—अर्थात् नाना, हाडरहित लाखो जीवोनो ज्यारे नाश थायछे, त्यारे मध उत्पन्न थाय छे, ज्यारे मध जक्षण करवामा आवे छे, त्यारे थोडा पशु मारनारा कसाइथी पण अधिक पाप खानारने लागेछे, कारण के जक्षण करनारा पण घातक छे, आ वात उपर सारी रीतें बतावेली छे वली लोक व्यवहारमां पण एवु जोजन निंदनीय छे, अने मध तो महा जूठ एवु छे. कारण के एकेक फुलनो मकरंद (रस) पीइने मांखीर्ड ते रसने वमन करे छे तेज मध छे. ते कारणथी धर्मीपुरुषे जूठ न खावु जोइए आ वात लोकव्यवहारमां प्रसिद्ध छे

वली कोइ कहे के मध तो त्रिदोषने दूर करनार छे, ते कारणथी औषधमां जक्षण करवाथी शुं दोष छे ?

उत्तर.—अप्यौषधकृते जग्धं, मधु श्वभ्रनिबंधनं ॥ जक्षित. प्राणनाशाय कालकूटकणोपिहि ॥१॥ अर्थ —रसनी लंपटताथी मध खाय तेनी वात तो दूर रही, परंतु औषधवास्ते पण जे मध खाय, अने तेथी कदापि रोगनो नाशपण थाय तोपण, तेथी नरकगतिनुं कारण प्रगट थाय छे, कारण के प्रमादना उदयथी, जीववानो अर्थी छतां पण जे कोइ कालकूट विषनो एक कण पण खाशे तो, अवश्य तेना प्राण नाश पामशे.

प्रश्न.—मध तो खजूर, द्राक्षादि रसनी जेम मीठु छे, सर्व इंद्रियोने सुखकारि छे, तो तेने त्यागवाने शा वास्ते उपदेश करोछो ?

उत्तर.—मधमां मीठाश छे, ए वात सत्य छे, पण ते व्यवहारथी छे. परमार्थथी तो नरकनी वेदनानो हेतु होवाथी मध अत्यंत कडवु छे

हवे मधने पवित्र मानी जे मंदबुद्धिमानो देवस्नानमां उपयोगी माने छे, तेर्उनुं उपहास्य शास्त्रकार करे छे ॥ लोक ॥ मक्षिकामुखनिष्ठ्यूतं, जंतुघातोद्भवं मधु ॥ अहो पवित्र मन्वाना, देवस्नाने प्रयुंज ते ॥ १ ॥ अर्थ —मांखीर्डना मुखनी जूठ तथा जीव घातमां हजारो बच्चां तेमज इडा मारवाथी जे उत्पन्न थायछे, ते बच्चां तेमज इडां व्याय छे, त्यारे तेना

शरीरनु पाणी (लोही) पण मधमां मली जाय छे, हवे जुओ के मध केवुं अपवित्र छे? अहो शब्द श्लोकमां उपहास्य माटे छे. कारण के जेवा ते देवता छे, तेवी पवित्र वस्तु पण तेमने चडाववामां आवे छे. आ उपहास्य छे ॥ यथा ॥ करजाणां विवाहे तु, रासजास्तत्रगायका. ॥ परस्परं प्रशंसन्ति, अहोरूपमहोध्वनिः ॥ आश्लोकमां अहो शब्द उपहास्य माटे छे. इति नवमुं अजक्ष्य.

१० पाणीनो बनावेलो वरफ अजक्ष्य छे. वरफ असंख्य अप्काय जीवोनुं पिंड छे. ते खावाथी चेतना मंद थायछे, तत्काल शरदी थायछे कांइपण बलवृद्धि थती नथी. वीतराग अर्हतजगवन्तें निषेध करेल छे, ते कारणथी अजक्ष्य छे.

११ अफीणप्रमुख विषवस्तुओ अजक्ष्य छे कारण के झेरी वस्तुओ खावाथी उदरमां कृमि, गडोलादि जे जीव होय छे, ते मरीजायछे. विष खावाथी चेतना मुंझाय छे वली जो खावानी टेव पडी जायछे तो, पछी छोडवुं मुश्केल थायछे वखतसर न मले तो क्रोध उत्पन्न थाय छे शरीर शिथिल थइ जायछे वली जे व्यसनी थायछे, तेनाथी व्रत, नियम प्रायः अंगीकार थइ शकतां नथी व्यसनिनो स्वजाव वारंवार अदलबदल थायछे ज्यारे अमल खायछे, त्यारे एकरंग थायछे; ज्यारे अमल उतरी जायछे, त्यारे बीजो रंग थायछे वली स्वतंत्रता तजी, पराधीन पण अंगीकार करवुं पडेछे अमलनो स्वाद पण बुरो छे वली विषखानारा ज्यां लघुनीत, वडीनीत करेछे, त्यां त्रस, स्थावर जीवोनी हिंसा थायछे. सोमल, वछनाग, हरताल प्रमुख सर्व विषमां दाखल थायछे तेओनो त्याग करवो श्रावकने उचित छे.

१२ करा, जे आकाशमांथी वरसादमां पडेछे. आ पण अजक्ष्य छे.

१३ सर्वजातनी काची माटी अजक्ष्य छे. काची, सचित्त माटी, नाना प्रकारनी असंख्य जीवात्मक छे माटी खावाथी पेटमां बहु जीव उत्पन्न थायछे पांडु रोग, आमरोग, वात, पित्त, पथरीप्रमुखरोग उत्पन्न थाय छे माटी बहु खावाथी शरीरनो पीलो रंग थायछे वली केटलीएक जातनी माटीमां देडकाप्रमुखजीवोनी योनि छे ते कारणोथी अजक्ष्य छे.

१४ रात्रिजोजन अजक्ष्य छे रात्रिजोजनमां प्रत्यक्षथी आलोकमां दूषणो छे, अने परलोकमां ते दुःखनुं हेतु छे; रात्रिए चारे आहार अज-

बनावी राखेला लाडवा प्रमुख तथा तैयार खजुर, द्राक्षादि जे नक्ष्य छे. ते खावामां शु दोषछे ?

उत्तरः–यथा ॥ नाप्रेक्ष्य सूक्ष्मजंतूनि, निश्यद्यात् प्राशुकान्यपि ॥ अप्युक्त केवलज्ञानै, र्निंद्दितं यन्निशाशनं ॥ १ ॥ अर्थ –मोदक तथा फलादि अगर जो प्राशुक अर्थात् अचेतन पण छे, तो पण रात्रिए न खावा जोइए, कारण के कुथवादि सूक्ष्मजतुर्ज रात्रिए नजरे पडता नथी, वली केवलज्ञानी, जेने निरंतर सर्वकांइ देखाय छे, तेउं पण रात्रिए नोजन करता नथी सूक्ष्मजंतुर्जनी रक्षा वास्ते, तेमज अशुद्ध व्यवहार दूर करवावास्ते, केवलज्ञानी रात्रिए आहार करता नथी. अगर जो दीवा प्रमुखना प्रकाशथी कीडीप्रमुख दृष्टिए पडेछे, तो पण मूलगुणनी विराधना टालवा वास्ते रात्रि नोजन अनाचरणीय छे

हवे लौकिक मतवादीर्जनी सम्मतिपूर्वक रात्रिनोजननो निषेध करीए छीए. यथा ॥ धर्मविन्नैव नुजीत, कदाचन दिनात्यये ॥ वाह्या अपि निशानोज्यं, यदन्नोज्यं प्रचक्षते ॥ १ ॥ श्रुतधर्मनो ज्ञाता कदापि रात्रिनोजन करे नहि, कारण के जिनशासनथी बहारना मतवालाउं पण रात्रिनोजनने अनक्ष्य कहेछे तेउंना शास्त्रोमां कहेलुं छे के ॥ यथा ॥ त्रयीतेजोमयोनानु, रिति वेदविदोविदु. ॥ तत्करै. पूतमखिलं, शुनं कर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ अर्थ.–ऋग्, यजु., साम लक्षण त्रणे वेद, तेर्जनुं जे तेज ते सूर्य छे. “ आदित्यः त्रयीतनु ” एवु सूर्यनु नाम छे ए प्रमाणे वेदोने जाणनारा जाणे छे, ते सूर्यना विद्यमान अर्थात् किरणोथी पवित्र थतां सर्व शुनकामो अंगीकार करे, ज्यारे सूर्य न होय त्यारे शुन कर्मो करे नहि ते शुनकर्मोनां नाम तेर्जए आ प्रमाणे लखेलां छे ॥ यथा ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्ध देवतार्चनं ॥ दानं वा विहितं रात्रौ, नोजनं च विशेषतः ॥२॥ अर्थः–आहुति अर्थात् अग्निमां घीप्रक्षेप करवु, स्नान अर्थात् शरीरना अंगोने धोवां, श्राद्ध पितृकर्म, देवपूजा, दानदेवु, अने नोजन तो विशेषे करी नज करवु, आटला कामो रात्रिए नज करवां.

वली परमतमां बीजा बे श्लोक छे ॥ यथा ॥ देवैस्तु नुक्त पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिनिस्तथा ॥ अपराह्णे तु पितृनिः, सायाह्ने दैत्यदानवै ॥ १ ॥ संध्यायां यक्षरक्षोनि., सदा नुक्तं कुलोद्वह ॥ सर्ववेलां व्यतिक्रम्य,

ह्य ठे रात्रिमां जे जे रंगना पदार्थोंनो आहार करवामां आवे ठे, ते ते रंगना जीवो, जेनु नाम तमस्काय ठे, ते ते पदार्थोमां उत्पन्न थायठे वली आश्रितजीवपण बहुज होयठे तथा रात्रिमा उचित अनुचित वस्तुउंनो नेल, संनेल थइ जायठे वली रात्रिनोजनमां प्रसंग दोष बहुज लागेठे जेम के, ज्यारे रात्रिए खावानु बनशे, त्यारे रात्रिनोजन वास्ते, निरंतर रसोइपण करवी पडशे, रसोइ करतां, त्रस, स्थावर जीवोनो संहार थइ जशे, तेथी श्रावकना कुलाचारनो नाश थशे वली सूक्ष्मत्रस जीव नजरमां पण आवता नथी, कदापि देखाय तो निध्वंस परिणाम थवाथी यत्ता पण रही शकती नथी ज्यारे अग्नि बलेठे, त्यारे पासेनी नीतपर जे आश्रित जीवो रहेला होय, ते तापथी आकुल व्याकुल थइने, अग्निमां पडे ठे वली सर्पादि जेरी जानवर कदापि होय, तो तेना मुखथी जो नोजनमां लाल पडेतो, पोतानो तेमज खानारा सर्वनो विनाश थायठे. वली पतंगिआ, गरोली, ठपकली, मकडी, मठर, करोलीआ प्रमुख जीवो जे रात्रिए आसपास होयठे, ते अग्निना प्रकाशथी नोजनमां आवी पडे तो, नारे रोगोत्पत्ति थायठे यडुक्त योगशास्त्रे ॥ मेधां पिपीलिका हंति, यूका कुर्याज्जलोदरं ॥ कुरुते मक्षिका वान्तिं, कुष्टरोग च कोलिका ॥ १ ॥ कंटकोदारुखंड च, वितनोति गलव्यथां ॥ व्यजनांतर्निपतित, स्तालु विध्यति वृश्चिकः ॥ विलग्नश्च गले वाल , स्वरनंगाय जायते ॥ इत्यादयोदृष्टदोषा , सर्वेषा निशि नोजने ॥२॥ अर्थ –अन्नादिमांकीडी खावामां आवे तो बुद्धिनाश या मद थायठे, जु खावामा आवी जाय तो जलोदर थायठे, माखी वमन करावे ठे, अने मकडी कुष्टरोग उत्पन्न करेठे कांटा अथवा लाकडानाकटका खावामा आवी जाय तो,गलामां व्याधि उत्पन्न करेठे, अने रांधवानुं नाजन उघाडता जो विठी पडी जायतो तालवु विंधी नाखेठे, इत्यादि दृष्टदोष रात्रिनोजन करवामा सर्वे लोकोने देखवामा आवेठे वली जेम रसोइ करता पट्काय जीवोनी हिंसा रात्रिए करवी पडेठे, तेवीज रीते रांधेला नाजनो धोवाथी जलगत जीवोनो पण विनाश थायठे वली जल पडवाथी नूमिपर कुंथु, कीडी प्रमुखनो पण नाश थायठे ते कारणथी जीवरक्षाने इछनार प्राणी रात्रिनोजन करे नहि

प्रश्न –ज्या अन्नपण रांधवु न पडे, तेमज नाजन पण धोवा न पडे एवा

बनावी राखेला लाडवा प्रमुख तथा तैयार खजुर, डाक्षादि जे जक्ष्य छे. ते खावामां शु दोषछे ?

उत्तरः—यथा ॥ नाप्रेक्ष्य सूक्ष्मजंतूनि, निश्यद्यात् प्राशुकान्यपि ॥ अप्युक्त केवलज्ञानै, निंदितं यन्निशाशनं ॥ १ ॥ अर्थः—मोदक तथा फलादि अगर जो प्राशुक अर्थात् अचेतन पण छे, तो पण रात्रिए न खावा जोइए, कारण के कुंथवादि सूक्ष्मजतुउ रात्रिए नजरे पडता नथी;वली केवलज्ञानी, जेने निरंतर सर्वकाइ देखाय छे, तेउ पण रात्रिए जोजन करता नथी. सूक्ष्मजंतुउनी रक्षा वास्ते, तेमज अशुद्ध व्यवहार दूर करवावास्ते, केवलज्ञानी रात्रिए आहार करता नथी अगर जो दीवा प्रमुखना प्रकाशथी कीडीप्रमुख दृष्टिए पडेछे, तो पण मूलगुणनी विराधना टालवा वास्ते रात्रि जोजन अनाचरणीय छे

हवे लौकिक मतवादीउनी सम्मतिपूर्वक रात्रिजोजननो निषेध करीए छीए. यथा ॥ धर्मविन्नैव जुजीत, कदाचन दिनात्यये ॥ वाह्या अपि निशाजोज्यं, यदजोज्य प्रचक्षते ॥ १ ॥ श्रुतधर्मनो ज्ञाता कदापि रोत्रिजोजन करे नहि, कारण के जिनशासनथी वहारना मतवालाउ पण रात्रिजोजनने अजक्ष्य कहेछे तेउना शास्त्रोमां कहेलुं छे के ॥ यथा ॥ त्रयीतेजोमयोजानु, रिति वेदविदोविदु. ॥ तत्करै. पूतमखिलं, शुजं कर्म समाचरेत् ॥ १ ॥ अर्थः—ऋग्, यजु., साम लक्षण त्रणे वेद, तेउनु जे तेज ते सूर्य छे "आदित्य. त्रयीतनु" एवु सूर्यनुं नाम छे ए प्रमाणे वेदोने जाणनारा जाणे छे; ते सूर्यना विद्यमान अर्थात् किरणोथी पवित्र थतां सर्व शुजकामो अगीकार करे, ज्यारे सूर्य न होय त्यारे शुज कर्मो करे नहि ते शुजकर्मोनां नाम तेउए आ प्रमाणे लखेलां छे. ॥ यथा ॥ नैवाहुतिर्न च स्नानं, न श्राद्धं देवतार्चनं ॥ दानं वा विहितं रात्रौ, जोजनं च विशेषत. ॥१॥ अर्थः—आहुति अर्थात् अग्निमां घीप्रक्षेप करवु,स्नान अर्थात् शरीरना अंगोने धोवां,श्राद्ध पितृकर्म, देवपूजा, दानदेवु, अने जोजन तो विशेषे करी नज करवु, आटला कामो रात्रिए नज करवां.

वली परमतमां बीजा वे श्लोक छे ॥ यथा ॥ देवैस्तु जुक्त पूर्वाह्णे, मध्याह्ने ऋषिनिस्तया ॥ अपराह्णे तु पितृनि, सायाह्ने दैत्यदानवैः ॥ १ ॥ संध्यायां यक्षरक्षोनि, सदा जुक्त कुलोद्वह ॥ सर्ववेलां व्यतिक्रम्य,

रात्रौ भुक्तमभोजनं ॥ २ ॥ अर्थ —सवारमां देवताउं भोजन करे ठे मध्याह्ने ऋषि भोजन करे ठे दिवसना पाठला भागमां पितरो भोजन करे ठे, सायाह्ने अर्थात् विकाल वेलाए दैत्य दानवो भोजन करे ठे संध्यावेलाए यक्ष गुह्यक, राक्षसो भोजन करे ठे

सर्व देवताउंनो वखत उल्लंघन करीने रात्रिए जे खावुं ते अभक्ष्य ठे आ प्रमाणे पुराणोना श्लोकथी रात्रिभोजननो निषेध कर्यो.

हवे वैद्यक शास्त्र मुजब रात्रिभोजनना निषेधनो संवाद कहियें ठियें ॥ यथा ॥ आयुर्वेदेषु ॥ हृन्नाभि पद्मसंकोच, श्चंडरोचिरपायत. ॥ अतो नक्त न भोक्तव्य, सूक्ष्मजीवादनादपि ॥ १ ॥ आ शरीरमां बे कमल ठे एक हृदय पद्म, ते अधोमुख ठे, बीजुनाभिपद्म, ऊर्ध्वमुख ठे, आ बन्ने कमलो सूर्य अस्त थवाथी रात्रिए संकोचाइ जाय ठे, ते कारणथी रात्रिए न खावु जोइये वली रात्रिये सूक्ष्म जीवो खावामां आववाथी अनेक तरेहना रोग उत्पन्न थाय ठे आ परपक्षनो संवाद कह्यो

हवे विशेषरीतें स्वमतथी रात्रिभोजननो निषेध करियें ठियें. ॥ यथा ॥ संसक्तजीवसंघातं, भुंजानानिशिभोजनं ॥ राक्षसेभ्यो विशिष्यते, मूढात्मान' कथ नु ते ॥ १ ॥ ज्यारे रात्रिए खावामां आवे ठे, त्यारे जीवोनो समूह भोजनमां पडीजाय ठे, एवा अंध समान रात्रिए खानाराउंने राक्षसोथी पण अधिक शा वास्ते न कहेवा जोइए ? जिनधर्मथी रहित थइ, मनुष्य विरतिपणानो त्याग करे ठे, या तो तेने अंगीकार करतो नथी, त्यारे तेने पुछ, शिग विनानो पशुज समजवो. ॥ यदुक्त ॥ वासरे च रजन्यांच, य खादन्नेव तिष्ठति ॥ शृंगपुछपरिभ्रष्ट , सस्पष्ठ पशुरेव हि ॥ १ ॥

हवे रात्रिभोजननिवृत्ति वास्ते पुण्यवंत आत्माउंने विशेष बोधस्वरूप कहिये ठिये ॥यथा॥ अह्नोमुखेऽवसाने च, योद्वे द्वे घटिके त्यजेत्॥ निशाभोजनदोषज्ञो,ऽश्नात्यसौ पुण्यभोजन ॥ १ ॥ अर्थ.—दिवसना उदय तेमज अस्त समयनी बे बे घडी वर्जवी जोइए, कारण के रात्रि निकट होय ठे, तेज कारणथी सिद्धांतमा सर्व जघन्य प्रत्याख्यान मुहूर्त्त प्रमाण, नमस्कारसहित कथन करेल ठे रात्रिभोजनना दूषणोने जाणनार श्रावक बे घडी ज्यारे दिवस बाकी रहे, त्यारे भोजन करे, जो बे

घडीथी न्यून दिवस रहेतां जोजन करे तो रात्रिजोजनना प्रत्याख्याननो लाज्ञ तेने मलतो नथी, कदापि कोइ सख्स रात्रिए खातो न होय, पण परंतु जो तेणें रात्रिजोजननुं प्रत्याख्यान न कर्युं होय तो, तेने पण कांइ फल मलतुं नथी, कारण के तेणे प्रतिज्ञा करेली नथी जेम शराफने त्यां रुपैआ जमे करावीयें, परंतु व्याजनो करार न करीए तो व्याज मलतुं नथी तेम ते कारणथी नियम अवश्य करवुं जोइए.

हवे रात्रिजोजन करनाराउने परलोकमां शु फल मले ठे ते कहीए ठीये ॥ यथा ॥ उलूककाकमार्जर, गृध्रगवरशूकराः ॥ अहिवृश्चिकगोधाश्च, जायन्ते रात्रिजोजनात् ॥ १ ॥ अर्थः–घुवड, काग, विलाडी, गीध, हरणीया, सूअर, सर्प, विंछी, घो इत्यादि तिर्यंचयोनिमां रात्रिजोजन करनाराउ मरीने जायठे, अने जेउ रात्रिजोजन करता नथी, तेउने एक वर्षमां ठ महीनाना तपनुं फल मलेठे इति रात्रिजोजन अजक्ष्य संपूर्ण.

१५ बहु बीजवालां फलपण अजक्ष्य ठे जेमां गर्ज थोडो होय अने बीज बहु होय, एवां जे रींगणां, पटोल, खसखस, पपोटा प्रमुख अजक्ष्य ठे. तेमां जेटलां बीजठे, ते सर्व पर्याप्ता जीवठे खावामां थोडां आवे, अने जीवघात बहुज थायठे वली बहु बीजवालां फल खावाथीपित्त प्रमुख रोग थायठे, तथा जिनाज्ञा विरुद्धठे.

संधान अर्थात् अथाणां (आचार) त्रण दिवस उपरांतनां अजक्ष्यठे अथाणां केरीनां, लींबुनां, पाननां, करमदानां, हलदरनां, गरमर प्रमुखनां बनाववामां आवेठे, कदापि घी, तेल के पाणीनां होय तोपण त्रण दिवस उपरांतनां अजक्ष्य ठे परंतु तफावत एटलो ठे के जे फल पोतेज खाटां ठे अथवा तो जेमने खाटाश साथे मेलवेलां होय, अर्थात् खाटी केरी साथे मेलव्यां होय तो ते अथाणां त्रण दिवस उपरात अजक्ष्य ठे, अने जेउमां खटाश नथी ते अथाणा एक रात्रि उपरांत अजक्ष्य ठे. अथाणामा त्रस जीव उत्पन्न थायठे, अने बीलां प्रमुखतो मूलें अजक्ष्य ठे, नो पठी तेना अथाणानुं तो शुंज कहेवु? अथाणामा चोथे दिवसे निश्चये बे इंद्रिय जीव उत्पन्न थायठे, अने जूठो हाथ लागी जायतो पंचेंद्रिय जीव उत्पन्न थायठे बीजा मतवालाउना शास्त्रोमां पण अथाणा नरकना हेतु लखेलांठे. इतिअथाणा अजक्ष्य

१६ द्विदल, जेनी बे दाल थइ जाय, तेमज घाणीमां पीलवाथी जेमांथी तेल निकले नहि, एवां सर्व धान्य द्विदल कहेवाय छे द्विदलनी साथे जे गोरस अग्नि उपर चडेलुं नथी, एवुं काचु दही, डुध के छाश मेलवी जमवुं नहि गरम करेलां दही, डुध के छाश, ठंडां थइ गया पछी पण तेउनी साथे द्विदल मेलवी खावामां आवे तो दोष नथी

१७ सर्व जातिनां रींगणां अजक्ष्यछे एक तो तेमां बहुज बीजछे, तेना बीटमां सूक्ष्म त्रस जीव होयछे, वली ते कामनी वृद्धि करेछे, निडा अधिक लावेछे, कांइक बुद्धिनेपण जाडी करेछे, तेनु नामपण सुदर नथी, आकारपण अमनोज्ञ छे, कफ रोगने उत्तेजक छे, अधिक खावाथी चोथीयाताव, क्षयादि रोग थइ जायछे वली सर्व जातिनां फल सुकांपण खावामां आवेछे, परंतु आ सुकववाथी पण खावायोग्य रहेतुं नथी सुकव्यापछी तो एवुं थइ जायछे के जाणे मुएला उदरनी खाल तेथी आ डव्य अशुरू छे, अने अजक्ष्य छे

१९ तुच्छफल, जांबु, पीलु इत्यादि, तथा अत्यंत कोमल फल पण अजक्ष्यछे, कारण के एवी वस्तुउ बहु खावामां आवे तोपण तृप्ति थती नथी खावामां थोडुं आवे छे, अने वधारे फेकी देवु पडे छे. फल खाधा पछी तेनी गोठली जे मुखमा चुसीने फेकी देवामां आवेछे, तेमां असख्य पंचेंड्रिय संमूर्छिम जीव उत्पन्न थायछे वली जे मनुष्य बहुज तुच्छ फल खायछे, तेने तत्काल रोग उत्पन्न थायछे

२० अजाण्यु फल, अर्थात् जे फलनुं नाम कोइना जाणवामां न होय, तथा जे कोइना खावामा न आव्युं होय, ते फल पण अजक्ष्य छे, कारण के तेवु फल खावाथी कदाच झेरी होयतो मरण थइ जाय, अथवा तो दिवानापणु थइ जाय

२१ चलितरस, जे वस्तुनो काल पुरो थइ गयो होय, तेमज स्वाद बदलाइ गयो होय, (कारण के स्वाद बदलाइ जाय छे, त्यारे काल पण पुरो थइ जाय छे) तथा जेमांथी डुर्गंध निकलवी शरु थइ होय, तथा जेमां लाल उत्पन्न थइ होय, ते वस्तु चलितरस समजवी आ पण अजक्ष्य छे रोटली, शाक, खीचडी, वडा, नरमपुरी, शीरो, हलवो, इत्यादि रांधेली अनेक वस्तुउ जेमा पाणी आवेछे, तेउ एक रात उपरांत अज-

क्ष्य छे; तथा दाल, नजीआं, वडां जेमां पाणी होय छे, ते चार पहोर उपरांत अनक्ष्य छे द्विदल विनानी घेस तथा चोखा जे छाशमां रांध्या होय ते आठ पहोर उपरांत अनक्ष्य छे वली वर्षाकालमां सारी रीतें जे मीठाइ बनाववामां आवी होय, ते पंदर दिवस उपरांत अनक्ष्य छे, जो पंदर दिवस अगाउ बगडी जाय तो बगडतांज अनक्ष्य छे, एवी रीते सर्वत्र जाणी लेवु उनालामां मीठाइनी स्थिति विश दिवसनी छे शियालामां मीठाइनी स्थिति एक मासनी छे उपरांत अनक्ष्य छे दही सोल पहोर उपरांत अनक्ष्य छे, छाशनीपण तेटलीज स्थितिं छे चलितरसमां बे इंद्रिय जीव उत्पन्न थाय छे, ते कारणथी ते अनक्ष्य छे.

२२ बत्रीश अनंतकाय सर्व अनक्ष्य छे, कारण के सोइना अग्रनाग उपर जेटलो अनंतकायनो कटको रहे, तेटला कटकामां अनंत जीव छे, ते कारणथी अनक्ष्य छे बत्रीश अनंतकायनां नाम १ नूमिनी अंदर जेटला कंद उत्पन्न थाय छे, ते सर्व अनंत काय छे, २ सूरणकंद, ३ वज्रकंद, ४ लीली हलदर, ५ आडु, ६ लीलो कचुरो, ७ वरीआलीकंद, ८ शतावरी वेल औषधी छे, ए कुंआर, १० थोहरकंद, ११ गलो, १२ लसण, १३ वांसनां कारेलां, १४ गाजर, १५ लुणी, १६ लोढाकंद, १७ गरमर, १८ कोमल पत्र अर्थात् नवा अंकुरा उगेछे ते, सर्व वनस्पति उगति वखतना अकुर, सर्व प्रथम अनंतकाय होय छे, पछी ज्यारे वधे छे त्यारे, प्रत्येक पण थइ जाय छे, अने अनंतकाय पण रहेछे, १ए खरसुआकंद, २० थेगकंद, तथा थेगनामनीनाजी, २१ लीली मोथ, २२ लवण वृक्षनी छाल, २३ खिलोडी, २४ अमृतवेल, २५ मूली, २६ नूमिरुहा ते नूमिफोडा छत्राकार थाय छे, २७ वथुलानी उगती नाजी, २८ वरुहार, २ए सुअरवल्ली, मोटीवेल जंगलमां थाय छे, ३० पलंकानी नाजी, ३१ कोमल आंबली, ज्यां सुधी तेमां बी थतां नथी, त्यां सुधी अनंतकाय छे, ३२ आलुख, रतालुं, पिंडालु, आ बत्रीश अनंतकायनां नाम सामान्य प्रकारे कह्यां छे, विशेष नाम तो अनेक छे, कारण के कोइ वनस्पति तो पचांग अनंतकाय छे, कोइनुं मूल अनंत काय छे, कोइनां पान, कोइनां फूल, कोइनी छाल, कोइनु काष्ठ, एम कोइनु एक अंग, कोइनां बे अग,

कोइनां त्रण अंग, कोइनां चार अग, कोइनां पांच अंग, अनंतकाय ठे इति वत्रीश अनंतकाय अजक्ष्य

हवे अनंतकाय जाणवावास्ते तेनां लक्षणो लखीए ठीए. जेनां पांदडां, फूल, फल प्रमुखनी नसो गूढ होय, देखाती न होय, तथा जेनी संधि गुप्त होय, जे त्रोडवाथी वरावर त्रुटता होय तथा जेनुं मूल कापतां ठतां पण जे ऊगे, जेनां पादडां मोटां, दलदार, चीकणां होय, जेनां पांदडां तेमज फल वहुज कोमल होय, ते सर्व अनंतकाय जाणवां.

अजक्ष्योमां अफीण, जांग प्रमुख जेनु वंधाण प्रथमथी थइ गयुं होय, ते राखवानी जयणा करे रात्रिजोजनमां चोविहार, तिविहार, डुविहार, एक महिनामां आटला करु एवो नियम करे, वली रोगादि प्रसंगे कोइ औषधीमां कोइ अजक्ष्य खावु पडे तो, तेनी जयणा राखे. वली वत्रीश अनंतकाय तो सर्वथा अजक्ष्य ठे, ठतांपि रोगादि कारणे औपधिमां खावी पडे तो, तेनी जयणा राखे, तथा अजाणपणे कोइ वस्तुमा मेलवेली खावामां आवे तो, तेनी जयणा राखे, इति वावीश अजक्ष्य स्वरूप.

हवे चौद नियमनु विस्तारथी स्वरूप लखीए ठीए ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणेह तंवोल वत्थ कुसुमेसु ॥ वाहणसयण विलेवण, वंजदिसिन्हाणजत्तेसु ॥१॥ अर्थः—श्रावके जावजीव पांच अणुव्रतमां इच्छा परिमाणमां, प्रथमनी अनेक तरेहनी कर्मपरिणतिना सजवथी, पोताना निर्वाह सामर्थ्यनो उदय अति डुस्तर विचारीने वहुज वस्तुउ खुल्ली राखी ठे, तेमांथी फरी नित्यनो आश्रव निवारवावास्ते, संक्षेप करवावास्ते, चौद नियमनु धारण निरंतर राखवुं जोइए, तेनुं स्वरूप लखीए ठीए

१ प्रथम सचित्त परिमाण मुख्यवृत्तिएतो श्रावके सचित्तनो त्याग करवो जोइए, कारण के अचित्त वस्तु खावामां चार गुण ठे प्रथमतो अप्राशुक जलादिनु पीवु वर्जवाथी, सर्व सचित्त वस्तुउनो त्याग थायठे ज्यांसुधी वस्तु अचित्त न थाय, त्यांसुधी मुखमां प्रक्षेप करे नहि, वीजु रसनेंद्रिय पर जय मेलवाय ठे,कारण के केटलीएक वस्तुउ रांध्या विनानी स्वादवाली होयठे, तेउनो त्याग थाय ठे, त्रीजु, अचित्त पीवाथी कामचेष्टा मंद थइ जाय ठे, वली चित्तमा निरतर एवो खटको रहेठे के रखे माराथी सचित्त वस्तु खावामा आवी जाय १ चोथु, जलादिद्रव्य अचेतन

करवामां जीव हिंसा थइ, ते तो कर्मबधनुं कारण बनी चूकी, परंतु क्षणे क्षणे जे असंख्य जीवोनी उत्पत्ति थति हती, ते मटी गइ, ते हिंसा वध पडी; छतां कोइ मूढमति पोतानी मनःकल्पनाथी एवो विचार करे के वस्तु अचित्त करवामां पट्कायना जीवोनी हिंसा थाय छे, अने सचित्त जलादि पीवामां तो एक जलादिनीज हिंसा थाय छे, ते कारणथी सचित्त त्यागवानी जरूर नथी एवा विचार करनारा मूर्खोए जिनमतनुं रहस्य जाणेलुज नथी, कारण के सचित्तनो त्याग करवाथी, आत्मदमनता, औत्सुक्यनिवारणता, विषय, कषायनी मंदता थाय छे. वली जेमां स्वदया गुण वहुज छे, तेपण ते जाणता नथी सचित्तनो त्याग करवामां अनेक लाभ छे ते अनुभवसिद्ध छे

२ बीजु द्रव्यनियम धातु, शिला, काष्ठ, माटीनु पात्र प्रमुख तथा पोतानी आंगली प्रमुख विना, जे मुखमां खावामां आवे ते द्रव्य कहेवाय छे. " परिणामांतरापन्न द्रव्यमुच्यते " तेमां खीचडी, मोदक, पापड, वडां प्रमुख वहु वस्तुओनां बने छे, तो पण परिणामांतरथी एकज, द्रव्य छे, तथा एकज घउंनी बनेली रोटली, पोली, पुरी, घुघरी, बाटी प्रमुख छे, तो पण दरेक भिन्न द्रव्य छे, कारण के नामांतर, स्वादांतर, रूपांतर, परिणामांतरथी द्रव्यांतर थइ जाय छे वली कोइक आचार्य द्रव्यनुं स्वरूप बीजी रीतथी कहे छे परंतु उपर बतावेलु स्वरूप, वहु वृद्ध आचार्योने संमत छे. द्रव्यनुं परिमाण ए प्रमाणे करे के आजे हुं आटलां द्रव्य खाइश.

३ त्रीजुं विगय नियम—विगय दस प्रकारना छे तेमां १ मध, २ माखण, ३ मांस, ४ मदिरा, आ चार तो महाविगय छे तेओनो त्याग बावीश अभक्ष्यना स्वरूपमां बतावी आव्या छीए बाकीनां छ विगयनां नाम. १ दुध, २ दही, ३ घी, ४ तेल, ५ गोल, ६ सर्व जातनां पकान्न. आठ विगयमांथी नित्य एक, बे, त्रण आदि विगयोनो त्याग करे, तेमज एकेक विगयना पांच पांच निवियाता पण त्याग करवा जोइए, परंतु निवियाता त्याग करवानो विचार मनमां न होय तो, प्रत्याख्यान करवाने अवसरे मनमां धारे के मारे विगयनो त्याग छे. परंतु निवियातानो त्याग नथी.

४ चोथु उपानह् जोडा, पगरखा, खडावा, मोजां, बूट प्रमुख पहेरवानो नियम करे, कारण के आ सर्वे जीवहिंसानां अधिकरण छे. तेमां श्रावकें जिनपूजादि कारणविना खडावा (पाटली) तो कदापि पेहेरवी नहि, कारण के तेनी नीचे जे जीव आवी जाय छे, ते जीवता रहेता नथी वली गृहस्थ लोकोने पगरखां विना चालतु नथी, ते कारणथी पगरखांनी मर्यादा करे, पछी बीजाना पगरखामां पग न मुके कदापि भूल चूक थई जायतो आगार

५ पांचमु तबोल तंबोल ते चोथो खादिम आहार छे तेनु नियम करे तेमा पान, सोपारी, लवींग, एलायची, तज, जावंत्री, पीपर प्रमुख करियाणानी चीजो जेथी मुखशुद्धि थाय छे, परंतु उदर भरातु नथी, तेनो समावेश थाय छे तेनु परिमाण वजनथी करे

६ छठु वस्त्र नियम छे मनुष्यें पोताना पांचे अंगोपर पहेरवानां वस्त्रोनी सख्यानु नियम करवुं के, आजना दिवसमां मारे आटलां वस्त्र पहेरवाना, तथा आटलां उढवाना राखवां रात्रिए पहेरवाना वस्त्र, तथा स्नान समयना वस्त्र, तेमज समुच्चय वस्त्रनी संख्या करी ले. अजाणतां भेल, सभेल थाय तो आगार

७ सातमु फूलना भोगनु नियम मस्तकमां राखवानां, गलामां पहेरवानां, शय्यापर विछाववानां, फूलनो तोल, तथा फूलोना तकीआ, फूलोना पंखा, फूलोना चन्दवा, फूलोनी जाली प्रमुख जे जे वस्तुउ भोगववामां आवे तेनी, तथा फूलनी छडी, शहरा, कलगी, हार, गोटा तेमज जे फूल सुघवामां आवे, तेना तोलनुं परिमाण करे

८ आठमुं वाहननियम रथ, गाडी, घोडा, पालखी, उट, वलद, नाव, प्रमुख जेनी उपर वेसी ज्यां जवु होय त्या जइ शकाय, ते वाहन, सर्वेना त्रण प्रकार छे १ तरतु, २ फरतुं, ३ उडतु तेउनी संख्यानु नियम करे.

९ नवमुं शयन नियम शय्यानु नियम करे, तेमां खाट, पाट, तख्त, खुरशी, पालखी, सुखासन प्रमुख जेटलां राखवां होय ते सर्व मनमां धारी ले.

१० दशमु विलेपननियम भोगने अर्थे केशर, चदन, चुवा, अत्तर, तेलादि जे पदार्थो अगमर्दनादिकारणे उपयोगमां लेवा होय, तेना नाम तथा तोल सहित मनमा धारी ले, अगलूहणां पण एवीजरीतें रा-

खी ले, परंतु एटलो अपवाद के, देवपूजा, देवदर्शनादि प्रसंगे, तेमज धर्म करणी करतां हस्तमां धूपादि लेवां पडे, तथा मस्तके तिलक करवुं पडे, तथा ज्ञगवानने अर्चन करवा वखते चदनादि विलेपन करवु पडे, तेनुं श्रावकने नियम नथी

११ अगीआरमुं ब्रह्मचर्यनियम. दिवसे तेमज रात्रिए आटली वखत स्त्री साथे मैथुनसेवन करुं ते उपरांत मैथुनसेवननो त्याग छे. वली हास्य, विनोद, आलिंगन, चुंबनादि करवाना जांगा राखे

१२ बारमु दिशिनुं नियम अमुक दिशिमां आज मारे अमुक कोस उपरांत जवु नहि, तेमां आदेश, उपदेश, माणस मोकलवुं तथा पत्र व्यवहार, विगेरे सर्वनो समावेश थाय छे, जेवी रीतें पाली शके तेवुं नियम करे.

१३ तेरमुं स्नाननियम आजे तेलादिमर्दनपूर्वक अथवा मर्दन विना आटली वखत स्नान करुं, तेनुं प्रमाण करे, तेमां देवपूजा वास्ते नियमथी अधिक स्नान करवुं पडे तो, व्रतजंग नहि

१४ चौदमुं ज्ञात पाणीनुं नियम. चार आहारमांथी स्वादिमनु नियम तो श्रावकें तंबोल नियममां करी लीधुं छे, तेथी बाकीना त्रण आहारनुं नियम करवानु छे, तेमां प्रथम अशन, ते रोटली, ज्ञात, कचोरी, शीरा प्रमुखना वजननु परिमाण करे, ते उपरांत त्यागे पोताना घरमां बहु परिवार होय, तेउने वास्ते अशनादि करावचां पडे तेनी जयणा राखे. वली बीजाने घेर न्याति आदि जमतां होय तेवे प्रसंगे जमवा जवुं पडे, त्यां अधिक रसोइ बनावेली होय, तेनुं दूषण नियमधारीने नथी, कारण के नियमधारिये तो पोताना जोजनार्थे वापरवानु परिमाण करेलुं छे, परंतु ज्ञाति वास्ते मर्यादा करेली नथी नियममा अशनना तोलनुं परिमाण करे बीजुं पाणी पीवाना तोलनुं परिमाण करे त्रीजुं स्वादिम, ते मिष्टान्न पदार्थ खावाना तोलनु परिमाण करे आ चौद नियम छे. अधिक जाववाला श्रावक सचित्तादि परिमाणमां द्रव्यनुं परिमाण जुदा जुदा नामथी राखे, तो बहुज निर्जरा थाय. इति चौदनियमस्वरूप.

हवे पंदर कर्मादाननुं स्वरूप लखीए छीये. नीचेना पदर व्यापार श्रावकें वर्जवा; कारण के ते करवामां बहुज पापछे, कदापि पोतानी आजीविका न चालती होय तो करवाना व्यापारनु परिमाणकरें ते पदर कर्मादाननां नाम

१ प्रथम इंगालकर्म कोयला बनाववा, इंट बनाववी, जठीमां अनेक प्रकारनां ठाम बनाववां, ते सर्वे वेचवां, लुहारनां काम, सोनारनांकाम, बंगडीकारनां काम, कलालनां काम, जठीआरानां काम, हलवाइनांकाम, धातुगालक प्रमुख जे जे कामो अग्निथी थाय, तेसर्व इंगाल कर्म छे, आ कामोमां पाप बहुज लागे छे, अने लाज बहु मलतो नथी, तेथी श्रावक आवां काम करे नहि.

२ बीजुं वनकर्म छेद्यां, अणछेद्यां वन वेचवां, वाडी, बगीचानां फूल, फल, कंदमूल, घास, काष्ठ, वांसादि, तेमज तमाम लीली वनस्पति करवी, तथा वेचवी, आ सर्व वनकर्म छे

३ त्रीजुं साडी कर्म गाडी, रथ, दमणीआं, शीगराम, वहाण, आगबोट, हल, दताल, चरखा, घाणी, चक्की,धुंसरा प्रमुख बनाववां तथा वेचवां आ सर्व शकटकर्म छे

४ चोथु जाडी कर्म गाडां प्रमुख बलद उंट खच्चर गधेडा घोडा पाडा जेस प्रमुखथी वहेवरावी,बीजानां जाडां करी,आजीविका चलाववी ते जाडी कर्म

५ पांचमुं फोडी कर्म आजीविकावास्ते, कुवा, वाव, तलाव प्रमुख खोदवा, खोदाववां, हल चलाववां,पत्थर फोडवा, खाण खोदाववी इत्यादि स्फोटिक कर्म छे आ पांचे कर्ममां बहुज जीवोनी हिंसा थायछे, तेथी पांचे कुकर्म कहेवाय छे हवे पांच कुवाणिज्यनु स्वरूप लखीये छीये

१ प्रथम दंतकुवाणिज्य हाथीना दांत, घुवडना नख, जीज, कलेजां, पक्षीउंना रोम, गायना चमर, हरणना सींग, गेडांना सीग, रेशमना कृमि इत्यादि जे त्रस जीवोनां अंगोपांग वेचवां, ते सर्व दंतकुवाणिज्य छे ज्यारे ते वस्तुउं लेवा वास्ते आगरमां जवु पडे, त्यारे जिल्लादि लोक तत्काल हाथी गेडा प्रमुख जीवोनी हिंसामां प्रवृत्त थाय छे. महाअनर्थरूप पापना काम आचरे छे त्या जवाथी आपणा परिणाम पण मलिन थइ जायछे कदाचित् तीव्रलोजग्रस्त थवाथी, जिल्लादि व्याधोने कहेवु पडे के, अमारे मोटा जारे दांत प्रमुख जोइये छीये, त्यारे ते लोको तत्काल हाथी प्रमुखने मारी आपणने जोइती वस्तु लावी आपशे तेथी श्रावकने वस्तुनी जरुर होय तेवे प्रसगे आगरमा नहि जतां, ते बाबतना व्यापारी पा-

सेथी ते वस्तु ले. एक चमर लेवा जतां एक गाय मरे. ते कारणथी विचारीने व्यापार करे.

२ वीजु लाख कुवाणिज्य लाख, धावडी, गली, साजीखार, मणसील, हरताल प्रमुख सर्व लाख कुवाणिज्य छे. लाख, त्रस जीवोना समूहथीज वने छे, पछी ज्यारे रंग काढे छे, अने तेने अन्नथी सडावे छे, त्यारे तेमा त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे महादुर्गंधि रुधिर सरखो वर्ण देखाय छे. धावडीमां त्रसजीव उपजे छे, कुंथवा पण वहुज थायछे, मदिरानु अंगछे. वली गली ज्यारे सडावे छे, त्यारे तेमां त्रसजीवनी उत्पत्ति थाय छे. गलीना कुंडमांपण त्रसजीव वहुज उत्पन्न थाय छे, गलीवालां वस्त्रो पहेरवामां जू लीखादि त्रसजीव उत्पन्न थाय छे. हरताल, मणसीलने पीसती वखत यत्न न रखायतो मांखी प्रमुख अनेक जीव मरी जाय छे.

३ त्रीजु रसकुवाणिज्य मदिरा, मांस इत्यादि वस्तुउना व्यापार महापापरूप छे. वली दुध, दही, घी, तेल, गोल, खांड प्रमुख जे नरम वस्तुउछे, तेउनो जे व्यापार ते रसकुवाणिज्य छे आ व्यापारमां अनेक जीवोनो घात थाय छे

४ चोथु केशवाणिज्य द्विपद जे मनुष्य दास, दासी प्रमुख, खरीद करी वेचवां, तथा चोपद ते गाय, घोडा, वलद भेस प्रमुख खरीद करी वेचवां, तथा पक्षीउमां तित्तर, मोर, पोपट, मेना, प्रमुख, वेचवां आ वाणिज्यमां वहुज पाप छे

५ पांचमु विषवाणिज्य. सोमल, वछनाग, अफीण, मणसील, हरताल, चरस, गांजो प्रमुख, तथा शस्त्र, ते धनुष्, तलवार, कटारी, छरी, वरछी, फरसी, कुहाडी, कोदाली, वंदुक, वखतर, ढाल, गोली, तोप प्रमुख जे संग्राममां उपयोगमां आवेछे, तथा हल, मुशल, उखल, दंताली, कवेत, दातरडी, हवाइ पटाका, शतघ्नी प्रमुख, आ सर्व हिंसानां अधिकरण छे, तेउनो जे व्यापार ते विषवाणिज्य छे हवे पांच सामान्य कर्म वतावीये छिये

१ प्रथम यन्त्रपीलन कर्म तल, एरंडी, इक्षु आदि पीली, पीलावी, वेचवां, आ सर्व जीवहिंसाना निमित्तरूप कर्म छे

२ वीजु निर्लांछन कर्म वलद, घोडानी खासी करवी, घोडा, वलद, उट प्रमुखने दाग देवा, कोटवालपणुं, जेलखानाना जेलरनुं काम, मेहेसु-

ल इजारानां काम, चोरीना माल लेवानां काम, इत्यादि निर्दयपणानां सर्वकाम निर्लांछन कर्ममां समाय छे.

३ त्रीजुं दावाग्निदान कर्म. केटलाएक मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जीव धर्म मानीने वनमां आग लगावी देछे, तेउं मनमां एम धारे छे के, नवु घास उत्पन्न थशे, त्यारे गाय प्रमुख चरशे, भिल्लादि लोक सुखेथी रहेशे, अन्न निपजशे, इत्यादि विचार लावी वनदवनुं काम करे, परंतु आग लगाडवाथी लाखो जीवोनो नाश थइ जायछे, तेनो विचार तेउंने आवे नहि. ते कारणथी आग न लगाववी जोइए

४ चोथुं शोपणकर्म वाव, तलाव, सरोवर, कुवा प्रमुखनुं पाणी पोताना खेतरादिमां एवी रीतें लाववु के, तमाम पाणी बहार निकलतां लाखो जीव पाठल, जलरहित थइ तरफडी मरी जाय, आ शोपण कर्म छे. ते कारणथी सर्व पाणीशोपण न करवु.

५ पांचमुं असतीपोपण कर्म कुतूहलने वास्ते कुतरा, विलाडा प्रमुख हिंसक जीवोनु पोपण करवु वली दुष्ट भार्या तथा दुराचारी पुत्रादिनुं मोहथी पोपण करवु, तेउंने सारां, नरसां नहि जाणतां, मनमा आवे तेवी रीतें, तेउंने राजी राखवानो यत्न करवो, तथा वेचवावास्ते दुराचारी दास, दासीनु पोपण करवु, इत्यादि असतीपोपणकर्म कहेवाय छे. वली माछी, कसाइ, वाघरी, चमार, प्रमुख बहु हिसक जीवोनी साथे व्यापार करवो, तेउंने द्रव्यादिनी मदद आपवी, आ पण दुष्टजीवोनु पोपण छे कदापि अनुकंपायुक्त बुद्धिथी श्वानादि पशुउं पोपण करवामां आवे तो ते वावतमा निपेध नथी वली पोताना मोहोल्लामा कदाचित् तेवा जीवोनी खवर लेवी पडे, तेमज पोताना कुटुंवीउंनु पोपण करवु पडे तेमां पूर्वोक्त दोप नथी, कारण के ते लोकनीति, राज्यनीतिनु फरमान छे. आ पांच सामान्य कर्म इति पदर कर्मादान स्वरूप

हवे आ भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचारनुं स्वरूप लखीए छीए.

१ प्रथम सचित्त आहार अतिचार. मूल भागे तो श्रावक सर्व सचित्तनो त्याग करे, जो तेम न थइ शके तो, तेनु परिमाण करे तेमां सर्व सचित्तना त्यागी, तथा सचित्तना परिमाणवाला, जो अनाभोगादिकथी सचित्त आहार करे, जेम के जल, उष्ण करतां त्रण उकाला (उभरा)

आवी जाय त्यारे शुद्ध प्राशुक थायछे, परंतु एक उकाला अथवा वे उकालानुं पाणी तो मिश्र उदक कहेवाय छे, ते पाणीने अचित्त जाणी पीये, तथा सचित्त वस्तुने अचित्त थवामां विलंब होय, छतांपि तेने अचित्त जाणी खाय तो प्रथम अतिचार लागे

२ बीजु सचित्त प्रतिबद्धाहार अतिचार जेने सचित्त वस्तुनो नियम छे, ते तत्काल खेरनी गांठथी गुंदर उखेडीने खाय, तेमां गुंदर तो अचित्त छे, परंतु सचित्तनी साथे मलेलो हतो, तेथी दोष लागे छे. वली पाकी केरी चूसे, तथा बोर, रायणना समूहने खाय, अने मनमां एम जाणे के हुं तो अचित्त खाउछुं, सचित्त गोठली, ठलीआने फेंकी दइश, तेमां शु दोष छे? एवा विचारथी खाय तो, बीजो अतिचार लागे

३ त्रीजो अपक्वाहार अतिचार. चाल्या वगरनो लोट, तथा जेने अग्नि संस्कार न करवामां आव्यो होय, एवो काचो लोट फाके, कारण के श्री सिद्धांतमां कह्युं छे के, आटो दल्या पछी, चाल्या विना केटलाएक दिवस मिश्र रहेछे श्रावण, नादरवा मासमां अणचाल्यो आटो पीस्यापछी, पांच दिवस मिश्र रहेछे, आसो, कारतक मासमां चार दिवस मिश्र रहे छे, मागशर, पोष मासमां त्रण दिवस मिश्र रहे छे, माघ, फागण मासमां पांच पहोर मिश्र रहेछे, चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहेछे, अने जेठ असाड मासमां त्रण पहोर मिश्र रहेछे, पछी अचित्त थइ जायछे, तेथी मिश्र खायतो, त्रीजो अतिचार लागे.

४ चोथा दुपक्वाहार अतिचार, कांइक काचा तथा कांइक पाका एवा सर्व जातिना ढंला, उबी, पोंक, जुवार, बाजरा, घउं प्रमुखना लीला पोंक बीजथी नरेला, ते अग्निसंस्कार करतां जेना केटलाएक दाणा अचित्त थाय, तथा केटलाएक दाणा सचित्त रहे, तेने अचित्त जाणी खाय तो, चोथो अतिचार लागे

५ पांचमो तुछौपधि नक्षण अतिचार. तुछ अर्थात् असार जे खावाथी तृप्ति न थाय, परंतु खावामां पाप बहुज लागतुं होय, जेमके चणानां फूलखाय, बोरना ठलियामांथी गरन काढी खाय, वाल, चणा, मग, चोलानी फली खाय, आ वस्तुउ खावामां प्रसंगदूषणो बहुज लागेछे, कारण

के केटलीएक वनस्पति अति कोमल अवस्थामां अनंतकायपण होयछे, ते खावाथी अनंतकायनो व्रतभग थायछे आ पांचमो अतिचार.

हवे आठमा अनर्थदंड विरमणव्रतनुं स्वरूप कहियें छिये पोताना प्रयोजनवास्ते करवु ते अर्थदंड कहेवाय छे. धन, धान्य क्षेत्रादि नवविध परिग्रहमां हानि वृद्धि थाय, त्यारे करे, कारण के धनवृद्धिने निमित्ते संसारी जीवने वहुपापनां कारणो सेववां पडेछे, तेवे प्रसंगे साचु, जुठु वोल्याविना रही शकातु नथी. पापनां उपकरणां पण मेलववां पडेछे, ज्यारे कांइ मनसुवो करवो पडे, त्यारे विकल्परूप आर्त्तध्यान करवुं पडेछे, कारण के धनादि परिग्रह अजीविका अर्थे जरूरना छे, तेवास्ते धननी वृद्धि निमित्ते जे जे पाप करवामा आवेछे ते ते सर्व अर्थदंरुछे. वली ज्यारे धननी हानि थायछे, त्यारे धननी हानि दूर करवा वास्ते अनेक विकल्प रूप पाप करवां पडेछे, तेपण अर्थदडछे, कारण के धन, व्यवहार संसार सुखनु मुख्य कारण छे, ते व्यवहार वास्ते जे जे पाप करवां पडे ते सर्व अर्थदंड छे वली पोताना स्वजन कुटुव परिवारादि वास्ते अवश्य जे जे पाप सेववां पडे, ते ते सर्व अर्थदंड छे, अने चोथु, पांच प्रकारनी इंद्रियोना भोगवास्ते जे पाप करवां पडे ते पण अर्थदड छे पूर्वोक्त चार प्रयोजनविना जे पाप करवामा आवे ते अनर्थदंड जाणवां तेना चार भेद छे १ अपध्यान अनर्थदंड, २ पापोपदेश अनर्थदंड, ३ हिंसाप्रदान अनर्थदंड, ४ प्रमादाचरित अनर्थदंड तेमा प्रथम जे अपध्यान अनर्थदंड छे, तेना वली वे भेदछे १ आर्त्तध्यान, २ रौद्रध्यान, तेमां आर्त्तध्यानना चार भेद छे, ते पृथक् पृथक् कहिये छियें.

१ प्रथम इष्टवियोग आर्त्तध्यान पोताने प्राप्त थयेला नवविध परिग्रहनो रखे वियोग थाय, एवु चितवन निरंतर मनमां लाव्या करे, अने कदाचित् तेनो वियोग थाय तो मनमां घणोज खेद धारण करे, अने निरतर तेने वास्ते विलोपात कर्या करे, तेमज पोताना वहालां माता, पिता, पुत्र, पुत्री, भार्या भाइ, वेहेन, मित्रादि परदेश गयां होय, अथवा तो मृत्यु पाम्या होय ते प्रसगे अत्यत चिता करे, खाय पीये नहि, वियोगना दु खथी आत्मघात करवानो विचार करे, निरतर क्रोधातुर रहे, इत्यादि प्रसगे, जे चितवन थाय ते आर्त्तध्यान छे

बीजुं अनिष्ट संयोगार्त्तध्यान, इंद्रियसुखने विघ्नकारक अनिष्ट शब्दादिनो संयोग रखे मने थाय एवी मनमां चिता करे, वली घरमां स्त्री खराब मली होय, पुत्र कपूत थयो होय, जाइ विश्वासघाती, वे दीलवालो होय, पिता क्रोधी होय, माता डुराचरणी होय, मित्र कृतघ्न मल्यो होय, एवा प्रसंगोमां निरंतर तेउनो उपाय करवानी चिता थाय. वली स्त्री मनमां एवो विचार करे के, मारी शोक्य बहुज खराब छे, मारा पतिने रोज जुलावो खवरावे छे, रखे मने कोइ दिन पतिवियोग करावे? तेथी ते रांडनो कांइ उपाय करवो जोइए वली सेवक मनमां एवो विचार करे के, मारा शेठनी पासे मारो अमुक डुश्मन अवश्य चाडीखाशे, अने मारादरज्ञाने नरम करी नाखशे, अथवा तो शेठने जूतुं, साचु कही मने नोकरीथी रद बातल करावशे, तो पछी हुं शुं करीश, तेथी ते डुश्मननो कांइक उपाय करवो जोइए. तेवे प्रसंगे, तेउना निग्रह वास्ते, यत्र, मंत्र, कारण, वशीकरण प्रमुख करे. तेउ उपर जूठां कलंक मूके, बलिदान देवावास्ते त्रसजीवने मारे आ सर्व पोताना शत्रुना निग्रह वास्ते करे वली मूठ मारी तथा वीर नाखी मारवा चाहे, परंतु मूर्ख मनमां विचारे नहि, के जो तु दीलमां साचो छो, तो तने शुं फिकर छे? वली ज्यां सुधी सामानुं पुण्य बलवान् छे, त्यांसुधी तुं मंत्र, यंत्रथी तेनुं कांइ पण बुरुं करवाने शक्तिमान् नथी. वली पोताना मनमां एवो कुविकल्प करे के मारा डुश्मनना कुलमां अमुक सख्स जबरदस्त उत्पन्न थयेल छे, रखे मने जविष्यमां हेरान करे? कोइ रीतें तेनी राज्य दरबारमां आवरु जाय, अथवा दंड थाय तो ठीक छे. वली जो तेनुं छिद्र मली जाय तो सरकारने अरज करी तेने देश निकाल करावुं. आ प्रमाणे मूर्ख, मूढ जीव संकल्प कर्या करे छे. वली गाममां चोरनो उपद्रव बहुज थयो छे, तेथी ते डुष्टोने पकडी सख्तशिक्षा थाय, अथवा तो फांसीए देवाय तो सारु. वली अमुक सख्स बहुज फाटी गयो छे, मारी उपर ईर्ष्या करे छे, तेथी ते हरामजादानो कांइक बदोबस्त करवो जोइए, जेथी फरी ईर्ष्या निंदा न करे. आ प्रमाणे निरंतर असत्य विकल्पो करे तो अनर्थदंड लागे छे. कारण के आपणा बुरा चिंतवनथी बीजानुं कांइ बगडतुं नथी जे कांइ सारुं नरसुं थाय छे, ते पुण्य, पापने

३ त्रीजुं चौर्यानंद रौद्रध्यान. अनेक तरेहनां छल कपट, दगावाजी, विश्वास घात करी, भद्रक जीवोनी वहु मूल्यवाली वस्तु थोडी किमत आपी लइ ले अने मनमां खुशी थाय वली चोरी, धाडचोरी, रस्तानी लुट, जवराइथी कढाववु इत्यादि कामो करी परधन मेलवी वहुज खुशी थाय, तेवा चोर लूटाराउंनी पासेथी मिलकत लेवामां, तेउंने मदद करवामां वहुज हिंमतथी प्रवर्त्ते अने लाज मेलवी आनंद माने पोते वेपारी होय अने माल खरीद करवा घराक आव्यो होय, तेवे प्रसंगे विश्वास वेसाडी, नमुनो कांइक वतावी, माल कांइक तरेहनो आपे, अने पोते सोदो करवामां करामातवालो पोताने माने. भरवामां, तोलवामां उछुं आपवानी धानत राखे चोपडामां, ठरावती वखते भाव जे वोल्या होय तेनाथी जास्ति लखे रू प्रमुख माल वेचवामां मालमां भेल संभेल करी लेनारने छेतरी, मनमां खुशी थाय नोकरीनो धधो करतो उघराणीलावी खाइ जाय, अने खुशी थाय, वली शेठने छल कपट करी छेतरे, अने राजी करे, पछी मनमां विचारे के मे केवी युक्ति लडावी, पैसा खाइ गयो, अने शेठने खुशी कर्या वली दगावाजीथी पैसा मेलवी मनमां एवु अभिमान लावे के, मारा जेवी कमावानी शक्ति कोनामां छे १ चोरी करी मनमां एवो खुशी थाय के, मारी चतुराइ तथा शक्तिने कोण समजी शके तेवु छे. जूठा दस्तावेज वनावी, लोको उपर न्यायनी अदालतोमां खोटा दावा करी, फतेह मेलवी, धन अन्यायथी उपार्जन करी, पोताने ऋद्धि, सिद्धि वालो देखी मनमां वहुज आनद पामे. न्यायना अधिकारीउंने मे छेतर्या, तेथी मारा जेवो कोण चालाक छे, इत्यादि चौर्यानंद रौद्रध्यान अनेक तरेहथी मूढात्मा ध्यावे

४ चोथु सरक्षणानंद रौद्रध्यान. नवविध परिग्रह, धन, धान्यादि वहुज वधारी मनमा खुशी थाय, लोभनो थोभ नथी एवो विचार निरंतर आलसुउं करे छे, शक्तिहीन करे छे, परंतु पोते मनमां विचारे के, परिग्रह एज जगत्मां सार छे, पैसा विनाना मनुष्य पशु समान छे, तेथी परिग्रहनी इच्छाने लेशमात्र नहि उछी करतां द्रव्य एकतुं करवानीज चिताराख्या करे वली मनमां विचारे के द्रव्य मेलववु तेमां तो ताकात छे, परंतु मेलवेलु साचवी राखवु, तेमां तो वहुज ताकात जोइए छीये मे करामात अजमावी न होत तो आ पैसा जलवावा मुश्केल हता. वली म-

नमां विचारे के धर्म, दान, पुण्य इत्यादिकामोमां पैसा खरचवा तेनुं फल मलेलुं कोणें प्रत्यक्ष दीठुं छे धर्मधुताराउंये अखाडा मांकी लोकोने लुटवाना रस्ता बांध्या छे जेउ तेउनी जालमां फसाइ जाय, तेउ अक्कलहीन, पैसा केम पेदा थाय छे, तेनी जेउने लेशमात्र खबर नथी, एवा लोकोज होय छे. पोते "चमडी त्रुटे पण दमडी न तुटे" एवीज मनोवृत्ति निरंतर राखी खुशी माने छे. लोकविरुद्ध, राज्यविरुद्ध, कुल तथा धर्मविरुद्ध कामो करी पैसा मेलवी, अने जालवी राखी, मनमां पोतानी वडाइ माने. वली मनमां विचारे के मे एकलायेंज आ धन मेलव्युं छे अने वीजाउंतो मात्र खानारा छे, वोजारूप छे, हुं पैसा नहि साचवीश तो, आ सर्वेना भूंडा हाल थशे, वली पोताना नशीवनेज सारुं मानी अभिमान कर्या करे, कदाच कर्मना उदये कोइ रकम घलाइ जाय तो मनमां वहुज पश्चात्ताप करे, तमाम लोकोना नलीआं गणे, रात दिवस धन नष्ट थवाथी धास्ती राखी सुखे सुवे नहि घर, डुकान, पेटी, तेजुरीनां तालां, वारंवार टंटोल्या करे, सगा पुत्रनो पण लेशमात्र विश्वास करे नहि वीजाउंनेपण एवीज कुबुद्धि आपे इत्यादि अनेक तरेहथी संरक्षणानुबंधी रौद्रध्यान ध्यावे आर्त्त अने रौद्र बने अपध्यान डुर्गतिनां हेतु छे, तेथी ते तजवा योग्यछे.

२ बीजु पापकर्मोपदेश अनर्थदंड वीजाउंने कहे के तमारा पैसा शु कामना छे, सारां घर बार बंधावो, गाडी करो, घोडा फेरवो, अनेक तरेहनां कारखानां करो, पैसा साथे आववाना नथी माटे वाडी, वगीचा करी मोज शोख माणो. वली तमारा घोडानी खांसी करावो, बलदने नाथ घलावो, घोडो अनाडी थइ गयो छे तेथी चाबक स्वारने सोंपो, वली तमारा खेतरमां सूड थइ गयेल छे, घांस पण उगतु नथी, तेथी सूड कापी नखावो, एक वखत दव आपो वली तमे गदा छो माटे न्हावो, धुवो, तमारा घर सगवड वगरनां छे, माटे खाल कुवा, पायखानां करावो, इत्यादि अनेक तरेहना उपदेश जेथी पापस्थानको सेववां पडे तेवा करे.

३ त्रीजुं हिंस्रप्रदान अनर्थदंड. हिंसाकारी वस्तुउं जेम के गाडी, हल, मुशल, घंटी, अग्नि, तलवार, बंधुक, भालां, छरी, दातरडां, अफीण, वछनाग प्रमुख वीजाउंने दाक्षिणता विना, माग्या विना आपवां ते हिंस्रप्रदान अनर्थदंड छे.

४ चोथु प्रमादाचरण अनर्थदंड. कुतूहलथी गीत, नाटक तमासा, मेला प्रमुख जोवा, सांभलवा जाय अहिंआं कुतूहलथी एम लखवानो हेतु ए छे के, इन्द्रियोना विषयो अतिशयपणे सेववानी इच्छामां प्रमाद आचरण छे, परतु जिनयात्रा, स्वामिभक्ति, अठाइमहोत्सव, रथयात्रा, तीर्थयात्रा प्रमुख जोवामां प्रमाद आचरण नथी, कारण के ते तो सम्यक्त्वनी पुष्टिनां साधनो छे वली कामशास्त्र तथा चोराशी आसनथी कामवृद्धि करवामां वारवार मच्या रहेवु, जूगार खेलवा, मदिरापान करवां, शिकार करवा, जलक्रीडा, स्नानादि करवां, जल उछालवां,वृक्षोने दोरडां बांधी हिंचकवां, हाथी घोडा, गेडां, कुकडा प्रमुख जानवरोने अंदर अंदर लडाववां, पोताना शत्रूओना वंशजो उपर द्वेषभाव राखवा वली भक्तकथा करवी, जेमके मांस फलाणा प्राणीनु बहुज सारु पुष्टिवालु छे, मदिरापानथी शरीरमां ताकत आवेछे, अमुक जातना लाडवा खाओ तो शरीर मजबुत थशे, दुध खुब पीओ जेथी वीर्यवृद्धि थशे, अने कामसेवन मनोज्ञ थशे अमुकशाक, भाजी मसालादार अमुकरीतेंज स्वाद आपेछे, तेना जेवी लीजत बीजामा नथी अमे पण एज रीते खान पान करिए छीए. वली स्त्रीकथा करे, जेम के फलाणा देशनी स्त्रीओ बहुज खुब सुरत छे, अमुक शेहेरनी स्त्रीओ चतुर छे, हाव, भाव, कटाक्ष, चुबनादि प्रसंगे अमुक स्त्रीओ बहुज आनद आपे छे वली स्त्रीओनी प्रशसारूप श्लोक बोले जेम के "कर्णाटी सुरतोपचारकुशला, लाटी विदग्धे प्रिये" इत्यादि वली स्त्रीओना रूपवृद्धिकारक, स्तनकठिनत्वकारक, योनिसंकोचक उपाय बतावे तथा एवी अनेक तरेहनी मैथुनभावी कथा करे. वली देशकथा करे जेम के पूर्वदेशमां अनेक तरेहनी वस्तुओ उत्पन्न थाय छे, खांड, गोल, शाल, मद्यादि बहुज सारां थाय छे, उत्तर देशना लोको बहुज शूरवीर होय छे, लढाइ करवामा बहादुर होय छे, काठीयावाडना घोडा बहुज सारा होय छे, चाकरी बहु बखत आपे छे, वली भालना घउ घणाज सारा, इत्यादि देश संबधी अनेक तरेहनी चित्र, विचित्र कथा करवी तथा राज्यकथा करवी जेम के अमारा राज्यमां बहुज दोलत छे, शूरवीर योद्धाओ छे, अमुक राज्यमां लोको उपर बहुज जुलम थाय छे, कर लेवाय छे. अंग्रेजनु राज्य बहुज सारु छे रुशिया ब-

हुज जुलमगार राजा ले फलाणां राज्यो वच्चे लडाइ उतशे, फलाणां व-
खवामां अमुक राजाए वहुज वहाङुरीनु काम कर्युं, इत्यादि वली रोग,
अथवा थाक लाग्या शिवाय आखी रात सुइ रहेवु ते पण प्रमाद आ-
चरण ले. पूर्वोक्त प्रमाद आचरण श्रावक वर्जे. तथा जिनमंदिरमां काम
चेष्टा, हांसी, लडाइ, थुंकवु, निद्रा लेवी, खोटी कथा करवी तथा आ-
हार करवा, इत्यादि अनर्थदंड ले. आ व्रतना पांच अतिचार ले ते कहीए छीए.

१ प्रथम कंदर्पचेष्टा. मुखविकार, भ्रूविकार, नेत्रविकार करवा, हा-
थनी चेष्टा वताववी, पगनी चेष्टा वताववी, पगनी चेष्टा करी वीजाउने
हसाववा, कोइने क्रोध, थाय तेम करवुं, पोतानी लघुता थाय. तथा ध-
र्मनी निंदा थाय तेवी कुचेष्टा करवी, आ प्रथम अतिचार.

२ वीजो मुखरिवचन अतिचार. जांड, कुतूहली लोकोनी जेम मुखरी
पणु करे, असंवद्ध वचन वोले, वीजाउनां मर्म प्रगट करे, वीजाउ क-
ष्टमां पडे तेवां वचन वोले; लघुता थाय, वेर वधे, लवाडीपणुं कहेवा-
य, तथा चुगलखोर कहेवाय, एवां वचन वोले, वली लोकोमां लाज
जाय एवुं वाचालपणुंकरे तो वीजो अतिचार.

३ त्रीजो जोगोपजोग अतिरिक्त अतिचार स्नान, पान, जोजन, चं-
दन, कुसुम, कस्तूरी, वस्त्र, आजरणादि पोताना शरीरना जोग उपरांत
अधिक मेलववां, ते पण अनर्थदंड ले. आ प्रसंगे वृद्ध आचार्योनो सं-
प्रदाय वतावीए छीए. तेल, आमलां, दहीं प्रमुख स्नानने वास्ते अधिक
लइ जाय तो, तेनी लालचथी वीजा वहु लोको तेनी पाछल तलाव उपर
स्नान वास्ते जशे, त्यां स्नान करवाथी पाणीना पूरा प्रमुख वहुज अप्
कायना जीवोनी विराधना थशे, तेथी श्रावकें एवी रीतें स्नान करवा न
जवुं जोइए. श्रावकनो स्नान करवानो विधि आ वावतमां आ प्रमाणे
ले. प्रथम तो श्रावके घरमांज स्नान करवुं जोइए, कदापि पोताने घेर
तेवी सगवड न होय तो, तेल, आमलां प्रमुख पोताने घेर वावरी, मेल
काढी, तलावना कांठा उपर वेसी पाणी वासणमां गली स्नान करवुं,
इत्यादि जीवरक्षा माटे कालजी राखे वली फूलादिमां जीवनो संचार
लागे तो तेने परिहरे, एम सर्व स्थलें उपयोगपूर्वक प्रवर्त्ते. न प्रवर्त्ते
तो त्रीजो अतिचार.

४ चोथो कौकुच्य अतिचार जे बोलवाथी पोतानो तेमज बीजाउंना आत्मा काम, क्रोधरूप थइ जाय वली विरहनी वार्तांउ, शृंगार रसनी साखी, उद, कवित्त, श्लोक विगेरे, तेमज परजराग काफी राग प्रमुख रागमां काममर्म कथन करे तो आ अतिचार लागे.

५ पांचमो संयुक्त अधिकरण अतिचार जेमके उखलनी साथे मुशल, हलनी साथे फाला, गाडीनी साथे धोंसरु, धनुष्नी साथे तीर, इत्यादि श्रावक राखे नहि, कारण के एवां पापनां अधिकरण साथे राखवाथी कोइ तरत लइ जाय, वली लेवा आवे त्यारे ना कही शकाय नहि, तेथी जो अलग अलग होयतो लेवा आवनारने सुखेथी जवाब आपी शकाय. आ पांचमो अतिचार हवे नवमा सामायिक व्रतनु स्वरूप लखीए छिये. पूर्वोक्त आठे व्रतोने पुष्टिकारक, तथा आत्मगुणोने वृद्धि कारक अने अविरतिकषायमां तादात्म्यजावथी मलेली अनादि अशुद्धता रूप विजाव परिणति, तेना अन्यासने उोडाववावास्ते तथा आत्म अनुजव करवा वास्ते अने सहज आनंद स्वरूपरस प्रगट करवा वास्ते आ शिक्षाव्रत उे, अर्थात् शुद्ध अन्यास रूप नवमु सामायिक व्रत उे बे घडी काल प्रमाण समतामा रहेवु रागद्वेषरूप हेतुउंमां मध्यस्थ रहेवु तेने पडित पुरुषो सामायिक व्रत कहेउे वली सम अर्थात् रागद्वेषरहित परिणाम, जे थवाथी ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप मोक्ष मार्ग तेनो "आय" अर्थात् लाज, प्रशमसुखरूपतेनो इक कहेतां जाव ते सामायिक उे. श्रावक मन वचन कायानी खोटी चेष्टा तेमज आर्त्तध्यान रौद्रध्याननो त्याग करीने सामायिक करे आवश्यकसूत्रमां लख्यु उे के, ज्यारे श्रावक सामायिक करेउे, त्यारे ते साधु समान थाय उे, ते कारणथी श्रावक सामायिकमां देवस्नात्र, पूजादि न करे, कारण के जाव पूजा वास्ते द्रव्य पूजा उे, अने जावस्तव सामायिकमां प्राप्त थइ जाय उे ते कारणथी द्रव्य स्तव जिनपूजा सामायिकमा श्रावक उचित नथी सामायिक करनार श्रावक बत्रीश दूषणो तजीने सामायिक करे, ते बत्रीश दूषणोमां प्रथम कायाना बार दूषणो उे तेनु स्वरूप लखीये छीये.

१ प्रथम आसनदोष सामायिकमा पग उपर पग चढावीने बेसे तो दोष लागे, कारण के गुरुविनयमां लाघवता थाय उे, वली ते अजिमाननु

आसन छे, तेथी एवी रीतें वेसे के विनयगुण रहे, जडताइ मालम न पडे तथा अयत्ना न थाय.

२ चलासन दोष. आसन स्थिर राखे, वारंवार उंचा नीचा थाय, चपलतायुक्त प्रवर्त्ते मुख्य रीति तो ए छे के श्रावक एकज आसन उपर सामायिक पुरु करे, अडिगपण रहे कदाचित् रोग, निर्वलताना कारणथी एक आसन पर टकी न शकाय तो, अने फरवु पडे तो उपयोग संयुक्त, यत्नापूर्वक चरवलाथी पूंजन प्रमार्जन करीने आसन फेरवे, पूर्वोक्त विधि न करे तो, आ दोष लागे.

३ चलदृष्टि दोष सामायिक लीधा पछी, नासिका उपर दृष्टि राखे, मनमां शुद्ध उपयोग राखे, मौन पणें ध्यान करे वली सामायिकमां जो शास्त्राभ्यास करवो होय तो, यत्नापूर्वक, मुख आगल मुहपति राखीने, दृष्टि पुस्तक उपर राखीने भणे अथवा श्रवण करे वली जो कायोत्सर्ग करे तो, चार आंगल पाछलथी पग पहोला राखे, योगमुद्राथी उभा थइ, बने वाहु प्रलंबित करे, दृष्टि नासिका उपर राखे, अथवा जमणा पगना अंगुठा उपर राखे, आ शुद्ध सामायिक करवानो विधि छे, ते विधिने तजीने चपलपणाथी चकित मृगनी जेम चारे दिशिए आंख फेरवे तो आ दोष छे.

४ सावद्य क्रिया दोष क्रिया तो करे, परंतु तेमां कांइक सावद्य क्रिया करे, अथवा सावद्य क्रियानी संज्ञा करे तो आ दोष लागे

५ आलंवन दोष. सामायिकमां भींत प्रमुखनुं आलंवन अर्थात् पुंठ लगावी वेसवुं. पूंज्या, प्रमार्ज्या विनानी भींतपर पुंठ लगाववाथी जीव वेठा होय तो तेनो घात थाय छे, तेमज निद्रापण आवे छे.

६ आकुंचन प्रसारण दोष सामायिक लीधा पछी प्रयोजन विना हाथ, पग, संकोचे, लांवा करे मोटा कारण विना सामायिकमां हलवु नहि. जरूरी काममां चरवलाथी पुंजी, प्रमार्जी हलवु

७ आलस दोष अंगमा आलस मरडे, कमर वांकी करे, प्रमाद सेवे, प्रमाद सेवनथी वहुज अनादर व्रतमां थाय छे, कायामां अरति उत्पन्न थाय छे, ज्यारे उठे, त्यारे आलस मरडी, अशोभनीय रीतें उठे तो आ दोष लागे.

८ मोटन दोष सामायिकमां आंगलीना टाचका फोडे, आ पण प्रमादनी प्रवलताथी थाय छे

९ मलदोष सामायिकमां खजवाले, वलूरे मुख्यवृत्तिए तो सामायिकमा खरजने सहन करे, परंतु लाचार थइ जाय तो चरवला प्रमुखथी प्रमार्जी धीमे धीमे खजवाले एवी शैली छे

१० विमासण दोष सामायिकमां गलामां हाथ लगावी बेसे तो आ दोष लागे.

११ निद्रा दोष सामायिकमां निद्रा लीधा करे

१२ आछादन दोष शीत प्रमुखनी प्रवलताथी पोतानां समस्त अंगोपांग वस्त्रथी ढांके आ बार दोष कायासंबंधी छे

हवे वचनना दश दोष लखीए छीए.

१ कुबोल दोष सामायिकमां कुवचन, कर्कश वचन बोले

२ सहसाकार दोष सामायिकमां विचार कर्या विना बोले.

३ असत् आरोपण दोष सामायिकमां कोइना उपर खोटु तोमत आवे एवां वचन बोले न कर्याने कर्युं कहे

४ निरपेक्षवाक्य दोष सामायिकमां शास्त्रनी अपेक्षा विना बोले पोताना छंदे बोले.

५ संक्षेपदोष सामायिकमां सूत्र, पाठ संक्षेपथी करे, अक्षर पाठादि यथार्थ कहे नहि, तो पाचमो दोष लागे

६ कलहदोष साधर्मीओ साथे क्लेश करे, सामायिकमां कोइ मिथ्यात्वी गालो दे उपसर्ग करे, कुवचन बोले, तो पण तेनी साथे कलह नहि करवो जोइए, तो पछी पोताना साधर्मी भाइ साथे क्लेश तो केमज थइ शके ? जो करे तो आ दोष लागे

७ विकथा दोष सामायिकमा राज्यकथा प्रमुख चारे विकथा करे तो आ दोष लागे

८ हास्य दोष सामायिकमा बीजानी हासी, मश्करी करे

९ अशुद्ध पाठ दोष सामायिकना सूत्रपाठ शुद्ध बोले नहि, उतावलथी सामायिक लहे तथा पारे, त्यारे हीनाधिक उच्चारे यद्वा तद्वा सूत्रो पढे

१० मुणमुण दोष सामायिकमा प्रगट स्पष्ट अक्षरोच्चार न करे बी-

जाउने एवुं लागे के जाणे मछर गणगणाट करे छे पद, गाथाना ठेकाणा विना गडबड करी पाठ बोली जाय आ वचनना दश दोष कह्या.

हवे मनना दश दोष लखीए छीए

१ अविवेक दोष सामायिकमां सर्व क्रिया करे, परंतु मनमां विवेक रहित पणें करे. उद्धताइथी करे. मनमां विचारे के सामायिक करवाथी कोण तरी गयुं छे? सामायिकमां शुं फल छे? इत्यादि विकल्प करे.

२ यशोवांछा दोष सामायिक करीने यश.कीर्त्तिनी इछा करे

३ धनवांछा दोष. सामायिक करी तेनाथी धन मेलववानी वांछा राखे.

४ गर्व दोष. सामायिक करी मनमा अभिमान करे के हुंज खरो धर्मी छुं मनेज सारीरीतें सामायिक करतां आवडे छे. बीजा मूर्ख लोकोने शुं गम पडे

५ भय दोष. लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे लोको कहेके जूउं भाइ! श्रावकना कुलमां उत्पन्न थया छे, मोटा मानवंता गणाय छे, परंतु धर्म कर्मनुं तो नाम पण जाणता नथी, धर्म तो दूर रहो, परंतु निरंतर एक सामायिक पण करता नथी. एवी लोकोनी निंदाथी डरीने सामायिक करे.

६ निदान दोष. सामायिक करी निदान करे के आ सामायिकना फलथी मने धन, स्त्री, पुत्र, राज्य, इंद्र, चक्रवर्त्तिनी पदवी मले तो सारुं.

७ संशय दोष. कोण जाणे सामायिकनुं फल मलतुं हशे के नहि? जेने तत्त्व प्रतीत न होय तेज एवो कुविकल्प करे

८ कषाय दोष. सामायिकमां कषाय करे, क्रोधादिसंयुक्त मन छतां सामायिक करवा बेसी जाय सामायिकमां कषायनो तो संपूर्ण अभाव जोइये

९ अविनय दोष. विनयरहितपणे सामायिक करे

१० अबहुमान दोष सामायिक बहुमान. भक्तिभाव, उत्साहपूर्वक न करे आ दश मनना दोष छे उपर बताव्या प्रमाणे बत्रीश दूषण रहित सामायिक करे. सामायिक व्रतना पांच अतिचार टाले, तेनु स्वरूप कहिये छिये

१ काय दुःप्रणिधान अतिचार शरीरना अवयव, हाथ, पग प्रमुख, पुज्या, प्रमार्ज्याविना हलावे, भींते पीठ लगावी बेसे

२ मनोदुःप्रणिधान अतिचार. मनमां कुव्यापार चिंतवन, क्रोध, लो-

न, द्रोह, अभिमान, ईर्ष्या, व्यासंग, संभ्रमचित्त सहित सामायिक करे

३ वचन दुःप्रणिधान अतिचार सामायिकमां सावद्य वचन बोले, सू त्राक्षर हीनाधिक पढे स्पष्ट उच्चार न करे

४ अनवस्था दोष रूप अतिचार. सामायिक वखतसर न करे, जो कर तो पण वे मर्यादाथी, आदरविना, उतावलथी करे.

५ स्मृतिविहीन अतिचार. सामायिक करी छे के नहि ? सामायि पारी छे के नहि ? लीधी छे तो क्यारे लीधी छे ? इत्यादि भूल करे इति नवम सामायिक व्रतस्वरूप

हवे दशमा दिशावकाशिक व्रतनु स्वरूप लखीए छीए छठा व्रतमां दिशाउनु परिमाण करेलुं होय, ते जावजीव सुधीनुं होय छे, तेमां व क्षेत्र मर्यादा छुटी राखी होय छे, तेटलानी हररोज जरूर पडती नथी ते कारणथी दिन दिन प्रत्ये न्यूनन्यून करे, जेमके आजरोज पाच कोश वा दशकोश, वा पचीश कोश, वा वे माइल, वा नगरना दरवाजासुधि वा अमुक वाग वगीचा सुधि मारे गमन करवानी छुट छे, उपरात प्रति बध छे, एवुं जे नियम ते दिशावकाशिक व्रत कहेवाय छे. अर्थात् आ व्र छठाव्रतनु संक्षेपव्रत छे. उपलक्षणथी पांच अणुव्रतादिनो संक्षेप थोड कालनो तेपण आ व्रतमां समाय छे आ व्रत चार मास, एक मास, वीश दिवस, पांच दिवस, अहोरात्र, एक दिवस, एक रात्रि, वा एक मुहू र्त्तमात्र कालसुधी पण लइ शकाय छे. नियम एवी रीतें करे के अमु क नगरादिमा शरीरथी जाइश, ते उपरांत शरीरें जवानो निषेध छे. आ व्रतवाला श्रावकने देश, परदेशना व्यापार होय तो करेला क्षेत्रपरिमाण उपरांत कायाथी ते जइ शके नहि, परतु दूरदेशना कागल प्रमुख आवे ते वांचवानो, तेमज माणस मोकलवानो आगार छे. एवु नियम ते राखी शके परदेशनी वात सांभलवानो आगार राखे, परतु जेउने परदेशनो व्या- पार न होय, ते कागल, चीठी प्रमुखपण वांचे नहि, तेमज आदमी पण मोकले नाह वली चित्तवृत्ति स्थिर होय, अने सकल्प विकल्प न थता होय तो परदेशनी वात पण श्रवण करे नहि जो तेम रही शकातु न होय तो आगार राखे, परतु जाणीने पोताना व्रतने दोष लगावे नहि आ दिशावकाशिक व्रत निरतर सवारमा चौद नियमनी यादगिरीमा उ-

पयोगपूर्वक राखे, अने रात्रिए जुदुं राखे, आ व्रत जेवी रीतें गुरुमुखथी धारे तेवी रीते पाले आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए ठीए

१ आणवण प्रयोग अतिचार नियम करेला क्षेत्रथी बहारना क्षेत्रमां कोइ वस्तु होय, अने तेनी जरूर पडे, त्यारे विचारे के मारे तो नियम करेला क्षेत्रथी बहार जवानो निषेध ठे, तेथी कोइ त्यां जतुं होय तेने कहे के अमुक वस्तु मारे वास्ते लेता आवजो पठी विचारे के मारुं व्रत नंग थयुं नहि अने वस्तु आवी गइ आ प्रथम अतिचार.

२ पेसवण प्रयोग अतिचार. बीजा आदमीनी साथे पोताना नियम उपरांतना क्षेत्र बहार कोइ वस्तु मोकलवी ते

३ सद्दाणुवाय अतिचार नियमनी नूमिकाबहार कोइ आदमी जतो होय, तेनी पासे कांइ काम कराववुं होय, त्यारे तेने खोंखारो प्रमुख करी बोलावे, पठी कहे के अमुक वस्तु लेता आवजो आ त्रीजो अतिचार ठे

४ रूपानुपाती अतिचार पोताना नियम उपरांतना क्षेत्रें कोइ आदमी जतो होय, तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे हवेली अथवा डुकानना उपरना मजला उपर चडी, पोते तेनी दृष्टिए पडे तेम करे, पठी जनार आदमी पोतानी पासे आवे, एटले पोताना मतलबनी सर्व वात तेनी साथे करे तो आ अतिचार लागे

५ पुद्गलाक्षेप अतिचार. पोताना नियम उपरांतनी नूमिकाए कोइ आदमी जतो होय, अने तेनी साथे कांइ काम होय, त्यारे तेना उपर कांकरो फेके, जेथी ते पोतानी पासे आवे त्यारे, तेनी साथे सर्व मतलबनी वातचित करे तो आ अतिचार लागे इतिदशमं

हवे अगीआरमा पौषधोपवास व्रतनु स्वरूप लखीए ठीए पौषध व्रतना चार नेद ठे, तेमां प्रथम आहार पोषध ठे, तेना पण बे नेद ठे, एक देशथी, बीजो सर्वथी देशथी तो त्रिविहार उपवास करीने वा आचाम्ल (आयंबिल) करीने, वा त्रिविहार एकासणु करीने पोषध करे, तेनो विधि लखीए ठीए.

पोषध लीधा पहेलां पोताने घेर कही राखे के, हुं आजे पोषध उचरवानो ठुं, तेमा आचाम्ल अथवा एकासणुं करवानो ठुं, तेथी नोजनने अवसरे आहार करवा आवीश, अथवा तमे ते अवसरे पोषध शालामां

आहार लइ आवजो, एम यथायोग्य कथन करी पोषध करवा आवे पोषध व्रत उचरे, बाद देववंदन कर्या पठी कटासणु, चरवलो तथा मुहपत्ति, आ त्रण उपकरण साथे लइ पोताने घेर जवु होय तो, बाद उंढी, साधुनी जेम उपयोगसंयुक्त मार्गमा यत्नापूर्वक चाली, भोजन स्थानकें जइ, प्रथम इरिया वहिया पडिक्कमे, गमनागमननी आलोचना करे, पठी कटासणा उपर बेसी, आहार करवानु भाजन पडिलेही (प्रतिलेखी) बाद पोताने लेवा योग्य आहार लहे, साधुनी जेम रसगृद्धिरहित आहार करे, आहारने सारो अथवा बुरो कहे नहि, मुखथी बोल्या विना आहार करे, आहारनु जूठ पडे नहि, आहार कर्या पठी उष्ण जलथी आहारनुं वासण धोइने पी जाय, वासण शुद्ध करी मुकवी, उपयोगसंयुक्त पोषधशालामां आवे, मार्गमां जतां आवतां कोइनी साथे वात करे नहि, पोषधशालामा पूर्वना स्थानपर आवी बेसे, इरिया वही पडिक्कमि, चैत्यवंदन करी, धर्मक्रियामा प्रवर्त्ते. जो पोतानो संबंधी अथवा सेवक पोषधशालामां आहार लइ आव्यो होय तो, पूर्वोक्त रीतिए आहार करी वासण पाठां आपी दे, पठी धर्म क्रियामां प्रवर्त्ते आ देशथी पोषध कहेवाय ठे, अने जो चारे आहारनां पच्चखाण करी पोषध करे तो सर्वथी कहेवाय ठे आ प्रथम भेद ठे.

२ शरीरसत्कार पोषध तेमां सर्वथा शरीरसत्कार पोषध ते शरीरनो सर्वथा सत्कार स्नान, धोवन, धावन, तैलमर्दन, वस्त्राभरणादि शृगार प्रमुख कांइ पण शुश्रूषा करे नहि, साधुनी जेम अपरिकर्मित शरीर राखे, अने जो पोषधमां हाथ, पग प्रमुखनी शुश्रुषा करवी एवो आगार राखे तो, ते देश शरीर सत्कार पोषध कहेवाय ठे

३ अब्रह्मचर्य पोषध त्रिकरण शुद्धिए ब्रह्मचर्य व्रत पालवु ते सर्वथा ब्रह्मचर्य पोषध ठे, अने मन, वचन, दृष्टि प्रमुखनो आगार राखवो, अथवा परिमाण राखवु, ते देशथी ब्रह्मचर्य पोषध कहेवाय ठे

४ सर्वथा सावद्यव्यापारनो त्याग, ते सर्वथी अव्यापार पोषध ठे अने एकादि व्यापारनो आगार राखवो ते देशथी अव्यापार पोषध ठे,

ए प्रमाणे चारे प्रकारना पोषधना बे बे भेद ठे पूर्वकालमां ज्यारे आगम व्यवहारी गुरु विचरता हता, अने श्रावक पण शुद्ध उपयोग

वाला हता, त्यारे जे जे प्रतिज्ञाओ लेता हता, ते ते सर्व अखंडित, तेवीज रीतें पालता हता, भूलता नहि, तेम न्यूनाधिक पण करता नहि; अने गुरु पण अतिशय ज्ञानना प्रभावथी योग्यता जाणीने देश वा सर्व पोषधनो आदेश आपता हता, तथा श्रावक पण कदाचित् स्मृतिभंग थता हता, तो पण तत्काल प्रायश्चित्त लइ लेता हता आ कालमां तो एवा उपयोगवाला जीवज नथी दुषम कालना प्रभावथी जड बुद्धि जीव बहुज छे ते कारणथी पूर्वाचार्योए उपकारने अर्थे आहार पोषध तो बंने करवाने राख्यां, अने बाकीना त्रणे पोषध जितव्यवहार ग्रंथने अनुसारे निषेध करी दीधा छे. आ प्रवृत्ति वर्त्तमान संघमां प्रचलित छे. पोषध तो श्रावकें अवश्य करवा जोइए; कारण के कर्मरूप भावरोग वास्ते ते परम औषधि छे तेथी ज्यारे पर्वनो दिवस आवे, त्यारे अवश्य पोषध करवो जोइए तेना पांच अतिचार वर्जवा, ते कहीए छीए

१ अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय सिद्या संथारक अतिचार जे स्थानमां पोषध संस्थारक (संथारो) कर्यो होय, ते भूमिका तथा संथारानी पडिलेहणा न करे, अर्थात् संथारानी जगा सारी रीतें निघा करीने नेत्रथी जोवे नहि, कदापि जोवे तो पण प्रमादने वश थइ कांइक देखी, कांइक न देखी एम करे-

२ अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सिद्या संथारक अतिचार. संथाराने रजोहरणादिथी पूंजे नहि, कदापि पूंजे तो पण यथार्थ न पूंजे, गडबड करी दे, जीवरक्षा साचवे नहि

३ अप्पडिलेहिय,दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. लघुशंका, वडीशंका परठववानी भूमिका नेत्रथी अवलोकन न करे, अवलोकन करे तोपण जेम तेम करी काम चलावे, जीवयत्ना विना करे, परिठवे

४ अप्पमज्जिय,दुप्पमज्जिय उच्चार पासवण भूमि अतिचार. ज्यां मूत्र, विष्ठा करे, त्यां भूमिकाने प्रथम पूंज्याविना मल, मूत्र करे, कदाच पूंजे तोपण यद्वा तद्वा करे, परंतु यत्नापूर्वक न पूंजे

५ पोसह विहि विवरीए अतिचार पोषधमां क्षुधा लागे, त्यारे पारणानी चिंता करे, जेम के प्रभाते अमुक वस्तुओ करावीने आहार करीश वली अमुक काम करवा सारु अमुक स्थानकें जवुं पडशे. अमुकनी पासे

उघराणी ठे, ते तगादो कर्या विना आपशे नहि; वली शरीर थाकी गयु ठे तेथी प्रजातमा तेल मर्दन करावीश, गरम पाणीथी स्नान करीश, अमुक पोशाक पहेरीश, स्त्रीनी साथे जोगविलास करीश, इत्यादि सावद्य चिंतवन करे संध्याए पोषध मंडल शोधन करे नहि, आखी रात सुइ रहे, वा विकथा करे. पोषधनां अढार दूषणो वर्जे नहि.

ते अढार दूषणो आ प्रमाणे पोसहमां व्रती विनाना श्रावकनु लावेलु पाणी पीये, २ पोषध वास्ते सरस आहार करे, ३ पोषधने आगले दिवसे अनेक तरेहनी रसवती मेलवी आहार करे, ४ पोषध निमित्तें, अथवा पोषधने आगले दिवसे विजूषा करे, ५ पोषधवास्ते वस्त्र धोवरावे, ६ पोषधवास्ते आजरण घडावी पहेरे, स्त्रीपण नथ, ककणादि सोहागनां चिन्ह शिवाय नवां घरेणां घडावी पहेरे, ७ पोषध वास्ते वस्त्र रंगावी पहेरे, ८ पोषधमां शरीरनो मेल उतारे, ९ पोषधमां काल विना निद्रा लहे, १० पोषधमां स्त्री कथा करे, स्त्रीने सारी, बुरी कहे, ११ पोषधमा जक्तकथा करे, आहारने सारो, नरसो कहे, १२ पोषधमां राज्यकथा करे, युद्धनी वार्त्ता करे, १३ पोषधमां देशकथा करे, देशने सारो, नरसो कहे, १४ लघु शका जूमि पूज्या विना करे १५ बीजानी निंदा करे, १६ स्त्री, माता, पिता, पुत्र, जाइ, बहेन साथे वार्त्तालाप करे, १७ चोरनी कथा करे, १८ स्त्रीनां अंगोपांग स्तन, जंघादि निहाले आ अढार दूषणो वर्जे तो शुद्ध पोषध जाणवो इति एकादश व्रतस्वरूप

हवे बारमा अतिथि सविजाग व्रतनु स्वरूप लखीए ठिये. जेणें लौकिक पर्वोत्सवादि तिथियोनो त्याग करेलो होय ते अतिथि कहेवाय ठे, जेम परोणो (मेमान) तिथि विना आवे ठे, अर्थात् अमुक तिथियेंज आवे एवो जेम नियम नथी, तेम जे साधु होय ठे ते अणचिंतव्याज आवे ठे, तेथी ते अतिथि जाणवा एवा मधुकर वृत्तिवालाथी जो विजाग करे अर्थात् शुद्ध व्यवहारन्यायोपार्जित धनथी, वस्तुउं लावी, पोताना उदर पूरणार्थे जे रसोइ करी ठे, तेमांथी उत्तम कुलाचारपूर्वक पूर्व कर्म पश्चात्कर्मादिदोषरहित, शुद्ध निर्दोष आहार, जक्तिपूर्वक साधुने वहोरावे (आपे) ते अतिथि संविजाग व्रत कहेवाय ठे प्रथम दान देनारमां जो पाच गुण होय तो ते दातार शुद्ध होय ठे, ते पांच गुण लखिये ठिये.

१ जैनमार्गी दातारने, शुद्ध पात्रनो योग प्राप्त थवाथी, अर्थात् पोताना घरमां मुनिराजनां दर्शन मात्र थवाथी अंतरंगमां बहुज आनंद पामे, जेम पोतानो अत्यंत प्यारो, हितकारी मित्र बहु वखतथी दूर देशांतर गयो होय, जेनी कोइ वखत विस्मृति थइ न होय, अने जेने मलवाने निरंतर अंतःकरणमां आतुरता रहेती होय, एवा परम वल्लभ मित्रने अकस्मात् मलवाथी जेम आनंदनां आंसु आवी जाय, तेवीज रीते मुनिराजने पोताने घेर पधारेला जोइ आनंदना आंसु लावे, मनमां विचारे के आज मारु परम भाग्य के, आवा मुनिराज मारे घेर पधार्या. वली हुं केवो छुं ? अनादिकालथी भूल भ्रमित, द्रव्य संबल रहित, दारिद्र अंधभावपीडित, ज्ञानलोचनरहित, अपार संसार चक्रमां भटकनार एवा मने, अत्यंत अकथनीय दुःखसंयुक्त देखीने, मारा उपर परम दयादृष्टिपूर्वक, प्रथम ज्ञानांजन शलाकाथी मारां ज्ञानरूपनेत्र उघाडी दीधां, वली त्रण तत्व सेवारूप व्यापार मने शिखव्यो, तथा रत्नत्रयीरूप पुंजी (राशि) मने आपी मारु अनादि कालनु दारिद्र्य दूर कर्युं, मने उत्तमपुरुषोनी गणतरीमां लावी मुक्यो, एवा गुरु मुनिराज निःस्वार्थे परोपकारी मारा घर आंगणामां पधार्या एवा प्रशस्त राग भावना उल्लासथी आनंदनां आंसु लावे, एवी पुष्ट भावना भावे आ दातारनो प्रथम गुण छे.

२ जेम संसारमां जीवने अत्यत इष्ट वस्तुना संयोगथी रोमावलि विकस्वर थाय छे, तेम मुनिराजने देखी, अति भक्तिना प्रभावथी रोमावलि विकस्वर थाय, अने अत करणमां हर्ष समाय नहि. आ बीजो गुण छे

३ मुनिराजने देखी बहुमान एवी रीते करे, जेम कोइ गृहस्थने घेर, राजा पधार्या होय, अने ते राजानुं बहुमान, जेम ते गृहस्थ करे, एवा विचारथी के आजे मारा भाग्यनो उदय थयो के राज्यना स्वामि, राजाधिराज मारे घेर पधार्या, माटे उत्तम प्रकारना नजराणा आ वखते करवां ते मने उचित छे, कारण के राजानुं पधारवु वारवार थतु नथी, एम निश्चय करी जेम उत्तम वस्तुओ भेट करे, तेवी रीते श्रावक पण मुनिराजनु बहुमान करे, मनमां विचारे के आवा नि.स्पृहीयोमां शिरोमणी, जगद् बंधु, जगत् हितकारी, जगत् वत्सल, निष्कामी, आत्मानंदी, करुणासा-

गर, संसारजलधि उद्धारण, परोपकार करणीमां चतुर, क्रोधादि कषाय निवारक, तरण तारण, एवा मुनिराज मारे घेर पधार्या, तेथी आजे मारु अहो जाग्य बे। एवु जाणी सत्रमसंयुक्त सन्मुख जाय, त्रिकरणशुद्ध परिणामथी विनति करे के हे स्वामि! दीन दयाल पधारो! मारुं गृहांगण पवित्र करो! एम अति सन्मानपूर्वक घरमां पधरावे, मनमां विचारे के आजे मारो पुण्योदय थयो, जे साधु आहार पाणीनो अनुग्रह करे बे. कारण के साधुने आहार लेवामां वहुज विधि बे, साधु शुद्ध जात पाणी जाणे तोज लहे, ते कारणथी रखे माराथी कांइ दोष लागी जाय, एवो विचार करी, त्रिकरण शुद्ध, वहुमानपूर्वक, उपयोगसंयुक्त, विधिपूर्वक आहार लावे, लावीने मधुरस्वरथी विनति करे के हे स्वामि! आ शुद्ध आहार बे, तेथी सेवक उपर परम कृपादृष्टि करी पात्र पसारी मारो निस्तार करो, एम विनति करतां थकां आहार वहोरावे मुनिपण ते आहारने योग्य जाणीने लइ ले श्रावकपण दान देवा योग्य जे जे वस्तुउं होय, ते सर्वनी निमन्त्रणा करे, ए प्रमाणे विधिपूर्वक दान दइ हाथ जोडी, पृथ्वी उपर मस्तक लगावी, नमस्कार करे, पठी मिष्टवचनोथी विनति करे के हे कृपानिधान! सेवक उपर मोटी कृपा करी, आजे मारुं घर पवित्र थयु पूरा पुण्योदयविना मुनिराजनो योग क्यांथी मले? वली हे स्वामि! कृपा करी अशन, पान, खादिम, स्वादिम, औषध, वस्त्र, पात्र, शय्या, सस्तारकादिनु प्रयोजन होय तो अवश्य सेवक उपर अनुग्रह करी पधारशो, आप तो मुनिराज गुणवान् वेपरवाह बो, आपने कोइ वस्तुनी कमी नथी, कोइनी साथे प्रतिवध नथी, आप पवननी जेम अप्रतिवद्ध बो, तोपण मारा उपर जरुर फरी उपकार करशो, एम कहेतां कहेतां पोताना आंगणानी सीमा सुधी पहोंचाडे आ त्रीजो गुण बे

४ मुनिराजने वलावी, वंदना करी, घेर आवी, जोजन करवा वेसे, परंतु मनमां आनदना उजरा आव्या करे, विचारे के आजे मारु अहो जाग्य थयु! आज कोइ उत्तम वात थशे, कारण के आजे नि:स्पृही, सहज उदासी, स्वसुखविलासी मुनिराजने विनति करी आहार प्रतिलाज्यो, अने आहार वहोरावता वचमा कांइ विघ्न आव्यु नहि. आजे कृ-

तकृत्य थयो; वली आवा मुनिराजनो योग क्यारे मले? एवी अनुमोदना वारंवार करे, आ चोथो गुण छे.

५ जेम कोइ मंद जाग्यवान् व्यापार करतां थोडुं थोडुं कमाय, तेने कोइ दिवस कोइ सोदामां लाख रुपैयानी प्राप्ति थइ जाय, त्यारे जेवो ते आनंदित थाय, अने फरी तेज व्यापारनी जेवी चाहना राखे, तेनाथी पण अधिक, श्रावक साधुने दान देवानी चाहना राखे. आ पांचमो गुण छे. आ पांच गुण युक्त दान आपे तो अतिथिसंविजाग व्रत होय आ व्रतना पांच अतिचार वर्जवा, ते लखीए छीए

१ सचित्त निक्षेप अतिचार सचित्त पृथ्वी, जल, कुंज, चूला, इंधनादि उपर साधुने न देवानी बुद्धिथी आहार राखे, मनमां एवो विचार करे के साधु तो आहार लेशे नहि, परंतु निमंत्रणा करवाथी मारुं अतिथिसंविजाग व्रत वन्यु रहेशे आ प्रथम अतिचार.

२ सचित्त पीहण अतिचार. आहारने सचित्त वस्तुथी ढांके, सूरण, कंद, पत्र, पुष्पादिथी न देवानी बुद्धिथी ढांकी राखे तो वीजो अतिचार.

३ कालातिक्रम अतिचार साधुने जिक्षानो काल विल्या पछी, अथवा जिक्षा काल पहेलां, अथवा साधु आहार करी रह्या होय ते पछी, आहारनी निमंत्रणा करवा जाय तो त्रीजो अतिचार

४ परव्यपदेश अतिचार. साधु ज्यारे याचना करे, त्यारे क्रोध करे; पोतानी पासे वस्तु होय छतां, मागतां आपे नहि, वली आपे तो पण एवा विचारथी के आवा गरीव लोको साधुने आपे छे तो, तेउनाथी शुं हुं गरीव हुं ते न आपुं? आवी जावनाथी आपे तो चोथो अतिचार.

५ गोल, खांड प्रमुख पोतानी वस्तु होय, ते न आपवानी बुद्धिए पारकी कहे, अने पारकी वस्तु होय ते आपवानी बुद्धिए पोतानी कहे तो आ पांचमो अतिचार. इति श्री अतिथिसंविजागव्रतं सपूर्णं

सम्यक्त्वपूर्वक बारव्रतरूप, गृहस्थ धर्मनुं स्वरूप धर्मरत्न प्रकरण, तथा योगशास्त्रादि ग्रंथानुसार संक्षेपमात्र लखेल छे, विशेष जाणवानी अजिलाषावालाए धर्मरत्नशास्त्र वृत्ति, तथा योगशास्त्र जोवां

इति श्रीतपोगछीयगणिश्रीमणिविजयतछिष्यश्रीमुनिबुद्धिविजयतछिष्य

मुन्यात्मारामानन्दविजयविरचित जैनतत्त्वादर्श (नापांतरे) श्रावकनिरूपण नामा अष्टमपरिछेद॰ सपूर्ण ॥

॥ अथ नवमपरिछेदप्रारंनः ॥

श्रावकोनां ठ कृत्यो ठे १ दिनकृत्य, २ रात्रिकृत्य, ३ पर्वकृत्य, ४ चातुर्मासिक कृत्य, ५ संवत्सरकृत्य, ६ जन्मकृत्य, तेमांथी प्रथम दिनकृत्यविधि, आ परिछेदमां श्राद्धविधिग्रथ तथा श्रावककौमुदी शास्त्रानुसार लखिये ठिये.

प्रथम तो श्रावकें निद्रा अल्प लेवी जोइए ज्यारे एक प्रहर रात्रि शेष रहे, त्यारे निद्रा तजी उठवु जोइए कोइने वहु निद्रा आवती होय तो पण जघन्यथी चौदमा ब्राह्ममुहूर्त्तमां अवश्य उठवु जोइए सवारमां वहेलां उठवाथी इहलोक परलोकनां अनेक कार्य सिद्ध थाय ठे, ते अवसरे बुद्धिपण निर्मल, सुदर होय ठे. पूर्वापर विचार वहुज सारी रीते थइ शके ठे ग्रंथकार एम पण लखे ठे के निरंतर जेने सूतां सूतां सूर्योदय थइ जाय, तेनु आयुष्य अल्प थाय ठे, तेथी ब्राह्ममुहूर्त्तमां अवश्य उठवु जोइए. ज्यारे निद्रानो त्याग करी उठे, त्यारे मनमा विचारे के हु श्रावकनु, पोताना घरमां सुतो हतो के वीजाना घरमां सुतो हतो ? नीचे सुतो हतो के उपरमाले सुतो हतो ? दिवसना सुतो हतो के रात्रिना सुतो हतो ? इत्यादि विचार करता निद्रानो वेग न मटे तो नासिका तेमज मुखनो श्वासोल्लास रोके, तेम करवाथी निद्रा तत्काल दूर थइ जाय ठे, पठी द्वार सारी रीतें तपासी जरुर होय तो लघुशकादि करे रात्रिमां जागतां कोइने कांइ कहेवु पडे तो, मदस्वरथी कहे, उचे स्वरे शब्दोच्चार करे नहि उंचा स्वरथी वोलवाथी रात्रिमा ठपकली प्रमुख हिंसक जीव जागी जाय तो माखी प्रमुख अनेक जीवोनी ते हिंसा करे ठे कसाइ जागी जाय तो, गाय, वकरी, घेटा प्रमुखने मारवाने चाल्यो जाय ठे, माठी जाल लइ पोतानु काम शरु करवा जाय ठे, वाघरी, आहेडी, मदिरापानी, खुनी, परस्त्रीलपट, तस्कर, लूटारा, धोवी, घांची, कुंभार प्रमुख अनेक हिसा करनारा जीवो जागवाथी अनेक तरेहना पापकर्ममा प्रवृत्त थइ जाय ठे आ सर्व

पापनुं निमित्त कारण रात्रिए उंचा स्वरथी वात करनारने थाय, तेथी उंचा स्वरथी रात्रिमां नहि बोलवु जोइये

सवारमां निद्रानो छेद थाय त्यारे तत्त्वज्ञाता श्रावकें तत्त्वविचार करवो जोइये. तत्त्व पांच छे १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आकाश, निद्राना छेद समये जो पृथ्वीतत्त्व तथा जलतत्त्व वहेतां होय तो शुभ छे अने जो अग्नि, वायु के आकाशतत्त्व वहेतां होय तो दुःखदायक छे शुक्लपक्ष प्रतिपद् दिने जो वामनासिकानो स्वर चालतो होय तो पंदर दिवस सुधी आनंद आरोग्य रहे, अने कृष्णपक्षनी एकमने दिवसे जो दक्षिण नासिकानो स्वर वहेतो होय तो पदर दिवस सुधी सुख आनंद रहे, तेनाथी विपर्यय होयतो विपर्यय फल थाय.

शुक्ल पक्षना प्रथमना त्रण दिवस वामनासिकानो स्वर उठतां वहेतो होय तो शुभ छे ते पछीना त्रण दिवस दक्षिणस्वर चालतो होय तो शुभ छे, वली ते पछीना त्रण दिवस वाम स्वर चालतो होय तो शुभ छे, एम अनुक्रमें पंदर दिवस सुधी समजवुं तथा कृष्णपक्षनी एकमना दिवसथी त्रण दिवस सुधी दक्षिणस्वर वहेतो होय तो शुभ छे, ते पछीना त्रण दिवस वामस्वर वहेतो होय तो शुभ छे वली ते पछीना त्रण दिवस दक्षिण स्वर वहेतो होय तो शुभ छे, एम पंदर दिवस सुधी जाणवु तथा चंद्रस्वरमां सूर्य उगतो होय, अने सूर्यस्वरमां सूर्य अस्त थतो होय तो शुभ छे. तथा सूर्यनाडीमां सूर्य उदय होय, अने चंद्रनाडीमां अस्त थाय तो पण शुभ छे. कोइ शास्त्रना मत प्रमाणे रवि, मगल, गुरु, शनि, आ चार वारमां दक्षिणस्वरमा सूर्यनाडी दिवस उगता चाले तो शुभ छे, अने सोम, बुध तथा शुक्र आ त्रण वारमा सूतां, उठतां चंद्रस्वर वामस्वर चाले तो शुभ छे, तेनाथी विपर्यय चाले तो अशुभ छे

वली कोइक शास्त्रकारना मत प्रमाणे संक्रांतिना क्रमथी सूर्य चंद्रनाडी वहे तो शुभ छे, जेम के मेष सक्रांतिने दिवस सूर्यस्वर चाले, तथा वृषसंक्रांतिने दिने चंद्रनाडी चाले तो शुभ जाणवी इत्यादि तथा कोइक मतमां चंद्रमां राशि पलटे ते अनुक्रमे अढी घडी सुधी एक नाडी वहे छे इत्यादि, परंतु जैनमतना आचार्य श्रीहेमचंद्रादिनो तो प्रथम लख्या प्रमाणे मत छे छत्रीश गुरु अक्षरो उच्चार करतां जेटलो

काल लागे छे, तेटलो काल वायुनो एक नाडीमांथी बीजी नाडीमां संचार करतां लागे छे

हवे पांचतत्त्व संबधी बोधस्वरूप कहियें छियें नासिकानो पवन जो ऊंचो जाय तो अग्नितत्त्व, जो नीचो जाय तो जलतत्त्व, जो तिर्छो जाय तो वायुतत्त्व, जो नासिकाथी निकली सिधो तिर्छो जाय तो पृथ्वी तत्त्व, जो नासिकाना बने पुटनी अंदर वहे, बहार निकले नहि तो आकाश तत्त्व, ए प्रमाणे जाणवु

प्रथम पवनतत्त्व वहेछे, पछी अग्नितत्त्व वहे छे, पछी जलतत्त्व वहेछे, पछी पृथ्वीतत्त्व वहेछे, पछी आकाश तत्त्व वहेछे निरंतर आ प्रमाणे अनुक्रम छे बने नाडीउमां पांचे तत्त्व वहे छे, तेमां पृथ्वीतत्त्व पंचाश पल प्रमाण वहे छे, जलतत्त्व चालीश पल प्रमाण वहे छे, अग्नितत्त्व त्रीश पल प्रमाण वहेछे वायुतत्त्व वीश पल प्रमाण वहेछे, आकाशतत्त्व दश पल प्रमाण वहेछे.

पृथ्वी अने जलतत्त्वमां शांतिकार्य करवां, अग्नि, वायु तथा आकाशतत्त्वमां दीप्तिमान् अने स्थिर कार्य करवां, ए प्रमाणे करे तो शुभ फलोन्नति थाय छे, जीववानो प्रश्न, जयप्रश्न, लाभप्रश्न, धनार्जन प्रश्न, मेघवर्षण प्रश्न, पुत्र होवानो प्रश्न, जवा आववना प्रश्न, आ प्रश्नो जो पृथ्वी अने जलतत्त्वमां करे तो शुभ थाय, अने अग्नि, वायु वहेतां करे तो शुभ थाय नहि, वली जो पृथ्वीतत्त्वमां प्रश्न करे तो कार्यनी सिद्धि स्थिरपणे थाय, अने जलतत्त्वमां कार्य शीघ्रताथी थाय.

प्रथमनी जिनपूजा करतां, धन कमावा जतां, पाणिग्रहण करतां किल्लो लेता, नदी उतरता, गयेलानु आगमन पुछतां, जीवननो प्रश्न करता, घर क्षेत्रादि खरीदतां, करीआणा लेतां, वेचतां, वर्षनु प्रश्न करतां, नोकरी करतां, खेती करता, शत्रुने जीतता, विद्यारंभ करतां, राज्याभिषेक करतां, इत्यादि शुभ कार्यो करतां चन्द्रनाडी वहे तो कल्याणकारी छे

प्रश्नसमये कार्यना आरंभमां पूर्ण वामनाडी प्रवेश करती होय, त्यारे निश्चयपूर्वक कार्यसिद्धि जाणवी, तेमां संदेह नथी वली अमुक सख्त केदमांथी क्यारे छुटशे ? अमुक रोगी साजो क्यारे थशे ! अमुक स्थानभ्रष्ट थयेलो क्यारे पद प्राप्त करशे ? आ प्रश्नोमा, तथा युद्ध करवाना प्र-

श्रमां वेरीने मलतां, अकस्मात् जय पामतां, स्नान करतां, जोजन करतां, पाणी पीतां, सुतां, गइ वस्तुनी खोज करतां, मैथुन करतां, विवाद करतां, कष्टमां पडतां, आटला कार्योमां सूर्यनाडी वहेती होय तो शुज ठे, कोइक आचार्य एम पण कहे ठे के, विद्यारंजमां, दीक्षामां, शास्त्राभ्यासमां, विवादमां, राजाना देखवामां, मंत्र यत्रना साधनमां, सूर्यनाडी शुज ठे, अथवा जो चंद्रादि स्वर चालतो होय तो निरंतर ते वाजुनो पग उपावीने प्रथम चाले तो कार्यसिद्धि थाय.

पापी जीवोनी तथा शत्रुर्जना दूत प्रमुख जे क्लेश करावना वाला ठे, तेर्जनी सन्मुख, जे नासिकानी वाजु वध होय ते पासु राखे तो सुख, लाज अने जय थाय. शय्याथी उठतां शुक्ल पक्षमां डावो पग, अने कृष्ण पक्षमां जमणो पग धरती उपर मुके आ विधिए श्रावक निद्रा त्यागे.

श्रावक अत्यत वहुमानपूर्वक मंगलकार्यवास्ते पच परमेष्टि नमस्कारमंत्रस्मरण करे. शय्यामां वेठां थका मनमां पच परमेष्टिमंत्रस्मरण करे. वचनथी उच्चार न करे जो मुखथी उच्चार करे तो शय्यानो त्याग करी धरती उपर वेसी नमस्कारमंत्र पढे ए प्रमाणे नमस्कार मंत्र अंतःकरणमां स्मरण करतां करतां शय्याथी उठे, पवित्र जमीन उपर वेसे पठी पूर्व अथवा उत्तर दिशि सन्मुख मुख करी उना थइ चित्तनी एकाग्रता वास्ते कमलवध करी जापथी नमस्कार मंत्र पढे. तेमां आठ पांखडीनु कमल चितवे, तेनी कर्णिकामां अरिहंत पदनुं स्थापन करे, पूर्व पांखडीमां सिद्ध पदनुं, दक्षिण पांखडीमां आचार्यपदनु, पश्चिम पांखडीमां उपाध्यायपदनु, उत्तरपांखडीमां साधुपदनु स्थापन करे; वाकीनां चूलिकानां चारे पद अग्न्यादि चारे खुणामां अनुक्रमे स्थापन करे "उक्त चाष्टमप्रकाशे योगशास्त्रे श्रीहेमचद्रसूरिजि." अष्टपत्रे सितांजोजे, कर्णिकाया करस्थिति ॥ आद्य सप्ताक्षर मंत्र, पवित्र चिंतयेत्तत. ॥ १ ॥ सिद्धादिकचतुष्क च, दिकूपत्रेपु यथाक्रमं ॥ चूलापादचतुष्कं च, विदिक्पत्रेषु चितयेत् ॥ २ ॥ त्रिशुद्ध चिंतयन्नस्य, शतमष्टोत्तरं मुनि' ॥ जुजानोपि लजत्येव, चतुर्थतपस फलं ॥ ३ ॥

हाथना आवर्त्तथी पच मंगल मत्र, नित्य स्मरण जे करता होय, तेर्जने पिशाचादि ठलता नथी वधनादि कष्टमां, विपरीत शखावर्त्तकादि

अक्षरोथी, अथवा विपरीतपदोथी पच मंगल मंत्र लक्षादि जाप करे त
शीघ्र क्लेशादि नाश पामे जो हाथ उपर जाप न करी शके तो सूत्रनं
रत्नी वा रुद्राक्षादिनी माला उपर जप करे मालावालो हाथ हृद
सन्मुख राखे, शरीरे, शरीरना वस्त्रोने तथा भूमिकाने माला लाग
वा देवी नहि अंगुठानी उपर माला राखी, तर्जनी आगलीथी, नख ल
गाव्या विना, मणका फेरवे, मेरु उल्लंघन न करे शास्त्रकार लखेछे वे
जो आंगलीना अग्रथी जाप करे, जाप करतां मेरु उल्लघन करे, अने रख
डता चित्तथी जाप करे तो वहुज अल्प फल मले छे जाप करनार वी
जाउथी एकिला रही शब्दोथी जाप नहि करतां मौनपणे जाप करे तं
श्रेष्ट छे जाप करतां थाकी जाय तो ध्यान करे, ध्यान करता थाके त
जाप करे, वंनेथी थाके तो स्तोत्र वोले

श्रीपादलिप्तआचार्यकृत प्रतिष्ठाकल्पपद्धतिमा लख्यु छे के, जाप त्र
ण तरेहथी थाय छे. १ मानस, २ उपांशु, ३ भाष्य तेमा मानस जाप म
नमां विचारणाथी थाय, स्वसंवेद्य होय, उपांशु जाप वीजा तो सांभलें
नहि, परतु अतर्जल्प थाय; अने भाष्य जाप वीजाना सांभलवामां आं
तेम थाय आ त्रणे अनुक्रमे उत्तम, मध्यम अने अधम जाणवा मानस
जापथी शांति थाय छे, अर्थात् शांतिने वास्ते मानस जाप करवो, पुष्टि
ने वास्ते उपांशु जाप करवो, अने आकर्षणादिमां भाष्य जाप करवो.

नमस्कार मत्रनां पांचपद, नवपद, अनानुपूर्वी चित्तनी एकाग्रता वा
स्ते गणे जो नवकार मंत्रनो एक अक्षर, वा एकपद पण जपे तो पण
जाप थइ शके छे यदुक्त योगशास्त्रे अष्टमप्रकाशे ॥ पंच परमेष्टि मं
त्रना "अरिहंत सिद्ध आयरिय उवझाय साहू" आ सोल अक्षरनं
जाप, तथा "अरिहंत सिद्ध" आ छ अक्षरनो जाप, तथा "अरिहंत"
आ चार अक्षरनो जाप, तथा आकार जे वर्ण छे, ते मण मंत्र छे अ
सर्व जापनु फल स्वर्ग वा मोक्ष छे वली व्यवहारफल आ प्रमाणे जा
णवु, षड्वर्णनो (छ अक्षरनो) जाप त्रणसो वार करे, चारवर्णनो जाप
चारसो वार करे, अने सोल अक्षरनो जाप वसो वार करे तो एक उ
पवासनु फल मले छे वली "अ" वर्ण नाभि कमलमा स्थित ध्यावे
"सि" वर्ण मस्तक कमलमा स्थित ध्यावे, "आ" कार मुख कम

लमां स्थित ध्यावे, "ऊ" कार हृदयकमलमां स्थित ध्यावे, तथा "सा" कार कंठपिंजरमां स्थित ध्यावे आ सर्व जाप कल्याणकारी छे. ' असि आ उसा " आ पांच बीज छे आ पांचे बीजोनो ॐकार बने छे.

वली बीजा बीजमंत्रना पण जाप करे, जेम के "नम·सिद्धेभ्यः" आवो मंत्र, जो इहलोकना फलनी इच्छा होय तो आकार सहित पढवो जोइयें, अने जो मोक्षवास्ते जाप करवो होय तो आकार रहित पढवो जोइये आ जापादि करवाथी बहुज फल थाय छे ॥ यतः ॥ पूजाकोटि समंस्तोत्र पूजाकोटिसमोजप.॥ जपकोटिसमं ध्यानं, ध्यानकोटिसमोलय, ॥१॥ ध्याननी सिद्धि वास्ते श्रीजिनजन्म,दीक्षादि कल्याण भूमिरूप तीर्थमां जाप; अथवा कोइ बीजा विविक्त स्थानमां जइ ध्यान करे. ध्याननुं स्वरूप जोवुं होय तो आवश्यकसूत्रांतर्गत ध्यानशतक अवलोकन करवुं नमस्कारमंत्रनो जाप इहलोकमां पण बहुज लाभकारक छे, ॥ उक्तंच महानिशीथे ॥ नासेइ चोर सावय, विसहरजल जलण बंधण भयाइं ॥ चिंतिज्जंतो रखस, रणरायभयाइं भावेण ॥ १ ॥ अर्थ'—चोर, सिंह, सर्प्प, पाणी, अग्नि, बधन, संग्राम, राजभय, आ सर्व भय पंच परमेष्टि मंत्रना स्मरणथी नाश पामे छे एकाग्र भावथी जपे तो आ फल थाय छे पंच परमेष्ठि मंत्र सर्व स्थले भणवो जोइए नमस्कार मंत्रना एक अक्षरना जापथी सात सागरोपमनु करेलु पाप नाश पामे छे, जो संपूर्ण पंच परमेष्ठि मंत्र जपे तो पांचसो सागरोपमनुं करेलुं पाप नाश थाय छे तथा जे पुरुष एक लाखवार पंच परमेष्टि मत्रनो जाप करे, अने नमस्कारमंत्रनी विधिपूर्वक पूजा करे तो तीर्थंकर गोत्र, नाम कर्मनो बध करे आ कथनमां संदेह नथी, अने आठ क्रोड, आठ लाख, आठ हजार, आठसो, आठ वार जो पंच परमेष्ठि मंत्रनो जाप, जे जीव करे ते त्रीजा भवमां सिद्ध थाय छे ते कारणथी सूतां, उठतां प्रथम नमस्कारस्मरण करवो, त्यारबाद धर्म जागरणा करवी, ते आ प्रमाणे

हु कोण छुं? कइ मारी जाति छे? शु मारुं कुल छे? कोण मारा इष्ट देव छे? कोण मारा गुरु छे? शुं मारो धर्म छे? शु मारो अभिग्रह छे? शु मारी अवस्था छे? शु मे सुकृतादि करेल छे? शुं मे दुष्कृत करेलां नथी? शुं हु करवाने समर्थ छुं? शुं हुं करी शकतो नथी? मने कोइ दे-

खे ठे के नहि? पोतानी नूल आत्मा जाणे ठे, ठतां केम तजतो नथी? आज कइ तिथि? क्या अरिहतनो कल्याणक दिवस ठे? आज मारुं शु कृत्य ठे? क्या देशमां तु? कया कालमां तुं? सवारमां उठी ए प्रमाणे स्मरण करवाथी जीव सावधान थइ जाय ठे जे विरुद्ध कृत्य होय तेनो परिहार करे ठे पोताना नियमनो निर्वाह, तथा नवीन गुणोनी प्राप्ति थाय ठे आज धर्म जागरणा आणद कामदेवादि श्रावकोए करीने प्रतिमादि विशेष धर्म करणी करेली ठे.

हवे जे श्रावक प्रतिक्रमण करनार होयते प्रतिक्रमण करे, अने जे प्रतिक्रमण न करे, तेपण रागादिमय कुस्वप्न, प्रद्वेषादिमय अनिष्ट फलना सूचक, तेउने दूर करवा वास्ते, तथा स्वप्नमा स्त्रीसग प्रसंगादिक करवानां खोटा स्वप्न आव्यां होय तो, एकसो आठ उच्छ्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे आ कथन व्यवहारनाष्यमा ठे वली विवेक विलासादि ग्रंथोमा एवु लख्यु ठे के, स्वप्न देख्या पठी, फरी सुवु नहि; तथा देखेलु स्वप्न दिवसे सद्गुरुनीपासे कहेवु जो मातु स्वप्न आव्यु होय तो फरी सुवु ठीक ठे मातु स्वप्न कोइने कहेवु नहि वली समधातुवाला, प्रशांतचित्तवाला, धर्मी, नीरोगी, जितेंद्रिय, आटवाउने जे शुनाशुन स्वप्न आवे ते सत्यज थाय ठे स्वप्न नवकारणथी आवे ठे तेनां नाम कहिये ठिये

१ अनुनव करेली वस्तुनु, २ सांनलेली वातनु, ३ देखेली बिनानु, ४ वात, पित्त अने कफना विकारथी, ५ चिंतित वस्तुनु, ६ सहज स्वनावथी, ७ देवताना उपदेशथी, ८ पुण्यना प्रनावथी, ९ पापना प्रनावथी, स्वप्न आवे ठे. तेमा प्रथमना ठ कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते निरर्थक ठे, अने पाठलना त्रण कारणोथी जो स्वप्न आवे तो ते सत्य थाय ठे

रात्रिना पहेला पहोरमां स्वप्न आवे तो एक वर्षमां फल आपे, बीजा प्रहरमां स्वप्न आवे तो ठ महिनामां फल आपे, त्रीजा प्रहरमां स्वप्न आवे तो त्रण महिनामां फल आपे, चोथा प्रहरमां स्वप्न आवे तो, एक मासमा फल आपे, सवारमा वे घडी रात्रिठतां स्वप्न आवे तो दश दिवसमा फल आपे, सूर्योदयमां स्वप्न आवे तो तत्काल फल आपे.

जे स्वप्नमा बहुज आल जंजाल देखवामां आवे, तथा जे रोगोदयथी, स्वप्न आवे अने जे मलमूत्रनी बाधा ठता स्वप्न आवे, ते त्रणे स्वप्न नि-

छे. जो पहेलां अशुभ स्वप्न आवे, अने पछी शुभ स्वप्न आवे, तो
त फल आपे, तथा जो पहेलां शुभस्वप्न आवे, अने पछी अशुभ स्व-
आवे तो, अशुभ फल आपे, जो माठु स्वप्न आवे तो शांति अर्थात्
पूजा, दानादि करवां स्वप्न चिंतामणि ग्रंथमां पण लख्युं छे के, अनि-
स्वप्न देखीने सुइ जवु, कोइने कहेवु नहि, तेम करे तो पछी ते स्वप्न
त आपतुं नथी सूता उठीने जिनेश्वर देवनी प्रतिमाने नमस्कार करीने,
नेश्वरनु ध्यान करे, स्तुति करे, स्मरण करे, पंचपरमेष्ठि मंत्र उचरे,
खोटुं स्वप्न लयथइ जाय छे. वली जे पुरुष देवगुरुनी पूजा करे छे, नि-
शक्ति अनुसार तप करे छे, अने निरंतर धर्मना रागी छे, तेउने माठुं
न पण सारुं फल आपे छे; तथा जे पुरुष देवगुरुनुं स्मरण करीने, तथा
त्रुंजय, समेतशिखरप्रमुख शुभ तीर्थोनां नाम, अने गौतमस्वामि, सु-
स्वामि, प्रमुख आचार्योनां नामस्मरण करीने सूवे, तेने कदापि मा-
स्वप्न आवतु नथी

थुंकवुं होय तो राखमां थुंकवु जोइए. शरीरने दृढ करवा वास्ते ह-
थी वज्रीकरण करे, अग्नितत्त्व, तथा वायुतत्त्व ज्यारे वहेतां होय,
रे कसरत करी कठसुधी दूध पीये, कोइ आचार्य कहे छे के आठ प-
ली पाणीनी पीवी, तेनु नाम वज्रीकरण छे. उठतांज माता पिता, पि-
मह, वडीलभाइ प्रमुखने नमस्कार करे, तो तीर्थयात्रा समान फल छे.
ी दररोज नमस्कार करवा जोइए जेउए वृद्धोनी सेवा करी नथी, ते-
धर्मनी प्राप्ति थती नथी जेउ शीलमां, संतोषमां, तथा ज्ञान ध्या-
दिमां मोटा होय तेउ वृद्ध कहेवाय छे तेउनी सेवा अवश्य करवी जो-
वली जेणें राजानी सेवा करीनथी, तथा जेणें पोताना शत्रुउने भात
र्या नथी, तेने धर्म, अर्थ अने सुख दूर छे

श्रावकें सवारमां उठी चौद नियम धारवा जोइए. तेनुं स्वरूप आग-
वतावेलुं छे. विवेकवान् पुरुष सम्यक्त्वपूर्वक बार व्रत विधिसहित
मुखथी धारण करे, कारण के विरतिपणुं अभ्यासथीज पली शके छे,
कारणथी धर्मनो अभ्यासपण करवो जोइए; अभ्यासविना क्रियापण
री रीतें बनी शकती नथी ध्यान मौनादि सर्व, अभ्यास करतां दुः-
ध्य नथी. जे जीव आ जन्ममां सारो अथवा बुरो जेवो अभ्यास करे

छे, तेज प्रायःनविष्यना जन्ममां पामे छे. वली पांचम, आठम, चौदश प्रमुख दिवसें तपादि नियम धर्मी पुरुषे जे जे अंगीकार करेलो होय, तेमां तिथ्यतरनी ज्रान्तिथी सचित्त जलादि, पान, तवोल, प्रमुख खावायोग्य, खाइ लीधु होय, पठी एम जाणवामां आवे के आजे अमुक तप करवानो दिवस छे, ठतां मारी नूल थइ गइ, एम याद आवतांज जो कांइ मुखमां होय तो, तेने राखादिमां फेकी दे, प्राशुक पाणीथी मुखशुद्धि करीने तप कर्युं होय तेवी रीते रहे तो नियमनंग थतो नथी, अने जो संपूर्ण नोजन कर्या पठी जाणवामां आवे के, आजे तपनो दिवस छे, तो आगले दिवसे दंडनिमित्तें ते तप करे समाप्त थया पठी तेना उपर पोरिसी एकाशनादि तप अधिक करे, अने जो तपनो दिवस जाणतां ठतां एक दाणोपण खाय तो व्रतनंग थइ जाय छे, अने व्रतनंग जाणीने करवु ते नरकादिनो हेतु छे वली जो तप कर्या पठी अत्यत मांदगी थइ जाय, अथवा नूतादि दोपथी परवश थइ जाय, वा सर्पादि करडे, इत्यादि असमाधिमा तप करवाने समर्थ न होय तोपण चार अगार उच्चारण करवाथी व्रतनंग थतु नथी; एम सर्वे नियमोमा जाणीलेवु. उक्तच ॥ वयनंगे गुरु दोसो, थोवस्सवि पालणा गुणकारि ॥ गुरुलाघवं च नेय, धम्म मिअ उ आगारा ॥ १ ॥ अर्थ.—व्रतनंग थवाथी महादूपण थाय छे, जो पालवामां आवे तो थोडु व्रत पण गुणकारी छे, ते कारणथी गुरुलघु जाणीने नगवानें धर्ममां आगार कहेला छे

वली नियम आ प्रमाणे ग्रहण करवां जोइए प्रथम तो मिथ्यात्व त्यागवा योग्य छे निरतर यथाशक्ति एक, वे, त्रण वार जिनदर्शन, सपूर्ण देववंदन, चैत्यवंदन करवा जोइए, तेवीज रीतें गुरुनो योग मले तो दीर्घ, लघुवंदना करवी जो गुरु हाजर न होय तो धर्माचार्यनुं नाम लइ वंदना करवी वली श्रावक वर्षाऋतुमां निरतर पांच पर्वना दिवसे अष्टप्रकारी पूजा करे, ज्यांसुधी जीवे त्यासुधी नवु अन्न, नवु फल, पक्वान्नादि देवने चडाव्याविना खाय नहि निरंतर नैवेद्य, सोपारी, वदामादि देवनी आगल चढावे. त्रण चोमासामा तथा सवत्सरी दिवाली प्रमुखमां चोखाना अष्टमंगल नरी ढोवे नित्य, वा पर्वना दिवसोए, वा वर्षमा खादिम सर्ववस्तु देव, गुरुने अर्पण करी नोजन करे. प्रतिमास, प्रतिवर्ष महाध्वजा प्रमुख

उत्सव करीने चडावे. स्नात्रमहोत्सव, अष्टोत्तरी पूजा, रात्रि जागरण करे. निरंतर चोमासा आदिमां केटलीएक वार जिनमंदिर, धर्मशाला प्रमार्जन करे, करावे, देरासर समरावे, पौषधशाला लिपे, लीपावे. प्रतिवर्षे जिनमंदिरमां अगलुहणां आपे, दीवानेवास्ते रु आपे, तेल आपे, घी आपे, केशर, सुखड आपे, पौषधशालामां कटासणा, मुहपत्ति, चरवला, धोतीआं, कांबल, दोरा, उन प्रमुख आपे. वर्षमां श्रावकोने वेसवावास्ते केटलीएक पाट, बाजोठ प्रमुख आपे. जो निर्धन होय तो पण वर्षमां एक दिवस सुतरना दोरा, वा आंटी प्रमुख आपी संघपूजा करे केटलाएक साधर्मी बंधुउने शक्ति अनुसार जोजन करावी साधर्मिवात्सल्य प्रमुख करे निरंतर केटलोएक काउसग्ग करे स्वाध्याय करे. निरंतर जघन्यथी नवकारसीनु प्रत्याख्यान करे. रात्रिए चरित्र प्रत्याख्यान करे. बंने वखत प्रतिक्रमण करे. आ करणी प्रथम करवा पठी बार व्रत अंगीकार करे तेमां पण सातमा व्रतमां सचित्त, अचित्त अने मिश्रवस्तुनुं स्वरूप सारी रीतें जाणवु जोइए

जेम प्रायः सर्वधान्य, अनाज, तेमज धाणा, जीरुं, अजमो, वरीआली, सुआ, राइ, खसखस प्रमुख सर्वकण, सर्वपत्र, सर्वे लीलांफल, तथा मीठुं खारो, लालरंगनुं सिंधालूण, संचल, माटी, खडी, हिरमची, लीलां दातण प्रमुख, सर्वव्यवहारथी सचित्त (सजीव) ठे; तथा पाणीमां पलालेला चणा, घउ प्रमुख अनाज, तथा चणा, मग, अडद, तूअर प्रमुखनी दाल जेमां आखा दाणा रहीगया होय, ते सर्वे मिश्र ठे, तथा प्रथम मीठुं लगाडीने अग्निनी वाप्प प्रमुख आप्या विना, तथा तपावेली रेतीमां नाख्याविना चणा, घउ, जुआर प्रमुख जूजे ते, तथा खारो प्रमुख आप्याविना मसलेला तल, उंला, उबी, पोंक, थोडी शेकेली फली तथा चिचडा प्रमुखफल, मरचां, राइ हींग प्रमुखथी वघारे; तथा जेनी अंदर बीज सचित्त होय एवां पाकेलां सर्वफल, मिश्रठे तथा तलवट, तिलकूट जे दिन करवामां आवे ते दिन मिश्रठे. जो तलमां अनाज प्रमुख नाखी कूटे तो एक मुहूर्त्त पठी अचित्त थायठे. वली दक्षिण मालवादि देशोमां बहु गोल प्रमुख नाखवाथी तेज रोज अचित्त थइ जायठे. वृक्षनो तत्काल उखडेलो गुदर, लाख, ठाल, तरतनुं फोडेलु नालीयेर, लींबु, दाडम,

संतरां, केरी, निंब तथा शेरडीनो तत्कालनो काढेलो रस, तथा तत्काल काढेलु तलनु तेल, तत्काल जांगेलां बीज, नालीयेर, सोपारी, सिंगोडां-प्रमुख, तथा बीजरहित करेलां पाकां फल खडबूजादि, तथा अत्यत मर्दन करीने कणकाढेला जीरादि, आ सर्वे अतर्मुहूर्त सुधी मिश्र ठे, पठी प्राशुकनो व्यवहार ठे तथा बीजांपण प्रबल अग्निना योगविना प्राशुक करेला अंतर्मुहूर्त सुधी मिश्रठे, पठी प्राशुकनो व्यवहार ठे वली अप्राशुक पाणी, काचां फल, काचां अनाज अगर जो बहुज मर्दन कर्यां होय तोपण लवण अग्नि प्रमुख प्रबल शस्त्र विना, प्राशुक थतां नथी, कारण के श्री पचमांग जगवतीसूत्रना उंगणीशमा शतकना त्रीजा उद्देशमां लख्यु ठे के वज्रमय शिला, वज्रमय लोटो, अने आमला प्रमाण पृथ्वीकाय लइने एकवीश वार वाटवामां आवे तोपण केटलाएक पृथ्वीकायना जीवोनो लोटाने स्पर्श पण थतो नथी, एवी ते जीवोनी सूक्ष्म कायाठे.

वली सो योजन उपरांतथी आवेलां हरडां, खारेक, डाक्ष, लालडाक्ष, खजुरादि मेवा, तीखां, पीपर, जायफल, बदाम, अखोड, नेउजा, जरगोजा, पस्तां, चारोली, चीनी, उज्ज्वल सिंधालूण, साजी, जठीमां पकावेलुं लूण, बनावटी खार, कुंजारे करेली माटी एलायची, लवींग, जावंत्री, सूकी मोथ, कोकणदेश प्रमुखनां केलां उना करेलां सिगोडां, सोपारी, आ सर्वेनो प्राशुक व्यवहार ठे साधु पण कारण प्रसंगे ग्रहण करे ठे आ वात कल्पजाष्यमां पण लखेली ठे "जोयण सय तु गतु अणाहारे जड सकंति" इत्यादि तेमां हरडे, पीपर प्रमुख आचरणीय ठे ते कारणथी लेवाय ठे, अने खजूर, डाक्ष प्रमुख अनाचरणीय ठे वली उत्पल कमल, पद्मकमल, तडकामां राखवाथी एक पहोरनी अंदरज अचित्त थइ जाय ठे, अने मोगरानां फुल, जुइनां फुल तडकामां बहुवखत पड्या रहे तो पण अचित्त थतां नथी, परतु मोगरानां फुल पाणीमां नाखेला एक पहोरनी अंदरज अचित्त थइ जाय ठे, अने उत्पल कमल तथा पद्मकमल बने पाणीमां राखवाथी बहु वखत सुधी अचित्त थतां नथी "शीतयोनिकत्वात्" तथा पादडाना, कूलोना, तेमज जे फलोमा गोठली बंधाइ न होय तेना, तथा बथुआ प्रमुख लीली वनस-

तिना, श्रा सर्वेना डीटीश्रां (वृंत) करमाइ जाय त्यारे ते जीवरहित थयां जाणवां श्रा कथन श्रीकल्पजाष्यवृत्तिमां ठे.

श्री पचमांगना ठठा शतकना पांचमा उद्देशामां सचित्त श्रचित्त वस्तुनुं स्वरूप श्रा प्रमाणे लखेलु ठे, शाल, व्रीहि, घउ, जव, जवजव, श्रा पांच धान्यनी जाति कोठारमां, मोटा पालामा वा माला याने कोठार विशेषमां मुख ढांकीने राखे तथा लीपे, चारे बाजुथी लींपे, श्रने उपर मजबुत ढाकणु राखी सील मारवाजेवु बंध करे तो केटलाककाल सुधी तेमां जीव योनि रहे ? श्रा प्रमाणे प्रश्नपुठवाथी जगवान् कहेठे के हे गौतम ! जघन्य तो श्रंतर्मुहूर्त्त रहे, श्रने उत्कृष्ट तो त्रण वर्ष रहे, पठी श्रचित्त थइ जाय तथा वटाणा, मसूर, तल, मग, श्रडद, वाल, कलथी, चोला, तुश्रर, चणा इत्यादि धान्य सर्व उपर प्रमाणे जाणवु, परंतु एटलु विशेष के, ते उत्कृष्टथी पाच वर्ष उपरांत श्रचित्त थइ जाय ठे. तथा श्रलसी, कसुवानी करड, कोडुं, कंगणी, वंटी, राल, कोडुसक, सण, सरसव, मूलीनां वीज इत्यादि धान्यपण उपर प्रमाणे जाणवां, परंतु उत्कृष्टथी सात वर्ष उपरात श्रचित्त थइ जाय ठे. तथा कपासनां डोडवां उत्कृष्टथी त्रण वर्ष उपरांत श्रचित्त थइ जाय ठे श्रापण कल्पजाष्यनी वृत्तिमां ठे तथा चाल्या विनानो श्राटो (लोट) श्रावण, जादरवा महिनामां पांच दिवस सुधी मिश्र रहेठे पठी श्रचित्त थाय ठे, श्रासो, कारतक मासमां चारदिनसुधी मिश्र रहेठे, पठी श्रचित थाय ठे; मागसर पोस मासमां त्रणदिन सुधी मिश्र रहे ठे, पठी श्रचित्त थाय ठे; माहा, फागणमासमां पांच पहोर मिश्र रहे ठे, तथा चैत्र, वैशाख मासमां चार पहोर मिश्र रहे ठे, तथा ज्येष्ठ, श्राषाढ मासमां त्रणपहोर मिश्र रहे ठे, उपरांत श्रचित्त थइ जाय ठे. जो तत्काल चाली क्षे तो श्रंतर्मुहूर्तसुधी मिश्र रहे, पठी श्रचित्त थाय ठे.

प्रश्न – पीसेलो श्राटो केटला दिवसनो श्रचित्त जोगीने तथा श्रावकने खावो योग्य ठे ?

उत्तर.– सिद्धांतमा श्राटानी मर्यादानो नियम श्रमारा वाचवामां श्राव्यो नथी, परंतु बुद्धिमान् नवु जुनुं श्रनाज, सरस नीरस क्षेत्र, वर्षा, शीत, उष्णादि ऋतु, तेमां पण ते श्राटानो पंदर दिवस के मासादि का-

लमां, वर्ण, गध, रस, स्पर्शादि वगडेल देखे, तेमज तेमां सुरसली प्रमुख जीव पडेला देखे तो ते न खाय, जो खायतो जीवहिंसा थाय अने रोगोत्पत्तिनु कारण थाय.

मिगाइनी मर्यादा अने वीदलनो निषेध, उपर सातमा व्रतमां लखी आव्या छीए, त्यांथी जाणवु दहींमां सोल पहोर उपरांत जीव उत्पन्न थाय छे, वली विवेकी जीवोयें रींगणां, टींवरु, जांबु, विलां, पीलु, करमदां, पाकां गुदां, पंचु, महुडां, मोर, वालोल, मोटां वोर, चणीआंवोर काचा कोठ फल, खस खस, तल इत्यादि न खावा जोइए तेमां त्रसजीव थाय छे तथा जे फल लालरंग देखवामां बूरा लागे, पाकीगयेलां तथा गोल, एवा ककोडां, फणस प्रमुखपण बूरी जावनाना हेतु होवाथी न खावां जोइए वली जे फल जे देशमां खावां विरुद्ध लागे, जेमके कडवु तुवडु, कूष्मांड अर्थात् कोहोलु इलवुं (कडु) ते पण न खावां जोइए वली अजक्ष्य, अनंतकाय, कदमूल, पछी ते परघरनां अचित्त करेलां, राघेलां होय तोपण न खावां जोइए, कारण के एक तो निःशूकता अने वीजा रसलंपटता तथा वृद्ध्यादि दोषनो प्रसंग थाय छे ते कारणथी न खावां जोइए तथा उकालेलां सेलरा, रांधेलां आर्द्रादिकंद, सूरण, रींगणाप्रमुख अगर जो के अचित्त छे तोपण श्रावक प्रसंगदूषण त्यागवा वास्ते न खाय वली मूला तो पचाग खावा योग्य नथी निषिद्धत्वात् तथा शूठ अने हलदर, नाम तेमज स्वाद जेद थवाथी अजक्ष्य नथी तथा उकालेलुं पाणी त्रण उजरा आवे त्यारे अचित्त थइ जाय छे आ कथन पिंडनिर्युक्तिमा छे चोखाना धोणनु पाणी ज्यारे नितरीने निर्मल थइजाय त्यारे अचित्त थाय छे वली उष्ण जलनी मर्यादा प्रवचनसारोद्धारादि ग्रंथोमां आ प्रमाणे लखी छे त्रण वखत उजरा आवेलु उष्णजल उनालाना चारे मासमा पांच पहोर अचित्त रहेछे आ चूलेथी उतार्या पछीनी मर्यादा छे तथा वर्षाऋतुना चारे मासमां त्रण पहोर अचित्त, अने शियालाना चारे मासमा चार पहोर अचित्त रहे छे, पछी सचित्त थइ जाय छे जो ग्लान, वाल, वृद्धादि साधु वास्ते मर्यादा उपरांत राखवु होय तो क्षारादि वस्तुनो प्रक्षेप करीने राखवु, तेम करवाथी सचित्त थतु नथी आ कथन प्रवचन सारोद्धारना

१३६ मा द्वारमां छे. तथा कांगडु मग, मठ अने हरडादिनां बीज (गोठली) अगरजो के अचित्त छे, तोपण योनि राखवा वास्ते, तथा नि.शूकतादि परिहार वास्ते दांतथी तोडवा न जोइए. इत्यादि सचित्त वस्तुनुं स्वरूप जाणीने सातमुं व्रत अंगीकार करवु जोइए

श्रावकें प्रथम तो निरवद्य (दोष रहित) आहार करवो जोइए, तेम न करी शके तो सर्व सचित्त वस्तु खावानो त्याग करवो जोइए, तेम पण न करी शके तो बावीश अभक्ष्य अने बत्रीश अनंतकाय तो अवश्य त्यागवा जोइए. वली चौद नियम धारवा जोइए सूइ उठीने यथाशक्ति नियम ग्रहण करवु, पछी यथाशक्ति प्रत्याख्यान करवु नमस्कार सहित पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान, जो सूर्य उदय पहेलां उच्चरवामां आवे तो शुद्ध छे, अन्यथा शुद्ध नथी शेष प्रत्याख्यान सूर्योदय पछी पण थइ शके छे. नवकारशी जो सूर्योदय पहेला उचरवामा आवी होय तो तेनी पछीना पोरसी तेमज साढ पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यानो थइ शके छे. जे नमस्कारसहित सूर्योदयनी पहेलां उच्चारण न करीए तो कोइपण काल प्रत्याख्यान करवु शुद्ध नथी, अने जो प्रथम नमस्कारादि प्रत्याख्यान मुष्टि सहितादि करे तो सर्वकाल प्रत्याख्यान करवामां अवे ते शुद्धज थाय छे

रात्रिए चौविहार करे अने दिवसें एकासणुं करे, पछी ग्रंथिसहित प्रत्याख्यान करे तो तेने दरेकमासमां ओगणत्रीश उपवासनुं फल मले छे दररोज बे वखत भोजन, उपर कहेली रीति प्रमाणे करे तो तेने अठावीश उपवासनु फल मले छे; कारण के भोजन करता बे घडी काल लागे.छे, बाकीनो काल तपमां व्यतीत थाय छे आ कथन पद्मचरित्रमां छे प्रत्याख्यान उपयोगपूर्वक पुरुं थइजाय तो पारे

हवे चारप्रकारना आहारना विभाग कहीयें छीयें अनाज, पक्वान्न, रोटला प्रमुख; जेनाथी क्षुधानो नाशथइ शके, ते प्रथम अशन नामनो आहार छे छाशनुं पाणी तथा उष्णजल प्रमुख आ बीजो पाननामा आहार छे. फल, फूल, शेलडीरस, सुखडीप्रमुख, आ त्रीजो खादिमनामा आहार छे, अने सूठ, हरडे, पिपलीमूल, तीखां, जीरुं, अजमो, जायफल, जावंत्री, अशेलीउं, खेरवडी, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलायची, कोठ,

विडग, विडलवण, अजमोद, कुलिजण, पीपर, चीणकवाव, कचूर, मुस्ता, कटासेलीउं, कपूर, संचल, हरडां, वहेडां, कुठननं, ववुल, धव, खदिर, पान, सोपारी, हिंग, हिंगुलाष्टक, त्रेवीसउं, पचकुल, पुष्करमूल, जवासा मूल, वावची, तुलसी, आ सर्व खादिम नामा चोथा आहारमां ठे प्रवचन सारोद्धारादि ग्रथो तेमज जाष्यमां आ विचार वतावेल ठे कल्पवृत्तिमां तेने खादिम कहे ठे कोइ अजमाने पण खादिम कहे ठे आ मतांतर ठे आ सर्वस्वादिमनामा आहार ठे वली एलायची तथा कपुरप्रमुखथी वासित करेलु जल डुविहार प्रत्याख्यानमां पीवु कल्पे ठे तथा वेशण, वरीआली, सोय, कोठवडी, आमलागांठ, आंवानी गोठली, लीवुनां पान प्रमुख खादिम होवाथी डुविहार प्रत्याख्यानमां लेवां कल्पतां नथी त्रिविहार प्रत्याख्यानमां मात्र जल पीवु कल्पे ठे तेमां पण फुकारेलु पाणी, तथा साकर, कपुर, एलची, कचा, खेर, चूर्णक, सेलक, पाडलादिवासित जल, जो नितारीने तेमज गलीने वापरे तो कल्पे, अन्यथा नही

शास्त्रोमां मघ, गोल, साकर, खांडप्रमुख स्वादिममां गणेला ठे, अने डाक्ष, शर्करादि जल, तक्र प्रमुखने पानमां गणेलां ठे, तो पण ते डुविहार प्रत्याख्यानमां कल्पता नथी उक्त च ॥ नागपुरीयगच्छना करेला प्रत्याख्यानजाष्यमां कह्यु ठे के ॥ दखा पाणाइय, पाणं तह साइमं गुडाईय ॥ पढिय सुयमि तहविहु, तित्तीजणगति नायरिअं ॥ १ ॥ स्त्रीनी साथे जोग करवाथी चौविहारनो जग थतो नथी, परतु वालकना तथा स्त्रीना होठ मुखमां लइ चुंवन करवामां आवे तो जग थाय वली डुविहार प्रत्याख्यानमां तेम पण करे तो जग थतो नथी प्रत्याख्यान मात्र आहारनुंज कराय ठे, परतु रोम आहारनु करवामां आवतु नथी, तेथी लेपादि करवाथी प्रत्याख्यानमां जग थतो नथी

वली नीचेनी वस्तुउं कोइपण प्रकारना आहारमां गणाती नथी तेनां नाम पचाग लींवडो, गोमूत्र, गली, कडु, करीआतु, अतिविष, कडानी ठाल, चीड, चदन, डाख, हरिद्रा, रोहणी, उपलोट, वज, त्रिफला, वावलनी ठाल, धमासो, नहि, आसध, रींगणी, एलियो, गुगल, हरडा दल, कपासनी जड, जाल, वेरी, कथेर, करीर, तेनी जड, पुआड, वोह-

थोरी, आठी मजीठ, बोल, बीजकाष्ट, कुंआर, चित्रक, कुंदरु प्रमुख जे जे वस्तुउं खावामां अनिष्ट लागे ते सर्व अणाहारिक छे आ अणाहारी वस्तु रोगादि कष्टमां चोविहार प्रत्याख्यानमां पण खावामां आवे तो नंग थतो नथी आ प्रमाणे आहारना नेद जाणीने प्रत्याख्यान करे

पछी दिशाए जवुं, दांतण करवु, जल उतारवी, कोगला करवा, आ सर्व देशस्नान करी पवित्र थवु जोइए आ कथन अनुवादरूप छे, कारण के पूर्वोक्त सर्वकामो सवारमां उठी प्रायः सर्व गृहस्थ करे छे, तेमां शास्त्रोपदेशनी अपेक्षा नथी, कारण के व्यवहारथी स्वतः सिद्ध छे, परंतु तेनो विधि शास्त्रमां कहेलो छे प्रथम मलोत्सर्ग (दिशाए जवा) नो विधि आ प्रमाणे छे. ॥ यदुक्तं विवेकविलासग्रंथे ॥ मूत्रोत्सर्गं, मलोत्सर्गं मैथुनं स्नानजोजनं ॥ सध्यादिकर्म पूजा च, कुर्याज्जप च मौनवान् ॥ १ ॥ अर्थः–मुतरवु, दिशाए जवु, मैथुन करवु, स्नान, जोजन, संध्यादि कर्म, पूजा, जाप, आ सर्व मौनपणें करवां, तथा बने संध्या वस्त्र पेहेरीने करे दिवसे उत्तर सन्मुख मुख राखी लघुशंका करे. वली सर्व नक्षत्रोनुं तेज सूर्यथी अवराइ जाय, अने सूर्यनुं मंडल अर्धवहार आवे त्यांसुधी सवारनी संध्या करे, तथा सूर्य अर्ध अस्त थाय, पछी बे त्रण नक्षत्रो ज्यां सूधी नजरे न पडे, त्यांसुधी सायंकाल कहेवाय छे वली राखना ढगला उपर, छाणना ढगला उपर, गायोने बेसवाना स्थानमां, सर्पनी ववी उपर, ज्यां बहुलोक पुरीषोत्सर्ग करता होय त्यां, उत्तम वृक्षनी नीचे, रस्ता उपरना वृक्षनी हेठल, रस्तामां सूर्य सन्मुख, पाणीनी जगामां, स्मशानमां, नदीना कांठा उपर, जे जगाने स्त्रीउं पूजती होय ते जगाउपर, इत्यादि स्थानोमां मलोत्सर्ग न करे परंतु ज्यां बेसवाथी कोइ गाल दीए नहि, मारे कुटे नही, पकडी लइ जाय नहि तेवा स्थानमां तेमज ज्यां बेसवाथी पडी जवाय नही, ज्यां जमीनमां पोलाण होय नही, मछर डांसादि त्रसजीव तथा बीजप्रमुख होय नही, एवा उचित स्थानमां मलोत्सर्ग करे वली गामनी तथा कोइना घरनी समीप मलोत्सर्ग न करे जे तरफथी पवन आवतो होय, तथा गामनी पूर्व दिशि तरफ पूंठ करीने मलोत्सर्ग न करे. तथा मूत्रनो वेग रोकवो नही. मूत्रनो वेग रोकवाथी नेत्रमां हानि थाय छे, अने दिशानो

वेग रोकवाथी मृत्यु थइ जाय छे वली वमन रोकवाथी कुष्ट रोग थइ जाय छे कदापि आ त्रणे वात नहीं थाय तो रोग तो अवश्य थशे श्लेष्म करवामां आवे त्यारे तेना उपर धूड नाखी देवी, कारण के श्री प्रज्ञापना उपांगना प्रथम पदमां लख्यु छे के चौदस्थानमा समूर्छिम जीव उत्पन्न थाय छे ते चौदस्थानना नाम १ पुरीष (विष्टा) मां, २ मूत्रमां, ३ मुखना थुकमां, ४ नाकना मेलमां, ५ वमनमां, ६ पित्तमां, ७ वीर्यमां, ८ वीर्य रुधिरना संगममां, ९ राध (परु) मां, १० वीर्यना पुद्गल अलग निकली पडे तेमा, ११ जीवरहित कलेवरमां, १२ स्त्री पुरुषना संयोगमा, १३ नगरनी मोरीमां, १४ सर्व अशुचिस्थानमां, जेमके कानना मेलमां, आंखना चीपडामां, वगलना मेलमां, इत्यादि आ सर्वे चौद बोल मनुष्यना संसर्गवाला ग्रहण करवा अने ज्यारे शरीरथी अलग मेल थाय छे, त्यारे जीव उत्पन्न थाय छे.

वली दांतण पण निरवद्य स्थानमां करे दातण अचित्त जाणेला तृणनु कोमल करे, दातोने दृढ करवा वास्ते तर्जनी आंगलीथी दांतोनी वीड घसे, जे दांतनो मेल पडे, तेना उपर धूड नाखी दे. दातण पण केवीरीते करे ? दातण सीधु, गांठ विनानु, जेनो कुचो सारो थाय तेवु, आगल जता पातलु, नानी आंगली समान जाडु, सारीभूमिमां उत्पन्न थयेलु, एवु लइ तेने कनिष्ठा अने अनामिका आंगली वचे पकडी, प्रथम जमणी दाढा घसे, पछी डावी दाढा घसे, स्वस्थ थइ उपयोगथी दातने अने पेढाने पीडा न थाय तेम घसे उत्तर तथा पूर्वसन्मुख निश्चलासन थी वेसी मौनयुक्त दातण करे दुर्गंधी, सुकी, पोली, खाटी, खारी वस्तु दांतने न घसे वली व्यतीपात, रविवार, सङ्क्रांतिदिन, ग्रहण लागवाने दिन, नवमी, अष्टमी, पडवो, चौदश, पूर्णमासी, अमावास्या, आ दिनो मा दातण न करे. जो दातण न मले तो मुख शुद्धिने वास्ते वार कोगला करे, अने उलतो हमेशा उतारे दातणनी फाडथी जीभनो मेल हलवे हलवे सघलो उतारीने शुद्ध स्थानमा दातण धोइने पोताना मुखसन्मुख नाखे वली खासीवाला, श्वासवाला, तपवालां, अजीर्णवाला, शोकवाला, तृषावाला, मुख पाकेला, मस्तक, कान, नेत्र, हृदयना रोगवाला, दातण न करे

मस्तकना केशने निरंतर समारे, जेथी माथामां जू न पडे पठी तिलक करे तिलक करती वखते आरीसामां पोतानु मुख न देखे तेमज मस्तक न देखे तो पांच दिवसनी अंदर पोतानु मरण जाणवुं जेणें उपवास पोरसी प्रमुख प्रत्याख्यान कर्यु होय ते दांत धोया विना शुद्ध ठे, कारण के तपनु फल बहुज उत्तम ठे लौकिक शास्त्रोमां पण उपवासादि करे तो दातण विनाज देवपूजा करे एवो पाठ ठे, ते कारणथी उपवासादिमां दातण करवानो लौकिकशास्त्रोमां निषेध ठे यडुक्त विष्णुनक्तिचंद्रोदय ग्रंथे ॥ प्रतिपद्दर्शषष्ठीषु, मध्यांते नवमीतिथौ ॥ संक्रांतिदिवसे प्राप्ते, न कुर्यात् दंतधावनं ॥१॥ उपवासे तथा श्राद्धे, न कुर्यात् दंतधावनं ॥ दंतानां काष्ठसंयोगो, हंति सप्त कुलानि वै ॥ २ ॥ इत्यादि

ज्यारे स्नान करे त्यारे पनक कुंथुआदि जीवोथी रहित नूमिमां स्नान करे. नूमि उची, नीची तथा पोली न होय त्यां स्नान करे उष्ण प्राशुक जलथी स्नान करे, जो उष्ण जल न मले, तो वस्त्रथी गली प्रमाण संयुक्त शीतल जलथी स्नान करे व्यवहारशास्त्रोमां लख्युं ठे के, नग्न थइने, रोगठतां, परदेशथी आवीने, नोजन कर्या पठी, आनूपण पेहेरीने, कोइने विदाय करीने, मांगलिक कार्य कर्या पठी स्नान न करे, तथा अजाण्या पाणीमां, डुष्प्रवेशजलमां, मेलाजलमां, वृक्षोथी आठादित थयेला, शेवालथी आछादित जलमां स्नान न करे वली शीतजलथी स्नान करी उष्णनोजन न करवु जोइए. अने उष्ण जलथी स्नान करी शीत नोजन न करवु जोइये. तेलमर्दन निरंतर करवु जोइए स्नान कर्या पठी जेनी कांति फीकी देखाय, तथा जेना दांत परस्पर घसाय, अने जेना शरीरमां मडदा जेवी गंध आवे, तेनु मरण त्रणदिवसअंदर समजवु; तथा स्नान कर्यापठी जेना हृदयमां तथा बने पगोमा तत्काल पाणी शोषाइ जाय, तो तेनु ठ दिवसमां मरण समजवु मैथुनसेवीने तथा वमनकर्या पठी थोडीवार पठी स्नान करवु मृतकनी चितानो धुमाडो लाग्यो होय तथा मस्तक मुडाव्यु होय तो गलेला शुद्ध जलथी स्नान करवु. तेलमर्दनकरी स्नान कर्या पठी उज्वल वस्त्र, आनरण, पहेरवां. प्रयाणकरवाना दिवसे, संग्राममा जतां, विद्यामंत्र साधता, रातना, सांजे, पर्वदिवसे, नवमेदिवसे, स्नान न करे तथा मस्तक पण न मुडावे, तथा

पक्षमां एकवार दाढीमस्तकना केश तथा नख दूर करावे, पोताने हाथे तथा दांते नख न उतारे स्नान करवाथी शरीर पवित्र चैतन्य सुखकर, जावशुद्धिनो हेतु थाय ठे ॥ उक्तं च द्वितीये अष्टकप्रकरणे ॥ जलेन देहदेशस्य, क्षण यत् शुद्धिकारण ॥ प्रायोन्यानुपरोधेन, द्रव्यस्नानं तदुच्यते ॥ १ ॥ अर्थ.— जलथी शरीरनी त्वचामात्रनीज क्षणमात्र शुद्धि ठे परंतु दीर्घकाल नहीं शुद्धि जे थाय ठे ते पण प्राय' ठे एकांत नथी, कारण के अतिसारादि रोगवालाने क्षण मात्र पण शुद्धि थती नथी धोवा योग्य मेलथी वीजा नासिकादि अतर्गत मेल जे ठे ते स्नानथी दूर थता नथी, अथवा पाणीविना वीजा जीवोनी हिंसा न करवाथी जे स्नान ठे ते बाह्य स्नान ठे जे पुरुष स्नान करी जगवाननी तेमज साधुनी पूजा करे, तेनुं स्नान पण सारुं ठे, कारण के ते स्नान जावशुद्धिनुं निमित्त ठे स्नान करवामां अप्कायना जीवोनी विराधना ठे, तो पण सम्यक् दर्शननी शुद्धि रूप गुण ठे ॥ यदुक्त ॥ पूजाए कायवहो, पडिकुठो सोउ किंतु जिण पूआ ॥ सम्मत्त शुद्धि हेउ, त्ति जावणीयाउ निरवज्जा ॥१॥ अर्थ.—कोइ कहे ठे के पूजा करवाथी जीववध थायठे अने जीववध तो शास्त्रमां निषेध करेल ठे, ते कारणथी पूजा न करवी जोइए, तेनो उत्तर एवो ठे के, जिनराजनी पूजा, सम्यक्त्वनी निर्मलता करनारी ठे, ते कारणथी जिनपूजा निरवद्य ठे ए प्रमाणे देवपूजा वास्ते गृहस्थने स्नान करवा कह्युं ठे, तथा शरीरना चैतन्य सुखवास्ते पण स्नान ठे, परतु स्नान करवाथी पुण्य थाय ठे एम मानवु ते मिथ्या ठे, कारण के जे कोइ तीर्थमा जइ जाणीने स्नान करे ठे तेने पण शरीर शुद्धि शिवाय वीजु काइ पण फल थतु नथी आ वात अन्यदर्शनना शास्त्रोमां पण कथन करेली ठे उक्त च ॥ स्कदपुराणे काशीखडे षष्ठाध्याये ॥ श्लोक ॥ मृदो जारसहस्रेण, जलकुंजशतेन च ॥ न शुद्ध्यते डुराचारा, स्नानतीर्थशतैरपि ॥१॥ जायन्ते च म्रियते च, जलेष्वेव जलौकस ॥ न च गच्छन्ति ते स्वर्ग, मविशुद्धमनोमला ॥ २ ॥ चित्त समाधिजि· शुद्ध, वदन सत्य जाषणै ॥ ब्रह्मचर्यादिजि काय·, शुद्धोगगा विनाप्यसौ ॥ ३ ॥ चित्त रागादिजि क्लिष्ट, मलीकवचनैर्मुख ॥ जीवहिंसादिजि कायो, गगा तस्य पराङ्मुखी ॥ ३ ॥ परदारा परद्रव्य, परद्रोहपराङ्मुख ॥ गंगाप्या-

इ कदागत्य, मामय पावयिष्यति ॥ ५ ॥ जलथी स्नान करवाथी असंख्यजीवोनी विराधना थाय ठे, ते कारणथी पुण्य नथी जलमां जीवना अस्तित्वपणा माटे मीमांसाशास्त्रमां पण सिद्धि ठे ॥ यडुक्तं ॥ उत्तरमीमांसायां ॥ लूतास्यतंतुगलिते, ये क्षुद्रा' सन्ति जंतवः ॥ सूक्ष्मा भ्रममाणास्ते, नैवयान्ति त्रिविष्टपं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥

स्नान कर्यापठी गुंमडां होय अने राधादि स्रवे तो स्नानकरनारें अगपूजा करवी नहि, वीजापासे कराववी, अने अग्रपूजा तथा नावपूजा पोते पण करे तो कांइ दोष नथी. थोडीपण अपवित्रता होय तो देव स्पर्श न करे स्नान कर्यापठी पवित्र, मृडु, गंध, कापायिकादिवस्त्र पोतीआं ठोडीने पहेरे पाणीथी नीजेला पगोथी धरतीने नही स्पर्श करतां, पवित्र स्थानमां जइ उत्तर सन्मुख मुखकरी, सारां, मनोहर, नवां वस्त्र, फाट्याविनानां, शिवायाविनानां, वर्णमां धोलां, एवां वस्त्र पहेरे. जे वस्त्र केडमां पहेरेलु होय, तथा जे वस्त्र पहेरी दिशायें गया होय, तथा जे वस्त्र पहेरी मैथुनसेवन करेल होय, ते वस्त्र पहेरी पूजादि न करे; वली एक वस्त्र पहेरी नोजन तथा देवपूजादि न करे स्त्री कांचली पहेर्याविना देवपूजा न करे ए प्रमाणे पुरुषने वे वस्त्र तथा स्त्रीने त्रण वस्त्र पहेर्या विना पूजा करवी कल्पती नथी देवपूजामां धोतीयुं अत्यंत निर्मल धोलुं करवु जोइए, निशीथचूर्णी तथा श्राद्धदिनकृत्य प्रमुख ग्रंथोमा ए प्रमाणेज लख्यु ठे तथा पूजा पोडशमां लख्यु ठे के, रेशमि आदि जे सुंदर वस्त्र, लाल, पीलां होय ते पण पूजामां पहेरे तो ठीक ठे तथा " एक साडिय उत्तरासंग करेइ " इत्यादि आगम प्रमाणथी उत्तरासंग अखंडवस्त्रनु करे वे कटके शीवेलुं वस्त्र पूजामां न कल्पे. वली रेशमी वस्त्र पहेरी नोजन करे, पठी मनमां विचारे के आ तो सदा पवित्र ठे, एवा रेशमि वस्त्रथी जिनपूजा न करे तथा जे वस्त्र पहेरी पूजा करे, ते वस्त्रने पण पहेरवाने अनुसारे वारंवार धोवरावे धूपदइ पवित्र करे. धोतीयु थोडावखतज पहेरवु जोइए, ते धोतीयाथी परसेवो के श्लेष्म दूर न करवां जोइये कारण के तेम करवाथी अपवित्रता थाय ठे, वली पहेरेलावस्त्रोनी साथे पूजानां वस्त्रो अडाडवां न जोइए. वीजानां पेहेरेलां धोतीयां पहेरवां न जोइयें. वली वाल, वृद्ध, स्त्रीना पहेरवामां

आव्यां होय ते वस्त्र तो विशेषे करी न पहेरवां जोइए. वली सारा स्थानथी उत्तम तथा कुशलमाणस पासे, पवित्र वासणथी आछादनसयुक्त, रस्तामां लाववाना विधिसहित, पाणी तथा पुष्प पूजा वास्ते मगाववा जोइए पुष्प लावनारने सारी रीतें किमत आपी प्रसन्न करवो जोइये पठी मुखकोश बाधी, पवित्रस्थानमां, जेमां कोइ जीव न पड्या होय एवा शोधेला केशर, कर्पूरादिथी मिश्रचदन घसे, शोधेलो सुदर धूप, दीप, अखड चोखा, अस्पर्श्या प्रशंसा करवा योग्य नैवेद्य, फलादि सामग्री मेलवे. आ प्रमाणे द्रव्यथी पवित्र थई, तथा भावथी पवित्रता, राग द्वेष, कषाय, ईर्ष्या रहित थइ, तथा इहलोक, परलोकना सुखोनी इछा रहित थई, अने कुतूहल, चपलतादि त्यागकरी, एकाग्र चित्ततारूप भाव शुद्धि करे ॥ उक्तच ॥ मनोवाक्कायवस्त्रोर्वी, पूजोपकरणस्थिते. ॥ शुद्धि. सप्तविधा कार्या, श्रीअर्हत् पूजनक्षणे ॥ १ ॥

ए प्रमाणे द्रव्यभावथी शुद्ध थई जिनमंदिरमा दक्षिणदिशाए पुरुष अने वामदिशाए स्त्री, यत्नपूर्वक प्रवेश करे प्रवेशना अवसरमा दक्षिण पग प्रथम धरे, पठी सुगधभाला, मीठां सरसद्रव्योथी, पराङ्मुख वामस्वर चालता, मौनपणे देवपूजा करे वली त्रण नैषेधिकी करण त्रण प्रदक्षिणा विधिथी पवित्र पाटउपर पद्मासनादि सुखासनपर बेसी, चदनना भाममांथी चदन बीजी कटोरीमां तथा हथेलीमां लई मस्तकमा तिलक करे तथा हस्तककण श्री चदनचर्चित, धूपित हस्तथी जिन अर्हतने पूजी, १ अग पूजा, २ अग्रपूजा, ३ भावपूजा, जेनु स्वरूप आगल कथन करवामा आवशे, ते प्रमाणे पूजी, प्रत्याख्यान जे पूर्वे कर्युं हतु, ते यथाशक्ति देवनी साक्षीए उच्चारे, त्यार पठी विधिथी मोटा पचायती देरासरमां जई पूजा करे, ते आ प्रमाणे विधि सहित करे

जो राजा प्रमुख महाऋद्धिवाला पूजा करवा जाय तो सर्वऋद्धि, सर्व शोभा, सर्वयुक्ति, सर्वसेना प्रमुख मेलवी अतिउद्यमसहित जिनमतनी प्रभावना वास्ते महाआडबरपूर्वक जिनमदिरमां पूजा करवा वास्ते जाय जेम दशार्णभद्र राजा श्रीमहावीर भगवंतने वादवावास्ते सर्व सामग्री मेलवी गया हता तेम जाय

वली जे सामान्यऋद्धिवाला होय ते अभिमानरहित लोकापहास्य-

तजीने यथायोग्य आडंबर सहित मित्र, न्नाइ, पुत्रादि सहित परिवार मेलवी जाय. जिनमंदिरमां प्रवेश करतां पहेलां १ पुष्प तंबोल प्रमुख सरसडुर्वादि त्यागे, २ ठरी, पावडी, मुगट, हाथी प्रमुख सचित्त अचित्त वस्तु शरीरना न्नोगने त्यागे, ३ मुगट शिवाय बाकीनां आन्नरण प्रमुख अचित्त वस्तु न त्यागे, एकवडा वस्त्रनुं उत्तरासंग करे, ४ जिनेश्वर न्नगवाननी मूर्त्ति देखी अजली वद्ध थइ मस्तक उपर लगावी ॥ नमो जिणाणं ॥ एवो पाठ कहे, ५ मन एकाग्र करे, ए प्रमाणे पांच अन्निगम साचवी नैषेधिकीपूर्वक प्रवेश करे.

जो राजा जिनमंदिरमां प्रवेश करे तो तत्काल राज्यचिह्न दूर करे. १ तलवार, २ ठत्र, ३ खारी, ४ मुगट, ५ चामर आ पांचे राज्यचिह्न त्यागे. अग्रद्वारमां प्रवेश करतां घरव्यापारनो निषेध करवावास्ते त्रण नैषेधिकी करे, परंतु त्रणे निस्सीहिनी एक निस्सीहि गणवामां आवे, कारण के प्रथमनी निस्सीहिथी मात्र घर व्यापारनो निषेध करवामां आवे ठे, त्यारपठी मूलबिंबने नमस्कार करीने कल्याणनी इछावाला पुरुषे सर्व कृत्य दक्षिण बाजुयें करवां ते कारणथी मूलबिंबनी दक्षिण बाजुएथी चालतां, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, आ त्रणेनी आराधना निमित्ते त्रण प्रदक्षिणा आपे प्रदक्षिणा देतां थकां समवसरणस्थ चाररूपसंयुक्त जिनेश्वर न्नगवानने ध्यावे, गन्नारामां पेसतां वाम दक्षिणदिशाये जे बिंब होय तेने नमस्कार करे ते कारणथी सर्वमंदिरमां चार तरफना समवसरणने आकारें त्रण तरफ त्रणबिंब स्थापन करवामां आवे ठे, एम करवाथी अरिहंतनी पाठल बेसवानो जे दोष होय ते दूर थइ जाय ठे, पीठ कोइ पण पासे रहेती नथी त्यारपठी चैत्यप्रमार्जन प्रमुख जे आगल लखवामां आवशे ते करे, पठी सर्व प्रकारनी पूजा सामग्री वास्ते, तथा देहरा समारवाना कामने निषेध करवावास्ते बीजी निस्सीहि मुख्यमंडपादिमां करे, पठी मूलबिंबने त्रण प्रणाम करी पूजा करे न्नाष्यकारें पण कह्युं ठे के त्रणनिस्सीहि करी, प्रवेश करी, मंडपमां जिनेश्वर न्नगवानने न्नूमिउपर सिंहासनमां स्थापन करी, हस्तजोडी, विधिथी त्रण वार प्रणाम करे, त्यारपठी हर्षथी उल्लसित थइ मुखकोश बांधी जिनप्रतिमा उपरनां निर्माल्य फुल प्रमुख मोरपीठीथी दूर करे जिनमंदिरनुं प्रमार्जनपण पोते

करे वा, बीजा पासे करावे पठी जिनबिंबनी पूजा विधिपूर्वक करे मुख कोश आठ पडनु करे, जेथी मुख तथा नासिकानो श्वास रुंधाय वर्षाऋतुमा निर्माल्यमा कुंथुआदि जीवपण उत्पन्न थाय ठे, तेथी निर्माल्य अने स्नात्रजल जुदांजुदां पवित्र स्थानमा नाखे तेथी आशातनापण दूर थाय ठे कलशधारण करी जल पूजा करती वखते आ प्रमाणे जावना जावे

हे स्वामिन् ! बालपणामां मेरुशिखरपर सुवर्णकलशे करी इन्द्रप्रमुख देवताउये आपने स्नान कराव्यु हतु, तेउने धन्य ठे, जेउये आपनां दर्शन कर्यां हतां इत्यादि जावना जावी यत्नपूर्वक वालाकुंचिथी जिनबिंब उपरथी चदनादि उतारे, पठी जलथी प्रक्षालन करीने बे अंगलूहणाथी जिनप्रतिमाने निर्जल करे पठी पग, जानु, कर, मस्तकें पूजा अनुक्रमे नवअंगमां चदनादिथी करे कोइ आचार्य कहे ठे के प्रथम मस्तकमा तिलक करी पठी नवअंगे पूजा करे श्रीजिनप्रजसूरिकृतपूजाविधि ग्रंथमां लख्यु ठे के, सरस, सुरजि चदनथी देवनी, दक्षिणजानु, दक्षिण स्कंध, ललाट, वामस्कध, वामजानु, आ क्रमे पूजा करे, हृदयप्रमुखमां पण पूजा करे तो नवअंगनी पूजा थाय ठे नवअंगमां पूजा करी, पांचे वर्णना सुगधमय अखंड पुष्पो, चदनसुगधथी वासित करी, प्रजुपर चढावे प्रथम कोइये मोटा मडाणथी पूजा करी होय अने पोतानी पासे पूजानी तेवी सामग्री न होय तो प्रथमनी पूजा उतारे नहीं, कारण के विशिष्ट पूजा देखवाथी जव्य जीवोने जे पुण्यानुबंधि पुण्य थतुं, तेनो अंतराय थइ जाय ठे, ते कारणथी प्रथमनी पूजाने विशेष शोजनीय करे. आ कथन बृहद्जाष्यमां ठे

वली पूजा उपर पूजा करवी ते निर्माल्य लक्षण नहि होवाथी, निर्माल्य नथी जे द्रव्यो जोगविनष्ट ठे, तेज गीतार्थोये निर्माल्य कथन करेल ठे, आजूषणो वारवार पहेरावबामां आवे जे, निर्माल्य थता नथी नहीं तो गध, वस्त्रथी एकसो आठ जिनप्रतिमाना अंग केवी रीतें लुहाय ? ते कारणथी जिनबिंब आरोपित जे जे वस्तु शोजारहित, सुगधरहित देखाय, अने जे जव्य जीवोने प्रमोदनो हेतु न होय, तेनेज बहुश्रुतो निर्माल्य कहे ठे आ कथन सघाचारवृत्तिमां लखेल ठे चढावेला चोखा

कोइ आचार्य निर्माल्य कहे छे, अने कोइ तेम कहेता नथी, तत्व शु छे ? ते केवली जाणे.

चंदन, पुष्पादि पूजा एवी रीतें करवी के जेथी जगवानना मुख नेत्रादि ढंकाइ जाय नही वली बहु शोजनीय लागे तेवी करवी कारण के देखनारने प्रमोद तथा पुण्यादिनी वृद्धि थाय

पूजा त्रण प्रकारनी छे १ अगपूजा, २ अग्रपूजा, ३ जावपूजा. तेमां निर्माल्य दूर करवां, प्रमार्जन करवां, अंगप्रक्षालन करवुं, वालाकुंची करवी, कुसुमांजलि करवी, पंचामृत स्नात्रथी शुद्धोदकधारा देवी, धूपित स्वछ, मृडुगंध कपायकादि वस्त्रथी अंगलूहणां करवां, वरास कुंकुममिश्र गोशीर्ष चंदन प्रमुखथी विलेपन करवुं, गोरोचन कस्तूरिथी तिलक करवां, सुगधमयपुष्पोथी आंगी रचवी, बहु मूल्यवान सुवर्ण, रत्न, माणेक मोती प्रमुखना अलंकार, आजरण पहेरावां जेम श्रीवस्तुपालें पोते जरावेला सवालाख बिंबो वास्ते, तथा श्रीशत्रुंजयनी उपर सर्वबिंबोनां रत्न, सुवर्णनां आजरण कराव्यां हतां, तथा दमयंतीए पाछला जवमां अष्टापद पर्वत उपर चोवीश तीर्थंकरोने तिलक कराव्यां हतां, तेवी रीतें करावे कारण के प्रतिमाजीनी जेटली उत्कृष्ट सामग्री मेलववामां आवे, तेटलीज अधिक शुज जावनी वृद्धि जव्यजीवोने थाय छे; तथा १ ग्रंथिम २ वेष्टिम, ३पूरिम, ४ संघातिमरूप चतुर्विध प्रधान अम्लान विधिथी लावेलां शतपत्र, सहस्त्रपत्र, मोगरा, जाइ, जुइ, चपक, गुलाबादि पुष्पविशेषनी माला, मुगट, शेहरा आदिथी आंगी रचना करे फूलना चंदरवा, जाली, जरूखा करे, जेथी अत्यतप्रमोद थाय वली जिनेश्वर जगवानना हाथमा विजोरां, नालियर, सोपारी, नागरवेल, मोहोर, रूपीआ, लाडु प्रमुख राखे वली वासप्रक्षेप करे, तथा सुगंधमय दशांग धूप उखेवे आ सर्व अंगपूजामां आवे छे. महाजाष्यमां कह्यु छे के ॥ गाथा ॥ न्हवण विलेवण आहरण, वत्थ फल गध धूप पुप्फेहिं ॥ कीरइ जिणंगपूया, तत्थ विही एस नायवो ॥ १ ॥ वत्थेण बंधिउणना, संअहवा जहासमाहीए ॥ वज्जेयवंतुतया, देहमवि कडुअणमाइ ॥ २ ॥ अन्यत्रापि गाथा ॥ कायकंडुअण वज्जे, तह खेल विगिंचण ॥ थुइथुत्त जणण चेव, हुअतो जगवंधुणो ॥१॥ देव पूजनना अवसरमां मुख्यवृत्तिए तो मौनज रहेवु जोइ-

ये जो तेम न रही शके तो पापकारी वचन तो सर्वथा त्यागे पापनी संज्ञापण वर्जे, कारण के प्रथम निस्सीहि करी गृहव्यापारादिनो निषेध करेल छे. मूलबिंबनी विस्तार सहित पूजा करे पछी अनुक्रमें सर्व बीजां बिंबोनी पूजा करे, द्वारबिंब तथा समवसरणबिंबोनी पूजा, मूलबिंबनी पूजा कर्यापछी गजाराथी निकलती वखत करवी जोइये एवो संजव छे, परंतु प्रवेश करता तो मूलबिंबनीज पूजा करवी उचित लागे छे सघाचारवृत्तिमां एवो लेख छे तेथी मूलनायकनी पूजा सर्वेबिंबोथी पहेलां तथा सविशेष करवी जोइये ॥ उक्त ॥ उचिअत्तं पूआये, विसेस करण तु मूलबिंबस्स ॥ जंपडइ तत्थ पढम, जणस्सदिठी सहमणेण ॥ १ ॥

शिष्य प्रश्न.— वंदनादिथी प्रथम एक मूलनायकने पूजवा अने बीजा बिंबोनी पछी पूजा करवी, आ तो स्वामि, सेवक जाव कर्यो तेवो जाव लोकनाथ तीर्थंकरमा नथी, वली एक बिंबनी बहुज आदर सत्कारथी पूजा करवी, अने बीजां बिंबोनी अल्पपूजा करवी, आ तो अमने जारे आशातना थती मालम पडे छे

गुरुउत्तर – ज्ञानवंत पुरुषोने अर्हत प्रतिमाउंमां नायक, सेवकनी बुद्धि होती नथी, कारण के सर्व प्रतिमाजीना एक सरिखाज परिवार, प्रातिहार्य प्रमुख देखाय छे, आ व्यवहारमात्र छे, जे बिंब प्रथम स्थापन करवामां आवेल होय, ते मूलनायक छे, आ व्यवहारथी शेष प्रतिमाउंनो नायकजाव दूर थतो नथी, अथवा तो तेमने लघुता जाव प्राप्त थतोनथी

एक प्रतिमाजिने वंदन, पूजा, नैवेद्य चढाववा, आ उचित प्रवृत्तिवाला पुरुषने आशातना नथी. जेम मृत्तिकानी बनावेली प्रतिमानी पूजा फूलादि रहित उचित छे, अने सुवर्ण प्रमुखनी प्रतिमाने स्नान विलेपनादि उचित छे वली एकज प्रतिमाना कल्याणक प्रमुखना महोत्सव आडंबरथी करवामां आवे ते बीजी प्रतिमाउंने आशातनाना कारण थता नथी, जेम धर्मीपुरुषने वदन, पूजन करतां बीजा उत्तम जीवोनी आशातना गणाती नथी तेम, आ प्रमाणे उचित प्रवृत्ति करतां जेम आशातना थती नथी जिनमंदिरमां जिनबिंबनी जे पूजा करवामां आवे छे, ते तीर्थंकरोने वास्ते पूजा करवामा आवती नथी, परंतु पोताना आत्माने, पूजा शुजजावोनु निमित्तकारण होवाथी करवामा आवे छे, जे बलवान्

निमित्त कारणथी आत्मानां उपादान कारणो स्मरणमां आवे छे, तेमज बीजाउने बोधि (सम्यक्त्व) नी प्राप्ति थाय छे कोइ जीवतो श्री जिनमंदिरने देखीने प्रतिबोध पामे छे, कोइ जीव जिनप्रतिमानुं प्रशांतरूप देखी बोधिबीज पामे छे, कोइ पूजानो महिमा देखी, अने कोइगुरुना उपदेशथी प्रतिबोधि पामी जाय छे ते कारणथी चैत्यजिनबिंबनी रचना बहुजसुंदर, उत्तम प्रकारनी करवी जोइए, अने पोतानी शक्ति अनुसारे मुख्यबिंबनी विशेष, अद्भुत शोभा करवी जोइए

गृह देरासर तो हालपण, पीतल, ताम्र, रुपामय करावबाने समर्थ छे ज्यारे पीतलप्रमुखना बनाववानी शक्ति न होय तो दांतादिमय पीतल तरेह रंगावे, कोरणीविशिष्ट काष्टादिमय करावे घर चैत्य तथा चैत्यसमुच्चयमां निरंतर सर्वस्थलें प्रमार्जन करावे, तेल प्रमुखथी काष्ट रंगावे, जेथी घुण न लागे. वली सामान्यथी खडी प्रमुखथी धोलावे. श्री तीर्थंकरादिना पंचकल्याणक प्रमुखनां चित्रो करावे समग्रपूजानां उपकरणो करावे, पडदा, कनात, चंदरवादि आपे, एवां एवां कामो करे के जेथी जिनमंदिरादिनी अधिक अधिक शोभा थाय घरदेरासरमां तेमज तेनी उपर धोतीआं प्रमुख न नाखे, घरदेरासरनी पण चोराशी आशातना टाले पीतल वा पाषाणनी जे प्रतिमा होय ते सर्वबिंबोनु एक अंगलूहणाथी पाणी लूहे पछी निरंतर बीजां सुकोमल अंगलूहणाथी सर्व बिंबोनु पाणी लूहे, वारवार सर्व अंगोउपर अंगलूहणां फेरवी पाणीनी असर बिलकुल रहेवा न दे ते प्रमाणे करवाथी प्रतिमा उज्वल थती जाय छे ज्यां ज्यां प्रतिमानां अंगोपांग पर जल रहि जाय, त्यां त्या प्रतिमाने श्यामता थइ जाय छे

नव, पचतीर्थी, चोवीशी पट्टादिमां स्नानजलनो प्रतिमाजीने परस्पर स्पर्श थवाथी आशातना थाय छे, एवी आशका न करवी जोइए. अशक्य परिहार होवाथी १ एक अर्हतनी प्रतिमा होय, तेनुं नाम व्यक्त छे २ एकज पाषाणादिमां भरत ऐरवतक्षेत्रनी चोवीशी बनावे, तेनु नाम क्षेत्र प्रतिमा छे ३ तेवीजरीतें एकसो सित्तेर प्रतिमाने महाख्य कहे छे ४ फूलनी वृष्टि करतां जे माला धर देवता छे, तेनुं रूप पंचतीर्थी उपर बनावे छे, वली जिनप्रतिमाने न्हवण करतां पेहेला मा-

लाधरने पाणीनो स्पर्श थयापछी जिनबिंब उपर ते पाणी पडे छे तेमां दोष नथी आ वृद्धोनी आचरणा छे तेवीजरीतें चोवीशी गट्टा आदिमां पण जाणी लेवुं. ग्रंथोमां पण एवीज रीति देखवामा आवे छे ॥ भाष्यकारनु वचन अहींयां लखीये छीये जिनराजनी ऋद्धि देखावावास्ते कोइ भक्तजन एक प्रतिमा बनावे छे, साथे प्रगटपणे अष्टमहाप्रातिहार्य देवागम सुशोभित रचावे छे २ दर्शन, ज्ञान, चारित्रनी आराधनावास्ते कोइ त्रण तीर्थी प्रतिमा बनावे छे ३ कोइ भक्तजन पच परमेष्ठिना आराधन निमित्ते उद्यापन (उजमणा) मां पचतीर्थी प्रतिमा भरावे छे ४ चोवीश तीर्थंकरोनां कल्याणक, तप उजमणा वास्ते भरतक्षेत्रमा जे ऋषभादि चोवीशे तीर्थंकरो थया छे, तेउना बहुमान वास्ते कोइ चोवीशी बनावे छे कोइ भक्तिथी मनुष्यलोकमां उत्कृष्टा एककालमां एकसो सित्तेर तीर्थंकर विहरमाननी एकसो सित्तेर प्रतिमा बनावे छे, ते कारणथी त्रण तीर्थी, पांचतीर्थी, चोवीशी आदिनु बनावबु युक्तियुक्त छे आ पूर्वोक्त सर्व अंगपूजा छे

हवे अग्र पूजानु वर्णन करीये छीये. रूपाना अथवा सोनाना वा धोला अक्षत, सरसव प्रमुखथी अष्टमंगलादि आलेखन करे, जेम श्रेणिकराजा दररोज एकसो आठ सोनाना जवथी त्रिकाल भगवाननी प्रतिमा सन्मुख साथीउं करता हता तेम करे, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्रनी आराधनावास्ते अनुक्रमे पाटला उपर अक्षतना त्रण पुज करे तथा साथीआ करे तथा अशन ते एक रोटली भातप्रमुख, २ शेलडी रसप्रमुख ते पान, ३ पक्वान्नादि ते खादिम, ४ तंबोलादि ते स्वादिम आ चारे प्रकारना नैवेद्य भगवान् सन्मुख ढोवे तथा उत्तम प्रकारना लीलां फल तथा सुकां फल दाडिम, सफरजन, सतरां, नालीअर, बदाम प्रमुख प्रभु आगल ढोवे वली गोशीर्ष चदनादिथी तथा पुष्पप्रकरथी विलेपन पूजनकरी आरति प्रमुख दीपक पूजा करे आ सर्व अग्रपूजा छे ॥ यद्भाष्य ॥ गाथा ॥ गंधव नट्ट वाइय, लवण जलारत्तिआइ दीवाइ ॥ जं किच्च सवपिउं, अरई अग्गपूआए ॥ १ ॥ नैवेद्य पूजातो दररोज करवी ते सुखदायक छे, तेनु फलपण मोटु छे कोरु अनाज तथा रांधेलु अनाज पण चढावे लौकिक शास्त्रमा पण कह्यु छे के ॥ धूपोदहति पापानि,

दीपोमृत्युविनाशक॰ ॥ नैवेद्य विपुलं राज्यं, सिद्धिदात्री प्रदक्षिणा ॥ १ ॥ नैवेद्य चढाववु, आरति करवी इत्यादि आगममां पण लखेल छे "कीरइ वलि" एवो पाठ आवश्यकनिर्युक्तिमां छे तथा निशीथचूर्णीमां पण वलि चढाववी एम लखेल छे. वली कल्पभाष्यमां पण लखेलुं छे के, जे नैवेद्य जिनप्रतिमा आगल चढाववावास्ते कर्युं होय, ते साधुने न कल्पे. तथा प्रतिष्ठाप्राभृतथी रचेली, श्रीपादलिप्त आचार्यकृत प्रतिष्ठापद्धतिमां लख्यु छे के, आरति उतारवी, मंगल दीवो कर्यापछी चार स्त्री मली नैवेद्य, गीतगानविधिथी करे ॥ तथा च महानिशीथे तृतीये अध्ययने ॥ अरिहंताणं भगवंताणं गधमल्लपईव समज्जणोवलेवण विचित्त वलिवत्थ धूवइएहिं पूआ सक्कारेहिं पइदिण मच्चणपि कुवाणा त्तित्थुपणं करेमोत्ति ॥ इति अग्रपूजा.

हवे भावपूजानुं स्वरूप लखीये छीये. द्रव्यपूजानो व्यापार निषेधवा वास्ते त्रीजी निस्सीहि त्रणवार करे श्रीजिनेश्वर भगवानना दक्षिण वाजुये पुरुष, अने डावी बाजुयें स्त्री रहे. आशातना टालवावास्ते मंदिरमां जघन्यथी भूमिनो संभव होतां नव हाथ प्रमाण, अने घरदेरासरमां जघन्यथी एक हाथ प्रमाण, अने उत्कृष्टथी साठ हाथ प्रमाण अवग्रह छे तेनी वहार वेसीने चैत्यवंदन विशिष्ट काव्योथी करे श्रीनिशीथमां, वसुदेवहिंडमां, तथा अन्यशास्त्रोमां, श्रावकोये पण कायोत्सर्ग, स्तुति आदि करी चैत्यवंदन करेल छे, एवा पाठ छे भाष्यमां चैत्यवंदन त्रण तरेहथी करवु कहेलछे. एक जघन्य चैत्यवंदन, ते वे हाथ जोडी, मस्तकनमावी, प्रणाम करवा, यथा "नमो अरिहंताणं" इति, अथवा श्लोकादि बोली नमस्कार करवो, अथवा एक शक्रस्तव वोले तो जघन्य चैत्यवंदन थाय. वीजु मध्यम चैत्यवंदन, ते चैत्यस्तव दंडकयुगल 'अरिहंत चेइआण' इत्यादि कायोत्सर्ग कर्या पछी एकस्तुति कहेवी ते त्रीजु उत्कृष्ट चैत्यवंदन, ते पंचदंड, १ शक्रस्तव, २ चैत्यस्तव, ३ नामस्तव, ४ श्रुतस्तव, ५ सिद्धस्तव, प्रणिधान, जयवीयराय इत्यादि वली कोइ आचार्यनो एवो मत छे के एकशक्रस्तव करवाथी जघन्य चैत्यवंदन थायछे, बे त्रणशक्रस्तव करवाथी मध्यम चैत्यवंदन थायछे, अने चार अथवा पांच शक्रस्तव करवाथी उत्कृष्ट चैत्यवंदन थायछे तेनोविधि चैत्यवंदन भाष्यथीजाणवो

चैत्यवंदन निरंतर सातवखत करवु, एम महानिशीथमां साधु वास्ते कहेलछे श्रावकनेपण उत्कृष्टथी सातवखत चैत्यवंदन करवा कह्युछे १प्रतिक्रमणमां, २ मदिरमा, ३ आहार करतां पेहेलां, ४ दिवस चरित्र करतां, ५ देवसी प्रतिक्रमणमां, ६ सूती वखत, ७ सूइ उठतां वखत आ प्रमाणे सातवखत चैत्यवंदन साधुवास्ते कहेल छे श्रावक जो आठ पहोरमा प्रतिक्रमण करतो होय तो ते निश्चये सातवार चैत्यवंदन करे, बे प्रतिक्रमणमां बे चैत्यवदन करे, त्रीजु सुतीवखत, चोथु उठतीवखत, अने त्रणकाल पूजाकर्या पछी त्रणवार एम सात वार श्रावक चैत्यवदन करे जे श्रावक एकवार प्रतिक्रमण करे, ते छवार चैत्यवंदन करे, जे प्रतिक्रमण न करे ते पांचवार चैत्यवंदन करे, जे सूतां उठतां पण चैत्यवंदन न करे ते त्रण वार करे जो नगरमां बहु जिनमदिरो होय तो सातथी अधिक पण चैत्यवंदन करे वली जो त्रणकाल जिनपूजा न करी शके तो त्रिकाल देववंदन करे कारण के श्रीमहानिशीथमां लख्युं छे के जेने गुरु प्रथम जैनमतनी श्रद्धा करावे, तेने प्रथम आ प्रमाणे नियम आपे सवारमां जिनप्रतिमाना दर्शन कर्या विना पाणीपण पीवु नही मध्याह्ने ज्यांसुधी जिनप्रतिमा अने साधुनी वंदना न करे, त्यांसुधी जोजन करवु नही संध्या समय चैत्यवंदन कर्याविना शय्या उपर पग मुकवो नहि

वली गीत नृत्य जे अग्रपूजामां वर्णवेलां छे, ते जाव पूजामां पण आवी शकेछे गीत, नृत्य मुख्यवृत्तिये तो श्रावक पोतेज करे, जेम निशीथ चूर्णीमा उदायिन राजानी राणी प्रजावतीनु व्याख्यान छे तेम वली पूजा करवाना अवसरमा श्रीअरिहतनी त्रण अवस्थानी कल्पना करे, तेमां स्नान करती वखत छद्मस्थ अवस्थानी कल्पना करे, आठ प्रातिहार्यनी शोजा करता के केवली अवस्थानी कल्पना करे, पर्यंकासन, कायोत्सर्गासन देखी सिद्ध अवस्थानी कल्पना करे छद्मस्थ अवस्था पण त्रण तरेहथी कल्पे, एकजन्म अवस्था, वीजी राज्य अवस्था, त्रीजी साधुपणानी अवस्था स्नाननी वखत जन्म अवस्था कल्पे, माला, आजरण पहेरावती वखत राज्य अवस्था कल्पे, दाढी, मुछ, मस्तकना वालो न होवाथी साधु अवस्था विचारे तेमा साधु, केवली तथा मोक्ष अवस्थाने वंदना करे

वली पूजा पचप्रकार, अष्टप्रकार, अने धनवान् होय तो सर्वप्रकारथी

पूजा करे तेमां पुष्प, अक्षत, गंध, दीप, धूप, आ पंचप्रकारें पूजा जाणवी, अने जल, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल, आ अष्टप्रकारें पूजा जाणवी. ते अष्टविध कर्मने मथनारी छे वली स्नात्र, विलेपन, वस्त्र, आजूषणादि, फल, दीप, गीत, नाटक, आरति आदि करे, ते सर्वोपचार पूजा छे ॥ इति बृहद्भाष्ये ॥

वली पूजाना त्रण जेद छे १ पोते कायाथी पूजानी सामग्री लावे, २ वचनोथी बीजा पासे मगावे, ३ मनथी सुंदर पुष्प, फल, प्रमुखथी पूजा करे. एम काया, वचन अने मन, त्रणे योगथी, करे, करावे, अनुमोदे. आ त्रण प्रकारें पूजा समजवी

वली एक फल, बीजी नैवेद्य, त्रीजी थुइ, चोथी प्रतिपत्ति ते वीतरागनी आज्ञापालन रूप, आ चार प्रकारें पूजा, यथाशक्तियें करे. ललितविस्तरादिग्रंथोमां "पुपामिपस्तोत्र प्रतिपत्ति" अर्थात् फूल, नैवेद्य, स्तोत्र अने आज्ञा आराधनीय, आ उत्तरोत्तर प्रधान छे ॥ इत्यागमोक्त पूजाजेदचतुष्टय ॥

वली पूजाना बे प्रकार छे, १ ऊव्यपूजा, २ जावपूजा. पुष्पादिथी जिनराजनी पूजा करवी, ते ऊव्यपूजा छे, अने जिनेश्वरनी आज्ञा पालवी ते जावपूजाछे. वली पुष्पारोहण, गधारोहणं इत्यादि सत्तर जेदथी, तथा स्नात्र विलेपनादि एकवीश जेदथी पूजा छे, परंतु अगपूजा, अग्रपूजा, अने जावपूजा, आ त्रणे पूजा, सर्वपूजाउंनी अतर्जावीछे तेमां पूजाना सत्तर जेद लखीये छीये.

१ स्नात्र करवु २ विलेपन करवुं, ३ चक्षुजोडा वा वस्त्रयुगल, ४ वास सुगध, ५ पुष्पारोहण, ६ पुष्पनी माला, ७ पंचरंगी फूल चढाववां, ८ जीमसेनी बरासनुं चूर्ण छांटवुं, ए आजरण पहेरावववां, १० पुष्पना गृह बनाववा, ११ फूलना पगर, वरसाद करवो, १२ पुष्पनी आगी रचन, १३ अष्टमंगल, अक्षत, १४ धूप पूजन, १५ गीत, १६ नृत्य, १७ वाजित्र, इति

हवे पूजाना एकवीश जेद लखीये छीये तेनुं वर्णन करतां पहेलां पूजा करनारें शु शु नियमो जालववा जोइये तेनुं स्वरूप लखीये छीये. १ पूजा करनार पूर्वदिशि तरफ मुख करी स्नान करे २ पश्चिम दिशातरफ

मुख करी दातण करे, ३ उत्तर दिशासन्मुख उभा रही श्वेत वस्त्र पहेरे, ४ पूर्वोत्तर मुख राखी पूजा करे, ५ घरमां प्रवेश करतां डावीवाजुये शल्य रहित भूमिमां देरासर करावे, ६ भूमिथी उंचुं दोढ हाथ राखी देरासर करावे. जो देरासर नीची भूमिकामा करावे तो तेनो वंश दिवसें दिवसें नीची स्थितिमां उतरतो जशे ७ दक्षिण दिशि तथा विदिशि सन्मुख मुख न करे ८ घरदेरासरमां पश्चिम सन्मुख मुख करी पूजा करे तो, चोथी पेढीमां संताननो उच्छेद थाय ९ दक्षिण दिशितरफ मुख करी पूजा करे तो संतानहीन थाय १० अग्निकोणें करे तो धनहानि थाय ११ वायुखुणे करे तो संतान न थाय १२ नैरुत्य खुणे कुलक्षय थाय १३ ईशान खुणे करे तो, एकस्थलें रेहेवानु न वने १४ वने पग, वने जानु, वने हाथ, वने स्कध, मस्तक आ नव अगमां अनुक्रमे पूजा करे, १५ चंदन शिवाय पूजा करे नहीं १६ कठमां, हृदयमां, नाभिमां तिलक करे. १७ नवे अगमां नवतिलकथी निरंतर पूजा करे १८ सवारमा प्रथम वासपूजा करे. १९ मध्याह्ने पुष्पथी पूजा करे २० संध्याये दीपथी पूजा करे २१ जे फूल हाथमांथी धरती उपर पडे, जे पगने लागी जाय, जे मस्तकथी उपर चाल्यु जाय, जे मेलां वस्त्रमां राखवामां आवेल होय, जे नाभिथी नीचे राखवामां आवेल होय, जेने दुष्ट जननो स्पर्श थयो होय, जे बहुस्थलें भागी गयु होय, जे जीवोथी खवायु होय, एवां फल भक्तजनोयें जिनपूजामा उपयोगमां लेवां नहि २२ एक फूलना वे कटका करी पूजन करवु नहीं २३ कलीने छेदवी नहीं, चपक उत्पलादि फुलोने भांगवामां बहु दोषछे २४ गध, धूप, अक्षत, पुष्पमाला, दीपक, नैवेद्य, जल, उत्तम फल, इत्यादिथी जिनराजनी पूजा निरतर करे २५ शातिकार्यमा श्वेत वस्त्र पेहेरी पूजा करे २६ द्रव्यलाभने वास्ते पीलांवस्त्र पेहेरी पूजा करे २७ शत्रु जीतवा वास्ते कालां वस्त्र पेहेरी पूजा करे मांगलिक कार्यवास्ते लालवस्त्र पेहेरी पूजाकरे २९ मुक्तिवास्ते पाच वर्णनां वस्त्र पेहेरी पूजा करे ३० शांतिकार्यवास्ते पचामृतनो होम, दीवा, घी, गोल, लवणनो अग्निमा प्रक्षेप करवो ते पुष्टि हेतु जाणवो ३१ फाटेला, दाडीआ करेला, छिद्रवालां, कापेला, जेनो रातो वर्ण भयानक होय, एवा वस्त्र पेहेरी, दान, पूजा, तप, होम अने सामायिक प्रमुख करे तो ते निष्फल थाय

३२ पद्मासन वेसी, नासाग्रलोचन स्थापन करी मौनता धारण करी वस्त्रथी मुखकोश बांधी, जिनराजनी पूजा करे.

हवे पूर्वोक्त एकवीश प्रकारी पूजानां नाम लखीये ठीये. १ स्नात्र पूजा, २ विलेपनपूजा, ३ आजरण पूजा, ४ पुष्पपूजा, ५ वासपूजा ६ धूप, ७ दीप, ७ फल, ए अक्षत, १० नागरवेलनां पान, ११ सोपारी, १२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ चामर, १६ ठत्र, १७ वाजित्र, १७ गीत, १ए नाटक, २० स्तुति, २१ नंडारवृद्धि. जे वस्तुउ बहुज सुंदर होय, ते जिनराजनी पूजामां वापरवी जोइये. आ पूजाना प्रकार श्री उमास्वातिवाचककृत पूजाप्रकरणमां प्रसिद्ध ठे

विवेकविलासमां लख्युंठे के श्रावक ईशानखुणामां पण देवघर बनावे. वली पगउपर पगधारणकरी, विषमासने वेसी उथडकआसने वेसि, वामपग उंचा राखी, वामहस्तथी जिनराजनी पूजा न करे शुष्क पुष्पोथी पूजा न करे. जे पुष्प धरतीपर पडीगयु होय, जेनी पांखडी सडीगइ होय, नीच लोकोनो जेने स्पर्श थयो होय, जे देखवामां अशुन्न होय, जे विकस्वर न थयां होय, जे कीडाथी खवायेलां होय. जे रातनां वासी होय, जे मकडीनां जालांवालां होय, जे अमनोज्ञ होय, जे डुर्गंधवालां होय, सुगधरहित होय. खाटी गंधवालां होय, मलमूत्रनी जगामां उत्पन्न थयेलां होय, अपवित्र थयेलां होय, एवां पुष्पोथी जिनराजनी पूजा न करवी विस्तारसहित पूजा करवाना अवसरमां, तथा निरंतर अने विशेषे करी पर्वदिवसोमां सात अथवा पांच कुसुमांजलि चढावे पठी नगवाननी पूजा करे. कुसुमांजलि करतां आ विधि करे.

प्रन्नातसमये प्रथम निर्माल्य उतारे, पठी प्रक्षालकरे, सक्षेपथी पूजा करे, आरति मंगल दीवो करे पठी स्नात्रादि पूजासहित वीजी वार पूजानो आरंन्न करे देवनी पासे पचामृतसंयुक्त कलश स्थापन करे. पठी "मुक्तालंकार विका,र सारसौम्यत्वकातिकमनीयं ॥ सहजनिजरूपनिर्जित, जगत्रयं पातु जिनविंव" ॥ १ ॥ आ गाथा कही अलंकार उतारे, पठी "अवणिय कुसुमाहरण, पयइ पइठिय मनोहरछायं ॥ जाणरूव मज्जणपीठ, सठिय वो सिवं दिसउ ॥ २ ॥ आ गाथा कही जमणे अगें कलशथी प्रक्षालन करी, चदन करी, चंदन चर्ची, धूप उखेवे पठी क-

लश श्रेणिवध स्थापन करे, उपर सुंदर वस्त्र ढांके, पछी सुंदर केशर, चंदन, धूपथी हाथ पवित्र करे, मस्तकमां श्रावक तिलक करे, हस्तउपर चदननु कंकण करे, हाथ धूपवासित करे पछी स्नात्र करनारा श्रावक श्रेणिवध उना रही आ प्रमाणे कुसुमांजलिनो पाठ उचरे "सयवंत कुद मालइ, वहुविह कुसुमाइ पचवन्नाइं ॥ जिणनाह ह्वण काले, दिंतिसुरा कुसुमाजलि हठ्ठा ॥ १ ॥ एम उचरी जिनराजना अग उपर पुष्प चढावे वली "गधायछिय महुयर, मणहर जंकार सद्द संगीअ ॥ जिणचलणो वरिमुक्का, हरउ तुह्म कुसुमांजलि डुरिय ॥ आ गाथा कही जिनराजना चरणकमल उपर एक श्रावक कुसुमांजलि चढावे सर्वकुसुमांजलिना पाठमां तिलक करवा, चदन, पुष्पपत्रादि धूपवासित करी एकत्र चढाववा ए प्रमाणे सर्वकुसुमांजलि करी रह्या पछी, जे जिनेश्वर नगवाननी स्थापना करी होय, तेमना जन्माभिषेक कलशनो अत्यंत मधुरस्वरथी पाठ कहे पछी घी, शेलडीरस, डुध, दहीं, सुगधजल इत्यादिथी करी राखेला पचामृतथी जिनराजने स्नात्र करे स्नात्र करतां धूप उखेवे, जिनराजनुं शरीर पुष्परहित न करे यदाहुर्वादिवेताल श्रीशातिसूरयआचार्या ॥ ज्यांसुधी स्नात्रसमाप्ति न थाय, त्यां सुधी नगवाननु मस्तक शून्य न राखवु निरंतर जलधारा अने उत्तमपुष्पोनी वृष्टि जिनराज पर करे, अने स्नात्र करती वखते चामर, संगीत, तूर्यादि आडवर स्वशक्ति अनुसार करे

स्नात्र कर्यापछी सर्वश्रावकें निर्मल जलधारा देवी धारा देती वखत आ प्रमाणे पाठ उचारे ॥ अनिषेक तोयधारा, धारेव ध्यानमडलाग्रस्य ॥ नवनवनभित्तिनागान्, नूयोऽपि निनत्तु नागवती ॥ १ ॥ पछी जिनराजनु अग लूही, विलेपन चदनथी करे, पुष्पादि चढावे, धूप उखेवे, उत्तम नैवेद्य तथा फल चडावे. पछी ज्ञानादि त्रणे सहित त्रण लोकना स्वामि पासे त्रण पुज स्नात्रकार करे प्रथम वडिल श्रावक त्रण पुज करे, पछी नानो श्रावक तथा श्राविका अनुक्रमें करे. श्री जिनजन्ममहोत्सवमां पण स्नात्र करती वखते प्रथम अच्युत इन्द्र, पोताना देवतासयुक्त स्नात्र करे छे, पछी अनुक्रमे वीजा इन्द्र स्नात्र करे छे स्नात्रजल पोताना मस्तक उपर श्रावक प्रक्षेप करे तो दोष नथी. ॥ यडुक्त

श्रीहेमचंद्राचार्यैः श्रीवीरचरिते ॥ अभिषेकजलं तत्तु, सुरासुरनरोरगा. ॥ ववंदिरे मुहुर्मुहुः, सर्वांग परिचिक्षिपु' ॥ १ ॥ श्रीपद्मचरित्रना उंगणत्रीशमा उद्देशमां कह्युं के, राजा दशरथें पोतानी राणीउंने स्नात्रजल मोकल्युं छे वली वृहत्शांतिस्तोत्रमां " शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमित्युक्तं " वली सांजलीये छीये के, जरासंधे ज्यारे जरा विद्या छोडी, त्यारें तेनाथी पीडा पामती सेनाने देखी श्रीनेमिनाथ जगवानना कहेवाथी श्रीकृष्णे धरणेंद्रदेवनुं आराधन कर्युं धरणेंद्रे पातालमां रहेली श्रीपार्श्वनाथजीनी प्रतिमाने शखेश्वरपुरमां लावीने, तेनुं स्नात्रजल छांटी सेना सचेत करी. वली श्रीजिनदेशना अनंतर राजाप्रमुख जे चावलोनी वली उछाले छे, तेमांथी अरधा चोखा तो धरती उपर नही पडतां देवताउं लइ लहे छे अरधा उछालनारा लइ लहे छे, वाकीना सर्व लोक लूटी लहे छे ते चोखानो एक पण दाणो जो मस्तकमां राखे तो, सर्वरोग उपशांत थइ जाय छे वली छ महिना सुधी नवा रोग थता नथी आ कथन आवश्यकसूत्रमां छे. पछी सद्गुरुनी प्रतिष्ठित, अतिसुंदर हीरागल प्रमुख वस्त्रनी मोटी ध्वजा, अतिउत्साहपूर्वक त्रण प्रदिक्षणा दइ विधिथी चढावे सर्वसंघ यथाशक्ति नैवेद्य प्रमुख चढावे.

हवे आरति मंगलदीवो श्री अरिहंतनी सन्मुख करवो तेनो विचार लखीये छीये मगलदीवानी पासे अग्निनु पात्र स्थापन करवु, तेमां लवणजल अनुक्रमे नाखवुं प्रथम " उवणेउमंगलं वो, जिणाण मुह लालि जाल संचलिआ ॥ तित्थपवत्तण समए, तियसविव मुक्का कुसुमवुठी ॥ आ गाथा कही कुसुमवृष्टि करे वली " उअह पडिजग्गापसरं, पयाहिणं मुणिवई करेऊणं ॥ पडईस लोणणल, ज्जिअं च लोण हुं अवहंमि॥ इत्यादि पाठथी विधिपूर्वक जिनराजने त्रणवार पुष्पसहित लवण जल उतारे पछी अनुक्रमें पूजा करी आरति धूप प्रक्षेपसहित वंने वाजुए अत्यत, कलशथी पाणीनी धारा देतां श्रावक पुष्पोने विखेरे पछी " मरगय मणि घडिय विसा, ल थालमाणिक्क मंडिअ पईवं ॥ नवणयर करुखित्त, जमउ जाणारत्तिअं तुह्म " इत्यादि पाठपूर्वक प्रधानथालमां आरति राखी उत्सवसहित त्रणवार उतारे आ कथन, त्रेशठ शलाका पुरुप चरित्रादिमां छे. मंगलदीपक पण आरतिनी जेम पूजे- पूजती वखत आ

पाठ कहे ॥ गाथा ॥ नामिज्जातो सुरा, सुरिहिंतुहनाह मंगल पईवो ॥ कणयाय लस्स नजइ, नाणुव्व पयाहिणं दितो ॥ १ ॥ ए प्रमाणे मंगलदीवो उतारी देदीप्यमान जिनराजना चरण कमलपासे राखे आरति बुजावी देवामां दोष नथी आरति अने मंगलदीवो मुख्य वृत्तिए, घी, साकर, कर्पूरादिथी करे तेम करवाथी विशेष फल छे "मुक्तालंकार" इत्यादि जे गाथाउं कही ते श्रीहरिभद्र सूरिजीनी करेली मालम पडे छे, कारण के श्रीहरिभद्रसूरिकृत समरादित्य चरित्रनामा ग्रथनी आदिमा "उवणेउ मंगलेवो" एवो पाठ छे ॥ इति नमस्कारस्य दर्शनात् ॥ वली आ गाथा तपगछमा प्रसिद्ध छे. ते कारणथी सर्व गाथा अहीं लखी नथी

स्नात्रादिमां समाचारी विशेषथी विविधप्रकारनो विधि देखवाथी व्यामोह न करवो, कारण के सर्व आचार्योनी अर्हद्भक्तिरूप फलनी सिद्धिवास्ते प्रवृत्ति होवाथी ते दोषरूप नथी गणधरादि समाचारीउमां पण बहुज भेद होयछे तेथी जे जे, धर्मथी विरुद्ध न होय, अने अर्हंत भक्तिने पोषक होय, ते ते सर्वकार्य कोइने पण असम्मत नथी एवी रीतें सर्व धर्मकार्यमा जाणी लेवु वली लवण आरति प्रमुखनुं उतारवुं, संप्रदायथी सर्वगछोमां तेमज परदर्शनोमा पण करतां देखीये छीयें तथा श्रीजिनप्रभसूरिकृत पूजाविधिशास्त्रमां तो लख्युं छे के ॥ गाथा ॥ लवणाइ उत्तारण, पालित्तय सूरिमाइ पुव्वपुरिसेहिं ॥ संहारेण अणुन्नयंपि, सपय सिठी एकारि ज्जाइ ॥ १ ॥ अर्थ —लवणादि उतारवा श्रीपादलिप्त सूरिप्रमुख पूर्वपुरुषोयें एकवार करवानी आज्ञा आपीछे. वर्त्तमानमां अमे ते अनुसार करावीये छीये स्नात्रमां सर्वप्रकारें विस्तारसहित पूजा प्रभावनादि करवाथी परलोकमां उत्कृष्ट मोक्षप्राप्तिरूप फल थायछे जेम चोसठ इन्द्रोयें जिनजन्मस्नात्रमहोत्सव कर्या छे, ते प्रमाणे श्रावक अतिउत्साहथी करे तेम करवाथी आ लोकमां पुण्य अने निर्जरा अने परलोकमा मोक्षफल प्राप्त थायछे आ कथन राजप्रश्नीय उपागमां करेलछे.

हवे प्रतिमा पण अनेक प्रकारनी छे तेनी पूजानो विधि सम्यक्त्व प्रकरणमा आ प्रमाणे लख्यो छे ॥ गाथा ॥ गुरु कारिआइ केइ, अन्नेसय कारिआइ तं विंति ॥ विहि कारिआइ अन्ने, पडिमाये पूअण विहाण ॥१॥

व्याख्या'– गुरु अर्थात् माता, पिता, दादा, पर दादा, प्रमुख तेउंनी करावेली प्रतिमा पूजवी जोइये, एम कोइ कहेछे. वली कोइ कहेछे के, पोतानी करावेली, प्रतिष्ठित करेली प्रतिमा पूजवी जोइये, तथा कोइ कहेछे के विधिथी करावेली, प्रतिष्ठा थयेली प्रतिमा पूजवी जोइये आ सर्वमां यथार्थ पक्ष तो आ छे– ममत्वरहित सर्वप्रतिमाने विशेषरहित पूजवी जोइये, कारण के सर्वस्थलें तीर्थंकरनो आकार देखवाथी तीर्थंकर बुद्धि उत्पन्न थायछे, जो एम न मानीयें तो जिनबिंबनी अवज्ञाथी, ते जीवने निश्चयें दुरंतसंसारमां भ्रमणरूप दंड प्राप्त थशे.

वली एवो पण कुविकल्प न करवो के जे अविधिथि जिनमंदिर, जिनप्रतिमा बनेलां होय, तेने पूजवाथी, अने तेवा अविधिमार्गनी अनुमोदनाथी भगवंतनी आज्ञाभंगरूप दूपण लागेछे तथाहि कल्पभाष्ये ॥ गाथा ॥ निस्सकड मनिस्सकडे, चेईये सव्वहिं थुईतिन्नि ॥ वेलंच चेइआणिय, नाउंइ क्किकिया वावि ॥ १ ॥ व्याख्या'-निश्राकृत तेने कहीये, जे गछना प्रतिबधथी बनेल होय, जेम के आ अमारा गछनु मंदिर छे, बीजुं अनिश्राकृत, जेना उपर कोइ गछनो प्रतिबंध नथी, आ सर्व जिनमंदिरोमां त्रण थुइ कहेवी जो सर्वजिनमंमिरोमां त्रण त्रण थुइ (स्तुति) कहेतां बहु काल लागी जाय, अने जिनमंदिर बहु होय, तो एकेक जिनमंदिरमां एकेक थुइ कहेवी, परतु सर्वजिनमंदिरमां विशेषरहित भक्ति करवी

वली जिनमंदिरमां करोलीआनां जालां लागीगयां होय, तेने दूर करवावास्ते, जेने जिनमंदिरनी सुप्रत करी होय, तेने साधु जोरथी उपदेश करे, एवी रीतें के, तमे जिनमंदिरनी नोकरी खाउंछो, छतां सार संभाल केम करता नथी? वली जेनी कोइ सारसंभाल न करे, तेने असंविस देवकुलिका कहेछे ते मंदिरोमां जे करोलीआनां जालां होय ते दूर करवावास्ते, सेवकोने प्रेरणा करे, के तमे जिनमंदिरने मांखीनी पांखनी जेम चमक दमकवालां राखो, जो सेवक लोक न माने तो निर्भछना करे, पछी साधु पोते जयणाथी ते जालां दूर करे, कारण के जिनमंदिर, ज्ञानभंडारप्रमुखनी साधु उपेक्षा न करे एवो पाठ छे पूर्वोक्त चैत्यगमन पूजा तथा स्नात्रादिविधि जे वर्णन कर्यो, ते सर्व धनवान् श्रावकनी अपेक्षा-

पाठ कहे ॥ गाथा ॥ नामिज्जतो सुरा, सुरिहिंतुहनाह मंगल पईवो ॥ कणयाय लस्स नजइ, नाणुव पयाहिण दितो ॥ १ ॥ ए प्रमाणे मंगलदीवो उतारी देदीप्यमान जिनराजना चरण कमलपासे राखे आरति बुजावी देवामां दोष नथी आरति अने मंगलदीवो मुख्य वृत्तिए, घी, साकर, कर्पूरादिथी करे तेम करवाथी विशेष फल छे " मुक्तालंकार " इत्यादि जे गाथाउं कही ते श्रीहरिजद्र सूरिजीनी करेली मालम पडे छे, कारण के श्रीहरिजद्रसूरिकृत समरादित्य चरित्रनामा ग्रथनी आदिमा " उवणेउ मंगलेवो " एवो पाठ छे ॥ इति नमस्कारस्य दर्शनात् ॥ वली आ गाथा तपगछमां प्रसिद्ध छे. ते कारणथी सर्व गाथा अहीं लखी नथी

स्नात्रादिमां समाचारी विशेषथी विविधप्रकारनो विधि देखवाथी व्यामोह न करवो, कारण के सर्व आचार्योनी अर्हद्नक्तिरूप फलनी सिद्धिवास्ते प्रवृत्ति होवाथी ते दोषरूप नथी गणधरादि समाचारीउंमां पण बहुज नेद होयछे तेथी जे जे, धर्मथी विरुद्ध न होय, अने अर्हत नक्तिने पोषक होय, ते ते सर्वकार्य कोइने पण असम्मत नथी एवी रीतें सर्व धर्मकार्यमा जाणी लेवु वली लवण आरति प्रमुखनुं उतारवुं, संप्रदायथी सर्वगछोमां तेमज परदर्शनोमां पण करतां देखीयें छीयें. तथा श्रीजिनप्रजसूरिकृत पूजाविधिशास्त्रमां तो लख्यु छे के ॥ गाथा ॥ लवणाई उत्तारण, पालित्तय सूरिमाइ पुव्वपुरिसेहिं ॥ संहारेण अणुन्नयंपि, सपय सिठी एकारि ज्जाइ ॥ १ ॥ अर्थः—लवणादि उतारवा श्रीपादलिप्त सूरिप्रमुख पूर्वपुरुषोयें एकवार करवानी आज्ञा आपीछे वर्त्तमानमां अमे ते अनुसार करावीये छीये स्नात्रमां सर्वप्रकारें विस्तारसहित पूजा प्रनावनादि करवाथी परलोकमां उत्कृष्ट मोक्ष प्राप्तिरूप फल थायछे जेम चोसठ इन्द्रोयें जिनजन्मस्नात्रमहोत्सव कर्या छे, ते प्रमाणे श्रावक अतिउत्साहथी करे तेम करवाथी आ लोकमां पुण्य अने निर्जरा अने परलोकमा मोक्षफल प्राप्त थायछे आ कथन राजप्रश्नीय उपांगमां करेलछे

हवे प्रतिमा पण अनेक प्रकारनी छे तेनी पूजानो विधि सम्यक्त्व प्रकरणमा आ प्रमाणे लख्यो छे ॥ गाथा ॥ गुरु कारिआइ केइ, अन्नेसय कारिआइ त्त विति ॥ विहि कारिआइ अन्ने, पडिमाये पूअण विहाण॥१॥

व्याख्याः– गुरु अर्थात् माता, पिता, दादा, पर दादा, प्रमुख तेउंनी करावेली प्रतिमा पूजवी जोइये, एम कोइ कहेछे वली कोइ कहेछे के, पोतानी करावेली, प्रतिष्ठित करेली प्रतिमा पूजवी जोइये, तथा कोइ कहेछे के विधिथी करावेली, प्रतिष्ठा थयेली प्रतिमा पूजवी जोइये. आ सर्वमां यथार्थ पक्ष तो आ छे– ममत्वरहित सर्वप्रतिमाने विशेषरहित पूजवी जोइये, कारण के सर्वस्थलें तीर्थंकरनो आकार देखवाथी तीर्थंकर बुद्धि उत्पन्न थायछे, जो एम न मानीये तो जिनबिंबनी अवज्ञाथी, ते जीवने निश्चयें दुरंतसंसारमां भ्रमणरूप दंड प्राप्त थशे

वली एवो पण कुविकल्प न करवो के जे अविधिथि जिनमंदिर, जिनप्रतिमा बनेलां होय, तेने पूजवाथी, अने तेवा अविधिमार्गनी अनुमोदनाथी भगवंतनी आज्ञाभंगरूप दूषण लागेछे तथाहि कल्पभाष्ये ॥ गाथा ॥ निस्सकड मनिस्सकडे, चेइये सव्वहिं थुईतिन्नि ॥ वेलंच चेइ आणिय, नाउंइ क्किकिया वावि ॥ १ ॥ व्याख्याः-निश्राकृत तेने कहीये, जे गछना प्रतिबंधथी बनेल होय, जेम के आ अमारा गछनु मंदिर छे, बीजु अनिश्राकृत, जेना उपर कोइ गछनो प्रतिबंध नथी; आ सर्व जिनमंदिरोमां त्रण थुइ कहेवी जो सर्वजिनमंमिरोमां त्रण त्रण थुइ (स्तुति) कहेता बहु काल लागी जाय, अने जिनमंदिर बहु होय, तो एकेक जिनमंदिरमां एकेक थुइ कहेवी, परतु सर्वजिनमंदिरमां विशेषरहित भक्ति करवी

वली जिनमंदिरमां करोलीआनां जालां लागीगयां होय, तेने दूर करवावास्ते, जेने जिनमंदिरनी सुप्रत करी होय, तेने साधु जोरथी उपदेश करे, एवी रीतें के, तमे जिनमंदिरनी नोकरी खाउंछो, छतां सार संभाल केम करता नथी? वली जेनी कोइ सारसंभाल न करे, तेने असविस देवकुलिका कहेछे. ते मंदिरोमां जे करोलीआनां जालां होय ते दूर करवावास्ते, सेवकोने प्रेरणा करे, के तमे जिनमंदिरने माखीनी पांखनी जेम चमक दमकवालां राखो, जो सेवक लोक न माने तो निर्भ्रछना करे, पछी साधु पोते जयणाथी ते जाला दूर करे, कारण के जिनमंदिर, ज्ञानभंडारप्रमुखनी साधु उपेक्षा न करे एवो पाठ छे पूर्वोक्त चैत्यगमन पूजा तथा स्नात्रादिविधि जे वर्णन कर्यो, ते सर्व धनवान् श्रावकनी अपेक्षा-

यें कह्यो छे जो श्रावक धनवान् न होय तो पोताना घरमां सामायिक करीने कोइनी साथे लेण देणनो तकरार न होय, ते उपयोग सहित, साधुनी जेम इर्या समिति शोधतां नैषेधिकी त्रण करी चाव पूजानुयायि विधिथी जिनमंदिर आवे पूजादिसामग्रीना अज्ञावथी द्रव्यपूजा करवाने असमर्थ छे, ते कारणथी सामायिक पारी कायाथी जे कांइ पुष्पगुंथनादि कृत्य थाय ते करे

प्रश्न.—सामायिकनो त्याग करी द्रव्यपूजा करवी उचित छे ?

उत्तर – सामायिक तो तेने स्वाधीन छे मरजीमां आवे ते वखते क-करी ले, परतु पूजानो योग मलवो तेने वहुज दुर्लज छे, कारण के पूजानु मंडाण तो संघसमुदायने आधीन छे, कोइकज वखत होयछे तेकारणथी पूजामां विशेषपुण्य छे यदागमः ॥ " जीवाण बोहि लाजो, सम्मद्दिठीण होइ पिअकरण ॥ आणाजिणिंद जत्ति, तित्थस्स पजावणा चेव ॥ १ ॥ ते कारणथी अनेक गुण छे, तेथी चैत्यकार्य करे आ कथन दिनकृत्य सूत्रमां छे दशत्रिक, पांच अजिगम, इत्यादि विधि प्रधानपणें सर्वदेवपूजा, वंदनादि धर्मानुष्ठाननु महाफल थाय छे, अन्यथा अल्पफल छे वली अविधिथी करतां उपद्रव पण थइ जाय छे ॥ उक्तं च ॥ धर्मानुष्ठान वैतथ्यात्, प्रत्यवायो महान् जवेत् ॥ रौद्रदुःखौघजननो, दुष्प्रयुक्तादि चौषधात् ॥ १ ॥ चैत्यवंदनादि अविधिथी करतां आगममा प्रायश्चित्त कहेल छे महानिशीथना सातमा अध्ययनमां अविधिथी चैत्यवदन करता प्रायश्चित्त वर्णवेल छे देवता अने विद्या, मंत्रादिविधिथीज सिद्ध थाय छे

जो कोइ एम कहे के विधिपूर्वक न थतु होय तो न करवु ते श्रेष्ट छे ? आ कथन अयुक्त छे ॥ यदुक्त ॥ अविहिकया वरमकय, असूआ वयण जणति समयन्नु ॥ पायछित्त अकए, गुरुअ वितह कए लहुय ॥१॥ अर्थ – अविधिथी करता न करवु ते सारुं छे, एवु जे कहेवु, ते असूया वचन छे तेम बोलनार सिद्धातनो जाणकार नथी जैनशास्त्रनु एवु कथन छे के जे न करे, तेने गुरु प्रायश्चित्त लागे छे, अने जे अविधिथी करे तेने लघु प्रायश्चित्त आवे छे, ते कारणथी धर्म जरुर करवो जोइए, अने विधिमार्गनी अन्वेषणा करवी तेज तत्त्व छे तेज श्रद्धावंतनु लक्षण छे.

सर्वकृत्य करी अविधि आशातना निमित्त मिथ्या दुष्कृत देवुं

अग, अग्र अने जाव, त्रणे पूजानुं फल शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्यु छे. विघ्न उपशात करनार अगपूजा छे, मोटा अभ्युदय पुण्यने साधनार अग्रपूजा छे, मोक्षप्रदात्री जावपूजा छे पूजा करनार, संसारना प्रधान जोग जोगवी, पछी सिद्धपद प्राप्त करे छे, पूजा करवाथी मन शांत थाय-छे, मननी शांतिथी उत्तम, शुज ध्यान थाय छे, अने शुजध्यानथी मोक्ष थये अव्याबाध सुख छे.

वली जिनराजनी जक्तिना पांच प्रकार छे यथा ॥ पुष्पाद्यर्चा तदासा च, तद्द्रव्यपरिरक्षण ॥ उत्सवास्तीर्थयात्रा च, जक्तिः पचविधा जिने ॥ १ ॥ अर्थ.— पुष्पादिथी पूजन, जिनेश्वर जगवाननी आज्ञा पालवी ते, देवद्रव्यनु रक्षण करवु, महोत्सव करवो ते, अने तीर्थयात्रा आ पांचप्रकारनी जक्ति छे द्रव्यपूजा, आ जोग अने अनाजोग बे प्रकारें छे तेमां श्री वीतरागदेवना गुण जाणी, वीतराग जावनाथी, आदर संयुक्त, जिनप्रतिमानी जे पूजा ते आजोग द्रव्यपूजा छे. आ पूजाथी चारित्रनो लाज थाय छे, कर्मनो नाश थाय छे, ते कारणथी बुद्धिमान् एवी पूजा अवश्य करे; अने जेउ पूजानो विधि जाणता नथी, तथा श्रीजिनराजना गुणपण जाणता नथी, तेउनी जे पूजा ते अनाजोगपूजा छे आ पूजा शुजपरिणाम पुण्यनु कारण छे, बोधिलाजनो हेतु छे, अने पापक्षय करवानुं कारण छे, वली ते पुरुषना जन्मने धन्यछे, अने जविष्य काले तेनु कल्याण थायछे, कारण के जो के ते वीतरागना गुणोने जाणतो नथी, तोपण जक्ति प्रीतिनो उल्लास तेना अत करणमां उछलेछे; अने जे पुरुषने अरिहंतबिंब उपर द्वेष छे, ते पुरुष जारे कर्मी तथा जवाजिनंदी छे, जेम रोगीने अपथ्यपर रुचि थाय अने पथ्य पर द्वेष थाय, त्यारे मरणकाल पासे समजायछे, तेम जिनबिंब उपर जेने द्वेषछे, तेने पण दीर्घससार परिभ्रमण जाणवु.

अहीआं सर्व जे जावपूजा कही, ते श्रीजिनाज्ञानुं पालवुं समजवुं. बीजु त्यागवु सुकृतनो अगीकार अने दुष्कृतनो त्याग तेमां स्वीकारपक्षथी परिहारपक्ष बहुज श्रेष्ठछे, कारण के जे निषिद्ध आचरण करे छे, तेनु सुकृतपण बहु गुणदायक थतु नथी. जो बने बाबतो बने तो पूर्ण-

फल थायछे द्रव्यपूजानुं फल अच्युतदेवलोकछे, अने भावपूजानुं फल अंतर्मुहूर्त्तमां मोक्ष छे

द्रव्यपूजामां यद्यपि षट्कायना जीवोनी किंचित् विराधना थायछे, तो पण कुवाना दृष्टांतनी जेम गृहस्थने करवा योग्य छे, कारण के करनार अने देखनारने गणतरी रहित पुण्यबंधनु कारण होवाथी करवा योग्य छे, जेम नवा गाममां स्नान पानादि वास्ते लोक कुवा खोदेछे, तेउने प्यास, श्रम, कीचडादिथी मलिनता थायछे, परंतु कुवानुं जल निकलतांज तेउनी तथा बीजाउनी तृषादि सर्व दूर थइ जायछे, अने तमाम प्रकारनु सुख थायछे, तेवीज रीतें द्रव्यपूजामां जाणी लेवुं आ कथन आवश्यक निर्युक्तिमां छे, तथा बीजे स्थले पण लखेल छे ॥ गाथा ॥ आरंभ पसत्ताण, गिहीणथ्थ जीववह अविरयाण ॥ भवअडवि निवडियाण, दवछउ चेव आलंबो ॥ १ ॥ श्लोक ॥ वृत्त शार्दूलविक्रीडितं ॥ स्थेयोवायुवलेन निर्वृतिकर निर्वाणनिर्घातिना, स्वायत्त बहुनायकेन सुबहु स्वल्पेन सारं परं॥ नि सारेण धनेन पुण्यममलं कृत्वा जिनाभ्यर्चनं, योगृह्णाति वणिक् सएव निपुणो वाणिज्यकर्मण्यलम् ॥ १ ॥ यास्याम्यायतनं जिनस्य लभते, ध्यायंश्चतुर्थं फलं, षष्ठ चोत्थित उद्यतोऽष्टममथो गंतुं प्रवृत्तोऽध्वनि ॥ श्रद्धालुर्दशमं बहिर्जिनगृहात् प्राप्तस्ततो द्वादश, मध्ये पाक्षिकमीक्षते जिनपतौ, मासोपवास फलम् ॥२॥ पद्मचरित्रमां लख्युछे के, १ ज्यारे जिनमंदिरमा जवानो विचार करे, त्यारे एक उपवासनु फल थायछे, २ जो उठे तो बे उपवासनु फल थाय छे, ३ चालवानी शरुआत करतां त्रण उपवासनुं फल थायछे, ४ चाली निकले चार उपवावसनु फल थाय छे, ५ कांइक जतां पांच उपवासनु फल थाय छे, ६ अर्ध मार्गे पहोचतां एकपक्षउपवासनु फल थायछे, ७ जिनराजने देखता एकमास उपवासनु फल थायछे, ८ जिनभुवनमां संप्राप्त थता छमासी उपवासनु फल थायछे, ९ जिनमंदिरना दरवाजा पर स्थित थता एकवर्षना तपनु फल थायछे, १० जिनराजनी प्रदक्षिणा देतां सो वर्षना तपनुं फल थायछे, ११ पूजा करता हजार वर्षना तपनुं फल थायछे, १२ स्तुति करता अनंतगणु फल थायछे, १३ जिनमंदिर प्रमार्जन करतां सोगणुं पुण्य थायछे, १४ धोळता हजारगणु पुण्य थायछे, १५ पुष्पमाला च-

ढावतां लाखगणुं पुण्य थायछे, १६ गीत, वाजित्रथी स्तुतिकरतां अनंतगणु पुण्य थायछे.

पूजा निरंतर त्रणसंध्याये करवी जोइये ॥ यत.॥ जिनस्य पूजनं हंति, प्रात.पाप निशाजवं ॥ आजन्मविहितं मध्ये, सप्तजन्मकृतं निशि ॥ १ ॥ जलाहारौषधस्वाप, विद्योत्सर्गकृषिक्रियाः ॥ सत्फला. स्वस्वकाले स्यु, रेवं पूजा जिनेश्वरे ॥ २ ॥ गाथा ॥ जीणपुआण तिसंजं, कुणमाणो सोहएय सम्मत्तं ॥ तित्रयर नामगोत्तं, पावइ सेणीअ नरिंदुव्व ॥१॥ जो पुएइ तिसंज, जिणंदराय सयाविगयदोसं ॥ सोतइय जवे सिज्जाइ, अहवा सत्तठमे जम्मे ॥ २ ॥ सव्वायरेण जयवं, पूइज्जतो वि देवनाहेहिं ॥ नोहोइपूइउं खलु, जम्हाणं तगुणो जयवं ॥ ३ ॥

वली देवपूजादि समये हृदयमां वहुमान राखे तथा शुद्ध विधि सहित जक्ति करे. जिनमतमां चार प्रकारनां अनुष्ठान कह्यां छे. १ प्रीति सहित, २ जक्ति सहित, ३ वचन प्रधान, ४ असंग अनुष्ठान जेमां प्रीतिनो रसवधे, अने क्रिया करनार जद्रक स्वजाववालो होय, तेने, जेम वालकने रत्नादि देखी प्रीति थाय, तेम क्रियामां प्रीति थाय, ते प्रीति अनुष्ठान. २ ज्यां क्रिया करनार विवेकवान् होय अने वहुमानसंयुक्त क्रिया करे, अने वाकी सर्व प्रथम अनुष्ठाननी जेम करे, ते जक्ति अनुष्ठान छे, अगर जो के स्त्री अने माता पालन, पोषण करवामां सरखां थाय छे, तोपण स्त्रीउपर प्रीति राग छे, अने माता उपर जक्तिराग छे ३ जिनगुणनो जाणनार, सूत्रोक्तविधिपूर्वक जिनप्रतिमानी वंदनादि क्रिया करे, ते वचनानुष्ठान चारित्रवंतने निश्चयें होयछे ४ जे अन्यासना रसथी सूत्रआलोचना विनाज फलमां निःस्पृही थइने क्रिया करवी, ते असग अनुष्ठान छे, जेम कुंजार प्रथम चक्रने दंडथी फेरवे छे, पछी दंड तजी दे तो पण चक्र फरेछे, आ दृष्टांत वचन अनुष्ठान अने असंग अनुष्ठाननु छे.

चारेमा प्रथम तो जावनाना लेशथी प्राय वालक प्रमुखने प्राप्त थाय छे, अने उत्तरोत्तर अधिक गुण प्राप्त थतां वीजा अनुष्ठान थाय छे आ चारे प्रकारनां अनुष्ठान वहुमानसहित अने विधिपूर्वक करे, तो रूपेंउपण खरो अने सिक्को पण खरो, आ प्रथम जेद जे पुरुष जक्तिराग तथा वहुमानसयुक्त होय, परतु विधि जाणतो न होय, तेनी क्रिया

एकांत खराब नथी, अशठ (चतुर) पुरुषनां अनुष्ठान अतिचार सहित पण शुद्धिना कारण छे, कारण के जे रत्न अंदरथी निर्मल छे, तेनो बाह्य मेल सुखें दूर करी शकाय छे, आ रूपैउं खरो अने सिक्को खोटो, एवो बीजो भेद जे पुरुष, कपट तथा असत्यादि दोषसंयुक्त छे, अने पोतानुं बहुमान तथा कीर्त्ति वधारवा वास्ते, वा लोकोने ठगवावास्ते विधिपूर्वक सर्व अनुष्ठान करे छे, तेने महा अनर्थरूप फल थाय छे, आ रूपैउं खोटो अने सिक्को खरो, एवो त्रीजो भेद जे अज्ञानी तथा मिथ्यादृष्टि जीवोनां कृत्यो, ते रूपैउं पण खोटो अने सिक्को पण खोटो, एवो चोथो भेद तेकारणथी जे देवपूजादि क्रिया बहुमान अने विधिपूर्वक करे तेने सपूर्ण फल थाय छे

हवे उचित चितानु स्वरूप कहीए छीए मंदिरने प्रमार्जन करवु, करावबु, जे स्थले मंदिरनो भाग तुटी पड्यो होय ते समरावबो, प्रतिमाजी तथा परिवारने निर्मल राखवा, विशिष्टपूजा, दीपोत्सव, पुष्प प्रमुखनी शोभा करवी, आशातनाउं सर्व टालवी, अक्षत, नैवेद्य, फल प्रमुखनी चिता राखवी, चदन, केशर, धूप, दीप, तेलनो संग्रह करवो, विनाश न थाय तेवी रीतिए देवद्रव्यनी रक्षा करवी, बे चार श्रावकोने साथे राखी देवद्रव्यनी उघराणी करवी, देवद्रव्यने बहुज यत्नथी निर्भय स्थानमा राखवु, देवद्रव्यनु उपज, खरचनु नामु प्रगटपणे लखवु तथा राखवु, पोते देवद्रव्य आपवु, बीजाउं पासेथी अपाववुं, देवद्रव्य कोइनी पासे लेणु होय, त्यां देवना नोकरोने मोकली, जे रीतिए देवद्रव्य जाय नही, ते रीतिए उघराणी कराववी, एवी अनेक रीते देवद्रव्यनी चिता तथा सार सभाल करवी

वली देरा प्रमुखनी चिता अनेक तरेहनी छे, तेमां धनवान् धनथी तेमज स्वजनना बलथी चिता राखे, ते चिता तेमने सुकर छे, अने धन विनाना पोताना शरीरबलथी तथा स्वजनबलथी सहाय आपे, ते तेमने साध्य छे जेनु जेटलु बल होय, ते विशेष रीते तेटलो यत्न करे जे चिता अल्पकालमा दूर थइ जाय, ते बीजी निस्सीहि पेहेलां करे. बाकीनी बीजी यथायोग्यरीते पछी करे तेवीजरीतें धर्मशाला तथा गुरु अने ज्ञान प्रमुखनी पण यथोचित सर्वशक्तिथी चिता करे, कारण के देवगुरु

आदिनी सार संजाल श्रावक विना वीजा कोइ करनार नथी, ते क
णथी श्रावकें ते वाबतमां शिथिल न रहेवुं जोइए देवगुरु प्रमुखनी
क्ति, सेवा, सार संजाल, जो श्रावक न करे तो तेना सम्यक्त्वमां क
लागे ठे वली जे श्रावक देवगुरुनो जक्त ठे, तेनाथी कदाचित् कोइ
शातना पण थइ जाय, तो पण तेनु फल अतिदुःखदायक नथी. ते
रणथी चैत्यादि कृत्यमां निरंतर प्रवृत्त थवुं यथा ॥ देहे द्रव्ये कुटुंबे
सर्वसंसारिणां रतिः ॥ जिने जिनमते संघे, पुनर्मोक्षाजिलाषिणां ॥

देव गुरु प्रमुखथी आशातना, जघन्यादि जेदे त्रण प्रकारें ठे
प्रथम ज्ञाननी आशातनानु स्वरूप कहीए ठीए ज्ञाननां पुस्तक, प
जपमाला प्रमुखने मुखनु थुक लेश मात्र लागी जाय, हीन अधिक
क्षरोच्चार थाय, ज्ञानना उपकरण, पाटी, पुस्तक, नवकारवाली प्र
पासे होय ते वखते अधोवातनिःसर्गादि थाय, ते जघन्य आशातन
अकाले पठन प्रमुख करवुं, उपधान वहन कर्या विना सूत्र जणवां,
तिपूर्वक, अर्थनी अन्यथा कल्पना करवी, पुस्तक प्रमुखने प्रमादथ
गादिनो स्पर्श करवो, जूमिपर नाखवां, ज्ञाननां उपकरणो पासे
आहार मूत्रादि करवां, ते मध्यम आशातना ठे थुकथी अक्षर मांज
पाटी, पोथी प्रमुख ज्ञाननां उपकरण उपर वेसवुं तथा सुवा प्रमुख
रवु, ज्ञानोपकरणो पासे ठतां वडीनीत करवी, ज्ञान तथा ज्ञानीनी
दा, द्वेप तथा उपघातादि करवां, उत्सूत्र जापण प्रमुख करवां, ते
त्कृष्ट आशातना ठे.

हवे देवनी आशातना कहीए ठीए तेमां वास, वरास, केशर
खना डावलाने वजाववा, श्वास लागी जाय तथा वस्त्रना ठेडाथी दे
स्पर्श थइ जाय ते जघन्य आशातना ठे. धोतीआं प्रमुख पवित्र वस्त्र
र्या विना पूजा करवी, पूजानां वस्त्र जूमिपर नाखवां, इत्यादि मध्यम
शातना ठे प्रतिमाजीने पगथी संघट्टो करवो, श्लेष्म अने थुक ल
ववु, प्रतिमानो जग करवो, जिनेश्वर जगवानी हेलणा करवी ते
त्कृष्ट आशातना ठे

हवे देवनी जघन्यथी दश आशातना, मध्यम चालीश आशा
अने उत्कृष्ट चोराशी आशातना ठे, तेमा जघन्य दश आशातना न

रवी ते लखीए ठीए, जिनमंदिरमां १ पान सोपारी खावां नहि, २ पाणी पीवु नहि, ३ जोजन करवु नहि, ४ पगरखां मुकवा नहि, ५ स्त्री सजोग करवो नहि, ६ सुवु नहि, ७ थुकवुं नहि, ८ मूतरवु नहि, ९ दिशाए जवु नहि, १० जुगार खेलवो नहि

हवे मध्यम चालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहीए ठीए १ मूतरवु नहि, २ दिशा जवु नहि, ३ पगरखां पेहेरवा नहि, ४ पाणी पीवु नहि, ५ जमवुं नहि, ६ सुवु नहि, ७ मैथुनसेवन करवु नहि, ८ तंबोल खावा नहि, ९ थुकवु नहि, १० जुगार खेलवो नहि, ११ माथु जोवु नहि, जुओ काडवी नहि, १२ विकथा करवी नहि, १३ पलोंठी करी वेसवु नहि, १४ पग लांवा पसारवा नहि, १५ ऊघडो करवो नहि, १६ हांसी करवी नहि १७ ईर्ष्या करवी नहि, १८ उचे आसने वेसवु नहि, १९ केश ठलवा नहि, २० ठत्री ठढवी नहि, २१ खड्ग राखवु नहि, २२ मुगट धारण करवो नहि, २३ चामर वींजाववां नहि, २४ स्त्रीना कामविलास हांसि करवी नहि, २५ धरणु लगाववु नहि, २६ क्रीडा, खेल करवा नहि, २७ मुखकोश विना पूजा करवी नहि, २८ मेला शरीरथी तेमज मेला वस्त्रथी पूजा करवी नहि, २९ पूजा करतां मन चपल करवु नहि, ३० शरीरना जोगना सचित्त द्रव्यने वहार मुक्याविना मंदिरमां जवु नहि ३१ अचित्त द्रव्य, आजूषण प्रमुख उतारीने जवु नहि ३२ एक साडी उत्तरासग करवु, ३३ जगवानने देखताज हाथ जोडवा, ३४ शक्ति ठता पूजा करवी, ३५ अनिष्ट पुष्पोथी पूजा न करवी, ३५ पूजा प्रमुख आदर सहित करवां, ३७ जिन प्रतिमाना निदकने वहार काढवा, ३८ मदिरना द्रव्यथी सार सजाल करवी, ३९ शक्ति ठता असवारीपर चडी मदिरमा जवु नहि, ४० देरासरमा वडिलथी पेहेला चैत्यवंदन करवु नहि जिनेन्द्र जुवनमां तथा ज्यां प्रतिमाजी होय त्यां चालीश आशातना उपरमुजव वर्जवी

हवे उत्कृष्ट चोराशी आशातनाना नाम लखीये ठीये १ जिनमंदिरमां श्लेष्म, वडखो नाखवो, २ जूआ आदिनी क्रीडा करवी, ३ कलह करवो, ४ धनुषादि कला शिखवी, ५ कोगला करवा, ६ तवोल खावां, ७ तवोलनो ठंगाल नाखवो, [illegible] देवी, ९ दिशामात्रा करवी, १० हाथप्रमु-

खधोवा, ११ केशसमारवा, १२ नख समारवा, १३ लोही नाखवुं, १४ सुखडी प्रमुख खावुं, १५ गुंमडा प्रमुखनी त्वचा नाखवी, १६ ओषधखातां पित्त नाखवुं. १७ वमन करवुं, १८ दांत उखडेलो नाखवो, १९ हाथ पग मसलाववा, २० घोडाप्रमुख बांधवा, २१ दांतनो मेल नाखवो, २२ आंखनो मेल नाखवो, २३ नखनो मेल नाखवो, २४ गालनो मेल नाखवो, २५ नाकनो मेल नाखवो, २६ माथानो मेल नाखवो, २७ शरीरनो मेल नाखवो, २८ काननो मेल नाखवो, २९ जूतादि खिली लेवावास्ते मंत्रसाधवा, वा राजाप्रमुखनुं काम होय, तेनो विचार करवो, ३० मंदिरमां विवाह प्रमुखनी पंचात करवी, ३१ व्यापारनां लेखां करवां, ३२ राज्यनु काम वेहेंची आपवु, अथवा जाइप्रमुखने धननो हिस्सो वेहेंची आपवो, ३३ घरनो जंडार मंदिरमां राखवो, ३४ पगउपर पगराखी खराव आसन करी वेसवुं, ३५ मंदिरनी जीतउपर ठाणा थापवां, ठाणनो ढगलो करवो, ३६ वस्त्र सुकववां, ३७ दाल दलवी, ३८ पापड वडी सुकववी, ३९ वडां वनाववां, उपलक्षणथी केर, चीजडां, शाकप्रमुख सुकववा नाखवां, ४० राजा प्रमुखना लेणदारना जयथी नासी मूलगजारामां संताइ जवु, ४१ पुत्रकलत्रादिना मरणथी मंदिरमां रोवुं, ४२ राज्यकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्तकथा आ चार विकथा करवी, ४३ धनुषादि शस्त्र घटवां, ४४ गाय, वलदप्रमुख राखवा, ४५ टाढ उडाडवा अग्नि तापवो, ४६ धान्यादि रांधवां, ४७ रूपैआ परखवा, ४८ विधिथी निस्सीहि न करवी, ४९ छत्र, ५० पगरखां, ५१ शस्त्र, ५२ चामर, मंदिर वहार न मुकवां, ५३ मन एकाग्र न करवु, ५४ तेलादिनु मर्द्दन करवु, ५५ शरीरना जोगनां सचित्त पुष्पादिनो त्याग न करवो, ५६ हार, मुद्रा, कुंडलादि वहार मुकी, आववुं तेम करवाथी आशातना लागे, कारण के लोकोमां एम केहेवाय के अर्हंतना जक्त सर्व कगाल, जिखारी छे, जेथी जिन मतनी लघुता थाय. ५७ जगवानने देखतांज हाथ न जोडवा, ५८ एकसाडी उत्तरासंग न करे, ५९ मुगट मस्तकपर राखे, ६० माथाउपर मोलीयु लपेटे, ६१ फूलना शहरा राखे, ६२ नालीअरनां छोतरां नाखे, ६३ गेडी खेले, ६४ पिताप्रमुखने जुहार करे, ६५ जांड चेष्टा करे, ६६ तिरस्कार वास्ते हुकारा, टुंकारा करे, ६७ लेणावास्ते धरेणुं घाले, ६८ लडाइ करे, ६९ माथाना वाल सुकवे, ७० पलोंठी मारी वेसे, ७१ लाकडीनी पावडी

पगमां राखे, ७२ पग लांवा करे, ७३ सुखनेवास्ते हाथताली (पुडपुडी) आपे, ७४ शरीरना अवयवो धोइ कीचड करावे, ७५ पगने लागेली धूल उडाडे ७६ जु नाखे, ७७ जोजन जमे, ७८ मैथुनक्रीडा करे, ७९ गुह्य चिह्न उघाडु राखी वेसे, ८० वैद्यकनु काम करे, ८१ क्रयविक्रयरूप वाणिज्य करे, ८२ शय्या वनावी सुवे, ८३ पाणी पीवाने वास्ते माटलु राखे, मंदिरनी परनालनु पाणीले, ८४ स्नान करवानी जगा वनावे आ उत्कृष्ट चोराशी आशातना जिनमदिरमां वर्जे

हवे गुरुनी तेत्रीश आशातना लखीये ठीये १ गुरुनी आगल चालवु ते आशातना छे, परंतु रस्तो वतावचा वास्ते चाले तो आशातना नथी. २ गुरुनी वरावर चालवु, गुरुथी पाछल अडकीने चालवु, आ चालवानी जेम त्रण आशातना कही, तेम वेसवानी त्रण आशातना, तेमज उजा रहेवानी त्रण आशातना जाणवी, एम नव आशातना थइ, १० जोजन करता गुरुनी पेहेलां शिष्ये चलु करवु, ११ गमनागमन गुरुना पेहेलां आलोववु, १२ रात्रिमा गुरु पुछे के कोण जागे छे? एम सवाल साजलतां छतां, अने जागतां छता उत्तर न आपवो, १३ जो कोइने कांइ कहेवु होयतो गुरुनी पहेलां शिष्ये कही देवु, १४ वीजा साधुउनी पासे अशनादि आलोवे, पछी गुरुपासे आलोवे १५ तेवीज रीतें अशनादि प्रथम वीजा साधुने वतावे, पछी गुरुने वतावे, १६ अन्नादिवास्ते प्रथम वीजा साधुउने निमंत्रणा करे, पछी गुरुने निमंत्रणा करे, १७ गुरुने पुछ्याविना वीजाउने स्निग्ध, मधुरादि आहार आपी दे, १८ स्वेछाथी, गुरुने यत्किंचित् आहार आपी, पोते स्निग्धादि आहार खाय, १९ गुरु वोलावे तो वोले नहि, गुरुने वहुज कठोर वचन कहे, २१ ज्यारे गुरु वोलावे, त्यारे आसन उपर वेठांज उत्तर आपे, २२ गुरु वोलावे त्यारे वोले के शु कहो छो? २३ गुरुने टुंकारा करे, २४ गुरु प्रेरणा करे, त्यारे गुरुनी प्रेरणाने उत्तर आपी हणे, जेम के गुरु कहे के हे शिष्य! तमे अमुक ग्लाननी वैय्यावच्च केम न करी, त्यारे शिष्य कहे तमे केम करता नथी? २५ गुरु कथा करे त्यारे मनमां प्रसन्न न थाय, परंतु विमन राखे २६ सूत्रादि कहेतां गुरुने कहे के, तमने अर्थ याद नथी? तेनो अर्थ आ प्रमाणे थतो नथी? २७ गुरु कथा करे, ते कथानी वचमा जागपाडे, अने

कहे के हुं कथा करीश. २७ परखदाने विखेरे, कहे के हवे निक्तानो अवसर थयो छे, इत्यादि, २९ परखदा उव्याविना गुरुनी कहेली कथाने, पोतानी चतुराइ देखाडवा वास्ते विशेष करी कहे, ३० गुरुनी शय्या संथाराने पगथी संघट्टो करे, ३१ गुरुनी शय्याउपर वेसवाप्रमुख करे, ३२ गुरुथी उंचे आसने वेसे, ३३ गुरुनी वरावर आसन करे आ तेत्रीश गुरुनी आशातना शिष्य वर्जे.

आ गुरुनी आशातना त्रण प्रकारनी छे. पगादिथी संघट्टो करे ते जघन्य आशातना श्लेष्म, थुंकादि गुरुने लवमात्र लगावे, ते मध्यम आशातना. गुरुनो आदेश न करे, जो करे तो पण उलटो करे, कठोरवचन वोले, गुरुनुं कह्युं न सांजले, ते उत्कृष्ट आशातना छे.

स्थापनाचार्यनी आशातना पण त्रण प्रकारनी छे, अहीं तहीं हलावे चलावे, पगनो स्पर्श करे ते जघन्य आशातना, जूमि उपर नाखे, वा अवज्ञाथी धारण करे ते मध्यम आशातना; स्थापनाचार्यने खोवे तथा त्रोडे ते उत्कृष्ट आशातना छे, तेवीजरीतें ज्ञानोपकरण, दर्शनोपकरण, तथा चारित्रोपकरण, रजोहरणादि, मुखवस्त्रिका, दंडक, दंडिका प्रमुखनी पण आशातना टाले

श्रावकें सर्वधर्मोपकरण चरवला, मुहपत्ति प्रमुख विधिपूर्वक स्वस्थानमां स्थापना प्रमुख करवी जोइए, अन्यथा धर्मनी अवज्ञा प्रमुख दूषणो लागे शास्त्रमां लख्यु छे के जे उत्सूत्र जाखे, तथा अर्हंत अने गुरुनी अवज्ञा प्रमुख महाआशातना करे ते सावद्याचार्य, मरीचि, जमालि, कुलवालुकादिनी पेठे अनंत जन्म मरणनी वृद्धि करे यत ॥ उस्सुत्त जासगाणं, वोही नासो अणत संसारो ॥ पाणच एवि धीरा, उस्सुत्तं तान जासंति ॥ १ ॥ तिछयर पवयण सुयं, आयरियं गणहरं महिढ्ढियं ॥ आसाय तो वहुसो, अणंत ससारिउ होई ॥ २ ॥

तेवीजरीतें देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य तथा गुरु द्रव्य, वस्त्र, पात्रादि, तेनो विनाश यतो देखी, वचाव नहि करतां उपेक्षा करवी, ते पण महा आशातना छे. यदूचे ॥ गाथा ॥ चेइअ दव विणासे, इसिधाए पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थ जंगे, मूलग्गी वोहि लाजस्स ॥ १ ॥ तथा श्रावक दिनकृत्य, दर्शनशुद्धि आदि शास्त्रोमां लख्युं

पगमा राखे, ७२ पग लांबा करे, ७३ सुखनेवास्ते हाथताली (पुडपुडी) आपे, ७४ शरीरना अवयवो धोइ कीचड करावे, ७५ पगने लागेली धूल उडाडे ७६ जु नाखे, ७७ भोजन जमे, ७८ मैथुनक्रीडा करे, ७९ गुह्य चिह्न उघाडु राखी बेसे, ८० वैद्यकनु काम करे, ८१ क्रयविक्रयरूप वाणिज्य करे, ८२ शय्या बनावी सुवे, ८३ पाणी पीवाने वास्ते माटलु राखे, मंदिरनी परनालनु पाणीले, ८४ स्नान करवानी जगा बनावे आ उत्कृष्ट चोराशी आशातना जिनमंदिरमां वर्जे

हवे गुरुनी तेत्रीश आशातना लखीये छीये १ गुरुनी आगल चालवु ते आशातना छे, परतु रस्तो बतावबा वास्ते चाले तो आशातना नथी २ गुरुनी बराबर चालवु, गुरुथी पाछल अडकीने चालवु, आ चालवानी जेम त्रण आशातना कही, तेम बेसवानी त्रण आशातना, तेमज उभा रहेवानी त्रण आशातना जाणवी, एम नव आशातना थइ, १० भोजन करतां गुरुनी पेहेलां शिष्यें चलु करवु, ११ गमनागमन गुरुना पेहेलां आलोववु, १२ रात्रिमा गुरु पुछे के कोण जागे छे? एम सवाल सांभलता छतां, अने जागतां छता उत्तर न आपवो, १३ जो कोइने कांइ कहेवु होयतो गुरुनी पहेलां शिष्यें कही देवु, १४ बीजा साधुउनी पासे अशनादि आलोवे, पछी गुरुपासे आलोवे १५ तेवीज रीतें अशनादि प्रथम बीजा साधुने बतावे, पछी गुरुने बतावे, १६ अन्नादिवास्ते प्रथम बीजा साधुउने निमंत्रणा करे, पछी गुरुने निमंत्रणा करे, १७ गुरुने पुछ्याविना बीजाउने स्निग्ध, मधुरादि आहार आपी दे, १८ स्वेछाथी, गुरुने यत्किंचित् आहार आपी, पोते स्निग्धादि आहार खाय, १९ गुरु बोलावे तो बोले नहि, गुरुने बहुज कठोर वचन कहे, २१ ज्यारे गुरु बोलावे, त्यारे आसन उपर बेठांज उत्तर आपे, २२ गुरु बोलावे त्यारे बोले के शु कहो छो? २३ गुरुने तुकारा करे, २४ गुरु प्रेरणा करे, त्यारे गुरुनी प्रेरणाने उत्तर आपी हणे, जेम के गुरु कहे के हे शिष्य! तमे अमुक ग्लाननी वैय्यावच्च केम न करी, त्यारे शिष्य कहे तमे केम करता नथी? २५ गुरु कथा करे त्यारे मनमां प्रसन्न न थाय, परतु विमन राखे २६ सूत्रादि कहेता गुरुने कहे के, तमने अर्थ याद नथी? तेनो अर्थ आ प्रमाणे थतो नथी? २७ गुरु कथा करे, ते कथानी वचमा भगपाडे, अने

कहे के हुं कथा करीश. २८ परखदाने विखेरे, कहे के हवे जिमवानो अवसर थयो छे, इत्यादि, २९ परखदा उठ्याविना गुरुनी कहेली कथाने, पोतानी चतुराइ देखाडवा वास्ते विशेष करी कहे, ३० गुरुनी शय्या संथाराने पगथी संघट्टो करे, ३१ गुरुनी शय्याउपर वेसवाप्रमुख करे, ३२ गुरुथी उंचे आसने वेसे, ३३ गुरुनी वरावर आसन करे आ तेत्रीश गुरुनी आशातना शिष्य वर्जे.

आ गुरुनी आशातना त्रण प्रकारनी छे. पगादिथी संघट्टो करे ते जघन्य आशातना श्लेष्म, थुंकादि गुरुने लवमात्र लगावे, ते मध्यम आशातना. गुरुनो आदेश न करे, जो करे तो पण उलटो करे, कठोरवचन वोले, गुरुनुं कह्युं न सांजले, ते उत्कृष्ट आशातना छे.

स्थापनाचार्यनी आशातना पण त्रण प्रकारनी छे, अहीं तहीं हलावे चलावे, पगनो स्पर्श करे ते जघन्य आशातना, भूमि उपर नाखे, वा अवज्ञाथी धारण करे ते मध्यम आशातना; स्थापनाचार्यने खोवे तथा त्रोडे ते उत्कृष्ट आशातना छे, तेवीजरीते ज्ञानोपकरण, दर्शनोपकरण, तथा चारित्रोपकरण, रजोहरणादि, मुखवस्त्रिका, दंडक, दंडिका प्रमुखनी पण आशातना टाले

श्रावके सर्वधर्मोपकरण चरवला, मुहपत्ति प्रमुख विधिपूर्वक स्वस्थानमां स्थापना प्रमुख करवी जोइए, अन्यथा धर्मनी अवज्ञा प्रमुख दूषणो लागे. शास्त्रमां लख्युं छे के जे उत्सूत्र जाखे, तथा अर्हंत अने गुरुनी अवज्ञा प्रमुख महाआशातना करे ते सावद्याचार्य, मरीचि, जमालि, कुलवालुकादिनी पेठे अनंत जन्म मरणनी वृद्धि करे यत. ॥ उस्सुत्त जासगाण, वोही नासो अणत संसारो ॥ पाणच्च एवि धीरा, उस्सुत्तं ता न जासति ॥ १ ॥ तित्थयर पवयण सुयं, आयरियं गणहरं महिढ्ढियं ॥ आसाय तो वहुसो, अणंत ससारिउ होई ॥ २ ॥

तेवीजरीतें देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारण द्रव्य तथा गुरु द्रव्य, वस्त्र, पात्रादि, तेनो विनाश थतो देखी, वचाव नहि करतां उपेक्षा करवी, ते पण महा आशातना छे. यदूचे ॥ गाथा ॥ चेइअ दव्व विणासे, इसिधाए पवयणस्स उड्डाहे ॥ संजइ चउत्थ जंगे, मूलग्गी वोहि लाजस्स ॥ १ ॥ तथा श्रावक दिनकृत्य, दर्शनशुद्धि आदि शास्त्रोमां लख्युं

छे के ॥ गाथा ॥ चेइअ दव्व साहा, रणं च जो डुहइ मोहि अमईउ ॥ धम्मंच सोनयाणाइ, अहवा वद्धाउउ न रए ॥ १ ॥ अर्थ.–चैत्यद्रव्य तथा साधारणद्रव्यनो जे मोहितमति नाश करे, ते कां तो धर्म जाणतो नथी, अथ वा तो तेणें नरकनु आयुष्य बांधेलु छे, तेज कारणथी एवु अयोग्य काम करे छे, वली चैत्यद्रव्यनो नाश, भक्षण तथा उपेक्षण कोइ करतो होय, तेने जो साधु न हठावे, तो ते साधु पण अनंत संसारी थइ जाय

प्रश्न.– मन, वचन, कायाथी जेणें सावद्यनो त्याग करेल छे, एवा यतिने चैत्यद्रव्यनी रक्षा करवानो शुं अधिकार छे ?

उत्तर.– जो राजा, वजीर के शेठ प्रमुखनी याचना करी तेउनी पासेथी घर, डुकान, गामादि लइ विधिथी नवी पेदाश उत्पन्न करे तो तारु विवक्षित दूपण लागशे, परंतु यथा भद्रकादिथी जे कोइए प्रथम आपेल होय, तेनो नाश थतो देखी रक्षण करे तो कांइ दूपण लागतु नथी, वलके जिनाज्ञानी आराधना होवाथी धर्मनी पुष्टि थाय छे

नवा जिनमदिर वनाववाथी, जे पूर्वे वनेलां छे, तेना प्रतिपथि अर्थात् शत्रुने जो साधु हठावे, तो ते साधुने प्रायश्चित्त नथी, तथा ते साधुनी, प्रतिज्ञा पण भग थती नथी आगम पण एमज कथन करे छे ते कारणथी जिनद्रव्य जे खाय तथा उपेक्षा करे, ते श्रावक आगलना जन्ममां वुद्धिहीन थाय, अने पापकर्मथी लेपायमान थाय छे यथा ॥ आयण जो भजइ, पडिवन्न धण न देइ देवस्स ॥ नस्संतं समुविखइ, सोविहु परिभमइ संसारे ॥ १ ॥ अर्थ.– जे पुरुष मदिरनी आमदानी भांगे, अने जे मोढेथी वोल्याछतां, जिनद्रव्य न आपे, ते पण संसारमां परिभ्रमण करे. तथा ॥ जिणवयण वुड्ढिकर, पभावग नाण दंसण गुणाण ॥ भखतो जीणदव्व, अणत संसारीउ होई ॥ १ ॥ अर्थ.– जे जिनमतनी वृद्धि करे, चैत्यपूजा, चैत्य समारवां, महापूजा, सत्कारादि करी, ज्ञान दर्शननी प्रभावना करे, परंतु जिनद्रव्यनो नाश करे, तो ते अनंतससारी थाय, अने जो जिनद्रव्यनी रक्षा करे तो अल्पससारी थाय, देवद्रव्यनी वृद्धि करे तो तीर्थंकर नाम कर्म वाधे, परंतु पदर कर्मादान, असत्य व्यापार दूर करी सद्व्यवहारथी जिनद्रव्यनी वृद्धि करे ॥

यतः ॥ जिणवर आणा रहियं, वद्धारंतावि केवि जिणदवं ॥ बुड्डंति ज-वसमुद्दे, मूढा मोहेण अन्नाणी ॥ १ ॥

कोइ कहे छे के श्रावक विना बीजाउने तेउना अधिक किंमतना दागीना राखीने कालांतरे व्याजनी वृद्धि करे, ते उचित छे. एम कहेवु पण ठीक छे, कारण के सम्यक्त्वपचीशी आदि ग्रंथोमां संकाशनी कथामां तेमज लखेल छे. चैत्यद्रव्य जक्षण करवाथी बहुज कष्ट पामवु पडे छे सागर श्रेष्टिवत् ॥ आ कथा श्राद्धविधि ग्रंथथी जाणवी ज्ञानद्रव्य पण देवद्रव्यनी जेम अकल्पनीय छे, अर्थात् तेनो पण नाश न करवो, जक्षण न करवुं, अने वगडतां तेनी सार संजाल करवी, तेवीज रीतें साधारण द्रव्य पण संघनी अनुज्ञाथीज कल्पे छे. अनुज्ञाविना काममां लेवु न कल्पे संघें पण साते क्षेत्रमांज साधारण द्रव्य वापरवु जोइए. बीजा मागनाराउने पण तेमांथी आपवु न जोइए. तेवीज रीते ज्ञान संबधी कागल, पत्रादि, साधुनुं आपेलु श्रावकें पोताना कार्यमां नहि वापरवुं जोइये पोतानी पोथीमां पण नही राखवु जोइए स्थापनाचार्य अने जपमालादि लइ लेवानो व्यवहार तो देखाय छे, तथा गुरुनी आज्ञा विना साधु साध्वीए लिखिया पासे लखाववु तेमज वस्त्र सूत्रादिनुं लेवु पण कल्पतुं नथी. इत्यादि विचारी लेवुं ते कारणथी थोडा पण ज्ञान तेमज साधारण द्रव्यनो जोग न करवो जोइए.

देवने नामे बोले, ते द्रव्य तत्काल आपवु जोइए, कारण के देवद्रव्य जेटलुं शीघ्र आपे, तेटलुं उत्तम छे. कदापि विलंब करे तो पछी कोण जाणे धनहानि, वा मरण थाय? तेवे प्रसंगे देवद्रव्यनुं ऋण रही जाय. वली संसारी गृहस्थोनुं देवुं पण श्रावकें शीघ्र आपवु जोइए, तो पछी देवद्रव्य वास्ते शुंज कहेवुं? जे वखत माला पेहेरावी, वा जो कांइ देवद्रव्यना जंडारमां आपवानुं कर्युं, तेज वखतथी ते देवद्रव्य थइ चुक्युं. ते द्रव्यथी जे लाज मेलवाय ते पण देवद्रव्य समजवुं ते द्रव्य श्रावकें जोगववुं न जोइए, तेज कारणथी शीघ्र आपी देवु जोइए जो मास आदि पछी आपवानो करार करे तो करार उपर माग्या विना जरुर आपी देवुं. जो करार वित्याबाद आपे तो देवद्रव्य खावानो दोष लागे. देवद्रव्यनी उघराणी पण श्रावक पोतानी उघराणीनी पेठे यत्नथी

करे जो देवद्रव्य लेवामां ढील करे, अने कदाचित् देवादारनी दुर्भिक्ष आदि कारणथी दरिद्रादि अवस्था आवी जाय तो फरी मलवु मुश्केल थइ जाय, वली देनार पण उत्साहपूर्वक कपटरहित थइ शीघ्र आपी दे, नही तो देवद्रव्य भक्षण करवानो दोष छे

वली देव, ज्ञान तथा साधारण संबधी दुकान, खेतर, वाडी, घर, पत्थर, इट, चुनो, काष्ठ, वांस, माटी, खडी, चदन, केशर, बरास, फूल, चगेरी, धूपपात्र, कलश, वासकुंपी, छत्र, सिंहासन, चामर, चदरवा, झालर, भेरी, चदनी, तंबु, कनात, पडदा, कावल, बाजोठ, तखता, पाटला, पाटी, घडा, वेठा, ओरसीआ, काजल, जल, दीवा, चैत्यशाला, परनालनु पाणी इत्यादि सर्व देव विगेरेनु पोताना काममां न वापरवु जोइये तुटी जाय, फाटीजाय, वा मलिन थायतो महादोष लागेछे देवनी पासे बलता दीवाना प्रकाशमा कोइ सांसारिक काम करे तो ते मरीने तिर्यंच थाय, ते कारणथी देवना दिवामां खतपत्रादि वांचवा न जोइये रुपीआपण न परखवा. घरना काम तो करवांज नहि. वली देवना केशर चंदननु तिलकपण न करवुं देवना जलथी हाथ पण न धोवा स्नात्रजलपण थोडुज वापरवु जोइये देवना झालर, मृदंग, भेरीप्रमुख जे जे सामान, गुरु तथा संघना कार्यमां वापरे, तो ते बाबतनो नकराणो आपी वापरे कदाचित् कोइ उपकरण तुटी जायतो पोताना पैसा खरची नवु बनावी आपे देवना दीप फानस प्रमुखमां जुदाज राखे, अने जो साधारण द्रव्यनी झालर प्रमुख वस्तुओ बनावे तो सर्व धर्मकार्यमां वापरी शकाय तेमां दोष नथी. जेवा भावथी करे, तेवु प्रमाण छे

देवना तथा ज्ञान खातानां घर प्रमुख पण श्रावके निःशुकतादि दोष होवाथी भाडे राखवां न जोइये साधारण द्रव्यना घरप्रमुख संघनी अनुमतिथी लोकव्यवहारें भाडु आपी वापरे तो दोष नथी, परंतु भाडु करारने दिवसे पोतानीमेले आपी देवु जोइये भाडे राखेलु मकान समरावबामा पोतानु धन वापरे तो हिसाबमा मजरे ले तेमां दोष नथी, कोइ साधर्मी दुःखी होय, निर्धन थइ गयो होय, अने ते संघनी आज्ञाथी भाडु आप्याविना रहे तोपण दोष नथी वली तीर्थादिमा अथवा देरासरमां बहु वरसत रेहेवु पडे, तेमा सुवे, तो त्यांपण व्यवहार मुजब अधिक भाडु

आपे, उलुं जाडुं आपे तो दोष लागे. जाडुं आप्याविना देव ज्ञान तथा साधारण संवधी कलश, पाटला प्रमुख उपकरणो उजमणामां, पुस्तक पूजामां, नंदी प्रमुखमां मांडवासारु न लेवां जोइये, कारण के उजमणां पोताना नामथी करवामां आवेछे, अने तेमां देव, ज्ञान, वा साधारण खातानी वस्तुउ नकरा शिवाय वपराय तो दोष लागेछे.

घर देरासरमां चडाववामां आवेला अक्षत, सोपारी, वदाम, प्रमुख वेचवाथी जे धन उपजे, तेनां पुष्प प्रमुख लइ घरदेरासरमां न चडावे, मोटामंदिरमां पण न चडावे जे पूजारी होयतेने सर्व हकीकत कहे, अने मंदिरनु द्रव्य छे, पण मारु नथी एम स्पष्ट कहे. पूजारी न होय तो संघसमक्ष कही दे. एम न कहे तो महादोष छे घरदेरासरनुं नैवेद्यादि मालीने आपे, परंतु तेथी मालीनी नोकरी हिसावमां न ले प्रथमथीज जोइती पुष्पादि वस्तु आपवी एवा करारथी काम ले तो दोष नथी. मुख्यवृत्तिये तो नोकरीवास्ते चडेलुं आपवाथी जुडुं आपवु जोइये

घरदेरासरमां चडेला अक्षत प्रमुख मोटा मंदिरमां मोकलावी आपे, अन्यथा घरदेरासरना द्रव्यथी घरदेरासरनी पूजा गणाशे, परंतु पोताना द्रव्यनी थशे नहि तेम करवाथी अनादर, अवज्ञादि दोष छे, तेथी तेम करवु युक्त नथी. स्वद्रव्यथीज पूजा करवी उचित छे. देरानां नैवेद्य, अक्षतादि पोताना द्रव्यनी जेम साचववां जोइये, वरावर किमते वेची, देव द्रव्य वधारवु जोइये परंतु जेम तेम वेची आपी देवा न जोइये. जो तेम करे तो देवद्रव्य नाश करवानो दोष लागेछे

सर्व रीते रक्षण करतां छतां चोर, अग्नि आदिना उपद्रवथी देवद्रव्यनाश पामे तो चिंताकारकने दोष नथी.

देव, गुरु, यात्रा, तीर्थपूजा, सघपूजा, साधर्मिवात्सल्य, स्नात्रप्रभावना, ज्ञान लखाववा प्रमुख कारणोवास्ते वीजाउ पासेथी धन ले, त्यारे चार पांच पुरुषोने साक्षी राखी ले, पछी खरचवाना प्रसंगमां पण गुरुसंघ प्रमुख प्रगट कही दे, के आ धन में अमुक सख्सनु आपेलुं खरचेलु छे मारुं नथी.

तीर्थादिमां, तेमज पूजा स्नात्रमां, ध्वजा चडाववा प्रमुख आवश्यक कर्त्तव्यमां खरच वीजाने शिर नहि नाखतां, पोतेज यथाशक्ति करे जो कोइये धन खरचवाने आप्युं होय तो तेनुं नाम प्रगट वोली काम करे.

जो घणाये मली साधर्मिवात्सल्य, संघपूजादि कार्यमां धन वापरवा आप्यु होय तो जेनो जेनो जेटलो जेटलो हिस्सो होय ते ते सर्व प्रगटपणे कही दे, नहिं तो पुण्यफलनी चोरी लागे

वली मरणांत समये माता, पिता प्रमुखें जे धर्ममां खरचवा कह्युं होय, तथा पुत्रादि जे खरच करवुं कबुल करे ते बहु श्रावकोपासे कही देवु जोइए जेम के हु तमारा नामथी अमुक दिवसनी अंदर अमुक धन खर्चीश, तमे तेनी अनुमोदना करो पछी ते धन सर्व समक्ष, पोताना नामथी नही, परतु माता पिता प्रमुखना नामथी ते मुदतनी अंदर खरची देवु जोइए. धर्मनां खरच मुख्यवृत्तिए तो साधारण द्रव्यथीज करवां जोइए, कारण के ज्यां ज्यां काम पडे, त्यां त्यां उपयोगमां आवे सात क्षेत्रोमां जे क्षेत्र सीदातुं होय, तेमां धन खरची, तेने टेको आपे कोइ श्रावक निर्धन थइ गयो होय तो, तेने तेज धनथी सहाय आपे ॥लोकेप्युक्त॥ दरिद्र नर राजेंद्र, मा समृद्धं कदाचन ॥ व्याधितस्यौपध पथ्यं, नीरोगस्य किमौपधं ॥ १ ॥ तेज कारणथी, परभावना, संघ पेहेरामणी तथा लाणीप्रमुखमां, जे निर्धन साधर्मी होय, तेने विशेष वस्तु आपवी जोइये, अन्यथा धर्म अवज्ञादि दोष लागे वली धनवानथी निर्धनने अधिक देवु ते पण युक्तछे. जो शक्ति न होयतो बनेने बराबर आपे

पोतानो खरच धर्मद्रव्यथी न करवो जोइये यात्रादि निमित्त जे धन काढवामां आवे, ते सर्व देवादि निमित्त थयु जो ते द्रव्य पोताना भोजनमां अथवा गाडी प्रमुख भाडामा वापरे तो अवश्य तेने देवद्रव्य खावानो दोष लागे कदाचित् अज्ञानताथी, चूकथी, बे समजथी, इत्यादि कारणथी कोइ श्रावक देवादि द्रव्यनो उपभोग करी ले, तेना प्रायश्चित्तमां, जेटलुं द्रव्य तेणें उपभोगमां लीधु होय तेटलु द्रव्य देव, साधारण संबंधी जुदु काढे मरणसमये शक्तिना अभावथी धर्मस्थानमा थोडु खरचे, परतु देवु कोइनु राखे नहि देवप्रमुखनुं द्रव्य तो विशेषे करी राखे नहि ए प्रमाणे श्रीजिनराजनी पूजा, भक्ति, द्रव्य रक्षणादि दृढ भावथी करवां जोइये इति

हवे गुरुवंदनविधि लखीये छीये ज्ञानादि पांच आचार संयुक्त होय,

तथा जे शुद्ध प्ररूपक होय, ते गुरु छे. पांच आचारनुं स्वरूप जोवुं होय तो, श्रीरत्नशेखरसूरिकृत आचारप्रदीप ग्रंथ जोइ लेवो.

पूर्वोक्त गुरु, आचार्य प्रमुख सन्मुख, जे प्रत्याख्यान पूर्वं पोते पोतानी मेले कर्युं हतु, ते विशेष रीतें विधिपूर्वक गुरुमुखथी उचरावे; कारण के प्रत्याख्यान त्रणतरेहथी करवामां आवेछे. १ आत्मसाक्षिक, २ देवसाक्षिक, ३ गुरुसाक्षिक, तेनो विधि आ छे—

गुरु, मंदिरमां देववंदनार्थे, स्नात्रादि देखवावास्ते, धर्मोपदेश देवावास्ते, जिनमंदिरमां आव्या होय, तथा वस्तिमां होय, त्यां मंदिरनी जेम त्रण निस्सिहि, पांच अनिगमनादि, यथायोग्य विधिपूर्वक जइ गुरु धर्मोपदेश आपे ते पहेलां अथवा पछी यथाविधियें पचवीश आवश्यक, शुद्ध द्वादशावर्त्त वंदन करे; गुरुवंदननु फल बहुज मोटुं छे. कृष्णवासुदेववत् नाष्यमां वंदनाना त्रण प्रकारछे एक तो मस्तक नमाववु ते फेटावंदना, बीजी संपूर्ण बे खमासणां प्रमुख कहेवां ते स्तोत्रवंदना, त्रीजी द्वादशावर्त्त करवाथी, द्वादशावर्त्तवंदना थाय छे. प्रथमनी वंदना सर्व संघने करवी; बीजीवंदना सर्व स्वदर्शनी साधुउने करवी, अने त्रीजी वंदना पदवीधर आचार्य प्रमुखने करवी.

जेणे सवारनुं पडिकमणुं न कर्युं होय, तेणें विधिपूर्वक वंदना करवी, कारण के नाष्यमां लख्युं छे के, सवारनो वंदनाविधि आ प्रमाणे करे. प्रथम १ नाष्योक्तविधियें इर्यापथ प्रतिक्रमे, पछी २ कुस्थाननो कायोत्सर्ग करे, सो उह्वास प्रमाण करे, जो स्वप्नमां स्त्रीसाथे संगम कर्यो होय तो अशुचिनी सर्व जगा धोइ, पछी एक सो आठ श्वासोह्वास प्रमाण कायोत्सर्ग करे पछी ३ चैत्यवंदन करे. पछी ४ क्षमाश्रमणपूर्वक मुहपत्ति प्रतिलेखे, पछी ५ बे वंदणां दे, पछी ६ देवसि आदिक आलोवे, पछी ७ वांदणां दे, पछी, ८ अप्नुठिउमि कहे, पछी ए बे वांदणां दे, पछी १० प्रत्याख्यान करे, पछी ११ नगवान अर्हं इत्यादि चार क्षमाश्रमण दे, पछी १२ स्वाध्याय संदिसाहु कहे, पछी क्षमाश्रमणपूर्वक सद्याय करुं एम कहे, पछी स्वाध्याय करे

हवे संध्यावंदनविधि लखीयें छीयें. १ इर्यापथ पडिकमे, पछी २ चैत्यवंदन करे, पछी ३ क्षमाश्रमणपूर्वक मुखवस्त्रिकानुं प्रतिलेखन करे, प-

ठी ४ वे वांदणां दे, पठी ५ दिवसचरिमनुं प्रत्याख्यान करे, पठी ६ वेवांदणां दे, पठी ७ देवसि आलोउ कहे, पठी ८ वे वांदणां दे, पठी ए अप्युठिउं कहे, पठी १० जगवान् आदि चार स्तोजवंदना करे, पठी ११ देवसि प्रायश्चित्तनो काउसग्ग करे, पठी १२ पूर्ववत् वे खमासमण दइ स्वाध्याय करे

जो गुरुनुं चित्त बीजां कार्य करवातरफ होय, तो संक्षेपमात्र वंदना करे एम वंदनापूर्वक गुरुपासे प्रत्याख्यान करावे, कारण के श्रावक प्रज्ञप्तिसूत्रमां लख्युं ठे के, प्रत्याख्यान करवाना परिणाम दृढ होय तो पण, गुरुपासे प्रत्याख्यान करे, गुरुपासे प्रत्याख्यान करवामा चार गुण ठे १ दृढता थायठे, २ आज्ञापालन थायठे, ३ कर्मनो क्षय थाय ठे, ४ उपशमनी वृद्धि थाय ठे

एविज रीते देवसिक, चातुर्मासिक नियमादि पण गुरु विद्यमान ठतां, गुरुनी साक्षियेज करवा जोइये योगशास्त्रमा गुरुनी जक्ति आ प्रमाणे कहीठे तथा ॥ अभ्युत्थानं तदालोके,ऽजियानं च तदागमे ॥ शिरस्यजलिसंश्लेषः, स्वयमासनढौकनं ॥ १ ॥ आसनाजिग्रहोजक्त्या, वंदना पर्युपासनं ॥ तद्यानेऽनुगमश्चेति, प्रतिपत्तिरिय गुरौ ॥ २ ॥ अर्थ—१ गुरुने आवता देखी उजा थवु, २ सन्मुख लेवा जवु, ३ मस्तक उपर अजलि बाधी प्रणाम करवा, ४ आसन देवु, ५ ज्यारे गुरु आसन उपर वेसे, त्यारे मारे वेसवु एवो अजिग्रह करवो, ६ जक्तिथी वंदना, पर्युपासना करवी, ७ ज्यारे गुरुजाय त्यारे पहोंचाडवा जवु, वली १ गुरुने अडी वरावर न वेसे, २ गुरुथी आगल न वेसे, ३ गुरुनी तरफ पीठ दइ न वेसे, ४ गुरुनी पासे पग उपर पग चडावी न वेसे, ५ पलोठी मारी न वेसे, ६ हाथथी जघा लपेटी न वेसे, ७ पग पसारी न वेसे, ८ विकथा न करे, ए बहु हसे नहि १० निद्रा ले नहि, ११ मन, वचन, काया गोपवी, वे हाथ जोडी, जक्ति बहुमानपूर्वक, उपयोगसहित सांजले साराश के गुरुपासे धर्म सांजलवाथी आ लोक तथा परलोक सबधी बहु गुणो प्राप्त थायठे

वली गुरुने पुछे, साहेब ! कोइ साधु रागग्रस्त ठे, तो वैद्यने वोलावु ? औषधादि उपचारवास्ते फरमावो ? गुरुना फरमान मुजब करे गुरु गच्छनी सर्व तरेहथी सार सजाल ले जोजनने अवसरे उपाश्रये जइ साधुने निमंत्रणा करे, वली औषध प्रमुख जे जेने पथ्य होय ते तेने आपे ज्यारे

साधु, श्रावकने घेर आवे, त्यारे जे जे वस्तु साधुने योग्य होय, ते ते सर्व वस्तु देवावास्ते निमत्रणा करे. सर्व वस्तुउनां नाम साधुपासे ले, जो के साधु न लहे तोपण दाताने जीर्णशेठवत् पुण्य फल छे. रोगी साधुनी वैयावच्च करवाथी जीवानंद वैद्यवत् महापुण्य फल थायछे. साधुउने रहेवा वास्ते स्थान आपे, जिनशासनना प्रत्यनीकने सर्वशक्ति वापरी निवारण करे. साधवीउनी डुष्ट, नास्तिक, डुःशील पुरुषोथी रक्षा करे पोताना घरनी पासे वदोवस्तवाला, सुंदर उपाश्रय रहेवा आपे, ते साधवीउनी, पोतानी स्त्री, वहु, वेहेन, दीकरी प्रमुख पासे सेवाजक्ति करावे. पोतानी दीकरीउने साधवीउ पासे विद्या शिखवा मोकले. जो कोइ दीकरीने विद्याज्यास करतां वैराग्य थाय, तो साधवीने आपे. जो कोइ साधवी धर्मकृत्य जूली जाय, तो स्मरण करावे. जो कोइ साधवी अन्यायमां प्रवृत्ति करे तो तेने निवारे वली पोते दररोज गुरुपासे नवीन नवीन शास्त्र अज्यास करे जो अल्पबुद्धि होय तोपण जणवानो विचार न छोडे. इत्यादि धर्मकृत्य कर्या पछी, श्रावक जो राजा होय तो राजसजामां जाय, प्रधान होय तो, न्यायसजामां जाय, वाणीउ होय तो वजारमां डुकाने जाय, इत्यादि उचित स्थानमां जइ, धर्मथी विरुद्ध न होय ते रीते धन उपार्जन करवानी चिंता करे

हवे राजा केवी रीतें प्रवर्त्ते ते लखीये छीये राजा, दरिद्री मान्य, अमान्य, उत्तम, अधमादि सर्वलोकोनो पक्षपातरहित मध्यस्थरीतें न्याय करे प्रधाननु कर्त्तव्य ए छे के तेणें राजा तथा प्रजा, उजयने नुकशान न थाय तेवी रीतें प्रवर्त्तवु जोइये. कारण के नीतिशास्त्रनो श्लोक छे के जे मंत्री राजानुं हित वांछेछे, तेना उपर प्रजा द्वेष करे छे, अने जे प्रजानुं हित करे छे, तेने राजा तजी देछे, तेथी एवी विषमस्थिति विचारपूर्वक राजा प्रजा बंनेना हितनो प्रधानें विचार करी काम करवां जोइये

वणिक् व्यापारीउनी फरज ए छे के तेमणे व्यापारनी शुद्धि करवी जोइये यदाह ॥ विवहारसुद्धि देसाइ, विरुद्धचाय उचिय चरणेहिं ॥ तो कुणइ अत्यचिंतं,निवाहितो नियंधम्मं ॥१॥ व्यापारनी शुद्धि, देशादि विरुद्धनो त्याग, उचित आचरण, आ त्रण साचवी धन उपार्जनकरवानी चिंता करे वली पोताना धर्मनोपण निर्वाह करे संसारमां एवु कोइ कार्य नथी,

जे धनथी सिद्ध न थाय? ते कारणथी बुद्धिमान् धन उपार्जन करवानो यत्न करे ॥ यदाह ॥ नहि तद्विद्यते किंचि, यदर्थेन न सिद्ध्यति ॥ यत्नेन-मतिमांस्तस्मा, दर्थमेकं प्रसाधयेत् ॥ १ ॥ आश्लोकमां जे अर्थचिंता बतावी, ते अनुवादरूप समजवी, कारण के धन उपार्जन करवानी चिंता लोकमां स्वतः सिद्धछे, कांइ शास्त्रकारना उपदेशथी नथी, अने "धर्म निर्वाहयन्" आ जे कथनछे, ते कहेवायोग्य छे, कारण के तेनी आगल प्राप्ति नथी शास्त्रनो उपदेश अप्राप्त अर्थनी प्राप्ति वास्तेज होय छे, शेष सर्व अनुवादादिरूप छे

हवे आजीविका चलाववाना प्रकार कहीये छीये आजीविका चलाववानां सात साधन छे १ व्यापार करवो, २ विद्याभ्यास करवो, ३ खेती करवी, ४ पशुढंतु पालन करवु, ५ कारीगरी करवी, ६ नोकरी, ७ भीख मागवी १ तेमां व्यापार करवाथी वणिक लोकोनी आजीविका चालेछे, २ विद्याथी वैद्यप्रमुखनी आजीविका चाले छे, ३ खेती करवाथी कणबी प्रमुखनी आजीविका चाले छे, ४ पशुपालनथी गोवाल प्रमुखनी आजीविका चाले छे, ५ शिल्पथी चितारादिनी आजीविका चाले छे ६ नोकरी करवाथी सिपाइ लोकोनी आजीविका चाले छे, ७ भिक्षामां मागीखानाराढंनी आजीविका छे १ व्यापार धान्य, घी, तेल, कपास, सूतर, वस्त्र, धातु, मणी, माणेक, मोती, रुपैआ, सोनैया प्रमुख, तथा जे जे जातनां करीआणां छे, ते सर्वनो व्यापार चाले छे, वली जे व्याज वटाव करवो तेपण व्यापार छे

२ विद्यापण, औषधि, रस, रसायन, चूर्ण अंजनादि, वली वास्तुक शास्त्र, शकुनशास्त्र, भूत भविष्यादि निमित्त, सामुद्रिक, चूडामणी, जवाहिर परीक्षाना शास्त्र, तार्किक शास्त्र, न्यायशास्त्र, धर्म, अर्थ, कामना अनेक भेदथी अनेक प्रकारें छे. आ वैद्यविद्यामां लोभ, वा कपट करवु ते ठीक नहीं, कारण के तेम करवाथी प्रायः दुर्ध्यान थवाथी गुणनी प्राप्ति थती नथी वली जेने जेनाथी लाभ थाय छे, ते तेज वातने चाहेछे तदुक्त ॥ आर्या ॥ विग्रहमिच्छतिभटा, वैद्याश्च व्याधिपीडित लोक ॥ मृतक बहुलं विप्रा, क्षेमसुभिक्षं च निर्ग्रंथा ॥१॥ अर्थ — सुभट संग्राम चाहे छे, वैद्य रोगपीडित लोकोने चाहे छे, ब्राह्मण, लोकोना बहु मरण चाहे छे, अने नि-

ग्रंथ साधु निरुपद्रव अने सुकालने चाहे छे. वली जे वैद अत्यंत लोभी होय, धनवास्ते नुकशानकारक औषध जाणीने आपतो होय, जेना मनमां दया न होय, जे त्यागी, वैरागीने औषध न आपतो होय, जे गरीब अनाथ लोकोपासेथी तेउने मरता जाणतां पण धन खुची लेतो होय, जे मांस मद्यादि अभक्ष्य वस्तु भक्षण करवानुं बतावतो होय, जे खोटां औषध बनावी लोकोने ठगतो होय, एवा वैद्य नरक गतिमां गमन करनारा छे; अने जे वैद्य सात्विक प्रकृतिवाला होय, निर्लोभी होय, अने परोपकारी होय, पूर्वोक्त दूषणो रहित होय, एवा वैद्यने तेनी विद्या श्रीऋषभदेवजीना जीव जीवानंद वैद्यनी जेम बने भवोमां गुण देवावालीछे. एवा वैद्य विद्याथी आजीविका चलावे तो उत्तम छे

३-४ खेती तथा पशुपालन. खेती त्रण प्रकारें थाय छे. १ वरसादथी, २ कुवा, नेहेरथी, ३ बंनेथी. पशुपालन अर्थात् गाय, भेंस, बकरी, उट, बलद, घोडा, हाथी, तेउने वेची आजीविका करवी आ बंने काम आत्मस्वरूपना अभिलाषी विवेकिपुरुषोने करवां उचित नथी. जो निर्वाह न चालतो होय, अने ते काम करवुं पडतु होय तो, बीज वाववानो समय जाणे, भूमि, सरस, नीरस जाणे, इत्यादि खेती संबंधी सारी माहिती मेलवी काम करे तो धनवृद्धि थाय, वली पशुपालन धंधामां पशुउ उपर निर्दयपणु न करे, पशुना कोइ अवयव छेदे नहि, सारी रीते सारसंभाल करे, तो लाभ मेलवे.

शिल्प आजीविका छे. शिल्प सो तरेहना छे, मूल तो शिल्प पांच छे. १ कुंभार, २ लुहार, ३ चितारो, ४ वणकर, ५ नाइ, आ पांचेना वीश वीश भेद छे. यद्यपि आ कालमां न्यून अधिक हशे, परंतु श्रीऋषभ देवजीए प्रथम सो तरेहना शिल्प पर्यायो शिखव्या हता ते कारणथी ते प्रमाणे अत्रे लखेल छे. जे सांसारिक विद्या ते सर्व शिल्पमां छे, बाकी कोइकज कर्ममां छे. शिल्पविद्या गुरुना उपदेशथी प्राप्त थाय छे, अने कर्म, स्वयमेव प्राप्त थाय छे आ कर्म पण सामान्यथी चार प्रकारे छे. १ बुद्धिथी धन कमाववु ते उत्तम. २ हाथथी धन मेलववुं ते मध्यम. ३ पगथी धन मेलववुं ते अधम ४ मस्तके बोजो उठावी कमाववुं ते अधमाधम, समजवु

६ सेवा करी आजीविका करवी ते, सेवा, राजानी, शेठनी तथा सामान्य लोकोनी नोकरी करवी ते. प्रथम तो नोकरी कोइनी पण न करवी जोइए, कारण के नोकरी ते परतंत्रता छे. जो निर्वाह न थतो होय तो नोकरी पण करवी, जेनामां नीचेना गुणो होय, तेवा सरसनी नोकरी करवी १ जे काननो काचो न होय, २ शरमवालो होय, ३ कृतज्ञ होय, ४ सात्विक, गम्भीर, धीर, उदार,शीलवान् गुणोनो रागी होय, तेवा पुरुषनी नोकरी करवी जे क्रूरप्रकृतिवालो होय, कुव्यसनी होय,लोभी होय,मूर्ख होय, निरंतरनो रोगी होय, चतुर न होय, अन्यायी होय, एवा पुरुषनी नोकरी न करवी वली कामदकीय नामना नीतिशास्त्रमां लख्यु छे के, जे राजानी वृद्ध पुरुषोए सेवा करी छे, ते राजा उत्तम छे वली स्वामिए पण जेवो सेवक होय, तेवु सन्मान करवु, ते तेनी फरज छे. सेवक पण जो शेठ थाक्यो होय, भूख्यो होय, क्रोधमां होय, व्याकुल होय, तृषावंत होय, शयन करतो होय, बीजाउ तेनी पासे अरज करता होय, तेवे प्रसगे, विनति न करे वली राजानी माता, राजानी राणी, राजकुमार, मुख्य प्रधान, न्यायाधीश, राजाना दरवान, तेउनी साथे सेवकें राजानी तरेह वर्तना राखवी जोइए. ए प्रमाणे वर्त्ते तो धननी प्राप्ति दुर्लभ न समजवी यथा ॥ इक्षुक्षेत्र, समुद्रश्च, योनिपोषणमेवच ॥ प्रसादोभूभुजां चैव, सद्यो घ्नति दरिद्रतां ॥ १ ॥ निंदंतु मानिनां सेवा, राजादीनां सुखैषिण ॥ स्वजना स्वजनोद्धार, सहारोन विना तथा ॥ २ ॥ मंत्री, न्यायाधीश, सेनानी, सर्वनोकरी, नृपसेवानी अतर्जावी छे, परंतु जेल खानाना दरोगानी नोकरी, नगरना फोजदारनी नोकरी तथा सीमापालनी नोकरी, इत्यादि कनिष्ठ नोकरी न करवी जोइए, कारण के आ नोकरी लोकोपर निर्दयता करावनारी छे, तेथी श्रावकें तो बिलकुल न करवी जोइए. जो कोइ श्रावक राज्याधिकारी थइ जाय, तो वस्तुपाल प्रमुखनी जेम महाधर्म, कीर्त्तिनां कामो करनारो थाय, श्रावक मुख्यवृत्तिए तो सम्यक् दृष्टिनीज नोकरी करे

७ भीख मागी आजीविका करवी ते, भीख मागवाना अनेक प्रकार छे तेमां धर्म उपष्टभ मात्र आहार, वस्त्र, पात्रादिनी भिक्षा लेवी, ते पण जे साधुए सर्व संसार तथा परिग्रहना सगनो त्याग कर्यो छे, तेणे

मागवी उचित छे, कारण के तेने जीख मागवाशिवाय बीजी गति नथी. पूज्यपादश्री हरिजद्र सूरिजीए पोताना पांचमा अष्टकमां जिक्षा त्रण प्रकारें लखी छे. प्रथम सर्वसंपत्करी जिक्षा, बीजी पौरुषघ्नी जिक्षा, त्रीजी वृत्तिजिक्षा छे, जे साधु परिग्रहना त्यागी, धर्मध्यानसंयुक्त, जिनाज्ञापूर्वक षट्कायना आरंजथी रहित, तेनी जे जिक्षा, ते सर्व संपत्करी जिक्षा छे; अने जे साधु तो बन्या छे, परंतु साधुना गुण जेनामां नथी, वली जे गृहस्थावासमां हृष्ट पुष्ट षट्कायना आरंजी, पडिमा वहन नहि करता एवा श्रावक, तथा बीजा गृहस्थ जे मागीने खाय तेनी जे जिक्षा, ते पौरुषघ्नी जिक्षा छे, ते पुरुषो धर्मनी लाघवता करनारा छे, पूर्वजन्ममां जिनाज्ञा खंडन करनारा छे, वली आगल अनंत जन्मसुधी दुःख पामशे जेउं निर्धन, लुला, लंगडा, आंधला, पांगला, असमर्थ, काम करवानी शक्ति विनाना, तेउंनी जे जिक्षा, ते वृत्तिजिक्षा छे. आ जिक्षा दुष्ट नथी. आ जिक्षा करनाराउंथी धर्मनी लाघवता आदि थतां नथी, कारण के जे तेउंने आपे छे, ते अनुकंपा (दया) थी आपे छे. देनारा पुण्य उपार्जन करे छे, ते कारणथी गृहस्थें जीख न मागवी जोइए. जीख मागवाथी धर्मनी निंदा थाय छे, अने धर्मनी निंदाथी दुर्लजबोधी थाय छे जीख मागवाथी उदर पूर्ण तो थाय छे, परंतु लक्ष्मी थती नथी. यत. ॥ लक्ष्मीर्वसति वाणिज्ये, किंचिदस्ति च कर्षणे ॥ अस्ति नास्ति च सेवायां, जिक्षायां न कदाचन ॥ १ ॥ मनुस्मृतिना चोथा अध्यायमां लख्युं छे के, ज्यारे व्यापार करे, त्यारे कष्टमां मदद आपनार पुंजीनुं बल, स्वजाग्योदय, देश, काल देखीने करे, व्यापार शरुआतमां थोडो करे, पछी लाज जाणे तो विशेष करे, कदाचित् निर्वाह न थतां खर कर्म पण करे, तो पण पोते पोतानी निंदा करतां करे देख्या विना, तेमज परीक्षा कर्या विना सोदो न ले, जे सोदो संदेहवालो होय ते, वहुनी साथे मलीने ले, ज्यां स्वचक्र, परचक्र प्रमुखनो उपद्रव न होय, अने धर्म सामग्री होय, ते स्थलमां व्यापार करे.

कालथी, त्रण अठाइ तथा पर्वतिथिने दिन व्यापार न करे. जे वस्तु वर्षाकाल साथे विराधी होय, तेनो त्याग करे; जावथी, जे क्षत्रिय जातिना व्यापारी राजा प्रमुख होय, तेउंनी साथे व्यापार न करे, पोताना

विरोधीने उधारे न आपे, तेमज नट, विट, वेश्या, जुगारी प्रमुखने तो विशेषे करी उधारे न आपे, हथीआर बांधनारानी साथे, तेमज ब्राह्मण व्यापारी साथे लेण देण न करे, लेण देण करवामां व्याजें धीरधार करे त्यारे अधिक किमतना दागीन राखी ते उपर रूपीआ धीरे, कारण के तेथी मागवाथी थतो क्लेश, विरोध, धर्महानि, धरणादि कष्ट थतां नथी जो एम निर्वाह न थाय तो, सत्यवादीने व्याजु उधार धीरे, व्याज पण अधिक न खाय, सेंकडे पाच छ टका सुधीनु खाय, जेथी निंदा न थाय तेम करे,

जो देवु होय तो, करारनी मुदत उपर माग्या विनाज करज आपी दे, कदाचित् निर्धनपणाथी एकज वारे न आपी शके तो किस्तो प्रमाणे जरुर आपी दे, कारण के देवु कोइनुं राखवुं न जोइए यडुक्त ॥ धर्मारंभे ऋणछेदे, कन्यादाने धनागमे ॥ शत्रुघातेऽग्निरोगे च, कालक्षेप न कारयेत् ॥ १ ॥ जो देवु न आपी शकाय, तो लेणदारना नोकर थइ देवु वाले, नही तो जवातरोमां तेना चाकर, पाडा, बलद, उट, गधेडा, खच्चर, घोडा प्रमुख वनी देवुं आपवु पडशे लेणदार पण ज्यारे जाणे के, आ देणदार आपवाने समर्थ नथी, त्यारे विलकुल मागवु छोडी दे, एम कहे के ज्यारे तु आपवाने शक्तिमान् था, त्यारे आपजे, नहि तो आ धन मे धर्ममां वापर्यु छे एम समजवु, पोताना चोपडामां पण हु लखुंछु के तारी पासे मारे काइ पण हवे लेणु नथी

श्रावकें मुख्यवृत्तियें तो धर्मिजनोनी साथेज व्यवहार करवो जोइये, कारण के वने पासे धन रहेशे तो धर्ममा वापरशे, अने जो कोइ म्लेछादि नीचमाणस पासे धन रही जाय तो व्युत्सर्जन करी दे, अने व्युत्सर्जन कर्या पछी जो ते म्लेछादि धन पाछु आपी दे, तो धन धर्ममां खरचवावास्ते सघने सुप्रत करे, अने व्युत्सर्जन करेल छे एम पण कही दे, तेवीज रीते जे काइ वस्तु खोवाइ होय अने शोधता छता हाथ न लागे तो ते वस्तु पण व्युत्सर्जन करी दे, पछी कदाचित् पोताने धनहानि थइ जाय, वा धननी अप्राप्ति थइ जाय, तो पण खेद न करे, कारण के खेद न करवो, तेज लक्ष्मी मलवानु मूल कारण छे.

बहु धन जतु रहे, तोपण धर्म करवामां आलस न करे, कारण के सं-

पत्ति अने विपत्ति मोटा पुरुषोनेज आवे ठे निरंतर एक सरखा दिवसो कोइना जता नथी, पूर्वजन्म जन्मांतरना पुण्य पापना उदयथी संपत्ति, विपत्ति आवी मले ठे; ते कारणथी धैर्यनुं अवलंबन करवु तेज श्रेष्ठ ठे. कदी अनेक उपायो करतां ठतां पण दरिद्रता दूर न थाय तो कोइ भाग्यवाननो आधार ले, कारण के काष्ठनी साथे लोढु पण तरे ठे.

जो बहु धन थइ जाय तो, अभिमान न करे, कारण के लक्ष्मीनी साथे पांचवस्तुउ आवेठे. १ निर्दयपणुं, २ अहंकार, ३ तृष्णा, ४ कठणवचननो व्यापार, ५ वेश्या, नट, विट, नीचपात्र वल्लभता तेथी कदाच बहु धन थइ जाय तो ,आ पांचने आववानो अवकाश न आपे, कोइनी साथे लडाइ न करे, पोताथी बलवान् साथे तो कदापि लडाइ न करे वली १ धनवंत, २ राजा, ३ पक्षवाला, ४ बलवान्, ५दीर्घरोषी, ६ गुरु, ७ नीच, ८ तपस्वी, आ आठेनी साथे वाद न करे, ज्यांसुधी नरमाशथी काम थाय त्यांसुधि कडकपणु न अंगीकार करे लेवा देवामां भ्राति, भूलादिथी अन्यथा थइ जाय तो, विवाद न करे, परंतु न्यायपूर्वक चोखवट करे. न्याय करनाराउये पण निर्लोभी, पक्षपातरहित, रहेवु जोइये वली जे वस्तु मोंघी थवाथी समुदायने पीडा थाय, तेवी वस्तु मोंघी थवानो विचार न करे. कदाचित् कर्मयोगथी डुकाल प्रमुख थइ जाय, तोपण सोदामां बमणो, त्रमणो लाभ थइ जाय, त्यारेपण अनाजमां बहु लाभ लेवानी धानत न राखे. व्याजपण सेंकडे ठ टका अर्थात् आठ आना उपरांत न ले कोइनुं पडीगयेलुं, विसरी गयेलु, धन न ले. कालांतरे क्रयविक्रयादिमां देशकालादि अपेक्षा, उचित तथा शिष्टजन अनिंदित लाभ ले. आ कथन पंचाशकसूत्रमां ठे. वली खोटा तोल, खोटा माप, न्यूनादिक व्यापार, रसमां भेल, संभेल प्रमुख न करे, वस्तुनुं अनुचित,मूल तथा व्याज न ले लांच न ले, घालमेल न करे; घसायेलो, तेमज खोटो रुपीउ खरामां न आपे; बीजाना व्यापारमां भांग फोड न करे, घराक न ललचावे, बानकी कांइ देखाडी माल बीजो न आपे, अंधारामां राखी वस्तु न आपे, खोटा खत पत्रादि न बनावे, इत्यादि परवंचनपणुं त्यागे. सर्वथा व्यवहारशुद्धि करे, कारण के व्यवहार शुद्धिज गृहस्थधर्मनु मूलठे.

वली स्वामिद्रोह, मित्रद्रोह, विश्वासघात, बालद्रोह, वृद्धद्रोह, देव-

गुरुद्रोह न करे, थापणमोसो न करे, आ सर्व महापापनां काम छे. वली कुडी साक्षी, रोष, विश्वासघात, कृतघ्नता, आ चार कर्म चडालपणा छे, तेथी ते त्यागे असत्य बोलवु ते सर्वे पापथी मोटु पाप छे, तेथी असत्य सर्वथा न बोले. न्यायथी धन उपार्जन करे, अने अन्यायी लोको जे सुखी देखाय छे. ते अन्यायथी सुखी नथी, परंतु तेउना पूर्वजन्मना पुण्यना फलथी सुखीछे, कारण के कर्मफल चार प्रकारना छे यदाहुर्धर्मघोप सूरिपादा. ॥ एक पुण्यानुबंधिपुण्यछे, बीजु पापानुबधि पुण्यछे, त्रीजु पुण्यानुबधि पापछे, चोथु पापानुबधि पाप छे आ चारे प्रकारने काइक विस्तारथी बतावीए छीये

१ जेणे जिनधर्मनी बिलकुल विराधना करी नथी, परंतु संपूर्ण आराधना करी, जेउ संसारमां जवांतरमां महासुखी, धनाढ्य उत्पन्न थाय, तेउ पुण्यानुबधि पुण्यवाला समजवा जरत, बाहुबलिवत्

२ जे पुरुषो नीरोगादि गुणयुक्त होय, अने धनाढ्यपण होय, परंतु कोणिक राजानी पेठे पाप आचरणमा तत्पर होय, ते पापानुबधि पुण्यवाला समजवा आ पुण्य पूर्वजवमां अज्ञान कष्ट करवाथी थाय छे.

३ जे पुरुषो पापना उदयथी दरिद्री तथा दु खी होय, परंतु श्रीजिनधर्ममां बहुज अनुरक्त होय, धर्म करवामां तत्पर होय, तेउ पुण्यानुबधी पापवाला समजवा, द्रुमक महर्षिवत् पूर्वजवमां लेशमात्र दयादि सुकृत करवाथी थाय छे

४ जेउ पापी, चडाल कर्मना करनारा, अधर्मी निर्दय, पाप करी पश्चात्ताप नही करनारा एवा पुरुषो दु खी छे, तो पण पाप करवामां निरंतर तत्पर छे तेउ पापानुबधी पापवाला छे, कालिकसुरीआ कसाइवत्

बाह्य जे नव प्रकारनी परिग्रहरूप ऋद्धि छे, अने अतरग जे आत्मानी अनंतगुणरूप ऋद्धि छे, ते पुण्यानुबधी पुण्यथीज मलेछे, तेथी कदापि कोइ जीव पापानुबधी पुण्यना प्रजावथी आ लोकमां सुखी देखाय तो पण जविष्यना जन्मोमा महादु ख तथा आपदा पामवाना

वली जे मेहेसूलनी चोरी छे, ते स्वामिद्रोह छे, आ चोरी आ लोक तेमज परलोकमा अनर्थनी दायक छे, वली जेमा बीजाने पीडा थाय, एवो व्यवहार न करे ॥ यत ॥ शाठ्येन मित्र कपटेन धर्मं, परोपतापेन

समृद्धिन्नावं ॥ सुखेन विद्यां परुपेण नारीं, वांछंति ये व्यक्तमपडितास्ते ॥ १ ॥ तथा जेवी रीतें लोकोने रागन्नाव थाय, तेवो यत्न करे. यत ॥ वंशस्थवृत्तं ॥ जितेंद्रियत्वं विनयस्य कारणं, गुणप्रकर्षोविनयादवाप्यते ॥ गुणप्रकर्षेण जनोनुरज्यते, जनानुरागप्रन्नवाहि संपदः ॥ १ ॥ वली धननी हानि तथा लान्न, संग्रहादि गुह्य राखे, बीजा पासे प्रकाश न करे. यत ॥ स्वकीय दारमाहारं, सुकृतं द्रविण गुणं ॥ दुष्कर्म मर्म मंत्रं च, परेषां न प्रकाशयेत् ॥ १ ॥ वली असत्यपण न बोले, जो राजा, गुरु आदि पुछे तो सत्य कही दे सत्य बोलवुं तेज पुरुषनो उत्तम धर्म छे

वली यथार्थ कही मित्रनुं मन हरण करे, बांधव जनोने सन्मान आपी वश करे, स्त्रीने प्रेमथी वश करे, चाकरोने दान आपी वश करे, अने दाक्षिण्यताथी बीजा लोकोनां मन हरण करे. वली कोइ जगाये पोताना कार्यनी सिद्धिवास्ते बलवान् पुरुषोने पण आगल करे. वली ज्यां प्रीति होय, त्यां लेणदेणनो व्यापार न करे. आ कथन सोमनीतिमां पण छे.

साक्षीविना मित्रना घरमांपण धनादि राखवां न जोइये, कारण के लोन्न महाबुरो छे वली जो सोंपनार सख्स गुजरी जाय तो ते धन तेना पुत्रादिने पाछुं आपी देवु जोइये. जो धन सोंपनारनो कोइ सबधी न होय तो ते धन सर्व लोकोनी समक्ष धर्मस्थानमां लगावे वली श्रावक, देवगुरु, चैत्य, जिनमंदिरना साचा अथवा जूठा पण सोगद न खाय. वली बीजाउना साक्षीपण न थाय यत ॥ कर्पासिक ऋपि कहे छे ॥ अनीश्वरस्य हू न्नार्ये, पथि क्षेत्रं द्विधा कृपि ॥ प्रातिन्नाव्यं च साक्ष्यं च, पंचानर्थाः स्वयंकृताः ॥ १ ॥

वली श्रावक मुख्य वृत्तियें तो जे गाममां रहे, त्याज व्यापार करे, कारण के तेम करवाथी कुटुंबनो अवियोग, घरनां कार्य, तथा धर्मकार्यादि सर्व बनी रहे छे कदापि पोताना गाममां निर्वाह न थाय तो, पासेना देशांतरमां व्यापार करे, ज्यांथी जरूरी काम प्रसंगे पोताने घेर जलदीथी आवी शकाय. एवा कोण पामर छे के, पोताना देशमां निर्वाह थतो होय छतां परदेशमां जाय ॥ यतः॥ जीवंतोपि मृता. पच, श्रूयते किल न्नारते ॥ दरिद्रोव्याधितो मूर्ख', प्रवासी नित्यसेवकः ॥ १ ॥ जो निर्वाह न थतो होय तो, पोते न जाय, तेमज पुत्रादिने परदेश न मोकले, परंतु सुपरी

क्षित गुमास्ताने परदेश मोकले, जो पोतानेज परदेश जवुं पडे तो, शुभ मुहूर्त्त, सारां शुकन, निमित्त देखीने तथा देव गुरुने वंदना करीने, मंगलपूर्वक, भाग्यवान् पुरुषोना सथवारामां, निद्रादि प्रमाद तजी, केटलाएक पोताना ज्ञातिबधुउने साथे लइ जाय, कारण के भाग्यवान्ना सथवाराथी विघ्न नाश पामे छे वली लेणदेण, गुप्त धन, सर्व, पिता भाइ के पुत्रादिने वतावी जाय, पोताना संवधीउने सारी शिखामण आपी जाय, बहुमानपूर्वक सेवकोने वोलावी जाय जीववानी इच्छा होय तो, देवगुरुनुं अपमान करी, कोइनी निर्भ्रंछना करी, स्त्री आदिने ताडना, तर्जना करी, अने वालकने रोवरावी न जाय कदापि कोइ पर्वमहोत्सवादिना दिवसो निकट होय तो उत्सव करीने जाय यत ॥ उत्सवमशन सर्वं, प्रगुणं चोपेक्ष्य मंगलमशेषं ॥ असमापिते च सूतक, युगेंगनर्त्तौ च नो यायात् ॥ १ ॥ वली दूध पीइने, मैथुनसेवन करीने, स्नानकरीने पोतानी स्त्रीने मारीने, वमन करीने, थुकीने, रुदन करीने, कठण शब्द सुणीने, गालो सुणीने, परदेश न जाय, वली शिर मुडावीने, आंसु पाडीने, अने मागां शुकन थतां पण ग्रामांतर न जाय

वली कार्यने वास्ते जो चाले तो जे स्वर वेहेतो होय, ते वाजुनो पग प्रथम उपाडी मुके, जेथी कार्यसिद्धि थाय वली रोगी, वृद्ध, ब्राह्मण, आंधलो माणस, गाय, पूजनीय, राजा, गर्भवती स्त्री, भार उपाडनार, तेउने कांइ आपीने ग्रामांतर जाय वली धान्य पाकु अथवा काचु तथा पूजा योग्य मंत्रमंडल तेने तजे नहि वली स्नाननु जल, रुधिर, मडदु, थुक, श्लेष्म, विष्टा, मूत्र, वलतो अग्नि, साप, मनुष्य, शस्त्र, आ वस्तुने उलघे नहि वली नदीने कांठे, गायना गोकुलमां, वडना झाडनी नीचे, जलाशयमा, अने कुवाना कांठा उपर विष्टा न करे वली रात्रियें वृक्षनीचे न रहे उत्सव तथा सूतक पुरां थये परदेश जाय, साथ विना परदेश न जाय, दासनी साथे न जाय, मध्याह्ने तथा अर्धरात्रिये मुसाफरी न करे. वली क्रूर प्रकृतिवाला मनुष्य, कोटवाल, चाडीआ, दरजी, धोवीप्रमुख, अने नीचमित्रनी साथे गोष्टि न करे तेउनी साथे अकाले चाले नहि. वली पाडा, गधेडा अने गायनी असवारी करे नहि. वली हाथीथी हजार हाथ, गाडाथी पांच हाथ, अने घोडा तथा शिगडावाला जनावरोथी द-

श हाथ दूर रहे. वली खरची विना मुसाफरी करे नहि. बहु निद्रा लहे नहि रस्तामां कोइनो विश्वास राखे नहि. एकलो कोइना घरमां जाय नहि. जुनां वहाण उपर चडे नहि. एकलो नदीमां प्रवेश करे नहि. मुश्केलीवाली जगामां साधनो विना जाय नहि. अगाध पाणीमां प्रवेश करे नहि. जेउ बहु क्रोधी होय, बहु सुखशीलिया होय, तथा बहु कंजुस होय, तेवाउनी साथे मुसाफरी करे नहि. तथा बांधवाना, मारवाना, जूगार खेलवाना, पीडाना, खजानाना, अने अतेउरना स्थानमां गमन करे नहि तथा बूरा स्थानमां, स्मशानमां, शून्यस्थानमां, चोकमां सूकाघासमां, कूडाकचवरमां, उंचीनींची जगामां, उकरडामां, वृक्षाग्रमां पर्वताग्रमां, नदीना कांठामां, कूवाना कांठापर, आ स्थानोमां दीर्घकाल वेसे नहि वली जे जे कामो जे जे वखते करवां होय ते ते वखते करे, परंतु गफलत करे नहि, तेम तजे नहि.

पुरुषे सुशोभित वस्त्र पहेरवानो आडंवर तजवो न जोइए. परदेशमां गमन करतां तो विशेषे करी न तजवो जोइए; कारण के आडंवरथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय ठे. वली जे कार्यो करवां ते पंचपरमेष्टि स्मरण पूर्वक, तथा गौतमादि गणधरोनां नामग्रहणपूर्वक करे; तेमज देव गुरुनी भक्तिवास्ते धननी कल्पना करे कारण के ज्यारे धन कमावानो प्रारंभ थाय, त्यारे नफामांथी अमुक हिस्सो सातक्षेत्रोमां अवश्य लगावीश, एवी भावना अवश्य करवी जोइए.

ज्यारे लाभ प्राप्तथाय, त्यारे भावना अनुसारे मनोरथ सफल करे, कारण के व्यापारनुं फल धनप्राप्ति ठे अने धनप्राप्तिनुं फल, धर्म कार्योमां धननो व्यय ठे तेम न थाय तो व्यापार करवो ते नरक तिर्यंच गति पामवानुं कारण थाय ठे. जो धर्मकार्यमां धन खरचाय तो ते धर्मधन कहेवाय ठे, अने जो पापकार्यमां खरचाय तो पापधन कहेवाय ठे ऋद्धिना त्रण प्रकार ठे १ धर्मऋद्धि, २ भोगऋद्धि, ३ पापऋद्धि. जो धर्मकार्यमां धन वपराय तो धर्म ऋद्धि, शरीरना भोगमां वपराय तो भोगऋद्धि, अने धर्म, भोगथी रहित ते पापऋद्धि जाणवी ते कारणथी निरंतर स्वधननो दानादि धर्मकार्यमां व्यय थवो जोइए. जो थोडु धन होय तो थोडुं धन धर्मकार्यमां वापरवु; कारण के इछानुसारिणी

शक्ति कोइकनेज होय छे धनउपार्जन करवानो उपाय निरंतर करवो जोइए, परंतु अत्यंत लोज न करवो जोइये. धर्म अर्थ अने काम यथावसरे सेवन करवा जोइये, परंतु अत्यंत कामासक्त न थवु जोइए. धन पण न्यायपूर्वक उपार्जन करवु जोइए न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार जंग छे, ते लखीए छीए

न्यायोपार्जित धन सत्पात्रादिमां वापरवाना चार जंग छे ते लखियें छियें. १न्यायोपार्जित सत्पात्र विनियोगरूप प्रथम जग पुण्यानुबंधिपुण्यबंधनो हेतु होवाथी, वैमानिकदेवतापणु, जोगजूमियुक्त मनुष्यपणु, सम्यक्त्वादिनी प्राप्ति, निकटमोक्ष फल, इत्यादि, छे धन सार्थवाह, तथा शालिजद्रादिवत्

२ न्यायोपार्जित असत्पात्रविनियोगरूप बीजो जग पापानुबंधी पुण्यनो हेतु होवाथी जोगमात्र फल पण छे तो पण परिणामें विरस फल छे जेम लक्षजोज्य करनार ब्राह्मण अनेकजवोमां किंचित् सुख जोगवीने सेचनक नामे सर्वांग सुलक्षणो जद्रहस्ती थयो

३ अन्यायोपार्जित सत्पात्रपरिपोषरूप त्रीजो जग तेनुं सारा क्षेत्रमां सामो वावी देवावत् फल छे ए सुखानुबंधीहोवाथी राज्यना कारजारीउना अत्यत आरज्ञ उपार्जित धन समान छे. एवु धन पण धर्मकार्यमां वापरवामां आवे तो सारुं छे आबु पर्वत उपर जिनमंदिर बंधावनार विमलचद्र तथा वस्तुपाल, तेजपाल मंत्रीनी जेम लाजकारक छे जो तेवु धन पण धर्मकार्यमां न वापरवामां आवे तो दुर्गति तेमज अपकीर्त्ति, तेनु फल छे मम्मण शेठनी जेम

४ अन्यायोपार्जितकुपात्रपोषरूप चोथो जग आ जग सर्व प्रकारें त्यागवा योग्य छे कारण के अन्यायोपार्जित धन अने तेनो कुपात्रमां उपयोग करवो, ते एवु छे के, गायने मारी तेना मांसथी कागडानुं पोषण करवु ते कारणथी गृहस्थें न्यायथी धन उपार्जन करवु जोइए.

श्राद्धदिनकृत्यसूत्रमां लख्यु छे के व्यवहारशुद्धि, तेज धर्मनु मूल छे. जेनो व्यापार शुद्ध छे, तेनु धन पण शुद्ध छे, जेनु धन शुद्ध छे, तेनो आहार शुद्ध छे, जेनो आहार शुद्ध छे, तेनो देह शुद्ध छे, जेनो देह शुद्ध छे, ते धर्मने योग्य छे एवो पुरुष जे जे कृत्य करे, ते सर्व सफल थाय. जे

व्यवहार शुद्ध न करे, ते धर्मनी निंदा कराववाथी स्वपरने दुर्लभवोधी करे, ते कारणथी व्यवहारशुद्धि अवश्य करवी जोइए

वली देशादि विरुद्धनो त्याग करे. देश, काल, राजविरुद्धादि परिहरे. आ कथन हितोपदेश मालानुसार करेल छे. जे पुरुष देश, काल, राज्य तेमज धर्मविरुद्ध तजे, ते सम्यग् धर्मनी प्राप्ति करे छे.

देशविरुद्ध आ प्रमाणे. मारवाड देशमां खेती करवी अने सोरठ देशमां मदिरा वनाववी, इत्यादि देशविरुद्ध समजवुं. वली जे जे देशमां जे जे कार्य शिष्टजनो अनाचरणीय माने ते ते कार्य ते देशमां करवां ते देशविरुद्ध छे. जाति कुलादि अपेक्षाए जे अनुचित होय ते पण देश विरुद्ध छे. ब्राह्मण जातियें सुरापान करवुं ते जातिकुलविरुद्ध छे, अने एक देशवालानी सन्मुख वीजा देशवालानी निंदा करवी ते देशविरुद्ध छे.

कालविरुद्ध आ प्रमाणे. शीतकालमां हिमालय समीप गमन करवुं, उष्णकालमां आफ्रिका देशमां मुसाफरी करवी. वर्षाऋतुमां मरुदेशमां गमन करवु, दुकालमां अनाजसहित जंगलमां मुसाफरी करवी, राजाउना परस्पर विरोधना वखतमां तथा धाड पाडुउ रस्तो रोकी वेठा होय ते वखते मुसाफरी करवी, सांजनी वखते धनसहित प्रयाण करवुं, इत्यादि स्थानकोमां, अति सामर्थ्य, सहाय तथा दृढवल विना गमन करे तो प्राणनाश तथा धननाशनो संभव छे. फागण मासपछी तलादिनो व्यापार, तल पीलाववा, तलादि भक्षण करवा, तथा वर्षाऋतुमां शाक पत्रादि भाजी प्रमुख खावां तथा वहु जीवाकुल भूमिमां हल फेरववां, इत्यादि महादोषनां कारण छे.

राजविरुद्ध आ प्रमाणे. राजाना अवर्णवाद वोलवा, जेने राजा मान्य करता होय, तेउने न मानवा, राजाना वैरीउनी साथे मेलाप करवो, राजाना शत्रुउना स्थानमां लोभथी जवु, राजाना शत्रुउनी साथे व्यापार करवो, राजाना काममां पोतानी इच्छापूर्वक विधिनिषेध करवा.

लोकविरुद्ध आ प्रमाणे. नगर निवासीउनी साथे प्रतिकूलपणे वर्तवु, स्वामिद्रोह करवो, लोकोनी निंदा करवी, गुणवान् तेमज धनवाननी निदा करवी, पोतानी वडाइ गावी, सरलनी हांसि करवी, गुणवान उपर मत्सर करवो, कृतघ्नपणुं करवुं, वहुलोकोना विरोधी साथे सं-

रिहंतना धर्ममां जोडे तोज मातपिताना उपकारनो वदलो वली शके छे, तेम करवाथीज मातापिताना उपकारनु ऋण वली शके छे, ते शिवाय बीजा कोइ उपायथी मातापिताना उपकारनुं ऋण वली शकतुं नथी आ कथन श्रीस्थानांग सूत्रमां छे.

हवे माता संवधी उचित आचरणमां जे विशेष छे ते लखीये छीये माताना चित्तने अनुसरवु ते उत्तम पुत्रनी फरज छे स्त्री जातिनो स्वभावज प्रायः एवो होय छे, पोतानी धारणा मुजव न थाय तो जलदीथी चित्त खेदयुक्त थइ जाय, ते कारणथी जे काममां खेद या पीडा थाय ते काम न करवु पिताथी माता विशेष पूज्य छे. मनुस्वामी कहे छे के॥ उपाध्यायाद्दशाचार्य., आचार्येभ्य. शतंपिता ॥ सहस्त्र तु पितुर्माता, गौरवेणातिरिच्यते ॥ १ ॥ वली वीजाओपण कहे छे के, ज्यां सुधि दुध पीये त्यां सुधी आ, मारी माता एम पशुपण जाणे छे, भोजन न खाइ शके त्यांसुधि आ मारी माता एम अधम पुरुष जाणे छे, ज्यांसुधी घरनुं काम करे त्यांसुधी आ मारी माता एम मध्यम पुरुष माने छे अने ज्यां सुधी जीवे त्यांसुधी तीर्थरूप उत्तम पुरुष पोतानी माने माने छे

३ सहोदर अर्थात् वधु साथे उचित आचरण आ प्रमाणे. मोटाभाइने पिता समान गणे, अने मोटो भाइ नानाभाइने सर्वकार्यमां साथे जोडे. जो ओरमान मातानो दीकरो (भाइ) होय तो जेम श्रीरामचन्द्र अने लक्ष्मणनो परस्पर प्रेम हतो तेवो परस्पर प्रेम राखवो जोइये वली वडील वंधुनी स्त्रीओनी साथे तथा तेमना पुत्र, पुत्रीओनी साथे पण उचित आचरण यथायोग्य करे, परतु पृथग्भाव न करे भाइनी व्यापारमां सलाह लहे छानी वात न राखे धननो व्यवहारपण भाइथी गुप्त न राखे. वधुने निरंतर शिखामण आपे, जेथी धूर्त्त, प्रपचीना छल कपटमां ते न फसाय वधुने माठी सोवत लागी होय, वा ते अविनीत थयो होय तो सज्जन पुरुषोनी सोवतमा लालच आपी उतारे, पोते नम्रताथी शिखामण आपे, पोताना मित्रोद्वारा शिखामण अपावे, काका, मामा, इत्यादि सगासंवधी द्वारा तेने शिक्षा अपावे, अन्योक्तिथी वचन कहे, परंतु पोते तर्जना करे, कारण के ताडना तर्जनाथी वधुमा अविनीतपणुं तथा अमर्यादा वधती जाय छे. सामुं वोलनारो थइ जाय छे, तेथी हृदयमां प्रेम

सहित वहारथी ज्यारे जाइने देखे त्यारे तेना अंतःकरणमां पण ते बहु राजी थाय एवो देखाव वतावे ज्यारे जाइ विनयमार्गमां आवी जाय त्यारे निष्कपटपणे मीठां वचनोथी तेनी साथे निरंतर वर्त्ते कदाचित् जाइ अविनीतपणु न तजे तो, चित्तमां विचारे के, तेनी प्रकृतिज एवी ठे, एम मनमां समाधान करी उदासीनपणे वर्ते वली जाइनी स्त्री तथा तेना पुत्रोनी साथे समदृष्टि सर्व कार्यमां राखे. उंरमान जाइनी साथे विशेपरीतें प्रेमपूर्वक प्रवर्त्ते, कारण के तेनी साथे देशमात्र अतर राखवाथी अप्रतीति थइ जाय ठे, अने लोकमां पण निंदा थाय ठे. तेवीजरीतें माता, पिता अने बंधुसमान वीजा जे जे पुरुषो ठे, तेउंनी साथे उचित आचरणो विचारी लेवां. यतः ॥ जनकश्चोपकर्त्ताच, यस्तु विद्यां प्रयछति ॥ अन्नदः प्राणदश्चैव, पचैते पितर स्मृताः ॥ १ ॥ राजपत्नी गुरोः पत्नी, पत्नीमाता तथैव च ॥ स्वमाता चोपमाता च, पचैतामातर.स्मृता ॥ २ ॥ सहोदरः सहाध्यायी, मित्रं वा रोगपालकः ॥ मार्गे वाक्य सखायश्च, पंचैते भ्रातर. स्मृताः ॥ ३ ॥ वली पोताना जाइउंने धर्मकार्यमां पण प्रवर्तावे, तेवीज रीतें मित्रनी साथे पण उचित आचरण करे

४ हवे स्त्रीनी साथे उचित आचरण कहीए ठीए विवाहित स्त्रीनी साथे स्नेहसंयुक्त वचन व्यापार राखे, स्त्रीने सर्वकार्यमां अजिमुख करे, वल्लज अने स्नेहयुक्त वाणीविलास निश्चयपूर्वक प्रेमनुं जीवन ठे. स्नानप्रसंगे वा परिश्रमने प्रसंगे पगचंपी प्रमुख कार्यमां स्त्रीने प्रवर्तावे उत्तरोत्तर कार्यमां पतिनो स्नेह पत्नीना अतरंगमां प्रवर्त्ते ठे, त्यारे पत्नी कदापि उराचरण करवानी अजिलाषा करती नथी देश, काल, समृद्धिपूर्वक स्त्रीने उचित वस्त्राजरणथी अलंकृत करे, कारण के अलंकारसंयुक्त स्त्री, लक्ष्मीनी वृद्धि करे ठे रात्रिए स्त्रीने वहारगमन करवा अनुज्ञा आपे नहि वली कुशील, पाखंडी, जगल योगी इत्यादि नीचपुरुषोनी संगतमां प्रवर्तवा दे नहि गृहकार्यमा स्त्रीने निरंतर जोडी राखे. राजमार्गे उजां रहेतां तथा वेश्याना पाडामां जतां निवारे. प्रतिक्रमण, सामायिक, देवदर्शनादि धर्मकृत्यो करवावास्ते, जिनमंदिर वा उपाश्रये जवामां, माता, वेहेन प्रमुख सुशील स्त्रीउंनी संगतिमां जवानी अनुज्ञा आपे, घरनां काम, दान, सगासंवधीनां सन्मान, रसोइना

काम प्रमुखमां अधिष्ठाता करे स्त्री प्रजातसमये शय्या उठावे, घर प्रमार्जन करे, दूधनां वासण धोवे, चूलानी चोकाप्रमुख क्रिया करे, ठाम वासण मांजे, अनाज पीसें, गाय, नेंस दोवे, वलोणुं करे, रसोइ करे, जमनारने पीरसे, जूठां वासणो मांजे, सासु, नणद, जेठ, देवर इत्यादिनो विनय करे. पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने निरंतर जोडे, जो पूर्वोक्त कार्योमां स्त्रीने न जोडे तो, स्त्री नवराश पामी चपलताथी विकारने पामी जाय ठे. काममां लागी रेहेवाथी स्त्रीनी रक्षा थाय ठे, अने मनोवृत्ति शांत रहे ठे. वली नरतार स्त्रीनी सन्मुख जोवे, वोलावे, गुणकीर्त्तन करे, धन वस्त्र आनूपण आपे, स्त्री जेम कहे तेम करे, स्त्रीने दूर न राखे, तोज स्त्रीनो नरतार उपर अत्यत प्रेम थाय ठे, तथा स्त्रीने नहीं जोवाथी, विशेप देखवाथी, देखीने नही वोलाववाथी, अपमान आपवाथी, अहंकार करवाथी इत्यादि वावतोथी प्रेम त्रुटी जाय ठे. वली नरतार परदेश वहु वखत रहे तो विरहथी स्त्री अनुचित काम पण करी ले, ते कारणथी नरतारें वहु वखत परदेशमां पण न रेहेवुं जोइए स्त्री नूल करे त्यारे शिक्षा करे, अने रीसाय तो मनावे घरनां गुह्य तथा धननी हानि वृद्धि स्त्रीनी आगल प्रगट न करे क्रोधनो आवेश आववाथी वीजी स्त्रीसाथे परणे नहि वे स्त्रीवाला नरतारने अत्यत डुःख ठे कदाचित् संतानोत्पत्तिवास्ते वे स्त्री परणे, तो वने उपर समनाव राखी प्रवर्त्ते स्त्री ज्यारे कोइ काममां मोटी नूल करे, त्यारे एवी शिक्षा करे के फरी कदापि तेवी नूल करे नहि रीसायेली स्त्रीने पण जो न मनावे तो सोमनट्ट विप्रनी नार्या अवानी जेम कुवामां जइ पडे, इत्यादि अनर्थ अनेक करे ते कारणथी स्त्रीनी साथे सर्वकाम, स्नेहयुक्त वचनोथी करावे कठिनशब्दोथी करावे नहि

जो निर्गुणस्त्री मले तो विशेपरीतें तेनी साथे नरमाशथी प्रवर्त्ते, परतु तेवी स्त्रीने घरमां प्रधान न करे जे घरमां पुरुपनी जेम स्त्रीसामर्थ्य, प्रधानपणु करे ते घर प्राय' नाश पामे ठे, आ कथन वाहुल्यताथी ठे, कारण के केटलीएक स्त्रियो एवी वुद्धिवाली होय ठे के तेने पुठीने जो काम करवामां आवे तो वहुज लान थाय ठे. जेम तेजपालनी पत्नी अनुपदेवीने पुठीने, वस्तुपाल तथा तेजपाल काम करता ह-

ता. वली स्त्री ज्यारे धर्मकार्यो करे, तप करे, चारित्र ले, उद्यापन करे, दान दे, देवपूजा करे, तीर्थयात्रादि करे, इत्यादि जे जे उत्तम कार्यो करे, ते सर्वमां उत्साह धरे, शक्ति प्रमाणे धन आपे, सुशीलपणे सहाय आपी तेना मनोरथ पूर्ण करे, अंतराय न करे, कारण के स्त्री जे जे धर्मकृत्यो करे तेमां पति ते ते कृत्यो करवामां राजी थाय तो ते पतिने पण पुण्य थाय छे

५ हवे पुत्रनी साथे उचित आचरण लखीए छीए. पिता पोताना पुत्रनुं बाल्यावस्थामां अत्यंत मनोज्ञ आहारथी पोषण करे स्वेछापूर्वक नाना प्रकारनी क्रीडा करावे मनोज्ञ पुष्ट आहारथी बालकनी बुद्धि बल तथा कान्तिनी वृद्धि थाय छे, अने स्वेछायुक्त क्रीडाथी शरीर पुष्ट थाय छे; अंगोपांग संकुचित थतां नथी. यतः ॥ लालयेत् पंचवर्षाणि, दश वर्षाणि ताडयेत् ॥ प्राप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्रं मित्रवदाचरेत् ॥ १ ॥ वली देव, गुरु, धर्म अने सुखी स्वजनादिनी संगत करावे. उत्तम जातिवान्, कुलाचारी, शीलवान् एवा पुरुषनी साथे मित्राचारी करावे; गुरु आदिनो परिचय थवाथी बाल्यावस्थामां पुत्र उत्तम वासनावालो थाय छे, वल्कल चीरीयवत् जाति, कुल, आचारसंयुक्तनी मित्रताथी, दैवयोगथी कदापि अनर्थपण आवी पडे तो पण, जला मित्रनी सहायताथी कष्ट दूर थई जाय छे जेम अजयकुमारनी साथे मित्रता करवाथी आर्द्रकुमारने जली वासना थईगई तेम ज्यारे पुत्र अढारवर्षनो थाय, त्यारे तेनो विवाह करे, कारण के बाल्यावस्थामां वीर्यक्षय थइजवाथी, बुद्धि, पराक्रम, तथा आयुष्यवृद्धि पामतां नथी. सर्वजैनमतना शास्त्रमां आ प्रमाणे लख्युं छे ज्यारे पुत्रने जोगसमर्थ जाणे त्यारे, तेनो विवाह करे. जे कन्यानी साथे विवाह करावे, ते कन्यानु रूप, कुल, गुण समान होय तेनी साथे विवाह करावे. जे कन्यामां गुण, रूप सरखां न होय तथा जे कन्या वर्षमां अधिक होय, तेनी साथे विवाह करवामां अनेक विडंबना छे. विवाहनुं प्रकरण हवे पछी लखशु पुत्रना उपर घरनो जार मूके, पुत्रने घरनो स्वामी करे ज्यारे पुत्रनी उपर घरनो जार आवे छे, त्यारे चितायुक्त रेहेवाथी ते कांइपण स्वछंद उन्मादादि करतो नथी, कारण के तेना जाणवामां आवे छे के, धन बहुज मेहेनतथी प्राप्त थाय छे, ते का-

रणथी अनुचित व्यय न करवो जोइये, परंतु पुत्रनी परीक्षा कर्या पछी तेना उपर घरनो नार मुकवो जोइये जेम प्रसेनजित् राजाए श्रेणिक पुत्र वास्ते कस्यु तेम पुत्रनी जेम पुत्री तथा नत्रीजानी साथे पण उचित आचरण करवां, तेवीज रीतें पुत्रनी वहुसाथे पण उचित आचरण करवा धनश्रेष्ठिवत्, पुत्रनी प्रशसा प्रत्यक्ष न करे ज्यारे कष्ट पडे त्यारे सुख डु खनी वातो कहे, उपज निपज अने खर्चनु स्वरूप कहे. वली पुत्रने राजसनानो अनुनव करावे, कारण के अणचितव्यु कष्ट आवी पडे त्यारे शु करवु तेनी गम पडे, वली दुष्ट जन उपद्रव करे त्यारे राजकचेरी विना इलाज नथी यत॰ ॥ गतव्य राजकुले, दृष्टव्याराजपूजितालोका ॥ यद्यपि न नवंत्यर्था, स्तथाप्यनर्था विलीयते ॥ १ ॥ वली पुत्रने परदेशना आचार, व्यवहारादिथी जाणकार करे प्रसंगवशात् परदेशगमन करवु पडे तो कोइ कष्टप्राप्त थता उपाय सुजे वली उंरमान माना पुत्रनी साथे विशेष उचित करे

६ हवे सगाउ साथे उचित आचरण लखीए छीए पिता, माता, स्त्रीना पक्षना जे लोक होय छे ते सगां कहेवाय छे ते सगांउनो निरंतर तेमज मोटा प्रसंगमां आदर सत्कार करवो जोईए. पोते पण सगाउंना काममां आगेवान तरीके प्रवर्त्ते तथा काम करे जे स्वजन धनहीन होय, रोगग्रस्त होय तेनी सारवार करे, कारण के सगांउनो जे उद्धार करवो ते पोतानोज उद्धार करवो छे सगाउंनी पाछल तेउंनी निंदा न करे सगांउना वैरीउ साथे मित्राचारी न करे सगांउनी साथे प्रीति करवामां शुष्क कलह, हास्यादि वचनोनी लडाइ विगेरे निवारे स्वजन घरमां न होय तो तेना घरमां एकलां गमन करे नहि देव, गुरु अने धर्मनां कार्यमां स्वजनोनी साथे सामेल रहे जे स्त्रीनो पति परदेश गयो होय एवा स्वजनना घरमा एकलां गमन करे नहि स्वजनोनी साथे लेणदेणनो व्यापार करे नहि तथाहि ॥ यदीछेत् विपुलां प्रीतिं, त्रीणि तत्र न कारयेत् ॥ वाग्वादमर्थसबंधं, परोक्षे दारदर्शनम् ॥ १ ॥ आ लोकना व्यावहारिक कार्यमां स्वजनोनी साथे एकचित्त रहे, अने जिन मदिरादिधर्मकार्योमां तो अवश्य विशेष रीतें मेलाप पूर्वक प्रवर्त्ते एवां कार्यो वहुजन संमतिथीज करवामां आवे तो शोना छे.

७ हवे गुरु उचित कहीए ठीए धर्माचार्यनी साथे उचित जक्ति, अंतरंगपूर्वक, बहुमान संयुक्त, प्रवर्तवु. वचन कायानां आवश्यक प्रमुख कृत्य करवां. गुरुपासे शुद्ध श्रद्धापूर्वक धर्मोपदेश श्रवण करवो गुरुनी आज्ञा अगीकार करवी. मनथी पण गुरुनुं अपमान न करवु. गुरुना अवर्णवाद कोइनी पासे बोलवा नहि. गुरुनी प्रशंसा सर्वत्र प्रगट करवी, गुरुनी प्रत्यक्ष तेमज परोक्ष स्तुति करवी, कारण के गुरुनी स्तुति अगणित पुण्यबंधनुं कारण ठे गुरुनां ठिद्र कदापि जोवां नहि. गुरुनी साथे मित्रनी जेम अनुवर्त्तन करे. गुरुना प्रत्यनीक, निंदकने सर्वशक्तिथी निवारे कदाचित् गुरु प्रमादना वशथी कांइ चूक करे तो एकांतमां हितशिक्षा आपे, वली एम कहे के हे जगवन्! आप सरखाने आ काम करवु उचित नथी गुरुनो विनय करे, गुरुनी सन्मुख जाय, गुरुपासें आवतां, आसन ठोडी उजा थइजाय. गुरुने आसन आपे. गुरुनी पगचंपी करे. गुरुने शुद्ध, निर्दोष आहार, वस्त्रपात्रादि आपे आ प्रमाणे गुरुनो द्रव्योपचार करे जावोपचार, ते गुरुनुं परदेशमां निरंतर स्मरण करे इत्यादि.

८ हवे नगरवासी जनो प्रत्ये उचित आचरण कहीये ठीये. जे नगरमां निवास होय, ते नगरवासीउ, जेउनी पोताना सरखी व्यापारवृत्ति होय तेउनी साथे व्यापार विषयमां एकचित्तथी सुख दुःखादि प्रसंगें तथा कष्ट प्राप्त थये अने राज्यउपद्रवादिमां अरस परस सामेल रहे तथा सहाय आपे तेउना अभ्युदयमां उत्साहवान् रहे. राजदरबारमां कोइनी चाडी चुगली न खाय. नगरनिवासिउमां फाटे नहि सर्वेनी साथे मली राजानी आज्ञा पाले. ज्यारे घणां नबलां माणसोपण एकत्र थइ कार्य करे ठे, त्यारे तृणरज्जुवत् बलवान् थइ जाय ठे. ज्यारे वादविवाद थइ जाय त्यारे पक्षपात तजी कार्य करे कोइनी पासेथी लांच लइ असत्य कार्य न करे कोइनी साथे सहज लडाइ थइ जाय तो न्यायनी अदालतमां फरीयाद करे नहि. राजाना कारजारीउ साथे लेणदेणनो व्यवहार न करे, कारण के ते लोकोने नाणां पाठां आपवामां क्रोध आवी जाय ठे. तेवे प्रसंगे तेउ अनर्थ करे ठे, समान नगरवालाउनी जेम असमानवृत्तिवाला नगरनिवासीउनी साथे पण यथायोग्य उचित आचरणकरे.

९ हवे परतीर्थी परमतवालाउनी साथे उचित आचरण लखीए ठीये.

जे परमतवाला जिक्षाने वास्ते पोताना घरमां आवे ते सर्वप्रत्ये उचित करे. राजाना माननीयनु विशेष उचित करे उचित कृत्य ते यथा योग्यदान देवा चाहे अगर जो ते साधुउपर मनमां प्रीति न होय तो पण घेर मागवा आवतां तेउनी उचित जक्ति करे, कारण के दान देवु ते गृहस्थनो धर्मज छे. वली कोइ महंत घेर आवी जाय तो सन्मुख गमन, आसन दान, उजां थवु तथा दान आपवु प्रमुख करे. परमतवाला कोइ कष्टमां पडे तो तेनो उद्धार करे- दुःखी जीवोनी दया करे. पुरुष अपेक्षा मधुर आलाप संलापादि करे अन्य मतवालाने कामनुं पुछवा प्रमुख करे, जेम के आपनु पधारवु शा प्रयोजनवास्ते थयु छे? पछी जे कार्य ते बतावे ते उचित होय तो करी आपे वली दुःखी, अनाथ, आंधलां, बेहेरां, रोगग्रस्त प्रमुख दीन लोकोनी दीनता दूर करवावास्ते यथाशक्ति सहाय करे जे श्रावकादि पूर्वोक्त लौकिक उचित आचरणमा कुशल होता नथी, तेउ जिनमतमां केवी रीतें कुशल होय शके? ते कारणथी धर्मार्थिउए अवश्य उचित आचरणोमा निपुण थवु जोइए इति नवविध उचित आचरण समाप्त ॥

हवे अवसरें उचित बोलवु ते बहुज गुणकारी छे, तथा बीजु जे कांइ कुशोजाकारी होय ते त्यागे,, इत्यादि विवेकविलास अनुसारें लखीए छीए. बगासु, छींक, उंरूकार तथा हसवु, मुख ढांकी मर्यादाथी करे सजानी वचमा नाकमा आंगली घाली मेल न काढे, हाथना टाचका फोडे नहि, पर्यस्तिका करे नहि, पग पसारे नहि, निद्रा विकथा करे नहि, सजामा बुरी चेष्टा करे नहि, मात्र अवसर जोइनेज हसे, मात्र होठ फरकाववारूप हसे, मुख फाडी खडखड हसे नहि, पोतानु अग वगाडे नहि, घास त्रोडे नहि, जूमिउपर लखे नहि, जूमिपर चित्रामण काढे नहि, नखथी दांत घसे नहि, दांतथी नख त्रोडे नहि, अजिमानयुक्त वातो करे नहि, जाट चारणप्रमुखनी करेली प्रशंसाथी गर्व करे नहि, पोतामां गुण होय तेनो निश्चय करे, पोताने समजीने बोले, नीच मनुष्य हलका वचन पोताउपर उच्चारे तो सामां हलकां वचन पोते उच्चारे नहि, जे वात निश्चयपूर्वक न होय ते वात प्रगट करे नहि, कोइ पुरुषे काम आरजवा विचार कर्यो होय, अने ते काम करवामां ते समर्थ न

होय तो प्रथमथीज तेने कहे के आ काम तमाराथी थइ शकशे नहि, कोइपण मनुष्यनुं बुरुं बोले नहि, पोताना वैरीनुं पण बुरु बोले तो अन्योक्तिपूर्वक बोले, माता, पिता, रोगी, आचार्य, 'परोणा, अभ्यागत, बधु, तपस्वी, वृद्ध, बाल, स्त्री, वैद्य, पुत्र, गोत्री, पामर, बेहेन, बनेवी, मित्र आ सर्वनी साथे वचननी लडाइ न करे; सूर्यनी सन्मुख निरंतर जोवे नहि, चंद्रसूर्यना ग्रहणने जोवे नहि, उंडा कुवामां वांका वली जोवे नहि, संध्यासमये आकाश सन्मुख जोवे नहि, वली मैथुनक्रिया करनार, शिकार करनार, नग्नस्त्री, योवनवंती स्त्री, पशुक्रीडा, कन्यानी योनि, तेउनी तरफ दृष्टि करे नहि; तेलमां, जलमां, शस्त्रमां, मूत्रमां, रुधिरमां, पोतानुं मुख जोवे नहि, ते प्रमाणे करवाथी आयु अल्प थाय छे जेणे आश्रय कर्यो होय तेनो त्याग करे नहि, नाश पामेली वस्तुमाटे शोक करे नहि, कोइनी निद्रानो भंग करे नहि, घणांनी साथे वेर करे नहि, बहुजनसंमत होय तेवुंज वचन बोले, जे काममां रस न लागे, ते काम करे नहि, कदापि करवुं पडे तो पण घणांने मलीने करे. धर्म, पुण्य, दया, दानादि शुभकाममां बुद्धिमान् मुख्य थाय, अग्रेसर थाय, कोइनुं बुरुं करवामां अग्रेसर न थाय, सुपात्र साधुउमां कदापि मत्सर ईर्ष्या करावे नहि, पोते तेउना उपर करे नहि, पोतानी ज्ञातिवाला कष्टमां पड्या होय तेनी उपेक्षा करे नहि, पांच माणसने मेलवी आदरसहित ते कष्ट दूर करे. माननीय पुरुषनुं मानभंग करे नहि दरिद्र, पीडित, मित्र, साधर्मी, ज्ञातिमां बुद्धिमंत, गुणमां गरिष्ट, संतानहीन, इत्यादिनु कष्टमां पालन करे पोताना कुलने जे काम करवु उचित न होय ते काम करे नहि. नीतिशास्त्र तेमज बीजां शास्त्रो मुजब जे उचित आचरण होय तेज करे. अनुचित निरतर वर्जे. वैद्यक ग्रंथमां लख्यामुजब एकप्रहरमां बेवार भोजन न करे, तथा बे प्रहर उलंघे नहि, कारण के एक पहोरमां बेवार खावाथी रोगोत्पत्ति थाय छे, अने बे पहोर पछी न खाय तो बलक्षय थाय छे

हवे सुपात्रदानादि आपवानी युक्ति लखीए छीए भोजन अवसरें भक्तिसहित साधुउने निमंत्रणा करीने साधुनी साथे घरमां आवे, जो साधु स्वयमेव आवता होय तो सन्मुख जइ आदर सत्कार करे, विन-

यसहित संविज्ञ नावित अनावित क्षेत्र देखे, सुनिक्ष दुर्निक्षादि काल देखे, सुलन दुर्लनादि देवायोग्य वस्तु देखे, तथा आचार्य, उपाध्याय, गीतार्थ, तपस्वी, वाल, वृद्ध, ग्लान, सह असहादि अपेक्षापूर्वक मह-त्त्व, स्पर्द्धा, मत्सर, स्नेह, लज्जा, नय, दाक्षिण्य, परानुयायिपणुं, प्र-त्युपकार, इच्छा, माया, विलंब, अनादर, बुरु बोलवु, पश्चात्तापादि, सर्व दाननां दूषणो वर्जी आत्माने संसारथी तारवा वास्ते एवी बुद्धिथी बें-तालीश दूषणरहित, घरमां जे कांइ अन्न, पक्वान्न, पाणी, वस्त्रादि होय, तेनी अनुक्रमे सर्वरीतें निमंत्रणा करे, पोताना हाथमां पात्र लइ पासे रहेल नार्या प्रमुखथी दान वहोरावे, वंदना करी पोताना घरना द्वार-सुधी साथे वोलावा जाय, पठी पाठा आवी नोजन करवा बेसे, साधु-नो योग कदापि प्राप्त न थाय तो वरसादनी जेम साधुनी राह देखे, वि-चारे के साधु आवी जाय तो मारो जन्म सफल थइ जाय, ते कारणसर दिशावलोकन करे जे नोजन साधुए न वहोर्युं होय ते श्रावक न खाय जे श्रावक हृष्टपुष्ट साधुने विनाकारण अशुद्ध आहार आपे तो, लेनार देनार बंनेने रोगीना दृष्टांतनी जेम हितकारी नथी जे साधुनो निर्वाह थतो न होय, दुर्निक्ष होय, साधु रोगी होय, अथवा बीजु कांइ का-रण होय, तेवे प्रसंगे साधुने अशुद्ध अप्राशुक आहार आपे तो लेनार देनार बनेने हितकारी ठे रस्ताना थाकेला, रोगी, शास्त्र पढनार, लोच करेल, अने व्रतधारीने पारणाने दिन, दान आपवामां आवे तो वहुज फल थाय ठे आ सुपात्रदाननु नाम अतिथिसंविजाग कहेवाय ठे य-दागम ॥ अतिहि संविजागोनाम नायगयाण ॥ इत्यादि पाठनो अर्थ कहीए ठीए अतिथिसंविजाग अर्थात् न्यायथी उपार्जन थयेल कल्प-नीय अन्न, पाणी प्रमुख, देश, काल, श्रद्धा, सत्कार, क्रमयुक्त उत्कृष्ट नक्तिथी, आत्मानी अनुग्रहबुद्धिथी, संयतसाधुने दान आपवु ते. सु-पात्रदानथी देवतासंबंधी तथा औदारिकादि संबंधी अद्भुत नोग, सर्व इष्ट सुखसमृद्धि, राज्यप्रमुख मनगमता सयोगनी प्राप्ति, अने निर्विलंब, निर्विघ्न, मोक्षफल प्राप्ति ठे अजयदान अने सुपात्रदान मोक्षफल प्र-दाता ठे, अनुकंपादान परपराए मोक्षदाता ठे, अने अनुकपादान, उचि-तदान तथा कीर्तिदान सासारिक सुख नोगनां आपनारा ठे

पात्र त्रण तरेहनां कथन करेलछे. १ उत्तम पात्र साधु, २ मध्यम पात्र श्रावक, ३ अविरति सम्यग्दृष्टि जघन्यपात्र, १ अनादर, २ कालविलंब, ३ विमुख, ४ असत्यबोलवु, ५ दान दइ पश्चात्ताप, आ पांच सत् दाननां कलंक छे. १ आनंदनां आंसु आववां, २ रोमांचित थवुं, ३ बहुमान देवुं, ४ मिष्टजापण, ५ दानदीधा पछी अनुमोदना, आ पांच सुपात्र दाननां जूषण छे सुपात्रदाननुं परिग्रहपरिमाण करवानुं फल रत्नसार कुमारनी जेम थाय छे आ कथा श्राद्धविधिग्रंथथी जाणवी ते कारणथी एवा साधुनो संयोग मलवाथी सुपात्रदान दिन प्रतिदिन विवेकवान् अवश्य करे.

जोजन अवसरें साधर्मी बंधु कोइ आव्या होय तो पोतानी साथे यथा शक्ति जोजन करावे, कारण के तेउपण पात्र छे आंधला लुला प्रमुख मागनाराउने पण यथायोग्य आपे, कोइ मागनारने निराश जवा दे नहि. धर्मनी निंदा न करावे, कठण अंतःकरण न करे जोजनने अवसरें दयावंतें बारणाबंध न करवां जोइये, तेमांपण धनवानें तो अवश्य द्वार खुल्लां राखवां जोइये. ॥ आगमेऽप्युक्त॥ नेव दारं पिहावेइ, जुंजमाणो सुसावउ ॥ अणुकंपा जिणंदेहिं, सड्डाण न निवारिया ॥ १ ॥ दठ्ठूण पाणिनिवहं, जीमे जवसायरंमि डुखत्त ॥ अविसेस अणुकंपं, डुहावि सामथ्थउ कुणइ ॥२॥ अर्थः— जोजनावसरें दरवाजा बंध करे नहिं जिनेश्वर जगवानें श्रावकने अनुकंपादान करवानी मना करी नथी जीवोना समूहने जयानक संसारमां डुःखपीडित देखीने तेउना उपर विशेपरहित ड्रव्य तेमज जावथी अनुकंपा करे ड्रव्यथी यथायोग्य अन्नादि आपे, जावथी तेउने सन्मार्गमां प्रवर्त्तावे. श्री पचमांग प्रमुखमां ज्या श्रावकोनुं वर्णन करेल छे, त्यां आ प्रमाणे पाठ छे " अवगुंठि अडुवारा " आ विशेषण ध्यानमां राखी जिक्षुकादिने आपवावास्ते निरतर द्वार उघाडां राखे. संवत्सरीदान आपी तीर्थंकर महाराजाउयें पण दीन प्राणीउनो उद्धार करेल छे कदापि डुकाल पडे तो श्रावकोये तो विशेषरीतें दीननो उद्धार करवो पूर्वे विक्रमसंवत् १३१५ मा जद्रेसर गामनिवासी श्रीमाल ज्ञातिशाह जगडु श्रावकें ११२ एकसो बार दानशाला बधावी दान आपेल

यसहित संविज्ञ भावित अभावित क्षेत्र देखे, सुभिक्ष दुर्भिक्षादि काल देखे, सुलभ दुर्लभादि देवायोग्य वस्तु देखे, तथा आचार्य, उपाध्याय, गीतार्थ, तपस्वी, बाल, वृद्ध, ग्लान, सह असहादि अपेक्षापूर्वक महत्त्व, स्पर्द्धा, मत्सर, स्नेह, लज्जा, भय, दाक्षिण्य, परानुयायिपणुं, प्रत्युपकार, इच्छा, माया, विलंब, अनादर, बुरु बोलवु, पश्चात्तापादि, सर्व दाननां दूषणो वर्जी आत्माने संसारथी तारवा वास्ते एवी बुद्धिथी बेंतालीश दूषणरहित, घरमां जे कांइ अन्न, पक्वान्न, पाणी, वस्त्रादि होय, तेनी अनुक्रमें सर्वरीतें निमंत्रणा करे, पोताना हाथमां पात्र लइ पासे रहेल भार्या प्रमुखथी दान वहोरावे, वंदना करी पोताना घरना द्वारसुधी साथे वोलावा जाय, पछी पाछा आवी भोजन करवा बेसे, साधुनो योग कदापि प्राप्त न थाय तो वरसादनी जेम साधुनी राह देखे, विचारे के साधु आवी जाय तो मारो जन्म सफल थइ जाय, ते कारणसर दिशावलोकन करे जे भोजन साधुए न वहोर्युं होय ते श्रावक न खाय जे श्रावक हृष्टपुष्ट साधुने विनाकारण अशुद्ध आहार आपे तो, लेनार देनार बनेने रोगीना दृष्टांतनी जेम हितकारी नथी. जे साधुनो निर्वाह थतो न होय, दुर्भिक्ष होय, साधु रोगी होय, अथवा बीजु कांइ कारण होय, तेवे प्रसंगें साधुने अशुद्ध अप्राशुक आहार आपे तो लेनार देनार बनेने हितकारी छे रस्ताना थाकेला, रोगी, शास्त्र पढनार, लोच करेल, अने व्रतधारीने पारणाने दिन, दान आपवामा आवे तो बहुज फल थाय छे आ सुपात्रदाननु नाम अतिथिसंविभाग कहेवाय छे यदागम ॥ अतिहि सविभागोनाम नायगयाण ॥ इत्यादि पाठनो अर्थ कहीए छीए अतिथिसंविभाग अर्थात् न्यायथी उपार्जन थयेल कल्पनीय अन्न, पाणी प्रमुख, देश, काल, श्रद्धा, सत्कार, क्रमयुक्त उत्कृष्ट भक्तिथी, आत्मानी अनुग्रहबुद्धिथी, संयतसाधुने दान आपवु ते सुपात्रदानथी देवतासबधी तथा औदारिकादि सबधी अद्भुत भोग, सर्व इष्ट सुखसमृद्धि, राज्यप्रमुख मनगमता सयोगनी प्राप्ति, अने निर्विलंब, निर्विघ्न, मोक्षफल प्राप्ति छे अभयदान अने सुपात्रदान मोक्षफल प्रदाता छे, अनुकपादान परंपराए मोक्षदाता छे, अने अनुकपादान, उचितदान तथा कीर्तिदान सांसारिक सुख भोगनां आपनारा छे

पात्र त्रण तरेहनां कथन करेलछे. १ उत्तम पात्र साधु, २ मध्यम पात्र श्रावक, ३ अविरति सम्यग्दृष्टि जघन्यपात्र, १ अनादर, २ कालविलंब, ३ विमुख, ४ असत्यबोलवुं, ५ दान दइ पश्चात्ताप, आ पांच सत् दाननां कलंक छे १ आनंदनां आंसु आववां, २ रोमांचित थवुं, ३ बहुमान देवुं, ४ मिष्टभाषण, ५ दानदीधा पछी अनुमोदना, आ पांच सुपात्र दाननां भूषण छे. सुपात्रदाननुं परिग्रहपरिमाण करवानुं फल रत्नसार कुमारनी जेम थाय छे आ कथा श्राद्धविधिग्रंथथी जाणवी. ते कारणथी एवा साधुनो संयोग मलवाथी सुपात्रदान दिन प्रतिदिन विवेकवान् अवश्य करे.

भोजन अवसरें साधर्मी बंधु कोइ आव्या होय तो पोतानी साथे यथा शक्ति भोजन करावे, कारण के तेउपण पात्र छे आंधला लुला प्रमुख मागनाराउने पण यथायोग्य आपे, कोइ मागनारने निराश जवा दे नहि. धर्मनी निंदा न करावे, कठण अत करण न करे भोजनने अवसरें दयावंतें बारणाबध न करवां जोइये, तेमांपण धनवानें तो अवश्य द्वार खुल्लां राखवां जोइये. ॥ आगमेऽप्युक्त॥ नेव दारं पिहावेइ, भुंजमाणो सुसावउ ॥ अणुकंपा जिणदेहिं, सड्ढाणं न निवारिया ॥ १ ॥ दिठूण पाणिनिवहं, भीमे भवसायरंमि डुखत्त ॥ अविसेस अणुकंपं, डुहावि सामछउ कुणइ ॥२॥ अर्थः– भोजनावसरे दरवाजा बंध करे नहिं जिनेश्वर भगवानें श्रावकने अनुकंपादान करवानी मना करी नथी जीवोना समूहने भयानक संसारमां डुःखपीडित देखीने तेउना उपर विशेपरहित द्रव्य तेमज भावथी अनुकंपा करे द्रव्यथी यथायोग्य अन्नादि आपे, भावथी तेउने सन्मार्गमां प्रवर्त्तावे. श्री पचसांग प्रमुखमां ज्या श्रावकोनुं वर्णन करेल छे, त्यां आ प्रमाणे पाठ छे " अवगुठि अडुवारा " आ विशेषण ध्यानमां राखी भिक्षुकादिने आपवावास्ते निरंतर द्वार उघाडां राखे. संवत्सरीदान आपी तीर्थंकर महाराजाउयें पण दीन प्राणीउनो उद्धार करेल छे कदापि डुकाल पडे तो श्रावकोयें तो विशेषरीतें दीननो उद्धार करवो पूर्वे विक्रमसंवत् १३१५ मां भद्रेसर गामनिवासी श्रीमाल ज्ञातिशाह जगडु श्रावकें ११२ एकसो बार दानशाला बंधावी दान आपेल

ठे वली संवत् १४२ए मां सोनी सिंहा श्रावकें २४००० हजार मण अन्न दीन जीवोने डुकालमां आपेल ठे

माता, पिता, जाइ, वेहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान, वांधेलां गाय प्रमुख जानवरो, आ सर्वनी जोजन अवसरें सार संजाल लेवी जोइये मातपिताने जोजन करावि, पच परमेष्टि स्मरण करी, प्रत्याख्यान पारी, सर्वनियम स्मरण करी, साम्यताथी जोजन करे साम्यता अर्थात् जे अन्नपाणी परस्पर विरुद्ध न होय, उलटा परिणमे तेवा न होय, पोताना स्वजावने माफक होय तेवु जोजन साम्य कहेवाय ठे जे पुरुष जीवित पर्यंत साम्यताथी जोजन करे, ते कदी विष खाइ जाय तो, विष पण तेने अमृत थइ जाय असाम्य जोजन करनारने अमृत पण विष थइ जाय ठे, परंतु अपवाद ए ठे के साम्यताथी पण पथ्यज खावु जोइये, अपथ्य नहीं खावामां अत्यत गृद्धिपणु न जोइये कंवनाडिथी ज्यारे जोजन नीचे उतरी जाय ठे, त्यारे सर्व जोजन वरावर थइ जायठे, ते कारणथी एक क्षणमात्रना स्वादने वास्ते अतिलोलता न करवी जोइये वली अजक्ष्य, अनंतकाय, वहु सावद्यवस्तु अर्थात् वहु पापवाली वस्तु खाय नहि जे मिताहार करे ठे ते वलवान् थाय ठे, अने जे वहु खाय ठे ते अनुक्रमे वलहीन थाय ठे अधिक खावाथी अजीर्ण, वमन, विरेचनादि मरणांत कष्टपण थइ जाय ठे यथा ॥ हितमितविपक्वजोजी, वामशयी नित्यचक्रमणशील ॥ उज्जित मूत्रपुरीष, स्त्रीषु जितात्मा जयति रोगान् ॥ अर्थ –जुख लागे त्यारे हितकारी एवु थोडुं अन्न जमे, डावी वाजु नीचे राखी सुवे, निरतर चालवानो अज्यास राखे, ज्यारे वाधा थाय त्यारे तरत दिशामात्रा करे, अने स्त्री साथे जोग न करे ते पुरुष रोगोउपर जय मेलवे ठे

हवे जोजनविधि, व्यवहार शास्त्रानुसार लखिये ठीये, अति प्रजातमां, अति संध्यामा तथा रात्रिये जोजन न करवु जोइये सडेलु अने वासी अन्न न खावु जोइये चालतां खावु नहि, जमणा पग उपर हाथ राखी खावु नहि, हाथ उपर राखी खावु नहि, खुल्ला आकाशमां खावुं नहि, तडकामां वेसी खावु नहि, अधारामां वेसी खावं नहि. वृक्षनी नीचे

, पग तेमज वस्त्र धोयाविना खावुं नहि, नग्न थइ मेलां वस्त्र पेहेरी, पकड्याविना खावुं नहि, मात्र एक धोतियुं पेहेरी खावा वेसवुं नहि, वस्त्र पेहेरी खावा वेसवुं नहि, जीनुं वस्त्र माथे लपेटी खावु नहि, रे अपवित्र होइयें त्यारे खावुं नहि, अतिगृद्ध, रसलंपट थइ खावुं नहि, नसहित, व्यग्रचित्ते, निःकेवल भूमिपर वेसी, पाटउपर वेसी खावुं न- विदिशि तथा दक्षिणदिशि तरफ मुख राखी खावा वेसवु नहि, पा- आसनपर वेसी खावुं नहि, आसन उपर पग राखी जोजन करवुं , चंडालना देखतां, धर्मथी पतित होय तेना देखतां, फूटेलां, तथा न पात्रमां खावु नहि; जे शाक प्रमुख वस्तु विष्टाथी उत्पन्न थयेल ते खावी नहि, वालहत्याप्रमुख जेणे करेल होय तथा रजस्वला तेवी स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहि जे वस्तु गाय, श्वान, ोये सुघी होय, जे वस्तु अजाणी होय, जे वस्तु फरीथी उष्ण करी , ते वस्तु खावी नहि, वचवचाट शब्द करतां खावु नहि मुख फा- ां वुरुं लागे एम मुख करी खावुं नहि जोजन अवसरें वीजाउने वो- ी प्रीति उत्पन्न थाय तेम जोजन करवुं देवगुरुनु नाम स्मरण करी, ासन उपर वेसी पोतानी माता, वेहेन, जाजु, जाणेज वा स्त्री प्रमुखें जोजन तैयार करेल होय ते पवित्रपणे पीरसातां मौनपणे दक्षिण चालतां जमवु. जे जे वस्तु खावी ते नासिकाये सुघीने खावी, तेम तां दृष्टिदोष नाश पामे ठे अति खारु, अतिखाटुं, अति उष्ण, अति- तल, अतिमीठु तथा अतिशाक खावु नहि. मुखमां स्वाद लागवा मा- खावुं अतिउष्ण खावाथी रसनाश पामे ठे, अति खाटु खावाथी इं- योनी शक्ति कम थइ जाय ठे, अतिखारुं खावाथी नेत्र वगडी जायठे, तिस्निग्ध खावाथी घ्राणशक्ति मंद थइ जाय ठे, अति तीखु तथा कड- खावाथी कफ दूर थइ जाय ठे, कपायलुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश मे ठे, स्निग्ध घृतादि खावाथी वायु दूर थइ जाय ठे, वाकी शेप रोग न खावाथी दूर थइ जाय ठे.

जे पुरुप शाक वहु खाय, घीथी रोटली खाय, दुधने चोखा खाय, पाणी न पीये, अजीर्ण होय त्यारे खाय नहि, ते पुरुप रोगपर जीत तवे ठे. जोजन करती वखत प्रथम मीठुं अने स्निग्ध जोजन करे, व-

छे. वली संवत् १४२९ मां सोनी सिंहा श्रावकें २४००० हजार मण अन्न दीन जीवोने दुकालमां आपेल छे

माता, पिता, भाइ, वेहेन, पुत्र, स्त्री, सेवक, ग्लान, बांधेलां गाय प्रमुख जानवरो, आ सर्वनी भोजन अवसरे सार सभाल लेवी जोइये मातपिताने भोजन कराविं, पंच परमेष्टि स्मरण करी, प्रत्याख्यान पारी, सर्वनियम स्मरण करी, साम्यतार्थी भोजन करे साम्यता अर्थात् जे अन्नपाणी परस्पर विरुद्ध न होय, उलटा परिणमे तेवा न होय, पोताना स्वभावने माफक होय तेवु भोजन साम्य कहेवाय छे जे पुरुष जीवित पर्यंत साम्यतार्थी भोजन करे, ते कदी विष खाइ जाय तो, विष पण तेने अमृत थइ जाय असाम्य भोजन करनारने अमृत पण विष थइ जाय छे, परंतु अपवाद ए छे के साम्यतार्थी पण पथ्यज खावुं जोइये, अपथ्य नही खावामा अत्यत गृद्धिपणु न जोइये कंठनाडिथी ज्यारे भोजन नीचे उतरी जाय छे, त्यारे सर्व भोजन वरावर थइ जायछे, ते कारणथी एक क्षणमात्रना स्वादने वास्ते अतिलोलता न करवी जोइये वली अभक्ष्य, अनंतकाय, वहु सावद्यवस्तु अर्थात् वहु पापवाली वस्तु खाय नहि जे मिताहार करे छे ते वलवान् थाय छे, अने जे वहु खाय छे ते अनुक्रमें वलहीन थाय छे अधिक खावाथी अजीर्ण, वमन, विरेचनादि मरणात कष्टपण थइ जाय छे यथा ॥ हितमितविपक्वभोजी, वामशयी नित्यचक्रमणशील.॥ उज्झित मूत्रपुरीष , स्त्रीपु जितात्मा जयति रोगान् ॥ अर्थ –भुख लागे त्यारे हितकारी एवु थोडुं अन्न जमे, डावी वाजु नीचे राखी सुवे, निरतर चालवानो अभ्यास राखे, ज्यारे वाधा थाय त्यारे तरत दिशामात्रा करे, अने स्त्री साथे भोग न करे ते पुरुष रोगोउपर जय मेलवे छे

हवे भोजनविधि, व्यवहार शास्त्रानुसार लखिये छीये, अति प्रभातमां, अति सध्यामा तथा रात्रिये भोजन न करवु जोइये सडेलु अने वासी अन्न न खावु जोइये. चालता खावु नहि, जमणा पग उपर हाथ राखी खावु नहि, हाथ उपर राखी खावु नहि, खुल्ला आकाशमां खावुं नहि, तडकामा वेसी खावु नहि, अधारामा वेसी खावु नहि, वृक्षनी नीचे वेसी खावु नहि, तर्जनी आगली उची राखी कदापि खावु नहि, मुख,

हाथ, पग तेमज वस्त्र धोयाविना खावुं नहि, नग्न थइ मेलां वस्त्र पेहेरी, थाल पकड्याविना खावुं नहि, मात्र एक धोतियु पेहेरी खावा वेसवु नहि, भीनुं वस्त्र पेहेरी खावा वेसवु नहि, भीनु वस्त्र माथे लपेटी खावु नहि, ज्यारे अपवित्र होइयें त्यारे खावु नहि, अतिगृद्ध, रसलंपट थइ खावु नहि, उपानसहित, व्यग्रचित्ते, निःकेवल भूमिपर वेसी, पाटउपर वेसी खावुं नहि, विदिशि तथा दक्षिणदिशि तरफ मुख राखी खावा वेसवुं नहि, पातला आसनपर वेसी खावुं नहि, आसन उपर पग राखी भोजन करवुं नहि, चंडालना देखतां, धर्मथी पतित होय तेना देखतां, फूटेलां, तथा मलिन पात्रमां खावुं नहि; जे शाक प्रमुख वस्तु विष्टाथी उत्पन्न थयेल होय ते खावी नहि, वालहत्याप्रमुख जेणे करेल होय तथा रजस्वला होय तेवी स्त्रीए स्पर्श करेली वस्तु खावी नहि जे वस्तु गाय, श्वान, पंखीये सुघी होय, जे वस्तु अजाणी होय, जे वस्तु फरीथी उष्ण करी होय, ते वस्तु खावी नहि, वचवचाट शब्द करतां खावु नहि मुख फाटतां बुरुं लागे एम मुख करी खावु नहि. भोजन अवसरें वीजाउने बोलावी प्रीति उत्पन्न थाय तेम भोजन करवु देवगुरुनुं नाम स्मरण करी, समासन उपर वेसी पोतानी माता, वेहेन, भाइ, भाणेज वा स्त्री प्रमुखें जे भोजन तैयार करेल होय ते पवित्रपणे पीरसातां मौनपणे दक्षिण स्वर चालतां जमवु. जे जे वस्तु खावी ते नासिकाये सुघीने खावी, तेम करतां दृष्टिदोष नाश पामे छे. अति खारु, अतिखाटुं, अति उष्ण, अतिशीतल, अतिमीठु तथा अतिशाक खावु नहि मुखमां स्वाद लागवा मात्र खावु. अतिउष्ण खावाथी रसनाश पामे छे, अति खाटु खावाथी इन्द्रियोनी शक्ति कम थइ जाय छे, अतिखारुं खावाथी नेत्र वगडी जायछे, अतिस्निग्ध खावाथी घ्राणशक्ति मंद थइ जाय छे, अति तीखु तथा कडवु खावाथी कफ दूर थइ जाय छे, कषायलुं अने मीठुं खावाथी पित्त नाश पामे छे, स्निग्ध घृतादि खावाथी वायु दूर थइ जाय छे, वाकी शेष रोग ते न खावाथी दूर थइ जाय छे.

जे पुरुष शाक वहु खाय, घीथी रोटली खाय, दुधने चोखा खाय, वहु पाणी न पीये, अजीर्ण होय त्यारे खाय नहि, ते पुरुष रोगपर जीत मेलवे छे भोजन करती वखत प्रथम मीठुं अने स्निग्ध भोजन करे, व-

चमां तीक्ष्ण जोजन करे. अने पाठल कडवुं जोजन करे. उक्तं च ॥ सुस्निग्धमधुरैः पूर्व, मध्नीयादन्वितं रसैः ॥ द्रव्याम्ललवणैर्मध्ये, पर्यंते कटुतिक्तकैः ॥

जो प्रथम नरम वस्तु खाय, मध्यमां कट्ठ वस्तु खाय अंतमां फरी नरम वस्तु खाय तो बलवत तथा नीरोगी थाय ठे जोजननी पेहेलां पाणी पीये तो अग्निमंद थइ जाय ठे, जोजननी वचमां पीये तो रसायन समान गुणकारी थाय ठे, अने जोजननी अंते विषसमान थाय ठे जोजननी अनंतर सर्व रसथी लिपेला हाथथी एक अंजली रोज पीये, पशुनी जेम पाणी पीये नहि, पाणी पीधा पठी बाकी रहेलु फेकी दे, अजलीथी पाणी पीये नहि, पाणी थोडुं पीवु पथ्य ठे. पाणीथी जीजेला हाथ गलाउपर, कपोलउपर तथा नेत्र उपर लगाडे नहि. जोजन कर्या पठी अंगमर्दन, दिशागमन, बोज उठाववानुं काम, बेसी रेहेवुं तथा स्नान, एटलां काम करे नहि, जोजन कर्या पठी केटलो एक वखत बेसी रेहेवामां आवे तो पेट मोट्टु थइ जाय ठे मुख खुल्लु राखी चता सुवे तो बल वधे ठे, डावे पडखे सुवे तो आयु वधे ठे, जोजन करी दोडे तो मरण थवानो सजव ठे, जोजन कर्या पठी डावे पडखे बे घडीसुधी सुवे, परंतु निद्रा लहे नहि, अथवा सुवे नहि तो सो डगलां चाले बीजे स्थलेपण कह्युं ठे के देवने, साधुने, नगरना स्वामि राजाने अने स्वजनोने ज्यारे कष्ट आवे त्यारे तथा चंद्र, सूर्यना ग्रहण वखते विवेकवान् पुरुष, शक्ति होय तो जोजन न करे, [illegible] रीतें "अजीर्णप्रजवारोगा." तेथी अजीर्णमा पण जोजन करे

ज्वरनी आदिमा

दन करे. जोजन कर्या पठी गंठीसहित दिवस चरिम प्रत्याख्यान विधिथी करे, पठी गीतार्थ साधु, गीतार्थ श्रावक तथा सिद्धपुत्रादि समीप स्वाध्याय (पठन पाठन) यथायोग्य करे. योगशास्त्रमां लख्युं ठे के जे गुरुमुखथी जाणेल होय, ते वीजाउने जणावे, स्वाध्याय कर्या पठी संध्यासमये जिनपूजा करे, पठी प्रतिक्रमण करे, पठी स्वाध्याय करे, पठी वैयावच्च अर्थात् मुनिनी पगचपी करे, पठी घेर आवी सर्व परिवारने मेलवी धर्मनु स्वरूपकथन करे उत्सर्गमार्गे तो श्रावके एक वखतज जोजन करवु जोइये ॥ यदुक्तं ॥ उस्सग्गेणं तु सड्ढोय, सचित्ताहारं वज्जाउ ॥ इक्कासणगजोइय, बंजयारितहेवय ॥ १ ॥ जो एक वखत जोजन करवाने समर्थ न होय, तो दिवसनो आठमो जाग अर्थात् चार घडी दिवस वाकी रहे त्यारे जोजन करी ले, वे घडी दिवस वाकी रहेतां पहेलां तो जोजन करी लेवु जोइये. पठी यथाशक्ति चार आहार, त्रण आहार, वे आहार त्यागरूप दिवस चरिम, सूर्यउगतां सुधी करे मुख्यवृत्तियें तो दिवस ठतां प्रत्याख्यान करवुं जोइये, परंतु अपवादे रात्रियें पणकरे

इति श्रीतपगच्छीयगणिश्रीमणिविजयतच्छिष्यमुनिश्रीबुद्धिविजयतच्छिष्यमुन्यात्मारामानंदविजयविरचितेजैनतत्वादर्शगुर्जरजाषांतरे श्राद्धशास्त्रानुसारेण श्रावकदिनकृत्यप्रकाशकनामा नवमपरिछेदः संपूर्णः ॥

॥ अथ दशमपरिछेदप्रारंज ॥

आ परिछेदमां श्रावकोनां १ रात्रिकृत्य, २ पर्वकृत्य, ३ चातुर्मासिककृत्य, ४ संवत्सरीकृत्य, ५ जन्मकृत्य, आ पांच कृत्यनुं स्वरूप अनुक्रमें लखवामां आवशे, प्रथम रात्रिकृत्य लखीये ठीये.

साधुनी पासे तथा पौषधशाला प्रमुखमां यत्नापूर्वक प्रमार्जना करीने सामायक लही श्रावक प्रतिक्रमण करे, पठी साधुउनी वैयावच्च (पगचपी) करे. उत्सर्ग मार्गनी अपेक्षायें साधुने श्रावकपासे विश्रामण आदि न करावबुं जोइयें, परतु श्रावक तेम करवानो जाव करे तो महाफल थाय ठे, पठी श्राद्धविधि, श्राद्धदिनकृत्य, उपदेशमाला अने कर्मग्रंथ प्रमुख शास्त्रोनो स्वाध्याय करे, पठी सामायक पारी घेर जाय

घेर आवी सम्यक्त्वमूल वार व्रतमां सर्व शक्तिथी यत्न करणादिरूप

तथा अर्हत्चैत्य अने साधर्मी वर्जित वासस्थानमां निरतर अनिवास-रूप, तथा पूजा प्रत्याख्यानादि अभिग्रहरूप, साते क्षेत्रमां यथाशक्ति व्यय करवारूप, सर्व परिवारने यथायोग्य धर्मोपदेश कथन करे श्रावक जो पोताना परिवारने धर्मनु स्वरूप यथायोग्य न कहे तो ते परिवार धर्मथी विमुख रहे, अने तेउने धर्मनी प्राप्ति न थाय, तेथी इह लोक परलोकनां अनेक तरेहनां ते पापकर्म करे, ते सर्व पाप मुख्य श्रावकने लागे लौकिक व्यवहारशास्त्रमां पण कह्युं छे के चोरने चोरी करतां जाणतां छतां तेने न निवारे अने खानपानादि आपे तो ते सहायक पण मददगार चोर गणाय छे धर्ममांपण तेमज जाणवु. ते कारणथी श्रावकें द्रव्य तथा भावथी पोताना कुटुंवने निरतर लाभ आपवो जोइये तेमा द्रव्यथी पुत्र, स्त्री प्रमुखने यथायोग्य अन्न वस्त्रादि आपवां जोइये, अने भावथी तेउने धर्मनो उपदेश करवो जोइये, तेमज वीजां जे दुःखी कुटुंवी होय तेउनां दुःख निवारवानी चिंता करवी जोइये पाप लागवानी वावतमां अन्यशास्त्रमां पण कह्यु छे यत ॥ राज्ञि राष्ट्रकृतं पाप, राज्ञः पाप पुरोहिते ॥ भर्त्तरि स्त्रीकृतं पापं, शिष्यपाप गुरावपि ॥ १ ॥ धर्मदेशना आप्या पछी, रात्रिनो प्रथम पहोर व्यतीत थया वाद, शरीरने सुखजनक शय्यामां विधिपूर्वक अल्प निद्रा करे वाहुल्यताये गृहस्थ, मैथुन अभिलाषा वर्जे जावजीवसुधी ब्रह्मचर्य व्रत पालवा समर्थ न होय-तो, पर्वतिथियें तो अवश्य ब्रह्मचर्य व्रत पालवु जोइये

जे शय्यामा मांकड प्रमुख पड्या होय, जे पलंग टुको होय, भांगेलो होय, मेली शय्या होय, जे पलग वलेला लाकडानो वनावेलो होय, तेनो त्याग करे. पलंगमा चार जातसुधीनुं काष्ठ वपराय तो शुभ, अने वधारेनु वपराय तो अशुभ, एम नीतिशास्त्रमा कह्युं छे पूजनीय वस्तु उपर सुवे नहि, पाणीथी भीजायेला पग छतां सुवे नहि, उत्तरदिशि तथा पश्चिम दिशि तरफ मस्तक राखी सुवे नहि, वासनी जेम सुवे नहि, पगराखवानी तरफ सुवे नहि, हाथीना दांतनी जेम सुवे नहि, देवमंदिरना मूल गभारामां, सर्पनी ववी उपर, वृक्षनी नीचे, तथा स्मशानमा सुवे नहि कोइनी साथे लडाइ थइ होय तो शांति करी सुवे सुवानी वखत पाणी पासे राखे द्वार वध करी, इष्टदेवने नमस्कार करी सर्व आहारनो त्याग

करी,ओढवानां वस्त्र समारी शरीर साफ करी,डाबी बाजु नीचे राखी शयन करे.

दिवसे सुवे नहि, परंतु क्रोध, शोक तथा मद्य गमाववावास्ते, तथा स्त्रीकर्म अने बीजी मेहेनतनो थाक लाग्यो होय तो ते मटाडवावास्ते, तेमज रस्तानो परिश्रम दूर करवावास्ते सुवे, वली अतिसार, श्वास, हेडकी प्रमुख रोग दूर करवावास्ते सुवे, तथा बालक, वृद्ध अने बलक्षीण होय तेपण सुवे वली अजीर्णना व्याधिवाला, वायाना व्याधिवाला, खांसीवाला अने जेओने रात्रियें निद्रा न आवती होय वा अल्प आवती होय तेओपण सुवे तृषा, शूल अने गड गुमडानी वेदनाथी विह्वल होय तेपण दिवसे सुवे. जेठ अने असाड मासमां दिवसेंपण सुवु ते सारुं छे. बीजा महिनामां जो सुवे तो कफ अने पित्तकर्ता थाय छे वहु वखत निद्रा लेवी तेपण सारुं नथी. रात्रे ज्यारे सुवे त्यारे दिशावकाशिक व्रत उच्चरी सुवे, चार शरण ग्रहे, जीवराशि साथे खमावे, अढार पापस्थानक वोसिरावे, दुष्कृतनी निंदा गर्हणा करे, सुकृतनु अनुमोदन करे, अने नवकार सहित आ गाथा त्रण वार उच्चरे. ॥ जइ मेहुज्ज पमाओ, इमस्स देहस्स इमाइ रयणीये ॥ आहारमुवहि देहं, सव्वं तिविहेण वोसरिय ॥ १ ॥ अर्थ सुगम छे सागारी अनशन करे सुती वखते पांच नवकार स्मरण करे. स्त्रीनी शय्याथी अलग शय्यामां सुवे, शय्यामां साथे सुवाथी विकार अधिक जागे छे तथा जे वासना सुती वखते होय, ते जागतां सुधी दूर थती नथी. वली अधिक विकारथी दिवानापणुं थइ जाय छे, तथा मरण अवसरे गफलत थइ जाय तो पण सेचतन अवस्थामां जे वासना विद्यमान हती तेज वासना रहे छे ॥ इत्याप्तोपदेश ॥ ते कारणथी सर्वथा उपशांतमोह थइने, तथा धर्म वैराग्यादि जावनाथी वासित थइने निद्रा करे तो मार्गु स्वप्न न आवे. जे रीतियें सुंदर धर्ममयस्वप्न आवे ते रीतियें सुवे, जेथी कदाच निद्रामां आयुनी समाप्ति थइ जाय तो पण ते उत्तम गतिमां जाय.

सुता पछी रात्रिमां जो जागी जवाय, अने तेवे प्रसंगे अनादि कालना अन्यासना रसथी कदाचित् काम पीडा करे, तो स्त्रीना शरीरना अशुचिपणानो विचार करे, अने श्रीजंबुस्वामि तथा श्रीस्थूलजद्रादि महर्षियोना तथा सुदर्शनप्रमुख महाश्रावकोनां दुष्कर शीयल पालवानी

दृढतानो विचार करे, वली स्त्रीना शरीरनी अपवित्रता जुगुप्सनीयादि सर्व श्रीहेमचन्द्रसूरिकृतयोगशास्त्रमां तथा श्रीमुनिसुंदरसूरिकृत अध्यात्मकल्पद्रुममां जेम बतावेल छे, तेम विचारे, तेनु लेशमात्र स्वरूप लखीये छीये

चामडी, हाड, मज्जा, आंतरडां, चरवी, नस, रुधिर, मांस, विष्टा, मूत्र, खेल, खखारादि अशुचि पुद्गलनु पिंड स्त्रीनुं शरीरछे, आ पिंडमां तु शु रमणीय वस्तु देखे छे? जे लोक विष्टाने दूरथी देखी थूथूकार करे छे, तेज मूढलोक विष्टा अने मूत्रथी भरेला एवा स्त्रीना शरीरनी अभिलापा करे छे। बहु छिद्रोवाली विष्टानी कोथली जेना छिद्रोमांथी कृमीजाल निकले छे, तथा कृमीजालथी भरेली, एवी स्त्री छे चपलता, माया, असत्यता, ठगाइ इत्यादिथी संस्कारित थयेल छे, तेथी जे पुरुष मोहथी तेनो संग करे, भोगविलास करे, तेने नरकगति छे विष्टानी कोथलीरूप स्त्रीनां अगीआरे द्वारथी अशुचि वहे छे जे द्वारने सुघो, ते द्वारमांथी सडेला कुतराना कलेवर समान दुर्गंध आवे छे हवे विचारमात्र एज आवे छे के कामी पुरुषो आवा स्त्रीना शरीरमां रागांध केम थाय छे? इत्यादि स्त्रीना शरीरनी अशुचिता विचारे धन्य छे मुनि जंबुकुमारने!! जेणे नवपरिणीत आठ पद्मिनी स्त्री तथा नवाणुक्रोड सोनैया एक क्षणमात्रमां तजी दीधां। तेनु माहात्म्य विचारे, अने श्री थूलिभद्र तथा सुदर्शन शेठना शियलनु माहात्म्य विचारे वली कपाय जीतवाना उपाय चिंतवे, तथा भावस्थितिनो विचार करे, अने धर्ममनोरथ भावनानी चिंतवना करे

कपाय जीतवानो उपाय आ प्रमाणे क्रोधने क्षमाथी जीते, मानने नम्रताथी जीते, मायाने सरलताथी जीते, लोभने संतोपथी जीते, रागने वैराग्यथी जीते, द्वेपने मित्रताथी जीते, मोहने विवेकथी जीते, कामने, स्त्रीना शरीरनी अशुचित्व भावनाथी जीते, मत्सरने मननी मोटाइथी जीते, विपयने संयमथी जीते, योगने गुप्तिथी जीते, आलसने उद्यमथी जीते, अविरतिपणाने विरतिपणाथी जीते, आ प्रमाणे सर्व सुखेथी जीती शकाय छे पूर्वे महान् पुरुषोये आ रीतियेंज कपायने जीतेल छे

भवस्थिति महादुःखरूप छे चारे गतिमां जीव नाना प्रकारें दुःख पामी रह्या छे नरकगतिना साते नरकोमां अत्यंत क्षेत्र वेदना छे. चार न-

रकमां परस्पर शस्त्रोथी उदीरेली वेदना छे, अने त्रण नरकमां परमाधामी कृत वेदना छे आंख वध करी उघाडीयें तेटलो काल पण नरकवासी जीवोने सुख नथी. मात्र दुःखज पूर्व जन्मना करेला पापथी उदय पामेल छे. रात अने दिवस एक सरखां दुःखमां जाय छे नरकगतिमां जीव जेटलु दुःख नोगवे छे, तेनाथी अनंतगणुं दुःख निगोदमां ते नोगवे छे. तिर्यंच गतिमां अकुश, परोणा, लाकडीना प्रहार, शृंगमोडन, गलमोडन, तोडन, छेदन, नेदन, दहन, अंकन, परवशत्वादि अनेक दुःख, जीव पामे छे मनुष्यगतिमां गर्नमां रेहेवानुं दुःख, जन्म जरा मरणनुं दुःख, रोग व्याधि दरिद्रता प्रमुखनु नाना प्रकारनुं दुःख, माता, पिता, स्त्री, पुत्रना मरणादिथी थतु दुःख इत्यादि अनेक तरेहनुं दुःख जीव पामे छे. देवगतिमां च्यवननुं दुःख, दासपणानुं दुःख, परानव, ईर्ष्यादि अनेक दुःख छे, इत्यादि नवस्थिति विचारे.

धर्ममनोरथनावना आ प्रमाणे करे. श्रावकना घरमां ज्ञान, दर्शन, व्रतसहित दास थइ जाउं तो पण सारुं छे, परंतु मिथ्यादृष्टिमां चक्रवर्ती राजा पण थवानी वांछा न करे. वली क्यारे हुं संवेगी वैराग्यवंत गीतार्थ गुरुना चरणारविंदमां स्वजनादि संगरहित प्रव्रज्या ग्रहण करीश ? तथा क्यारे हुं तिर्यंचना तथा पिशाचना नयथी निःप्रकंप थइ स्मशानादि नूमिमां विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करीश ? वली क्यारे हुं तपथी कृश शरीर वालो थइ उत्तम पुरुषोनो मार्ग वहन करीश ? इत्यादि नावनाथी कामकटकने जीते ॥ इति श्राद्धविधिग्रथानुसाररात्रिकृत्यं ॥

हवे श्रावकनां पर्वकृत्य लखीए छीए अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वना दिवसोए धर्मनी पुष्टि जे करे तेनुं नाम पौषध छे. नला व्रतवाला श्रावकें पर्वने दिवसें अवश्य पौषध करवो जोइए जो पर्वने दिवसे शरीरमां शाता न होय, अने पौषध न करी शके तो बे वार प्रतिक्रमण करे; तेमज बहुवार सामायिक तथा दिशावकाशिक व्रत अंगीकार करे. पर्वदिवसोमां ब्रह्मचर्य व्रत पाले आरंन वर्जे विशेष तप करे. चैत्यपरिपाटी करे सर्व साधुउने नमस्कार करे सुपात्रदान, देवपूजा, गुरुनक्ति, इत्यादि सर्व, बीजा दिवसो करता विशेष रीतें करे. धर्म करणी निरंतर करवी ते सारु छे, जो निरतर न करी शकाय तो पर्वने दिवसें तो अव-

श्य करवी जोइये. पर्वना दिवसो आ छे–अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी, अमावास्या, आ एक मासमां छ पर्व, अने पखवाडीआमां त्रण पर्व, तथा बीज, पांचम, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ पांच तिथि, तीर्थंकरोये वर्णवेली छे बीजने दिवसे बे प्रकारना धर्मनु आराधन करे, पंचमीने दिवसे ज्ञाननु आराधन करे, अष्टमीने दिवसे आठ कर्मनो नाश करवा तपश्चर्या प्रमुख करे, एकादशीने दिवसे अगीआर अगनुं आराधन करे, चतुर्दशीने दिवसे चौद पूर्वनु आराधन करे, आ पांच तथा पूर्वोक्त पूर्णमासी अने अमावास्या, एम छ पर्व थयां वर्षमां छ अठाइ पर्व छे. चातुर्मासिक पर्वोमा सर्वथा आरंभनो त्याग जो न करी शके, तो स्वल्पतर आरंभ करे पर्वने दिवसे सर्व सचित्त आहार वर्जे, श्रावकें निरंतर सचित्त आहार वर्जवो जोइये, जो तेम न करी शके तो पर्वने दिवसें तो अवश्य वर्जवो जोइये पर्वना दिवसोमां स्नान, शिरमुडन, केशगुथन, वस्त्रधोवन, वस्त्र रगवां, गाडां हलादि चलाववां, धान्यना ठोड वांधवा, कोश अरहट्ट (रेंट) चलाववा, दलवु, भरडवु, पत्र, पुष्प, फल, तोडवां, सचित्त खडी, लीली वनस्पति विगेरे मर्दन करवी, लींपवु, माटी खोदवी, घर वधाववां इत्यादि सर्व आरंभनां काम यथाशक्ति त्यागवां जोइये, तथा सर्व सचित्त आहारनो जो त्याग न करी शके, तो केटलीएक वस्तुउं नाम लइ खावानी छुट राखे, विशेषनो त्याग करे. छये अठाइमां जिनराजनी पूजा करवी, तप करवु, ब्रह्मचर्य पालवु छये अठाइमां चैत्र तथा आसो महिनानी एम बे अठाइ शाश्वती छे आ दिवसोमां वैमानिक देवता उपण नदीश्वरादिमा यात्रा उत्सव करे छे बाकीनी त्रण अठाइ त्रण चोमासानी तथा चोथी पर्यूषण पर्वनी, सर्व मली छ अठाइ छे

प्रभात समये प्रत्याख्याननी वेलायें जे तिथि होय, ते जैनमतमां मानवी प्रमाण छे सूर्योदयनां अनुसारें लोकमा पण दिवसनो व्यवहार होवाथी तेम मानवु प्रमाण छे. तथा च निशीथभाष्ये ॥ चउमासीअ वरीसे, पखिय पचछमीसु नायव्वा ॥ ताऊ तिहिउं जासिं, उदेइ सूरो न अन्नाउं ॥ १ ॥ पूआ पचखाण, पडिक्कमण तहय नियमगहण च ॥ जीये उदेइ सूरो, तीये तिहिये उकायव ॥ २ ॥ उदयम्मि जातिहिसा, पमाणमिअरीकीरमाणीये ॥ आणा भगण वत्था, मिछत्त विराहण पावे ॥ ३ ॥ अर्थ–

चौमासी, संवत्सरी, पक्खी, पंचमी, अष्टमी, आ तिथिउं सूर्योदयमां होय ते प्रमाण छे. अन्यथा नहि. पूजा, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान, नियमग्रहण, जे तिथि सूर्योदयमां होय, ते दिवसेंज करवा जोइये, जे तिथि सूर्योदयमां होय तेज प्रमाण छे, उदयतिथि विना जे कोइ वीजी तिथि करे, माने, ते आज्ञाविराधक, अनवस्थाकारक, मिथ्यादृष्टि छे पाराशरस्मृति आदिमां पण लख्युं छे ॥ आदित्योदयवेलायां, या स्तोकापि तिथिर्भवेत् ॥ सा संपूर्णेति मंतव्या, प्रभुता नोदय विना ॥ १ ॥ उमास्वातिवाचकप्रघोपश्चैवं श्रूयते ॥ क्षये पूर्वा तिथि कार्या, वृद्धौ कार्यातथोत्तरा ॥ श्रीवीरज्ञाननिर्वाणं, कार्यं लोकानुगैरिह ॥ १ ॥

वली श्री अर्हंतोना जन्मादि पचकल्याणकना दिवसो पण पर्वमां छे जे वे, त्रण कल्याणकनो दिवस होय ते विशेषे करी पर्वनो मानवो जोइये शास्त्रोमां श्रवण करीये छीयें के श्रीकृष्ण वासुदेव सर्व पर्वनुं आराधनकरवामां पोताने असमर्थ जाणीने, श्रीनेमिनाथ जगवानने पूछता हवा हे जगवन्! उत्कृष्ट पर्व कयु छे? जगवंतें कह्युं के हे श्रीकृष्ण! मागशिर शुद एकादशीनो दिवस सर्वोत्तम पर्व छे, कारण के ते दिवसें श्रीजिनेंद्रोनां पांच कल्याणक थयेलां छे, सर्वे क्षेत्रोनां मली दोढसो कल्याणक थयेलां छे. पछी श्रीकृष्ण वासुदेवें मौन पोषधोपवास करी ते दिवस मान्यो, त्यारथी "यथा राजा तथा प्रजा" ए न्यायें सर्व लोक एकादशी मानवा लाग्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे

वीज, पंचमी, अष्टमी, एकादशी, चतुर्दशी आ तिथियोमां प्राय जीवो परजवना आयुष्यनो वध करे छे, ते कारणथी आ तिथियोमां धर्मकरणी विशेष करवी जोइयें. वली पर्वना महिमाना प्रजावथी अधर्मी, तथा निर्दय पण धर्मी अने दयावान् थइ जाय छे, कृपण पण धन खरचे छे, कुशील पण सुशील थइ जाय छे, ते जयवंत रहो, जेणे संवत्सरी, चातुर्मासी आदि उत्तम पर्वोनुं कथन करेल छे जे अन्योये चलावेलां पर्व छे तेमां आग लगाववी, जीवमारवा, रोवां, कुटवां, धूल उडाडवी, वृक्षो तोडवां इत्यादि नाना प्रकारनां पाप थाय छे, अने जे पर्व अरिहंत परमेश्वरें कथन करेल छे, तेमां तो निःकेवल धर्म कृत्योज करवां कहेल छे. ते का-

रणथी पर्व दिवसें पौपधादि करे पोपधना भेद तथा विधि, सर्व श्राद्धविधि आदि ग्रंथोथी जाणी लेवी

हवे चौमासिक कृत्य लखीए ठीए चोमासामां विशेष नियम ग्रहण तथा परिग्रहनु परिणाम करवुं जोइए आ ऋतुमां बहु जीवोनी उत्पत्ति थाय ठे, ते कारणथी गाडा, हल प्रमुख न चलाववां जोइए आंबानी केरीमा कीडा पडी जाय ठे, तेथी ते न खावी जोइए देशविचार आंबानी बाबतमां विविध ठे नियम बे प्रकारना ठे १ सुनिर्वाह, २ दुर्निर्वाह धनवंतोने व्यापारनो त्याग, अने अविरतियोने सचित्तनो त्याग, रसनो त्याग, शाकपत्रनो त्याग तथा सामायिकादिनो अंगीकार दुर्निर्वाह्य ठे अने देवपूजा, दान, महोत्सवादि सुनिर्वाह्य ठे, निर्धनोने तेउनाथी विपरीत रीतें ठे, अने चित्तनी एकाग्रता करवी, ते तो सर्वने दुष्कर ठे, तेथी दुर्निर्वाह्य नियमो न लइ शकाय तो, सुनिर्वाह्य नियमो अंगीकार करे चोमासामां परगाम न जाय, जो निर्वाह न थइ शके तेम होय तो, जे गाम अवश्य जवु पडे ते बाद करीने बीजा गामोनी मुसाफरी न करे सर्व सचित्तनो त्याग करे निर्वाह न थइ शके तेम होय तो सचित्तनु परिमाण करे निरतर बे त्रणवार जिनराजनी अष्टप्रकारी पूजा करे. देववंदन करे, जिनमदिरोमां सर्व जिनबिंबोनी पूजा वंदना करे, स्नात्रपूजा, महामहोत्सव, प्रभावना प्रमुख करे गुरुने बृहत् वदना अने बीजा सर्व साधुउने प्रत्येक वदना करे, चतुर्विंशति स्तवनो कायोत्सर्ग करे, अपूर्व ज्ञाननो पाठ करे, गुरुनी वेय्यावच्च करे, ब्रह्मचर्य पाले, अचित्त पाणी पीये, सचित्तनो त्याग करे वासी वस्तु, विदल, रोटली, पुरी प्रमुख, पापड, वडी, शाकनी सुकवणी, पत्रना शाक, खारेक, खजूर, द्राक्षा, खाड, शुंठ, प्रमुख, आ सर्वे नीलफूल लागी जवाथी अने कथवा तथा लट अने कीडा पडी जवाथी खावा योग्य रहेतां नथी, ते कारणथी तेमनो त्याग करे कदाचित् औषधादि विशेष कार्यमा लेवु पडे तो सम्यक् रीतिए शोधीने वापरे वली पलग, स्नान, पगरखां, दातण इत्यादिनो त्याग करे आभरण धोवा, वस्त्र रगवां प्रमुखनो निपेध करे घर, हाट, भींत, खाट, पाट, ठींकां, घी तेलनां वासणो, इंधन प्रमुखमां नीलफूल लागी जाय ठे, तेथी तेनी रक्षा वास्ते प्रथमथीज चुना

प्रमुख लगावे मेल दूर करे. धूपमां न नाखे, शीतल स्थानमां राखे दिवसें बे त्रण वखत पाणी गले. तेल, गोल, छाश प्रमुखनां वासणोनां मुखो यत्नाथी ढांकी राखे. उसामणनुं पाणी तथा स्नाननुं पाणी ज्यां जीवाकुल भूमिका न होय, त्यां थोडुं थोडुं छुटुं छुटुं नाखी दे चूला अने दीवा उघाडा न राखे. खांडवु, दलवु, जरडवु, वासणो धोवां, वस्त्र धोवा, इत्यादि कामो यत्नापूर्वक करे. जिनमंदिर अने धर्मशाला समरावी राखे, यथाशक्ति उपधान, तप, प्रतिमा आदि वहन करे. इंद्रिय, कपायने जीते. योगशुद्धि तप, वीश स्थानक तप, अमृत अष्टमी तप; एकादशांग तप, चौद पूर्व तप, नमस्कार तप, चोवीश तीर्थंकरनां कल्याणिक तप, अक्षयनिधि तप, दमयंती तप, भद्रमहाभद्रादि तप, संसारतारण अठाइ तप, पक्षमासादि विशेष अनेक प्रकारथी तप करे रात्रिए चतुर्विध आहार, त्रिविध आहार त्याग करे. पर्व दिवसें विकृति त्यागे, पर्व दिवसें पोषध उपवासादि करे. निरंतर पारणाने दिवसें अतिथि संविभाग करे चातुर्मासिक अभिग्रह पूर्वाचार्योए आ प्रमाणे बतावेला छे– ज्ञानाचारमां, दर्शनाचारमां, चारित्राचारमां, तपआचारमां तथा वीर्याचारमां इत्यादि अनेक प्रकारना अभिग्रह करे, ते रीति आ प्रमाणे ज्ञानाचारमां शक्ति अनुसारे सूत्र वांचे, श्रवण करे, चितवे, शुक्ल पचमीना रोज ज्ञाननी पूजा करे दर्शनाचारमां देरासरमां काजो काढे, प्रमार्जन करे, लींपे, गुहली करे, मंडल पूरे, चैत्य जिन प्रतिमानी पूजा करे, देववंदन करे, जिनबिंबोने निर्मल करे, चारित्राचारमां जीवनी यत्ना करे वनस्पतिमां कीडा पड्या होय तो खार न लगावे, इंधनमां, जलमां, धान्यमां, अग्निमां जीव पड्या होय तेनी रक्षा करे. कोइना उपर कलंक मूके नहि, कोइने कठण वचन बोले नहि, तोछडाइथी कोइने बोलावे नहि, देव गुरुना सोगद खाय नहि, कोइनी चाडी खाय नहि, कोइनी निंदा करे नहि, माता पिताने दुःख लागे तेवां प्रछन्न काम करे नहि निधान तथा पडेलु धन देखी, जेम शरीर अने धर्म न बगडे तेम प्रवर्ते दिवसें ब्रह्मचर्य पाले रात्रिए स्वदारासंतोष मात्र करे. धनधान्यादि नवप्रकारना परिग्रहनु इछापरिमाण व्रत करे. दिशावकाशिक व्रत करे स्नान, विलेपन, आभरण,

पुष्प, तंबोल, अगर, बरास, केशर, कस्तूरि विगेरे जोगववानी वस्तुउंनुं परिमाण करे मजीठ, लाख, कसुबो, गली विगेरेथी रंगेलां वस्त्रोनुं परिमाण करे जांबु, नारंगी, सतरा, सफरजन, द्राक्ष, दाडिम, बीजोरा, नालियर प्रमुख वस्तुउ तथा लीला शाक पत्रादि खावा योग्य होय तेनु परिमाण करे, अनतकायादि पदार्थनो त्याग करे हीरा, माणेक, मोती, सोनु, रुपु इत्यादि वस्तुउंनु, परिमाण करे विगय तथा विगयगतनु परिमाण करे. वस्त्र धोवां, जींत लीपवी, गार करवी, दलवा, खांडवानो नियम करे पाणीमां धूबका मारे नहि रांधवानु परिमाण करे व्यापारनु परिमाण करे व्यापार संबधें वा हरेक कार्यपरत्वे जूठी साक्षी न पूरे, चोरीनो त्याग करे परस्त्री साथे जापण तथा तेनुं देखवुं पण वर्जे, अनदंडथीर्थ न दडावानो उपयोग राखे, सामायिक, पौषध करे, अतिथिसविजाग करे, आ सर्वनु निरतर नियम करे जिनमदिरमा निरतर सारसंजाल राखे, पर्वना रोज तप करे, उजमणुं यथाशक्ति करे धर्मना रक्षणवास्ते पाणीनु गलणु तथा मुहपत्ति प्रमुख आपे, औषध आपे, यथाशक्ति साधर्मीवात्सल्य करे गुरुनो विनय करे मासेंमासे अमुक सामायिक करे, वर्षमा अमुक पौषध करे. इतिश्राद्धश्राविकाचातुर्मासिकनियमस्वरूप ॥

हवे श्रावकोनां वर्षकृत्य बार द्वारथी लखीए बिए

१ प्रथम संघपूजा करे स्वद्रव्य अनुसार अत्यत आदरसत्कारथी साधु साध्वी योग्य, निर्दोष वस्त्र, कांबल, उंघा, सूत्र, उन, पात्र, तुंबी, दंड, दंडिका, सोइ, कागल, दोतीआं, लेखण, पुस्तकादि श्रीगुरुनी सेवामा राखे, बीजा पण सयमना उपकारी उपकरण होय ते पण आपे, जेम के प्रातिहारक, पीठ, फलक, पाटप्रमुख सर्व साधुउंने आपे, तथा श्रावक, श्राविकारूप संघनी जक्ति यथाशक्ति पेहेरामणी प्रमुख करी सत्कार करे देवगुरुना गुणोनुं गायन करनारा गधर्वादि याचकोने पण यथोचित दान आपे सघनी पूजाना त्रण प्रकार छे १ उत्कृष्ट, २ मध्यम, ३ जघन्य सर्वदर्शनपूर्वक सर्वसत्कारथी सघनी पूजा करवी ते उत्कृष्ट पूजा सूतरमात्रथी पूजा करवी ते जघन्यपूजा शेप सर्वमध्यम पूजा छे अधिक खर्च करवानी शक्ति न होय तो, गुरुने मात्र मुखवस्त्रिका

आपी पूजा करे, वे चार श्रावक, श्राविकाउने सोपारी प्रमुख वर्षे प्रत्ये आपे, ए प्रमाणे बहुमानथी संघपूजा करे तो निर्धनने पण महाफल ठे यत· ॥ संपत्तौ नियमाशक्तौ, सहनं यौवने व्रतं ॥ दारिद्र्ये दानमप्यल्पं, महालाजाय जायते ॥ १ ॥

२ साधर्मी वात्सल्य करे सर्व साधर्मीउ वा केटलाएकोनी यथाशक्ति यथायोग्य जक्ति करे. पुत्रना जन्मोत्सवमां, विवाहमां तथा बीजां अनेक कार्योमां साधर्मिउने निमंत्रणा करीने विशिष्ट जोजन, तांबूल, वस्त्राजरणादि आपे कोइ साधर्मिने कांइ कष्ट आवी पडे तो पोतानुं धन खरची कष्ट दूर करे. जो कोइ साधर्मी निर्धन थइ गयो होय तो धननो सहाय आपे. परदेशमां खरची त्रुट थयो होय तो खरची आपी पोताने देश पहोचाडे. धर्ममां अस्थिर थनारने स्थिर करे सिदाताने सहाय करे साधर्मी प्रमादि थइ गयो होय तो प्रेरणा करी उद्योगी करे साधर्मीउने विद्याज्यास करावे साधर्मिउने वांचना, पृछना, परावर्तना, अनुप्रेक्षा तथा धर्मकथानो सहाय करे धर्मकरणीनी सहायतावास्ते पौषधशाला प्रमुख वधावे, श्रावक, श्राविका निराश्रितोना उद्धार वास्ते जंडोल करे. श्रावकोनी जेम श्राविकाउनु पण दरेक कार्यमां वात्सल्य करे. श्राविकापण ज्ञान, दर्शन, चारित्र, शील, संतोपवाली होयठे सधवानी जेम विधवाउ पण जे धर्ममां अनुरक्त होय तेमनु वात्सल्य करे. विधवाउने अनेकरीतें धर्मकार्योमां योजे तेउनु माता तरेह तथा वेन, दीकरी तरेह हित चितवे राजाउ जे श्रावक होय, तेउने तो अतिथिसंविजागव्रत, साधर्मिउनु वात्सल्य करवाथी थइ शके ठे मुनिउने राजपिंड कल्पतु नथी, तेथी श्रीजरतचक्री तथा दंडवीर्य राजा प्रमुखें ते प्रमाणेज करेल ठे श्रीसज्जवनाथ जगवंतना जीवे त्रीजा जवमां धातकीखंडना ऐरवत क्षेत्रनी क्षेमपुरी नगरीमां विमलवाहन राजाने जवे महादुकालमां सर्वसाधर्मिउने जोजन प्रमुखनी सहायता आपवाथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करेल ठे, तेमज देवगिरि मांडवगढमां शाह जगत्सिंहे तथा थिरापद्र नगरमां श्रीमाल आजूयें त्रणसो साठ साधर्मिउने धन आपी पोतानी तुल्य करेल ठे, तथा शाह सारंगादि अनेक पुरुपोयें साधर्मिउनु अनेक तरेहथी वात्सल्य करेल ठे.

३ यात्राविधि लखीये ठीये. दरेक वर्षे जघन्यथी एक यात्रा तो अव-

श्य करवी जोइये. यात्राना त्रण प्रकार छे. १ अठाइयात्रा, २ रथयात्रा, ३ तीर्थयात्रा, अठाइमां विस्तार सहित सर्व चैत्य परिपाटी करे, तेनु नाम चैत्ययात्रा पण कहेवायछे. रथयात्रा श्रीहेमचंद्रसूरिकृत परिशिष्टपर्वमां जेम संप्रति राजाये करेल छे, तेम करे, तथा महापद्मराजा चक्रवर्तियें जेम माताना मनोरथ पूर्ण करवावास्ते करेल छे, तेम करे, अने जेम श्रीकुमारपाल राजायें रथयात्रा करी छे तेवीरीतें करे.

तीर्थयात्रा आ प्रमाणे करे श्रीशत्रुंजय, रैवताचलादि तीर्थ, तथा तीर्थंकरोनां जन्म, दीक्षा, ज्ञान, निर्वाण अने विहारभूमि, आ सर्व स्थल, भव्यजीवोने प्रभूत शुभभावना संपादक छे, ते कारणथी संसारथी तरवानां कारणो होवाथी ते तीर्थ कहेवायछे ते तीर्थभूमिमां जवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे. जिनशासननी उन्नति वास्ते जे रीतिये यात्रा करवी जोइये, ते रीति आ प्रमाणे छे प्रयाणना स्थानथी यात्राना स्थान सुधी १ निरंतर एकवार भोजन करे, २ सचित्तनो परिहार करे, ३ भूमिशयन करे, ४ ब्रह्मचर्य पाले, ५ सर्व सामग्री विद्यमान छता पगें चाले, ६ सम्यक्त्वनी निर्मलतापूर्वक बने वखत प्रतिक्रमण क्रिया करे वली राजानी आज्ञा लइ यात्रागमन करे. विशिष्ट मंदिरोने सजावे. विनय, बहुमानसहित स्वजन तथा साधर्मिउने बोलावे, गुरुने साथे पधारवानी निमंत्रणा करे, अमारी पडह फेरावे,जिनमंदिरमां महापूजा, महोत्सव करावे, खरचीविनानाने खरची आपे, वाहनरहितने वाहन आपे, निराधारने यथायोग्य आधार आपे, सार्थवाहनी जेम उद्घोषणा करावी लोकोने उत्साहवंत करे, आडंबर सहित तंबु, डेरा, चरु, थाल, वासणो, प्रमुख साथे ले, गाडां, रथ, पालखी प्रमुख वाहनो तथा घोडा उंट प्रमुख जानवरो साथे सज्ज करावे, श्रीसंघनी रक्षावास्ते शूरवीर योद्धाउने साथे ले, योद्धाउने तलवार, बंदुक इत्यादि हथीआरो आपे, गीत, नाटक, वाजित्र प्रमुख सामग्री यथायोग्य मेलवे पछी शुभमुहूर्त, शुभ शुकनें प्रस्थान (प्रयाण) करे, भोजनादिथी श्रीसंघनो सत्कार करे, संघपतिनु तिलक करावे, संघनु प्रयाण थया पछी उत्तरोत्तर मुकाम करवानो बंदोबस्त करे, रक्षपालोने रस्तामां आगल, पाछल, साथे राखे, संघ मुकाम पहोंचता तेमने उतरवानी गोठवण करावे, रस्तामां कोइनी गाडी प्रमुख

नांगी त्रुटी जाय तो समरावी आपे, सर्वप्रकारें यथायोग्य संघने सहाय आपे, ग्राम, वा नगरें ज्यां जिनमंदिर आवे त्यां महाध्वजा आपे, चैत्यपरिवाडी आदि महोत्सव करे, जीर्ण चैत्योनो उद्धार कराववा सहाय आपे, ज्यारे तीर्थने देखे त्यारे हीरा, मोती, सुवर्ण आदिथी वधावे, लाडवा प्रमुखना ल्हाणा करे, साधर्मीवात्सल्य तथा यथोचित दान आपे; ज्यारे तीर्थमां प्रवेश करे त्यारे मोटा उत्सवथी प्रथम इपेंपूजामां धन चढावे, प्रदक्षिणा करे, अष्टप्रकारी, सत्तरभेदी, स्नात्रपूजा विगेरे अनेक प्रकारनी पूजा करे, घीनी धारा दे, पुष्पघर, कदलीघर प्रमुख बनावे, महाध्वजा चढावे, पूजाराप्रमुखने पेहेरामणी आपे, कोइ पण मांगनारने ना कहे नहि, रात्रि जागरण करे, अनेक प्रकारे गीत नृत्यादि उत्सव करे, तीर्थोपवास छठ प्रमुख तपश्चर्या करे, अक्षतना अनेक प्रकारथी मंडल पूरे, अनेक प्रकारना फल तथा नैवेद्य, एकसो आठ, चोवीश, बासी, बावन, बहोंतेर आदि ढोवे, सर्व भक्ष्य भोजननो थाल ढोवे, चंदरवा, अंगलूहणा सुंदर अनेक प्रकारे आपे, तीर्थस्थानमां दीपक वास्ते घी, तेल आपे, पूजानी सामग्री वास्ते, चदन, केशर, बरास, कस्तूरि, अगर, दशांग, कलश, धूपधाणा, आरति, झालर, चामर, थाल, रकेबी, आभरण प्रमुख अनेक उत्तम वस्तुओ आपे, देरी करावे, कारीगरोने सत्कार आपे, तीर्थना बगडेला कामने समरावे, सार संभाल वास्ते बंदोवस्त करे, तीर्थरक्षकोनुं बहु सन्मान करे, पेहेरामणी आपे, साधर्मीवात्सल्य तथा गुरुभक्ति करे आ प्रमाणे यात्रा करी तेवीज रीते पाछा स्वस्थानके आवे, समतायुक्त सर्व क्रिया करे अने वर्षसुधी तीर्थ व्रत करे, इति यात्राविधि ॥

हवे स्नात्र विधि लखीये छीये जिनमंदिरमां स्नात्र महोत्सवमां घीनो मेरु करे, अष्टमंगल प्रमुखनी रचना करे, फल नैवेद्यादि ढोवे, उत्तम प्रकारना केशर, चदन, पुष्प, अंबर प्रमुख लावे, सकल श्रावक समुदायने मेलवी गीत नृत्यादि आडंबरथी महापूजा रचावे, दुकूलादि महाध्वजा आपे, प्रौढ आडंबरथी प्रभावना निरंतर वा पर्व दिवसे करे, पर्व दिवसे पण न करी शके तो वर्षमां एकवार अवश्य करे. स्नात्र महोत्सवमां स्वधननो व्यय योग्य रीते करे. जीनमतनो उद्योत थाय तेम करे.

देवद्रव्यनी वृद्धिवास्ते अनेक प्रकारे लोकोने उत्साह वधे तेवा कार्यो

करे, पूजामां, माला चडाववा प्रमुख कार्योमां देवद्रव्यनी वृद्धि थाय तेवी योजना करे केशर, चदन, बरास प्रमुख अनेक वस्तु यथाशक्ति मुजब प्रति वर्षे आपे.

सुदर आंगी, पत्रभंगी, सर्वांग आभरण, पुष्पगृह, कदलीगृह, प्रमुखनी रचना करे, विविध यन्त्रादिकनी रचना करे, गीत, नृत्यादि महोत्सव करे, महापूजा रात्रि जागरण करे

श्रुतज्ञान पुस्तक प्रमुखनी पूजा कर्पुरादिथी निरंतर सुगम छे, अने प्रशस्त वस्त्रादिथी विशेष पूजा तो प्रतिमास शुक्ल पंचमीनारोज श्रावके करवी योग्यछे जो शक्ति न होय तो पण वर्षमां एकवार तो अवश्य पूजा करे तेनु विस्तारथी स्वरूप ज्ञानभक्ति द्वारमां लखवामां आवशे

पचपरमेष्टि नमस्कार, आवश्यक सूत्र, उपदेशमाला, उत्तराध्ययनादि ज्ञान दर्शननो तप करी जघन्यथी एकवार उद्यापन (उजमणु) करे, जेथी लक्ष्मीनी सफलता थाय, ज्यारे जप तपनु उद्यापन करे, त्यारे चैत्यउपर कलशारोहण करे, फल चढावे, अक्षत पात्रना मस्तक उपर अक्षत चडावे जेम भोजन उपर तांबुल अपाय छे तेम, आ बाबतमां पण जाणवु उजमणानी विधि शास्त्रांतरथी जाणी लेवी

तीर्थोनी प्रभावनावास्ते वाजते गाजते प्रौढ आडंबरथी गुरुनो प्रवेशमहोत्सव करावे आ कथन व्यवहार भाष्यमां छे. तेम करवाथी जिनमतनी प्रभावना थायछे श्रीसघनु पण यथाशक्ति बहुमान, पूजा, भक्ति करे. नालियेर प्रमुखनी प्रभावना करे, तांबुल प्रदानरूप भक्ति करे, तेम करवाथी शासननी उन्नति थायछे, अने शासननी उन्नतिथी तीर्थंकरगोत्र उपार्जन थायछे आ कथन ज्ञातासूत्रमां छे

गुरुनो योग प्राप्त थये छते, जघन्यथी वर्षमां एकवार आलोचना ले, पोताना करेला सर्व पाप गुरुनी सन्मुख प्रगट करे, गुरु जे प्रायश्चित्त आपे ते अंगीकार करे, फरी तेवु पाप न करे, तेनु नाम आलोचना ग्रहण करवीछे, एम श्राद्ध जीतकल्पादिमां विधि लखीछे. पक्षपछी, चार मास पछी, एक वर्ष पछी, उत्कृष्ट बार वर्ष पछी, निश्चयें आलोचना करे. पोताना शल्य काढवावास्ते, क्षेत्रथी सातसो योजन अने कालथी बारवर्षसुधी गीतार्थ गुरुनी अन्वेषणा करे, ते गीतार्थ गुरु केवा होय? मन,

वचन, काया जेनां स्थिर होय, चारित्रवंत होय, आलोचना ग्रहणमां कुशल होय, प्रायश्चित्तना जाणकार होय, विषाद रहित होय, एवा गीतार्थ गुरु होय, ते आलोचना प्रायश्चित्त आपवा योग्य छे.

गीतार्थ कोने कहीये? १ जे निशीथादि छेद शास्त्रोना मूलपाठ, निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णी आदिना जाणकार होय, ज्ञानादि पचाचार युक्त होय, २ आधारवंत, आलोचित पापना धारणावाला होय, ३ आगमादि पांच व्यवहारना जाणवावाला होय, तेमां पण आ कालमां तो जीतव्यवहार मुख्य छे, तेना जाणकार होय, ४ प्रायश्चित्त आलोचकनी लज्जा दूर करावनारा होय, ५ आलोचकनी शुद्धि करनारा होय, ६ आलोचकना पापकर्म बीजाउंनी पासे न कहे, ७ आलोचक जेम निर्वाह करी शके, तेम प्रायश्चित्त आपे, ८ जे प्रायश्चित्त न करे तेने इहलोक परलोकना भय बतावे. आ आठ गुण युक्त गीतार्थ गुरु होय छे.

साधु तथा श्रावके १ प्रथम तो पोताना गछमां गछना आचार्य पासे, २ तेना अभावे, उपाध्यायनी पासे, ३ तेना अभावे, प्रवर्त्तकनी पासे, ४ तेना अभावे स्थिविरनी पासे, ५ तेना अभावे गणावछेदकनी पासे, स्वगछमां आ पांचेना अभावे संभोगी एक समाचारीवाला गछांतरमां पूर्वोक्त आचार्य प्रमुख पांचेनी पासे अनुक्रमे आलोचे, तेउंनो पण अभाव छते, असंभोगी संवेगी गछमां पूर्वोक्तक्रमे आलोचे, तेउंनो पण अभाव छते गीतार्थ पार्श्वस्थ (पासछ) नी पासे आलोचे, तेने अभावे गीतार्थ सारुपीनी पासे आलोचे, तेने अभावे पश्चात्कृतनी पासे आलोचे, जे शुक्ल वस्त्रधारी, शिरमुंडित, अवरूकछ, रजोहरण रहित, ब्रह्मचारी, स्त्री रहित भिक्षावृत्ति होय ते सारूपी कहेवाय छे, जे शिखासहित अर्थात् चोटली सहित तथा स्त्री सहित होय ते सिद्धपुत्र कहेवाय छे. जे चारित्र छोडी गृहस्थवेष धारण करे छे, ते पश्चात्कृत कहेवाय छे. आलोचनाने अवसरे पासछादिने पण गुरुनी जेम वंदना करे, कारण के विनय मूल धर्म छे, ते कारणथी वंदना करे. जो ते पासछादि पोते पोताने गुणहीन जाणी वंदना न करावे, तो तेने आसन उपर बेसाडी प्रणाम मात्र करी आलोचना ले; तथा पश्चात्कृतने इत्वरसामायिक आरोपण लिंग आपी, पछी तेनी पासे यथाविधि पूर्वक आलोचना ले पार्श्वस्थादिने अभावे रा-

ज गृहादि गुणशील चैत्यादिमां ज्यां श्री अरिहंत, गणधरादिए बहु-
वार लोकोने प्रायश्चित्त आपेलां होय, ते क्षेत्रमां रहेनारा देवताउये ते
देखेल होय, तेथी ते देवताउनु अठम प्रमुख तपथी आराधन करी, तेनी
पासे आलोचे, कदाचित ते देवता चवी गया होय, अने तेने स्थानके बी-
जा देवता उत्पन्न थया होय, तो ते देवता महाविदेहना अरिहंतने पुठी-
ने प्रायश्चित्त आपे, तेने पण अजावे, पूर्वोत्तर दिशि सन्मुख मुख करी
अर्हंत सिद्धोनी समक्ष आलोवे, परतु शल्य न राखे आलोचना कर-
नारा पुरुष, मायारहित बालकनी जेम सरल थइ आलोवे जे कोइ, को-
इपण कारणथी आलोचना न करे, ते आराधक नथी.

आलोचना करनार दस दोष वर्जी आलोचना करे दस दोषना नाम. १ गुरुने वैयावच्च प्रमुखथी प्रथम खुशी करी पठी आलोचना ले, जेथी गुरु अल्प पायश्चित्त आपे, २ आ गुरु अल्प दंड आपे ठे, तेथी तेवा गुरुपासे तेवा अनुमानथी आलोवे, ३ जे अपराध बीजाये दीठा होय तेज मात्र आलोवे, परंतु बीजाये न देखेला होय ते न आलोववा ते, ४ बादर दोषने आलोववा, अने सूक्ष्म दोषने न आलोववा ते, ५ सूक्ष्म दोषने आलोववा, परतु बादर दोषने न आलोववा ते, ६ अव्यक्त स्वरथी आलोववु, ७ गुरु समजे नहि तेवी रीते रोलो करीने आलोववु ते, ८ आलोचना कर्या पठी बहुजनोने सुणाववु ते, ९ अव्यक्त अगीतार्थनी पासे आलोववु १० जे अपराध गुरुने कह्यो होय, तेज पोताना अपराधने आलोचवो आ दश दोष ठे

आलोचना करवाथी, जेम बोजो उपाडनार जार दूर करवाथी हलको थाय ठे, तेम पापथी आलोचन करनार हलवो थाय ठे पापरूप शल्य दूर थायठे, प्रमोद उत्पन्न थायठे. पोताना दोषोनी निवृत्ति आत्मसाक्षीये देखी बीजां पण आलोचना करे सरलता प्राप्त थवाथी शुद्धता थाय ठे दुष्कर काम करनार कहेवाय ठे दोषनु सेवन करवु ते दुष्कर नथी, परतु दोषनो प्रकाश करवो ते दुष्कर ठे श्री तीर्थंकर जगवंतनी आज्ञाना आराधक थायठे आलोचना करवाथी बालहत्या, स्त्री हत्या, यतिहत्यादि पाप, देवादि द्रव्य जक्षण पाप, राजपत्नी गमनादि महापाप पण सम्यक् रीतिये गुरुदत्त प्रायश्चित्त करवाथी दूर थइ जायठे जो एम न होयतो

दृढप्रहारी प्रमुख तेज नवमां मोक्ष केम प्राप्त करत ? ते कारणथी दर वर्षे चोमासामां तो अवश्य आलोयणा ले

हवे जन्मकृत्य अढार द्वारोथी लखीये ठीये १ प्रथम उचित द्वार. उचित अर्थात् योग्य वास करवानुं प्रथम स्थान करे, ज्यां रहेवाथी धर्म, अर्थ, काम ए त्रणेनी सिद्धि थाय बीजे स्थले वसवाथी बने नव बगडी जायछे. भिल्लपल्लीमां, चोरोना गाममां, पर्वतनी तलेटीमां, हिंसक लोकोमां दुष्ट लोकोमां, धर्मीलोकोनी निंदा करनाराउमां, इत्यादि स्थानमां वास न करे. ज्यां जिनचैत्य होय, मुनिनुं आवागमन होय, श्रावक वसता होय, बुद्धिमान् लोको स्वभावेज शीलवान् होय, प्रजा धर्मशील होय, अने ज्यां बहु जल, इंधन, धान्यादि होय त्यां वास करे. जेम अजमेरनीपासे हर्षपुर नगर हतुं, एवा नगरमां रहेवाथी, धनवंत, गुणवंत अने धर्मवंतनी संगतिथी विनय, विचार, आचार, उदारता, गम्भीरता, धैर्यता, प्रतिष्ठा आदि गुणोनी प्राप्ति थायछे. धर्मकृत्यमां कुशलता थायछे, ते कारणथी कनिष्ट गामोमां धनप्राप्ति होय तोपण वास न करे. यतः ॥ यदि वांछसि मूर्खत्वं, ग्रामे वस दिनत्रय ॥ अपूर्वस्यागमो नास्ति, पूर्वाधीतं च नश्यति ॥ १ ॥

उचितस्थान पण स्वचक्र, परचक्र, परस्पर विरोध, दुर्भिक्ष, मारी, प्रजाविरोध, अन्नादि वस्तुक्षय, इत्यादि कारणे प्रसंगे तत्काल तजी देवु जोइये, नहि तो त्रिवर्गनी हानि थइ जायछे जेम पूर्वे मुसलमानना नयथी लोको दिल्लीनो त्याग करी गुजरात प्रमुख देशोमा जवाथी सुखी अने धनवान थया; तथा जेम क्षितिप्रतिष्ठित शेहेर उज्जड थवाथी चंपा नगरी वसी, अने चपा उज्जड थवाथी पाटलीपुत्र अर्थात् पटना वस्यु, तेम श्रावक पण पूर्वोक्त हानि जाणे तो नगर छोडीने बीजी जगाये जइ वास करे

रहेवानु घर पण सारा लोकोनी पडोशमा करे, परंतु वेश्या तिर्यंच, भिक्षाचर, श्रमण, बौद्ध, तापस, ब्राह्मण, कोटवाल, माठी, जुगारी, चोर, नट, भाट, कुकर्मी प्रमुखना पडोसमां घर वा दुकान न करे. जो देरानी पासे रहे तो हानि थाय. चोकमां, धूताराना वासमां अने प्रधानना पडोसमां रहे तो धन अने पुत्रनी हानि थाय मूर्ख, अधर्मी, पाखडी, पतित,

चोर, रोगी, क्रोधी, चडाल, मदोन्मत्त, गुरुतल्पग, वैरी, स्वामिवंचन, लोनी, रुपि–स्त्री अने बालहत्याना करनारा एटला लोको आपणु हित करनारा होय, तोपण तेना पडोसमा वास न करवो, कारण के तेउनी संगतथी गुणहानि प्रमुख अनेक उपद्रव थायछे

ज्यां हाडनु शल्य न होय, राख न होय, ज्यां डान्न उगतो होय, सुदर वर्णे, गंधवाली माटी होय, मीठुं जल होय, खोदतां धन निकले. ते जगा शुन्न समजवी वली जे न्नूमि शीतकालमां उष्ण स्पर्शवाली अने उष्णकालमां शीत स्पर्शवाली होय, ते जगा बहुज शुन्न जाणवी एक हाथमात्र न्नूमि प्रथम खोदी, पछी तेज माटीथी तेज खाडो पुरवो, जो माटी वधे तो श्रेष्ट न्नूमि जाणवी, जो माटी उंछी थाय तो कनिष्ठ न्नूमि जाणवी, तथा सो पगलां न्नरतां जेटलो काल लागे तेटला कालमां जे न्नूमिमां पाणी न सूकाय, ते उत्तम न्नूमि जाणवी जो तेटला वखतमां एक आंगल न्नर पाणी शोपाइ जाय तो ते मध्यम न्नूमि जाणवी, जो एक आंगल उपरांत पाणी शोपाय तो अधम न्नूमि जाणवी, तथा पक्षांतरमां जे न्नूमिना खातरमां फूल नाखता जो फूल सुकाय नहि तो ते उत्तम न्नूमि जाणवी, जो अर्ध सूकाय तो मध्यम न्नूमि जाणवी. जो सर्व सूकाइ जाय तो अधम न्नूमि जाणवी जे न्नूमिमां शाल वावता त्रण दिवसे उगे ते उत्तम, पांच दिवस पछी उगे ते मध्यम, अने सात दिवस पछी उगे ते हीन न्नूमि जाणवी

सर्पनी वंवी उपर घर बनाववामा आवे तो रोग थाय, पोली न्नूमिउपर घर बनाववामां आवे तो निर्धन थाय, शल्य युक्त न्नूमिउपर बनाववामां आवे तो मरण थाय. मनुष्यनु हाड तथा केशनु शल्य होय तो मनुष्योनी हानि थाय, खरनुं शल्य होय तो राजाप्रमुखनो न्नय थाय, श्वाननु हाड होय तो बालकनु मरण थाय, बालकनु हाड होय तो गृहस्वामि परदेशमा नाश पामे, गायनु शल्य होय तो गौरुप धननी हानि थाय, मनुष्यना केश, कपाल अने न्नस्म होय तो मरण थाय

प्रथम प्रहर अने छेला प्रहर शिवायना बाकीना प्रहरमां वृक्षनी अने ध्वजानी छाया घर उपर पडे तो दुःखदायक समजवी अरिहंतना मंदिरनी पाछलना न्नागमां न रेहेवु, ब्रह्मा अने कृष्णना मंदिरनी साथे न

रहेवुं, चंडिकाअने सूर्यना मंदिरनी सन्मुख न रहेवुं, महादेवनी तो कोइ पण बाजुये रहेवु नहि कृष्णनी डावी बाजुये अने ब्रह्मानी जमणी बाजुये न रहेवुं स्नाननुं पाणी, ध्वजानी छाया अने विलेपन वर्जे जिनमंदिरना शिखरनी छाया अने अरिहंतनी दृष्टि पडे त्यां वास न करवो. नगर तथा गामनी इशान खुणमां घर न बनावे; बनावे तो उंची जातिवालो दुःख पामे.

घर बनावे तो वेचनारने पूरी किंमत आपे. पाडोशीने दुःख न आपे, घर लेती वखत कोइने दुःख न आपे, काष्ठ, पाषाण, इंट प्रमुख वस्तु निर्दोष, दृढ, मजबुत अने नवीन होय ते वाजवी मूल आपीने ले, वेचाती वस्तुउंनुं योग्य मूल आपे, परंतु पोते इंट, चुनो पकाववानुं न करे. जिनप्रासादनी इंट प्रमुख न ग्रहण करे शास्त्रमां कह्युं छे के, देरासर, कुवा, वाव, स्मशान, मठ अने राजाना मंदिर, तेउंना काष्ठ, पथ्थर, इंट प्रमुख सर्व गृहस्थना घरमां वपराय तो विरोधकारी छे, अने धर्मना स्थानमां वपराय तो सुखदायक छे.

पाषाणमय घरमां काष्ठनो स्थंभ अने काष्ठमय घरमां पाषाणनो स्थंभ न बनावे, मंदिरमां पण न बनावे. हलका काष्ठ, कोल्हानाकाष्ठ, अर्हटनाकाष्ठ, चरखानाकाष्ठ, कांटावाला वृक्षनाकाष्ठ, पंच उंबरनाकाष्ठ, आ सर्व काष्ठ घरमां न वापरे. बीजोरा, केला, दाडम, जंबीर, आंबली अने धत्तुराना काष्ठ पण वर्जे. आ वृक्षोनां मूल पडो कोशमांथी घरमां प्रवेश करे, वा तेउंनी छाया घरमां पडे तो कुलनो नाश करे पूर्व दिशितरफ घर उचुं होय तो धननो नाश थाय, दक्षिणदिशिये उचुं होयतो धननी वृद्धि थाय, पश्चिमदिशिये उचु होय तो धनादिनी वृद्धि थाय, अने उत्तरदिशि तरफ उचु होय तो उज्जड थाय जे घर गोल होय, बहु खुणावालु होय, अथवा एक, बे वा त्रण खुणावालुं होय, अने दक्षिण वामी तरफ लांबु होय, एवा घरमां वास न करवो जे घरनां द्वार स्वयमेव उघडे वा बंध थाय ते घर सुखकारी नहि

घरना द्वार उपर कलशादि चित्र होय तो शुभ छे, अने नाटारंभ, महाभारत तथा रामायणना युद्ध, राजाउंना युद्ध, ऋषिउंना चरित्र, देवचरित्र, आ चित्रो घरमां शुभ नथी; तथा फल वृक्ष, पुष्प वेल; सरस्व-

ती, नव निधान, यज्ञस्तंज, लक्ष्मी देवि, कलश, वर्द्धमान, चौद स्वप्नावलि, आ चित्रो शुज ठे

खजूर, दाडम, केलां, कोह्लां, बीजोरा, जे घरमां उगे ते घरनो नाश थाय ठे वडवृक्ष उगे तो लक्ष्मीनो नाश करे, कांटा वाला वृक्ष उगे तो शत्रुनो जय करे, मोटा फलवाला वृक्ष उगे तो संताननो नाश करे, आ वृक्षना काष्ठ पण वर्जे कोइ शास्त्र एम पण कहे ठे के, घरनी पूर्वे वडवृक्ष होय तो सारुं ठे, दक्षिण बाजुये उंबर वृक्ष शुज ठे, पश्चिम पासे पीपल वृक्ष अने उत्तर पासे प्लीक्षण वृक्ष सारा ठे

घरमां पूर्वदिशिये लक्ष्मीनुं घर करे, अग्नि खुणमां रसोइ करे, दक्षिण दिशिये शयननी जगा करे, नैरुत खुणमां शस्त्रशाला करे, पश्चिमदिशिये जोजन क्रिया करे, वायु खुणमां अन्न संग्रह करे, उत्तर बाजुये पाणीआरु करे, इशान खुणमां देव गृह करे, दक्षिण पासे अग्नि, पाणी, गाय, वायु, अने दीवानी जूमिका बनावे, वामी बाजुये जोजन धान्य द्रव्य, वाहन, अने देवतानी जूमि बनावे, आ पूर्वादि दिशा घरना दरवाजानी अपेक्षाये जाणवी, ठींकवत्, सूर्य अपेक्षाये नहि

घर बनावनार सुथार, कडीआ, मजूरने करारथी अधिक मजूरी आपे, तेमा शोजा समजवी गृहस्थने योग्य घर बनावे, परतु व्यर्थ मोटु घर न बनावे, कारण के तेम करवाथी व्यर्थ धन खरचाय ठे. घरना द्वारो मर्यादा पूर्वक राखे बहु द्वार बनावे नहि अधिक द्वारथी, दुष्ट जनोना प्रवेशनो जय तथा स्त्री अने धननो तेथी नाश थायठे दरवाजाना बारणा मजबुत बनावे, सांकल, आगलीआथी सुरक्षित करे कमाड पण सुखे खुले तेवा बनावे जींतमां जुगल राखवाथी पचेंद्रिय जीवनी विराधना थायठे कमाड वासे त्यारे यत्नाथी वासे, तेवीज रीते यत्नाथी उघाडे परनाल, खाल विगेरे उचित बनावे आ प्रमाणे देश, काल, स्ववैजव उचित, स्वजाति उचित, घर बनावी, विधि सहित, स्नात्रपूजा, साधर्मीवात्सल्य, सघपूजा करी, शुज मुहूर्ते, शुज शुकने, प्रवेश करे तो सुखी थाय, त्रिवर्गनी सिद्धिना हेतु थाय इति प्रथम द्वार. २ बीजु विद्याद्वार कहीये ठीये विद्या ते लखवु, जणवु, वाणिज्यादि कलानु ग्रहण करवु, अर्थात् अध्ययन करवु जे विद्याज्यास करता नथी, ते मूर्ख रहेठे, अने पगले

पगले पराजव पामे ठे विद्यावान् परदेशमां पण माननीय थाय ठे, ते कारणथी सर्व प्रकारनी कला शिखवी जोइये कोण जाणे क्षेत्र, कालना विशेषथी कइ कलाथी आजीविका करवी पडशे? जेउ सर्व कला शिख्या होय, तेउये पण पूर्वोक्त सात प्रकारनी आजीविकामांथी जे कलाथी सुखे निर्वाह थाय, ते कलाथी आजीविका करवी. जो सर्व कला शिखवाने समर्थ न होइये, तो जे कलाथी, पोतानो निर्वाह सुखे थाय, अने परलोकमां सारी गति थाय ते कला शिखवी. पुरुषे बे वात निरंतर ध्यानमां राखवी, एक, जेथी सुखे निर्वाह थाय ते, तथा बीजी जेथी मरण पठी सद्गति थाय ते, आ बंने अवश्य शिखवी ३ हवे विवाहद्वार लखीये ठीये विवाह पण त्रिवर्ग शुद्धिनो हेतु होवाथी उचित करवो जोइये. अन्य गोत्रवाला साथे विवाह करवो जोइये. समान कूल, सदाचार, शील, रूप, वय, विद्या, धन, वेष, जाषा, प्रतिष्ठादि गुणोमां जे पोतानी समान होय, तेनी साथे विवाह करे, अन्यथा कुटुंबक्लेश, अवहेलना प्रमुख अनेक विटंबना उत्पन्न थाय ठे श्रीमतीवत् सामुद्रिक शास्त्रोक्त शरीरना लक्षण अने जन्मपत्रिका देखी, वरकन्यानी परीक्षा करी विवाह करे. ॥ यदुक्तं ॥ कुलंच शीलंच सनाथताच, विद्याचवित्तंच वपुर्वयश्च ॥ वरेगुणाः सप्तविलोकनीया, स्ततः परंजाग्यवशाहि कन्या ॥१॥ जो वर मूर्ख होय, निर्धन होय, दूर रेहेनार होय, सूरमो होय, वैराग्यवंत मोक्षाजिलाषी होय, वयमां कन्याथी त्रण गणो अधिक होय, तेवाने कन्या न देवी, वली अति धनवान्, अति नरम, अति क्रोधी, विकलांगी अने रोगी, तेवाने पण कन्या न देवी, तेमज कुल, जातिमां अतिहीन होय, मातपिताविनानो होय, स्त्री, पुत्र सहित जेने होय, तेने पण कन्या न देवी. वली जेने बहु जनोनी साथे वेर होय, दररोज कमाय तोज खावानु साधन थाय तेम होय, आलसु होय, तेवाने पण कन्या न देवी. तथा जे एक गोत्री होय, व्यसनी होय, दरिद्र होय तेने पण कन्या न देवी. जे स्त्री, कपट रहितपणे जर्तारनी साथे वर्ते, देवरनी साथे पण कपट रहितपणे वर्ते, सासुनी जक्ति करे, सगा संबधीनुं वात्सल्य करे, जाइउमां स्नेहवाली होय, कमलनी जेम विकसित वदनवाली होय, ते कुलवधू सुलक्षणी जाणवी.

अग्नि देवनी साक्षीये पाणी ग्रहण करवु ते विवाह कहेवाय छे जग
तमां विवाहना आर्यलोकमां आठ प्रकार छे १ ब्राह्म, २ देव, ३ आर्
४ प्राजापत्य, ५ गांधर्व, ६ आसुर, ७ राक्षस, अने ८ पिशाच जे वीवाहम
कन्यानो पिता पानेतर ओढाडी तथा अलकार आपी पोतानी कन्या परण
वे, ते ब्राह्मविवाह छे, जे विहाहमा यज्ञ करनार ब्राह्मणने कन्यानो पि
ता धर्मनी क्रिया करतां पोतानी कन्या आपे ते देवविवाह छे जे वि
वाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी गायनु जोडुं लइ वरने कन्या परणा
वे ते आर्ष विवाह छे आ छेला वे विवाह लौकिक वेदसम्मत छे जैन
वेदमां आ विवाह नथी, कारण के आ वे विवाहना मंत्रो जैनवेदमा न
थी, तेम प्रचलित व्यवहारमां पण नथी जे विवाहमां कन्यानो पिता स
न्मान पूर्वक पोतानी कन्याने योग्य वरने आपे, ते प्राजापत्य विवाह छे
आ चारे प्रकारना विवाह लौकिक नीतिमुजव उत्तम प्रकारना छे. जे स्त्री
पुरुष मातापितानी आज्ञाविना परस्पर रागथी पोतानी मेले विवाह करे
ते गांधर्व विवाह छे जे विवाहमां कन्यानो पिता वरनी पासेथी अवेज
लइ कन्याने परणावे, ते आसुर विवाह छे जे पुरुष कन्याने जोरावरीथ
ग्रहण करे, ते राक्षस विवाह छे जे पुरुष सुतेली, मदोन्मत्त, बावरी क
न्याने ग्रहण करी लइ जाय ते पिशाच विवाह छे पाछलना चारे विवा
ह अधम विवाह छे जे विवाहमां वरवहुनी परस्पर बहुज प्रीति थाय, ते
विवाह उत्तम प्रकारना विवाहमां गणाय छे. सारी स्त्रीनो लाभ तेज वी
वाहनु फल छे सारो पुत्र उत्पन्न थाय तेज स्त्री मलवानु फल छे जेम थ
वाथी चित्तवृत्ति अनुपहत रहे, शुद्धाचार रहे, देवगुरु, अतिथी, बाधव
प्रमुखनो सत्कार थाय

विवाहमा धननो व्यय, पोताना कुल वैभवनी मर्यादा मुजव तथा श
क्ति मुजब अने लोकमां वास्तविक लागे तेम करे, विशेप खर्च करवानी
चाल करे नहि. अधिक खर्च तो धर्मना कार्योमां करवो वास्तविक छे
विवाहमां पण स्नात्र महोत्सव, महापूजा आदर सहित करे, नैवेद्यादि
ढोवे, चतुर्विध सघनो सत्कार करे विवाहना कार्यो ससार फलना आपे
नारां छे, तेथी तेवा प्रसगे धर्मकार्योमा व्यय थाय ते सफल छे

४ हवे मित्रद्वार कहीये छीये उत्तम प्रकृतिवाला, साधर्मी, गुणवान् धै-

वा माटीनु अंगुष्ट प्रमाणथी यावत् पांचसो धनुष्य
सुंदराकार शांतरसमय बनावे. श्री जिनप्रतिमा जरा-
स थाय ठे ? ते लखीये ठीये ॥ यत॰ ॥ वसंततिलका
मल शिला तल दंत रौप्य, सौवर्ण रत्नमणि चदन चा-
जैनमिह ये स्वधनानुरूपं, ते प्राप्नुवन्ति नृसुरेषु महा-
माणे प्रतिमा जरावनारा, मनुष्य तथा देवगतिमां
. तथा, आर्या ॥ दारिद्द दोहग्गं, कुजाइ कुसरीरकु-
ण रोगसोगा, न हुंति जिणबिंब कारिणं॥ १ ॥ अ-
गर दारिद्र, दौर्भाग्य, कद्रुपुं शरीर, नरक तिर्यंच-
द्धि, पराधीनपणु, रोग, तथा शोक प्राप्त करता नथी
ास्त्रमां कहेली विधिपूर्वक बनावे, सुलक्षणयुक्त
वृद्धि थाय जे प्रतिमा अन्यायोपार्जित द्रव्यथी
दोरंगादि रंगवाला पाषाणनी बनेली होय, तेमज
होय, ते प्रतिमा स्वपरनी उन्नतिनो नाश करे ठे
नेत्र, कटी, एटलां अंग खंडित होय, ते प्रति-
जोइये. जे प्रतिमाने सो वर्षथी अधिक वर्ष
भाविक पुरुषनी प्रतिष्ठित करेली होय, ते प्र-
होय तोपण पूजवा योग्य ठे. पाषाणमय विं-
रंग होय ते [illegible] सुखकारक नथी. जे बि-
ते [illegible] आंगलथी अगीआर आं-
[illegible]ा योग्य ठे, ते उपरांत-
पूजवा [illegible] ये आ क-
लेपनी. [illegible]ानी, काष्ठ-
[illegible], तो गृ-
[illegible] अतिश-
[illegible]षेक करी,
[illegible]भावपू-
[illegible]. आत्म-
[illegible]ववा जो-

नी प्रतिपत्ति, शासनप्रजावना, इत्यादि अगणित पुण्य बधना हेतु प्राप्त थाय ठे, तेथी जिनमंदिर बधाववु, ते श्रावकनुं मुख्य कर्त्तव्य ठे

जीर्णोद्धारनु स्वरूप लखीये ठीये ॥ यत ॥ नवीन जिनगेहस्य, विधाने यत्फल जवेत् ॥ तस्मादष्टगुणं पुण्य, जीर्णोद्धारेण जायते ॥ १ ॥ जीर्णे समुद्धृते याव, त्तावत् पुण्य न नूतने ॥ उपमर्दो महांस्तत्र, स्वचैत्य स्यातिधीरपि ॥ २ ॥ वली कह्युं ठे के ॥ राय अमच्च सेठी, कोडवीये वि देसेण काउ ॥ जीणे पुव्वायणे, जीणकप्पीवावि कारवइ ॥ १ ॥ अर्थ. राजा, मंत्री, शेठ, कोटंवी विगेरेने उपदेश दइ, जीर्ण जिनमंदिरनो उद्धार जिनकल्पी साधु पण करावे जेणे जिन जवननो उद्धार कर्यो, तेणे जयकर ससारथी पोताना आत्मानो उद्धार कर्यो, एम जाणवु जीर्ण चैत्य उद्धार करण पूर्वकज नवीन चैत्य करावबु योग्य ठे, ते कारणथी श्री संप्रति राजाये नेवासी हजार जीर्णोद्धार कराव्या ठे, अने नवीन जिनमंदिर तो ठत्रीश हजारज वंधाव्या ठे. तेवीज रीतें श्रीकुमारपाल राजा तथा वस्तुपाल प्रमुखे पण नवीन जिनमंदिरो करतां जीर्णोद्धार विशेष करावेल ठे

ज्यारे जिनमदिर तैयार थइ जाय, त्यारे तेमां प्रतिमाजी शीघ्र विराजमान करवा जोइये यदाह श्रीहरिजद्र सूरि ॥ जिनजवने जिनविंव, कारयितव्य द्रुतंतु बुद्धिमता ॥ साधिष्टानं ह्येवं, तद्जवनं वृद्धिमद्जवति ॥ १ ॥ जिनप्रतिमा स्थापन कर्या पठी देरासरमां जंडार, कलश, त्राबाकुडी विगेरे उपकरणो आपवां, तथा वाग, वाडी, गाम, नगर प्रमुख तेना रक्षणवास्ते राजाये आपवा जोइये जेम श्रीसिद्धराजे श्रीरैवताचल पर्वत उपर श्रीनेमिनाथ जगवंतना चैत्यवास्ते वारगाम जेटमा आप्या तथा जेम कुमारपाल राजाये वीतजय पाटन खोदावतां त्रावाना पत्र उपर श्री उदायन राजाना अर्पण करेला गामोनो लेख निकल्यो, ते कबुल करी ते गामो आप्या, ते प्रमाणे आपे श्रीजिनमंदिर बधाववानु फल आ ठे यथाशक्ति स्वधनने अनुसारे श्री जिनजवन करावे ते पुरुष महर्द्धिवंत विमानवासी देवताउ पण जेनी स्तुति करे, तथा जे चिरकाल सुख आनंद जोगवे, तेवा विमानवासी देवनी गति तथा उची गति प्राप्त करे

५ प्रतिमाद्वार. श्री अरिहतनु विव मणि, सुवर्ण, धातु, पाषाण, चंद-

नादि उत्तम काष्ठ, वा माटीनुं अगुष्ट प्रमाणथी यावत् पांचसो धनुष्य प्रमाण यथाशक्ति सुदराकार शांतरसमय बनावे. श्री जिनप्रतिमा जरावनारने शुं फल प्राप्त थाय ठे ? ते लखीये ठीये ॥ यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ सन्मृत्तिका मल शिला तल दंत रौप्य, सौवर्ण रत्नमणि चंदन चारु बिंबम् ॥ कुर्वंति जैनमिह ये स्वधनानुरूपं, ते प्राप्नुवन्ति नृसुरेषु महासुखानि ॥ १ ॥ तेप्रमाणे प्रतिमा जरावनारा, मनुष्य तथा देवगतिमां महासुख प्राप्त करे ठे. तथा, आर्या ॥ दारिद्दं दोहग्गं, कुजाइ कुसरीरकुगइ कुमइर्ड ॥ अवमाण रोगसोगा, न हुंति जिणबिंब कारिणं॥ १ ॥ अर्थ जिनबिंबना करावनार दारिद्र, दौर्जाग्य, कडुपुं शरीर, नरक तिर्यंचनी माठी गति, बुरीबुद्धि, पराधीनपणु,रोग, तथा शोक प्राप्त करता नथी.

प्रतिमा पण वास्तुशास्त्रमां कहेली विधिपूर्वक बनावे, सुलक्षणयुक्त बनावे, जेथी संततिनी वृद्धि थाय जे प्रतिमा अन्यायोपार्जित इव्यथी बनावेली होय, तथा जे दोरंगादि रंगवाला पाषाणनी बनेली होय, तेमज जेना अंग हीन अधिक होय, ते प्रतिमा स्वपरनी उन्नतिनो नाश करे ठे. जे प्रतिमानुं मुख, नाक, नेत्र, कटी, एटलां अग खडित होय, ते प्रतिमाने मूलनायक न करवी जोइये जे प्रतिमाने सो वर्षथी अधिक वर्ष थइ गयां होय, अने जे प्रजाविक पुरुषनी प्रतिष्ठित करेली होय, ते प्रतिमा जो खडित थइ गइ होय तोपण पूजवा योग्य ठे पाषाणमय बिंबना परिवारमां जो बीजो रंग होय तो ते बिंब सुखकारक नथी. जे बिंब सम अंगुल प्रमाण होय ते शुज नथी एक आंगलथी अगीआर आंगलसुधीना प्रमाणवाला बिंब ग्रहदेरासरमां पूजवा योग्य ठे, ते उपरांतना प्रमाणवाला बिंब होय तो साधारण मंदिरमां पूजवा जोइये. आ कथन पूर्वाचार्योनुं ठे. निरयावलि सूत्रमां कह्युं ठे के लेपनी, पाषाणनी, काष्ठनी, दांतनी, लोहनी प्रतिमा परिवार तेमज प्रमाणरहित होय, तो ग्रहमां न पूजवी ग्रहदेरासरमां प्रतिमाजी पासे नैवेद्यनो विस्तार अतिशय न करवो. त्रण काल प्रतिमानी पूजा करे, प्रतिमाजीने अजिषेक करी, प्रातः कालमां प्रथम प्रहर व्यतीत थये, अष्टप्रकारी पूजा करी, जावपूजा करे प्रतिमाजी मुख्य वृत्तिये परिकर सहित, तिलक सहित, आजरण सहित करावे. मूलनायकजी तो विशेष रीतें शोजनिक बनाववा जो-

इये, कारण के जिनप्रतिमानी अधिक शोजा देखावाथी परिणाम अत्यंत सुंदर तथा उल्लासमान थाय ठे, अने तेथी अधिक निर्जरा थाय ठे. जिनमंदिर अने जिनप्रतिमा बनावनारने अतुल्य पुण्यफल थाय ठे ज्यांसुधी मंदिर अने प्रतिमा रहे त्यांसुधी बनावनारने पुण्य प्राप्त थया करे ठे जेम अष्टापद पर्वत उपर जरतचक्रवर्त्तीये करावेला मंदीर तथा रेवतगिरि उपर ब्रह्मेन्द्रना बनावेला कांचनमय मंदिर तथा प्रतिमा, तथा जरत चक्रवर्त्तीनी अगुठीमा रहेली माणकेनी प्रतिमा, जे कुल्पाक तीर्थमां माणिक्य स्वामिनी प्रतिमा कहेवाय ठे ते, तथा श्रीस्तजनक पार्श्वनाथनी प्रतिमा जे आज पर्यंत पूजाय ठे, तेम पुण्यफल प्राप्त थाय ठे तेज कारणथी आ चोवीसीमां जरतचक्रवर्त्तीये श्रीशत्रुंजयतीर्थ उपर रत्नमय चौमुख चोरासी मंडप सयुक्त श्रीरीषजदेव जगवाननुं मंदिर बधाव्युं, ज्यां पांच क्रोड मुनिना परिवार सहित पुडरीक गणधर मोक्ष पाम्या ज्ञान, निर्वाणना स्थानक पण बनाव्यां तेवीज रीते बाहुबली, मरुदेवी शृगमा, रेवतगिरि, अर्बुदगिरि, वैजारगिरि, अने समेतशिखर उपर जिनमंदिरो बनाव्यां प्रतिमाउं पण सुवर्णनी बनावी जरत राजानी आठमी पाटे दंडवीर्य राजाये तथा बीजा सगर चक्रवर्त्तीये तेउनो उद्धार कराव्यो, तथा हरिषेण नामा दशमा चक्रवर्त्तीये श्रीजिनमंदिर मंडित पृथ्वी करी सप्रति राजाये सवालाख जिनमंदिर तथा सवाक्रोड जिनप्रतीमा जरावी गवालियरना राजा आम राजा श्रावके श्रीमहावीर अरिहंतनु एकसो एक हाथ उंचुं जिनमंदिर बधाव्यु, तेमां साडात्रण क्रोड सोनामोहोरो खरची सात हाथ प्रमाण उंची श्रीमहावीर स्वामिनी प्रतिमा वीराजमान करी, मूल मंडपमा एकवीश लाख सोनैया खरच्या श्रीकुमारपाल राजाये चौदसो चमालीश नवा जिनमंदिर बधाव्या, तथा सोलसो मंदिर जिर्णोद्धार करी समराव्यां ठन्नु क्रोड रुपैया खरची त्रिभुवनविहार नामा जिनमंदिर बधाव्युं, तेमा एकसो पचवीस आंगल प्रमाण अरिष्ट रत्नमयी प्रतिमा बोतेर देरी संयुक्त चोवीस प्रतिमा रत्ननी, चोवीस रूपानी स्थापन करी, तथा चौदजार प्रमाण एकेक चोवीसी बनावी मंत्री वस्तुपाले तेरसो तेर नवा जिनमंदिर बधाव्या, अने बावीससो जीर्णोद्धार कराव्या, सवालाख प्रतिमा जरावी, अने सवालाख सुवर्ण रत्नमय प्रतिमाजीनां

आजूपणो कराव्यां. शाह पेथके चोरासी जिनमंदिर बंधाव्यां, ते सर्वे वीरमदे राजाना राज्यमां मांधाता तथा ओंकार नगरमां अने देवगिरि उपर क्रोडो रूपीआ खरची बधाव्यां, त्रण लाख रूपीआ दानमां आप्या; तथा श्रीशत्रुंजय तीर्थ उपर श्रीरीषभदेवजीनुं मंदिर सुवर्णपत्रथी मढावी मेरुश्रृंग समान कर्युं हतु पूर्वोक्त सर्वे मंदिर, मुसलमान राजाउंये तथा अजेपाल राजाये जमीनदोस्त करी दीधां. शेष जे बचेलां छे, ते आज पण आबु, तारंगादि पर्वत उपर विद्यमान छे

७ प्रतिमानी प्रतिष्ठाद्वार प्रतिमानी प्रतिष्ठा शीघ्र करवी जोइये, षोडशक ग्रंथमां लख्युं छे के, मंदिर तैयार थया पछी दस दिवसनी अंदरज प्रतिष्ठा करवी जोइये. प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठाकल्पथी जाणवी.

८ दीक्षाद्वार. श्रावके पोताना पुत्र, पुत्री, भाइ, भत्रीजा, स्वजन, मित्र, परिजन प्रमुख जे कोइ दीक्षा लेवाना अभिलाषी होय, तेने मोटा आडंबरथी महोत्सव करी दीक्षा अपाववी, उपस्थापना कराववी; बीजाउं पण जे दीक्षा लेवावाला होय तेउंने वास्ते महोत्सव करे, अने दीक्षा अपावे तो महापुण्यनु कारण छे जेना कुलमां चारित्र धारण करनार पुरुष होय, ते महापुण्यवान् कुल छे लौकिक शास्त्रमां पण कह्युं छे के ॥ यत. ॥ तावद् भ्रमन्ति संसारे, पितर. पिंडकांक्षिण. ॥ यावत् कुले विशुद्धात्मा, यतिपुत्रोन जायते ॥ १ ॥

ए तत्पद स्थापनाद्वार. गणि, वाचनाचार्य, वाचक, आचार्यादि पदप्रतिष्ठा शासननी उन्नति वास्ते मोटा महोत्सवथी करे, जेम पूर्वे गणधरो वास्ते शक्र इंद्रे करेल छे, तथा मंत्री वस्तुपाले एकवीश आचार्योनी पद स्थापना करी, तेम करे

१० पुस्तक लखाववानुं द्वार आचारांगादि सिद्धांतना ग्रंथो तथा जिनचरित्रादि अनेक ग्रंथो न्यायोपार्जीत धनथी लखावे. सुंदर कागलो उपर सुदर अक्षरोथी लखावे पोते वांचे, संवेगी गीतार्थ पासे वंचावे. प्रौढ महोत्सवथी शुभ दिवसे पुस्तकनी पूजा करी बहुमान करावे. ग्रंथ भणनाराउंने वस्त्र, अन्नादिनी सहाय करे पूर्वकालमां जे शास्त्रो हतां, ते दुःषमकालना प्रभावथी बार वर्षना दुकालमां बहु विछेद गयां, बाकी जे रह्यां ते भगवान् नागार्जुन स्कंदिलाचार्य प्रमुख महापुरुषोये पुस्तकोमां

लख्यां, त्यारथी लखेलां शास्त्रोनुं बहुमान थवा लाग्युं, ते कारणथी पुस्तक जरूर लखाववा जोइये, आ पुस्तको विछेद जशे तो आ क्षेत्रनां अनाथ जीवोनी शुं दशा थशे? तेओने ज्ञान शीरीते प्राप्त थशे? ते कारणथी पुस्तको अति आदरथी लखावी, पुस्तको सुंदर वस्त्रोथी बांधी, बहु यत्नाथी राखी, पूजवा जोइये. शाह पेथडे सातक्रोड अने मंत्री वस्तुपाले अढार क्रोड रुपैआ खरची ज्ञानना भंडार कराव्या. थिरापद्रीय संघपति आभूये पोतानी माताना रुपैआ त्रण क्रोड खरची सर्व आगमोनी प्रतो सोनेरी अक्षरोथी लखावी, शेष ग्रथो शाहीना अक्षरोथी लखाव्या, माटे पुस्तकोनो उद्धार करवो

११ पौषधशाला बनाववानु द्वार श्रावके पौषध करवावास्ते पोताने वास्ते तेमज बीजा साधर्मीओवास्ते साधारण स्थानमां पूर्वोक्त घर बनाववानी विधि अनुसारे पौषधशाला बंधाववी जोइये पौषधशाला समराववा अवसरे सुसाधुने रहेवाने ते स्थान आपवु तेमां महाफल छे. श्रीवस्तुपाले (९८४) नवसे चोरासी पौषधशाला बंधावी. श्रीसिद्धराज जयसिंह राजाये प्रधान सांतुने रहेवावास्ते बहु सुंदर आवास (मेहेल) बधाव्यो, पछी श्री वादि देवसूरिजीने ते बताववासारु आमंत्रण कर्यु मंत्रीजीये पुछ्यु "गुरुराज आवास केवो छे? त्यारे शिष्य माणिक्ये कह्यु के ते पोषधशाला होय तो वर्णन करीये मंत्रीये कह्यु के "आ पौषधशाला हवेछे"

१२-१३ बारमा अने तेरमां द्वारमां जन्मथी जावजीवसुधी सम्यक्त्व दर्शन यथाशक्ति पाले, १३ तथा यथाशक्ति व्रतादि पाले.

१४ दीक्षा ग्रहणद्वार श्रावक अवसर जाणी दीक्षा ग्रहण करे बाल्यावस्थामां जो दीक्षा न लहे तो पोताना मनमां ठगायो माने जगतमां अतिवल्लभ वस्तुवास्ते जेम लोक निरंतर चिंता राखे छे, तेम श्रावक पण नित्य सर्वविरति थवानी चिंता राखे जो गृहस्थावास पाले, तोपण उदासीनताथी अलिप्तपणे, पोताने परोणा समान समजे, कारण के भावश्रावकनां लक्षण सत्तर प्रकारना वर्णवेलां छे तेना नाम

१ स्त्रीथी वैराग्य, २ इंद्रियथी वैराग्य, ३ धनथी वैराग्य, ४ संसारथी वैराग्य, ५ विषयथी वैराग्य, ६ आरंभस्वरूप ज्ञान, ७ घरनो दुःखरूप अनुभव, ८ सम्यक् दर्शन धारणा, ९ गाडरीआ प्रवाहनो त्याग, १० धर्म-

मां अग्रेसरपणुं, आगमानुसार धर्ममां प्रवर्त्तना, ११ दानादिमां यथाशक्ति प्रवर्त्तना, १२ विधिमार्गमां प्रवर्त्तना, १३ मध्यस्थ वृत्ति, १४ अरक्तद्विष्ट, १५ असंबद्ध, १६ परहितार्थे अर्थ, कामनो त्याग, १७ वेश्या वृत्तिये घरवास

स्त्री अनर्थनुं स्थानछे, चपल चित्तवाली छे, नरकनी सडक सरखी छे, एम जाणी तेने वशवर्ती नहि थतां तेनाथी उदास रहे. २ इन्द्रियो, चंचल घोडा समान छे, माठी गतितरफ निरंतर दोडेछे, तेथी तेनुं यथार्थ स्वरूप जाणी सद्ज्ञानरूप रज्जुथी तेने दुष्ट प्रवृत्तिथी रोके ३ धन सर्व अनर्थ तथा क्लेशनुं कारण छे, तेथी धन प्राप्त थये, तथा प्राप्त करवामां अतिलोभी थाय नहि ४ संसार, चतुर्गति रूप दुःखमय, अनेक विटंबनाथी भरपुर छे, तेथी तेमां आसक्ति न करे. ५ विषयसुख क्षणमात्रछे. तेनुं दुःख श्रेणि परंपरा छे, तेथी विषय विषफल समान छे, एम जाणी कदापि विषयमां गृद्धित्व न करे. ६ तीव्र आरंभ निरंतर वर्जे, निर्वाह न थाय तोपण अल्पारंभी रहे, अने आरंभ रहितनी स्तुति करे, सर्व जीवो उपर दयावंत रहे ७ गृहवासने दुःख रूप, बंदीखाना समान मानी गृहवासमां उदासवृत्तिये रहे, अने चारित्र मोहनीय कर्मने जीतवानो उद्यम करे ८ आस्तिक्य भाव संयुक्त जिनशासननी प्रभावना तथा गुरुभक्ति करे, तेवी रीतें सम्यग्दर्शन निर्मल धारण करे. ९ जेवी रीते मूर्ख लोको गाडरीआ प्रवाह प्रमाणे वर्त्ते, तेम नहि वर्त्तंतां जिन आगम अनुसारे प्रवर्त्ते ११ पोतानी शक्ति नहि गोपवतां चारे प्रकारनो दानादि धर्म करे १२ हितकारी, अनवद्य, धर्मक्रियाने चिंतामणी रत्ननी जेम दुर्लभ जाणी तेप्रमाणे करतां कोइ मूर्खना हसवाथी लज्जा न धरे १३ शरीर राखवावास्ते धन, स्वजन, आहार, घर प्रमुखमां प्रवर्त्ते, परतु रागद्वेष कोइ वस्तुमां न करे १४ उपशांत वृत्ति सार छे, एम विचारी रागद्वेषमां लेपायमान न रहे, खोटो आग्रह न करे, हितनो अभिलाषी थइ मध्यस्थ रहे १५ सर्व वस्तुने क्षणभंगुर मानी निरंतर धनादि साथे अप्रतिबद्ध पणे रहे. १६ संसारथी विरक्त मन राखे, एम जाणे के भोग भोगववाथी आज पर्यंत कोइ तृप्त थयेल नथी, छतां स्त्री आदिना आग्रहथी भोगविलासमां प्रवर्ते तोपण विरक्तपणे रहे. १७ वेश्यानी जेम अभिलाषा रहित वर्ते; एम विचारे के आ अनित्य सुख आज काल मारे छोडवा-

नां छे, तेथी घरवासमां स्थिर भाव न करे ॥ इति धर्मरत्नशास्त्रे कथितं भाव श्रावक गुणवर्णनं ॥

एम शुभ भावना वासित प्रथम कहेल दिनकृत्यादिमां रक्त ॥ "इण-मेव निग्गथे पवयणे अठे परमठे सेसे अणठे" एवी सिद्धांतोक्त रीतिये वर्तमान सर्व व्यापारोमां सर्व प्रयत्नथी वर्तता थकां, सर्वत्र अप्रतिबद्ध चित्त राखे, अनुक्रमें मोहने जीतवाने समर्थ थइ, पुत्र, भाइ, भत्रीजादिने गृहभार सोंपी स्वशक्ति अनुसारे अर्हंतचैत्यमा अठाइ महोत्सव करी, संघनी पूजा करी, दीन अनाथोने यथाशक्ति दान दइ, परिचित्त जनो साथे खमतखामणा करी सुदर्शन शेठना जेम विधि सहित सर्वविरति अंगीकार करे

१५ पदरमाद्वारमा—जो दीक्षा लेवानी शक्ति न होय तो आरंभनो त्याग करे, जो निर्वाह न थाय, तोपण अल्पारंभी रही सर्व सचित्त आहारादि केटलाएक आरभो तो त्यागे

१६ ब्रह्मचर्यद्वार जावोजीवसुधी ब्रह्मचर्य पाले, जो तेम न थाय तोपण अमुक वखते तो अवश्य अंगीकार करे जेम शाह पेथके बत्रीस वर्षनी अवस्थामा ब्रह्मचर्यव्रत अगीकार कर्युं

१७ प्रतिमाद्वार प्रतिमादि तपविशेष करे, आदिशब्दथी संसार तारणादि तप करे अगीआर प्रतिमा श्रावकनी छे, तेनु स्वरूप आ प्रमाणे छे रायाभिओगेणादि छ आगार रहित तथा समग्र दर्शनना श्रद्धादि सडसठ बोल सहित, भय लज्जादि अतिचार रहित, त्रिकाल देवपूजामां तत्परता पूर्वक एक मास सुधी सम्यक्त्व पाले, ते प्रथम प्रतिमा. बीजी प्रतिमामा प्रथमनी प्रतिमानी विधिसहित, बे मास सुधी अखडित पांच अणुव्रत पाले त्रीजी प्रतिमा त्रण मास सुधी उभयकाल अप्रमत्त, पूर्वोक्त बने प्रतिमासहित सामायिक करे चोथी प्रतिमा. चार माससुधी चार पर्वे पूर्वेनी त्रण प्रतिमा सहित अखडित पौषध करे. पाचमी प्रतिमा पाच माससुधी स्नान न करे, रात्रिये चारे आहार वर्जे, दिवसे ब्रह्मचर्य पाले, कछ बांधे नहि, चार पर्वे घरमां तथा चोकमा नि प्रकप थइ सर्व रात्रि कायोत्सर्ग करे, सवे पूर्वेनी चार प्रतिमा सहित करे आ वात आगल पण सर्व प्रतिमामां जाणवी छठी प्रतिमा छ माससुधी ब्रह्मचारी थाय सातमी प्रतिमा सा-

त माससुधी सचित्त आहार वर्जे आठमी प्रतिमा. आठ माससुधी पोते आरंभ न करे नवमीप्रतिमा. नवमाससुधी वीजा पासे पण आरंभ करावे नहि दसमी प्रतिमा दस मास सुधी क्षुरमुंडित रहे, अथवा अल्प चोटली राखे. घरमां कांइ धन होय, अने घर मांहेना कोइ पुछे त्यारे कहे के हुं जाणुं छुं, अने जो न होय तो कहे जाणतो नथी, बाकी घरनु सर्व काम वर्जे, पोताने निमित्ते घरमां जे आहार कर्यो होय ते पण न खाय. अगीआरमी प्रतिमा. अगीआर माससुधी घरनो संग त्यागे, लोच करे, अथवा क्षुरमुडित रहे, रजोहरण, पात्राप्रमुख लइ, मुनिनो वेष धारण करी स्वकुलमां भिक्षा लहे मुखथी एम कहे "प्रतिमा प्रतिपन्नाय श्रमणोपासकाय भिक्षां देहि" आ प्रमाणे वचन बोले, परंतु धर्मलाभ शब्द न कहे सर्व रीतिये साधुनी जेम प्रवर्त्ते

१० आराधना द्वार अंतकाल समये श्रावक दश प्रकारनी आराधना के जेनु स्वरूप आगल कथन करवामां आवे छे ते, तथा संलेषणादि विधिपूर्वक करे श्रावक ज्यारे सर्व धर्मकृत्यो करवाने अशक्त थाय, अने पोतानु मरण पासे जाणे, त्यारे द्रव अने भावथी संलेषणा करे द्रव्य संलेषणा ते अनुक्रमें आहारनो त्याग करे, अने भाव संलेषणा ते, क्रोधादि चारे कषायनो त्याग करे पोतानु मरण निकट छे एम आ लक्षणोथी जाणे १ बुरा स्वप्न आवता होय, २ प्रकृति, स्वभावमां फेरफार थयो होय, दुर्निमित्त मलतां होय, ४ मोटा ग्रहनो योग थयो होय ५ आत्म आचरण विकृति पाम्या होय, वा कोइ देवतानी सहायथी जाणवामां आवे. जे द्रव्यथी तथा भावथी संलेषणा न करे, अने अनशन करी दे, तो तेवा जीवने प्रायः दुर्ध्यान थवाथी कुगति थाय छे, ते कारणथी संलेषणा अवश्य करे पछी धर्मना उद्योत वास्ते संयम अंगीकार करे. एक दिवस पण दिक्षा ग्रहण करी संयम पालवामां आवे तो स्वर्ग प्राप्त थाय छे. जेम नल राजाना भाइ कुबेरना पुत्र सिंहकेशरीए मात्र पांच दिवसनी दिक्षाथी केवलज्ञान प्राप्त कर्युं अने मोक्ष गया; तथा हरिवाहन राजाए पोतानुं आयुष्य मात्र नव प्रहर बाकी जाणी दिक्षा लीधी अने सर्वार्थसिद्ध विमाने गया. श्रावक दिक्षा अवसरे तेमज संथारा समये प्रभावना वास्ते यथाशक्ति धन खरचे. जेम थिरापद्रीय सघपति आ-

थूए ते अवसरे साते क्षेत्रमां सातक्रोड धन वापर्युं वली संयमनो योग न थाय तो शत्रुजयादि तीर्थोंए सुस्थानमां जइ, संलेषणा करी, निर्दोष स्थडिलमा विधि पूर्वक चार आहार त्यागरूप आणद, कामदेव श्रावकोनी जेम अनशन करे पछी सर्व अतिचारना परिहार चार शरणादिरूप आराधना करे

आराधना दश प्रकारे थाय छे १ सर्व अतिचार आलेवे, २ व्रत उचरे, ३ सर्व जीवो साथे खमावे, ४ पोताना आत्माने अढार पापस्थानकोथी व्युत्सर्जन करे, ५ चार शरण ग्रहण करे, ६ गमना गमन डुष्कृतोनी गर्हणा करे, ७ जे कोइए जीनमदिरादि सुकृतो कर्यां होय, तेउनी अनुमोदना करे, ८ शुभ भावना भावे, ९ अनशन करे, अर्थात् चार आहार वा त्रण आहारनो त्याग करे, १० पंच नमस्कारनु स्मरण करे. आ प्रमाणे आराधना करवाथी जो ते भवमां मुक्ति प्राप्त न थाय, तो पण सुदेव अथवा सुमनुष्यना आठ भव करी अवश्य ते आत्मा मोक्षरूप थाय

आ प्रमाणे गृहस्थधर्म करवाथी निरंतर गृहस्थ लोको आ लोक परलोकमां सुख प्राप्त करे छे, अने परंपराए मोक्ष प्राप्त करे छे इति श्री श्राद्धविधि अनुसार श्रावकस्य जन्म कृत्यादि स्वरूप संपूर्णम् ॥

इति श्री तपगछीय मुनि श्री मणिविजयगणि तच्छिष्यमुनि श्री बुद्धिविजय तच्छिष्य मुनि श्री मुक्तिविजयगणि तस्य लघु गुरुभ्रातृ मुनि आत्माराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्वादर्शे गृहस्थधर्मनिरुपण नामा दशम. परिच्छेदः ॥ १० ॥

॥ अथ एकादश परिच्छेद प्रारंभ ॥

आ परिछेदमा श्री रिषभदेव भगवानथी, श्री महावीर स्वामि पर्यंत जैनमतादि शास्त्रानुसार इतिहासरूप पूर्व वृत्तात लखीए छीए, जेथी आ ग्रथना वाचनाराउने जैननो सेहेज इतिहास जाणवामां आवशे वर्त्तमान समयमा केटलाएक भव्य जीवोनी एवी जीज्ञासा छे के जैनमत क्यारथी प्रचलित थयेल छे ? वली केटलाएकने एवी भ्रांति छे के, जैनमत बौद्धमतनी शाखा छे, केटलाएक कहे छे के बौद्धमत जैनमतनी शाखा छे, कारण के तेउनु मानवु एवु छे के आ बने मतो कोइ का-

लमां एक हता, परंतु आचार्योमां मतभेद थवाथी एक मतना वे विभाग, जैन अने बौद्ध थया छे वली केटलाएक कहे छे के सवत् ५०० नी लगभग जैनमत उत्पन्न थयेल छे, अने कोइक कहे छे के विष्णु भगवाने दैत्योने धर्मभ्रष्ट करवावास्ते अर्हंतनो अवतार धारण करेलो छे, वली कोइक कहे छे के मछदरनाथना शिष्योए जैनमत चलाव्यो छे; इत्यादि अनेक दंतकथाउ चाले छे, ते सर्व जैनमत न जाणवानुं कारण छे जेम चमार लोको कहे छे के वानु अने चामु बे वेहेनो हती, तेमां वानुनी उलाद सर्व अग्रवालादि वाणीआ थया, अने चामुनी उलाद अमे चमार छीए, ते कारणथी वाणीआ अने चमार एक वंगना छे, हवे विचारवु जोइए के चमारोनुं आ वोलवु शु वास्तविक छे ? अने बुद्धिवान लोको शुं ते वोलवु सत्य मानशे ? तेवीज रीते जे कोइ स्वमतिकल्पनाथी वा दंतकथा श्रवण करवाथी जैनमतनी उत्पत्ति मानशे, ते पण जैनीउने हसवा लायक थशे. सारांश ए छे के प्रथम तो कोइ पण मतवाला जैनमतना मूलतत्वोने जाणता नथी. जुउ के शकरदिग्विजय ग्रथमां श्रीशकरस्वामिए जैनमतनु जे खंडन लखेल छे ते वांचता अमने हसवुं आवे छे ज्यारे शंकरस्वामिए जैनमतनु स्वरूपज जाण्युं नथी, त्यारे तेनु करेलु जैनमतनु खडन, ते पुरुषनी छायाने पुरुष जाणीने लाकडीथी मारवा सरखु छे. ज्यारे शकरस्वामिनेज जैनमतनी माहिती नहोती,तो वर्त्तमान कालना सामान्य विद्धानोनी माहिती माटे शु केहेवु ? ते कारणथी सर्वे जीज्ञासुउने बहुज नम्रता पूर्वक विनंति करीए छीए के जैनमतनो सारी रीते अभ्यास करी, जैनमतनु खंडन मंडन करवु, नहीं तो शकरस्वामि अने रामानुज आचार्योनी जेम तमे पण हसवा योग्य थइ पडशो.

सज्जनोने जाणवा वास्ते प्रथम आ जगतनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए आ जगतने जेनी डव्यार्थिक नयना मतथी शाश्वत अर्थात् प्रवाह रूपे निरंतर एवुज माने छे आ जगतमा छ प्रकारे काल वर्ते छे, तेनेज जैनीउं छ आरा कहे छे एक अवसर्पिणी काल, अर्थात् सर्व सारी वस्तुउनो अनुक्रमे नाश करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना छ विभागो छे, अने वीजो उत्सर्पिणी काल अर्थात् सर्व सारी वस्तुउने

अनुक्रमे वृद्धिमान् करतो करतो जे काल व्यतीत थाय, तेना पण ठ विभाग ठे दश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक अवसर्पिणी काल, अने तेटलाज सागरोपम प्रमाण एक उत्सर्पिणी काल ठे एक सागरोपम असख्याता वर्षोनो थाय ठे. तेनु स्वरूप जैन शास्त्रथी जाणवु एक अवसर्पिणी अने एक उत्सर्पिणी मली एक कालचक्र थाय ठे, अर्थात् वीश कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण एक कालचक्र ठे एवा कालचक्र अनंता नूत कालमा व्यतीत थया, अने नविष्यमां पण व्यतीत थशे अवसर्पिणी काल पुरो थता उत्सर्पिणी काल प्रारंन थाय ठे, अने उत्सर्पिणी काल पुरो थता अवसर्पिणी कालनो प्रारंन थाय ठे एवीज रीते अनादि अनंत काल सुधी आ प्रमाणेज व्यवस्था रहेशे हवे ठ आरानु स्वरूप लखीए ठीए.

अवसर्पिणीनो प्रथम आरो सुषमसुषम चार कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण ठे ते कालमां नरत क्षेत्रनी नूमि वहुज सुदर, रमणीय, मर्दलना तल समान सम हती ते कालना मनुष्य नद्रक, सरल स्वनावी, अल्प रागद्वेषी तथा अल्प मोह, काम, क्रोधादि युक्त हता, सुदर रूपवान्, निरोगी हता दश जातिना कल्पवृक्षोथी पोताना खावा, पीवा, पेहेरवा, सुवा विगेरे सर्व व्यवहारना कार्यो करी लेता हता एक पुत्र अने एक पुत्री, वेनु युगल जन्मतु हतु ज्यारे वंने यौवनवंत थता हता, त्यारे वने नाइ वेहेन, स्त्रीनरतारनो सवध करता हता तेउने वली तेवीज रीतें युगल प्रसवता हता तेउ पण पूर्वोक्त व्यवहार करता हता जैनमतना माप मुजव त्रण गाउ (कोस) प्रमाण तेउना शरीरनी उंचाइ हती त्रण पल्योपम प्रमाण आयुष्य हता वसो ठपन पृष्ठकरंडना हाड हता धर्मनो अनाव हतो जीवहिसा, असत्यता, चोरी प्रमुख पाप पण विशेष नहोतां वृक्षोमाज रहेता हता युगल समुदो पण गणतरीमा थोडा हता वाकी चतुष्पद पचेंद्रिय, पक्षी प्रमुख सर्व जातिना जीव हता तेउ पण सर्वे नद्रक हता. क्षुद्रक नहोता. शालि प्रमुख सर्व अनाज अने इक्षु प्रमुख सर्व वस्तुउ सर्व जंगलोमां स्वयमेव उत्पन्न थती हती तेउ काइ मनुष्योना खानपानादिमा उपयोगमां आवती नहोती. मनुष्यो तो मात्र कल्पवृक्षोना फलफूलोनोज आहार करना हता. वस्त्रने

बदले वृक्षोनी छाल तथा पांदडां पेहेरता, ओढता हता. इत्यादि सर्व वावतनुं प्रथम आरानु स्वरूप जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति प्रमुख शास्त्रोथी जाणवु

बीजो आरो सुषम त्रण कोटाकोटी सागरोपम, तेमां बे गाउ (कोश) नुं देहमान, बे पल्योपमनुं आयुष्य, एकसो अठावीश पृष्ठकरंडकनां हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा जेम हतो.

त्रीजो आरो सुषमदुषम, बे कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण, एक गाउ देहमान, एक पल्योपम आयुष्य, चोसठ पृष्ठकरडक हाड हतां. शेष व्यवहार प्रथम आरा प्रमाणे हतो. आ सर्व आरामां सर्व वस्तुओ अनुक्रमे घटती छेवटे आगलना आरा तुल्य रहे छे, परंतु एक साथे सर्व वस्तु एकदम घटती नथी

ए प्रमाणे त्रीजा आराने छेडे एक वंशमां सात कुलकर उत्पन्न थया. जेओए ते कालना मनुष्यो वास्ते कांइक मर्यादा बाधी होय तेओ कुलकर कहेवाय छे तेज सात कुलकरोने लौकिकमां सप्त मनु कहे छे बीजा वंशोना कुलकर गणीयें तो श्री ऋषभदेवजी शिवाय चौद कुलकर थाय छे, अने श्रीऋषभदेवजी पंदरमां कुलकर गणाय छे

पूर्वोक्त सात कुलकरोना नाम. १ विमल वाहन, २ चक्षुष्मान्, ३ यशस्वान्, ४ अभिचंद्र, ५ प्रश्रेणि, ६ मरुदेव, ७ नाभि आ सातेनी भार्याना नाम अनुक्रमे आ प्रमाणे १ चन्द्रयशा, २ चंद्रकान्ता, ३ सुरुपा, ४ प्रतिरूपा, ५ चक्षुःकान्ता, ६ श्रीकान्ता, ७ मरुदेवी. आ सर्व कुलकर गंगा अने सिंधु नदीना मध्य खंडमां थया छे.

आ कुलकर थवानु कारण एवु छे के, त्रीजो आरो उतरतां, दश जातिना कल्प वृक्षो कालना दोषथी अल्प थइ गया, तेथी युगलीयाओए पोतपोताना वृक्षोपर ममत्व कर्यो

ज्यारे बीजा युगलीआओए राखेला वृक्षोथी फल लेवा लाग्या, त्यारे ममत्ववाला युगलो तेओनी साथे क्लेश करवा लाग्या, युगलीआ पुरुषोने एवो विचार थयो के अमारा क्लेशनो निवेडो लावे तेवो कोइ पुरुष थाय तो सारु, तेवामां ते युगलीआओ मध्येथी एक युगलने वनना एक श्वेतहाथीए प्रेमथी पोताना स्कध उपर चडाव्यो ज्यारे ते युगल पुरुष एकलो हाथी उपर चढी फरवा लाग्यो, त्यारे बीजा युगलो विचार करवा

लाग्या के, आ युगल अमारामां मोटोठे, कारण के ते हाथी उपर चडी फरे ठे, अने अमे तो पगे चालीये ठीये, तेथी तेने न्यायाधीश बनाववामां आवे तो सारु, अर्थात् ते जे कहे ते अमारे मानवु. पठी तेउए तेने न्यायाधीश बनाव्यो जे कारणथी हाथीए युगलने पोतानी उपर चडाव्यो ते कारण, तथा तेउना पूर्व नवोनी कथा आवश्यकसूत्र तथा प्रथम अनुयोगथी जाणवी

न्यायाधीश युगल विमलवाहने सर्व युगलियाने कल्पवृक्षो वेहेंची आप्यां जे युगल पोताना वृक्षथी संतोष नहीं पामता, बीजाना वृक्षथी फल लेवा लाग्या, तेउनी साथे क्लेष थतां, ते असतोषी युगलोने विमलवाहन पासे लाववामां आवता हता विमलवाहन तेउने कहेतो के "हा" तमे आ शु कर्यु ? त्यारथी विमलवाहने हाकारनी दडनीति प्रवर्त्तावी ते हाकार दडनीतिथी फरी तेउ तेवा काम करता नहोता पठी ते विमलवाहनना पुत्र चक्षुष्मान् थया, ते पण पोताना पितानी जेम राजा अर्थात् कुलकर थया तेना वखतमां पण हाकारज दंड रह्यो. तेने यशस्वान् नामा पुत्र थया, यशस्वानूने अभिचंद्र नामा पुत्र थया आ बनेना समयमां थोडा अपराधवालाने हाकार दंड अने विशेष अपराधवालाने मकार दड, अर्थात् आ काम न करवु, आ वे दंडनीति प्रवर्ती अभिचन्द्रना पुत्र प्रश्रेणि थया प्रश्रेणिना पुत्र मरुदेव थया, अने मरुदेवना पुत्र नाभि थया आ त्रण कुलकरोना समयमा हाकार, मकार, अने धिक्कार, आ त्रण दंडनीति प्रवर्ती तेमां थोडा अपराधीने हाकार, मध्यम अपराधीने मकार, अने उत्कृष्ट अपराधीने धिक्कार दड करता हता नाभि कुलकरने मरुदेवी नामा भार्या हती आ नाभिकुलकर इक्ष्वाकु भूमि अर्थात् विनिता नगरीनी भूमिमा विशेष काल निवास करता हता आ भूमि काश्मीर देशनी उपर हती, कारण के विनिता नगरीनी चारे बाजुए चार पर्वत हता पूर्व दिशिमां अष्टापद अर्थात् कैलास गिरि, दक्षिण दिशिमां महाशैल्य, पश्चिम दिशिमां सुरशैल्य, अने उत्तर दिशिमा उदयाचल पर्वत, हता

ते नाभिकुलकरनी मरुदेवी नामनी भार्यानी कुक्षिमां आषाढ वद चोथनी रात्रिए सर्वार्थसिद्ध देवलोकथी चवीने श्रीरीषभदेवनो जीव,

गर्भमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो मरुदेवीये चौद स्वप्नो दीठां. इन्द्र महाराजे स्वप्न फल कह्यां. चैत्र वद आठमने दिवसे श्रीरीषभदेवजीनो जन्म थयो. छप्पन दिशाकुमारी तथा चोसठ इंद्रोये मली जन्म महोत्सव कर्यो. मरुदेवीये चौद स्वप्नमां प्रथम वृषभनुं स्वप्न दीठु, तथा पुत्रना वंने साथलोमां वृषभनुं चिन्ह हतुं, ते कारणथी पुत्रनुं नाम रीषभ पाड्यु

बाल्यावस्थामां श्रीरीषभदेवजीने ज्यारे भूख लागती हती, त्यारे पोताना हाथनो अंगुठो मुखमां लइ चूसता हता ते अंगुठामां इन्द्रे अमृतनो संचार कर्यो हतो ज्यारे रीषभदेवजी मोटा थया त्यारे देवता तेमने कल्पवृक्षना फल लावी आपता हता. ज्यारे रीषभदेवजी कांइक न्यून वर्षना थया, त्यारे इंद्र तेमनी पासे आव्या, हाथमां इक्षुदंड लाव्या, रिक्त हाथे स्वामि समीप जवुं उचित नथी ते कारणथी इक्षुदंड लाव्या. श्रीरीषभदेवजी ते वखते नाभिकुलकरना खोलामां बेठा हता. श्रीरीषभदेवजीनी दृष्टि इक्षुदंड उपर पडी; इन्द्रे कह्युं भगवन्! आप इक्षु भक्षण करशो? रीषभदेवजीये हाथ पसार्यो. इंद्रे इक्षुदंड आप्यो; त्यारथी इन्द्रे रीषभदेवजीनो इक्ष्वाकु वंश स्थापन कर्यो, अने श्रीरीषभदेवजीना वंशवालाउये काशकार पीधो, तेथी गोत्रनु नाम काश्यप थयु श्रीरीषभदेवजीना जेजे वयमां जेजे कामो उचित हतां, तेते सर्व शक्र इन्द्रे कर्या. जेजे शक्रइन्द्रो थाय छे तेउनो अनादि कालथी आ जीतकल्प छे, के प्रथम भगवानना वयोचित सर्व काम करवां

ते अवसरे एक छोकरो अने एक छोकरी, वेहेनभाइ बाल्यावस्थामां ताडवृक्षनी नीचे रमता हता ते समये ताडनु फल पडवाथी छोकरो मरी गयो. नाभिकुलकरे ते समये विचार कर्यो के आ छोकरी रीषभदेवनी भार्या थशे एम निश्चय करी पोतानी पासे राखी. तेनु नाम सुनंदा हतु. वीजी जे रीषभदेवजीनी साथे जन्मी हती, तेनुं नाम सुमंगला हतुं ते वंनेनी साथे रीषभदेव बाल्यावस्थामा रमता हता, अनुक्रमे यौवन प्राप्त थये इन्द्रे विवाहनो प्रारंभ कर्यो. पूर्वे युगल समयमां विवाहविधि नहोतो, ते कारणथी आ विवाहमां पुरुषनां कृत्यो तो सर्व इन्द्रे कर्यां, अने स्त्रीना कृत्य सर्व इन्द्राणीउये कर्यां, त्यारथी विवाहविधि जगतमां प्रचलित थइ. श्रीरीषभदेवजीने वने भार्याउनी साथे सांसारिक विषयसु-

ख जोगवतां ज्यारे ७ लाख पूर्व व्यतीत थया, त्यारे सुमंगला राणीने जरत अने ब्राह्मी युगल जन्म्या, अने सुनंदाने बाहुबली अने सुंदरीयुगल जन्म्या पछी सुनंदाने तो बीजा पुत्र पुत्री जन्म्या नहि, परतु सुमंगलाने ठंगणपचास पुत्रोना जोडलां जन्म्या. सर्व मली सो पुत्र अने बे पुत्रीउं श्रीरीषजदेवजीना थया. तेउंना नाम लखीये ठीये.

१ जरत, २ बाहुबली, ३ श्रीमस्तक, ४ श्रीपुत्रांगारक, ५ श्रीमल्लिदेव, ६ अंगज्योति, ७ मलयदेव, ८ जार्गवतार्थ, ९ बगदेव, १० वसुदेव, ११ मगधनाथ, १२ मानवर्त्तिक, १३ मानयुक्ति, १४ वैदर्जदेव, १५ वनवासनाथ, १६ मह्दीपक, १७ धर्मराष्ट्र, १८ मायकदेव, १९ आस्मक, २० दंडक, २१ कलिंग, २२ ङपकदेव, २३ पुरुषदेव, २४ अकल, २५ जोगदेव, २६ वीर्यजोग, २७ गणनाथ, २८ तीर्णनाथ, २९ अबुदपति, ३० आयुवीर्य, ३१ नायक, ३२ काह्रिक, ३३ आनर्त्तक, ३४ सारिक, ३५ ग्रहपति ३६ करदेव ३७ कछनाथ, ३८ सुराष्ट्र, ३९ नर्मद, ४० सारस्वत, ४१ तापसदेव, ४२ कुरु, ४३ जंगल, ४४ पचाल, ४५ गूरसेन, ४६ पुट, ४७ कालंगदेव, ४८ काशीकुमार, ४९ कौशल्य, ५० जद्रकाश, ५१ विकाशक, ५२ त्रिगर्त्त, ५३ आवर्प, ५४ सालु, ५५ मत्स्यदेव, ५६ कुलियक, ५७ मुषकदेव, ५८ वाल्हीक, ५९ कांबोज, ६० मडुनाथ, ६१ सांद्रक, ६२ आत्रेय, ६३ यवन, ६४ आजीर, ६५ वानदेव, ६६ वानस, ६७ कैकये, ६८ सिंधु, ६९ सोवीर, ७० गधार, ७१ काष्ठदेव, ७२ तोषक, ७३ शौरक, ७४ जारद्वाज, ७५ शूरदेव, ७६ प्रस्थान, ७७ कर्णक, ७८ त्रिपुर नाथ, ७९ अवंतिनाथ, ८० चेदिपति, ८१ विष्कत्त, ८२ नैषध, ८३ दशार्णनाथ, ८४ कुसुमवर्ण, ८५ जूपालदेव, ८६ पाल प्रजु, ८७ कुगल, ८८ पद्म, ८९ महापद्म ९० विनिद्र, ९१ विकेश, ९२ वैदेह, ९३ कछपति, ९४ जद्रदेव, ९५ वज्रदेव, ९६ सांद्रजद्र, ९७ सेतज, ९८ वत्स ९९ अगदेव, १०० नरोत्तम श्रीरीषजदेवजीना सो पुत्रोनां नाम कह्यां

ते अवसरे जीवोना कषाय प्रबल थइ जवाथी पूर्वोक्त हकारादि त्रणे दंडनो जय मनुष्यो नही करवा लाग्या ते वखते श्रीरीषजदेवजीने ज्ञानादि गुणोमा सर्वथी अधिक लोकोये देखवाथी, ते युगल लोकोये तेमने विनति करी के हालमा सर्व लोक दंडनो जय करता नथी श्रीरीषजदे-

वजी गर्भमां पण मति, श्रुत, अवधि, ए त्रणज्ञान संयुक्त हता. श्रीरीषभदेवजीना पूर्व भवोनो वृत्तांत श्री आवश्यक सूत्र तथा प्रथमानुयोगथी जाणवो. श्रीरीषभदेवजीये युगलक पुरुषोने कह्युं के जे राजा थाय छे, ते दंड करे छे. राजा, मंत्री, कोटवालादि सेना संयुक्त होय छे, अने ते कृताभिषेक होय छे, अने तेनी आज्ञा अनतिक्रमणीय होय छे. एवा वचनो श्रीरीषभदेवजीना श्रवण करी मिथुनको वोल्याके एवो राजा अमारो पण भले थाउ! श्रीरीषभदेवजीये कह्युं के जो तमारी एम वांछा होय तो नाभिकुलकर पासे जइ ते प्रमाणे याचना करो. मिथुनकोये नाभिकुलकरने ते प्रमाणे विनंति करी. नाभिकुलकरे कह्युं के जाउ रीषभदेवजी तमारा राजा थया. पछी मिथुनको श्रीरीषभदेवजीनो राज्याभिषेक करवावास्ते पद्मिनी सरोवरमां गया ते अवसरे इंद्रनुं आसन कंपायमान थयु इंद्रे अवधिज्ञानथी राज्याभिषेकनो अवसर जाणी अहींआ आवी श्रीरीषभदेवजीनो राज्याभिषेक कर्यो. मुकुटआदि सर्व अलंकार जे राजाने योग्य हता ते पेहेराव्या ते समये मिथुनक लोको पद्मसरोवरमांथी नलिनी कमलोमां पाणी लाव्या तेउये आवीने प्रभुने अलंकृत दीठा, त्यारे सर्व जनोये रीषभदेवजीना चरण कमल उपर जल रेडी दीधुं. इंद्रे मनमां विचार कर्यो के मिथुनको अति विनीत छे, तेथी वैश्रमणने आज्ञा करी के आ विनीतोने रहेवावास्ते विनीता नामा नगरी वनावो? वैश्रमणे विनीता नगरी वनावी अने युगलीआ तेमां वस्या. तेनुं स्वरूप श्रीशत्रुंजयमहात्म्यथी जाणवुं

संग्रह वास्ते श्रीरीषभदेवजीना राज्यमां हाथी, घोडा, गाय, वलद प्रमुख वनमांथी पकडी लाववामां आव्या. श्रीरीषभदेवजीये चार प्रकारनो संग्रह कर्यो १ उग्रा, २ भोगा, ३ राजन्या, ४ क्षत्रीया. जेउने कोटवालनी पदवी आपी तेउ दंड करनार होवाथी उग्रवंशी कहेवाया जेउने गुरु अर्थात् वडील तरीके उचा मान्या तेउ भोगवंशी कहेवाया. जेउ श्रीरीषभवेवजीना मित्र थया तेउ राजन्यवंशी कहेवाया. वाकीनाउ क्षत्रियवंशी कहेवाया.

ज्यारे कल्पवृक्षोना फलोनो अभाव थयो त्यारे पक्काहार खावानो व्यवहार शीरीते शरु थयो तेनो विचार लखीये छीये. कालना प्रभावथी

कल्पवृक्ष फलो आपता वध थया, जेथी लोको बीजा वृक्षोना कंद, मृ
पत्र, फूल, फल खावा लाग्या केटलाएक इक्षुरस पीवा लाग्या, अने का
अनाज खावा लाग्या केटलाएक दिवसो गया बाद ज्यारे लोकोने क
अनाज पचवा न लाग्यु, त्यारे रीषभदेवजी पासे तेउ आव्या. रीषभदेवज
कह्युं के, तमे हाथवती अनाज मसली फोतरा काढी नाखी खाउ. केटला
दिवसो पछी ते पण न पचवा लाग्या, त्यारे बीजी रीते काचा अनाज
वानी विधि बतावी, ए प्रमाणे अनेक रीते काचा अनाज खावानी
बतावी तोपण काल दोषथी अनाज पाचन न थवा लाग्युं ते अवसर
जगलोमां वांस प्रमुखना घसावाथी अग्नि उत्पन्न थयो

प्रश्न.– तमे कहो छो के श्रीरीषभदेवजीने जातिस्मरण अने अव
ज्ञान हतुं, तो पछी रीषभदेवजीए प्रथमथीज अग्नि बनाववानी तेमज
अग्निथी अनाज राधीने खावानी विधि केम न बतावी ?

उत्तर.– हे भव्य ! एकात स्निग्ध कालमा तेमज एकांत रुक्षकाल
अग्नि कोइ पण वस्तुथी उत्पन्न थइ शकती नथी कदाचित् कोइ देव
महाविदेह क्षेत्रथी अग्निने अहींआ लइ पण आवे, तो पण ते अ
तत्काल उलवाइ जती हती तेज कारणथी अग्निथी पकावी खावा
उपदेश कर्यो नहोतो

हवे ज्यारे अग्निने तृणादि दाह करता देखी, अपूर्व रत्न जाणी
पकडवा लाग्या, त्यारे तेउना हाथ दाझवा लाग्या, तेथी भयभ्रान्त
दोडता आवी श्रीरीषभदेवजीने तेउए सर्व वृत्तात कह्यो रीषभ देवजीए
उने अग्नि लाववानी विधि बतावी ते विधि प्रमाणे अग्नि घरमा ला
तेउए रीषभदेवजीने विनति करी के हवे अमारे शु करवु ? रीषभदेवज
हस्ति उपर बेठा थका माटीनु एक कुडु बनाव्यु तेमा अनाज पाणी
खी अग्नि उपर पकावी, रांधी खावानी सर्व विधि बतावी जेना हाथ
प्रथम ते कुडुं पकडाव्यु, अने जेने ते बनाववानी विधि बतावी ते कुभ
नामथी प्रसिद्ध थया, ते कारणथी कुभार प्रजापति कहेवाय छे धी
धीमे सर्व प्रकारना अनाज अनेक रीतथी पकावी खावानी विधि प्र
थइ गइ सर्व विधि श्रीरीषभदेवजीएज बतावी छे

हवे शिल्पद्वार कहीये छीये श्रीरीषभदेवजीना उपदेशथी पांच

शिल्पी अर्थात् कारीगर बन्या तेना नाम १ कुंभकार २ लोहकार, ३ चित्रकार, ४ वस्त्र बनावनार, ५ नाइ. एकेक शिल्पना अवांतर भेद वीशवीश छे. सर्व मली एकसो शिल्प बनाव्या

हवे कर्मद्वार लखीये छीये. १ खेती करवानुं काम, २ वाणिज्य अर्थात् व्यापार करवानुं काम. इत्यादि. धन ममत्वना अनेक कामो बताव्यां. प्रथम माटीना संचयमां भरी एरण हथोडो तथा साणसी प्रमुख बनाव्या, पछी तेओथी सर्व वस्तुओ काम लायक बनाववामां आवी

भरतादि पुरुष वर्गना लोकोने बहोंतेर कला शिखवी स्त्री जातिनी चोसठ कला ब्राह्मी, सुदरी प्रमुखने शिखवी, तेना नाम १ लखवानी कला, २ वांचवानी कला, ३ गणितकला, ४ गीतकला, ५ नृत्यकला, ६ ताल वजाववानी कला, ७ पटह वजाववानी कला, ८ मृदंग वजाववानी कला, ९ वीणावगाडवानी कला, १० वंशपरिक्षा, ११ भेरीपरिक्षा, १२ १३ तुरंगपरिक्षा, १४ धातुर्वाद, १५ दृष्टिवाद, १६ मंत्रवाद, १७ वलि पलित विनाश, १८ रत्नपरिक्षा, १९ नारीपरिक्षा, २० नरपरिक्षा, २१ छंद बंधन, २२ तर्कजल्पन, २३ नीतिविचार, २४ तत्त्वविचार, २५ कविशक्ति, २६ ज्योतिष शास्त्रज्ञान, २७ वैद्यक ज्ञान, २८ षड्भाषा, २९ योगाभ्यास, ३० रसायणविधि, ३१ अंजनविधि, ३२ अढार प्रकारनी लीपी, ३३ स्वप्नलक्षण, ३४ इन्द्रजालदर्शन, ३५ खेतीकाम, ३६ व्यापारकाम, ३७ राज्यसेवा, ३८ शकुनविचार, ३९ वायुस्तंभन, ४० अग्निस्तंभन, ४१ मेघवृष्टि, ४२ विलेपनविधि, ४३ मर्द्दनविधि, ४४ उर्ध्वगमन, ४५ घटबंधन ४६ घट भ्रमण, ४७ पत्रछेदन, ४८ मर्मभेदन, ४९ फलाकर्षण, ५० जलाकर्षण, ५१ लोकाचार, ५२ लोकरंजन, ५३ अफल वृक्षोने फलवाला करवानुं काम, ५४ खड्गबधन, ५५ छरीबंधन, ५६ मुद्राविधि, ५७ लोहज्ञान, ५८ दंतसमारण, ५९ काललक्षण, ६० चित्रकरण, ६१ बाहुयुद्ध, ६२ मुष्टियुद्ध, ६३ दंडयुद्ध, ६४ दृष्टियुद्ध, ६५ वाग्युद्ध, ६६ खड्गयुद्ध, ६७ गारुड विद्या, ६८ सर्पदमन, ६९ भूतमर्द्दन, ७० योग ते द्रव्यानुयोग, अक्षरानुयोग, व्याकरण, औषधानुयोग, ७१ वर्षज्ञान, ७२ नाममाला आ पुरुषनी बहोतेर कलाना नाम कह्यां.

हवे स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम लखीये छीये. १ नृत्यकला, २ औचि-

त्यकला, ३ चित्रकला, ४ वाजीत्र ५ मंत्र ६ तंत्र, ७ ज्ञान, ८ विज्ञान, ९ दंज्ञ, १० जलस्थंज्ञ, ११ गीतगान, १२ तालमान, १३ मेघवृष्टि, १४ फलवृष्टि, १५ आरामारोपण, १६ आकारगोपन, १७ धर्मविचार, १८ शकुनविचार, १९ क्रियाकल्पन, २० संस्कृतजल्पन, २१ प्रसादनीति, २२ धर्मनीति, २३ वर्णिकावृद्धि, २४ स्वर्णसिद्धि, २५ तैलसुरभिकरण, २६ लीला संचारण, २७ गजतुरगपरिक्षा, २८ स्त्रीपुरुषना लक्षण, २९ कामक्रिया, ३० अष्टादश लिपिपरिछेद, ३१ तत्कालबुद्धि, ३२ वस्तुशुद्धि, ३३ वैद्यकक्रिया, ३४ सुवर्णरत्नभेद, ३५ घटभ्रम, ३६ सारपरिश्रम, ३७ अजनयोग, ३८ चूर्णयोग, ३९ हस्तलाघव, ४० वचनपाटव, ४१ भोज्य विधि, ४२ वाणिज्यविधि, ४३ काव्यशक्ति, ४४ व्याकरण, ४५ शालिखंडन ४६ मुखमडन, ४७ कथाकथन, ४८ कुसुमगुथन, ४९ वरवेष, ५० सकल भाषा विशेष, ५१, अभिधानपरिज्ञान, ५२ आभरणप्रवेश, ५३ भृत्योपचार, ५४ गृह्याचार ५५ शाठ्यकरण, ५६ परनिराकरण ५७ धान्यरंधन, ५८ केशबधन, ५९ वीणादिनाद, ६० वितडावाद, ६१ अकविचार ६२ लोकव्यवहार, ६३ अत्याक्षरिका, ६४ प्रश्नप्रहेलिका आ स्त्रीनी चोसठ कलाना नाम कह्यां.

वर्त्तमानमा सर्व सांसारिक कला पूर्वोक्त कलाउनी अतर्गत छे प्रथम लिपि कलाना अढार भेद दक्षिण हाथथी ब्राह्मी पुत्रीने शिखव्या तेना नाम. हंसलिपि, २ भूतलिपि, ३ पक्षलिपि, ४ राक्षसलिपि, ५ यावनीलिपि, ६ तुरकीलिपि, ७ कीरीलिपि, ८ द्राविडी लिपि, ९ सैंधवी लिपि, १० मालवी लिपि, ११ नडी लिपि, १२ नागरी लिपि, १३ लाटी लिपि, १४ फारसीलिपि, १५ अनिमित्ती लिपि, १६ चाणक्की लिपि, १७ मूलदेवी, १८ उड्डी लिपि- आ अढार प्रकारनी ब्राह्मी लिपि, देश विशेषना भेदथी अनेक तरेहनी थयेली छे जेम के १ लाटी, २ चोडी, ३ डाहली, ४ कानडी, ५ गौर्जरी, ६ सोरठी, ७ मराठी, ८ कोंकणी, ९ खुरासाणी, १० मागधी, ११ सिंहली, १२ हाडी, १३ कीरी, १४ हम्मीरी, १५ परतीरी, १६ मसी, १७ मालवी, १८ महायोधी इत्यादि सुदरी पुत्रीने डावा हाथथी अकविद्या शिखवी, जे जगतमां गणितविद्या प्रचलित छे, जेनाथी अनेक कार्यो सिद्ध थाय छे, केटलीएक कला, लिपि तथा विद्या केटलीएकवार लुप्त थइ

जाय छे, अने फरी सामग्री पामी प्रगट पण थाय छे परंतु नवीन कला, लिपि, वा विद्या उत्पन्न थती नथी. सर्व जे रीषजदेवजीए बतावेल छे, तेज चाले छे, तेनुं स्वरूप आवश्यक सुत्रथी जाणवु.

ब्राह्मीनुं लग्न बाहुबलीनी साथे कर्युं, अने सुंदरीनो विवाह जरतनी साथे कर्यो ते वखतथी माता पितानो कन्या आपवानो व्यवहार प्रचलित थयो.

श्री रीषजदेवजीए एक उदरथी उत्पन्न थयेला बेहेनजाइनो विवाहनो संबंध दूर कर्यो ते देखीने बीजाउ पण तेमज करवा लाग्या, श्री रीषजदेवजीए बहु वखत सुधी राज्य कर्युं, अने प्रजाने वास्ते अनेक तरेहथी सुखनां साधनो उत्पन्न करी आप्यां, अनेक तरेहनी विद्या, कला, कौशल्यता प्रजाने बतावी, जे कारणथी श्रीरीषजदेवजीने जैनीउ जगत्ना कर्त्ता माने छे बीजा मतवालाउ जे इश्वरनी करेली सृष्टि कहे छे, ते पण इश्वर, आदीश्वर, जगदीश्वर, योगीश्वर, जगत्ना कर्त्ता ब्रह्माआदि, विष्णुआदि, योगीआदि, जगवानआदि, अर्हतआदि, तीर्थंकर, प्रथम वुद्ध, सर्वथी मोटा, इत्यादि नाम तथा महिमा जे गाय छे, ते सर्व श्री रीषजदेवजीनोज गुणानुवाद छे बीजो कोइ सृष्टिनो कर्त्ता नथी.

अज्ञानी अने मूर्ख लोकोए स्वकपोलकल्पित शास्त्रोमां इश्वर विषयमां मनमानी कल्पना करेली छे ते कल्पना बहु जीवो आज पर्यंत साची मानी सर्व कार्यो कर्या जाय छे जैनमत विना सर्वमत प्रायः ब्राह्मणोएज चलाव्या छे ते कारणथी ब्राह्मणोज मतोना विश्वकर्मा छे लौकिक शास्त्रोमां जे कांइ निरुपण करेल छे ते सर्व ब्राह्मणो वास्तेज छे. कारण के शास्त्रो बनावनाराउना संतान प्रमुख शास्त्रना आधारथी खुब खाय छे, पीए छे तथा आनंद करे छे. ब्राह्मणो तथा वेदोनी उत्पत्ति आवश्यक आदि शास्त्रोमां जे प्रमाणे बतावी छे, ते प्रमाणे जव्यजीवोने जाणवा वास्ते हुं पण आ स्थले लखुं छुं

निदान सर्व जगतनो व्यवहार चलावी, जरत पुत्रने विनीता नगरीनुं राज्य आप्यु. बाहुबली पुत्रने तक्षिलानु राज्य आप्यु. बाकीना पुत्रोने बीजा देशोनुं राज्य वेहेंची आप्युं. ते पुत्रोना नामथी ते ते देशो-

ना नाम पण पाडवामां आव्यां जेम के अंगदेश, वंगदेश, मगधदेश इत्यादि देशोना नामो पण पुत्रोना नामथी पड्यां

बाद श्री रीषजदेवजीए स्वयमेव दीक्षा लीधी, तेमनी साथे कछ महाकछ सामंतादि चार हजार पुरुषोए दीक्षा लीधी.

श्रीरीषजदेवजीने एक वर्ष सुधी जिक्षा न मली, तेटला वखतमा चार हजार पुरुषो तो ज्रूखे मरवाथी जटाधारी बनी कंद, मूल, फल, फूल पत्रादि आहार करता गंगा नदीना बने किनारा उपर तापसो बनी रेहेवा लाग्या, अने श्री रीषजदेवजीनु ध्यान तथा जाप ब्रह्माआदि शब्दोथी करवा लाग्या

श्री रीषजदेवजी एक वर्ष वित्या बाद वैशाख सुद ३ ना रोज हस्तिनापुरमां आव्या, त्या श्री रीषजदेवजीना पौत्र श्रेयांस कुमारे जातिस्मरण ज्ञानना वलथी जिक्षा वास्ते विहार करता एवा जगवानने इक्षुरसथी पारणुं कराव्यु ते वखतमा लोकोए जिक्षाचरोने देख्या न होता, अने जिक्षा आपवानी विधि पण तेउं जाणता न होता, ते कारणथी श्री रीषजदेवजीने लोको हाथी, घोडा, आजूषण, कन्या आदिनी जेटतो वहु करता हता, परतु श्री रीषजदेवजी तो त्यागी होवाथी तेउंनी जेट लेता न होता पठी लोकोए श्रेयास कुमारने जिक्षा आपता देखी पुछ्यु के तमे रीषजदेवजीने जिक्षार्थी केवी रीते जाण्या? त्यारे श्रेयास कुमारे लोकोने पोतानो तथा श्री रीषजदेवजीनो पूर्वना आठ जवोनो संबंध कह्यो ते सर्व अधिकार आवश्यक शास्त्रथी जाणवो पठी सर्व लोक जिक्षा देवानी रीति जाणी गया

श्री रीषजदेवजी एक हजार वर्ष सुधी देशोमा छद्मस्थपणे विचरता हवा ते अवस्थामा कछ अने महाकछना पुत्र नमि तथा विनमिए प्रजुनी बहुज सेवा जक्ति करी तेउंने धरणेंद्रे प्रज्ञप्ति आदि अडतालीश हजार (४८०००) विद्या आपी वैताढ्य गिरिनी दक्षिण तथा उत्तर बाजु रूप एकेक श्रेणिनु दरेकने राज्य आप्यु तेउं सर्वे विद्याधर कहेवाया आ विद्याधरोना वंशमा रावण, कुंजकरणादि तथा वाली सुग्रीवादि अने पवन हनुमानादि सर्वे विद्याधर थया छे.

एकदा छद्मस्थ अवस्थामा श्री रीषजदेवजी विहार करता करता वा-

हुवलीनी तक्षिला नगरीमां गया. वहार वगीचामां कायोत्सर्गमां स्थित रह्या ज्यारे वाहुवलीने जगवान पधारवाना समाचार मल्या, त्यारे तेणे विचार कर्यो के आवती काले वडा आंडंवरथी पिताजीने वंदना करवा जइश. प्रजात समये ज्यारे मोटा आडंवरथी पिताजीने वंदना करवा गया, त्यारे जगवान तो त्यांथी विहार करी गया, एम जाणवामां आवतां वाहुवली वहुज उदास थइ गया पठी श्रीरीषजदेवजीना चरणोना स्थल उपर धर्मचक्रनी स्थापना करी आ धर्मचक्र तीर्थ विक्रम राजाना वखत सुधी रह्युं, पठी ज्यारे पश्चिम दिशामां नवा मतमतांतरो उत्पन्न थया, त्यारे ते तीर्थ नष्ट थयुं

अनुक्रमे श्रीरीषजदेवजी जगवान वाल्हीक, जोनक, अडंव, इल्लाक, सुवर्णजूमि, पल्लवकादि देशोमां विहार करवा लाग्या जेजे देशवालाउये श्रीरीषजदेवजीनां दर्शन कर्यां, तेउ सर्वे जडक स्वजाववाला थया, अने वाकीनाउ सर्वे म्लेछ, निर्दयी, अनार्य थइ गया, अनेक कल्पनिक मतो मानवा लाग्या, अने तेउना व्यवहार पण विपरीत तरेहना थया.

श्रीरीषजदेवजी एक हजार वर्ष व्यतीत थया वाद विहार करता करता विनीता नगरीना पुरिमताल नामना वागमां गया वगीचामां वडवृक्ष नीचे फागण वदी एकादशीने दिवसे, त्रण दिवसना उपवास ठतां प्रथम पहोरमां केवलज्ञान तथा केवलदर्शन अर्थात् सचराचर जगतमां जूत, जविष्य वर्तमानना सर्व जीवाजीव वस्तुमात्रनुं उत्पत्ति स्थिति अने लयनुं जाणवु तथा देखवुं थयुं ते समये चोसठ इंड्रो त्यां आव्या, समवसरणनी देवोये रचना करी, तेमां त्रण गढ अने वार दरवाजा वनाव्या, मध्य जागमां मणिपीठिका वनावी, तेना मध्य जागमां अशोक वृक्षनी रचना करी, तेनी नीचे दरवाजानी सन्मुख चारे दिशामां चार सिंहासनोनी रचना करी तेमां पूर्वना सिंहासन उपर श्रीरीषजदेव जगवान विराजमान थया, अने वाकीना त्रण सिंहासनो उपर जगवान सदृश त्रण विंवोनी स्थापना करी, जे विंवोने देखवाथी, ते ते दरवाजेथी आवनारा सर्वे श्रीरीषजदेव जगवाननेज ते ते वाजुये देखता हता तेज कारणथी जगतमां चारमुखवाला श्रीरीषजदेव जगवानज व्रह्मानाा नामथी प्रसिद्ध थया ठे. धनंजय कोशमां श्रीरीषजदेवजीनु नाम व्रह्मा लखेल ठे.

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थयु, त्यारे जरत
जा, ते वात श्रवण करी सकल परिवार सयुक्त समवसरणमा वंदना
रवाने तेमज उपदेश श्रवण करवाने आव्या

श्रीरीषजदेव जगवाननो उपदेश श्रवण करी जरत राजाना पांच
पुत्र तथा सातसो पौत्र, अने ब्राह्मी तथा बीजी अनेक स्त्रीउए दीक्षा ली
मरुदेवीजी तो जगवानना प्रातिहार्यादि देखी तथा वाणी सांजली केव
ज्ञान पामी मोक्ष पाम्या हता जरतना मोटा पुत्र रीषजसेन (पुडरीः
हता, ते सोरठ देशमा शत्रुजय तीर्थ उपर अनशन करी मोक्ष पाम
ते कारणथी शत्रुजयनु नाम पुडरीक राखवामां आव्युं

जरतना जे पांचसो पुत्रोये दीक्षा लीधी हती, तेउमां एकनु नाम
रीचि हतु मरीचिने जैनदीक्षानु पालवु अति कठिन लागवाथी पोत
आजीविका चलाववा वास्ते स्वमतिकल्पनाये तेमणे नवो उपाय उत
कर्यो फरी गृहस्थावास अगीकार करवानुं काम तेने हीनतावालु लाग्यु,ते
एक कुलिग आरोपण कर्यु एवा विचारथी के साधु तो मनदंड, वचन
अने कायदंडथी रहित छे, अने हु तो ए त्रणे दड सयुक्त छुं, ते कारण
मारे त्रिदड राखवो जोइये साधुउ तो द्रव्य अने जावथी मुडित छे, ते
लोच करे छे, अने हु तो द्रव्यमुडित छु, तेथी मारे अस्त्राथी मस्तक मुं
ववु जोइयें, अने शिखा पण राखवी जोइये, वली साधु तो पांच महाः
पाले छे, परतु मारे तो मात्र स्थूल जीवनी हिंसानो त्याग छे साधु
नि कचनवाला छे, अर्थात् परिग्रह रहित छे, अने मारे तो पवित्रका
राखवी जोइये साधु तो शीलथी सुगधित छे, अने हु तेवो नथी, तेथी म
चदन प्रमुखनी सुगध लेवी ठीक छे साधु तो मोह रहित छे, अने हुं
मोह सयुक्त छुं, तेथी मोहाछादितने छत्री राखवी जोइये साधु तो
पानह रहित छे, मारे तो उपानह पेहेरवा जोइयें साधु तो निर्मल
तेथी शुक्लांवरधारी छे, अने हु तो क्रोध, मान, माया, लोज आ च
कपायो सयुक्त छु, तेथी मलीन होवाथी, कपायवस्त्र अर्थात् गेरु र
वाला वस्त्रो मारे राखवा जोइये साधु तो सचित्त जलना त्यागी छे,अ
हु तो गलीने सचित्त जल पीश, अने स्नान पण करीश एवीज रीं
स्थूल मृषावाद आदिथी पण ते निवृत्त थयो आ प्रमाणे मरीचिये पोत

नी आजीविकावास्ते स्वमतिपूर्वक लिंग बनाव्युं, अने तेज लिंग परिव्राजकोनु रह्युं.

मरीचि भगवाननी साथेज विहार करतो हतो, तेनुं साधुउथी विपरीत लिग देखी लोको पुछवा लाग्या, परंतु मरीचि साधुनो यथार्थ धर्म कहेतो हतो, अने पोतानो पांखंड वेष पूर्वोक्त रीतिये प्रगट करतो हतो तेनीपासे उपदेश श्रवण करी जेउ दीक्षा लेवा चाहता हता, तेउने भगवानना साधु पासे दीक्षा लेवा मोकलतो हतो एकदा मरीचि रोगग्रस्त थयो, अने विचार करतां पोते असंयति छे एवु लागवाथी, तेमज साधुउ मारी वैयावच्च करशे नहीं, अने मारे तेउनी पासे वैयावच्च करावबी ते पण ठीक नही एवु धारी, मारे एक चेलो वैयावच्चवास्ते करवो जोइये, एवो निश्चय कर्यो. आ वखते श्रीरीषभदेव भगवान्‌ निर्वाण पाम्या हता. ते समये एक कपिल नामनो राजानो पुत्र हतो, ते मरीचि पासे धर्म श्रवण करवा आव्यो मरीचिये तेने यथार्थ साधुनो धर्म बताव्यो लिग, आचार सर्व बताव्या. कपिले पुछ्युं के तमारुं लिग विलक्षण केम छे? मरीचिये कह्युं हुं साधुधर्म पालवा असमर्थ छु, तेज कारणथी आ लिग, निर्वाहवास्ते स्वकपोलकल्पित बनावेल छे कपिले कह्यु के मने पण श्रीरीषभदेव भगवाननो धर्म रुचतो नथी तमे कहो? तमारी पासे धर्म छे के नहीं? मरीचिये जाण्युं के आ भारेकर्मी जीव छे, अने मारोज शिष्य थवा योग्य छे, ते लोभथी मरीचिये कही दीधु के त्यां पण धर्म छे, अने मारी पासे पण कांइक धर्म छे. ते सांभली कपिल मरीचिनो शिष्य थयो. आ कपिल मुनिनी उत्पत्ति छे ते वखते मरीचि तेमज कपिलनी पासे कोइ पण पुस्तक नहोतुं निःकेवल जे कांइ आचार मरीचिये कपिलने बताव्यो, तेज आचार कपिल करतो रह्यो मरीचिये उत्सूत्र भाषण करवाथी एक कोटाकोटी सागरोपम सुधी ससारमां जन्ममरणनी वृद्धि करी. मरीचि काल करी गयो बाद कपिल ग्रंथार्थज्ञानशुन्य, मरीचिनी बतावेली रीति उपरज आचार पालतो हतो कपिलने आसुरी नामनो शिष्य थयो कपिले आसुरीने पोतानोज सर्व आचार बताव्यो. कपिले बीजा पण अनेक शिष्यो बनाव्या, तेउना प्रेमभां रक्त थयो थको, मरीने ब्रह्मनामा पांचमा देवलोकमां देवता थयो. उत्पत्ति अनंतर अवधिज्ञानथी जोयु के

दानादि शुं शु अनुष्ठान में कर्या छे ? जेथी हुं देवता थयो, ज्ञानथी जोतां पोताना शिष्य आसुरीने यथार्थज्ञानशुन्य दीठो विचार कर्यो के मारो शिष्य कइ पण जाणतो नथी, तेने काइक तत्त्वनो उपदेश करुं तो ठीक एवो विचार करी कपिल देवता आकाशमा पचवर्णना मंडलमां रही, पोताना शिष्यने तत्त्वज्ञाननो उपदेश करवा लाग्या यथा– अव्यक्तथी-व्यक्त प्रगट थाय छे, ते अवसरे षष्टितंत्रशास्त्र आसुरीए रच्यु तेमां एवु कथन कर्युं के प्रकृतिमांथी महान् थाय छे, अने महान्थी अहंकार थाय छे, अहंकारथी गण षोडश थाय छे, गणषोडशथी, पचतन्मात्रा थाय छे, अने पचतन्मात्राथी पच महाभूत थाय छे, इत्यादि स्वरूप आ ग्रंथमां पूर्वे सांख्यमा लखी आव्या छीये तेउंना संप्रदायमां नामीसख नामा आचार्य थया, त्यारथी ते मतनु नाम सांख्यमत प्रसिद्ध थयु वास्तविक रीते सर्व परिव्राजक सन्यासीउंना लिंग आचारादि धर्मनु मूल मरीचि थयो. ते साख्यमतना तत्त्वो हाल पण भगवद्गीता तथा भागवतादि ग्रंथोमां अने सांख्यमतना शास्त्रोमां प्रचलित छे एक जैनमतविना बीजा सर्व मतोनु मूल आ मतथीज समजवुं जोइए

ज्यारे श्रीरीषभदेवजीने केवलज्ञान उत्पन्न थयु. त्यारे भरतने पण तेज रोज आयुधशालामा चक्ररत्न उत्पन्न थयु जेथी भरते भरत क्षेत्रना छए खंडोमां पोतानु राज्य स्थापी आज्ञा मनावी, तेज कारणथी तेनु नाम भरतखंड प्रसिद्ध थयु

ज्यारे भरते पोताना नाना भाइउने आज्ञा मनाववा वास्ते दूत मोकल्या, त्यारे तेउंए विचार कर्यो के राज्य तो अमने पिताश्री आपी गया छे तो पछी भरतनी आज्ञा अमारे शा वास्ते मानवी जोइये ! चालो पिताश्री पासे जइ सर्व वृत्तांत कहीयें जो पिताजी कहेके तमे भरतनी आज्ञा मानो तो पछी अमे भरतनी आज्ञा मानीशुं, अने पिताजी कहेके तमे भरतनी साथे लडो, तो पछी अमे भरतनीसाथे लडशुं, एवो विचार करी अठाणु भाइउ केलास पर्वत उपर श्रीरीषभदेव भगवान पासे गया. भगवान तेउंना अत करणना अभिप्राय जाणी तेउंने उपदेश करता हवा श्री भगवाने जे उपदेश कर्यो ते श्रीसूत्रकृतांग सूत्रना बीजा वैतालीय अध्ययनमां लखेल छे ते उपदेश श्रवण करी भगवानना अ-

छाणु पुत्रोए दीक्षा लइ लीधी. सर्वे तकरार तजी दीधी. तेम वनवाथी जरतनी अपकीर्त्ति थइ, तेथी जरत चक्रवर्त्ती पांचसो गाडां पकानना लावी समवसरणमां आव्या, अने कहेवा लाग्या के हु मारा जाइउने जो-जन करावीश, अने मारो अपराध क्षमा करावीश श्री रीषजदेव ज-गवाने कह्युं के, एवो आहार साधुने कल्पे नही. ते सांजली जरत म-नमां बहुज उदास थया तेमणे पठी पुछ्युं के जगवन् आ आहार कोने खवरावु ? त्यारे इन्द्रे कह्युं के तमाराथी जेउ गुणोमा अधिक होय तेउने आ जोजन आपो जरते विचार कर्यो के माराथी गुणाधिक तो श्रावक ठे, तेथी तेउने जोजन करावु,एवो निश्चय करी सर्वे गुणवान श्रावकोने जोजन कराव्युं वली ते श्रावकोने जरतजीए कह्युं के तमे सर्वे प्रतिदिन मारुं जोजन कर्या करो ? तमारे खेती वाणिज्यादि कांइ पण काम करवु नहि. निःकेवल स्वाध्याय करवामां तत्पर रहो.जोजन करी मारा मेहेलोना दरवाजा पासे वेसी आप्रमाणे कहो "जीतो जवान् वर्द्धते जय तस्मान्माहन माहनेति" ते श्रावको पण तेमज करता हवा जरत राजा तो जोगविलासमां मग्न रहेता हता, परंतु ज्यारे श्रावकोना शब्दो सांजलवामां आवता हता त्यारे मनमां विचारता हता के हुं कोनाथी जीतायो छु ? विचार करतां निश्चय थयो के क्रोध, मान, माया अने लोज, आ चारे कषायोए मने जीतेल ठे अने तेनाथीज जयनी वृद्धि ठे, एवा निश्चयात्मक विचारथी जरतजीने जारे वैराग्य उत्पन्न थतो हतो अनुक्रमे रसोइ जमनारा श्रा-वको बहु वधी गया, तेथी रसोइ करनाराउए आवीने जरत महाराजने विनंति करी के आ समुदायमां श्रावक कोण ठे, अने कोण नथी ? ते अमे जाणी शकता नथी जरतजीए तेउने कह्यु के तमे पुठीने तेउने जोजन करावो रसोइआउए जमनाराउने पुठतां, जेउ श्रावकना पांच अणुव्रत त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत धारण करनारा हता, तेउने श्रावक मानी जरत महाराज पासे तेउने लाववामां आवता हता जरत महाराज तेउना शरीर उपर कांकणी रत्नथी त्रण त्रण रेखाना चिन्ह क-रता, अने दर ठ महीने तेउनी परीक्षा करवामां आवती हती ते सर्वे श्रावक ब्राह्मणना नामथी प्रसिद्ध थया, कारणके ज्यारे जरत महाराजना दरवाजा पासे तेउ माहन माहन शब्द वारंवार उच्चार करता हता,

त्यारे लोको तेउने माहन माहन कहेवा लाग्या जैनमतना शास्त्रोमां प्राकृत नाषामां हाल पण ब्राह्मणोने माहन शब्दथी लखेल ठे, संस्कृत ब्राह्मण शब्द ठे, ते प्राकृत व्याकरणमा वत्तण तेमज माहणना स्वरूपथी सिद्ध थाय ठे, श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां ब्राह्मणोना नाम " वुड्ढ सावया ' अर्थात् वडा श्रावक लखेल ठे ए प्रमाणे ब्राह्मणोनी उत्पत्ति ठे, ते ब्राह्मणो पोताना पुत्रोने साधुउने आपता हता, अने जेउ दीक्षा लेता न हता, तेउ व्रतधारी श्रावक थता हता, आ रीति नरतना राज्यमा हती.

नरत महाराजना पुत्र आदित्ययशा थया, अर्थात् सूर्ययशा थया, जेना वंशजो नरतक्षेत्रमा सूर्यवंशी कहेवाय ठे वाहुवलीना मोटा पुत्र चंद्रयश थया, तेना वंशजो चद्रवंशी कहेवाय ठे. श्रीरीपनदेवजीना कुरुवंशी कहेवाय ठे, जेउमा कौरव पांडव थयेला ठे

ज्यारे सूर्ययशा सिंहासन उपर वेठा, त्यारे तेनी पासे काकणी रत्न नहोतु. काकणीरत्न चक्रवर्ती शिवाय वीजा कोइ पासे होतुं नथी. ते कारणथी सूर्ययशा राजाये ब्राह्मण श्रावकोना गलामां सुवर्णमय यज्ञोपवीत दाखल करावी, जे नाषामा जनोइ कहेवाय ठे नोजन प्रमुख सर्वे, नरत महाराजनी जेम तेउने आपता रह्या सूर्ययशना पुत्र महायश गादी उपर वेठा, तेणे रूपानी यज्ञोपवीत वनावी आपी वाद तेउना वंशजो रेशमी यज्ञोपवीत आपता हवा. ठेवटे सादा सूतरनी वनाववामां आवी आ प्रमाणे यज्ञोपवीतनी उत्पत्ति ठे

नरतमहाराजनी आठ पाट सुधी तो ब्राह्मणोनी नक्ति नरतजीनी पेठेज थती रही वाद प्रजा पण ब्राह्मणोने नोजन करावता लागी सर्वे स्थले ब्राह्मणो पूजनीक गणावा लाग्या ए प्रमाणे आठमा तीर्थंकर श्री चद्रप्रन स्वामिना वखत सुधी सर्वे ब्राह्मणो व्रतधारी जैनधर्मी श्रावको रह्या श्रीचद्रप्रन नगवाननी पठी केटलोएक काल व्यतीत थया वाद आ नरतखडमां जैनमत अर्थात् चतुर्विध सघ तथा सर्वे शास्त्रो विछेद थइ गया, ते वखते ते ब्राह्मणानासोने लोको पुठवा लाग्या के अमने धर्मनु स्वरूप वतावो ते वखते ब्राह्मणोये स्वमतिकल्पनाथी जेमा पोतानो लान दीठो तेवो धर्म वताव्यो अनेक ग्रथो पण ते प्रमाणे वनाववामां आव्या

ज्यारे नवमा श्रीसुविधिनाथ (पुष्पदत) अरिहंत थया, त्यारे फरी

जैनधर्म प्रगट थयो ते जगवाननो धर्म केटलाएक ब्राह्मणाजासोये न अंगीकार कर्यो स्वकपोलकल्पित मतनोज कदाग्रह राख्यो. साधुउंनो द्वेष करवा लाग्या चारे वेदोनां नामो बदलावी नाख्यां, अने ते वेदोमां मतलब पण कांइनी कांइ लखी दीधी

हवे चारे वेदोनी उत्पत्ति लखीये ठीये ज्यारे जरत राजाये ब्राह्मणोनी पूजा करी, त्यारे बीजा लोको पण ब्राह्मणोने अनेक तरेहनां दान आपवा लाग्या ते प्रसंगे श्रीजरतचक्रवर्तीये श्रीरीषजदेव जगवानना उपदेश अनुसार ब्राह्मणोने निरंतर स्वाध्याय करवावास्ते श्रीआदीश्वर (रीषजदेव) जगवाननी स्तुति तथा श्रावकधर्मस्वरूपगर्जित चार आर्यवेदनी रचना करी तेना नाम १ संसार दर्शनवेद २ संस्थापन परामर्शनवेद, ३ तत्त्वावबोध वेद, ४ विद्याप्रबोध वेद चारे वेदोमां सर्वनयसंयुक्त वस्तु स्वरूप कथन ते ब्राह्मणोने शिखववामां आव्युं पुर्वोक्त चार वेद तथा ब्राह्मणो आठमा तीर्थंकर सुधी यथार्थ प्रवर्तता रह्या आठमा तीर्थंकरनु तीर्थ व्यवछेद यता ब्राह्मणोये ज्रष्ट थइ धनना लोजथी ते वेदोमां जीवहिंसा दाखल करी. चारे वेद उलट पालट करी नांख्या जैनधर्मनुं नाम चारे वेदमाथी काढी नाख्यु, एटलुंज नहीं पण अन्योक्तिथी "दैत्य दस्यु वेदबाह्य" इत्यादि नामोथी साधुउंनी निंदागर्जित १ रुग्, २ यजुर, ३ साम, ४ अथर्व, आ चार नामना वेद कल्पवामां आव्या जे ब्राह्मणोये तीर्थंकरोनो उपदेश अंगीकार कर्यो, तेउंये पूर्व वेदोना मंत्रोनो त्याग कर्यो नहीं ते मंत्रो आजसुधी दक्षिणमां कर्णाटकदेशमां जैन ब्राह्मणोने कठस्थ ठे. ते प्रमाणे अमे देख्युं ठे तथा सांजल्युं ठे अमारी पासे पण प्राचीन वेदोना केटलाएक मंत्रोठे यतः ॥ सिरि जरह चक्कवट्टी, आयरिय वेयाणविस्सुउप्पत्ती ॥ माहणपढणत्थमिण, कहियं सुहझाण विवहार ॥ १ ॥ जीणतिठे वुछिन्ने, मिछत्ते माहणेहितेठविया ॥ अस्संज्याण पूआ, अप्पाण काहिया तेहिं ॥ २ ॥ इत्यादि हवे वेदोनीरचना हिंसा संयुक्त, याज्ञवल्क्य, सुलसा, पिप्पलाद अनेपर्वत प्रमुखोये केवी रीते रची तेनु पण कांइक स्वरूप लखीये ठीये

वृहदारण्यक उपनिषद्नी जाष्यमा लख्यु ठे के, यज्ञोनुं कथन करनार यज्ञवल्क्य तेना पुत्र याज्ञवल्क्य ठे ते कहेवाथी एम प्रतीत थाय ठे के

यज्ञोनी रीति प्राय याज्ञवल्क्यथीज चाली छे ब्राह्मण लोकोये शास्त्रोमां लख्यु छे के याज्ञवल्क्ये पूर्वेली ब्रह्मविद्या वमीने नवीन ब्रह्मविद्या सूर्यनी पासे शिखी, प्रचलित करी, तेथीं पण एज अनुमान थाय छे के, याज्ञवल्क्येज प्राचीन वेद तजी दीधा अने नवा वेद बनाव्या

श्री त्रेशठ शिलाका पुरुष चरित्र ग्रंथना आठमा पर्वना बीजा सर्गमां लख्यु छे के काशपुरीमां बे संन्यासणीउं रहेती हती एकनु नाम सुलसा अने बीजीनु नाम सुभद्रा हतु बने वेद, वेदांगोनी जाणकार हती. बने बेहेनोए बहु वादीउंने वादमां जीत्या हता ते अवसरे याज्ञवल्क्य परिव्राजक तेउंनी साथे वाद करवाने आव्या अरस परस एवी प्रतिज्ञा करी के, जे हारी जाय ते जीतनारनी सेवा करे याज्ञवल्क्ये सुलसाने वादमां जीती अने पोतानी सेवा करनारी बनावी सुलसा पण रातदिवस याज्ञवल्क्यनी सेवा करवा लागी, याज्ञवल्क्य अने सुलसा बंने यौवनवंत हता तेथी कामातुर थइ जवाथी बंने भोगविलासमां लागी गया निदान अग्नि अने घी साथे होय तो घी उगल्या विना रहेतु नथी कामक्रीडामां मग्न थइ जवाथी काशपुरीनी पासेनी एक कुटीमां बंने वास करता हता याज्ञवल्क्यथी सुलसाने पुत्र थयो लोकोना उपहासना भयथी ते पुत्रने पिपलाना वृक्षनीचे मुकी बने जणाउं दूर नासी गया आ वृत्तांत सुलसानी बहेन सुभद्रना जाणवामां आव्यु सुभद्रा बालकनीपासे आवी बालकने देखतां ते स्वयमेव पीपलानु फल मुखमां पडेलु चवोलतु हतुं. सुभद्राये बालकने लइ पोताना स्थानमां आण्यु तेनु नाम पिप्पलाद राख्यु यत्नाथी पालण कर्युं, वेदादि शास्त्रो भणाव्या, पिप्पलाद बहु बुद्धिमान थयो बहु वादीउंने जीती तेउंनां अभिमाननो तेणे नाश कर्यो. पिप्पलादनी साथे अनुक्रमे याज्ञवल्क्य तथा सुलसा पण वाद करवा आव्या, पिप्पलादे बनेने वादमा जीत्या बाद सभुद्रा मासीना कहेवाथी तेना जाणवामा आव्यु के, ते बने तेना माता पिता छे मने जन्म आपी निर्दयताथी वृक्षनीचे मुकी बने नासी गया हता, ए वृत्तात पण तेना जाणवामा आव्यो अत्यंत क्रोधयुक्त थइ पिप्पलादे सम्यक् रीतिए याज्ञवल्क्य तथा सुलसा सन्मुख मातृमेध तथा पितृमेध यज्ञोने सिद्ध करी, पितृमेध यज्ञमां याज्ञवल्क्यनो अने मातृमेध यज्ञमा सुलसानो होम कर्यो.

पिप्पलाद मीमांसक मतनो मुख्य आचार्य थयो. तेनो वातली नामा शिष्य थयो, त्यारथी जीवहिंसा संयुक्त यज्ञ प्रचलित थया.

याज्ञवल्क्ये नवा वेदो बनाव्या छे, तेमां कांइ पण शंका नथी, कारण के वेदमां लख्युं छे के " याज्ञल्क्येती होवाच " अर्थात् याज्ञवल्क्य आ प्रमाणे कहेता हवा. वेदमां जे शाखाउ छे ते वेद कर्त्ता ऋपियोना अधिकारनी छे; तेथी आवश्यक सूत्रमां जे लख्युं छे के जीवहिंसा संयुक्त जे वेद छे, ते याज्ञवल्क्य अने सुलसा आदिये बनाव्या छे, ते वात सत्य छे, कारण के केटलीएक उपनिषदोमां पिप्पलादनुं नाम छे, अने केटलाएक स्थले बीजा ऋपियोनां पण नामो छे. जमदग्नि कश्यप तो वेदोमां खास नामथी लखेल छे. हवे विचारो के वेदो नवा बनाववामां आव्या तेमा शुं शका रहे छे ?

वली लंकानो अधिपति राजा रावण, ज्यारे दिग्विजय करवा वास्ते देशोमां चतुरंगी सेना साथे बीजा राजाउने पोतानी आज्ञा मनाववा फरतो हतो, ते अवसरे नारदमुनि लाकडी प्रमुखना मारथी कुटाया होवाथी पोकार करता रावणनी पासे आव्या रावणे नारदजीने पुछ्यु के तमने कोणे मार मार्यो, त्यारे नारदजीये कह्युं के, राजपुर नगरमां मरुत नामनो राजा छे, ते मिथ्यादृष्टि छे, अने ब्राह्मणाजासोना उपदेशथी यज्ञ करवा लाग्यो, ते समये शिकारीउनी जेम होमने वास्ते ते ब्राह्मणाजासोने, अरराट शब्दो करता पशुउने यज्ञोमां होमवावास्ते मारतां में दीठा आकाशथी उतरी मरुत राजा ब्राह्मणोनी साथे बेठो हतो, त्यां आवी, मरुतराजाने में कह्युं के आ तमे सर्वे शु काम करवा लागी रह्या छो? मरुतराजाए कह्युं के ब्राह्मणोना उपदेशथी देवताउनी तृप्तिवास्ते तेमज स्वर्ग प्राप्तिवास्ते पशुउना बलिदानथी आ यज्ञ करवो शरु कर्यो छे, आ प्रमाणे यज्ञ करवो ते महा धर्म छे पछी में कह्युं के हे राजा ! चारे वेदोमां जे प्रमाणे यज्ञ करवानु कथन करेल छे, ते यज्ञ करवानी विधि तमने कहुं हुं ते सांजलो ? आत्मा यज्ञनो यष्टा अर्थात् करनार छे, तप रूप अग्नि छे, ज्ञानरूप घी छे, कर्मरूप इंधन छे, क्रोध, मान, माया, लोजादि पशुउ छे, सत्यवचनरूप यूप अर्थात् यज्ञस्थंज छे. सर्व जीवोने अजयदानरूप दक्षिणा छे, अने ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रयीरूप त्रिवेदी

छे आ प्रमाणे यज्ञ वेदमां कथन करेल छे, एवो यज्ञ जो योगाभ्यास सं-
युक्त करवामां आवे तो ते करनारो मुक्ति प्राप्त करे छे, परंतु राक्षसरूप
थइ बकराप्रमुखने मारी यज्ञ करवामा आवे तो, यज्ञ करनार, कराव-
नार, मरीने घोर नर्कमां चिरकाल महादुःख भोगवे छे. हे राजा ! तु उ-
त्तम वंशमां उत्पन्न थयेल छो, बुद्धिमान् तेमज धनवान् छो, तेथी आ
व्याधोचित पापथी निवर्त जो प्राणीवधथीज जीवोने स्वर्ग प्राप्त थतु होत
तो अनायासे थोडा वखतमांज आ जीवलोक खाली थइ जशे आ मारा
वचनो सांभळी यज्ञनी अग्निनी जेम प्रचंड थयेला ब्राह्मणो लाकडी, सो-
टा, ढीका, पाटु मने मारवा लाग्या, तेथी जेम नदीना पूरथी भय पामे-
लो माणस उंची जमीन उपर चडी जाय छे, तेम दोडतो हुं तमारीपासे
आव्यो छु हे रावण महाराज ! निरपराधी पशुओ मार्या जाय छे तेओनु
रक्षण करवामां तमे समर्थ छो. जेम तमारां शरणथी हुं निर्भय छु तेम
पशुओने शरण आपी निर्भय करो ते सांभळी रावण विमानथी उतरी
मरुत राजानी पासे आव्या मरुत राजाये रावणनी भक्ति तथा आदर
सन्मान उत्तम प्रकारे कर्या रावणे कह्युं आ तमे शु करो छो ? यज्ञमा
पशुवध करी नर्कनी महा माठी गति उपार्जन करवानुं तमोए आरम्भ्यु छे
धर्म तो तीर्थंकर महाराजाये अहिंसारूप कथन करेलो छे, अने तेथीज
जगतनु हित थाय छे, ज्यारें पशुओने मारवामां तमे धर्म समज्या, त्यारे
अधर्म, धर्मनी तमने समजणज क्यां हरी ? माटे आ काम तमे तजी द्यो.
पछी सेहेज कोपमां आवी रावणे कह्यु के जो यज्ञ करवानु काम तजी
नही द्यो तो तेनु फल आ लोकमां तो तमने हमणाज आपीश, अने पर-
लोकमां तमारे नर्कना मेमान थवु पडशे. आवा भयात्मक वचन सांभळी
मरुत राजाये यज्ञ करवो तजी दीधो, कारण के रावणनी आज्ञा ते व-
खते एवी भयंकर हती के तेनु कोइ उल्लंघन करी शकतु नही आ क-
थाथी एम पण सिद्ध थाय छे के, ब्राह्मण लोको जे एम कहे छे के, पूर्वे
राक्षसो यज्ञविध्वंस करता हता, ते कोण जाणे रावणादि जबरदस्त जै-
नधर्मी राजाओये पशुवधरूप यज्ञो करता छोडावी दीधा होय, अने तेज
कालथी ब्राह्मणोये पुराणादि शास्त्रोमां ते जबरदस्त जैनराजाओने राक्षसो
लखेला छे वली एम पण सांभळवामां आव्यु छे के नारदजीये मायाना

वशथी जैनमत धारण करी वेदोनी निंदा करी होय तोपण शुं जाणीये? आ कथानो आज तात्पर्य लोकोये लखेलो छे

रावणे नारदजीने पुछ्युं के आवो पापकारी पशुवधात्मक यज्ञ क्यांथी प्रचलित थयो? नारदजीये कह्युं के शुक्तिमती नदीना किनारा उपर शुक्तिमती नामे नगरी छे बीगमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामि हरिवंश तीर्थंकरनी औलादमां केटलायेक राजा व्यतीत थइ गया पछी अभिचंद्र नामा राजा थयो. तेनो वसु नामनो पुत्र, महाबुद्धिवान, सत्यवादी जगत्मां प्रसिद्ध थयो तेज नगरीमां क्षीरकदंवक नामना उपाध्याय रहेता हता. तेने पर्वत नामनो पुत्र हतो ते क्षीरकदंवक उपाध्यायनी पासे वसुराजा, उपाध्यायजीनो पुत्र पर्वत अने हुं नारद त्रणे जणा अभ्यास करता हता. एकदा अमो त्रणे शिष्यो अभ्यासना श्रमथी रात्रिना वेहेला सुइ गया हता, उपाध्यायजी ते वखते जागता हता अमो उपरना भागमां सुता हता, ते वखते बे ज्ञानवान् चारण साधु आकाशमां परस्पर वातो करता चाल्या जता हता, तेउ बोल्या के आ उपाध्यायजीना बे शिष्यो नर्कमां जशे, अने एक स्वर्गमां जशे. मुनियोनुं आ प्रमाणे बोलवु सांभली उपाध्यायजी विचार करवा लाग्या के ज्यारे मारा शिखवेला शिष्यो नर्कमां जाय, त्यारे तेना करतां वधारे दुःखजनक बीजु शुं? परंतु त्रणमां नर्कमां कोण जशे अने स्वर्गमां कोण जशे? ते वातनो निर्णय करवा वास्ते त्रणेने एक साथे बोलाव्या. पछी गुरुये अमने दरेकने एकेक लोटनो कुकडो आप्यो, अने कह्युं के कुकडाने एवी जगाये जइ मारो के ज्यां कोइ देखतुं न होय पछी वसु अने पर्वत बने जणा तो शून्य जगाउमां जइ दरेक पोतपोताना कुकडाने मारी लाव्या, अने हुतो ते लोटना कुकडाने लइ नगरीनी बहार बहुज दूर चाल्यो गयो. ज्यां कोइ नहोतुं त्यां जइ उभो रह्यो. चारे तरफ जोवा लाग्यो, अने मनमां आ प्रमाणे तर्क थवा लाग्या गुरु महाराजे तो आज्ञा करी छे के, हे वत्स! आ कुकडाने तुं त्यां मारजे, के ज्यां कोइ तने देखतुं न होय। प्रथम तो आ कुकडाने हुंज देखुं छु, वली कुकडो मने देखे छे, खेचर देखे छे, लोकपाल देखे छे, ज्ञानी देखे छे, एवु तो जगत्मां कोइ पण स्थान नथी, ज्यां कोइ पण न देखतु होय. ते कारणथी गुरुनो अभिप्राय

छे. आ प्रमाणे यज्ञ वेदमा कथन करेल छे, एवो यज्ञ जो योगाभ्यास संयुक्त करवामां आवे तो ते करनारो मुक्ति प्राप्त करे छे, परंतु राक्षसरूप थइ बकराप्रमुखने मारी यज्ञ करवामां आवे तो, यज्ञ करनार, करावनार, मरीने घोर नर्कमां चिरकाल महादुःख भोगवे छे हे राजा! तुं उत्तम वंशमा उत्पन्न थयेल छो, बुद्धिमान् तेमज धनवान् छो, तेथी आ व्याधोचित पापथी निवर्त. जो प्राणीवधथीज जीवोने स्वर्ग प्राप्त थतुं होत तो अनायासे थोडा वखतमांज आ जीवलोक खाली थइ जशे आ मारा वचनो सांभली यज्ञनी अग्निनी जेम प्रचड थयेला ब्राह्मणो लाकडी, सोटा, ढीका, पाटु मने मारवा लाग्या, तेथी जेम नदीना पूरथी भय पामेलो माणस उंची जमीन उपर चडी जाय छे, तेम दोडतो हु तमारीपासे आव्यो छु. हे रावण महाराज! निरपराधी पशुउ मार्या जाय छे. तेउनु रक्षण करवामा तमे समर्थ छो जेम तमारा शरणथी हुं निर्भय छु तेम पशुउने शरण आपी निर्भय करो ते सांभली रावण विमानथी उतरी मरुत राजानी पासे आव्या मरुत राजाये रावणनी भक्ति तथा आदर सन्मान उत्तम प्रकारे कर्यां रावणे कह्यु आ तमे शु करो छो? यज्ञमां पशुवध करी नर्कनी महा माठी गति उपार्जन करवानु तमोए आरंभ्यु छे धर्म तो तीर्थंकर महाराजाये अहिंसारूप कथन करेलो छे, अने तेथीज जगतनुं हित थाय छे, ज्यारे पशुउने मारवामां तमे धर्म समज्या, त्यारे अधर्म, धर्मनी तमने समजणज क्यां छरी? माटे आ काम तमे तजी द्यो. पछी सेहेज कोपमां आवी रावणे कह्युं के जो यज्ञ करवानु काम तजी नही द्यो तो तेनु फल आ लोकमां तो तमने हमणाज आपीश, अने परलोकमा तमारे नर्कना मेमान थवु पडशे. आवा भयात्मक वचन सांभली मरुत राजाये यज्ञ करवो तजी दीधो, कारण के रावणनी आज्ञा ते वखते एवी भयकर हती के तेनु कोइ उल्लघन करी शकतु नही आ कथाथी एम पण सिद्ध थाय छे के, ब्राह्मण लोको जे एम कहे छे के, पूर्वे राक्षसो यज्ञविध्वंस करता हता, ते कोण जाणे रावणादि जबरदस्त जैनधर्मी राजाउये पशुवधरूप यज्ञो करता छोडावी दीधा होय, अने तेज कालथी ब्राह्मणोये पुराणादि शास्त्रोमां ते जबरदस्त जैनराजाउने राक्षसो लखेला छे वली एम पण सांभलवामा आव्युं छे के नारदजीये मायाना

वशथी जैनमत धारण करी वेदोनी निंदा करी होय तोपण शुं जाणीये? आ कथानो आज तात्पर्य लोकोये लखेलो छे

रावणे नारदजीने पुछ्युं के आवो पापकारी पशुवधात्मक यज्ञ क्यांथी प्रचलित थयो? नारदजीये कह्युं के शुक्तिमती नदीना किनारा उपर शुक्तिमती नामे नगरी छे वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामि हरिवंश तीर्थंकरनी उलादमां केटलायेक राजा व्यतीत थइ गया पछी अभिचंद्र नामा राजा थयो. तेनो वसु नामनो पुत्र, महाबुद्धिवान,सत्यवादी जगत्मां प्रसिद्ध थयो तेज नगरीमां क्षीरकदंवक नामना उपाध्याय रहेता हता तेने पर्वत नामनो पुत्र हतो. ते क्षीरकदंवक उपाध्यायनी पासे वसुराजा, उपाध्यायजीनो पुत्र पर्वत अने हु नारद त्रणे जणा अभ्यास करता हता. एकदा अमो त्रणे शिष्यो अभ्यासना श्रमथी रात्रिना वेहेला सुइ गया हता, उपाध्यायजी ते वखते जागता हता. अमो उपरना भागमां सुता हता, ते वखते वे ज्ञानवान् चारण साधु आकाशमां परस्पर वातो करता चाल्या जता हता, तेउ बोल्या के आ उपाध्यायजीना वे शिष्यो नर्कमां जशे, अने एक स्वर्गमां जशे मुनियोनुं आ प्रमाणे बोलवु सांभली उपाध्यायजी विचार करवा लाग्या के ज्यारे मारा शिखवेला शिष्यो नर्कमां जाय, त्यारे तेना करतां वधारे दुःखजनक बीजु शु? परंतु त्रणमां नर्कमां कोण जशे अने स्वर्गमां कोण जशे? ते वातनो निर्णय करवा वास्ते त्रणेने एक साथे बोलाव्या. पछी गुरुये अमने दरेकने एकेक लोटनो कुकडो आप्यो, अने कह्युं के कुकडाने एवी जगाये जइ मारो के ज्यां कोइ देखतुं न होय पछी वसु अने पर्वत वंने जणा तो शून्य जगाउमां जइ दरेक पोतपोताना कुकडाने मारी लाव्या, अने हुंतो ते लोटना कुकडाने लइ नगरीनी वहार वहुज दूर चाल्यो गयो ज्यां कोइ नहोतुं त्यां जइ उभो रह्यो. चारे तरफ जोवा लाग्यो, अने मनमां आ प्रमाणे तर्क थवा लाग्या गुरु महाराजे तो आज्ञा करी छे के, हे वत्स! आ कुकडाने तुं त्यां मारजे, के ज्यां कोइ तने देखतुं न होय! प्रथम तो आ कुकडाने हुज देखुं छु, वली कुकडो मने देखे छे, खेचर देखे छे, लोकपाल देखे छे, ज्ञानी देखे छे, एवु तो जगत्मां कोइ पण स्थान नथी, ज्यां कोइ पण न देखतुं होय. ते कारणथी गुरुनो अभिप्राय

छे आ प्रमाणे यज्ञ वेदमा कथन करेल छे, एवो यज्ञ जो योगाभ्यास संयुक्त करवामां आवे तो ते करनारो मुक्ति प्राप्त करे छे, परंतु राक्षसरूप थइ बकराप्रमुखने मारी यज्ञ करवामां आवे तो, यज्ञ करनार, करावनार, मरीने घोर नर्कमां चिरकाल महादुःख भोगवे छे. हे राजा! तु उत्तम वंशमां उत्पन्न थयेल छो, बुद्धिमान् तेमज धनवान् छो, तेथी आ व्याधोचित पापथी निवर्त जो प्राणीवधथीज जीवोने स्वर्ग प्राप्त थतु होत तो अनायासे थोडा वखतमांज आ जीवलोक खाली थइ जशे आ मारा वचनो सांभली यज्ञनी अग्निनी जेम प्रचड थयेला ब्राह्मणो लाकडी, सोटा, ढीका, पाटु मने मारवा लाग्या, तेथी जेम नदीना पूरथी भय पामेलो माणस उची जमीन उपर चडी जाय छे, तेम दोडतो हुं तमारीपासे आव्यो छु हे रावण महाराज! निरपराधी पशुउ मार्या जाय छे तेउनु रक्षण करवामां तमे समर्थ छो. जेम तमारां शरणथी हुं निर्भय छु तेम पशुउने शरण आपी निर्भय करो ते सांभली रावण विमानथी उतरी मरुत राजानी पासे आव्या मरुत राजाये रावणनी भक्ति तथा आदर सन्मान उत्तम प्रकारे कर्यां. रावणे कह्यु आ तमे शु करो छो? यज्ञमा पशुवध करी नर्कनी महा माठी गति उपार्जन करवानु तमोए आरम्भ्यु छे धर्म तो तीर्थंकर महाराजाये अहिंसारूप कथन करेलो छे, अने तेथीज जगतनुं हित थाय छे, ज्यारे पशुउने मारवामां तमे धर्म समज्या, त्यारे अधर्म, धर्मनी तमने समजणज क्यां छरी? माटे आ काम तमे तजी द्यो पछी सेहेज कोपमां आवी रावणे कह्युं के जो यज्ञ करवानु काम तजी नही द्यो तो तेनु फल आ लोकमां तो तमने हमणांज आपीश, अने परलोकमां तमारे नर्कना मेमान थवु पडशे आवा भयात्मक वचन सांभली मरुत राजाये यज्ञ करवो तजी दीधो, कारण के रावणनी आज्ञा ते वखते एवी भयकर हती के तेनु कोइ उल्लघन करी शकतु नही आ कथाथी एम पण सिद्ध थाय छे के, ब्राह्मण लोको जे एम कहे छे के, पूर्वे राक्षसो यज्ञविध्वस करता हता, ते कोण जाणे रावणादि जबरदस्त जैनधर्मी राजाउये पशुवधरूप यज्ञो करता छोडावी दीधा होय, अने तेज कालथी ब्राह्मणोये पुराणादि शास्त्रोमां ते जबरदस्त जैनराजाउने राक्षसो लखेला छे वली एम पण सांभलवामां आव्यु छे के नारदजीये मायाना

एकदा प्रस्तावे हुं (नारद) सूक्तिमती नगरीमां गयो. पर्वतने घेर जतां ते पोताना शिष्योने रूग्वेद जणावतो हतो, अने तेनो अर्थ पण शिखवतो हतो प्रसंगे एवी श्रुति रूग्वेदमां आवी के "अजैर्यष्टव्यमिति" पर्वते आ श्रुतिनो एवो अर्थ कर्यो के अज अर्थात् बकराथी होम करवो, सारांश के बकरांने मारी तेना मांसनो होम यज्ञमां करवो ते सांजली में पर्वतने कह्युं हे जाइ! आ प्रमाणे व्याख्या कइ ज्रांतिथी करे ठे? गुरुश्रीक्षीरकदंबकजीए आ श्रुतिनी आवी व्याख्या करी नथी, गुरूजीए तो आ श्रुतिमां अज शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनुं जुनुं धान्य करेलो ठे, "न जायत इत्यजा" जे वाववाथी न उत्पन्न थाय ते अजा, आवो अर्थ श्रीगुरुजीए तमने तथा मने शिखाव्यो हतो, ते अर्थ तमे केम जूली जाउ ठो? पर्वते कह्युं के तमे जे अर्थ करोठो ते अर्थ गुरुजीए कर्यो नथी, परंतु हुं जे अर्थ करूं तुं, तेम अर्थ गुरुजीए कयो हतो, कारण के निघटमां पण अजा नाम बकरीनुंज लखेलुं ठे. पठी में (नारदे) पर्वतने कह्युं के शब्दोना अर्थ बे प्रकारे थाय ठे, एक मुख्यार्थ, बीजो गोणार्थ आ स्थले श्री गुरुए गौणार्थ कर्यो हतो. गुरु धर्मोपदेष्टानुं वचन अने श्रुतिनो यथार्थ अर्थ, बंने अन्यथा करी हे मित्र! तुं महापाप उपार्जन करे ठे. फरी पर्वते कह्युं के अज शब्दनो अर्थ गुरुजीए मेष करेलो ठे, निघटमां पण एज अर्थ ठे, तेने उल्लघन करी तुं अधर्म उपार्जन करे ठे; वली आ बाबत निर्णय करवो होय तो वसुराजा जे आपणा सहाध्यायी ठे, तेने मध्यस्थ राखी आ श्रुतिना अर्थनो निर्णय करीए, परंतु सरत एटली के जेनो अर्थ जूगे ठरे तेनी जीह्वा ठेदवी. आ प्रमाणे प्रतिज्ञा ठरी मे पण पर्वतनी सरत मान्य करी, एवा विचारथी के साचने शुं आंच ठे? पर्वतनी माताए ते वखते पर्वतने गुप्त रीते कह्यु के हे पुत्र! तुं आवो जूगे कदाग्रह ठोडीदे, कारण के में पण ते श्रुतिनो अर्थ त्रण वर्षनु धान्यज सांजल्यो ठे, माटे त जे जीह्वा ठेदनी प्रतिज्ञा करी ते वास्तविक कर्युं नथी. विचार कर्या विना जे काम करवामां आवे ठे, तेथी आपत्तिमां आवी पडवानो प्रसंग आवे ठे ते सांजली पर्वते कह्युं के हे माताजी! जे मे प्रतिज्ञा करी ठे ते कोइ पण रीते हु फेरवी शकु तेम नथी. पठी पर्वतनी माता पोताना पुत्रनुं दुःख

एज ठे के, आ कुकडानो वध न करवो, कारण के गुरु पूज्य तो निरंतर महा दयालु ठे, अने हिंसाथी पराङ्मुख ठे मात्र अमारी परीक्षावास्ते आ आदेश आप्यो ठे, तेथी हुं तो कुकडाने मार्याविनाज कुकडाने लइ गुरुपासे आव्यो, अने कुकडाने नही मारवाना सघला विचार गुरुजीने कही दीधा. गुरुराजे मनमां निश्चय कर्यो के, आ नारद विवेकवालो ठे, तेथी स्वर्गमां जशे, गुरुजीये मने पोतानी ठाती साथे लगावी, बहु सारु थयुं उत्तम उत्तम! एम कह्युं, तेटलामां वसु अने पर्वत पण गुरु पासे आव्या, अने गुरुने कह्युं के अमो कुकडाने एवी जगाये जइ मारी आव्या ठीये के ज्यां कोइ देखतुं न होतुं गुरुये कह्युं के तमे तो देखता हता, तथा खेचरो पण देखता हता हे पापिष्टो! तमे कुकडा केम मार्या? एम कही गुरुजीये विचार कर्यो के वसु अने पर्वतने जणाववानी मारी मेहेनत वृथा गइ परतु हु शुं करु! पाणी जेवा पात्रमां जाय ठे, तेवुंज बनी जाय ठे विद्यानो पण तेवोज स्वजाव ठे ज्यारे प्राणथी प्यारो पर्वत पुत्र अने पुत्रथी प्यारो वसु बने नर्कमां जाय, तो हवे मारे घरमां रहेवानुं शुं प्रयोजन ठे? एवा निर्वेद जावथी क्षीरकदंबक उपाध्यायजीये दीक्षा ग्रहण करी साधु थया तेनी पदवी पर्वते धारण करी, कारण के व्याख्यान करवामां पर्वत बहुज विचक्षण हतो. हुं (नारद) गुरु प्रसादथी सर्व शास्त्रोनो अभ्यास करी मारे स्थानके आव्यो. वली अजिचन्द्र राजाये संयम लेवाथी वसु तेना पितानी राज्यगादी उपर बेठो वसु राजा जगत्मां सत्यवादी प्रसिद्ध थयो, अर्थात् वसुराजा कदापि जूठु बोलता नथी, ए प्रमाणे लोकोमा तेनी प्रशसा प्रसरी गइ. वसुराजाए पण पोतानी प्रशसा निरंतर थया करे ते सारु सत्य बोलवानु दृढ व्रत अंगीकार कर्युं दरमीआन वसुराजाने एक स्फटिक सिंहासन प्रछन्न रीते एवु मली गयु के, सूर्यना प्रकाशमां ज्यारे वसुराजा ते सिंहासन उपर बेसतो त्यारे, ते सिंहासन लोकोना देखवामां बिलकुल आवतु नहोतु, तेथी लोकोमां एवी प्रसीद्धि थइ के, सत्यना प्रजावथी वसुराजानु सिंहासन देवताउ आकाशमां अधर राखे ठे तेनी आवी कीर्त्तिथी बीजा सर्वे राजाउ डरीने तेनी आज्ञा मानता हता, कारण के साची अथवा जूठी गमे ते रीते थयेली प्रसीद्धि पुरुपने जयकारी थाय ठे

एकदा प्रस्तावे हुं (नारद) सूक्तिमती नगरीमां गयो. पर्वतने घेर जतां ते पोताना शिष्योने रूग्वेद जणावतो हतो, अने तेनो अर्थ पण शिखवतो हतो. प्रसंगे एवी श्रुति रूग्वेदमां आवी के “ अजैर्यष्टव्यमिति ” पर्वते आ श्रुतिनो एवो अर्थ कर्यो के अज अर्थात् बकराथी होम करवो, सारांग के बकरांने मारी तेना मांसनो होम यज्ञमां करवो ते सांजली मे पर्वतने कह्युं हे जाइ! आ प्रमाणे व्याख्या कइ भ्रांतिथी करे छे? गुरुश्रीक्षीरकदंबकजीए आ श्रुतिनी आवी व्याख्या करी नथी, गुरूजीए तो आ श्रुतिमां अज शब्दनो अर्थ त्रण वर्षनुं जुनु धान्य करेलो छे, “ न जायत इत्यजा ” जे वाववाथी न उत्पन्न थाय ते अजा, आवो अर्थ श्रीगुरुजीए तमने तथा मने शिखाव्यो हतो, ते अर्थ तमे केम जूली जाउ छो? पर्वते कह्युं के तमे जे अर्थ करोछो ते अर्थ गुरुजीए कर्यो नथी, परंतु हु जे अर्थ करूं छुं, तेम अर्थ गुरुजीए कर्यो हतो, कारण के निघंटमां पण अजा नाम बकरीनुंज लखेलुं छे. पछी मे (नारदे) पर्वतने कह्युं के शब्दोना अर्थ बे प्रकारे थाय छे, एक मुख्यार्थ, बीजो गौणार्थ आ स्थले श्री गुरुए गौणार्थ कर्यो हतो. गुरु धर्मोपदेष्टानुं वचन अने श्रुतिनो यथार्थ अर्थ, बंने अन्यथा करी हे मित्र! तुं महापाप उपार्जन करे छे. फरी पर्वते कह्युं के अज शब्दनो अर्थ गुरुजीए मेष करेलो छे, निघटमां पण एज अर्थ छे, तेने उल्लघन करी तुं अधर्म उपार्जन करे छे, वली आ बाबत निर्णय करवो होय तो वसुराजा जे आपणा सहाध्यायी छे, तेने मध्यस्थ राखी आ श्रुतिना अर्थनो निर्णय करीए, परंतु सरत एटली के जेनो अर्थ जूठो ठरे तेनी जीह्वा छेदवी आ प्रमाणे प्रतिज्ञा ठरी मे पण पर्वतनी सरत मान्य करी, एवा विचारथी के साचने शु आंच छे? पर्वतनी माताए ते वखते पर्वतने गुप्त रीते कह्युं के हे पुत्र! तुं आवो जूठो कदाग्रह छोडीदे, कारण के में पण ते श्रुतिनो अर्थ त्रण वर्षनुं धान्यज सांजल्यो छे, माटे ते जे जीह्वा छेदनी प्रतिज्ञा करी ते वास्तविक कर्युं नथी. विचार कर्या विना जे काम करवामां आवे छे, तेथी आपत्तिमां आवी पडवानो प्रसंग आवे छे. ते सांजली पर्वते कह्युं के हे माताजी! जे मे प्रतिज्ञा करी छे ते कोइ पण रीते हुं फेरवी शकुं तेम नथी. पछी पर्वतनी माता पोताना पुत्रनुं दुःख

एज छे के, आ कुकडानो वध न करवो, कारण के गुरु पूज्य तो निरंतर महा दयालु छे, अने हिंसाथी पराङ्मुख छे मात्र अमारी परीक्षावास्ते आ आदेश आप्यो छे, तेथी हुं तो कुकडाने मार्याविनाज कुकडाने लइ गुरुपासे आव्यो, अने कुकडाने नही मारवाना सघला विचार गुरुजीने कही दीधा गुरुराजे मनमां निश्चय कर्यो के, आ नारद विवेकवालो छे, तेथी स्वर्गमां जशे, गुरुजीये मने पोतानी छाती साथे लगावी, बहु सारु थयु उत्तम उत्तम! एम कह्युं, तेटलामां वसु अने पर्वत पण गुरु पासे आव्या, अने गुरुने कह्युं के अमो कुकडाने एवी जगाये जइ मारी आव्या छीये के ज्यां कोइ देखतु न होतु. गुरुये कह्युं के तमे तो देखता हता, तथा खेचरो पण देखता हता हे पापिष्टो! तमे कुकडा केम मार्या? एम कही गुरुजीये विचार कर्यो के वसु अने पर्वतने जणावानी मारी मेहेनत वृथा गइ परतु हु शुं करुं! पाणी जेवा पात्रमां जाय छे, तेवुज बनी जाय छे विद्यानो पण तेवोज स्वभाव छे ज्यारे प्राणथी प्यारो पर्वत पुत्र अने पुत्रथी प्यारो वसु बने नर्कमां जाय, तो हवे मारे घरमां रहेवानुं शुं प्रयोजन छे? एवा निर्वेद भावथी क्षीरकदंबक उपाध्यायजीये दीक्षा ग्रहण करी साधु थया तेनी पदवी पर्वते धारण करी, कारण के व्याख्यान करवामा पर्वत बहुज विचक्षण हतो. हु (नारद) गुरु प्रसादथी सर्व शास्त्रोनो अभ्यास करी मारे स्थानके आव्यो. वली अभिचन्द्र राजाये सयम लेवाथी वसु तेना पितानी राज्यगादी उपर बेठो वसु राजा जगत्मां सत्यवादी प्रसिद्ध थयो, अर्थात् वसुराजा कदापि जूठु बोलता नथी, ए प्रमाणे लोकोमां तेनी प्रशसा प्रसरी गइ. वसुराजाए पण पोतानी प्रशसा निरतर थया करे ते सारु सत्य बोलवानु दृढ व्रत अगीकार कर्युं दरमीआन वसुराजाने एक स्फटिक सिंहासन प्रच्छन्न रीते एवु मली गयु के, सूर्यना प्रकाशमां ज्यारे वसुराजा ते सिंहासन उपर बेसतो त्यारे, ते सिंहासन लोकोना देखवामां बिलकुल आवतु नहोतु, तेथी लोकोमा एवी प्रसीद्धि थइ के,सत्यना प्रभावथी वसुराजानु सिंहासन देवताओ आकाशमां अधर राखे छे तेनी आवी कीर्त्तिथी बीजा सर्वे राजाओ डरीने तेनी आज्ञा मानता हता, कारण के साची अथवा जूठी गमे ते रीते थयेली प्रसीद्धि पुरुषने जयकारी थाय छे

कारण के सत्यथीज मेघ वरसे छे, अने सत्यथीज देव सिद्ध थाय छे, वळी सत्यना प्रज्ञावथीज आ लोक स्थिति करी रह्यो छे, अने तमे पण पृथ्वीमां सत्यवादी सूर्यनी जेम प्रकाश करो छो, तेथी सत्य कहेवुं, तेज तमने उचित छे. हवे ते करतां विशेष अमारे तमने कांइ कहेवानुं नथी आ प्रमाणे वृद्ध पुरुषोना वचनो सान्नळतां छतां पण वसुराजाए पोतानी सत्य वोलवानी प्रतिज्ञाने जलांजलि दइ "अजान्मेषान् गुरु व्याख्या दिति" अर्थात् अजनो अर्थ गुरुए मेष (वकरो) कहेल छे. ए प्रमाणे वसुराजाए वोलतांज असत्यना प्रज्ञावथी व्यतर देवताए वसुराजाना सिंहासनने तोडी वसुराजाने पृथ्वी उपर पछाड्यो, तेथी मरण पामी वसुराजा उग्र पापथी सातमी नरके गयो. वसुराजाना सिंहासन उपर, ते पछी अनुक्रमे वसुराजाना आठ पुत्रो १ पृथुवसु २ चित्रवसु, ३ वासव, ४ शक्र, ५ विज्ञावसु, ६ विश्वावसु, ७ सूर, ८ महासूर, ए प्रमाणे उत्तरोत्तर गादी उपर वेठा ते आठे पुत्रोने व्यंतर देवताओए मारी नांख्या. पछी सुवसु नामनो नवमो पुत्र त्यांथी नागी नागपुरमां चाल्यो गयो, अने दसमो वृहद्ध्वज नामनो पुत्र नागीने मथुरामां राज्य करवा लाग्यो. आ वृहद्ध्वज राजाना वंशमा यदु नामा वहु प्रसिद्ध राजा थयो, त्यारथी हरिवंश नाम वदलाइ यदुवंश प्रसिद्ध थयु

यदुराजाने सूर नामा पुत्र थयो. सूर राजाने वे पुत्रो थया. मोटानुं नाम शौरी अने नानानुं नाम सुवीर हतुं शौरीने पितानी गादी मळी. परंतु पोताना नाना न्नाइ सुवीरने ते गादी आपी पोते कुशावर्त्त देशमा जइ पोताना नामनुं शौरीपुर नगर वसावी, राज्यधानीनुं नगर वनाव्यु- शौरीने अंधक विष्णु प्रमुख पुत्रो थया, अने अंधक विष्णुने दस पुत्रो थया तेना नाम १ समुद्रविजय २ अक्षोभ्य, ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान्, ६ अचल, ७ धरण, ८ पूर्ण, ए अन्निचंद्र, १० वसुदेव. तेमां समुद्रविजयना मोटापुत्र अरिष्टनेमि, जैनमतना वावीशमा तीर्थंकर थया, अने वसुदेवना पुत्र प्रतापी कृष्ण वासुदेव तथा वलन्नद्रजी थया सुवीरना पुत्र न्नोजवृष्णि अने न्नोजवृष्णिना पुत्र उग्रसेन थया, उग्रसेननो पुत्र कंस थयो वसुराजानो वीजो पुत्र सुवसु नासीने नागपुर गयो.

जाणी, दुःखी थवाथी वसु राजानी पासे गइ पुत्रना जीवितव्य वास्ते कोण एवो छे के जे उपाय न करे ? वसुराजाए पोताना गुरुनी पत्नीने आवतां देखी अपार सन्मान आप्युं सिंहासन उपरथी उनो थयो, अने कहेवा लाग्यो के हे माता ! आजे मे मारा गुरुराजना दर्शन कर्यां मारा सरखुं जे काम होय ते मने फरमावो ? गुरुपत्नीए कह्युं के हे वसुराज ! मने पुत्रनी भिक्षा आपो ? पुत्र विना मारे धन धान्यादि शुं कामना छे ? वसुराजा ते सांभली कहेवा लाग्या के हे माता ! पर्वत तो मारे पूजवा योग्य तथा पालवा योग्य छे, कारण के गुरुनी जेम गुरुना पुत्रनी साथे पण वर्तवुं जोइए, एम श्रुति वाक्य छे, तो हवे कोणे क्रोधमां आवी कालने पत्रथी आमंत्रण कर्युं छे ? जे मारा भाइ पर्वतने मारवा चाहे छे ? वास्ते हे माता ! तमे सर्व वृत्तांत मने कहो ? गुरुपत्नीए सर्व वृत्तांत प्रतिज्ञा लीधी त्यां सुधीनो कही बताव्यो, छेवटे कह्युं के जो तमारा भाइनी रक्षा करवी होय तो अज शब्दनो मेष अर्थात् बकरो या बकरी अर्थ करवो, कारण के महात्मा पुरुषो परोपकार वास्ते पोताना प्राण पण अर्पण करे छे, अने आपने तो मात्र वचनथी परोपकार करवानो छे वसुराजाए कह्युं माताजी ! हुं मिथ्या वचन केवी रीते बोली शकुं ? सत्य बोलनारा पुरुषो पोताना प्राण जाय छे तो पण असत्य बोलता नथी, तो गुरुनुं वचन अन्यथा करवुं, अने जूठी साक्षी पुरवी, तेने वास्ते तो शुज कहेवुं ? गुरुपत्नीए कह्युं के क्यातो गुरुना पुत्रनो जान बचशे, क्यातो तमारा सत्य व्रतनो आग्रह रहेशे, वली हुं पण तने ते वखते मारा प्राणनी हत्या आपीश गुरुपत्नीना आ प्रमाणेना वचनो सांभली लाचार थइ तेणीनुं वचन अंगीकार कर्युं गुरुपत्नी खुशी थइ पोताने घेर आवी तत्काल नारद तथा पर्वत बने वसुराजानी सभामां आव्या ते प्रसंगे मोटा मोटा विद्वान् पुरुषो सभामां आवी पहोंच्या, अने वसुराजा स्फटिक सिंहासन उपर बेसी सभापति थइ पुछवा लाग्यो, पर्वत तथा नारदे पोतानो आद्यंत सर्व वृत्तांत वसुराजाने सभलाव्यो, छेवटे कह्युं के हे राजन् ! गुरुजीए आ बने अर्थमांथी कयो अर्थ कह्यो छे ते तमे सत्य कही द्यो ? सभामां विराजेला वृद्ध ब्राह्मणोए पण कह्युं के हे राजन् तमे सत्य सत्य जे होय तेज कही देजो,

कारण के सत्यथीज मेघ वरसे छे, अने सत्यथीज देव सिद्ध थाय छे, वली सत्यना प्रभावथीज आ लोक स्थिति करी रह्यो छे, अने तमे पण पृथ्वीमां सत्यवादी सूर्यनी जेम प्रकाश करो छो, तेथी सत्य कहेवुं, तेज तमने उचित छे. हवे ते करतां विशेष अमारे तमने काइ कहेवानु नथी आ प्रमाणे वृद्ध पुरुषोना वचनो सांभलतां छतां पण वसुराजाए पोतानी सत्य बोलवानी प्रतिज्ञाने जलांजलि दइ "अजान्मेषान् गुरु व्याख्या दिति" अर्थात् अजनो अर्थ गुरुए मेष (बकरो) कहेल छे. ए प्रमाणे वसुराजाए बोलतांज असत्यना प्रभावथी व्यतर देवताए वसुराजाना सिंहासनने तोडी वसुराजाने पृथ्वी उपर पछाड्यो, तेथी मरण पामी वसुराजा उग्र पापथी सातमी नरके गयो वसुराजाना सिंहासन उपर, ते पछी अनुक्रमे वसुराजाना आठ पुत्रो १ पृथुवसु २ चित्रवसु, ३ वासव, ४ शक्र, ५ विभावसु, ६ विश्वावसु, ७ सूर, ८ महासूर, ए प्रमाणे उत्तरोत्तर गादी उपर बेठा ते आठे पुत्रोने व्यंतर देवताउए मारी नांख्या. पछी सुवसु नामनो नवमो पुत्र त्यांथी भागी नागपुरमां चाल्यो गयो, अने दसमो बृहद्ध्वज नामनो पुत्र भागीने मथुरामां राज्य करवा लाग्यो आ बृहद्ध्वज राजाना वंशमां यदु नामा बहु प्रसिद्ध राजा थयो, त्यारथी हरिवंश नाम बदलाइ यदुवंश प्रसिद्ध थयु

यदुराजाने सूर नामा पुत्र थयो सूर राजाने बे पुत्रो थया. मोटानु नाम शौरी अने नानानुं नाम सुवीर हतुं शौरीने पितानी गादी मली, परंतु पोताना नाना भाइ सुवीरने ते गादी आपी पोते कुशावर्त्त देशमां जइ पोताना नामनु शौरीपुर नगर वसावी, राज्यधानीनुं नगर बनाव्युं. शौरीने अंधक विष्णु प्रमुख पुत्रो थया, अने अंधक विष्णुने दस पुत्रो थया तेना नाम १ समुद्रविजय २ अक्षोभ्य, ३ स्तिमित, ४ सागर, ५ हिमवान्, ६ अचल, ७ धरण, ८ पूर्ण, ९ अभिचन्द्र, १० वसुदेव. तेमां समुद्रविजयना मोटापुत्र अरिष्टनेमि, जैनमतना बावीशमा तीर्थंकर थया, अने वसुदेवना पुत्र प्रतापी कृष्ण वासुदेव तथा बलभद्रजी थया सुवीरना पुत्र भोजवृष्णि अने भोजवृष्णिना पुत्र उग्रसेन थया, उग्रसेनना पुत्र कंस थयो वसुराजानो बीजो पुत्र सुवसु नासीने नागपुर गयो.

तेने बृहद्रथ नामनो पुत्र थयो तेणे राजगृहमा राज्य कर्युं. तेनो पुत्र जरासिंधु थयो. आ वृत्तांत मे अहींआ प्रसंगथी लखेल छे

हवे अहींआ नगरना लोको तथा पंडितोये पर्वतनी बहुज निंदा करी पर्वतने कह्युं के तु जूठो छे, कारण के तारा साक्षी वसुने जूठो जाणी देवताये मारी नाख्यो, तेथी तारा करता विशेष पापी कोण छे? ए प्रमाणे कही लोकोये पर्वतने नगर बहार काढी मुक्यो बाद महाकाल नामनो असुर पर्वतनो सहायक थयो

हवे रावणे नारदने पुछ्युं के महाकाल असुर कोण हतो? नारदे कह्युं के आ देशमा चरणायुगल नामनु नगर छे, तेनो अयोधन नामनो राजा हतो, तेने दिति नामा भार्या हती तेउने सुलसा नामा बहु रूपवान् पुत्री थइ सुलसानो स्वयवर पिताये कर्यो स्वयवरमा बीजा अनेक राजाउने बोलाव्या आवेला सर्व राजाउमां सगर राजा प्रबल सत्तावालो हतो सगर राजानी मदोदरी नामनी हजुरी दासी हती ते सगरनी आज्ञाथी प्रतिदिन अयोधन राजाना आवासमा जवा लागी. एक दिवस दिति पोताना बगीचाना कदलीगृहमां गइ, ते वखते सुलसानी साथे मंदोदरी पण त्या प्रछन्नपणे आवी छुपी रीते उभी रही मदोदरी गुप्तपणे सुलसा अने दिति बच्चे थती वात सांभलवा लागी दितिये कह्यु सुलसा! मारा मनमा तारा स्वयवर माटे बहुज चिंता छे ते चिंता दूर करवी ते तारे आधीन छे, वास्ते जरा धिरज राखी मारी वात साभल? श्रीरीषभदेव स्वामिने भरत अने बाहुबलि एवा बे पुत्रो थया भरतनो पुत्र सूर्ययश, अने बाहुबलिने चद्रयश नामनो पुत्र थयो जेउथी सूर्यवंश अने चद्रवंश चालेला छे चद्रवंशमा मारो भाइ तृणबिंदु नामा थयो, अने सूर्यवशमा तारा पिता (अयोधन) थया तारा पितानी बेहेन सत्ययशा तृणबिंदुनी भार्या थइ तेने मधुपिंगल नामनो मारो भत्रीजो छे हे सुंदरी! हु तने ते मधुपिंगलने आपवा चाहु छुं अने तु तो कोण जाणे कोने वरीश? आ शल्य मारा अत करणमा छे, वास्ते तारे स्वयंवरमा सर्व राजाउने तजी मारा भत्रीजा मधुपिंगलने वरवो सुलसाये मातानु कहेवु स्विकार्युं गुप्त रहेली मदोदरीये सर्व वृत्तांत सांभली ससगर राजाने कह्यो सगर राजाये पोताना विश्वभूति नामना पुरोहितने,

आदेश कर्यो के एवी युक्ति करो के जेथी सुलसा मने स्वयंवरमां वरे विश्वभूति मोटो कवि हतो. तेणे तत्काल राजाना लक्षणोनी संहिता बनावी ते संहितामां एवी रचना करी के ते सांभलतांज देखनाराउ सगर राजाने शुभ लक्षणवालो जाणे, अने मधुपिंगलने लक्षण हीन जाणे ते पुस्तक पेटीमां बंध करी राखी मुक्युं ज्यारे सर्व राजाउ स्वयवरमां एकठा थया, त्यारे सगरनी आज्ञाथी विश्वभूतिये ते पुस्तक बहार काढयुं. सगरे ते वखते कह्युं के स्वयंवरमां बेसनार जे लक्षणहीन होय तेने का तो मारी नाखवो, अथवा स्वयंवरथी बहार काढी मुकवो आ कहेवुं सर्वेये अंगीकार कर्युं पुरोहिते पुस्तक वाचवुं शरु कर्युं. जेम जेम पुस्तक वंचातु गयु तेम तेम मधुपिंगल पोताने लक्षणहीन मानी लज्जावान् थवा लाग्यो, अने पोतानी मेलेज स्वयंवरथी बहार निकली गयो आखरे सुलसाये सगरने वरी लीधो बीजा सर्व राजाउ पोतपोताने स्थानके गया. मधुपिंगल आ अपमानथी तापस थयो. बालतप करी साठ हजार वर्षना आयुवालो काल नामनो असुर परमाधामी थयो. अवधिज्ञानथी सगरनुं पुस्तक बनाववा संबधी सर्व कपट तेना जाणवामां आव्युं, तेथी विचार कर्यो के सगर राजा प्रमुखने हवे कोइ पण रीते मारुं महाकालासुर तेना छिद्रो जोवा लाग्यो ज्यारे शुक्तिमती नगरीनी नजीक पर्वतने जोयो, त्यारे ब्राह्मणनु रूप धारण करी पर्वतनी पासे आवी कह्युं के हे पर्वत! हु तारा पितानो मित्र छुं, मारु नाम शांडिल्य छे हुं तथा तारो पिता गौतम उपाध्यायनी पासे साथे भणता हता मारा सांभलवामां आव्यु के नारद तथा बीजा लोकोये तने बहुज दुःखी कर्यो छे, तेथी तारा पिताना संबधथी हुं तारो पक्ष करवा आव्यो छुं मंत्रोथी हुं लोकोने विमोहित करीश एम कही पर्वतने संतलसमां मेलवी लोकोने नरकमां नाखवावास्ते ते असुरे बहुज व्यामोह कर्यो व्याधि अने भूतादि उपद्रव युक्त लोकोने करी दीधा; पछी जे लोको पर्वतनुं कहेवुं मान्य करे तेउने सारा करी देतो हतो. शांडिल्यनी आज्ञाथी पर्वत पण लोकोने निरूपद्रव करवा लाग्यो उपकारथी लोको पर्वतना मतमां मलता थवा लाग्या हवे ते असुरे सगर राजा तथा तेनी राणीउने बहुज भारे रोगादिनो उपद्रव कर्यो. राजा पण पर्वतनो सेवक बनी गयो.

पर्वते शांडिल्यनी साथे मली तेना रोगो शांत कर्या. हवे पर्वते राजाने उपदेश कर्यो के हे राजन्! सौत्रामणि नामनो यज्ञ करी मद्यपान जो करवामां आवे तो तेमां बिलकुल दोष नथी तथा गोसव नामा यज्ञमां अगम्य (चांडाली) स्त्री तथा माता, बहेन, पुत्री प्रमुखनी साथे संजोग करवामां दोष नथी, अने मातृमेधमां मातानो अने पितृमेधमां पितानो, वध अतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां करवामां आवे तो दोष नथी वली कछुनी पीठ उपर अग्नि स्थापन करी तर्पण करवामां आवे,अने कदाचित् कछु न मले तो शुद्ध ब्राह्मणना मस्तकनी टटरी उपर अग्नि स्थापन करी होम करवामां आवे, कारण के टटरी पण कछुना जेवी होय छे, तो ते वातमां हिंसा नथी कारण के वेदोमां लख्यु छे के यत ॥ सर्वंपुरुषैववेदं यद्भूतं यद्भविष्यति ॥ इशानोय मृतत्वस्य, यदन्नेनातिरोहति ॥ १ ॥ भावार्थः जे कांइ छे ते सर्व ब्रह्मरूपज छे, ज्यारे एकज ब्रह्म छे, त्यारे कोण कोने मारे छे? तेथी यथारुचि यज्ञोमा जीवहिंसा करो, अने ते जीवोना मांस भक्षण करो, तेमां काइ पण दोष नथी, कारण के देवताना उद्देशथी मास पवित्र थइ जाय छे, इत्यादि उपदेश दइ सगर राजाने पोताना मतमां स्थापन करी अतर्वेदी कुरु क्षेत्रादिमां पर्वत यज्ञ करावतो हवो. ते अवसरनो लाभ लइ कालासुर राजसूयादि यज्ञो पण करावतो हवो. अने जे जीवोने यज्ञमां मारवामां आवता हता, तेउने देवमायाथी विमानमां वेसाडेला देखाडतो हतो, जेथी लोकोने यज्ञ करवा उपर प्रतीत थइ लोको निशक थइ जीवहिसारूप यज्ञ करवा लाग्या, अने पर्वतनो मत बहुज प्रसार पाम्यो सगर राजा पण यज्ञ करवामां बहुज तत्पर थयो आखर सुलसा अने सगर बने मरी नर्कमा गया नर्कमां महा कालासुरे सगर राजाना जीवने अनेक प्रकारना दुःख दइ वैर लीधु ते कारणथी हे रावण! पापी पर्वतथी आ जीवहिंसारूप यज्ञ विशेषे करी प्रवर्त्तेल छे. हे राजन्! आ यज्ञनो तमेज निषेध कर्यो आ कथा श्रवण करी रावणे नारदने प्रणाम कर्यो नारदजी विदाय थया जैनमतना शास्त्रोमां आ प्रमाणे वेदोनी उत्पत्ति छे ते आवश्यक सूत्र, आचारदिनकर अने त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र ग्रथथी जाणवी.

वर्त्तमान कालमा जे चारे वेद छे तेनी उत्पत्ति डाक्तर मोक्षमुलर

साहेव तेमना वनावेला संस्कृत साहित्य ग्रंथमां आ प्रमाणे लखे छे. वेदोमां वे जाग छे. एक छंदो जाग, वीजो मंत्र जाग. छदो जागमां एवा प्रकारनुं कथन छे के जाणे अज्ञानीउना मुखमांथी अकस्मात् वचनो निकलेलां होय तेनी उत्पत्ति एकत्रीशशो वर्ष उपर थयेल छे, अने मंत्रजाग वन्याने उंगणत्रीशसो वर्ष थयां छे आ लखवामां शुं आश्चर्य छे? कारण के कोइये उलट पालट करी नवीन वेदो वनाव्या पण होय. आ वेदो उपर अवट, सायण, रावण, महीधर अने शकराचार्य प्रमुखे जाष्यो वनावेलां छे टीका, दीपिकानी रचना करी छे. ते प्राचीन जाष्य, दीपिकाउने अयथार्थ जाणी दयानंद सरस्वति स्वामिये स्वमतानुसार नवीन जाष्य वनावी छे. पंडित व्राह्मणो दयानंद सरस्वतिनी जाष्यने प्रामाणिक मानता नथी हवे देखवानु मात्र ए छे के परिणाम शु आवे छे? जैनमतवालाउये तो ज्यारथी तेउना शास्त्रोमां लखवा मुजव आर्यवेद वगाडी नाखवामां आव्या, त्यारथी वेदोने मानवानुं तजी दीधेल छे ॥ इति वेदोत्पत्ति. ॥

ज्यारे श्रीरीषजदेव जगवान कैलास पर्वत उपर निर्वाण पाम्या, त्यारे सर्व देवता निर्वाण महोत्सव करवा आव्या. सर्व देवताउमां अग्निकुमार देवताये श्रीरीषजदेव जगवाननी चित्तामां अग्नि लगावी, त्यारथी आ श्रुति लोकोमां प्रसिद्ध थइ "अग्निमुखावै देवा" अर्थात् अग्नि कुमार देवता सर्व देवताउमां मुख्य छे; वली अल्पवुद्धिवानोये तो आ श्रुतिनो अर्थ एवो कर्यो के अग्नि, तेत्रीश क्रोड देवताउनुं मुखछे. प्रजुनुं निर्वाणस्वरूप आवश्यक सूत्रथी जाणवु

ज्यारे देवताउये श्रीरीषजदेवजीनी दाढा विगेरे लीधी, त्यारे श्रावक व्राह्मण मली देवताउने अति जक्तिथी याचना करता हवा देवताउ ते वहु जनोने वहुयत्नाथी याचनाथी पीडायेला देखी कहेता हवा. अहो याचको! अहो याचको! त्यारथी व्राह्मणो याचक कहेवावा लाग्या. वली व्राह्मणो ते वखते श्रीरीषजदेवजीनी चितामांथी अग्नि लइ पोतपोताना घरमां स्थापना करता हवा, ते कारणथी व्राह्मणो "आहिताग्नय" कहेवावा लाग्या.

श्रीरीषजदेवजीनी चिता प्रज्वलित थइ रह्या पछी दाढाप्रमुख सर्व दे-

वताउं लइ गया शेष जस्म रही ते ब्राह्मणोये पोते लीधी तथा थोडीथोडी लोकोने आपी लोकोये पोताना मस्तक उपर त्रिपुंडाकारथी लगावी, त्यारथी त्रिपुड करवु शरु थयु. इत्यादि बहु व्यवहार ते वखतथी शरु थयो.

जरते कैलास पर्वत उपर सिंहनिषद्या नामनुं मंदिर बनाव्युं, तेमां जविष्यमां थनारा त्रेवीश तीर्थंकरोनी तथा श्रीरीषजदेवजीनी मली चोवीश प्रतिमाउंनी स्थापना करी, अने दंडरत्नथी पर्वतने एवी रीते ठोलवामां आव्यो के जे उपर कोइ पुरुष पगोथी चडी शके नहि पर्वतमां आठ पगथीआ राख्यां जेथी कैलास पर्वतनुं नाम अष्टापद कहेवाय ठे, अने त्यारथीज कैलास महादेवनो पर्वत कहेवाय ठे महादेव अर्थात् मोटादेव ते श्रीरीषजदेव, अने तेनु स्थान कैलास पर्वत जाणवु

जरत अने बाहुबलि बने दीक्षा लइ मोक्षे गया जरतनी पठी सूर्ययश गादी उपर बेठा तेनी उलाद सूर्यवंशी कहेवाइ सूर्ययशनी गादी उपर तेनो पुत्र महायश बेठो तेज प्रमाणे अतिबल, महाबल, तेजवीर्य, कीर्तिवीर्य अने दंडवीर्य, अनुक्रमे पोतपोताना पितानी गादी उपर बेठा, अने पोतपोताना राज्य यथाशक्ति चलावता हवा जरतना राज्यथी तेउंनुं राज्य अरधु अर्थात् त्रण खंडनु रह्यु दरेक अंते जरतनी जेम राज्य ठोडी मोक्षमा गया तेउंनी पठी गादी उपर असख्य पाट थइ तेउंनी व्यवस्था चितांतर गंडिकाथी जाणवी यावत् जीतशत्रु राजा थया इति सक्षेपतः श्रीरीषजाधिकार संपूर्ण

हवे श्री अजीतनाथ स्वामिना समयनुं स्वरूप लखीए ठीए अयोध्या नगरीमा जरतनी पठी असख्य राजाउ थया बाद इक्ष्वाकु वशमां जीतशत्रु राजा थया विनीता नगरीनु बीजु नाम अयोध्या ठे हाल जे अयोध्या ठे, ते नही प्राचीन अयोध्या कैलास पर्वतनी पासे हती नवीन अयोध्या तेना नामथी वसेली ठे जीतशत्रु राजाने सुमित्र नामनो बधु युवराज हतो जीतशत्रुनी विजया नामा राणी हती. तेने चौद स्वप्न पूर्वक अजीत नामना पुत्र थया सुमित्रनी राणी यशोमतीने पण चौद स्वप्न देखवाथी सगर नामना पुत्र थया ज्यारे बने यौवनवंत थया त्यारे जीतशत्रु अने सुमित्र बने दीक्षा लइ मोक्षरूप थया हवे श्री अजीतनाथ राजा थया अने सगर युवराज थया केटलाएक

वखत सुधी राज्य करी श्री अजीत नाथजीए तो स्वयमेव दीक्षा लीधी. तप करी, केवलज्ञान पामी बीजा तीर्थंकर थया पठी सगर राजा थया, अने बीजा चक्रवर्ती पण थया सगर राजाए जरतनी जेम ठ खंडनु राज्य कर्युं. सगर राजाने जन्हुकुमार प्रमुख साठ हजार पुत्र थया तेउए दंड रत्नथी गगा नदीने असल प्रवाहथी फेरवी, कैलास पर्वतनी चारे बाजुए खाइ खोदी, ते खाइमां गगा नदीने लाव्या तेउए एवो विचार कर्यो के अमारा वडील जरतजीए आ पर्वत उपर सुवर्ण रत्नमय श्री रीषजादि तीर्थंकरोना मंदिर बनावेल ठे तेनी रक्षा वास्ते आ पर्वतनी चारे बाजुए खाइ खोदी तेमां गगानो प्रवाह लाववो जोइए. ते प्रमाणे गंगानो प्रवाह लाववाथी अने प्रथम खाइ खोदवाथी नागकुमार देवताउने बहुज उपसर्ग थयो, तेथी नागकुमार देवताउए ते साठ हजार पुत्रोने मारी नांख्या गंगाना जलथी देशमां पण बहुज उपद्रव थयो, जेथी सगर राजाना पौत्र जगीरथे सगरनी आज्ञाथी दंडरत्नथी जूमि खोदी गंगाने समुद्रमां मेलवी. तेज कारणथी गगानु नाम जान्हवी तथा जागीरथी पण कहेवाय ठे. सगर राजाए श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर जरतना बनावेला श्री रीषजदेवजीना मंदिरनो उद्धार कर्यो, तथा बीजां जैन तीर्थोनो पण उद्धार कर्यो. आ समुद्र पण जरत क्षेत्रमां सगर राजाज देवताना सहायथी लाव्या ठे. लंकाना टापुमां वैताढ्य पर्वतथी सगर राजानी आज्ञाथी धनवाहन पहेलो राजा थयो, अने लंकाना टापुनु नाम राक्षसद्वीप ठे, तेनो हेतु ए ठे के धनवाहन राजाना वंशजो राक्षस कहेवाया. आ वंशमांज रावण तथा विजीषणादि थया ठे; इत्यादि सगर चक्रवर्तीना समयनो वृत्तांत त्रेसठ शलाका पुरुष चरित्रथी जाणवो. आ चरित्रना तेत्रीश हजार काव्यो ठे, तेथी तेनो सघलो हेवाल आ ग्रंथमां लखी शकातो नथी, मात्र संक्षेपथी लखेल ठे सगर चक्रवर्ती राज्य करी श्री अजीतनाथजी पासे दीक्षा लइ, सयम तपथी केवलज्ञान पामी मोक्ष पहोंच्या श्री अजीतनाथ स्वामि पण समेत शिखर पर्वत उपर शरीरनो त्याग करी मोक्ष पाम्या, श्री रीषजदेव स्वामिना निर्वाण पठी पचास लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री अजीतनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या. ते पठी त्रीश

लाख कोडी सागरोपम व्यतीत थये श्री संजवनाथजी त्रीजा तीर्थंकर थया राज्य सर्व सूर्यवंशी, चड्रवंशी तथा कुरुवंशी आदि राजाउमां रह्यु इति श्री अजीतनाथ तथा सगर चक्रवर्ती अधिकार

श्रावस्ती नगरीमा इक्ष्वाकुवंशी जीतारि राजा राज्य करता हता, तेने सेना नामा पटराणी हती, तेने सजव नामना पुत्र त्रीजा तीर्थंकर थया, चोवीशे तीर्थकरना वर्णन प्रथम परिछेदमा यत्रमां तेमज गद्यमा लखी आव्या ठीए बीजा तीर्थंकरोनो वचमां जे अंतर ठे तेपण यत्रथी जाणी लेवु इती तृतीय तीर्थंकर वृत्तांत

तेमनी पठी अयोध्या नगरीमा इक्ष्वाकु वशी संवर राजा थया तेमनी सिद्धार्था नामनी राणीनी कुखे अजिनदन नामना चोथा तीर्थंकर थया. बाद अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी मेघ राजानी सुमगला राणी, तेना पुत्र सुमतिनाथ नामना पांचमा तीर्थंकर थया पठी कोसंबी नगरीमा इक्ष्वाकु वंशी श्रीधर राजानी सुसीमा राणी, तेना पुत्र पद्मप्रज नामना ठठा तीर्थंकर थया पठी वाणारसी नगरीमां प्रतिष्ट राजानी पृथ्वी नामा राणी, तेना पुत्र श्री सुपार्श्वनाथ नामना सातमा तीर्थंकर थया पठी चड्रपुरी नगरीमा इक्ष्वाकु वंशी महासेन राजानी लक्ष्मणा नामा राणी, तेना पुत्र श्री चड्रप्रज नामना आठमा तीर्थंकर थया पठी काकदी नगरीमां इक्ष्वाकु वशी सुग्रीव राजानी रामा नामा राणी, तेना पुत्र श्रीसुविधिनाथ, अपर नाम पुष्पदत नामना नवमा तीर्थंकर थया

अहींआ सुधीतो सर्व ब्राह्मणो जैनधर्मी श्रावक तथा चारे आर्य वेदो जे जरत राजाना समयमां रचवामां आव्या हता ते जणता हता ज्यारे नवमा तीर्थंकरनु तीर्थ विछेद थयुं, त्यारे ब्राह्मणो मिथ्यादृष्टि तथा जैन धर्मना द्वेषी अने जगत्ना पूज्य थया कन्या, जूमि अने गोदानादिना लेनारा थया सर्व जगत्मां उत्तम थया, सर्वना कर्त्ता हर्त्ता अने मतोना मालेक बनी गया सारांश ए ठे के सुनु घर देखी कुतरो पण माल खाइ जाय ठे वली जगत्मा जे जे पाखड तथा अनेक तरेहना देवताउनी पूजा तथा जे जे बीजा पण कुमार्गो प्रचलित थया ठे, ते सर्व तेउएज चलावेल ठे. साक्षात् आदीश्वर जगवाननी रचेली सृष्टि-

रूप अमृतमां ऊेर दाखल करनारा थया ठे, कारण के पूर्वे जैनमत तथा कपिलमत शिवाय वीजो कोइ पण मत नहोतो. कपिल मतवाला पण देव तो श्री आदीश्वर (रीषनदेव) जगवाननेज मानता हता. निदान आ हुंडा अवसर्पिणिमां सर्व आश्चर्य गणाय ठे

त्यार वाद नदिलपुर नगरमां इक्ष्वाकु वंशी दृढरथ राजानी नंदा नामा राणी, तेना पुत्र श्री शीतलनाथ नामना दशमा तीर्थंकर थया. आ तीर्थंकरना शासनमां हरिवंशनी उत्पत्ति थइ तेनी कथा लखीए ठीए.

कौशांबि नगरीमां वीरो नामनो कोली रहेतो हतो तेने वनमाला नामनी अत्यत रूपवंती स्त्री हती नगरना राजाये तेणीने हरण करी पोतानी स्त्री वनावी. वीरो कोली स्त्रीना विरहथी वावरो थइ गयो हा वनमाला! हा वनमाला! एम वोलतो वोलतो नगरमां फरवा लाग्यो. एकदा वर्षाकालमां राजा वनमालानी साथे मेहेलना ऊरूखामां वेठो हतो. राजा राणीये वीराने ते हालतमां देखी वहु पश्चाताप कर्यो, ठेवट निश्चय कर्यो के आपणे आ काम वहुज बुरूं कर्युं, तेज वखत वीजली पडवाथी राजा राणी वने मरीने हरिवर्षे क्षेत्रमां स्त्री, पुरुष युगलीया थया वीरो कोली राजा राणीनुं मरण सांजली राजी थयो, पठी तापस वनी तप करवा लाग्यो अज्ञान तपना प्रनावथी किल्विष देवता थयो. अवधिज्ञानथी राजा राणीने युगलीया थयेला देखी, विचार कर्यो के, आ नद्रक परिणामी तथा अल्पारंनी ठे, तेथी मरीने देवता थशे, तो पठी हु मारु वेर शीरीते लडश? तेथी एवो उपाय करुं के, जेथी तेउ वंने मरीने नर्कमां जाय. एवो विचार करी ते वनेने त्यांथी उगावी नरत क्षेत्रमां चंपा नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी चंडकीर्ति राजा अपुत्रीउं गुजरी गयो हतो, अने हवे आ नगरीनो राजा कोण थशे? एवी चितामां सर्व लोको जे आवी पड्या हता, तेउने देवताये आ वनेने सोंप्या, अने कह्युं के आ तमारो हरि नामनो राजा थशे. तेने तख्तनशीन करो? तेनी आ हरणी नामनी राणी ठे. तेउने खावावास्ते तमारे फल मिश्रित मांस आपवुं, अने तेउने शिकार करवानी टेव पाडवी. लोकोये तेज प्रमाणे कर्युं. तेउ वने पापमां आसक्त थवाथी मरीने नर्कमां गया तेउनी उलाद सर्व हरिवंशवाली कहेवाइ आ वंशमां वसुराजा थया. इति श्रीहरिवंशोत्पत्ति.

श्री शीतलनाथजीनु शासन पण विछेद गयुं तेवीज रीते पंदरमा तीर्थंकरसुधी सात तीर्थंकरोनां शासनो विछेद गयां, अने मिथ्याधर्म बहुज वृद्धि पाम्यो

श्रीशीतलनाथ पछी सिंहपुरी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी विष्णु राजानी विष्णुश्री नामाराणी, तेना पुत्र श्री श्रेयांसनाथ नामना अगीआरमां तीर्थंकर थया ते समयमा वैताढ्य पर्वतथी श्रीकंठ नामनो विद्याधरनो पुत्र, पद्मोत्तर विद्याधरनी पुत्रीनु हरण करी पोताना बनेवी राक्षस वंशी लंकाना राजा कीर्तिधवलने शरणे गयो कीर्तिधवले त्रणसें योजन प्रमाण वानरद्वीप तेउंने रहेवाने आप्यो तेउंना संतानोमाथी चित्र विचित्र विद्याधरोये विद्याथी वानरनुं रूप बनाव्यु वली वानर द्वीपमा रहेवाथी तथा वानरनु रूप बनाववाथी वानरवंशी प्रसिद्ध थया. तेउंनी उंलादमां वाली तथा सुग्रीवादि थया छे

श्रेयांसनाथजीना समयमां पेहेला त्रिपृष्ट नामना वासुदेव हरिवंशमां थया. तेनी उत्पत्ति आप्रमाणे– पोतनपुर नगरमां हरिवंशी जीतशत्रु नामनो राजा थयो तेने धारणी नामा राणी हती तेने अचल नामनो पुत्र अने मृगावती नामनी पुत्री थइ मृगावती अत्यंत खुब सुरत हती, ते यौवनवंती थइ एटले तेना पिताये तेणीने पोतानी राणी बनावी लीधी ते देखी लोकोये जीतशत्रु राजानु नाम प्रजापति पाड्युं अर्थात् पोतानी पुत्रीनो पति एवु नाम राख्यु तेज वखतथी वेदोमां आ श्रुति लखवामां आवी "प्रजापति वैंस्वाडुहितरमन्यध्यायद्दिव मित्यन्य आहुपुर समित्यन्येता मृश्योभूत्वा तदसावादित्यो नवत्"॥ जावार्थ प्रजापति ब्रह्मा पोतानी पुत्री साथे विषय सेवनने प्राप्त थता हवा. जैनमतवालाउंने आ अर्थथी काइ पण हानी नथी, परंतु जे लोकोये ब्रह्माजीने वेद कर्त्ता, हिरण्यगर्भना नामथी इश्वर मानेला छे, अने आ कथाने पुराणोमां लखेली छे, तेउंनी फजेती तो अवश्य बीजा मतवालाउं करशे तेमा अमे शुं करीये? कारण के जे पुरुष पोताना हाथथी पोतानु म्हों कालुं करे, तेने देखीने बीजाउं केम हासी न करे? यद्यपि मीमांसाना वार्त्तिककार कुमारिले आ श्रुतिना अर्थनु कलंक दूर करवावास्ते मनमानी कल्पना करेली छे, तथा वर्तमानमां दयानंदसरस्वति स्वामिये पण वेद श्रुतियोना कलंक

दूर करवावास्ते पोतानी बनावेली भाष्यमां अर्थोनी अत्यंत तोड फोड करेली छे, परंतु पुराणवालाउये जे कथा लखेली ते केवी रीते छुपावी शकशे? अमारा मतमां तो वेद श्रुति अने ब्रह्मा (प्रजापति) नो अर्थ यथार्थज करेल छे आ जीतशत्रु (प्रजापति) राजाने मृगावतीथी त्रिपृष्ट नामनो पुत्र थयो ज्यारे त्रिपृष्ट अने अचल बंने यौवनवंत थया, त्यारे तेउये त्रिखंडना राजा अश्वग्रीवने मारी त्रण खंडनुं राज्य कर्युं.

त्यार पछी चंपापुरीमां इक्ष्वाकुवंशी वसुपुज्य नामनो राजा थयो, तेनी ज्या नामा राणी तेनाथी श्रीवासुपुज्य नामना बारमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां बीजा द्विपृष्ट वासुदेव अने अचल बलदेव थया, अने तेउना प्रतिशत्रु रावण समान तारक नामना बीजा प्रतिवासुदेव थया आ सर्व वासुदेव,चक्रवर्ती आदिनुं संपूर्ण वर्णन त्रेसठ शलाका पुरुष चरित्रथी जाणवुं.

त्यार पछी कपिलपुरनगरमां इक्ष्वाकुवंशी कृतवर्मा नामा राजा थया, तेनी श्यामा नामा राणीना पुत्र श्रीविमलनाथ नामना तेरमा तीर्थंकर थया. तेमना समयमां त्रीजा स्वयंभु वासुदेव, भद्र नामा बलदेव, अने मैरक नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी अयोध्या नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी सिंहसेन राजा थया, तेनी सुयशा राणीना पुत्र श्री अनंतनाथ नामना चौदमा तीर्थंकर थया, तेमना समयमां चोथा पुरुषोत्तम वासुदेव, सुप्रभ नामना बलदेव अने मधुकैटभ नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी रत्नपुरी नगरीमां इक्ष्वाकुवंशी भानु नामना राजा थया, तेमनी सुव्रता नामनी राणीना पुत्र श्रीधर्मनाथ नामना पंदरमा तीर्थंकर थया तेमना समयमां पांचमा पुरुषसिंह नामना वासुदेव, सुदर्शन नामना बलदेव, अने निशुंभ नामना प्रतिवासुदेव थया. अहींआ सुधी पांच वासुदेव जे थया ते सर्वे अरिहंतना भक्त अर्थात् जैनधर्मी थया.

त्यार पछी पंदरमा धर्मनाथ अने सोलमा शांतिनाथजीना अंतरमां त्रीजा मघवा नामना चक्रवर्ती अने चोथा सनत्कुमार नामना चक्रवर्ती थया.

त्यार पछी हस्तिनापुरी नगरीमां कुरुवंशी विश्वसेन राजा तेमनी अचिरा राणीना पुत्र श्रीशांतिनाथ नामना सोलमा तीर्थंकर थया, ते प्रथ-

म गृहवासमां तो पांचमा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ केवली थइ तीर्थंकर थया

त्यारपछी हस्तिनापुर नगरमां कुरुवंशी सूर नामना राजा थया, तेनी श्रीराणीना पुत्र श्रीकुंथुनाथ थया प्रथम गृहस्थावासमां छठा चक्रवर्ती थया, पछी दीक्षा लइ सत्तरमा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी श्रीहस्तिपुर नगरमां कुरुवंशी सुदर्शन नामना राजा थया, तेनी देवी राणीना पुत्र श्री अरनाथ थया ते गृहस्थावासमां सातमा चक्रवर्ती थया, अने दीक्षा लीधा पछी अढारमा तीर्थंकर थया

अढारमा अने उगणीशमा तीर्थंकरना अंतरमा आठमा, कुरुवंशी सुजूम नामना चक्रवर्ती थया आ सुजूमना वखतमांज परशुराम थया. ते बनेनो सबध जैनमतना शास्त्रोने अनुसारे लखीये छीये.

योगशास्त्रमा लख्यु छे के वसतपुर नामना नगरमा उच्छन्नवंशी अर्थात् जेनो कोइ सबधी नहीं, एवो अग्निक नामनो एक छोकरो हतो एकदा अग्निक कोइ सथवारा साथे देशांतर जतां मार्गमां साथथी जूलो पडता जगलमां एक तापसना आश्रममां गयो. कुलपति तापसे तेने पोतानो पुत्र करी राख्यो अनुक्रमे अग्निक अत्यत घोर तप करी मोटो तेजस्वी थयो जगत्मां यमदग्नि तापसना नामथी प्रसिद्ध थयो ते अवसरे एक जैनमति विश्वानर नामनो देव तथा एक तापसोनो जक्त ध्वनतरि नामनो देव, बने जणा परस्पर विवाद करवा लाग्या विश्वानरे कह्युं के अरिहंतनो कथन करेलो धर्म प्रमाणिक छे, ध्वनंतरिये कह्यु के तापसोनो धर्म सत्य छे बनेना गुरुउनी परीक्षा करवी एम विश्वानरे सुचना करी ते बंने देवोये कवुल करी तेमां पण विश्वानरे कह्युं के जैनमतना जघन्य गुरुनी परीक्षा करवी अने तापसोना उत्कृष्ट गुरुनी परीक्षा करवी ते मारे कवुल छे प्रथम मिथिला नगरीनो पद्मरथ राजा जे नवोज जैनधर्मी थइ जावयति थयो हतो, ते चपानगरीमां गुरुनी पासे दीक्षा लेवा सारु जतो हतो. तेने रस्तामां ते देवताउये दीठो रस्तामा तेने दुःख देवावास्ते बहु कांटा कांकरा बनावी नाख्या, अने रस्ता शिवाय बीजा स्थानके बहु कीडा आदिनी उत्पत्ति करी राजा जावयति होवाथी शुद्ध जाव पूर्वक, कोमल उघाडा पगे कांटा कांकरा उपर चाल्यो जाय

छे. पगमांथी रुधिरनी धारा छुटे छे, तोपण जीववाली जूमि उपर पग मुकतो नथी. ते वखते देवताउंये गीत नाटकनो बहु मोहक प्रारंज कर्यो, तो पण राजा क्षोजायमान थयो नही, तेथी बने देवताउं सिद्ध पुत्रोनुं रूप करी राजाने कहेवा लाग्या, हे महाजाग! तमारु आयुष्य हजु लांबु छे. तेथी स्वछंद जोग विलास करो, कारण के योवनमां तप करवो ते वास्तविक नथी. ज्यारे वृद्ध थाउं, त्यारे दीक्षा लेजो आ वात सांजली राजाए कह्युं के जो मारुं आयुष्य लांबु छे, तो हु बहुज धर्म करीश. कारण के पाणी जेटलुं उडुं होय छे, तेटलीज कमलनी नाल पण वधी जाय छे, वली यौवनमां इन्द्रियोनो जय करवो, तेज खरो तप छे हवे बने देवताउंने खातरी थइ के आ राजा तो कदापि चलायमान थाय तेवो नथी. पछी बने देवताउं सर्वथी उत्कृष्ट जमदग्नि तापस पासे तेनी परीक्षा करवा आव्या. तेउंए, जेनी वडवृक्षनी जटानी जेम, धरतीनी साथे जटा लागी रही छे, तथा जेना पगोमां सर्प्पनी ववीउं बनी गइ छे, एवी स्थितिमां जमदग्नि तापसने दीछो. हवे बने देवताउं देवमायाथी जमदग्निनी दाढीमां मालो बनावी, चकला, चकली बनी, बने जणा मालामां बेठा पछी चकलो चकलीने कहेवा लाग्यो के हुं हिमवंत पर्वत उपर जइश चकलीए कह्युं के हु तने कदापि नहि जवा दउ, कारण के तु त्यां जइ कदाच कोइ चकलीमां आसक्त थइ जाय तो मारा शु हाल थाय? चकलाए कह्युं के जो हु फरीने पाछो न आवु तो मने गौहत्यानु पाप लागे. चकलीए कह्युं के हु आ तारा सोगनने मानती नथी, जे हु सोगन आपुं तें तुं कबुल करे, तो हु तने जवा दउं चकलाए कह्युं जले तुं जे सोगन आपवानी होय ते कही दे? चकलीए कह्युं के जो तु कोइ चकलीनी साथे यारी करे तो, आ जमदग्नि तापसनुं जे पाप छे ते तने लागे एम सोगन खा चकला चकलीना आ वचन सांजली जमदग्निने क्रोध उत्पन्न थयो, अने बंने हाथवती चकला चकलीने पकडी लीधा, अने तेउंने कहेवा लाग्यो के हुं पापनो अत्यत नाश करनार एवो महा दुष्कर तप करु छुं, छतां हवे मारे एवु कयु पाप बाकी रही गयुं छे के जेथी तमे मने पापी ठरावो छो? चकलाए कह्युं हे रुपि! तु अमारा उपर गुस्सो कर नही; कारण के अमे

असत्य बोल बोलता नथी, वली तने जे तारा तपनुं अभिमान छे, ते तारो तप निष्फल छे, कारण के तमारा शास्त्रमां लख्यु छे के "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" अर्थात् पुत्र रहितनी गति नथी, आ शु ते शास्त्रमां सांभल्यु नथी ? तो जेनी शुभगति न थइ तेनाथी अधिक पापी कोण छे ? हवे जमदग्निए विचार कर्यो के अमारा शास्त्रमां तो जेम चकलाए कह्युं तेमज छे तेथी फरी मनमां विचार आव्यो के, ज्यारे मारे स्त्री अने पुत्र नथी, त्यारे मारो सर्व तप एवो छे के, जेम पाणीना प्रवाहमां मुतरवु, तेवो छे हवे जमदग्निने मनमा स्त्रीनी चाहना थइ आ प्रमाणे देखी ध्वनंतरि देवता जैन धर्मी थयो बंने देवताउ त्यांथी अदृश्य थइ गया. जमदग्नि त्यांथी उठी नेमिककोष्टक नगरमां जीतशत्रु राजा पासे गयो राजाने बहु पुत्रीउं हती, तेथी तेनी एक पुत्री मागु, एवो विचार कर्यो. राजा पण रुषिने देखी आसनथी उठी बे हाथ जोडी प्रणाम करी कहेवा लाग्यो के आप शा वास्ते अत्रे पधार्या छो ? मने आदेश करो ? आपनु जे काम होय ते हु करीश जमदग्निए कह्युं, हु तारी पासे तारी एक कन्या मांगवा आव्यो छुं. राजाए कह्युं, मारे (१००) सो पुत्रीउं छे, तेमांथी जे तमारी चाहना करे, ते तमे सुखे लइ जाउं जमदग्नि कन्याउना मेहेलमां गया, अने कहेवा लाग्या के तमारामांथी जेने मारी धर्मपत्नी थवु होय ते कही द्यो ते राजपुत्रीउंए जटावाला, ताल पडेला तथा धोला केशवाला, दुर्बल अने भीख मागी खानारा जमदग्निने दीठो, अने तेनु आ वचन सांभल्युं, त्यारे सवे तेनी उपर थुकवा लागी, अने कहेवा लागी के आवी वात करतां तने लज्जा आवती नथी ? तेउना अपमानथी जमदग्निने क्रोध चड्यो, अने विद्याना प्रभावथी ते राजपुत्रीउंने महा कुरुपवान् बनावी दीधी, अने पोते त्यांथी निकली मेहेलोना आंगणामां आव्या, त्या राजानी नानी पुत्री रेतीना ढगलामां रमती हती, तेने, हाथमा बिजोरानुं फल लइ कहेवा लाग्यो के हे रेणुका ! तु मने वांछे छे ? ते बालिकाए बिजोरु देखी हाथ पसार्यो, तेथी रुषिए कह्यु के आ मने वाछे छे, एम कही मुनिए तेने लइ लीधी. राजाए केटलीक गाय तथा धन आपी पुत्रीनो विवाह तेनी साथे विधि पुर्वक कर्यो. पछी जमदग्निए पोतानी सर्वे सालीउंने

स्नेहथी रूपाली करी, अने रेणुकाने लइ पोताना आश्रममां आव्या. ते मुग्धा, मधुर आकृति, हरिणाक्षीने प्रेमथी वृद्धि पमाडता हवा. आंगलीउं उपर दिवस गणतां अनुक्रमे ज्यारे रेणुका सुंदर यौवन रूप कामलीलायुक्त वनने प्राप्त थइ, त्यारे, जमदग्निए अग्निनी साक्षीए रेणुकानी साथे फरी लग्न कर्युं. ज्यारे रेणुका रुतुकालने प्राप्त थइ, त्यारे जमदग्नि कहेवा लाग्या के हे प्रिये! हुं तारा वास्ते चरु साधुं छुं. "चरु ते होममां नाखवानी वस्तुउं कहेवाय छे" जेना प्रतापथी सर्व ब्राह्मणोमां उत्तम प्रतापवालो तने एक पुत्र थशे. रेणुकाए कह्युं हस्तिनापुरमां कुरुवंशी अनंतवीर्य राजानी साथे मारी एक वेहेन परणावी छे. तेने वास्ते एक क्षत्रीय चरु पण साधो, पछी जमदग्निए ब्राह्मण चरु पोतानी भार्या वास्ते, अने क्षत्रिय चरु पोतानी भार्यानी वेहेन वास्ते सिद्ध कर्यो हवे रेणुकाए मनमां विचार कर्यो के हुं जेम अटवीमां हरणीनी जेम रहुं छुं तेम, मारो पुत्र पण जंगलोमां तेवीज रीते रहेशे, तेथी क्षत्रिय चरु जो हुं भक्षण करुं तो मने राजपुत्र थाय, जेथी जंगलवासथी छुटे, एवो विचार करी क्षत्रिय चरु पोते खाइ लीधो, अने ब्राह्मण चरु पोतानी वेहेनने खवराव्यो बंनेने पुत्रो प्रसव्या रेणुकाए जे पुत्र प्रसव्यो तेनुं नाम राम पाड्युं, अने तेनी वेहेननां पुत्रनु नाम कृतवीर्य पाड्यु अनुक्रमे बने मोटा थया राम आश्रममां मोटो थयो, कृतवीर्य राजमेहेलोमां मोटो थयो. राम क्षत्रिय तेज देखाडवा लाग्यो. अन्यदा एक विद्याधर अतिसार रोगवालो ते आश्रममां आवी पहोच्यो, अतिसारना कारणथी आकाशगामिनी विद्या भूली गयो. ते मांदा विद्याधरनी रामे औषध, पथ्यादिथी भाइनी जेम आसना वासना करी. विद्याधरे संतुष्ट थइ रामने परशुविद्या आपी. राम पण सरकडाना वनमां जइ ते विद्या सिद्ध करवा लाग्यो ते विद्याना प्रभावथी राम जगत्मां परशुराम नामथी प्रसिद्ध थयो एकदा रेणुका, जमदग्निनी आज्ञा लइ उत्कंठाथी पोतानी वेहेनने मलवावास्ते हस्तिनापुरमां गइ रेणुकाने पोतानी साली जाणी अनंतवीर्य राजा मश्करी करवा लाग्यो, अनुक्रमे कामासक्त थवाथी निरंकुश थइ रेणुका साथे विषय सेवन करवा लाग्यो अनंतवीर्यना भोगथी रेणुकाने एक पुत्र थयो, छतां विषयमां अ-

तिलुब्ध एवो जमदग्नि, दोष तरफ बिलकुल दृष्टि नहि करतां रेणुकाने पुत्र सहित पोताना आश्रममां लाव्यो ज्यारे परशुरामे पोतानी माताने पुत्र सहित दीठी, त्यारे अत्यत क्रोधमा आवी परशुथी पोतानी माता तथा ते छोकराना मस्तक कापी नांख्या ज्यारे आ वृत्तात अनंतवीर्य राजाना जाणवामां आव्यो, त्यारे क्रोध युक्त, फोज साथे आवी जमदग्निनु आश्रम बाली भस्म कर्युं, सर्व तापसोने त्रास पमाड्यो. तापसोये भागतां भागतां जे रोलो कर्यो ते परशुरामे सांभल्यो, सर्व वृत्तात जाणवामा आवतां परशुराम, राजानी सेना उपर परशु लइ चडी आव्यो परशुथी राजाने तथा तेनी सेनाना सर्व सुभटोने काष्टनी जेम चीरी नाख्या पछी पोताना आश्रममां चाल्यो गयो हस्तिनापुरमां प्रधान राजपुरुषोये कृतवीर्यने राज्यसिंहासन उपर बेसाड्यो कृतवीर्य उमरमां नानो हतो. एक दिवस पोतानी माताना मुखथी पोताना पिताना मोतनुं वृत्तांत सांभली क्रोधयुक्त थइ, जमदग्निने आश्रममा आवी मारी नांख्यो. परशुराम पितानो वध सांभली क्रोधमा जाज्वल्यमान थइ हस्तिनापुर आवी कृतवीर्यने मारीने पोते राज्यसिंहासन उपर चडी बेठो, कारण के राज्य पराक्रमने आधीन छे हवे कृतवीर्यनी तारा नामा गर्भवती राणी परशुरामना भयथी भागीने कोइ जगलमां तापसोना आश्रममा गइ तापसोये दयाथी ते राणीने पोताना मठना भोंयरामा निधाननी जेम गुप्त राखी राणीये चौद स्वप्न सुचित पुत्रने जन्म आप्यो तेनु नाम सुभूम राख्यु हवे परशुराम ज्यां ज्यां क्षत्रियनो योग मले त्या त्यां तेनो कुहाडो जाज्वल्यमान थतो होवाथी दरेक क्षत्रियनो शिरछेद करतो. अन्यदा तारा राणी ज्यां गुप्तपणे पुत्रसहित रहेली हती त्यां परशुराम आव्यो परशुरामनी परशु जाज्वल्यमान थइ परशुरामे तापसोने पुछ्युं, अहींआ कोइ क्षत्रिय छे ? तापसोये कह्युं अमे गृहस्थावासमां क्षत्रियो हता ते सांभली परशुरामे तापसोनो आश्रम तजी दीधो आखर सर्व ऋषियोने छोडी सातवार नि:क्षत्रिय पृथ्वी करी जेम अग्नि पर्वत उपर घासने बाकी राखती नथी, तेम परशुरामे जे जे क्षत्रिय राजाप्रमुख प्रसिद्ध हता, ते सर्वेने मारी, तेउनी दाढाथी एक थाल भर्यो हवे परशुरामे गुप्तपणे निमित्तियाउने पुछ्युं के मारु मोत कोना हाथथी थशे ? निमित्तियाउये क-

हुं के जे थाल तमोये दाढाथी जरेल छे, ते थालमां जे पुरुषना देखवाथी दाढानी कीर वनी जशे, अने आपना सिंहासन उपर वेसी जे ते कीरने खाशे, तेना हाथथी तमारुं मरण थशे. आ निमित्त सांजली परशुरामे दानशाला शरू करी. दानशालानी आगल एक सिंहासननी रचना करी. ते उपर क्षत्रियोनी दाढावालो स्थाल राख्यो हवे तापसोना आश्रममा प्रतिदिन तापसोना लाडथी उछरतो वृक्षनी जेम सुजूम वृद्धि पाम्यो. ते अवसरे मेघ नामना विद्याधरे कोइ निमित्तियाने पुछ्युं के मारी पद्मश्री नामनी कन्यानो कोण वर थशे? निमित्तियाये कह्यु के सुजूम वर थशे, एम कही सुजूमनो वृत्तांत मेघ विद्याधरने कह्यो. मेघ विद्याधरे पोतानी पुत्री सुजूमने परणावी, अने सेवकनी जेम तेनी पासे रहेवा लाग्यो एकदा सुजूमे पोतानी माताने पुछ्युं हे माता! जेमां आपणे रहीये छीये तेटलोज लोक छे के तेनाथी अधिक पण छे? माताये कह्युं, लोक तो अनंत छे, अने आ आश्रमस्थान तो मांखीना पग जेटली जगामां छे. आ लोकमां वहुज प्रसिद्ध हस्तिनापुर नामनु नगर छे. ते नगरीमां तारा पिता कृतवीर्य नामना राजा राज्य करता हता, परंतु परशुराम तारा पिताने मारी हस्तिनापुरनो राजा वनी गयो छे. ते परशुरामे निःक्षत्रिय पृथ्वी करेली छे परशुरामना जयथीज अमे आ आश्रममां गुप्तपणे रहीये छीये. माताना आ वचनो सांजली सुजूम मंगलना तारानी जेम लाल थयो आश्रमथी निकली सिधो हस्तिनापुरमां आव्यो लोकोये तेने दीठो, त्यारे विचारवा लाग्या के आवो अद्भूत सुदर पुत्र कोनो हशे? पुछतां सुजूमे कह्युं, हु क्षत्रिय पुत्र छुं. लोकोये कह्युं, तु वलती अग्निमां पतंगीआनी जेम केम आव्यो? सुजूमे कह्युं, परशुरामने मारवा आव्यो छुं लोकोए तेने वालक जाणी तेना वोलवा उपर कांइ ख्याल न कर्यो हवे सुजूम सिंहनी जेम पूर्वोक्त सिंहासन उपर जइ वेठो. तत्काल देवताना विनियोगथी दाढानी कीर वनी गइ. सुजूम ते खावा लाग्यो रक्षपाल ब्राह्मणो तत्काल सुजूमने मारवा उठ्या, ते वखते मेघनाद विद्याधरे सर्व ब्राह्मणोने मारी काढ्या. आ वृत्तांत जाणी परशुराम कंपतो, दांत पीसतो, क्रोधथी जाज्वल्यमान थतो, परशु लइ सुजूमने मारवा आव्यो. सुजूमने मारवा परशु चलावी, परंतु ते परशु सुजूम

सुधी पहोंचतां पेहेलांज आगना अगारानी जेम ठलवाइ गइ परशुनी विद्यादेवी सुभूमना पुण्य प्रभावथी परशु छोडी नासी गइ सुभूमे शस्त्रना अभावथी तत्काल थालज उगावीने परशुराम उपर फेंक्यो, ते थालनु चक्र बनी गयु ते चक्रे परशुरामनुं मस्तक कापी नांख्युं ते चक्रथीज सुभूम आठमो चक्रवर्ती थयो

आ कथा उपर लौकिक शास्त्रमां नवीन कथा बनाववामां आवी छे, परंतु ते वास्तविक नथी नवीन कथा एवी छे के परशुराम परशुथी क्षत्रियोने मारतो मारतो रामचन्द्रजी पासे पहोंच्यो, अने परशुथी रामचन्द्रजीने मारवा लाग्यो रामचन्द्रजीये नम्रताथी तेनी पगचपी करी, तेनुं तेज हरी लीधु, तेथी परशुरामनी परशु तेना हाथमांथी नीचे पडी गइ, जे परशु ते फरीथी उपाडी शक्यो नही. इत्यादि हवे सार लेवानो ए छे के-- नवीन वात कोइ पण रीते साची ठरे तेम छे ? परशुराम एक अवतारी पुरुष हता तेनी हीनता दूर करवा वास्ते श्रीरामचन्द्रजीनो संबध लखी बताव्यो छे ते संबध बतावता एक अवतारना अंशने बीजा अवतारे खेंची लीधो, तेमां परशुरामनी लघुता बतावी एटलुज नहि पण एवो पण विचार न कर्यो के बने अवतार अज्ञानी बनी जशे ज्यारे परशुराम पोते पोतानाज अगने कुहाडाथी कापवा लाग्या, त्यारे तेना करतां अधिक कोण अज्ञानी कहेवाय ? तेथी वास्तविक ए छे के जेनी पासे परशुरामनी परशु पडी गइ ते रामचंद्रजी न हता, परतु ते आठमो सुभूम चक्रवर्ती हतो ज्यारे सुभूम चक्रवर्ती थयो, त्यारे जेम परशुरामे सातवार नि क्षत्रिय पृथ्वी करी हती, तेम पाछला वेरथी सुभूमे एकवीश वार निर्ब्राह्मणी पृथ्वी करी पोतानी जाण प्रमाणे कोइ पण ब्राह्मण जीवतो राख्यो नही तेज कारणथी आ राजाओने ब्राह्मणोये दैत्य, राक्षसना नामथी पुस्तकोमां लखेल छे बन्ने मरीने अधोगतिमा गया इति परशुराम तथा सुभूम चक्रवर्ती वृत्तांत

सुभूम चक्रवर्ती पेहेला तेज अतरमां छठ्ठा पुरुषपुडरिक वासुदेव, आनंद नामना बलदेव अने बलि नामना प्रतिवासुदेव थया, तथा सुभूमनी पछी तेज अंतरमा दत्त नामना सातमा वासुदेव, नंद नामना बलदेव, अने प्रल्हाद नामना प्रतिवासुदेव थया.

त्यार पछी मिथिलानगरीमां इक्ष्वाकुवंशी कुंभ राजा थया,तेनी प्रभावती राणीनी पुत्री मल्लिनाथ नामा उगणीशमा तीर्थंकर थया.

त्यार पछी राजगृह नगरीमां हरिवंशी सुमित्र राजा थया, तेनी पद्मावती राणीना पुत्र मुनिसुव्रत नामना वावीशमा तीर्थंकर थया तेमना समयमां महापद्म नामना नवमा चक्रवर्ती थया तेनो संवंध त्रेशठशलाकापुरुषचरित्रथी जाणवो, परंतु तेना भाइ विष्णुकुमारनो थोडो संवध अहींआ लखीये छीये

हस्तिनापुर नगरमां पद्मोत्तर नामना राजानी ज्वालादेवी राणीने वे पुत्रो थया. मोटानु नाम विष्णुकुमार अने नानानुं नाम महापद्म हतुं ते अवसरे अवंती नगरीमां श्रीधर्म नामनो राजा हतो तेनो मंत्री नमुचि के जेनु वीजुं नाम वल हतुं ते मिथ्यादृष्टि व्राह्मण हतो. तेणे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिना शिष्य सुव्रत आचार्यनी साथे पोताना मत संवधी विवाद कर्यो. वादमां ते हारी जवाथी, रात्रिये तलवार लइ आचार्यने मारवा चाल्यो रस्तामां पग थंभ्या आ वृत्तांत राजाना जाणवामां आवतां तेणे नमुचिने राज्यनी हदपार कर्यो नमुचि (वल) त्यांथी निकली हस्तिनापुरमां युवराज महापद्मनी सेवा करवा लाग्यो तेनाथी कोइ काममां तुष्टमान थइ जवाथी महापद्मे तेने वरदान आप्युं. कालानुक्रमे पद्मोत्तर राजा तथा विष्णुकुमार वंन्ने सुव्रताचार्यनी पासे दीक्षा लेता हवा पद्मोत्तर राजा मोक्ष पाम्या, अने विष्णुकुमार तपना प्रभावथी महा लब्धिवान् थया अनुक्रमे सुव्रताचार्य फरी हस्तिनापुरमां आव्या. ते वखते नमुचिवले विचार कर्यो के आ अवसर वेर लेवानो छे; तेथी महापद्म चक्रवर्तीने विनंति करी के, जेम वेदमां कहेल छे तेम हु एक महायज्ञ करवा इछुतुं, तेथी मने पूर्वोक्त आपेलुं वरदान सफल करो महापद्मे कह्युं सुखेथी मांग नमुचिये कह्युं के मने केटलाएक दिवससुधी आपनुं तमाम राज्य सत्तासहित आपो. ते सांभली महापद्म तेनी चाहना मुजव सर्व राज्यसत्ता आपी पोताना अंत:पुरमा चाल्या गया हवे नमुचिये नगरथी निकली यज्ञवास्ते यज्ञमंडप वनाव्यो पोते दीक्षा लइ तेनी अंदर आसन उपर वेठो ते वखते जैन मतना साधु शिवाय वीजा सर्व सन्यासी, भिक्षु, तेमज गृहस्थो भेटणा लइ नमस्कार करवा आव्या. ते

प्रसंगे नमुचिये कह्यु के आ यज्ञ मंडपमां नथी आव्या एवा कोइ बाकी छे ? लोकोये कह्यु के जैनमतना सुव्रताचार्य शिवाय बीजा सर्वे दर्शनवाला आवी गया छे तत्काल नमुचिये क्रोधयुक्त थइ आचार्यने बोलाववा वास्ते सिपाइउने मोकल्या, अने तेउनी साथे कहेवराव्यु के राजा गमे तेवो होय तोपण सर्वने मानवा योग्य छे, तेमा पण साधुउने तो विशेष रीते मानवा योग्य छे, कारण के राजाथी उपरांत एवा अनाथ लिंगीउनी रक्षा करनार बीजो कोण छे ? वली तमे अमने कांइ पण करवाने समर्थ नथी. कदापि तेउ अहींआ न आवे तो कहेवु के तमे बहु अभिमानी छो, तथा अमारा धर्मना निंदक छो, तेथी मारा राज्यथी बहार निकली जाउ ? जे रहेशे तेउने हु मारी नांखीश, अने तेमां मने पाप पण लागवानु नथी. सिपाइउना उपर मुजब जहांगीरी संदेसाथी आचार्ये आवी मीठा वचनथी कह्युं के गृहस्थना काममां जवु ते अमारो कल्प (आचार) नथी अमे अभिमानथी आव्या नथी एम आप समजशो नहि, कारण के साधुउ तो समभावथी पोताना धर्मकृत्योमा प्रवर्त्ते छे ते सांभली नमुचिवले कठोर वचनथी शांतवृत्तिवाला मुनियोने कह्यु के, सात दिवसनी अंदर तमे सर्वे मारा राज्यनी बहार निकली जाउ, त्यार बाद जेउ रहेशे तेउने हु मारी नाखीश ते हुकम सांभली सर्व मुनियो पोताना तपोवनमां गया, अने विचार करवा लाग्या के हवे शु उपाय करवो ? एक साधुए विचार करी कह्युं के महापद्म चक्रवर्तीना मोटा भाइ विष्णुमुनि लब्धिपात्र छे, अने ते मेरुपर्वत उपर छे, तेना कहेवाथी नमुचिवल प्रशांत थशे, ते कारणथी कोइ चारण साधु तेने अहींआ बोलावी लावे तो सारु थाय तत्काल एक साधु बोल्या के मारी त्यांसुधी जवानी शक्ति छे, परतु पाछा आववानी शक्ति नथी गुरुए कह्यु, तमने अहींआ विष्णुमुनि लइ आवशे, तमे जाउ ते साधु एक क्षणमा लब्धिथी त्या गया, अने विष्णुमुनिने सर्व वृत्तात सभलाव्यो. विष्णुमुनि तत्काल त्यांथी निकली साधुने साथे लइ गुरुनी पासे आव्या, अने वंदना करी पछी गुरुनी आज्ञाथी एकलाज राजसभामा आव्या ते वखते नमुचिवल विना सभाना सर्व लोकोये उठीने तेमने वदना करी विष्णुमुनिये धर्मोपदेश दइ कह्युं के नि संगी साधुउ साथे वेर खेडवु ते महा नर्कनु

कारण छे, कारण के साधु कोइनुं बगाडता नथी. वली जगत् पण मोटा पुरुषोने नमस्कार करे छे. कोइ शास्त्रमां मुनिनी निंदा करवी कही नथी, छतां पण आश्चर्यमात्र ए छे के, तुछ तथा क्षणिक, राज्य पामी अधम पुरुष मुनिउनु अपमान करी पोताने मुनिउ पासे नमस्कार कराववा चाहे छे, वली नमुचिबलने तेमणे कह्युं के तु आ बुरु काम करवुं जवा दे, जेथी सर्वे साधुउ सुखे रहे; वली तुं मत्सरमां मग्न थइ पोतानु पोते शावास्ते बगाडवा चाहे छे ? साधुउ चोमासामां विहार करता नथी, कारण के चोमासामां जीवोनी बहुज उत्पत्ति थइ जाय छे वली सर्वे जगोए तारुंज राज्य छे, तो सर्वे साधु सात दिवसमां क्यां चाल्या जाय ? विष्णुमहाराजना वचन सांजली नमुचिबल कुकाष्ठनी जेम अक्कड थइ बोल्यो के बहु बोलवानु कांइ प्रयोजन नथी. पांच दिवस उपरांत जो तमारो साधु मारा राज्यमां रहेशे, तो हुं तेने चोरनी जेम बांधीश वली तु पण अमने मानवा योग्य छे, तेथी तु जइने साधुउने कही दे के जेउने जीववानी चाहना होय ते नमुचिना राज्यथी बहार चाल्या जाय, कारण के राज्य ब्राह्मणनु छे वली तारा मानने खातर त्रण कदम अर्थात् त्रण पगलां जेटली जग्या आपु छुं, तेनी बहार कोइ साधुने देखीश, तो तेनो शिरछेद करीश. विष्णुमुनिये विचार्यु के आ पुरुष, साम अर्थात् मीठा वचनोथी समजी, माने तेवो नथी आ तो महा पापी अने साधुउनो घातक छे, तेथी तेनी जडज उखेडवी जोइये एवो निश्चय करी अत्यत कोपमां आवी विष्णुमुनिये वैक्रिय लब्धिथी पोतानुं शरीर एक लाख योजननुं बनाव्युं. एक पगलाथी जरत क्षेत्रादि माप्या, बीजुं पगलुं पूर्वापर समुद्र उपर धरी, त्रीजु पगलुं नमुचिबलना मस्तक उपर मुक्यु, जेथी नमुचिबल सिंहासन उपरथी पडी जमीननी अदर उतरी गयो तत्काल मरण पामी नर्कमां गयो देवताउये विष्णुमुनिने मधुर गीत तेना कानमां संजलावी शांत कर्या, पछी शरीर सकोची गुरुपासे आवी आलोचना करी. पापनुं प्रायश्चित्त लइ विहार करी गया जप,तप,करी सयम पाली मोक्षे गया.

आ कथाथी एम मालम पडे छे के ब्राह्मणोये पुराणोमां जे लख्यु छे के, विष्णु जगवाने वामनरूप करी यज्ञ कर्त्ता बली राजानी साथे छलना करी. ते आज विष्णुमुनि अने नमुचिनी कथा समजवी. ते कथाने ब-

गाडी पोताना मतने अनुसारे कांइनी कांइ कथा बनावी लीधी छे. सार काढवानो ए छे के श्री जगवानने एवी शु गरज हती के धर्मी तथा यज्ञ करनारा वलि राजा साथे छलजेद करी तेने नुकशान करवुं ? एवु काम तो नि केवल वुद्धिहीन पुरुषोनुं छे, के पोतानी पुत्रियो तथा परस्त्रीयो साथे विषय सेवन करवानी वातो करवी वली जगवान असत्य वोल्या, वीजा पासे असत्य वोलाव्यु, चोरी करी, वीजानी साथे कुशील सेवन कर्युं, छलथी वीजाने मार्या, कपटना काम कर्यां इत्यादि काम तो नीच जनोने करवा योग्य छे. श्री वीतराग, सर्वज्ञ परमेश्वर आवां काम कदापि करता नथी एवां काम करनारने, परमेश्वर, जूलथी पण न मानवा जोइये इति विष्णुमुनि तथा नमुचिवलनो सवंध

वीशमा अने एकवीशमा तीर्थंकरना अतरमा श्री अयोध्या नगरीना दशरथ राजानी कौशल्या राणीना पद्म (रामचन्द्र) नामना पुत्र थया ते आठमा वलदेव, अने दशरथ राजानी सुमित्रा राणीना पुत्र नारायण (लक्ष्मण) थया, ते आठमा वासुदेव थया जेनो शत्रु, रावण प्रतिवासुदेव लकानो राजा थयो आ सर्व वृत्तात जगत्मां प्रसिद्ध छे आ त्रणेनु यथार्थ चरित्र पद्मचरित्रथी जाणवु लौकिक रामायणमां रावणना दश मस्तकनी जे वीना लखेली छे, ते वास्तविक नथी मनुष्यने स्वजाविक रीते दश मस्तक कदापि होइ शकता नथी पद्मचरित्रना प्रथम अनुयोगमां लख्यु छे के रावणनी पासे वडीलोनी परंपराथी नव माणेकनो एक मोटो हार चाल्यो आवतो हतो रावणे वाल्यावस्थाथी पोताना गलामां ते पेहेरी लीधो हतो नवे माणेक वहुज मोटां हतां चार माणेक एक वाजुना स्कध उपर अने पांच माणेक वीजी वाजुना स्कध उपर हारमा जडेलां रहेतां अने तेमां नव मुखो देखातां हता दसमु रावणनु असल मुख, तेज कारणथी दसमुखवालो रावण कहेवातो हतो रावणना समयथीज हिमालयमां वद्रीनाथनु तीर्थ उत्पन्न थयेल छे तेनी उत्पत्ति जेनमतना शास्त्र मुजव आ प्रमाणे जणाय छे ते मूर्त्ति, असली पार्श्वनाथनी हती, तेनुज नाम वद्रीनाथ राखवामां आव्यु. तेनुं सपूर्ण स्वरूप गद्यवध पार्श्वपुराणथी जाणवु

त्यार पछी मिथुला नगरीमा इक्ष्वाकु वंशी विजयसेन राजानी विप्रा

राणीना पुत्र श्री नमिनाथ नामना एकवीशमा तीर्थंकर थया. तेना समयमां हरिषेण नामना दशमा चक्रवर्ती थया, तथा एकवीशमा अने बावीशमा तीर्थंकरना अंतरमां अगीआरमा जय नामा चक्रवर्ती थया.

त्यार पछी सौरीपुर नगरमां हरिवंशी समुद्रविजय राजानी शिवादेवी राणीना पुत्र श्री अरिष्टनेमि नामना बावीशमा तीर्थंकर थया, तेना समयमां तेमना काकाना पुत्र नवमां कृष्ण वासुदेव अने राम (बलन्नद्र) बलदेव थया. तेना प्रतिशत्रु जरासिंधु प्रतिवासुदेव थया तेमां कृष्ण अने बलदेव तो जगत्मां बहुज प्रसिद्ध छे, कारण के लोको श्री कृष्ण वासुदेवने साक्षात् इश्वर तथा इश्वरना अवतार, जगत्कर्त्ता माने छे. आ वात कृष्ण वासुदेव जीवता छतां तो बिलकुल हतीज नहि, परंतु तेमना मरण पछी लोको कृष्ण वासुदेवने इश्वरावतार मानवा लाग्या छे शा कारणथी तेम मानवा लाग्या, तेनो हेतु त्रेशठ शलाका पुरुष चरित्रमां आ प्रमाणे लखेल छे

ज्यारे कृष्ण वासुदेवे कोशवी वनमां पोतानु शरीर छोड्युं, एटले तत्काल वालुप्रन्ना पृथ्वी (पाताल) मां गया बलन्नद्रजी एकसो वर्ष सुधि जैनदीक्षा पाली पांचमां ब्रह्म देवलोकमां गया. अवधिज्ञानथी पोताना नाइ श्री कृष्णने पातालमां त्रीजी पृथ्वीमां देखी, नाइना स्नेहथी वैक्रिय शरीर बनावी श्री कृष्णनी पासे पहोच्या श्रीकृष्णने आलिंगन करी कह्युं के हुं बलन्नद्र नामनो तमारा पाछला न्नवनो नाइ छुं. तमारी उपरना स्नेहथी अहींआ तमने मलवा आव्यो छुं हवे तमारा सुखने वास्ते हुं शुं करुं ते तमो फरमावो ? एम कही बलन्नद्रजीए कृष्णने पोताना हाथ उपर लीधा कृष्णनुं शरीर तत्काल पारानी जेम हाथ उपरथी जमीन उपर ढली पड्युं, अने पोताना मूल स्वरूपे बनी गयु ते प्रमाणे प्रथम आलिंगन करवाथी, तथा वृत्तांत कहेवाथी अने हाथ उपर उपाडवाथी कृष्णे पण जाण्यु के आ मारो पूर्व न्नवनो अति वह्लन्न नाइ बलन्नद्र छे. हवे कृष्णे संन्रमथी उठी नमस्कार कर्यो, त्यारे बलन्नद्रजीए कह्यु, हे नाइ ! श्री नेमिनाथजीए आपने कह्युं हतुं के आ विषयसुख महा दुःखदायक छे, ते तमे प्रत्यक्ष अनुन्नव कर्यो, वली कर्मनियन्त्रित एवा तमने हुं स्वर्गमां पण लइ जवाने शक्तिवान् नथी,

परंतु तमारा स्नेहथी तमारी पासे रहेवा इछु हुं कृष्णे कह्युं के हे ना-इ! तमो अत्रे रहेवा छतां पण, मारे करेला कर्मनु फल तो अवश्य जो-गववानुज छे, परतु मने आ दुःखथी ते दुःख वहुज अधिक लागे छे के.– हुं, द्वारिका तथा सकल परिवार दग्ध थइ जवाथी एकलो कोशंवी वनमां जरा कुमारना तीरथी मृत्यु पाम्यो, जेथी मारा शत्रुउने सुख अने मारा मित्रोने दुःख थयु जगत्मा सर्व यदुवंश वदनाम थयो ते कारणथी हे नाइ! तमो नरतखंडमां जइ चक्र, शारग, शख, तथा गदा धारण करनारुं, पीला वस्त्रवालुं, अने गरुडनी ध्वजावालु, मारु रूप वनावी, विमानमा वेसी, लोकोने ते प्रमाणे वतावो, तथा नील वस्त्रवालु तालध्वज, हल, मुशल, शस्त्रने धारण करेलु एवु तमारुं रूप पण विमानमां वेसी लोकोने वतावो, अने सर्व जगोए लोकोने कहो के, राम कृष्ण एवा अमे वने अविनाशी छइए, तथा स्वेछाविहारी छइए ज्यारे लोकोने आ सत्य प्रतीत थइ जशे, त्यारे अमारो सर्व अपयश दूर थइ जशे श्री कृष्णनु पूर्वोक्त सर्व कथन श्री वलनद्रजीए स्विकारी लीधु. वलनद्रजी नरतखंडमां आवी कृष्ण वलनद्रनु रूप करी सर्व जगोए विमानमा वेसी, लोकोने कहेवा लाग्या के, हे लोको! तमे कृष्ण वलनद्रनी अर्थात् अमो वनेनी सुदर प्रतिमा वनावी, इश्वरनी वुद्धिथी, अति आदर सत्कारथी, तेनी पूजा नक्ति करो? कारण के अमेज जगत्ना रचनारा छइए, अने स्थिति, संहार करनारा पण अमेज छइए अमे पोतानी इछा पूर्वक स्वर्ग (वैकुंठ) मांथी चाल्या आवीए छइए, अने फरी अमारी इछा प्रमाणे स्वर्गमा जइए छीए द्वारिकानी रचना अमेज करी हती, अने अमेज द्वारिकानो सहार कर्यो छे, कारण के ज्यारे अमे वैकुंठमा जवानी इछा करीए छीए, त्यारे द्वारिका सहित पोतानो सर्व वंश नाश करी चाल्या जइए छीए अमारी उपरांत वीजो कोइ कर्त्ता हर्त्ता नथी. आ प्रमाणे वलनद्रजीनु कहेवु सानली सर्व नगर तथा गामोना लोको, कृष्ण वलनद्रजीनी प्रतिमा, सर्व जगोए वनावी पूजवा लाग्या जेथी वलनद्रजी प्रतिमा पूजनाराउने धन, धान्यादि अनेक वस्तुउनो लान आपी सुखी करता हता तेज कारणथी वहु लोको हरिनक्त थइ गया ज्यारथी तेउ नक्त थया त्यारथी पुस्तको वनावी कृ-

णजीने पूर्णब्रह्म परमात्मा इश्वरादि अनेक नामोथी लखी तेमनी स्तुति करवा लाग्या. ज्यारथी बलभद्रजीए कृष्णनी पूजा करावी, त्यारथीज लोकोए कृष्णनो इश्वरावतार मान्यो होय, एम केम न होय? लौकिक शास्त्रोमां कृष्णने थयाने पांच हजार वर्ष थयां छे, अने उपर मुजबना वृत्तांतने पण पांच हजार वर्ष थया छे ते बने तपासतां उपर मुजब बन्यानी हकीकत साची साबीत थाय छे

बावीसमा अने त्रेवीसमा तीर्थंकरना अंतरमा बारमा ब्रह्मदत्त नामना चक्रवर्ती थया त्यार पछी वाणारसी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशी अश्वसेन राजा थया तेनी वामा राणीना पुत्र श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीसमां तीर्थंकर थया

त्यार पछी क्षत्रियकुंड नगरमां इक्ष्वाकुवंशी सिद्धार्थ नामना राजानी त्रिसला राणीना पुत्र श्री वर्द्धमान (महावीर) स्वामि चोवीसमां चरम तीर्थंकर थया भरतखंडमां वर्त्तमानमां जैनमत जे प्रचलित छे, ते महावीरस्वामिना शासनथीज चाले छे, अने जे शास्त्रो रचायेलां छे, ते सर्वे तेमना उपदेश अनुसारेज रचायेलां छे श्री महावीरस्वामिनुं सर्व वृत्तांत जोवु होय तो आवश्यकसूत्रवृत्ति, कल्पसूत्रवृत्ति तथा महावीरचरित्रादि ग्रंथोथी अवलोकन करवुं

इति श्री तपगछीय मुनि श्री गणि मणिविजय तच्छिष्य मुनि बुद्धिविजय तच्छिष्य मुनि आतमाराम आनंदविजय विरचिते जैनतत्त्वादर्शे श्री रीषभादि महावीर पर्यंत पूर्ववृत्तांतनिरुपणनाम एकादश परिछेद समाप्तः ॥ ११ ॥

॥ अथ द्वादश परिछेद प्रारंभ ॥

आ परिछेदमां श्री महावीर स्वामिथी वर्त्तमान समय सुधिनुं वृत्तांत लखीए छीए श्री महावीर भगवानना अग्यार शिष्य मुख्य हता सर्व साधु शिष्यो चौद हजार हता तेउमां ११ मुख्य हता, तेमना नाम १ इंद्र भूति, (गौतमस्वामि) २ अग्निभूति, ३ वायूभूति, ४ व्यक्तस्वामि, ५ सुधर्मास्वामि, ६ मंडितपुत्र, ७ मौर्यपुत्र, ८ अवकपित, ९ अचलभ्राता, १० मैतार्य श्री भगवानथी दीक्षित, छत्रीश हजार साध्वीउं थइ

श्री जगवंतना अनेक राजाउ जक्त (सेवक) हता, जेउ श्रावक हता, तेउ मध्येथी केटलाएकना नाम, श्रेणिक राजा, उदायन, कोणिक, उदायी, वत्सदेशना उदायन, चेटक, नवमल्लिकक्षत्रिय जाति, नवलेछिक क्षत्रियजाति, चन्डप्रद्योत, श्वेतराजा, विजयराजा, नंदिवर्द्धन राजा, हस्तिपालराजा इत्यादि सामान्य गृहस्थो आनद, कामदेव, शख, पुष्कली प्रमुख श्रावको, तथा जयंती, रेवती, सुलसा प्रमुख श्राविकाउ लाखो हती श्रावक समुदायमा एक श्रावक सत्यकी नामनो अविरति सम्यग्दृष्टि हतो तेनु चरित्र आवश्यक शास्त्रमा नीचे प्रमाणे लखेल छे

विशाला नगरीमा चेटक राजानी पुत्री सुज्येष्टा नामनी हती, तेणीये कुमारी अवस्थामा दीक्षा लीधी हती, अर्थात् साध्वी थइ हती ते एकदा उपाश्रयनी अदर सूर्यनी सन्मुख आतापना लेती हती, ते अवसरे पेढाल नामनो परिव्राजक (सन्यासी) विद्यासिद्ध हतो, ते पोतानी विद्यानु दान करवावास्ते पात्र पुरुषनी तपास करतो हतो विचार एवो हतो के, जो ब्रह्मचारिणीनो पुत्र होय तो दान आपवाने उत्तम पात्र गणाय हवे ते संन्यासीये एकदा रात्रिये सुज्येष्टाने नग्नपणे शीतनी आतापना लेती दीठी, ते समये धुध विद्यार्थी अधारामा तेणीने अचेत करी तेणीनी योनिमां पोताना वीर्यनो सचार कर्यो ते अवसरे सुज्येष्टा ऋतुधर्मने प्राप्त थइ हती, तेथी तेणीने गर्न रह्यो हवे साध्वीउना समुदायमां गर्जनी चर्चा थवा लागी, परतु अतिशय ज्ञानीये कह्यु के सुज्येष्टायें कोइनी साथे विषयसेवन करेल नथी, अने विद्याधर संबधी सर्व वृत्तांत कह्यो, जेथी सर्वनी शका दूर थइ गइ योग्य समये सुज्येष्टाने पुत्र थयो, ते पुत्रने श्रावकोये पोताने घेर पाली मोटो कर्यो, तेनु नाम सत्यकी पाड्युं एकदा सत्यकी, साधवीउनी साथे श्री महावीर जगवानना समवसरणमां गयो हतो, ते अवसरे कालसदीपक नामनो एक विद्याधर श्री महावीरस्वामिने नमस्कार करी पुछवा लाग्यो के हे जगवन् मने कोनाथी जय छे? जगवंते कह्यु के आ सत्यकी नामना छोकराथी, तने जय छे ते साजली एकदा कालसदीपक सत्यकीनीपासे गयो, तेनी अवज्ञा करी कहेवा लाग्यो के शु तु मने मारीश? एम कही जोरावरीथी सत्यकीने पोताना पगनीचे नाख्यो, ते समये तेनो पिता पेढाल आवी पहोंचवाथी तेनु सरक्षण

कर्युं. पछी पेढाले पोतानी सर्व विद्या सत्यकीने आपी सत्यकी महारोहिणी विद्यानु साधन करतो हतो. सत्यकीनो रोहिणी विद्या साधन करवानो आ सातमो जव हतो. रोहिणी विद्या साधतां सत्यकीनो जीव पांच जवसुधी जीव (प्राण) थी मार्यो गयो छठा जवमां पोतानुं आयुष्य छ महिना बाकी रह्येते छते रोहिणी विद्या साधवानी इच्छा थवाथी ते इच्छा पार पाडवानो आरंज कर्यो नहि; परंतु आ सातमां जवमां रोहिणी विद्या साधवानो आरंज कर्यो. तेनी विधि लखीये छीये.

अनाथ मृतक मनुष्यने चितामां सलगावे, अने आला चामडाने शरीर उपर लपेटी डावा पगना अंगुठा उपरज उजा रही ज्यांसुधी ते चितामां काष्ठ सलग्या करे त्यांसुधी मंत्रनो जाप करे. आ विधि प्रमाणे सत्यकी विद्या साधतो हतो. ते वखते कालसंदीपक विद्याधर पण त्यां आवी पहोच्यो. तेणे चितामां लाकडां नाखी सात दिवससुधी अग्नि बुझावा दीधो नहि जेथी सत्यकीनी दृढता देखी रोहिणी देवी साक्षात् प्रगट थइ, कालसंदीपकने कहेवा लागी के तु विघ्न कर नहि? कारण के हुं सत्यकी उपर तुष्टमान थइ सिद्ध थयेली छुं रोहिणी देवीये तत्काल सत्यकीने कह्युं के हे सत्यकी! तारा शरीरमां हुं कये रस्तेथी प्रवेश करुं? सत्यकीये कह्युं, मस्तक उपरथी प्रवेश कर? रोहिणीये मस्तकने रस्तेथी प्रवेश कर्यो, जेथी सत्यकीने मस्तकमां खाडो पडी गयो देवीये तुष्टमान थइ मस्तकना खाडानी जगाये त्रीजा नेत्रनो आकार बनाव्यो हवे सत्यकी त्रण नेत्रवालो प्रसिद्ध थयो एकदा सत्यकीये वीचार कर्यो के पेढाले मारी माता, जे राजानी कुमारी कन्या हती तेने वगाडेली छे, तेथी तेने शिक्षा करवी जोइये, एम निश्चय करी, तेणे पोताना पिता पेढालने मारी नांख्यो जेथी लोकोये सत्यकीनुं नाम रुद्र (जयानक) पाडी दीधुं, कारण के जेणे पोताना पिताने मारी नांख्यो, तेना करतां बीजो कोण वधारे जयानक कहेवाय? हवे सत्यकीये विचार कर्यो के कालसंदीपक मारो डुश्मन छे, ते क्यां छे? ज्यारे सांजलवामां आव्युं के ते अमुक जगाये छे, त्यारे ते तेनी पासे पहोच्यो कालसंदीपक तेने देखी जाग्यो, सत्यकीये तेनी पूठ पकडी कालसंदीपक नीचे उचे, ज्यां त्यां जागतो रह्यो, परतु सत्यकीये तेनो पीछो मुक्यो नहि. अनुक्रमे कालसंदीपके स-

खिल्याविनाना कमळ समान कुमारी कन्या छे, जे तमने जोग करवा-वास्ते वल्लज छे, अने हुं तो खिलेला फूल समान छु. महेश्वरे कह्युं के तु पण मने अति वल्लज छो. ए प्रमाणे वार्तालाप करी बंन्ने जणाउं विषयमां आसक्त थयां महेश्वर उमाना हावजावथी तेनेज घेर रहेवा लाग्यो. उमाये महेश्वरने पोताने आधीन करी लीधो, जेथी उमानु वचन महेश्वर उल्लंघन करी शकतो नहोतो. ए प्रमाणे केटलोएक काल व्यतीत थयो, त्यारे चंडप्रद्योते उमाने बोलावी वहुज आदर सत्कार तथा धन आपी कह्युं के तुं महेश्वरने आ वात पुछ? के एवो कोइ समय छे, के जे वखते तमारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी? उमाये युक्तिपूर्वक पूछी कहेवानुं वचन आप्यु. हवे उमाये महेश्वरने पुछ्युं हे स्वामि! मने एक जातनी वहुज बीक छे आपनी विद्या कोइ वखते जती रहे छे के केम? तेनो खुलासो करो, जेथी मने निरांत थाय. महेश्वरे कह्युं हे वल्लजे! तुं विचार कर नहि मारी विद्या जती नथी मात्र ज्यारे हुं मैथुन सेवन करुं छुं, त्यारे मारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी, अर्थात् ते वखते मारी विद्या चालती नथी. हवे उमाये महेश्वरनी सर्व विना चंडप्रद्योतने कही दीधी, जेथी चंडप्रद्योते उमाने कह्युं के अमारो महेश्वरने मारवानो विचार छे, जेथी तारी साथे ते जोग जोगवतो होय, अने तेने मारीये एवी गोठवण कर उमाये कह्युं के मने मारवी नहि. राजाये कह्युं के वहु सारुं. पछी युक्ति प्रमाणे चंडप्रद्योते उमाना घरमां सुजटोने गुप्त राख्या. ज्यारे महेश्वर उमानी साथे विषय सेवनमां मग्न थइ बनेना शरीरो परस्पर एक शरीरवत् थइ गयां, त्यारे राजाना सुजटोये बंनेने कापी नांख्या, अने नगरनो उपद्रव दूर कर्यो. हवे महेश्वरनी सर्वे विद्याउंये महेश्वरना शिष्य नंदीश्वरने पोतानो अधिष्ठाता बनाव्यो. ज्यारे नंदीश्वरे पोताना गुरुने उपर मुजब विटबनाथी मार्यानी वात सांजली, त्यारे विद्याथी उज्जयनी उपर शिला विकुर्वी, अने कहेवा लाग्यो के हे मारा दासो! हवे तमे क्यां जशो? हु सर्वेने चूर्ण करी नाखुं छुं हुं सर्व शक्तिमान् इश्वर छुं कोइनो मार्यो मरतो नथी. हुं सदा अविनाशी छुं. आ जयानक वचनोथी लोको वहुज डरवा लाग्या, सर्वे लोको विनंति करी पगे पडवा लाग्या, तथा सर्वेये कह्युं के अमारा अपराध क्षमा करो. नंदी

त्यकीने त्रण थापमां पाडवावास्ते त्रण नगर बनाव्यां, सत्यकीये विद्याथी त्रणे नगरने सळगावी दीधा छेवटे कालसंदीपक नासीने लवण समुद्रना पाताल कलशामा चाल्यो गयो सत्यकीये त्यां जइ कालसंदीपकने मारी नांख्यो पछी सत्यकी विद्याधर चक्रवर्ती थयो त्रण सध्यासमये सर्व तीर्थकरोने वंदना करी नाटक करतो हवो जेथी इन्द्रे सत्यकीनु नाम महेश्वर पाड्यु महेश्वर (सत्यकी) ने वे शिष्यो थया. एक नंदीश्वर, वीजो नादीया. नादीयाने विद्याना बलथी बलद बनावी लेवामां आवतो, अने तेना उपर बेसी महेश्वर अनेक क्रीडा, कुतुहल करतो हतो महेश्वर श्रीमहावीर भगवंतनो अविरति सम्यग्दृष्टि श्रावक हतो, परतु अत्यत कामी हतो, अने ब्राह्मणोनी साथे तेने बहुज वेर हतुं, तेथी विद्याना बलथी तेणे सेकडो ब्राह्मणोनी कुमारी कन्याउने विषयसेवन करी बगाडी हती अनुक्रमे वीजा लोकोनी तथा राजा प्रमुखथी बहु तथा पुत्रीउनी साथे ते विषय सेवन करवा लाग्यो, परतु तेनी विद्याना भयथी कोइ तेने काइ पण कही शकतु नहोतु जे कोइ तेनी आडे आवतो, ते मार्यो जातो हतो महेश्वरे विद्याना बलथी एक पुष्पक नामनु विमान बनाव्यु, तेमा वेसी पोतानी इच्छा मुजब फरतो हतो ए प्रमाणे तेनो काल व्यतीत थतो हतो एकदा महेश्वर उज्जायनी नगरीमा आव्यो त्यां चंडप्रद्योत राजानी शिवा नामनी राणी शिवाय वीजी सर्वे राणीउनी साथे तेणे विषय भोग कर्यो वीजा लोकोनी बहु, पुत्रीउ प्रमुखने पण बगाडवा लाग्यो, जेथी चंडप्रद्योतने अत्यत चिता थवा लागी तेणे विचार कर्यो के एवो कोई उपाय करीये के जेथी महेश्वरनो विनाश थइ जाय, तेनी विद्याने लीधे कांइ पण उपाय चाल्यो नहि हवे ते नगरमा उमा नामनी एक अत्यंत रुपवंत वेश्या रहेती हती तेनो एवो नियम हतो के जे कोइ तेने अमुक सख्यानु धन आपे, ते तेनी साथे विषय सेवन करे एकदा महेश्वर ते वेश्याने घेर गयो वेश्याये तेने आदर सत्कार करी तेनी सन्मुख वे फूलो राख्या, एक खिलेलु, अने वीजु खिल्याविनानु महेश्वरे खिलेला फूल तरफ पोतानो हाथ पसार्यो, त्यारे उमाये खिल्या वगरनुं फूल महेश्वरना हाथमा आप्यु, अने कह्यु के आ फूल (कमल) तमारा योग्य छे महेश्वरे पुछ्यु के आ कमल मारा योग्य केम ? त्यारे उमाये कह्युं के आ

खिल्याविनाना कमल समान कुमारी कन्या छे, जे तमने जोग करवावास्ते वल्लज्ञ छे, अने हुं तो खिलेला फूल समान हु. महेश्वरे कह्युं के तु पण मने अति वल्लज्ञ छो. ए प्रमाणे वार्तालाप करी बन्ने जणाउं विषयमां आसक्त थयां महेश्वर उमाना हावज्ञावथी तेनेज घेर रहेवा लाग्यो. उमाये महेश्वरने पोताने आधीन करी लीधो, जेथी उमानुं वचन महेश्वर उल्लंघन करी शकतो नहोतो. ए प्रमाणे केटलोएक काल व्यतीत थयो, त्यारे चंडप्रद्योते उमाने बोलावी बहुज आदर सत्कार तथा धन आपी कह्युं के तुं महेश्वरने आ वात पुछ? के एवो कोइ समय छे, के जे वखते तमारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी? उमाये युक्तिपूर्वक पूछी कहेवानुं वचन आप्यु. हवे उमाये महेश्वरने पुछ्युं हे स्वामि! मने एक जातनी बहुज बीक छे. आपनी विद्या कोइ वखते जती रहे छे के केम? तेनो खुलासो करो, जेथी मने निरांत थाय महेश्वरे कह्युं हे वल्लज्ञे! तुं विचार कर नहि मारी विद्या जती नथी मात्र ज्यारे हु मैथुन सेवन करुं छुं, त्यारे मारी पासे कांइ पण विद्या रहेती नथी, अर्थात् ते वखते मारी विद्या चालती नथी. हवे उमाये महेश्वरनी सर्व विना चंडप्रद्योतने कही दीधी, जेथी चडप्रद्योते उमाने कह्युं के अमारो महेश्वरने मारवानो विचार छे, जेथी तारी साथे ते जोग जोगवतो होय, अने तेने मारीये एवी गोठवण कर. उमाये कह्युं के मने मारवी नहि राजाये कह्युं के बहु सारुं. पछी युक्ति प्रमाणे चडप्रद्योते उमाना घरमां सुज्ञटोने गुप्त राख्या ज्यारे महेश्वर उमानी साथे विषय सेवनमा मग्न थइ बनेना शरीरो परस्पर एक शरीरवत् थइ गयां, त्यारे राजाना सुज्ञटोये बनेने कापी नांख्या, अने नगरनो उपद्रव दूर कर्यो हवे महेश्वरनी सर्वे विद्याउंये महेश्वरना शिष्य नंदीश्वरने पोतानो अधिष्ठाता बनाव्यो. ज्यारे नंदीश्वरे पोताना गुरुने उपर मुजब विटबनाथी मार्यानी वात सांजली, त्यारे विद्याथी उज्जायनी उपर शिला विकुर्वी, अने कहेवा लाग्यो के हे मारा दासो! हवे तमे क्यां जशो? हु सर्वने चूर्ण करी नाखु छुं हुं सर्व शक्तिमान् इश्वर छुं. कोइनो मार्यो मरतो नथी. हुं सदा अविनाशी छुं. आ जयानक वचनोथी लोको बहुज डरवा लाग्या, सर्वे लोको विनंति करी पगे पडवा लाग्या, तथा सर्वेये कह्युं के अमारा अपराध क्षमा करो. नंदी

त्यकीने त्रण थापमां पाडवावास्ते त्रण नगर बनाव्या, सत्यकीये विद्यायी त्रणे नगरने सलगावी दीधां छेवटे कालसंदीपक नासीने लवण समुद्रना पाताल कलशामां चाल्यो गयो सत्यकीये त्यां जइ कालसंदीपकने मारी नांख्यो पछी सत्यकी विद्याधर चक्रवर्ती थयो त्रण संध्यासमये सर्व तीर्थकरोने वंदना करी नाटक करतो हवो जेथी इन्द्रे सत्यकीनु नाम महेश्वर पाड्यु महेश्वर (सत्यकी) ने बे शिष्यो थया एक नंदीश्वर, बीजो नादीया नादीयाने विद्याना बलथी बलद बनावी लेवामां आवतो, अने तेना उपर बेसी महेश्वर अनेक क्रीडा, कुतुहल करतो हतो महेश्वर श्रीमहावीर जगवंतनो अविरति सम्यग्दृष्टि श्रावक हतो, परतु अत्यत कामी हतो, अने ब्राह्मणोनी साथे तेने बहुज वेर हतु, तेथी विद्याना बलथी तेणे सेंकडो ब्राह्मणोनी कुमारी कन्याउने विषयसेवन करी बगाडी हती. अनुक्रमे बीजा लोकोनी तथा राजा प्रमुखथी बहु तथा पुत्रीउनी साथे ते विषय सेवन करवा लाग्यो, परतु तेनी विद्याना जयथी कोइ तेने काइ पण कही शकतु नहोतु जे कोइ तेनी आडे आवतो, ते मार्यो जातो हतो महेश्वरे विद्याना बलथी एक पुष्पक नामनु विमान बनाव्यु, तेमा बेसी पोतानी इच्छा मुजब फरतो हतो ए प्रमाणे तेनो काल व्यतीत थतो हतो एकदा महेश्वर उज्जायनी नगरीमा आव्यो त्या चड्प्रद्योत राजानी शिवा नामनी राणी शिवाय बीजी सर्वे राणीउनी साथे तेणे विषय जोग कर्यो. बीजा लोकोनी बहु, पुत्रीउ प्रमुखने पण बगाडवा लाग्यो, जेथी चड्प्रद्योतने अत्यंत चिंता थवा लागी तेणे विचार कर्यो के एवो कोई उपाय करीये के जेथी महेश्वरनो विनाश थइ जाय, तेनी विद्याने लीधे काइ पण उपाय चाल्यो नहि हवे ते नगरमा उमा नामनी एक अत्यंत रुपवत वेश्या रहेती हती तेनो एवो नियम हतो के जे कोइ तेने अमुक संख्यानु धन आपे, ते तेनी साथे विषय सेवन करे एकदा महेश्वर ते वेश्याने घेर गयो वेश्याये तेने आदर सत्कार करी तेनी सन्मुख बे फूलो राख्या, एक खिलेलु, अने बीजु खिल्याविनानु महेश्वरे खिलेला फूल तरफ पोतानो हाथ पसार्यो, त्यारे उमाये खिल्या वगरनु फूल महेश्वरना हाथमा आप्यु, अने कह्यु के आ फूल (कमल) तमारा योग्य छे महेश्वरे पुछ्यु के आ कमल मारा योग्य केम ? त्यारे उमाये कह्यु के आ

आ दुःखथी राजगृह नगर छोडी तेणे चंपानगरी पोतानी राज्यधानी बनावी, अने त्यां रहेवा लाग्यो तो पण पितानी सेवा माराथी थइ नहि अने पितानु अकार्यथी मोत थयुं. एवा वारंवार विचार आववाथी ते बहुज दुःखमां रहेवा लाग्यो. पछी मंत्रीओए एकमत करी प्रछन्नपणे एक पुस्तक बनाव्यु, तेमां एवुं कथन लखाव्युं के, जे पुत्र पोताना मरण पामेला पिताने वास्ते, पिंडप्रदान, वस्त्रजोड, आभूषण, शय्या प्रमुख ब्राह्मणोने आपे छे, ते सर्व श्राद्धादि सामग्री तेना पिताने प्राप्त थाय छे आ पुस्तकने धुमाडावाला मकानमां राखी धुमाडाथी प्राचीन (जुना) पुस्तकजेवु बनावी दीधु पछी आ पुस्तक कोणिक राजाने संभलाव्यु. कोणिके पण पितानी भक्ति वास्ते पिंडप्रदानादिमां बहुज धन वापर्यु. त्यारथीज मरीगयेला पाछल पिंडप्रदान श्राद्धादि प्रवृत्त थयेल छे जगत्मां पण प्रसिद्ध छे के कर्ण राजाये श्राद्ध चलावेल छे, ते आज कोणिक राजानुं नाम लोकोए कर्ण राजा करी लखी दीधु छे.

हवे प्रयाग तीर्थनी उत्पत्ति लखीए छीए. अन्निकासुत जैनाचार्य अत्यत वृद्ध थइ जतां, गंगानदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, अने ज्यां प्रयाग छे, त्यां पोतानु शरीर छोडी मुक्ति पाम्या, ते स्थले देवताओए मुनिनो निर्वाण महोत्सव कर्यो, त्यारथी प्रयाग तीर्थनो महिमा थयो महावीर स्वामिना वखतमां जे राजा प्रमुख तथा व्यवहारादिनु स्वरुप हतुं, तथा जैनमतनो विस्तार हतो ते सर्वनुं स्वरूप आवश्यकसूत्र, वीरचरित्र, अने वृहत्कल्पादि शास्त्रोथी जाणवु

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजा थया. तेनी पाछल कोणिक, श्रेणिकना मरण पछी कोणिके चंपानगरी वसावी, आ अधिकार पूर्वे कह्यो, हवे कोणिकना मरण पछी तेनो पुत्र उदायी राजा थयो, ते कोणिकनी पाछल तेना मरण पछी उदास थवाथी चंपा छोडी पाडलीपुत्र (पटना) वसावी पोतानी राज्यधानी करतो हवो.

श्री महावीर भगवंत विक्रम संवतथी (४११) वर्ष पहेलां पावापुरी नगरीमां हस्तिपाल राजानी पुरातन राज्यसभामां बहोंतेर वर्षनु आयुष्य भोगवी कार्तिक वदी अमावास्यानी रात्रिए पाछले प्रहरे पद्मासने बेठा थका शरीरादि शेष चारे कर्मनी सर्व उपाधी छोडी निर्वाण

श्वरे कह्युं के तमे तेज अवस्थामां अर्थात् उमाना जगमां महेश्वरनु लिंग स्थापन करी पूजा करो, तोज हु तमोने जीवता ठोडुं लोकोये तेज प्रमाणे अंगीकार करी पुजा करवी शरु करी नंदीश्वरे तेज प्रमाणे अनेक गाम, नगरोमां लोकोने डरावी मंदिरो बधाव्यां, तेमां पूर्वोक्त आकारे जगमां लिंग स्थापन करी पूजा करावी, आ श्रीमहावीरना अविरती सम्यग्दृष्टि श्रावक महेश्वरनी उत्पत्ति ठे

श्री महावीर स्वामिना समयमां राजगृह नगरमां श्रेणिक राजानी चेलणा राणीने कोणिक नामनो पुत्र थयो कोणिकने तेना पिता श्रेणिकनी साथे पूर्व जन्मनु वेर हतु, तेथी कोणिक मोटो थतां तेणे श्रेणिकने गादीउपरथी उठाडी, पकडीने पांजरामां केद कर्यो, अने राज्यगादी उपर पोते वेठो एकदा पोतानी माता चेलणाए प्रसगवशात् कोणिकने कह्युं के तु तारा पिताने जेवो वहालो हतो, तेवो कोइ पण वीजो पुत्र वहालो न होतो, कारण के ज्यारे तु वालक हतो, त्यारे तारी आंगली पाकी हती, जेथी तने रात्रिए विलकुल निद्रा आवती न होती, अने आखी रात तु रोया करतो हतो ते वखते तारा पिता तारी आंगलीने पोताना मुखमा लइ तने आराम थवा माटे ते पाकेली आगलीनु रुधिर तथा परु चुसी, थुकी काढता हता, इत्यादि अनेक प्रकारथी तारा पिताये तारी उपर स्नेह करेल ठे, अने तें तो पूर्वना उपकारनो वदलो तेने पाजरामां घाली केद राखवारुप करेलो ठे माटे वाह! पुत्र! तारी लायकी केटली कहुं? माताना आ प्रमाणेना वचनो सांभली कोणिक बहुज दुःखी थयो, अने पोताथी थयेला अकार्यने माटे रोवा लाग्यो, अने विचार कर्यो के हु पोतेज जइ पिताश्रीने मारा हाथथी पांजरामांथी कहाडी राज्य सिंहासन उपर वेसाडु एवा निश्चयथी कुहाडो लइ दोडतो पितानी पासे आव्यो श्रेणिके विचार कर्यो के कोणिक कुहाडो लइ दोडतो मारी उपर आवे ठे, जेथी आजे मने केवी रीते कमोतथी मारशे? एवा भयथी श्रेणिक काइक खाइने मरी गया ज्यारे कोणिके पोताना पिताने मरी गयेला दीठा त्यारे ते वहुज रोयो तथा कुटवा लाग्यो, अने अत्यत शोकमा निमग्न थयो ज्यारे राजगृहनी वहार तथा अदर श्रेणिकना राजमेहेलो तथा सिंहासनादि देखतो, त्यारे ते अत्यत दिलगीर थतो.

दूरथीज श्री जगवंतने चोत्रीश अतिशय संयुक्त, तथा इंद्रो, देवो अने मनुष्योथी परिवृत दीठा. देखतांज बोलवानी शक्ति मंद थइ गइ. जगवंतनी सन्मुख जतांज, श्री जगवंते तेमने बोलाव्या. हे गौतम इंद्रजूति ! तमे आव्या ? गोतमजीए मनमां विचार्युं के, मारुं नाम पण आ जाणे छे; परंतु तेमां शुं आश्चर्य ? जगत्मां प्रसिद्ध एवा मने कोण जाणतुं नथी ? मारु नाम लेवाथी हुं कांइ तेने सर्वज्ञ मानुं नहि, परंतु मारा मननां जे संशय छे, ते संशय जो ते दूर करे तो हुं तेने सर्वज्ञ मानुं तत्काल जगवंते कह्युं हे गोतम ? तमारा मनमां आ संशय छे-- जीव छे के नहि ? अने ते संशय तमने वेदोनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयेल छे. ते श्रुतियो कहीये छीये.

" विज्ञान घन एवैतेज्यो जूतेज्य' समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीत्यादि" तेनाथी विरुद्ध, आ श्रुति छे, " सवै अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि " आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमां जेम जासन थाय छे, तेम हुं तमने कहुं छुं ते सांजलो. प्रथम श्रुतिनो अर्थ तमे आ प्रमाणे करो छो-- नीलादि रूप होवाथी विज्ञानज चैतन्य छे, विशिष्ट जे नीलादि तेथी जे घन ते विज्ञानघन, ते विज्ञानघन आ प्रत्यक्ष परिछिद्यमान रूप पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आ पांचे जूतोथी उत्पन्न थइ फरी तेनी साथेज नाश थइ जाय छे, अर्थात् जूतोनो नाश थवाथी, तेनी साथे विज्ञानघननो पण नाश थइ जाय छे, ते कारणथी प्रेत्य संज्ञा नथी, अर्थात् मरण पछी फरी परलोक गमन, नर, नारकादि जन्म थतो नथी. आ श्रुतिथी जीवनी नास्ति अर्थात् तेनो अजाव सिद्ध थाय छे. हवे बीजी श्रुति कहे छे के-- आ आत्मा ज्ञानमय अर्थात् ज्ञानस्वरूप छे, इत्यादि. तेथी आत्मानी सिद्धि थाय छे. आ बने श्रुतियो परस्पर विरोधी होवाथी कांइ निश्चय थइ शकतो नथी वली बीजा पण आत्माना स्वरूपमां परस्पर विरोधी मत छे कोइ कहे छे के, यत्त' ॥ एतावानेव पुरुषो, यावानिंद्रियगोचरः ॥ जद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदंत्यवहुश्रुता. ॥ १ ॥ वली बीजा मतवाला कहे छे के यतः ॥ "न रूप जिक्षव' पुद्गलः" अर्थात् आत्मा अमूर्त छे वली एक आगम एवु कहे छे के यत ॥ " अकर्त्ता निर्गुणो जोक्ता आत्मा" अर्थात् अकर्त्ता, सत्व, रज, तम, आ त्रण गुणोथी रहित सुख

पाम्या ते समये मोटा शिष्योमां गौतमस्वामि तथा सुधर्मास्वामि, आ बेज शिष्यो विद्यमान हता बाकीना नवे शिष्यो श्री महावीर भगवत विद्यमान थकां, एक मासना अनशन करी केवलज्ञान पामी मुक्ति पाम्या हता. अगीआरे मोटा शिष्यो ज्ञातिना ब्राह्मण हता चार वेद अने छ वेदांगादि सर्व शास्त्रोना वेत्ता हता अगीआरे शिष्योना मली (४४००) चउमालीससो विद्यार्थीउं हता तेउंनो वृत्तांत लखीएछीए

ज्यारे श्री महावीर भगवंतने केवलज्ञान उत्पन्न थयु, ते समये मध्यपापा नगरीमा सोमल नामनो द्विज यज्ञनो आरंभ करतो हतो ते यज्ञ प्रसंगे सर्व ब्राह्मणोमां श्रेष्ट पूर्वोक्त गौतमादि आगीआरे आचार्योने आमंत्रण कर्युं हतु ते यज्ञभूमिनी इशान दिशाए महासेन नामना उद्यानमां श्री महावीर भगवंतनु समवसरण रत्न, सुवर्ण, रौप्यमय, अनुक्रमे त्रण गढ सयुक्त देवोए बनाव्यु ते समवसरणनी वचमां सिंहासन उपर बेसी श्री महावीर भगवंत उपदेश आपवा लाग्या. ते समये आकाश मार्गे, सेंकडो विमानोमां बेठा थका, चारे प्रकारना देवताउं भगवंत श्री महावीर स्वामिना दर्शन वास्ते तेमज उपदेश श्रवण करवा आवता हता तेउंने देखी यज्ञ करनारा ब्राह्मणोए जाण्यु के आ सर्व देवो साक्षात् अमारा यज्ञनी आहुतीउं लेवा आवे छे एटलामा देवताउं तो यज्ञभूमिने छोडी भगवानना चरणोमां जइ हाजर थया वली बीजा लोको पण श्री महावीर भगवंतना दर्शन करी तथा उपदेश सांभली गौतमादि पंडितोने कहेवा लाग्या के, आजे आ नगरीनी बहार सर्वज्ञ, सर्वदर्शी भगवान् आव्या छे तेनु रुप एवु छे के तेनु यथार्थ वर्णन करवाने कोइ पण शक्तिवान् नथी, अने तेनो उपदेश एवो छे के तेमा काइ पण सशय पडतो नथी, वली लाखो देवताउं तेमना चरणोनी सेवा करे छे, जेथी आजे अमारु अत्यत मोटु भाग्योदय थयु, के एवा सर्वज्ञ अरिहत भगवंतना दर्शन अमे पाम्या. ज्यारे गौतमजीए लोकोना मुखथी सर्वज्ञ एवु वचन साभल्यु, त्यारे तेमना मनमां इर्ष्यारुप अग्नि सलगी उठी, अने बोली उठ्या के, माराथी अधिक अने सर्वज्ञ बीजो कोण छे ? हमणांज जइ तेना सर्वज्ञपणाने परास्त करुं छु, इत्यादि अनेक गर्व सयुक्त वचनो कहाड्या, पछी श्री महावीर भगवंतनी पासे ते पहोंच्या

दूरथीज श्री भगवंतने चोत्रीश अतिशय संयुक्त, तथा इन्द्रो, देवो अने मनुष्योथी परिवृत दीठा. देखतांज बोलवानी शक्ति मंद थइ गइ. भगवंतनी सन्मुख जतांज, श्री भगवंते तेमने बोलाव्या हे गौतम इंद्रभूति ! तमे आव्या ? गौतमजीए मनमां विचार्युं के, मारुं नाम पण आ जाणे छे, परंतु तेमां शुं आश्चर्य ? जगत्‌मां प्रसिद्ध एवा मने कोण जाणतुं नथी ? मारु नाम लेवाथी हुं कांइ तेने सर्वज्ञ मानु नहि, परंतु मारा मननां जे संशय छे, ते संशय जो ते दूर करे तो हु तेने सर्वज्ञ मानुं तत्काल भगवंते कह्युं हे गौतम ? तमारा मनमां आ संशय छे– जीव छे के नहि ? अने ते संशय तमने वेदोनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयेल छे. ते श्रुतियो कहीये छीये

"विज्ञान घन एवैतेभ्यो भूतेभ्य· समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीत्यादि" तेनाथी विरुद्ध, आ श्रुति छे, "सवै अयमात्मा ज्ञानमय इत्यादि" आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमां जेम भासन थाय छे, तेम हुं तमने कहुं छुं ते सांभलो प्रथम श्रुतिनो अर्थ तमे आ प्रमाणे करो छो– नीलादि रूप होवाथी विज्ञानज चैतन्य छे, विशिष्ट जे नीलादि तेथी जे घन ते विज्ञानघन, ते विज्ञानघन आ प्रत्यक्ष परिछिद्यमान रूप पृथ्वी, अप, तेज, वायु, आकाश, आ पांचे भूतोथी उत्पन्न थइ फरी तेनी साथेज नाश थइ जाय छे, अर्थात् भूतोनो नाश थवाथी, तेनी साथे विज्ञानघननो पण नाश थइ जाय छे, ते कारणथी प्रेत्य संज्ञा नथी, अर्थात् मरण पछी फरी परलोक गमन, नर, नारकादि जन्म थतो नथी आ श्रुतिथी जीवनी नास्ति अर्थात् तेनो अभाव सिद्ध थाय छे. हवे बीजी श्रुति कहे छे के– आ आत्मा ज्ञानमय अर्थात् ज्ञान स्वरूप छे, इत्यादि. तेथी आत्मानी सिद्धि थाय छे आ बने श्रुतियो परस्पर विरोधी होवाथी कांइ निश्चय थइ शकतो नथी वली बीजा पण आत्माना स्वरूपमां परस्पर विरोधी मत छे कोइ कहे छे के, यत्त ॥ एतावानेव पुरुषो, यावानिंद्रियगोचर. ॥ भद्रे वृकपदं पश्य, यद्वदत्यबहुश्रुताः ॥ १ ॥ वली बीजा मतवाला कहे छे के यतः ॥ "न रूपं भिक्षवः पुद्गलः" अर्थात् आत्मा अमूर्त छे वली एक आगम एवुं कहे छे के यत ॥ "अकर्त्ता निर्गुणो भोक्ता आत्मा" अर्थात् अकर्त्ता, सत्व, रज, तम, आ त्रण गुणोथी रहित सुख

डु खनो नोगवनार आत्मा ठे आ प्रमाणे जुदाजुदा मतो ठे, तेमां सत्य कोण अने असत्य कोण? परस्पर विरोधी होवाथी सर्वे तो सत्य थइ शकता नथी, वली युक्ति प्रमाणथी पण मृत्युपठी आत्मानु परलोक गमन सिद्ध थइ शकतु नथी हे गौतम ? पूर्वोक्त तमारा मनमां संशय ठे तेनो उत्तर तमने कहु हुं ते सांजलो? पठी श्री नगवते गौतमस्वामिनो संशय दूर करवावास्ते वेदना पदोनो यथार्थ अर्थ कही संजलाव्यो, ते सर्वे अधिकार मूलआवश्यक तथा श्री विशेषावश्यक ग्रथोथी जाणवो ग्रथ वधवाना तथा अति गहन थवाना सववथी मे अहीआ लखेल नथी. अगीआरे गणधरोना संशय दूर करवाना कथनना चार हजार श्लोको ठे. ज्यारे गौतमजीनो संशय दूर थयो, त्यारे गौतमजी पोताना पाचसो विद्यार्थीउनी साथे दीक्षा लइ श्रीनगवतना प्रथम शिष्य (गणधर) थया.

इन्द्रनूतिए दीक्षा लीधी, एम सांनली तेमना नाइ अग्निनूति अत्यंत अनिमान युक्त वचनो बोलवा लाग्या, अने लोकोने कहेवा लाग्या के, मारा नाइने इन्द्रजालीआए कपटथी जीती पोतानो शिष्य बनावेल ठे, परतु ते इन्द्रजालीआने हरावी हमणाज हु मारा नाइने पाठो लइ आवु तु एम बोली ते नगवत श्री महावीरस्वामि पासे आव्या ज्यारे नगवतने दीठा त्यारे मननो सर्वे वेग नरम पडी गयो, अने बोलवानी शक्ति पण रहि नहि मनमां अद्भुत आश्चर्य पाम्या, कारण के तेवु रुप तेणे कदि दीठु पण न होतु, तेम सांनव्यु पण न होतुं नगवंते तेने नाम लइ बोलाव्या अग्निनूतिए विचार्यु के, मारु नाम पण आ जाणे ठे, परतु तेमां काइ नवाइ नथी, हु प्रसिद्ध तु, तेथी मने कोण जाणतु नथी ? परतु मारा मनमा जे संशय ठे, ते दूर करे तो, हु तेने सर्वज्ञ मानु नगवंते कह्युं, हे अग्निनूति ! तमारा मनमां आ संशय ठे– "कर्म ठे के नहि " आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध एवा वेद पदोथी थयेल ठे तमे वेद पदोनो यथार्थ अर्थ जाणता नथी, तेथी तेम थयेल ठे ते वेद पद आ ठे " पुरुष एवे दग्नि सर्वंयद्भूतं यच्च नाव्य उता मृतत्व स्येशानो यदन्नेनाऽतिरोहति यदेजति यन्नेजति यद्दूरेयदुअंतिके पदंतरस्य यडुत सर्वस्यास्य वाह्यत इत्याद ' तेनाथी विरुद्ध आ श्रुति ठे यत ॥ " पुण्य पुण्येनेत्यादि " आ श्रुतियोनो अर्थ तमारा मनमा आ प्रमा-

णे जासन थाय छे. पुरुष अर्थात् आत्मा, एव शब्द अवधारण वास्ते छे. ते अवधारण कर्म तेमज प्रधानादिना व्यवछेद वास्ते छे, " इदं सर्वं " अर्थात् आ सर्व प्रत्यक्ष वर्तमान चेतन वस्तु, यद्भूतं अर्थात् जे भूतकालमां थयेल छे, अने भविष्यमां थशे, एवो जे संसार अने मुक्ति ते सर्व पुरुष आत्मा ब्रह्मज छे, " यि " अत्र वाक्यालंकारमां छे, तथा उत शब्द अतिशब्दना अर्थ वास्ते छे, अने अपि शब्द समुच्चय अर्थ वाची छे. अमृतत्वस्य अमरणभावनो अर्थात् मोक्षनो "इसानः" प्रभुः अर्थात् स्वामि छे. "यदिति यच्चेति" च अक्षरनो लोप थवाथी यदिति थयो, अर्थात् अन्नथी जे वृद्धिने प्राप्त थाय छे "यदेजति" जे चाले छे, एवा जे पशुआदि, अने जे चालता नथी एवा जे पर्वतादि, अने जे दूर छे एवा जे मेरु आदि, तथा जेसमीप छे एवा जे शरीरआदि, पूर्वोक्त सर्व पदार्थ, पुरुष अर्थात् ब्रह्मज छे "यतछअंतिके" उ अक्षर अवधारणार्थमां छे. आ श्रुतिथी कर्मनो अभाव सिद्ध थाय छे, अने बीजी श्रुतिथी तथा शास्त्रांतरोथी कर्मनी सिद्धि थाय छे वली युक्तिथी कर्म सिद्ध थतां नथी, कारण के अमूर्त्त आत्माने मुर्त्तिमान् कर्म केवी रीते लागे ? ते कारणथी कर्म छे के नहि, एवो तमारा मनमां संशय छे एम कही भगवाने वेदश्रुतियोनो अर्थ यथास्थित तेमने समजावी, तेमनो पूर्वपक्ष खंडन कर्यो, ते विस्तारथी मूलावश्यक तथा विशेषावश्यक शास्त्रथी जाणवु. एवी रीते अग्निभूतिए पण पोताना शिष्यो साथे गौतमजीनी जेम दीक्षा लीधी.

अग्निभूतिनी दीक्षानी वात सांभली त्रीजा वायुभूति आव्या. बंने भाईओए दीक्षा लेवाथी वायुभूतिने थियातु अभिमान न रह्युं. मनमां विचार कर्यो के भगवानने वंदना करवा जाउं, एवा विचारथी आवी भगवंतने नमस्कार कर्यो. भगवंते कह्युं के हे वायुभूति! तमारा मनमां संशय छे. परंतु तमे क्षोभथी पुछी शकता नथी. तमने संशय छे ते आ छे–जे जीवछे ते देहज छे, अने आ संशय तमने विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे, तमे ते वेदपदोनो अर्थ बराबर जाणता नथी, ते वेदपद आ छे. " विज्ञानघन इत्यादि" प्रथम गणधरनी श्रुति जाणवी. ते श्रुतिथी देहथी न्यारो जीव (आत्मा) सिद्ध थतो नथी, अने ते श्रुतिथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "सत्येनलभ्यस्तपसाह्येपब्रह्मचर्येण नित्यज्योतिर्मयोहिशु-

ऽोय पश्यति धीरा यतयः संयतात्मान इत्यादि" आ श्रुतिथी देहथी जिन्न आत्मा सिद्ध थाय छे, आ तमारा मनमां संशय छे ,जगवाने सर्व संशय दूर कर्यो वायुजूतिए पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी

वायुजूतिनी जेम बाकीना आठे आचार्यो अनुक्रमे आव्या. चोथा अव्यक्तजी आव्या तेमना मनमां संशय हतो के, पांच जूत छे के नहि? आ संशय विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो परस्पर विरुद्ध श्रुतियो आ छे– "स्वप्नोपमवैसकलमित्येव ब्रह्मविधिरंजसाविज्ञेय इत्यादीनि," तेनाथी विरुद्ध श्रुति, "द्यावापृथिवीजनयन्देव इत्यादि," तथा पृथिवी देवता, अप देवता इत्यादि, तेनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे–स्वप्न सरखु संपूर्ण जगत् छे, वै निपात अवधारणार्थे छे. "एष ब्रह्मविधि" अर्थात् आ परमार्थ प्रकारछे. अजसा एटले सिद्धा न्यायथी जाणवा योग्य छे, आ श्रुति पांचे जूतोनो अजाव कथन करे छे, बीजी श्रुतियो पांचे जूतोनी सत्ता कथन करे छे, आ तमारा मनमां सशय छे. तमारा मनमा एवो पण संशय छे के–युक्तिथी पांच जूतो सिद्ध थता नथी. श्री जगवाने तेमनो पूर्वपक्ष खडन करी वेदपदोनो यथार्थ अर्थ समजाव्यो ते अधिकार उक्त ग्रथोथी जाणवो अव्यक्तजीए पण पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी.

पांचमा सुधर्म नामना आचार्य आव्या, तेमनो अधिकार पण पूर्वोक्त रीते जाणवो श्रीजगवाने कह्यु के तमारा मनमां आ सशय छे–मनुष्यादि सर्व जेवा आ जवमां छे, तेवाज जविष्यना जन्ममा उत्पन्न थायछे, के मनुष्य पण पशुआदि थइ जाय छे? आ संशय तमने परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेल छे ते वेदश्रुतियो आ छे– "पुरुषोवैपुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं इत्यादीनि" तेनाथी विरुद्ध श्रुति– "श्रगालोवैएषजायते य सपुरीषोदह्यत इत्यादि" आ सर्व श्रुतियोनो अर्थ जगवाने तेमने यथार्थ समजावी तेमनो सशय दूर कर्यो तेमणे पोताना पांचसो शिष्यो साथे दीक्षा लीधी.

छठा मंडिक पुत्र आव्या तेमना मनमा संशय हतो के–बंध, मोक्ष छे के नहि? आ सशय पण विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हयो ते श्रुतियो आ छे– 'स एष विगुणो विजुर्न बध्यते, ससरति वा न मुच्यते मोचयति वा ॥

एषवाह्यमन्यंतरंवावेद इत्यादीनि” आ श्रुतिनो अर्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे आ जीव सत्वादि गुणरहित सर्वगत सर्वव्यापी, पुण्यपापथी तेने बंध थतो नथी, अने संसारमां ते भ्रमण पण करतो नथी, कर्मोथी छुटतो नथी, अने बधनो अजाव होवाथी, बीजाउने कर्मोथी छोडावतो पण नथी, आ प्रमाणेना कथनथी आत्मा अकर्त्ता छे, तेज फरीथी बतावे छे–आ पुरुष पोताना आत्माथी जिन्न महत् अहंकारादि, तेमज अन्यतर एवु पोतानुं स्वरूप जाणतो नथी, कारण के जाणवुं ते ज्ञानथी थाय छे, अने ज्ञान, प्रकृतिनो धर्म छे, प्रकृति अचेतन छे, तेथी बध मोक्ष नथी आ श्रुतिथी बध मोक्षनो अजाव सिद्ध थाय छे. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–“नहि वै शरीरस्य प्रियाप्रिययोरपहतिरस्ति अशरीरं वा वसंतं प्रियाप्रिये नस्पृशत इत्यादीनि” जावार्थ–शरीर सहितने सुख ङुःखनो अजाव कदापि थतो नथी तात्पर्य ए छे के–संसारी जीव सुख डुःखथी रहित थतो नथी, अने कारणना अजावथी अमूर्त आत्माने सुखडुःख स्पर्श करी शकता नथी. आ श्रुतिथी बंधमोक्ष सिद्ध थाय छे, तथा तमारा मनमां एम पण छे के–युक्तिथी पण बंध मोक्ष सिद्ध थता नथी इत्यादि संशयनो जगवाने यथार्थ खुलासो करी तेमनो संशय दूर कर्यो, पछी मंडितपुत्रे पोताना साडा त्रणसो शिष्योनी साथे दीक्षा लीधी

सातमा मौर्यपुत्र आव्या. तेमना मनमां आ संशय छे– देवता छे किंवा नहि ? आ संशय परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयेलो छे, ते श्रुतियो आ छे–“स एष यज्ञायुधी यजमानोजसास्वर्गलोकं गछति इत्यादीनि” आ श्रुतियो स्वर्ग तथा देवताउनी सिद्धि करे छे. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे–“अपामसोमं अमृता अजूम अगमामज्योतिर्विदामदेवान् ॥ किं नूनमस्मान् तृणवदराति किमुधूर्त्ति रमृतमर्त्यस्येत्यादीनि” तथा “कोजानाति मायोपमान् गीर्वाणानिन्द्रयमवरुणकुबेरादीन् इत्यादि” आ श्रुतिनो जावार्थ तमारा मनमां आ प्रमाणे जासन थाय छे– पाणी पीता थकां अर्थात् सोम लतानो रस पीता थकां अमृत (अमरण) धर्मवाला अमे थया छीए, ज्योति, स्वर्ग अने देवताने अमे जाणता नथी. वली देवता अमे थया छीए ते पण जाणता नथी, देवता तृणनी जेम

अमने शुं करी शके छे? आ श्रुति अभाव प्रतिपादन करे छे. वली आ श्रुति भावनी प्रतिपादक छे–" धूर्त्तिजरा अमृतमर्त्यस्य " अमृतत्व प्राप्त पुरुषने शु करी शके छे ? आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ समजावी श्रीभगवंते तेमनो संशय दूर कर्यो पछी तेमणे पोताना साडा त्रणसो छात्रोनी साथे दीक्षा लीधी

आठमा अकंपित आव्या तेमना मनमां नर्क छे के नहि ? एवो संशय हतो ते संशय पण परस्पर विरुद्ध वेदश्रुतियोथी थयो हतो, ते श्रुतियो आ छे– "नारकोवै एप जायते यः शूद्रान्नमश्नाति इत्यादि" भावार्थ– जे ब्राह्मण शूद्रनुं अन्न खाय छे ते नारकी थाय छे आ श्रुतिथी नर्क सिद्ध थाय छे, तथा "नहवै प्रेत्यनरके नारका. संतीत्यादि" आ श्रुतिथी नर्कनो अभाव सिद्ध थाय छे आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्रीभगवंते समजावी तेमनो सशय दूर कर्यो. पछी अकंपितजीए पोताना त्रणसो छात्रोनी साथे दीक्षा लीधी.

नवमा अचलभ्राता आव्या तेमना मनमां संशय हतो के– पुण्यपाप छे के नहि ? आ सशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो. ते श्रुतियो आ छे– " पुरुप एवेदं ग्निसर्वंइत्यादि" बीजा गणधरनी जेम तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– " पुण्य पुण्येन कर्मणा भवति, पाप पापेन कर्मणा भवति इत्यादि " आ श्रुतिथी पुण्य पाप सिद्ध थाय छे आ संशय तेमना भगवंते दूर कर्या. तेमणे पण पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी

हवे दसमा मेतार्य आव्या. तेमना मनमां एवो संशय हतो के–परलोक छे के नहि ? आ सशय वेदनी परस्पर विरुद्ध श्रुतियोथी थयो हतो ते श्रुतियो आ छे– "विज्ञानघन इत्यादि " प्रथम गणधरनी जेम आ श्रुति अभाव सूचक छे, तथा " सवै अय आत्मा ज्ञानमय इत्यादि" आ श्रुति भावप्रतिपादक छे तेमनो यथार्थ अर्थ समजावी भगवंते सशय दूर कर्यो पछी मेतार्यजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी.

हवे छेला (अगीआरमा) प्रभासजी आव्या तेमना मनमां संशय हतो के– निर्वाण छे के नहि ? ते श्रुतियो आ छे–" जरामर्यं वा एतत् सर्वं यदग्निहोत्र " भावार्थ–अग्निहोत्र जीवहिंसा संयुक्त छे, अने जन्म-

मरणनु कारण छे, छतां अग्निहोत्र निरंतर करवो एम वेदमां कथन करेल छे, जेथी एवो क्यो समय छे के जे वखते मोक्ष प्राप्त करवानुं कर्म करीये ? ते कारणथी आत्मानो मोक्ष (निर्वाण) कदापि थइ शकतो नथी. तेनाथी विरुद्ध श्रुति आ छे– "द्वे ब्रह्मणी वेदितव्ये परमपरं च तत्र परं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्मेति" आ श्रुति मोक्षप्राप्ति सूचवे छे. आ श्रुतियोनो यथार्थ अर्थ श्री भगवंते समजावी तेमनो संशय दूर कर्यो. पछी प्रभासजीए पोताना त्रणसो छात्रो साथे दीक्षा लीधी.

श्री महावीर भगवंतने वैशाख सुद दशमीना रोज मध्यपापानगरीना महासेन वनमां पूर्वोक्त (४४००) शिष्यो थया. पछी राजपुत्र तथा श्रेष्ठि पुत्रादि अने राजपुत्री तथा श्रेष्ठिपुत्री तथा अने राजा तथा राणी प्रमुख अनेक मनुष्योए दीक्षा लीधी.

अनुक्रमे भगवंत श्री महावीरस्वामि आयुष्य पूर्ण थये पावापुरीमां मोक्ष प्राप्त करता हवा. तेज रात्रिए इन्द्रभूति (गौतमस्वामि) ने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं इंद्रोए निर्वाण महोत्सव कर्यो, अने सुधर्मा स्वामिने श्री महावीरस्वामिनी गादी उपर स्थापन कर्या श्री गौतमस्वामिने गादी उपर स्थापन. कर्या तेनुं कारण ए छे के केवलज्ञानी पुरुष, कोइ गादीपति थइ शकता नथी, कारण के केवली तो तेमने जे कांइ पुछवामां आवे तेनो उत्तर पोताना ज्ञानथीज आपे छे, परंतु एम कहेता नथी के, हु अमुक तीर्थंकरना कथन मुजब कहुं छुं, ते कारणथी केवलज्ञानी गादीपति थता नथी जो गादीपति थाय तो तीर्थंकरना शासननो लोप थाय, जे कदापि थतुं नथी, कारण के अनादि रीतिने केवली केम उत्थापन करे ? तेज कारणथी श्रीगौतमस्वामि गादीपति थया नहि, अने श्री सुधर्मास्वामिने गादि उपर विराजमान करवामां आव्या.

१ श्री सुधर्मस्वामि पचास वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, त्रीश वर्षसुधी श्रीमहावीर भगवंतनी चरण सेवामां रह्या, श्रीभगवंतना निर्वाण पछी बार वर्षसुधी छद्मस्थ रह्या, अने आठ वर्ष केवलीपर्याय पाली मोक्षे गया. भगवंत श्री महावीरस्वामि पछी श्रीगौतमस्वामि केवलज्ञान पामी बार वर्ष जीवता रह्या. श्रीगौतमस्वामिना निर्वाण पछी श्रीसुधर्मास्वामिने केवलज्ञान प्राप्त थयु. श्री सुधर्मस्वामिनुं आयुष्य (१००) एकसो

वर्षनुं हतु तेओ श्री महावीरस्वामि पछी वीश वर्षे मोक्षे गया

२ श्री सुधर्मस्वामिनी पाट उपर श्री जंबुस्वामि बेठा राजगृहनगर-निवासी श्री रीषभदत्त शेठनी धारणी नामनी स्त्रीना कुखथी तेओ जन्म्या हता नव्वाणु क्रोड सोनैया तथा आठ स्त्रीओनो त्याग करी तेओये दीक्षा लीधी सोल वर्ष गृहस्थावासमां रह्या, वीश वर्ष व्रतपर्याय, अने चमालीस वर्ष केवलपर्याय पाली श्री महावीरना निर्वाण पछी चोसठमे वर्षे मोक्षे गया

श्री जंबुस्वामि पछी भरतक्षेत्रमां दश बावतो विछेद गइ. तेना नाम, १ मन.पर्यायज्ञान, २ परमावधिज्ञान, ३ पुलाकलब्धि, ४ आहारकशरीर ५ क्षपकश्रेणि, ६ उपशमश्रेणि, ७ जिनकल्पिमुनिनी रीति, ८ परिहार-विशुद्धि चारित्र, सूक्ष्मसंपराय चारित्र अने यथाख्यात चारित्र, ९ केवलज्ञान, १० मोक्षप्राप्ति श्री महावीरस्वामि केवलज्ञान पाम्या पछी चोद वर्षे जमाली नामनो प्रथम निन्हव थयो, अने सोल वर्षे तिष्यगुप्त नामनो बीजो निन्हव थयो श्री जंबुस्वामिनुं आयुष्य (८०) एंशी वर्षनु हतु

३ श्री जंबुस्वामिनी पाट उपर श्री प्रभवास्वामि बेठा. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे छे– विंध्याचल पर्वत नजीक जयपुर नामनु नगर हतुं, तेनो विंध्य नामनो राजा हतो. तेने बे पुत्रो थया, एक मोटो प्रभव, बीजो छोटो प्रभव मोटो प्रभव कोइ कारणसर गुस्से थइ जयपुर नगरथी बहार निकली विंध्याचलनी विषम जगामां गाम वसावी रहेवा लाग्यो, अने चोरी, रस्तानी लूट, धाडचोरी, जबरीथी पकडवु विगेरे कृत्यो करी पोतानी आजीविका चलावतो हतो एकदा पांचसे चोरनो समुदाय लइ राजगृह नगरमा जंबुजीनु घर लुटवा आव्यो जंबुस्वामीए तेने प्रतिबोध कर्यो ते प्रतिबोधथी तेणे पांचसे चोरोनी साथे जंबुस्वामि-सहवर्तमान दीक्षा लीधी इत्यादि श्री जंबुस्वामि तथा प्रभवस्वामिनो अधिकार जंबुचरित्र तथा परिशिष्ट पर्वथी जाणवो प्रभवस्वामि त्रीश वर्ष गृहस्थपर्याय, चमालीस वर्ष व्रतपर्याय, अने अगीआर वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु पचासी वर्षनु भोगवी श्रीमहावीरस्वामि पछी पचोतेर वर्षे स्वर्गे गया

४ श्रीप्रभवस्वामिनी पाट उपर श्री शिय्यंभवस्वामि बेठा जेओए मनक साधु वास्ते श्रीदशवैकालिक सूत्रनी रचना करी. तेनी उत्पत्ति आ प्रमाणे–एकदा प्रस्तावे प्रभवस्वामिने रात्रिना विचार थयो के मारी पाट उपर कोण बेसशे ? ज्ञानबलथी विचारतां सर्व संघमां पोतानी पाट योग्य कोइ देखवामां आव्यु नही, तेथी पर दर्शनवालाओ तरफ ज्ञानबलथी देखवा लाग्या. अनुक्रमे तेमणे राजगृह नगरमां शिय्यंभव भट्टने यज्ञ करतां थकां, पोतानी पाट योग्य दीठा. तत्काल प्रभवस्वामि विहार करी सपरिवार राजगृह नगरमां आव्या पोताना बे साधुने आदेश कर्यो के तमे यज्ञस्थानमां जइ भिक्षावास्ते धर्मलाभ कहो, अने यज्ञ करनाराओने आ प्रमाणे कहो– "अहोकष्टमहोकष्ट तत्त्वं विज्ञायते नहि" बंने साधुए गुरुना आदेश मुजब पूर्वोक्त सर्व कर्युं. ज्यारे ब्राह्मणोए "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्यु, ते वखते यज्ञवाडामां शिय्यंभव ब्राह्मणने यज्ञदीक्षा लेवानी हती, तेथी तेओ यज्ञवाडाना दरवाजामां उभा हता, जेथी तेमणे पण मुनियोनु "अहोकष्टं" इत्यादि श्रवण कर्युं तत्काल तेओ विचारवा लाग्या के आवा उपशमप्रधान साधु कदापि असत्य बोलता नथी, तेथी तेमना मनमां संशय थयो, जेथी उपाध्यायने पुछ्युं के तत्त्व शुं छे? उपाध्यायजीए कह्यु के चार वेदमां जे कथन करेल छे तेज तत्त्वछे, वेद उपरांत बीजु तत्त्व नथी. शिय्यंभवे कह्युं के तमे दक्षिणाना लोभथी मने तत्त्व बतावता नथी वली रागद्वेषरहित, निर्मम, नि परिग्रह, शांत, दांत, महंत एवा मुनियोनुं कथन कदापि असत्य होतुं नथी, तेथी हवे तमे मारा गुरु नथी, तमे तो जन्मथी जगत्ने ठगवानी बाजी रची बेठा छो, माटे शिक्षायोग्य छो, वास्ते कां तो मने तत्त्व बतावो ? अने तेम नहि करशो तो तलवारथी हुं तमारु शिरछेद करीश एम कहेतांज अत्यंत क्रोधना आवेशमां आवी जवाथी मियानथी तलवार बहार काढी उपाध्याये प्राणांत कष्ट देखी कह्युं के अमारा वेदोमां पण एमज लखेल छे, तथा अमारी आम्नाय पण एवीज छे के ज्यारे कोइ अमारुं शिरछेद करवा आवे त्यारेज तत्त्व कहेवुं, अन्यथा नही तेथी हवे हुं तमने तत्त्व कहु छु आ यज्ञस्थंभनी नीचे अर्हतनी प्रतिमा स्थापन करेली छे, अने तेनी प्रछन्न रीते नीचेज पूजा करवामां आवे छे.

तेना प्रजावथी यज्ञना सर्व विघ्नो दूर थइ जाय ले. जो यज्ञस्थज नीचे अर्हंतनी प्रतिमा न राखवामां आवे तो महातपा सिद्धपुत्र तथा नारद, आ वने यज्ञने विध्वंस करी नाखे ले. पढी उपाध्यायजीए स्थज उखेडी अर्हंतनी प्रतिमा वतावी, अने कह्युं के आ प्रतिमा जे देवनी ले, ते देव, श्री अर्हंतनो कथन करेलो धर्म, जीवदया रूप तत्व ले, अने आ जे वेदप्रतिपाद्य यज्ञ ले, ते सर्व हिंसात्मक रूप होवाथी विडवना रूप ले, परतु शुं करीए? जो अमे एम न करीए तो अमारी आजीविका चालती नथी. हवे तु तत्त्व समजी ले, अने मने ढोडी दे; तथा परमार्हत थइ जा कारण के मे तने मारा पेटने वास्ते वहु दिवस रखडाव्यो ले गुरुनुं शुद्ध अतःकरण थयेलुं जाणी शिय्यंजवे तेने नमस्कार कर्यो, अने कह्युं के यथार्थ तत्त्वनो प्रकाश करवाथी तमे हवे साचा उपाध्याय ढो एम कही तुष्टमान थइ यज्ञनी सर्व सामग्री सुवर्णपात्रादि शिय्यंजवे उपाध्यायने आपी दीधी, अने प्रजवस्वामि पासे जइ तत्त्वनु स्वरूप पुढी दीक्षा लीधी तेमनो शेष वृत्तांत परिशिष्टपर्व ग्रथथी जाणी लेवो शियंजव स्वामि अठावीश वर्ष गृहस्थावास, अगीआर वर्ष सामान्य साधु, अने तेत्रीश वर्ष युगप्रधानाचार्य पदवी जोगवी, सर्व आयु वासठ वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीर जगवंत पढी अठाणुं वर्षे स्वर्गे गया.

५ श्रीशिय्यंजवस्वामिनी पाट उपर यशोजद्रस्वामि वेठा., ते वावीस वर्ष गृहस्थवास, चौद वर्ष व्रतपर्याय, पचास वर्ष युगप्रधान पदवी. सर्व आयु ढासी वर्षनुं जोगवी श्रीमहावीर पढी (१४८) वर्षे स्वर्गे गया

६ श्री यशोजद्रस्वामिनी पाट उपर एक सजूतविजय अने वीजा जद्रवाहुस्वामि, आ वने वेठा. सजूतविजयजी वेंतालीस वर्ष गृहवास, चालीस वर्ष व्रतपर्याय अने आठ वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नेवु वर्षनु जोगवी स्वर्गमां गया श्रीजद्रवाहुस्वामिए १ आवश्यक निर्युक्ति, २ दशवैकालिक निर्युक्ति, ३ उत्तराध्ययन निर्युक्ति, ४ आचारांग निर्युक्ति, ५ सूत्रकृतांग निर्युक्ति, ६ सूर्यप्रज्ञप्ति निर्युक्ति, ७ रीषिजाषित निर्युक्ति ८ कल्पनिर्युक्ति, ए व्यवहार निर्युक्ति, १० दशानिर्युक्ति, आ दश निर्युक्तियो, तथा १ कल्प, २ व्यवहार, ३ दशाश्रुतस्कंध, आ त्रण नवमा पूर्वमांथी उद्धार करी वनाव्या. वली जद्रवाहुसंहिता नामनु अति विस्तारवालु

ज्योतिष शास्त्र बनाव्युं. उपसर्गहरस्तोत्र बनाव्युं. एवीरीते जैनमतवालाउं उपर बहुज उपकार कर्यो. ज्ञद्रबाहुस्वामिने वराहमिहिर नामना एक सगा जाइ हता, ते प्रथम तो जैनमतना साधु थया हता, पठी साधुपणु तजी दीधु, तेमणे वराही संहिता बनावी विक्रमादित्यनी सज्ञामां जे वराह मिहिर पंडित हता ते बीजा वराहमिहिर थया ठे संहिताकारक ते नही तेमनुं सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्वथी जाणवु श्रीज्ञद्रबाहुस्वामि पीसतालीस वर्ष गृहस्थावास, सत्तर वर्ष व्रतपर्याय, चौद वर्ष युगप्रधान, सर्व आयु ठोंतेर वर्षनु जोगवी श्रीमहावीर पठी (१७०) वर्षे स्वर्गे गया

श्री संज्ञूतविजय तथा श्रीज्ञद्रबाहुस्वामिनी पाट उपर श्रीस्थूलज्ञद्रस्वामि बेठा तेमनो सर्व वृत्तांत परिशिष्ट पर्व ग्रंथथी जाणवो १ प्रज्ञवस्वामि, २ शिय्यंज्ञवस्वामि, ३ यशोज्ञद्रस्वामि, संज्ञूतविजय, ५ ज्ञद्रबाहुस्वामि, ६ स्थूलज्ञद्र. आ ठ आचार्यो चौद पूर्वना वेत्ता हता श्री स्थूलज्ञद्रजी त्रीस वर्ष गृहस्थावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, पीसतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु नवाणुं वर्षनु जोगवी श्रीमहावीर पठी (२१५) वर्षे स्वर्गमां गया. श्रीमहावीर पठी बसे चौद वर्षे आषाढ आचार्यनो शिष्य त्रीजो निन्हव थयो.

स्थूलिज्ञद्रजीना समयमां नवनंदोनु (१५५) एकसो पंचावन वर्षनुं राज्य उत्थापी चाणाक्य ब्राह्मणे चंद्रगुप्त राजाने राज्यसिंहासन उपर बेसाड्यो. चद्रगुप्तना वंशजोए (१०८) वर्षसुधी राज्य कर्युं चंद्रगुप्तना पितानुं नाम मोरपाल हतुं, तेथी चंद्रगुप्तनो मौर्यवंश कहेवाय ठे. चंद्रगुप्त जैनमती श्रावक राजा हतो चंद्रगुप्त तथा नव नंदोनु वृत्तांत परिशिष्ट पर्व, उत्तराध्ययनवृत्ति तथा आवश्यकवृत्तिथी जोइ लेवु

श्रीस्थूलज्ञद्रस्वामि पठी उपरना चार पूर्व, प्रथम संहनन, प्रथम संस्थान विछेद थइ गयां. श्रीमहावीर पठी (२२०) वर्षे अश्वमित्र नामनो चोथो क्षणिकवादि निन्हव थयो श्रीस्थूलज्ञद्रजीना समयमां बार वर्षनो डुकाल पड्यो, त्यारे चद्रगुप्तनुं राज्य हतुं; तथा श्रीमहावीर पठी (२२८) वर्षे वित्यावाद गंग नामनो पांचमो निन्हव थयो

८ श्री स्थूलज्ञद्रजी पठी तेमना बे शिष्यो एक आर्यमहागिरि तथा बीजा सुहस्ति सूरि आठमी पाठ उपर बेठा. आर्यमहागिरिना शिष्य

१ वकुल, २ वलिस्सह, वलिस्सहना शिष्य श्री उमास्वातिजी थया, जेमणे तत्त्वार्थादि सूत्रनी रचना करी, उमास्वातिजीना शिष्य श्यामाचार्य, जेमणे पन्नवणा सूत्रनी रचना करी आ श्यामाचार्य श्री महावीर पछी त्रणसो छोतेर वर्षे स्वर्गे गया आर्यमहागिरिजी त्रीस वर्षे गृहवास, चालीस वर्ष व्रतपर्याय, त्रीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्व आयु एकसो वर्षनु जोगवी स्वर्गे गया

श्रीसुहस्तिसूरिये एक जिखारीने दीक्षा आपी, ते जिखारी काल करी चंद्रगुप्तना वंशमां तेना पुत्र विंदुसार, विंदुसारनो पुत्र अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, कुणालनो पुत्र सप्रति नामनो राजा थयो सप्रति राजाये जैनधर्मनी वहुज वृद्धि करी श्री कल्पसूत्रना प्रथम उद्देशामां श्री महावीरस्वामिना समयमा वर्त्तमान समय सरखावतां वहु थोडा देशोमा जैनधर्म लखेल छे मारवाड, गुजरात, दक्षिण, पजाव विगेरे देशोमां जे जैनधर्म प्रवर्त्ते छे, ते सप्रति राजाना समयथीज प्रवर्त्ते छे यद्यपि वर्त्तमानमा जैनी राजा नही होवाथी जैनधर्म सर्व स्थले नथी, परंतु संप्रति राजाना समयमां जैनधर्म जारत वर्षमा सर्वत्र हतो, तथा उन्नतिपर हतो, कारण के सप्रति राजानु राज्य मध्य खड तथा गंगा अने सिधुपार सर्व देशोमां हतु संप्रति राजाये धर्मवृद्धिमाटे पोताना नोकरोने जैनसाधुउ वनावी, पोतानी आज्ञा माननारा राजाउ शक, यवन, फारसादि देशोमा हता, ते देशोमा पण मोकल्या हता तेउये ते राजाउने जैनना साधुउना आहार, विहार, आचारादि सर्व वताव्या हता, तेमज समजाव्या हता वाद साधुउनो विहार ते देशोमां करावी ते देशना लोकोने जैनधर्मी कर्या हता सप्रति राजाये (९९०००) नवाणु हजार जीर्णोद्धार जिनमदिरोना कराव्या, तथा (२६०००) छवीस हजार नवा जिनमंदिरो वंधाव्या, सोना, चांदी, पीतल, पाषाण प्रमुखनी सवाक्रोड प्रतिमा वनावी. तेमना वनावेला मंदिर, नाडोल, गीरनार, शत्रुजय, रतलाम प्रमुख अनेक स्थले अमे देखेल छे सप्रति राजानी प्रतिमा तो अमे सेंकडो दीठी छे सप्रति राजानु सपूर्ण वृत्तांत परिशिष्ट पर्वादि ग्रथोथी जाणवुं

सुहस्ति सूरिए उज्जयननी रेहेनारी जद्रा शेठाणीना पुत्र अवतीसुकमालने दीक्षा आपी छे [illegible] ते स्थले

तेना महाकाल नामना पुत्रे जिनमंदिर बंधाव्युं ते मंदिरमां पोताना पिताना नामथी अवंती पार्श्वनाथनी मूर्त्ति स्थापन करी कालांतरे ब्राह्मणोए पोताना बलवान समयमां ते मंदिरमां मूर्त्तिने नीचे दबावी उपर महादेवनुं लिंग स्थापन करी महाकाल मंदिर प्रसिद्ध करी दीधुं. ज्यारे उज्जयनमां विक्रम राजा थयो, ते अवसरे कुमुदचन्द्र (सिद्धसेन दिवाकर) नामना जैनाचार्ये ते मंदिरमां कल्याणमंदिर स्तोत्र बनावी स्तुति करी, जेथी शिवलिंग फाटी वचमांथी तत्काल पूर्वोक्त पार्श्वनाथनी मूर्त्ति फरी प्रगट थइ. तेनो इतिहास आ प्रमाणे छे.

विद्याधर गच्छमां स्कंदिलाचार्यना शिष्य वृद्धवादि आचार्य थया. ते अवसरे उज्जयनमां विक्रमादित्य राजा हतो. तेनो मंत्री देवरूषि ब्राह्मण हतो, कात्यायन गोत्री हतो, तेने देवसिका नामनी स्त्री हती तेनो पुत्र सिद्धसेन विद्याना अभिमानथी सर्व जगत्‌ना लोकोने तृणवत् समजतो हतो; बुद्धिमां पण मारा समान कोइ नथी एम मानतो हतो. मने जे मने वादमां जीते तेनो हुं शिष्य थइ जाउं एम ज्यां त्यां विवाद करतो हतो. वृद्धवादि आचार्यनी कीर्ति तेना सांभलवामां अत्यत आवी, तेथी तेनी साथे विवाद करवा सुखासन (पालखी) मां बेसी भरुच तरफ जतो हतो ते अवसरे वृद्धवादि पण भवितव्यताना योगे सन्मुख आवता तेने मल्या बंनेनो मेलाप थता परस्पर आलापसंलाप थयो. सिद्धसेनजीए कह्युं के मारी साथे तमे वाद करो. वृद्धवादिए कह्युं के वाद तो करुं, परंतु आ जंगलमां हार जीतनो कोइ साक्षि नथी. सिद्धसेनजीए कह्युं आ जे गाय चरावनारा गोपो छे, तेज मारा तमारा साक्षी थाउ, तेउ जेने हार्यो कहे, ते हार्यो वृद्धवादिए कह्युं तमने जो तेम कबुल होय तो मारे इनकारी नथी भले तेउज साक्षि रहे. हवे तमे वाद चलावो! तत्काल सिद्धसेनजीए अत्यंत छटादार संस्कृत भाषामां पोतानो वाद शरु कर्यो, अने ते वाद समाप्त कर्यो, ते सांभली गोपोए कह्युं के आ तो कांइ पण जाणता नथी, केवल लांबा बराडा पाडी अमारा कानमां धाक पाडे छे हवे गोपोए वृद्धवादिने कह्युं हे वृद्ध! तुं बोल? वृद्धवादि अवसर देखी, कछ बांधी, गोपोनी भाषामां बोलवा लाग्या, अने थोडुं थोडु कुदवा पण लाग्या. ते अवसरे तेमणे जे छंदोनो उच्चार

कर्यों तेमांथी कांइक लखीए छीएः– "नवि मारिये नवि चोरिये, परदारगमन निवारिये ॥ थोवाथो वंटाइये, सग्गिमट्टे मट्टे जाइये ॥ १ ॥ वली बोलवा तथा नाचवा लाग्या ॥ छद ॥ कालो कंबल नीचो वट्ट, छाछे जरिउ दीवडो थट्ट ॥ एवड पडीउं नीले जाड, अवर किसो छे सग्ग निलाड ॥२॥ इत्यादि गोपो सांजली वहुज खुशी थया, अने कहेवा लाग्या के वृद्धवादि सर्वज्ञ छे, अमने केवो मीठो, कानने सुखदायक तथा अमारा योग्य उपदेश कर्यो सिद्धसेन तो काइ जाणतो नथी. गोपोनो निर्णय सांजली सिद्धसेनजीए वृद्धवादिने कह्युं हे जगवन्! तमे मने दीक्षा आपी पोतानो शिष्य बनावो, कारण के मारी प्रतिज्ञा छे के जो गोपो मने हार्यो कहे तो हु हार्यो, अने तमारो शिष्य हुं बनु वृद्धवादिए कह्यु के आ गोपोनी सजामा वाद विवाद शो? ते प्रमाणेना वादविवादथी हारजीत कहेवाय नहि तमे जृगुपुर (जरुच) मां राजसजामा चालो, सजा समक्ष मारो तमारो वाद विवाद थशे सिद्धसेनजीए कह्यु के हु जले विद्वान् होउं, परतु अवसरनो जाण नथी, अवसरना ज्ञाता तमे छो, तेथी मने हार्यो समजी दीक्षा आपो सिद्धसेनजीए पूर्वोक्त कह्या छतां वृद्धवादि आचार्य तेने राज्यसजामां विवाद करवा सारु लइ आव्या राज्यसजा समक्ष विवाद थयो, तेमां सिद्धसेनजीनो पराजय थयो, तेणे आचार्य पासे दीक्षा लीधी, गुरुए तेनुं नाम कुमुदचन्द्र पाड्यु. पछी ज्यारे आचार्य पदवी आपी त्यारे फरी सिद्धसेन दिवाकर नाम राख्यु पछी वृद्धवादि तो अन्यत्र विहार करी गया, अने सिद्धसेन दिवाकर अवंती (उज्जयन) मा गया. उज्जयननो संघ सन्मुख आव्यो, अने सिद्धसेन दिवाकरने सर्वज्ञपुत्र एवु विरुद आप्यु, एम विरुदावली बोलता अवंती नगरीना चोकमां आव्या ते अवसरे विक्रमादित्य राजा हाथी उपर चडेला सन्मुख आवता मळ्या. राजाए सर्वज्ञपुत्र एवु विरुद सांजली तेनी परिक्षा वास्ते हाथी उपर बेठा बेठांज मनथी तेमने नमस्कार कर्यो आचार्ये तत्काल धर्मलाज कह्यो राजाये पुछ्यु, वंदना कर्या विना आपे मने धर्मलाज केम आप्यो? शु धर्मलाज बहु सस्तो छे? आचार्ये कह्यु, आ धर्मलाज कोड चिंतामणि रत्नोथी पण अधिक छे, जे कोइ अमने वंदना करे छे,

तेनेज अमे धर्मलाभ कहीये छीये. वली एम पण नथी के तमे अमने वंदना नथी करी तमे पण पोताना मनथी वंदना करी छे मनज सर्व कार्योमां प्रधान छे, ते कारणथी अमे धर्मलाभ कह्यो छे, अने तमोए पण मारी परिक्षावास्तेज मनथी नमस्कार करेल छे. विक्रम राजाए तुष्टमान थइ हाथीथी नीचे उतरी सर्व संघनी समक्ष आचार्यने वंदना करी. एक क्रोड सोनामहोर भेट मुकी, आचार्ये सोनामहोर लीधी नही, कारण के तेओ त्यागी हता. राजाये पण पाछी लीधी नहि. आखर आचार्यनी आज्ञाथी संघना गृहस्थोये जीर्णोद्धारमां वापरी दीधी राजाना दफतरमां तो आ प्रमाणे लखेलुं छे. श्लोक ॥ धर्मलाभ इति प्रोक्ते, दूरादुच्छ्रितपाणये ॥ सूरये सिद्धसेनाय, ददौ कोटिं धराधिपः ॥ १ ॥ श्रीविक्रम राजानी सन्मुख सिद्धसेनदिवाकरे एम पण कह्युं हतु के ॥ गाथा ॥ पुण्णे वास सहस्से, सयम्मि वरिसाण नव नवइ कलिए ॥ होइ कुमर नरिंदो, तुह विक्रमराय सारिछो ॥ १ ॥ अर्थ. पुण्य एवां एक हजार एकसो नवाणु वर्षे, हे विक्रमराय तमारा जेवोज कुमारपाल नृप थशे अन्यदा सिद्धसेनजी चित्रकूटमां गया. चित्रकूटमां एक अति प्राचीन जिनमंदिर हतु, तेमां एक बहु मोटो स्थंभ तेमना देखवामा आव्यो कोइने पुछ्युं के, आ स्थंभ शानो छे? तेणे कह्युं के पूर्वाचार्योये तेमां रहस्य पुस्तको मुकेलां छे, आ स्थंभ विविध औषध द्रव्यनो बनेलो, वज्रनी जेम जलादिथी अभेद्य छे कोइथी आ स्थंभ खोली शकातो नथी. ते सांभली सिद्धसेनजीये ते स्थंभनी गंध लइ प्रत्यौषधरस तेना उपर छांट्यो, तेथी कमलनी जेम स्थंभ खिली गयो. तेमां पुस्तक दीठां. तेमांथी एक पुस्तक लइ वांचतां प्रथम पत्रमां बे विद्या लखेली प्राप्त थइ. एक सरसव विद्या, बीजी सुवर्णविद्या सरसव विद्यानुं ए बल हतु के कार्य आवी पडे त्यारे मांत्रिक जेटला सरसव जलाशयमां नांखे, तेटला असवार बेतालीसे हथीआर सहित बहार आवे, परदलनो भंग करी कार्य सिद्ध थयेथी अदृश्य थइ जाय. हेम विद्याथी कांइ पण मेहेनतविना शुद्ध हेम कोटि गमे ते धातुथी थइ शके. आ बन्ने विद्या सिद्धसेनजीये सारी रीते लीधी उपरांत आगल वांचवा जाय छे के स्थंभ बंध थइ गयो, सर्व पुस्तको बचमां रही गयां, अने आकाशवाणी थइ के तुं आ पुस्तकोने वांचवाने योग्य नथी,

आगल वांचीश नहि, वांचीश तो तत्काल मरण पामीश सिद्धसेनजीये डरीने विचार कर्यो के वे विद्या मली तेपण सारुं थयु चित्रोडथी विहार करी सिद्धसेनजी पूर्व देशमां कुमारपुरमां गया, तेनो राजा देवपाल नामनो हतो, तेने प्रतिवोधि दृढ जैनधर्मी कर्यो राजा निरंतर सिद्धांत श्रवण करवा लाग्यो, एम केटलोएक काल व्यतीत थयो. एकदा राजा गुप्त रीते गुरुजी पासे आव्यो, आंसुथी नेत्र भरी कहेवा लाग्यो के, हे भगवन् अमो वहुज पापी छइये, तेथी आपनी अति उत्तम गोष्टीनो रस पी शकता नथी अमे वहुज सकटमा आवी पड्या छीये आचार्ये पुछ्युं, तमोनो शु संकट छे? राजाये कह्युं, मारा वैरी राजाउ वहु छे, तेउ एकत्र थइ मारु राज्य लइ लेवा चाहे छे आचाये कह्युं राजन्! आकुल व्याकुल थाउ नहि, तमोने हुं सहाय छुं, हवे तमारे शी चिंता छे? राजा आ हिंमतथी वहुज खुशी थयो, पछी आचार्ये राजाने पूर्वोक्त वने विद्याउ आपी समर्थ कर्यो ते विद्याउथी परदल भग थइ गयु तेमनो सर्व सरंजाम लूटी लीधो राजा आचार्यनो परम भक्त थइ गयो आचार्य पण सुखमां पडी शिथिलाचारी थइ गया आ स्वरूप वृद्धवादिजीना सांभलवामां आव्युं. उपाश्रयना दरवाजा पासे उभा रही कहेवराव्यु के एक बुढो वादी आव्यो छे सिद्धसेने वोलावी पोतानी सन्मुख वेसाड्या. वृद्धवादी पोतानु सर्व शरीर वस्त्रथी ढाकी वोल्या—"अण फुल्लियफुल्लमतोडहि मारोवामोडिहिं मणु कुसुमेहिं ॥ अच्चि निरजणजीण, हिड हिकाइ वणेणवण ॥ १ ॥ सिद्धसेनने विचार करता आनो अर्थ सुझयो नहि, त्यारे विचारवा लाग्या के मारा गुरु तो नहि होय? एमनी उक्तिनो माराथी अर्थ थइ शकतो नथी, एम वारी फरी जोयु तो गुरुने उंलख्या. गुरुने पगे पडी वारवार क्षमा मागवा लाग्या, अने पद्यनो अर्थ पुछवा लाग्या वृद्धवादीजीए कह्युं "अप्राप्त फल एवा फुलने तोड नहि, भावार्थ के आ योग कल्पवृक्ष छे, जे योग रूप वृक्षना यम नियम तो मूल छे, ध्यान रूप मोटुं थड जेनु छे, समता, कवित्व, वक्तृत्व, यश, प्रताप, मारण, उच्चाटन, स्तभन, वशीकरणादि सिद्धियो तेना पुष्प छे, अने केवलज्ञान फल छे हजी तो योगकल्पवृक्षने फुलोज लागेला छे, ते केवलज्ञान रूप फलथी आगल फलशे, तेथी आ अप्राप्त फल, पुष्पोने

शा वास्ते ओडे ठे? तथा पांच महाव्रत रूप रोपा ठे, तेने मरोड नहि. मनरूप पुष्पोथी निरंजन जिनराजने पूज, वनथी वन शुं जम्या करे ठे? राजसेवादि बूरा नीरस फल शुं प्राप्त करे ठे? गुरुना उपदेशथी सिद्धसेनजी शिक्षा पाम्या. राजाने पुठी गुरु साथे अन्यत्र विहार करी गया, अने निविड चारित्र पालवा लाग्या, अनेक आचार्योथी पूर्वोनुं ज्ञान प्राप्त कर्युं वृद्धवादिनो स्वर्गवास थयो बाद एकदा सिद्धसेनजीए सर्व संघ एकठो करी कह्युं के मारो विचार सर्व आगमोने संस्कृत जापामां करी देवानो थयो ठे, श्री संघे कह्युं, शुं तीर्थंकर, गणधर संस्कृत जाणता न होता? तेउंए अर्ध मागधी जापामां आगमो शा वास्ते कर्यां? आ प्रमाणे कहेवाथी आपने पारांचिक नामनुं प्रायश्चित्त आवे ठे, आप पोते विचारी ल्यो? अमे आपने शुं कहीए? सिद्धसेने विचार करी कह्युं के हु मौन धरी बार वर्षनुं पारांचिक प्रायश्चित्त लइ गुप्त रीते मुखवस्त्रिका, रजोहरणादि लिंग राखी, अवधूत रूप धारण करी फरीश एम बोली गछनो त्याग करी नगरादिमां पर्यटन करवा लाग्या बार वर्ष व्यतीत थये उज्जयन नगरीमां महाकालना मंदिरमां शेफालिका पुष्पोथी रंगेला वस्त्र पेहेरी सिद्धसेन आवी बेठा नमस्कार करता नथी, तेथी पूजारी प्रमुख लोकोए कह्युं के तमे महादेवने नमस्कार केम करता नथी? सिद्धसेन बोलताज नथी एम लोकपरंपराथी श्रवण करतां विक्रमादित्य पण त्यां आव्या, अने कह्युं "क्षीर लिलिक्षो जिक्षो किमिति त्वया देवो न वंद्यते" सिद्धसेनजीए कह्युं हे राजन्! मारा नमस्कारथी तमारा देवनुं लिंग फाटी जशे, पठी तमोने बहुज उःख थशे, ते कारणथी हु नमस्कार करतो नथी. राजाए कह्यु, लिंग फाटे तो फाटवा द्यो, परंतु तमे नमस्कार करो तत्काल सिद्धसेन पद्मासने बेसी कहेवा लाग्या, सांजलो! पठी प्रथम द्वात्रिंशिकाथी देवनु स्तवन करवा लाग्या, यथा ॥ स्वयम्भुवं भूतसहस्रनेत्र, मनेक मेकाक्षर जावलिंगं ॥ अव्यक्त मव्याहत विश्वलोक, मनादि मध्यांतम पुण्य पापं ॥ १ ॥ इत्यादि प्रथमज श्लोक बोलवाथी लिंगमाथी धुमाडा निकलवा लाग्या, एटले लोको बोलवा लाग्या के शिवजीनुं त्रीजुं नेत्र खुल्यु ठे, हमणांज आ जिक्षुकने नेत्रना अग्निथी जस्म करी देशे तत्काल विज-

लीनां तेजनी जेवो तडतडात करतो प्रथम अग्नि निकल्यो, पछी श्री पार्श्वनाथजीनु बिंब प्रगट थयु, एटले वादी सिद्धसेनजीए कल्याणमंदिरादि स्तवनो करी क्षमा मागी विक्रमादित्य बोलवा लाग्या के हे भगवन् आ अदृष्ट पूर्व आश्चर्य शुं बताव्यु ? आ नवा देव कोण छे ? वली आ प्रगट शा वास्ते थया ? एम पुछतां सिद्धसेन सूरिए अवंतीसुकमाल तथा तेना पुत्र महाकाल सबधी अने ब्राह्मणोए कालानुसारे बल पामी मूर्त्ति नीचे दबावी शिवलिंग स्थापन करी देवासंबधी सर्व वृत्तांत कह्यो वली कह्युं के शासन देवताए मारी स्तुतिथी शिवलिंग फाडीने वचमाथी आ प्रतिमा प्रगट करी छे हवे तमे सत्य असत्यनो निर्णय करो विक्रमादित्य आ कार्यथी संतोप पामी देवनी समक्ष गुरुमुखथी बार व्रत ग्रहण करता हवा, अने मदिरना खर्च वास्ते एकसो गाम आपता हवा, तथा सिद्धसेन महाराजनी बहु प्रशसा करी पोताना स्थाने गया वादींद्र सिद्धसेनने संघे अति तुष्टमान थइ संघमां लीधा, अने आचार्य पदवी पूर्वनी जेम आपी

एकदा प्रस्तावे सिद्धसेन दिवाकर विहार करतां मालव देशना ॐकार नगरमां गया नगरना भक्त श्रावकोए आचार्यने विनंति करी के, हे भगवन् आ नगरनी समीप एक गाम हतु तेमां सुदर नामनो राजपुत्र गामनो अधिपति हतो तेने बे स्त्रीउ हती एक स्त्रीने प्रथम पुत्री जन्मी ते पुत्रीवाली स्त्रीए विचार कर्यो के मारी शोकने पुत्र न थाय तो सारु पुत्र थशे तो ते पतिने वल्लभ थशे, तेथी दाइ (सुयाणी) ने मली अवसरनो लाभ लइ पोतानी शोकना जन्मेला पुत्रने बहार फेकावी दीधो, अने तत्कालनी मरेली पुत्री तेनी पासे मुकी दीधी जे पुत्रने बहार फेकी दीधो हतो, तेने कुलदेवीए गायनु रुप करी उछेर्यो ज्यारे ते आठ वर्पनो थयो त्यारे ओंकार नगरना शिवमदिरना अधिकारी भरटे तेने देख्यो, अने तेने पोतानो चेलो बनाव्यो एकदा प्रस्तावे कान्यकुब्ज देशनो राजा चक्षुअध हतो, ते दिग्विजय करवावास्ते पडाव नाखी रह्यो हतो, रात्रिमा नानाचेलाने शिवभक्त व्यतर देवताए कह्युं के शेप भोग राजाने आपजे, जेथी तेनी आंखो सारी थशे तेणे तेम कर्याथी राजानी आंख सारी थइ गइ राजाए एकसो गाम मंदिरना खर्चे

वास्ते आप्यां अने आ मोटुं शिवमंदिर पण तेणेज बंधाव्युं. अमने आ नगरना मिथ्यादृष्टिओ बलवान होवाथी जिनमंदिर बनाववा देता नथी, तेथी आपने विनंति करीये ठीये के आ मंदिरथी अधिक अमारु मंदिर आ नगरमां बने तोज अमोने संतोष थाय. आप सर्व बाबतमां समर्थ ठो. तेओनी विनंति ध्यानमां लइ वादीन्द्र अवंती नगरमां आव्या. विक्रमादित्यना मेहेल पासे आवी दरवानना मुखथी राजाने कहेवराव्युं– "दिदृक्षु र्भिक्षुरायातस्तिष्टति द्वारिवारितः ॥ हस्तन्यस्त चतुःश्लोक, उतागछतुगछतु ॥ १ ॥ ते श्लोक सांजली विक्रमादित्ये श्लोक तेना उत्तरमां लखी मोकल्यो. "दत्तानि दश लक्षाणि, शासनानि चतुर्दश ॥ हस्तन्यस्तचतुःश्लोकः, उतागछतु गछतु ॥१॥ ते श्लोक वांची आचार्ये कहेवराव्युं के भिक्षु आपने मलवा चाहे ठे. धन लेता नथी. राजाये तेमने सन्मुख बोलाव्या, अने पिठान थइ एटले आदर सत्कार करी कहेवा लाग्या के गुरुजी बहु दिवसे दर्शननो लाभ आप्यो. आचार्ये कह्युं धर्मकार्योमां लागवाथी बहु दिवसो व्यतीत थया, चिरकाले आववुं थयु. आ चार श्लोको श्रवण करो यथा ॥ अपूर्वेयं धनुर्विद्या, भवता शिक्षिता कुतः॥ मार्गणौघः समभ्येति, गुणोयातिदिगन्तरे ॥ १ ॥ सरस्वती स्थिता वक्के, लक्ष्मी करसरोरुहे ॥ कीर्तिः किं कुपिता राजन्, येन देशांतरंगता ॥ २ ॥ कीर्ति स्तेजातजाड्येव चतुरंभोधिमज्जनात् ॥ आतपाय धरानाथ, गता मार्त्तंडमंडलं ॥ ३ ॥ सर्वदा सर्वदोसीति, मिथ्यासंस्तूयसे जनैः ॥ नारयोलेभिरे पृष्ठं, नवक्ष.परयोपित ॥ ४ ॥ आ चार श्लोको सांजली राजा अत्यत खुशी थया गुरुने विनंति करवा लाग्या के, मारा राज्यमां जे कांइ सारभूत होय ते मागो, हुं आपने अर्पण करुं. आचार्ये कह्युं, मारे तो कांइ पण चाहना नथी, परंतु ॐकार नगरमां चतुर्द्वारि जैनमंदिर शिवमंदिरथी श्रेष्ठ तथा उंचुं बनावो, अने प्रतिष्ठा पण करावो; राजाये गुरुना फरमान मुजब कर्युं जैनमतनी प्रभावना देखी श्री संघ अति संतुष्ट थयो. इत्यादि अनेक प्रकारे जैनधर्मनी प्रभावना करी दक्षिण देशमां प्रतिष्ठान पुरमां जइ ते अनशन करी देवलोक प्राप्त करता हवा. त्यांथी सघे एक भट्टने सिद्धसेन सूरिना खबर आपवा तेमना गछ पासे मोकल्या. भट्टे सूरियोनी सभामा जइ अर्ध श्लोक कह्यो, अने वारंवार ते अर्ध श्लोकज बोलवा लाग्यो, यथा ॥

स्फुरति वादिखद्योत., सांप्रतं दक्षिणापथे ॥ ज्यारे वारंवार आ अर्ध श्लोक सिद्धसेनजीनी वेहेन एक साध्वी हता, तेमणे सांजल्यो, त्यारे सिद्ध सारस्वत मंत्रथी बाकीनो अर्ध श्लोक तेमणे पुर्ण कर्यो. यथा ॥ नूनमस्तं गतोवादी, सिद्धसेनोदिवाकरः ॥ १ ॥ पठी ते जट्टे सर्व वृत्तांत कह्यो. सघने अत्यत शोक थयो ॥ इति सिद्धसेन दिवाकर संबंध

सुहस्ति आचार्य त्रीश वर्ष गृहस्थावास, चोवीस वर्ष व्रतपर्याय, ठेतालीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु एकसो वर्षनु जोगवी,श्री महावीर पठी (२९१) वर्ष पठी स्वर्गे गया.

९ श्री सुहस्ति सूरिनी पाट उपर श्रीसुस्थित सूरि तथा सुप्रतिबद्ध सूरि नामना वे शिष्यो वेठा तेर्उये क्रोडो वार सूरि मंत्रनो जाप कर्यो, तेथी गच्छनु नाम कोटिक श्री संघे रात्युं सुधर्मस्वामिथी आठ पाट सुधी तो अणगार, निर्ग्रंथ गछ नाम हतु बीजु कोटिक नाम थयुं

१० श्री सुस्थित सूरिनी पाट उपर श्री इन्द्रदिन्न सूरि थया. आ अवसरमां श्री महावीरथी (४५३) वर्ष पठी गर्दभिल्ल राजानो उछेद करनार बीजा कालिकाचार्य थया, तेनी कथा कल्पसूत्रमां कथन करेली ठे वली श्री महावीरथी(४५३) वर्ष पठी भृगुकछ (जरुच) मा श्री आर्य खपुटाचार्य विद्याचक्रवर्ती थया तेनो प्रवध श्री प्रवधचितामणि ग्रथ, तथा हारिजद्री आवश्यकनी टीकाथी जाणवो वली प्रजावक चरित्रमा एम लख्युं ठे के, श्रीमहावीरथी (४८४) वर्ष पठी श्री खपुटाचार्य तथा (४६४ (४६७)पर्प पठी आर्यमंगु, वृद्धवादि, पादालिप्त, तथा सिद्धसेन दिवाकर थया जे सिद्धसेन दिवाकरे विक्रमादित्यने जैनधर्मी कर्या ते विक्रमादित्य श्रीमहावीरथी (४७०) वर्षे थया ते वर्ष आ प्रमाणे थया जे रात्रिये श्री महावीरस्वामि निर्वाण पाम्या, ते दिवसे अवंती नगरीमा पालक नामना राजानो राज्याजिषेक थयो. आ पालक चन्द्रप्रद्योतनो पौत्र हतो तेनु राज्य (६०) साठ वर्ष रह्यु तेनी पठी श्रेणिकनो पुत्र कोणिक अने कोणिकनो पुत्र उदायी, ज्यारे पुत्रविना मरण पाम्यो, त्यारे तेनी गादी उपर नद नामनो नाइ वेठो तेनी गादी उपर सर्वे नंद नामना नव राजा थया तेनु राज्य (१५५) वर्ष सुधी रह्यु नवमा नंदनी गादी उपर मौर्यवंशी चन्द्रगुप्त राजा थयो तेनो पुत्र बिन्दुसार, तेनो पुत्र

अशोक, अशोकनो पुत्र कुणाल, अने कुणालनो पुत्र संप्रति महाराज थयो. मौर्यवंशजोनुं सर्व राज्य (१०७) वर्ष सुधी रह्युं. पूर्वोक्त सर्व राजा प्रायः जैनधर्मी हता. तेउंनी पठी त्रीश वर्ष सुधी पुष्पमित्र राजानुं राज्य रह्युं. त्यार वाद वलमित्र, नानुमित्र, आ वंने राजाउंये (६०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पठी नजवाहन राजाये (४०) वर्ष सुधी राज्य कर्युं. त्यार पठी गर्दनिल्लनु राज्य (१३) वर्ष रह्युं वाद चार वर्ष शकोनुं राज्य रह्युं. पठी शकोनो विक्रमादित्ये पराजय करी पोतानुं राज्य स्थापन कर्युं. आ सर्व मली (४७०) वर्षो थयां.

श्री इंद्रदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री दिन्नसूरि वेग १२ श्रीदिन्नसूरिनी पाट उपर श्री सिंहगिरि सूरि वेग १३ सिंहगिरिजीनी पाट उपर श्री वज्रस्वामि वेग श्री वज्रस्वामि वाल्यावस्थाथी जातिस्मरण ज्ञानवाला हता. तेउंने आकाशगामिनी विद्या पण हती. तेउंये वीजा वार वर्षी डुकालमां संघनुं रक्षण कर्युं, वली दक्षिणमां वौद्धोना राज्यमां श्री जिनेंद्र पूजावास्ते पुष्पो पण तेमणे लावी आप्यां, अने वौद्धराजाने जैनमती वनाव्यो. वज्रस्वामी दश पूर्वधर हता, जेनाथी श्री वज्रशाखा उत्पन्न थइ. तेमनो प्रवंध आवश्यक वृत्तिथी जाणवो. श्रीवज्रस्वामि श्रीमहावीर पठी चारसो ठन्नुं वरसे विक्रमादित्यना संवत २६ मां जन्म्या आठ वर्ष घरमां रह्या चमालीश वर्ष साधु पर्याय, अने ठत्रीस वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु अठाशी वर्षनुं नोगवी स्वर्गे गया. आ आचार्यना समयमां जावडशाह शेठे श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर संवत (१०७) मां तेरमो उद्धार कर्यो. ते वखते श्री वज्रस्वामिये प्रतिष्ठा करी. श्री वज्रस्वामि श्रीमहावीरस्वामि पठी (५०४) वर्षे स्वर्गे गया. श्री वज्रस्वामिना समयमां दशमुं पूर्व, चोथुं संहनन अने चोथु संस्थान व्यवछेद गया. श्री सुहस्ति सूरि आठमां अने श्री वज्रस्वामि तेरमां, तेउंनी पाटनी वचमां वीजी पटावलीउंमां १ श्रीगुणसुंदर सूरि, २ श्री कालिकाचार्य, ३ श्री स्कंधिलाचार्य, ४ श्री रेवतमित्रसूरि, ५ श्रीधर्म सूरि, ६ श्री नद्रगुप्ताचार्य, आ सात अनुक्रमे युग प्रधान आचार्यो थया. वली श्री महावीरथी (५३३) वर्ष पठी श्री आर्यरक्षितसूरिये सर्व शास्त्रोना अनुयोग प्रथक प्रथक करी दीधा. आ प्रवंध आवश्यकवृत्तिथी

जाणवो श्री महावीरथी (५४०) मे वर्षे त्रैराशिमतने जीतनारा श्रीगुप्त-सूरि थया तेमनो प्रबंध श्री उत्तराध्ययननी वृत्ति तथा विशेषावश्यक सूत्रथी जाणवो. जेणे त्रैराशि मत प्रगट कर्यो, तेनुं नाम रोहगुप्त हतु, ते श्रीगुप्त सूरिनो चेलो हतो तेनु उलुक गोत्र हतु. ज्यारे रोहगुप्त गुरुनी साथे वादमां पराजय पाम्यो, अने कदाग्रह न छोड्यो, त्यारे अंतरजीका नगरीना बलश्री राजाये तेने राज्य बहार कर्यो ते रोहगुप्ते कणाद नामनो शिष्य कर्यो, अने तेने १ द्रव्य, २ गुण, ३ कर्म, ४ सामान्य, ५ विशेष, ६ समवाय, आ छ पदार्थोनुं स्वरूप बताव्युं, पछी कणादे वैशेषिक सूत्र बनाव्यां त्यारथी वैशेषिक मत चाल्यो

१४ श्रीवज्रस्वामिनी पाट उपर चौदमा श्री वज्रसेन सूरि बेठा ते-ओ डुकालमा श्री वज्रस्वामिना आदेशथी सोपारक पत्तनमां गया. ते न-गरमां जीनदत्त नामना शेठना घरमां इश्वरी नामनी तेनी पत्नीए लाख रुपैआ खरची एक अन्ननी हांडी रांधवा चडावी हती, तेमां झेर नांखवा जती हती, कारण के, तेओये धार्युं के अन्न तो मळतुं नथी, अने डुकाल मटवानो नथी, जेथी झेर खाइ घरना सर्व आदमीओये मरवानो निश्चय कर्यो हतो, ते अवसरे श्री वज्रसेन सूरि ते स्थले आवी पहोंच्या तेओने तेमणे कह्युं के तमे झेर खाओ नही, आवती काले सुकाल थइ जशे ते उपरथी तेओये झेर खाधुं नहि श्री गुरुना वचन मुजब सुकाल थयो, अने शेठना चारे पुत्रोये दीक्षा लीधी तेओना नाम. १ नागेंद्र, २ चंद्र, ३ निवृत्त, ४ विद्याधर ते चारेथी स्वस्व नामना चार कुल थयां श्रीवज्र-सेन सूरि नव वर्ष सुधी गृहवासमां रह्या (११६) वर्ष सुधी साधुपर्याय अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदवी, सर्वायु (१२८) वर्षनु भोगवी, श्रीमहा-वीरथी (६२०) वर्ष पछी स्वर्गे गया श्रीवज्रस्वामी अने श्रीवज्रसेनसूरिनी बचमां श्रीआर्यरक्षितसूरि तथा श्रीदुर्बलिका पुष्पसूरि, आ बे युग प्रधानो थया श्री महावीरथी (५८४) वर्षे पछी सातमो निन्हव थयो, तथा श्री महावीरथी (६०९) वर्षे पछी श्रीकृष्ण सूरिनो शिष्य शिवभूति नामनो हतो, तेणे दिगंबर मत चलाव्यो ते अधिकार श्रीविशेषावश्यकादिथी जाणवो.

१५ श्री वज्रसेन सूरिनी पाट उपर श्री चंद्र सूरि बेठा तेमना नाम-थी गछनु नाम पण चंद्र गछ थयुं १६ श्री चंद्रसूरिनी पाट उपर श्री

सामंतजद्रसूरि थया. तेर्उ पूर्वगत श्रुतना ज्ञाता हता. तेर्उ वैराग्यरंगथी रंगाया हता, अने जंगलोमां रहेता हता, तेथी लोकोये चंद्र गछनुं नाम वनवासी गछ राख्युं. १७ श्री सामंतजद्र सूरिनी पाट उपर श्रीवृद्धदेवसूरि थया. तथा श्री महावीरथी (५९५) वर्षे पछी कोरंट नगरना नाहड नामना मंत्रीये, सत्यपुरमां जीनमंदिर बधाव्युं, तेमां श्री महावीर स्वामिनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा श्री जज्जक सूरिये करी. ते प्रतिमा "जयउ वीर सच्चउरिमंडण" कहेवाय छे. १८ श्री वृद्धदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्योतन सूरि थया.

१९ श्री प्रद्योतन सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया. तेमना सूरिपदस्थापनावसरे बन्ने स्कंधो उपर सरस्वती अने लक्ष्मी साक्षात् देखी आ महान् पुरुष चारित्रथी भ्रष्ट थइ जशे, एवा विचारथी खिन्नचित्तवाला गुरुने देखी, तेमणे गुरुनी पासे एवो नियम कर्यो के, जक्तिवाला गृहस्थना घरनी जिक्षा लेवी नही, तथा दुध, दहीं इत्यादि छये विगयनो त्याग कर्यो. तेमना आ प्रमाणे तपना प्रजावथी नडोलपुरमां (पालीनी पासेना गाममां) १ पद्मा, २ जया, ३ विजया, ४ अपराजीता, आ चार देवीर्उ तेमनी सेवा करती हती. ते देखी केटलाएक मूर्ख लोको कहेवा लाग्या के आ आचार्य स्त्रीसंग केम करे छे ? ते प्रमाणे बोलनारार्उने ते देवीर्उये शिक्षा करी. तेमना समयमां तिक्षिला (गजनी) नगरीमां बहु श्रावको हता, तेर्उमां मरकीनो उपद्रव थवाथी, तेर्उनी शांतिवास्ते श्रीमानदेव सूरिये नडोलपुरथी शांतिस्तोत्र बनावी मोकल्युं.

श्रीमानदेव सूरिनी पाट उपर श्री मानतुग सूरि गया. तेमणे जक्तामर स्तवननी रचना करी बाण अने मयुर जेवा पडितोनी विद्याथी चमत्कार पामेला वृद्ध जोज राजाने प्रतिबोध्यो; तथा जयहर स्तवन रची नागराजाने वश कर्यो. वली जत्तिजर इत्यादि स्तवनोनी पण तेमणे रचना करेली छे. प्रजावक चरित्रमां प्रथम श्रीमानतुग सूरिनु चरित्र वर्णवेल छे, अने पछी देवसूरिना शिष्य प्रद्योतन सूरि, अने तेमना शिष्य श्री मानदेव सूरिनो प्रबध लखेल छे, परतु तेथी शंका न करवी, कारण के प्रजावक चरित्रमां बीजा पण केटलाएक प्रबंधो आगल पाछल कथन करेल छे.

२१ श्री मानतुंग सूरिनी पाट उपर श्रीवीर सूरि थया. श्रीवीर सूरिये श्री महावीर पछी (७७०) वर्षो पछी नागपुरमां श्री नमिनाथ अर्हंतनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा करी ॥ यदुक्त ॥ नागपुरे नमिजवन, प्रतिष्ठया महित सौजाग्य. ॥ अजवद्वीराचार्य, स्त्रिजिः शतैः साधिकै राज्ञ' ॥ १ ॥

२२ श्रीवीर सूरिनी पाट उपर श्री जयदेवसूरि थया (२३) श्रीजयदेवसूरिनी पाट उपर श्री देवानंद सूरि थया. आ अवसरमां श्री महावीरथी (८४५) वर्षे पछी वल्लजी नगरी त्रुटी, तथा (८८२) वर्षे पछी चैत्येस्थिति, तथा (८८६) वर्षे पछी ब्रह्म द्विपिका (२४) श्री देवानंद सूरिनी पाट उपर श्री विक्रमसूरि थया. (२५) श्रीविक्रम सूरिनी पाट उपर श्री नरसिंह सूरि थया यत' ॥ नरसिंह सूरिरासी, दतोऽखिलग्रंथपारगोयेन ॥ यद्गो नरसिंह पुरे, मांसरतिस्त्याजीतास्वगिरा ॥१॥ (२५) श्री नरसिंह सूरिनी पाट उपर श्री समुद्रसूरि थया. यत ॥ वसंततिलकावृत्तम् ॥ खोमीण राजकुलजोपि समुद्रसूरि, र्गच्छ शशाम किल य प्रवण. प्रमाणी ॥ जीत्वा तदाक्षपनकान् स्ववश वितेने, नागद्रदे जुजगनाथ नमस्य तीर्थम् ॥ १ ॥ (२७) श्री समुद्र सूरिनी पाट उपर श्रीमानदेव सूरि थया यतः ॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ विद्या समुद्र हरिजद्र मुनींद्रमित्र, सूरि र्बजूव पुनरेवहि मानदेवः ॥ मांद्यात् प्रयातमपियोनघ सूरि मंत्र, लेजेंबिका मुखगिरा तपसोज्जयते ॥ १ ॥ श्रीमहावीरथी एक हजार वर्ष पछी सत्यमित्र आचार्यनी साथे पूर्वनो व्यवछेद थयो श्रीवज्रसेनसूरि अने सत्यमित्र आचार्यनी वचमा १ श्री नागहस्ति, २ श्रीरेवतीमित्र, ३ ब्रह्मद्वीप, ४ नागार्जुन, ५ जूतदिन्न, ६ श्री कालकसूरि, आ ठ युगप्रधान अनुक्रमे थया युगप्रधानो मध्येना सुधर्म इन्द्रथी वंदायेला अने प्रथमांतु योग सूत्रोना सूत्रधार कल्प श्री कालिकाचार्ये श्री महावीरथी (९९३) वर्षे पछी पांचमथी चोथनी सवत्सरी करी, अने श्री महावीरथी (१०५५) वर्षे पछी अने विक्रमादित्यथी (५८५) वर्षे पछी याकिनी साधवीना धर्मपुत्र श्रीहरिजद्र सूरि स्वर्गवास पाम्या, तथा (१११५) वर्षे पछी श्री जीनजद्रगणि युगप्रधान थया. आ जीनजद्रगणि ध्यानशतकना कर्त्ता, हरिजद्र सूरिना ग्रथ उपर टीका करनार होवाथी बीजा जीनजद्र छे, आ कथन पटावलिमा छे, परंतु श्री जीन-

जद्रगणिक्षमाश्रमणनुं आयुष्य (१०४) वर्षनुं हतुं, ते कारणथी जो हरिजद्र सूरिना वखतमां विद्यामान होय तोपण विरोध नथी.

२८ श्रीमान देवसूरिनी पाट उपर श्री विबुधप्रजसूरि थया. (२९) श्रीविबुध प्रजसूरिनी पाट उपर श्री जयानंद सूरि थया. (३०) श्री जयानंद सूरिनी पाट उपर श्रीरविप्रजसूरि थया, तेमणे श्री महावीर पछी (११७०) वर्षे नडोल नगरमां श्री नेमिनाथ जगवाननी प्रतिष्ठा करी. श्रीमहावीर पछी (११९०) वर्षे उमास्वाति युगप्रधान थया. (३१) श्री रविप्रजसूरिनी पाट उपर श्री यशोदेव सूरि थया. श्री महावीरथी(१२७२) वर्षे पछी अने विक्रम संवत (८०२) मां वनराज, चावडा वंशना राजाये गुजरातमां अणहिलपुर पाटण वसाव्युं; वनराज जैन मतानुसारी राजा हतो. विक्रम संवत ८०० ना जादरवासुद त्रीजने दिवसे बप्पजट्ट आचार्यनो जन्म थयो, जेणे ग्वालियरना आम नामना राजाने जैनी बनाव्यो. तेनुं चरित्र प्रबंध चिंतामणि ग्रंथथी जाणवुं.

३२ श्री यशोदेव सूरिनी पाट उपर श्री प्रद्युम्नसूरि थया. (३३) श्री प्रद्युम्नसूरिनी पाट उपर श्रीमान देवसूरि थया, जेमणे उपधान वाच्य ग्रंथनी रचना करी (३४) श्री मानदेव सूरिनी पाट उपर श्रीविमलचंद्र सूरि थया. (३५) श्रीविमलचंद्रसूरिनी पाट उपर श्री उद्योतन सूरि थया श्रीउद्योतन सूरि अर्बुदाचल (आबु) पर्वत उपर यात्रा करवा आव्या, त्यां टेली गाम नजीक मोटावड वृक्षनी छायामां बेसी, पोतानी पाटनी वृद्धि थवा वास्ते सारु मुहूर्त देखी श्री महावीरथी (१४६४) वर्षे पछी अने विक्रम संवत (९९४) वर्षे पछी पोतानी पाट उपर श्री सर्वदेव प्रमुख आठ आचार्यनी स्थापना करी, केटलाएक मात्र सर्वदेव सूरिनी स्थापना करी एम कथन करे छे मोटा वडवृक्ष नीचे सूरि पदवी देवाथी वनवासी गछनुं नाम वडगछ पांचमु थयुं "प्रधान शिष्य संतत्या, ज्ञानादि गुणैः प्रधान चरितैश्च बृहत्वाद्बृहज्ञछ इत्यपि"

३५ श्री उद्योतन सूरिनी पाट उपर श्री सर्वदेवसूरि थया; केटलाएक श्री प्रद्युमसूरि तथा उपधान ग्रंथ कर्त्ता श्रीमान देवसूरि आ बंने आचार्योने पट्टधर मानता नथी तेउना अजिप्राय प्रमाणे श्री सर्वदेवसूरि चोत्रीसमी पाट उपर थया. श्री सर्व देवसूरि गौतमस्वामिनी

जेम सुशिष्य लब्धिमान हता तेमणे विक्रम संवत (१०१०) पछी रामसैन्य पुरमां श्रीरीषन्नदेव न्नगवाननी तथा श्रीचंद्रप्रन्न स्वामिनी प्रतिष्ठा करी, अने चड्रावतीमां कुकण मंत्रीने प्रतिबोधी दीक्षा आपी. तेमणे चंड्रावतीमां जैनमंदिर बधाव्युं हतुं. विक्रम संवत (१०२९) वर्षे पछी धनपाल पंडिते देशी नाममालानी रचना करी, तथा विक्रम संवत (१०९५) वर्षे पछी थिरापद्रीय गच्छमां वादी वैताल श्रीशांतिसूरि थया, तेमणे श्री उत्तराध्ययन उपर टीका करी.

३७ श्री सर्वदेवसूरिनी पाट उपर श्रीदेवसूरि थया, तेमने रूपश्री एवुं राजाये बिरुद आप्युं. (३८) श्री देवसूरिनी पाट उपर बीजा श्री सर्वदेवसूरि थया जेमणे यशोन्नद्र तथा नेमिचंद्र प्रमुख आठ आचार्योने आचार्य पदवी आपी श्री महावीरथी (१४९६) वर्षे पछी 'तक्शिलानुं नाम गजनी राखवामां आव्युं. (३९) श्री सर्व देवसूरिनी पाट उपर श्री यशोन्नद्रसूरि तथा नेमिचंद्रसूरि बने गुरु न्नाइर्ड बेठा. विक्रम संवत (११३५) पछी तथा अन्य कथन मुजब (११३९) वर्षे पछी नवांगीवृत्ति करनारा श्रीअन्नयदेवसूरि महाराज स्वर्गवास पाम्या, अने कूर्चपुर गच्छी चैत्यवासी जीनेश्वरसूरिना शिष्य श्री जीनवल्लन्न सूरिये चित्रकूटमां श्री महावीर स्वामिना ६ कल्याणकनी प्ररुपणा करी

४० श्री यशोन्नद्रसूरि तथा श्री नेमिचंद्रसूरिनी पाट उपर श्रीमुनिचंद्रसूरि थया. जेर्डये यावत् जीव मात्र सौवीर पाणी पीवानुं राखी, सर्व विगयनो त्याग कर्यो. वली तेर्डये श्रीहरिन्नद्रसूरिकृत अनेकांतजयपताका प्रमुख अनेक ग्रंथोनी पंजीका करी, तथा उपदेशवृत्ति, योगबिंदुवृत्ति प्रमुख अनेक वृत्तिर्डनी रचना करवाथी जगत्मां तार्किक शिरोमणि एवा बिरुदथी प्रसिद्ध थया आ आचार्य महा वैराग्यवान् निस्पृही थया. विक्रम संवत (११५९) वर्षे पछी चंद्रप्रन्नथी पौर्णिमीयक मतोत्पत्ति थइ चंद्रप्रन्नने प्रतिबोधवावास्ते श्रीमुनिचंद्रसूरिये पाक्षिक सप्ततिकानी रचना करी श्रीमुनिचंद्रसूरिना शिष्य वादी श्री अजीतदेवसूरि तथा देवसूरिप्रमुख थया श्री अजीतदेवसूरिये अणहिलपुर पाटणमां श्री सिद्धराज जयसिंह राजानी सन्नामां अनेक विद्वानो साथे वाद करी चोरासी वादथी सर्व वादीर्डने पराजय पमाड्या ते प्रसंगे दिगंबर मतना चक्रवर्ती,

श्रीकुमुदचंद्र आचार्यने पण वादमां जीती लीधा, अने दिगंबरोनो पाटणमां प्रवेश बंध कराव्यो आ विना अत्यारसुधी प्रसिद्ध छे. तेउंये विक्रम संवत (१२०४) मां फलवर्द्धि ग्राममां चैत्यबिंबोनी प्रतिष्ठा करी, तथा आरासणामां श्रीनेमिनाथनी प्रतिष्ठा करी. तेउंए (८४०००) चोरासी हजार श्लोक प्रमाण स्याद्वाद रत्नाकर नामना ग्रंथनी रचना करी, अने तेमनाथी मोटा नामांकित चोवीश आचार्योनी शाखा थइ तेउंनो जन्म संवत (११३४) दीक्षा संवत (११५२) सूरिपद संवत (११७४) मा प्राप्त थयुं. संवत (१२२०) श्रावण कृष्ण सप्तमी गुरुवारनारोज तेमनो स्वर्गवास थयो. तेमना समयमां श्री देवचंद्रसूरिना शिष्य त्रण क्रोड ग्रंथना कर्त्ता, कलिकालमां सर्वज्ञ बिरुद धारक, पाटणना कुमारपालना प्रतिबोधक, सवालक्ष श्लोक प्रमाण पंचांग व्याकरणना कर्त्ता श्री हेमचंद्रसूरि विद्यासमुद्र थया, तेमनो विक्रम सवत (११४५) मां जन्म, संवत (११५०) दीक्षा, संवत (११६६) मां सूरि पद अने संवत (१२२९) मां स्वर्गवास थयो. तेमनुं संपूर्ण चरित्र श्री प्रबंध चिंतामणि तथा श्रीकुमारपालचरित्रथी जाणवु

श्रीमुनिचंद्र सूरिनी पाट उपर श्री अजीतदेवसूरि थया. तेमना समयमां संवत (१२०४) मां खरतरोत्पत्ति, तथा संवत (१२३३) मां आंचलिक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२३६) मां सार्द्धपौर्णिमीयक मतोत्पत्ति, तथा संवत (१२५०) मां आगमिक मतोत्पत्ति थइ. श्रीवीर जगवानथी (१६०२) वर्षे वागजट मंत्रीए श्री शत्रुंजय तीर्थ उपर चौदमो उद्धार कराव्यो ते प्रसगे साडा त्रण क्रोड रुपीआनो व्यय कर्यो.

४२ श्री अजित देवसूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया. जेउंए विवेकमंजरी शुद्ध करी तेमना मोटा शिष्य श्री सोमप्रजसूरि थया. तेउं शतार्थिकारक अर्थात् एकेक श्लोकना सो सो अर्थ निकले एवा काव्योनी रचना करनारा थया, बीजा मणिरत्न सूरि थया (४३) श्रीविजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रजसूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरि थया. (४४) सोमप्रज सूरि तथा श्रीमणिरत्न सूरिनी पाट उपर श्रीजगच्चंद्रसूरि थया. जेमणे पोताना गछने शिथिल देखी गुरुनी आज्ञाथी वैराग्य रसना समुद्र चैत्रवाल गछीय श्रीदेवज्रद्र उपाध्यायनी सहायथी क्रिया उद्धार कर्यो, अने हीरला जगचंद्र सूरि थया, कारण के ते-

मणे चितोडना राजानी सन्नामां वत्रीस दिगंवर आचार्यो साथे वाद कर्यो, जेमां तेउं हीरानी जेम अन्नेद्य रह्या, तेथी राजाए तेमने हीरला जगच्चंड सूरि एवु विरुद आप्यु वली तेमणे जावजीव आचाम्ल तपनो अन्निग्रह कर्यो वार वर्ष तप करतां थयां एटले चितोडना राणाये तेमने तपा एवु विरुद आप्युं सवत (१२८५) मां वडगच्छनु नाम तपगछ थयु आ प्रमाणे ठ नामो थयां १ निग्रथ, २ कोटिक ३ चंड, ४ वनवासी, ५ वडगछ, ६ तप गच्छ आ ठ नामोना प्रवृत्त करनारा हेतुरुप आचार्यो थया तेना नाम १ श्रीसुधर्मस्वामि, २ श्रीसुस्थितसूरि, ३ श्रीचड्रसूरि, ४ श्री सामंतन्नड्रसूरि, ५ श्री सर्वदेवसूरि ६ श्री जगच्चड्रसूरि

४५ श्री जगच्चड्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंड्र सूरि थया तेमणे मालवानी उज्जयन नगरीमा जीनचड्र नामना मोटा शेठना वीरधवल नामना पुत्रनो विवाह निमित्ते महोत्सव थइ रह्यो हतो, ते वीरधवल कुमारने प्रतिवोध करी सवत (१३०२) मां दीक्षा आपी, त्यार वाद तेना नाइने पण दीक्षा आपी, तेउं दीर्घकालसुधी मालवा देशमां विहार करता रह्या वाद देवेंड्रसूरि गुजरातमा स्तंन्नतीर्थमा आव्या, त्यां प्रथमथी श्री विजयचंड्रसूरि गीतार्थोने पृथक् पृथक् वस्त्रोनी पोटलीउं आपे ठे, नित्य विगय खावानी आज्ञा आपे ठे, निरंतर वस्त्र धोवानी तथा फल, शाक लेवानी अने निवि प्रत्याख्यानमां विगयगत लेवानु कहे ठे, तथा आर्यानो लावेलो आहार साधु वापरे एवी आज्ञा आपे ठे, वली दिन प्रत्ये द्विविध प्रत्याख्यान, अने गृहस्थोने अवर्जीने वास्ते प्रतिक्रमण करावानी आज्ञा आपे ठे, तथा सविन्नागने दिन तेमने घेर गीतार्थ जाय, लेपनी सनिधि राखवी, तत्कालनु उष्णोदक गृहण करवु, इत्यादि काम करवाथी केटलाएक शिथिलाचारी साधुने साथे लइ सदोष पौषधशालामां रह्या ठे

आ विजयचड्र आचार्यनी उत्पत्ति आ प्रमाणे ठे मंत्री वस्तुपालना घरमा विजयचड्र नामनो दफतरी हतो, ते कोइ अपराधथी केदखानामा गयो तेवामा तेने श्री देवन्नड्र उपाध्यायजीए दीक्षा लेवानी प्रतिज्ञा करावी कारागृहथी मुक्त कराव्यो. पठी तेणे दीक्षा लीधी बुद्धिवलथी वहुश्रुत थयो, परंतु अन्निमानी होवाथी मत्री वस्तुपाले कह्युं के आ सूरिपद आपवा योग्य नथी आ प्रमाणे वस्तुपाल मंत्रीनी मना

छतां श्री जगचंद्र सूरिए श्री देवभद्र उपाध्यायना कहेवाथी तेने सूरिपद आप्यु; वली एवी धारणाथी सूरिपद आपवामां आव्युं के विजयचंद्र देवेंद्र सूरिने सहायक थशे. विजयचंद्र बहु वखत सुधी श्री देवेंद्रसूरिनी साथे विनयवान् शिष्यनी जेम वर्त्तता रह्या, परंतु ज्यारे मालवा देशमां देवेंद्रसूरि आव्या, त्यारे ते वंदना करवाने पण आव्या नहि; बाद श्री देवेंद्र सूरिजीए कहेवराव्युं के एकज वस्तिमां आप बार वर्ष सुधि केम रह्या ? विजयचंद्रे उत्तरमां कहेवराव्युं के, शांत दांतने बार वर्ष सुधी एक जगामां रहेवाथी कांइ दोष नथी संविग्न साधुर्ड सर्वे, देवेंद्रसूरिनी साथे रह्या. देवेंद्र सूरिजी अनेक संविज्ञ साधुना समुदायनी साथे उपाश्रयमांज रह्या विजयचंद्र सूरिनो समुदाय वडी शालामां रहेवाथी लोकोए तेमनुं नाम वृद्ध पौशालिक राख्यु, अने देवेंद्रसूरिना समुदायनुं नाम लघु पौशालिक राख्यु स्तंभतीर्थना चोकमां कुमारपालविहारमां धर्मदेशा नामे मंत्री वस्तुपाले चारे वेदोना निर्णयकारक स्वसमय परसमयना जाणकार श्री देवेंद्रसूरिजीने वंदना करी बहुमान आप्यु बाद श्री देवेंद्रसूरिजी विजयचंद्रनी उपेक्षा करी विचरता थका अनुक्रमे पालणपुरमां आव्या. चोराशी धनाढ्य शेठीआ तथा अनेक जन समुदाय निरंतर व्याख्यान श्रवण करवा आवता हता, शास्त्रना श्रोता पुरुषो अनेक हता. पालणपुरमां व्याख्यान श्रवण करवा आवनाराउे निरंतर एक मूडा प्रमाण अक्षत अने सोल मण सोपारी दर्शनावसरे चढावता हता, जैनशासननी बहुज उन्नति थइ रहि हती, ते अवसरे सुज्ञ धर्मी लोकोए गुरुजीने विनंति करी के हे जगवन् ! आप अहींआ कोइने आचार्य पदवी आपी अमारा मनोरथ पूर्ण करो गुरुजीए उचित जाणी विक्रम संवत (१३१२) मां पालणपुरमां वीरधवलने श्री विद्यानंद नाम दइ सूरिपद आप्यु. तेमना अनुज जीमसिंहने धर्मकीर्ति उपाध्यायनी पदवी आपी ते अवसरे प्रल्हादनविहारना सौवर्ण कपिशीर्ष मंडपमां कुकुमनी वृष्टि थइ, तेथी लोको बहुज आश्चर्य पाम्या. श्री विद्यानंद सूरिजीए विद्यानंद नामनु नवीन व्याकरण बनाव्यु यडुक्तं ॥ विद्या नंदाभिधं येन, कृतं व्याकरण नवं ॥ जाति सर्वोत्तमं स्वल्प, सूत्रं बह्वर्थ संग्रहं ॥१॥ बाद श्री देवेंद्रसूरिजी फरी

मालवामां विहार करता हवा श्री देवेंद्र सूरिजीए जे ग्रथोनी रचना करी छे, तेना नाम १ श्राद्धदिनकृत्यसुत्रवृत्ति, २ नव्यकर्मग्रथ पंचक सूत्र वृत्ति, ३ सिद्ध पचाशिका सूत्र वृत्ति, ४ धर्मरत्न वृत्ति, ५ सुदर्शन चारित्र, ६ त्रण भाष्य, ७ वृदारवृत्ति, ८ सिरि उसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो कोइ कहे छे के श्राद्धदिनकृत्य सूत्र तो चिरंतन आचार्यनु करेल छे श्री देवेंद्र सूरिनो मालवा देशमां विक्रम संवत (१३२७) मां स्वर्गवास थयो. दैवयोगथी विद्यापुरमां तेर दिवस पछी श्री विद्यानंद सूरिनो पण स्वर्गवास थयो बाद छमास पछी सगोत्रसूरिए श्री विद्यानंद सूरिना बधु श्री धर्मकीर्ति उपाध्यायने सूरिपद आपी श्री धर्मघोष सूरि नाम आप्यु

४६ श्री देवेंद्र सूरिनी पाटउपर श्री धर्मघोष सूरि थया जेमणे मंडपाचलमां शा श्री पृथ्वीधरने पचम अनुव्रत लेतां ज्ञानथी निषेध कर्यो आचार्ये ज्ञानथी जाण्यु के आ पुरुषनु व्रत भंग थइ जशे, ते कारणथी भयथी निषेध कर्यो बाद पृथ्वीधर मंडपाचल राजानो मंत्री थयो. धनवृद्धिथी धनद समान थइ गयो तेणे चोरासी जीनमदिर तथा सात ज्ञानना भडार कराव्या, तथा शत्रुजय तीर्थ उपर एकवीश धडी प्रमाण सुवर्ण खरची रूपामय श्री रीषभदेवजीनु मंदिर बधाव्युं कोइ कहे छे के छप्पन धडी प्रमाण सुवर्ण आपी इद्रमाल पेहेरी, धरती नगरमा कोइ साधर्मीने ब्रह्मचारीना वेष आपवाना अवसरमा पृथ्वीधरने महा धनाढ्य जाणी तेनी भेट करी, ते वखते पृथ्वीधरे तेज वेष ग्रहण करी तेज दिनथी अर्थात बत्रीस वर्षनी उमरमां ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर्युं तेने जांजण नामनो एकज पुत्र हतो तेणे श्री शत्रुजय तथा उज्जयत गिरिना शिखर उपर बार योजन प्रमाण सुवर्ण रुप्पमय एक ध्वजा चढावी. तेमणे सारगदेव राजा पासे कर्पुरनुं मेहेसुल बंध कराव्यु, तथा मंडपाचलमां गुरुना प्रवेश महोत्सवमां (७२०००) रूपैआनो खर्च कर्यो

श्री धर्मघोष सूरिए देवपत्तनमां शिष्योनी विनंतिथी मंत्रमय स्तुति बनावी वली स्वध्याननां बलथी, वज्रस्वामिए स्वशक्तिथी पुरातन कपर्दी यक्ष जे मिथ्यादृष्टि थइ गयो हतो तेने नवीन कपर्दी यक्षथी

दूर कर्यो हतो, ते मिथ्यादृष्टि कपर्दीने प्रतिबोधी श्री जिनबिं ` अधिष्ठाता कर्यो, तथा जेमनी पासे समुद्रना अधिष्ठाताए समुद्र नरंगोथी रत्न ढोकन कर्यां. एकदा प्रस्तावे कोइ दुष्ट स्त्रीए कामणयुक्त वडां बनावी साधुने वहोराव्यां, परंतु श्री धर्मघोष सूरिजीए ते वडां धरती उपर फेंकावी जमीनमां परिठावी दीधां ते स्त्रीने मंत्रथी पकडावी ज्यारे बहु दुःखी थइ,त्यारे दयाथी छोडी दीधी वली विद्यापुरमां पद्मांतरीउनी स्त्रीउए धर्मघोषजीने व्याख्यानरसना भंग वास्ते मंत्रथी कंठमां केशगुच्छक करी दीधो, ते ज्यारे सूरिजीना जाणवामां आव्युं त्यारे ते स्त्रीउने स्तंजन करी दीधी ज्यारे ते स्त्रीउए आजीजी करी के हवे पछी अमे आपना गच्छने उपद्रव नहि करीए, त्यारे गुरुजीए संघना बहु आग्रहथी तेमने छोडी दीधी. वली उज्जयनममां एक योगी जैनना साधुउने रहेवा देतो न होतो; ज्यारे श्री धर्मघोष सूरि त्यां आव्या, त्यारे ते योगीए साधुउने कह्युं के हवे अहीआं आव्या छो तो सावचेत थइ रहेजो. साधुउए कह्युं अमे पण जोइए छीए के तमे शुं करो छो? योगीए साधुउने दांत फाडी वताव्या, त्यारे साधुउए तेने कोणी वतावी. साधुउए सर्व समाचार पोताना गुरुजीने कह्या वाद योगीए धर्मशालामां विद्याना वलथी बहु उंदरो बनाव्या, जेथी साधुउ बहु डरवा लाग्या, पछी गुरुजीए घडाना मुख उपर वस्त्र ढांकी एवो मंत्रजप कर्यो के, जेथी ते योगी आराटि करतो आवी गुरुना पगमां पड्यो, अने पोताना अपराध माटे क्षमा मागवा लाग्यो. वली कोइ नगरमां शाकिनीउनां जयथी मंत्रथी दरवाजा वध करवामां आवता हता, एकदा मंत्र विना दरवाजा वध करवामां आव्या, जेथी रात्रिए शाकिनीउए उपद्रव कर्यो. गुरुजीए तेमने विद्याथी स्तंजित करी अने उपद्रव दूर कर्यो. एकदा रात्रिए गुरुजीने सर्पना डसथी झेर चड्युं, गुरुजीए सघने गजरायेलो देखी कह्युं के दरवाजामां कोइ पुरुष पोताना मस्तक उपर काष्टनो जारो लइ आवशे, तेमां विषापहार एक वेलडी आवशे, ते वेलडी घसीने डंख उपर लगावी देजो, जेथी झेर उतरशे. सघे तेज प्रमाणे कर्युं जेथी झेर उतरी गयु, अने गुरु साजा थया ,वाद ते दिवसथी गुरुए जावजीव छ विगयनो त्याग कर्यो, अने निरंतर जुवारनी रोटली

नीरस जाणी खाता रह्या, श्री धर्मघोष सूरिजीए रचेला ग्रथोना नाम १ संघाचारजाष्यवृत्ति, २ सुश्रधम्मेतिस्तव, ३ कायस्थिति, जवस्थिति, ४ चोवीस तीर्थंकरना चोवीस स्तवन, ५ स्वस्ताशर्मेत्यादि स्तोत्र, ६ देवेंद्रैरनिश इति श्लेष स्तोत्र, ७ यूय युवात्व मितिश्लेप स्तुतीर्ज, ८ जयवृषज्नेत्यादि स्तुति. श्रा जय वृषज्नेत्यादि स्तुति करवानो हेतु ए ठे के, एक मंत्रीए श्राठ यमक एक काव्यरची कह्युं के श्रावु काव्य हाल कोइ रची शकतु नथी, गुरुए कह्यु के नास्ति नथी, मत्रीए कह्युं के श्राप करी वतावो, जेथी गुरुजीए जय वृषज इत्यादि ठ स्तुति एक रात्रिमां वनावी जीत उपर लखी वतावी, जे वांची मंत्री वहुज चमत्कार पाम्या गुरुजीए तेने प्रतिवोधी जैनी कर्यो श्री धर्मघोष सूरि विक्रम संवत (१३५७) मां स्वर्गवास पाम्या

४७ श्री धर्मघोषसूरिनी पाट उपर श्री सोमप्रजसूरि थया जेमणे नमीऊण इत्यादि श्राराधन सूत्र कर्या. तेमनो संवत (१३१०) जन्म, संवत (१३२१) दीक्षा, सवत (१३३२) सूरि पद जेर्जने श्रगीश्रारे श्रगोसूत्रार्थ कठस्थ हतां तथा " गुरुजिर्गीयमानायां मंत्र पुस्तकायां यद्यत चरित्र मंत्रपुस्तिकांच " एम कही ते मंत्रपुस्तकोने ग्रहण करता हवा, कारण के वीजो कोइ योग्य न हतो श्री सोमप्रजसूरिये जलकुकण देशमां श्रपकायनी विराधनाना जयथी, श्रने मरु देशमा शुरू जलनी डुर्लजताथी साधुर्जनो विहार वध कर्यो जीमपल्लीमा वे कारतक मास थया, जेथी सोमप्रजजीये प्रथम कारतकनी एकादशीनारोज विहार कर्यो, कारण के तेममा जाणवामा श्राव्यु के जीमपल्लीनो जग थइ जशे, जेथी जग थया पठी जे रह्या ते दुःखी थया तेमना ग्रथोनां नाम १ जीतकल्पसूत्र, २ यत्राखिल इत्यादि स्तुतिर्ज, ३ जीतेनयेन इत्यादि स्तुतिर्ज, ४ श्री मद्धर्म्मे इत्यादि तेमना मोटा शिष्य विमल प्रज सूरि, श्री परमानद सूरि, श्री पद्मतिलकसूरि तथा श्री सोमविमलसूरि हता जे दिवसे श्री धर्मघोषसूरि स्वर्गवास पाम्या, तेज दिवसे सवत (१३५७) मा श्री सोमप्रजसूरिजीये श्री विमलप्रजसूरिने सूरिपद श्राप्युं, कारण के तेर्जये पोतानु श्रायु श्रल्प ठे एम जाएयु श्री सोमप्रजसूरि (१३७३) मां देवलोक पाम्या.

४७ श्री सोम प्रजसूरिनी पाट उपर श्री सोमतिलक सूरि थया. तेमनो संवत (१३५५) माघ मासमां जन्म, संवत (१३६९) मां दीक्षा, संवत (१३७३) मां सूरि पद अने संवत (१४२४) मां स्वर्गवास थयो. तेमना ग्रंथना नाम. १ बृहन् नव्य क्षेत्र समास सूत्र, २ सत्तरिसयठाण, ३ यत्राखिल जय वृषज स्वस्ताशर्म प्रमुखनी वृत्ति, ४ श्री तीर्थराज० चतुर्थस्तुति तद्वृत्ति, ५ शुजजावानत० श्रीमद्वीरस्तुति इत्यादि कमलवधस्तव, ६ शिवशिरसि श्री नाजि संजव० श्री शैवेय० इत्यादिस्तवन श्रीसोमतिलक सूरिये अनुक्रमे १ श्री पद्मतिलक सूरि, २ श्री चन्द्रशेखर सूरि, ३ श्रीजयानंद सूरि, श्री देवसुंदरसूरिने सूरिपद आप्यां तेमां श्री पद्मतिलकसूरि, श्री सोमतिलकसूरिथी पर्यायमां वडा हता, ते एक वर्ष जीवता रह्या, तेर्ज महा वैराग्यवान् हता श्रीचन्द्रशेखरसूरि संवत(१३७३) मां जन्म(१३७५) मां दीक्षा,(१३७३) मा सूरिपद पाम्या तेमना ग्रंथना नाम. १ उषितजोजन कथा, २ यवराज रुषि कथा, श्रीमत्स्तंजकहार वधादि स्तवन जेमना मंत्रोथी बीजा मंत्रवादीर्ज हारी जता उपद्रव करनारा ग्रह, हरिका, डुर्द्धर मृगराज, श्वान, शुरिति दूर थइ जता हता. श्री जयानंद सूरि संवत (१३७० मा जन्म, (१३७२) आषाढ सुद ७ शुक्रवार दिवसे धारा नगरीमां व्रतग्रहण, (१४२०) मां सूरिपद पाम्या, अने (१४४१) मां स्वर्गवास पाम्या तेमना ग्रथ १ श्री स्थूलजद्र चरित्र, २ देवाः प्रजोयं प्रमुखस्तवन

४९ श्री सोमतिलक सूरिनी पाट उपर श्री देवसुदरसूरि थया तेमनो संवत (१३९६) मां जन्म, (१४०४) मां दीक्षा, (१४२०) मां अणहिलपुर पाटणमां सुरिपद, देव सुदरसूरि महा योगाभ्यासी, मंत्र तंत्रनी रीद्धिना मंदिर, स्थावर जगम विपापहारी, जन, अनल, व्याल, हरिना जयना नाश करनारा, अतीत अनागत निमित्तना वेत्ता, राजमंत्री प्रमुखना पुजनीक हता श्री देवसुदर सूरिना पांच शिष्य थया, १ श्री ज्ञानसागरसूरि, २ श्री कुलमंडनसूरि, ३ श्री गुणरत्न सूरि, ४ श्री सोमसुंदरसूरि, ५ श्री साधुरत्नसूरि श्रीज्ञानसागर सूरिनो संवत (१४०५) मां जन्म, (१४१७) मा दीक्षा, (१४४१) मां सूरिपद, (१४६०) मां स्वर्गवास थयो तेमना रचेला ग्रथ. श्री आवश्यक, उंघनिर्युक्ति प्रमुख अ-

नेक ग्रथोनी अवचुरी, श्रीमुनिसुव्रत स्वामि स्तवन, घनोंघनखड पार्श्वनाथादि स्तवन. श्रीकुलमडन सूरिनो सवत (१४०९) मां जन्म, (१४१७) मां दीक्षा, (१४४२) मां सूरिपद, (१४५५) मां स्वर्गवास थयो तेमना रचेला ग्रथ सिद्धांतालापकोद्धार, विश्व श्रीधर इत्यादि, अष्टादशारचक्र स्तव, गरीउं तथा हार स्तवादय. श्री गुणरत्नसूरिना रचेला गथ, १ क्रियारत्नसमुच्चय, षटदर्शन समुच्चय बृहद्वृत्ति, श्री साधुरत्नसूरिनो रचेलो ग्रथ १ यतिजीकल्पवृत्ति छे

५० श्री देव सुदर सूरिनी पाट उपर श्री सोमसुंदर सूरि थया, तेमनो सवत (१४३०) मां जन्म, (१४३७) मां दीक्षा, (१४५०) वाचकपद, (१४५७) मा सूरिपद, अने (१४९९) मां स्वर्गवास थयो. तेमनो (१८००) साधुनो परिवार, महाक्रियापात्र हतो ते देखीने केटलाएक पाखंडी लोकोए तेमनो वध करवा वास्ते एक हजार माणसने लालच आपी मोकल्या, जे मकानमां रात्रिना गुरुए सथारो कर्यो हतो, ते मकानमा वध करनाराउं आवी सताइ रह्या, तेउं गुरुजीने मारवानी तैयारी करता हता तेवामां चद्रमाना प्रकाशथी गुरुजीने पासु फेरवतां रजोहरणथी प्रथम पूजता दीठा, ते देखी तेउंना मनमां विचार आव्यो के:— निद्रामां पण आ पुरुष क्षुद्र प्राणियोनी रक्षा करे छे, अने आपणे तो तेमनो वध करवा आव्या छीए, माटे आपणामां अने तेनामां केटलो अतर छे ? तेथी मनमां पापथी डरी गुरुना चरणकमलमा पडी अपराध खमावता हवा तेमना रचेला ग्रंथ योगशास्त्र, उपदेशमाला, षडावश्यक, नवतत्वादि बालावबोध, भाष्यावचूर्णि, कल्याणिकस्तोत्र प्रमुख तेमना शिष्य श्रीमुनिसुदरसूरि, कृष्ण सरस्वती विरुद धारक, श्रीजय सुदरसूरि, तथा महाविद्या विडवन टिपनक कारक श्री भुवनसुदरसूरि, जेमने एकादश अंग सूत्रार्थ कठस्थ हता, तथा चोथा जीनसुंदरसूरि, आ चार तेमना प्रतापी शिष्य थया, जेमणे श्रीराणकपुरमां श्रीधनाकृत चौमुख विहारमां श्रीरीषभादि अनेक शत बिबोनी प्रतिष्ठा करी

५१ श्रीसो मसुदरसूरिनी पाट उपर श्रीमुनिसुदरसूरि थया , तेमणे अनेक प्रासाद, पद्मचक्र, षटकारक, क्रियागुप्तक, अर्द्धभ्रम, सर्वतोभद्र,

मुरज, सिंहासन, अशोक, भेरी, समवसरण, सरोवर, अष्टमहाप्रातिहार्यादि नवीन त्रिशति वंध, तर्क प्रयोगादि अनेक चित्राक्षर, द्व्यक्षर, पंचवर्ग परिहारादि अनेक स्तवमय त्रिदशतरंगिणी नामनी एकसो आठ हाथ लांबी पत्रिका लखी गुरुजी उपर मोकली, तथा चातुर्वेद्य विशारद्यनिधि, उपदेशरत्नाकर प्रमुख अनेक ग्रंथोनी रचना करी वली जेमनुं श्री स्तंभतीर्थमां दफूरखाने "वादीगोकुलसंड" एवु नाम प्रसिद्ध कर्युं. जेमने दक्षिणमां "बालसरस्वती" एवु नाम प्राप्त थयुं. तेओ आठ वर्ष गणनायक, अने त्रण वर्ष युगप्रधान पदमां रह्या. तेओ एकसो आठ वर्त्तुलिकानादोपलक्षक, बाल्यावस्थामां पण एक सहस्र श्लोक नवीन दररोज कंठे करी लेता हता. वली तेमणे "संतिकरं" नामनुं समहिम्न स्तवन करी योगिनीकृत मरकीनो उपद्रव दूर कर्यो. चोवीश वार विधिथी सूरि मंत्रनुं आराधन कर्युं, अने चौद वार, धारा नगरी प्रमुख नगरना स्वामि, पांच राजाओए पोतपोताना देशमां जेमना उपदेशथी अमारिका ढंढेरो पिटाव्यो, तथा शिरोहीना सहस्रमल्ल राजाने पण अप्रमार प्रवृत्त करी, तेमनो तीडनो उपद्रव टाल्यो. तेमनो विक्रम संवत (१४३६) मां जन्म, (१४४३) मां दीक्षा, (१४६६) मां वाचक पद, (१४७८) सूरिपद, जे वखते वृद्धनगरीना शाह देवराजे (३२०००) रूपीआ महोत्सवमां खरच्या, तथा (१५०३) कारतक सुद पडवाने दिवसे तेमनो स्वर्गवास थयो.

५२ श्री मुनिसुंदर सूरिनी पाट उपर श्री रत्नशेखर सूरि थया. तेमनो (१४५७) मां जन्म, (१४६३) मां दीक्षा, (१४८३) मां पंडित पद, (१४९३) मां वाचकपद, (१५०२) मां सूरिपद, (१५१७) पोस वदीछठना रोज स्वर्गवास थयो. जेमने स्तंभ तीर्थमां वांबी नामना भट्टे बाल सरस्वती नाम आप्युं. तेमना रचेला ग्रंथ. श्राद्धप्रतिक्रमणवृत्ति, श्राद्धविधि सूत्र वृत्ति, लघुक्षेत्र समास, आचारप्रदीप प्रमुख अनेक छे. जेमना समयमां लुंका नामना लिखारी (लहीआ) ए संवत (१५०८) मां जीन प्रतिमा उत्थापक लुंका नामनो मत चलाव्यो. ते मतमां (१५३३) मां भाणा नामनो ते मतना वेपनो धारण करनार प्रथम साधु थयो. ते मतनी उत्पत्ति आ प्रमाणे थइ.

गुजरात देशमां अमदावादमां दशा श्रीमालि ज्ञातिनो लुंका नामनो लिखारी रहेतो हतो, ते ज्ञानसागर यतिना उपाश्रयमा पुस्तक लखी, ते आमदानीथी पोतानुं गुजरान चलावतो हतो एकदा प्रस्तावे एक ग्रंथ लखतां, ते ग्रंथना सात पाना लख्या विना गोडवी दीधां ज्यारे पुस्तक वांचवामा आव्यु, त्यारे तेने पुछ्यु के, सात पाना लख्या विना केम रहेवा दीधां ? लुकाए ते बाबत सिद्धो उत्तर नहि आपता, पुछनारने आडा अवला कारण बतावी, लडवा मांड्युं लोकोए ते वखते तेनी लुच्चाइ देखी, तेने मार मारी उपाश्रयमांथी हांकी काढ्यो, अने नगरमां जाहेर कर्युं के तेणे उपर मुजब काम कर्युं छे, तेथी तेनी पासे कोइए ग्रंथ लखाववो नहि बाद लुको लाचार थवाथी डेप राखी अमदावादथी छेतालीस कोस दूर लींबडी नगरमा आव्यो लींबडीमां लुकानी ज्ञातिनो लखमशी नामनो एक वाणीउं राज्यमां कारज्ञारी हतो, तेनी पासे ते बहुज रोयो अने कल्पांत कर्यो लखमशीए पुछ्युं तमने शु दुःख छे ? त्यारे तेणें कह्युं के, अमदावादमा हुं भगवाननो सत्य मत कथन करवा लाग्यो, जेथी तपगछना श्रावकोए मने बहुज मार्यो. हवे हु आपनी पासे आव्यो छु, जो आप मारा मददगार थाउं तो, हु सत्य मत प्रगट करुं लखीमशीए कह्युं, लींबडीना राज्यमां तमे / बेसक तमारो सत्य मत प्रगट करी उपदेश करो हु तमोने मदद आपीश, खान पान संबधी फिकर करवी नहि, तमारी पासे शास्त्र पण श्रवण करीश. ते उपरथी लुंको श्री महावीर भगवंतना साधुउनी तथा जीनप्रतिमानी उत्थापना करवा लाग्यो शुरू साधुउने कहेवा लाग्यो के, तेउ भ्रष्टचारी छे, निर्दयी छे, मीथ्या ज्ञाननो उपदेश करे छे, इत्यादि मनमानी निंदा करवी शरु करी शास्त्रोमां पण जे जे शास्त्रोमां जीनप्रतिमानी जीकर न होती ते ते शास्त्रोनेज साचा मानवा लाग्यो, अने जेमा जेमां थोडो थोडो जीनप्रतिमानो अधिकार हतो, तेना पाठोना अर्थ कुयुक्तियोथी कांइना काइ समजाववा लाग्यो. मात्र एकत्रीश शास्त्र साचा छे, एम प्ररुपवा लाग्यो, तेमा पण आवश्यक सूत्रने तो बिलकुल बगाडी, कांइनु काइ बनावी, लोकोने स्वकपोलकल्पित कहेवा लाग्यो, कारण के आ- ...ां बहु स्थले जीनप्रतिमानो अधिकार छे एक दिवस लुकाने

कोइए कह्युं के जैन दीक्षा लीधा विना शास्त्र नणवानो व्यवहार सूत्रमां निषेध करेल ठे, तो तमे गृहस्थ थइने शास्त्र केम वांचो ठो? लुंकाए कह्युं के, हुं व्यवहार सूत्रनेज सत्य मानतो नथी आ प्रमाणे प्ररुपणा पचीस वर्ष करी, परंतु लुंकाना उपदेशथी कोइ पण साधु थयो नहि ज्यारे संवत (१५३३) नी शाल आवी, त्यारे पूर्वोक्त नाणा वाणीआए लुंकाना उपदेशथी वेष पेहेर्यो. तेनुं नाम नाणारिख पाड्युं तेनो शिष्य संवत (१५६०) मां रूपजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१५७०) मां जीवाजीरिख थयो, तेनो शिष्य संवत (१५०७) मां वृद्धवरसिंहजी थयो, तेतो शिष्य (१६०६) मां वरसिंहजी थयो, तेनो शिष्य संवत (१६४९) मां जसवंतजी थयो आ लुपक मतनी त्रण शाखा थइ १ गुजराती, २ नागोरी, ३ उतराधी. इति लुंपकमतोत्पत्ति

५३ श्री रत्नशेखर सूरिनी पाट उपर श्री लक्ष्मीसागर सूरि थया. तेमनो (१४६४) मां जन्म, (१४९०) मां दीक्षा, (१५०१) वाचक पद, (१५००) सूरिपद. (५४) श्री लक्ष्मीसागर सूरिनी पाट उपर श्री सुमतिसाधु सूरि थया. (५५) श्री सुमतिसाधु सूरिनी पाट उपर श्री हेमविमल सूरि थया. तेउ शिथिल साधुउनी वचमां रह्या, तो पण पोते साधुनो आचार उल्लंघन कर्यो नहि, तेथी केटलाएक दिवस पठी वहु साधुउए शिथिलपणु तजी दीधुं वली रुषि हरगिरि, रुषि श्रीपति, रुषि गणपति प्रमुख वहु जनोए लुपक मतनो त्याग करी श्री हेमविमल सूरि पासे दीक्षा लीधी ते अवसरे संवत (१५६२) मां कडवा नामना एक वाणीआए कडवो मत चलाव्यो, अने त्रण शुइ मानी, तेमज आ कालमां कोइ साधु देखाता नथी एवो पंथ चलाव्यो. वली संवत (१५७०) मां लुंकामतमांथी निकली वीजा नामना वेषधारीए वीजो मत चलाव्यो, जेने लोको विजयगछ कहे ठे सवत (१५७२) मां नागपुरीआ तपगछमांथी निकली उपाध्याय पार्श्वचंद्रे पोताना नामथी पासचंदीउ मत चलाव्यो

५६ श्रीहेमविमल सूरिनी पाट उपर श्रीसुविहितमुनि चुडामणि, कुमततम नाश करवाने सूर्य समान श्री आनंदविमल सूरि थया. तेमनो संवत (१५४७) मां जन्म (१५५२) मां दीक्षा, (१५७०) मां

सूरिपद. आनंदविमल सूरिना साधुउं शिथिलाचारी पण हता, तोपण तेमना वैराग्यरंगनो जग थयो नहोतो. ज्यारे तेउंये जोयु के जीनप्रतिमाना निषेध करनाराउं वहुज वधी गया, अने शुद्ध साधुउं अल्पमात्र रह्या, तथा उत्सूत्र प्ररुपणरूप जलप्रवाहमां जव्य जनो पण तणावा लाग्या, त्यारे मनमां दयादृष्टि लावी, पोताना गुरुनी आज्ञाथी, केटलाएक संविज्ञ साधुउंने साथे लइ संवत (१५८२) मां शिथिलाचारनो परिहार करी क्रिया उद्धार कर्यो देशमां विहार करी अनेक जव्य जनोनो उद्धार कर्यो. अनेक शेठोना पुत्रोने धन कुटुंवना मोहनो त्याग करावी दीक्षा आपी. वली सोराष्ट्रना राजा पासे एवो करार लखाव्यो के जे जीते ते अमारा देशमां रहे, अने हारे ते अमारा देशमांथी निकली जाय वली तूणसिंह नामना श्रावक के जेमने वादशाहे पालखी आपी हती, अने जेमने वादशाहे मलिक श्री नगदल एवु विरुद आप्यु हतु, ते तूणसिंह श्रावके विनंति करी के साधुउंने सोरठ देशमां विहार करावो, तेथी गुरुजीये गणि जगर्षिने साधुउंनी साथे सोरठ देशमा विहार करवा मोकल्या वली जेसलमेर प्रमुख मारवाड देशमा जलनी दुर्लजताथी पूर्वे श्री सोमप्रज सूरिये साधुउंनो विहार वध कर्यो हतो, ते मारवाड देश कुमतिव्याप्त न थइ जाय, ते सारु ते देशना जीवो उपर अनुकपा लावी तथा लाज जाणी, साधुउंने आज्ञा करी के तमे मारवाडमां विहार करी कुमतिमतनु खडन करो ते अवसरे लघुवयमा शियलथी श्री स्थूलिजद्र समान वैराग्यनिधि, निस्पृहावधि, जावजीव जघन्यथी जघन्य षष्ट तपना करनारा अने पारणाने दिन आचाम्लना करनारा एवा अजिग्रहधारी महोपाध्याय श्री विद्यासागरगणिये मारवाड देशमां विहार कर्यो तेमणे जेसलमेरादिमां खरतरोने, मेवाड देशमां वीजामतियोने, अने मोखी आदिमा लुंका मतियोने प्रतिवोधी श्रावाक वनाव्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे. वलीपार्श्वचद्र कदाग्रही हतो. वीरमगाममा ते पार्श्वचद्र साथे वाद करी तेने निरुत्तर कर्यो, अने वहु जनोने जैनधर्म अंगीकार कराव्यो तेज प्रमाणे मालव प्रमुख देशोमां विहार करी धर्मनी प्रवर्त्ती करी. श्री विद्यासागर उपाध्यायजीये तप गछनी फरी वृद्धि करी, अने, क्रिया उद्धार कर्यापछी श्री आनंदविमल सूरिजी चौद वर्षसुधी जघन्यथी पण नियत

तप वर्जी, छठ्थी कमतप करता न होता. वली तेमणे चतुर्थ, षष्ट तपथी वीश स्थानकनी आराधना करी, अने संवत (१५९६) मां नव दिननुं अनशन करी स्वर्गे गया.

५७ श्री आनंदविमल सूरिनी पाट उपर श्री विजयदान सूरि थया. जेमणे स्तंभतीर्थ, अमदावाद, महीशानक, गंधार बंदर प्रमुखमां महा महोत्सव पूर्वक अनेक जीनबिंबोनी प्रतिष्टा करी. जेमना उपदेशथी बादशाह महमदना मान्य मंत्री गलराजा, अपर नाम मलिक श्रीनगदले श्री शत्रुंजय तीर्थनो मोटो संघ काढ्यो. वली जेमना उपदेशथी गांधार नगरना श्रावक रामजीये तथा अमदावादना शा. कुंवरजी प्रमुखे श्री शत्रुंजय उपर चौमुख, अष्टापदादि जीनमंदिरो बंधाव्या गिरनार उपर जीर्ण प्रासादोनो उद्धार कराव्यो. जेमनो सूर्यनी जेम उदय थवाथी वादी रुपी ताराउ अदृश्य थवा लाग्या श्रीविजयदान सूरि सर्व सिद्धांतना पारगामी, अखंडित प्रतापवाला तथा अप्रमत्त अने रुपे श्री गौतममुनिवत् हता, तेउ गुजरात, मालवा, कछ, मारवाड, तथा कुकणादि देशोमां अप्रतिबद्ध विहार करता हवा. महातपस्वी, जावजीव मात्र घी शिवाय सर्व विगयना त्यागी हता जेमणे एकादशांग सूत्र अनेकवार शुद्ध कर्यां, बहु जनोने धर्म प्राप्त कराव्यो तेमनो संवत (१५५३) मां जन्म, संवत (१५६२) मां दीक्षा, (१५८७) सूरि पद, अने (१५६२) मां वटपल्लीमां अनशन करी स्वर्गे गया.

५८ श्री विजयदान सूरिनी पाट उपर श्री हीरविजय सूरि थया. जेमनो संवत (१५८३) मां मागसर सुद ९ ना रोज प्रल्हादनपुर निवासी उका जातीना शा कुरानी भार्या नाथीना उदरथी जन्म थयो. संवत (१५९६) कारतक वदी २ ना रोज पाटणमां तेमने दीक्षा प्राप्त थइ, तथा (१६०७) मां नारदपुरीमां श्री रीषभदेवजीना मंदिरमां पंडित पद (१६०८) माहा सुद ५ ना रोज नारदपुरीमां वरकाणक पार्श्वनाथ सनाथे नेमजीन प्रासादे वाचक पद, (१६१०) शिरोही नगरमां सूरिपद प्राप्त थयुं. जेमना सौभाग्य, वैराग्य, निःस्पृहतादि गुणोने वचन गोचर करवाने बृहस्पतिमा पण चातुर्यता न होती. जेमना स्तंभतीर्थना विहारमां श्रद्धावानोये एक क्रोड रुपीआ प्रभावनादि धर्मकृत्योमां खरच्या,

सूरिपद. आनंदविमल सूरिना साधुओ शिथिलाचारी पण हता, तोपण तेमना वैराग्यरंगनो नंग थयो नहोतो. ज्यारे तेओये जोयु के जीनप्रतिमाना निषेध करनाराओ बहुज वधी गया, अने शुद्ध साधुओ अल्पमात्र रह्या, तथा उत्सूत्र प्ररुपणरूप जलप्रवाहमां नव्य जनो पण तणावा लाग्या, त्यारे मनमां दयादृष्टि लावी, पोताना गुरुनी आज्ञाथी, केटलाएक संविज्ञ साधुओने साथे लइ संवत (१५०२) मां शिथिलाचारनो परिहार करी क्रिया उद्धार कर्यो देशमां विहार करी अनेक नव्य जनोनो उद्धार कर्यो अनेक शेठोना पुत्रोने धन कुटुंबना मोहनो त्याग करावी दीक्षा आपी. वली सोराष्ट्रना राजा पासे एवो करार लखाव्यो के जे जीते ते अमारा देशमां रहे, अने हारे ते अमारा देशमांथी निकली जाय वली तूणसिंह नामना श्रावक के जेमने बादशाहे पालखी आपी हती, अने जेमने बादशाहे मलिक श्री नगदल एवु विरुद आप्यु हतु, ते तूणसिंह श्रावके विनंति करी के साधुओने सोरठ देशमां विहार करावो; तेथी गुरुजीये गणि जगर्षिने साधुओनी साथे सोरठ देशमां विहार करवा मोकल्या वली जेसलमेर प्रमुख मारवाड देशमां जलनी दुर्लनताथी पूर्वे श्री सोमप्रन सूरिये साधुओनो विहार बंध कर्यो हतो, ते मारवाड देश कुमतिव्याप्त न थइ जाय, ते सारु ते देशना जीवो उपर अनुकंपा लावी तथा लान जाणी, साधुओने आज्ञा करी के तमे मारवाडमां विहार करी कुमतिमतनु खंडन करो ते अवसरे लघुवयमा शियलथी श्री स्थूलिनद्र समान वैराग्यनिधि, निस्पृहावधि, जावजीव जघन्यथी जघन्य षष्ठ तपना करनारा अने पारणाने दिन आचाम्लना करनारा एवा अनिग्रहधारी महोपाध्याय श्री विद्यासागरगणिये मारवाड देशमां विहार कर्यो. तेमणे जेसलमेरादिमां खरतरोने, मेवाड देशमां वीजामतियोने, अने मोर्खी आदिमा लुंका मतियोने प्रतिबोधी श्रावाक बनाव्या, ते आज सुधी प्रसिद्ध छे वलीपार्श्वचंद्र कदाग्रही हतो वीरमगाममा ते पार्श्वचंद्र साथे वाद करी तेने निरुत्तर कर्यो, अने बहु जनोने जैनधर्म अंगीकार कराव्यो. तेज प्रमाणे मालव प्रमुख देशोमां विहार करी धर्मनी प्रवर्ती करी. श्री विद्यासागर उपाध्यायजीये तप गच्छनी फरी वृद्धि करी, अने क्रिया उद्धार कर्यापछी श्री आनंदविमल सूरिजी चौद वर्षसुधी जघन्यथी पण नियत

तप वर्जी, ठठथी कमतप करता न होता वली तेमणे चतुर्थ, षष्ट तपथी वीश स्थानकनी आराधना करी, अने संवत (१५९६) मां नव दिननुं अनशन करी स्वर्गे गया

५७ श्री आनंदविमल सूरिनी पाट उपर श्री विजयदान सूरि थया. जेमणे स्तंभतीर्थ, अमदावाद, महीशानक, गधार बंदर प्रमुखमां महा महोत्सव पूर्वक अनेक जीनबिंबोनी प्रतिष्ठा करी जेमना उपदेशथी बादशाह महमदना मान्य मंत्री गलराजा, अपर नाम मलिक श्रीनगदले श्री शत्रुंजय तीर्थनो मोटो संघ काढ्यो. वली जेमना उपदेशथी गांधार नगरना श्रावक रामजीये तथा अमदावादना शा कुंवरजी प्रमुखे श्री शत्रुंजय उपर चौमुख, अष्टापदादि जीनमंदिरो बंधाव्या. गिरनार उपर जीर्ण प्रासादोनो उद्धार कराव्यो. जेमनो सूर्यनी जेम उदय थवाथी वादी रुपी तारा अदृश्य थवा लाग्या श्रीविजयदान सूरि सर्व सिद्धांतना पारगामी, अखंडित प्रतापवाला तथा अप्रमत्त अने रुपे श्री गौतममुनिवत् हता, तेउ गुजरात, मालवा, कछ, मारवाड, तथा कुंकणादि देशोमां अप्रतिबद्ध विहार करता हवा. महातपस्वी, जावजीव मात्र घी शिवाय सर्व विगयना त्यागी हता. जेमणे एकादशांग सूत्र अनेकवार शुद्ध कर्यां, बहु जनोने धर्म प्राप्त कराव्यो तेमनो संवत (१५५३) मां जन्म, संवत (१५६२) मां दीक्षा, (१५८७) सूरि पद, अने (१५६२) मां वटपल्लीमां अनशन करी स्वर्गे गया.

५८ श्री विजयदान सूरिनी पाट उपर श्री हीरविजय सूरि थया. जेमनो संवत (१५८३) मां मागसर सुद ९ ना रोज प्रल्हादनपुर निवासी उका जातीना शा. कुरानी भार्या नाथीना उदरथी जन्म थयो. संवत (१५९६) कारतक वदी २ ना रोज पाटणमां तेमने दीक्षा प्राप्त थइ, तथा (१६०७) मां नारदपुरीमां श्री रीषभदेवजीना मंदिरमां पंडित पद (१६०८) माहा सुद ५ ना रोज नारदपुरीमां वरकाणक पार्श्वनाथ सनाथे नेमजीन प्रासादे वाचक पद, (१६१०) शिरोही नगरमां सूरिपद प्राप्त थयुं. जेमना सौभाग्य, वैराग्य, निःस्पृहतादि गुणोने वचन गोचर करवाने बृहस्पतिमां पण चातुर्यता न होती. जेमना स्तंभतीर्थना विहारमां श्रद्धावानोये एकक्रोड रुपीआ प्रभावनादि धर्मकृत्योमां खरच्या,

वली जेमना चरण विन्यासना प्रतिपदमां बे मोहोर तथा एक रुपीउं मोचन कर्यो जेमनी सेवामां श्रद्धालु श्रावकोये मोतीना साथीआ कर्या वली श्रीगुरुजीये शिरोही नगरमां श्रीकुंथुनाथ स्वामिनी प्रतिष्टा करी, तथा नारदपुरमां अनेक सहस्त्रबिंबोनी प्रतिष्टा करी. श्री गुरुराजना विहारमां युगप्रधान अतिशय देखवामां आवता हता वली अमदावादमां लुका मतना पुज्य ऋषि मेघजीये, पोतानो लुकामत दुर्गतिनो हेतु जाणी पोतानी आचार्यपदवी, रजनी जेम छोडी दइ, पचीस यतियोनी साथे सकल राजाधिराज बादशाह श्री अकबरशाहनी आज्ञा पुर्वक बादशाही वाजीत्र वजावता थकां महामहोत्सव पूर्वक श्रीसूरिजीनी पासे दीक्षा लीधी, आवी बिना कोइ आचार्यना समयमां बनी नहोती वली श्री गुरुजीना उपदेशथी अकबर बादशाहे पोताना सर्व राज्यमां एक वर्षमां छ महिनासुधी जीवहिंसा वध करी, तथा जजीआवेरो वध कर्यो, तेमनु विस्तारथी चरित्र जाणवु होय तो श्री हीरसौभाग्य काव्य अवलोकन करवु. अहीआ मात्र संक्षेपथी बिना लखीये छीये

एकदा प्रस्तावे प्रधान पुरुषोना मुखथी अकबरशाहे श्री हीरविजय सूरिना निरुपम शम, दम, सवेग, वैराग्यादि गुणो श्रवण कर्या जेथी सूरिजीने पोतानु नामांकित फुरमान मोकली बहुमान पुरस्सर गधार बंदरथी आग्रानी नजीकना फत्तेपुर नागरमां दर्शन करवाने, बादशाहे बोलाव्या गुरुजी अनेक भव्य जीवोने उपदेश आपतां, अनुक्रमे विहार करता थकां संवत (१६३९) ज्येष्ट वद १३ दिने फत्तेपुरमां आव्या ते स्थले बादशाहना शिरोमणि प्रधान अबुलफजल द्वारा श्रीविमलहर्ष गणि प्रमुख अनेक मुनियोना परिवार सहित, बादशाह साथे मेलाप कर्यो ते अवसरे बादशाहे बहु आदर सत्कार करी सूरिजीने सभामा बेसाड्या बादशाहे सूरिजीने परमेश्वरनु स्वरूप, गुरुनु स्वरुप, तथा धर्मनु स्वरूप शु छे ? तथा परमेश्वर केवी रीते प्राप्त थाय ? इत्यादि धर्मविचार पुछ्या. सूरिजीए मधुर वाणीथी बादशाहने कह्यु के जेनामां अढार दूषण न होय ते परमेश्वर छे, पच महाव्रतादि धारण करनारा गुरु छे, अने आत्मानो शुद्ध स्वभाव, ज्ञान, दर्शन, चारित्ररुप छे, ते धर्म इत्यादि विस्तार पूर्वक बादशाहे गुरुजी पासे धर्मोपदेश श्रवण कर्यो

जेथी आग्राथी अजमेर सुधी प्रतिकोश कुवा मिनारा सहित कराव्या. जीवहिंसा बंध करी अने दयावान् थया बाद अकबर बादशाह एकदा अति तुष्टमान थइ जवाथी कहेवा लाग्या के हे प्रभु ! आप पुत्र, कलत्र, धन, स्वजन, देहादि, ममत्व रहित छो, तेथी आप सोनु, चांदी तो लेता नथी, परंतु अमारा मकानमां जैनमतना पुरातनी पुस्तको बहु छे, ते आप लेवानो अनुग्रह करो. बादशाहना बहु आग्रहथी श्री गुरुजीए सर्व पुस्तक लइ आग्रा नगरना ज्ञानभंडारमां स्थापन कर्या. बाद गुरुजी एक प्रहरसुधी बादशाहनी साथे धर्मगोष्ठी करी वडा आडंबरथी उपाश्रयमां आव्या. ते वखते लोकोमां जैनमतनी बहुज उन्नति थइ. ते वरसे आग्रा नगरमां चोमासुं करी सोरीपुर नगरे श्री नेमिनाथनी यात्रा करवा गया. ते स्थले श्री रीषभदेव अने नेमिनाथजीनी बहु पुरातनी प्रतिमाउंनी तथा तत्कालना बनावेला श्री नेमिनाथना चरणोनी प्रतिष्टा करी बाद आग्रावां शा० मानसिंह कल्याणमल्लना बनावेला श्री चिंतामणि पार्श्वनाथादि बिंबोनी प्रतिष्ठा करी, ते श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ आजसुधी आग्रामां प्रसिद्ध छे पछी श्री गुरुजी फरी फत्तेपुर नगरमां गया, अने अकबर बादशाहने मल्या. ते प्रसंगे एक प्रहर धर्मगोष्ठी करी, तथा धर्मोपदेश कर्यो. बादशाह कहेवा लाग्या के, मे आपने दर्शनोत्कंठित थइ दूर देशथी बोलाव्या, अने विनंति करी, परंतु आप अमारी पासेथी कांइ पण लेता नथी, तेथी फरीथी विनंति करीए छीए; आपने जे रुचे ते अमारी पासेथी मांगी लेवु जोइए, जेथी अमारो मनोरथ सफल थाय. ते सांभली गुरुजीए सम्यक् विचार करी कह्युं के, आपना सर्व राज्यमा पर्युषणना आठ दिवसोमां कोइ पण जानवरनो वध न थाय, तथा बंधीवानो मुक्त थाय, आ अमारी मांगणी छे. बादशाहे गुरुने निर्लोभी शांत, दांत जाणी कह्युं के आठ दिवस तमारी तरफथी अने चार दिवस मारी तरफथी सर्व मली बार दिवस सुधी अर्थात् भादरवा वद १० थी ते ते भादरवासुद ६ सुधी कोइ पण जानवरने मारा राज्यमां मारवामा आवशे नहि. पछी बादशाहे सोनाना अक्षरोथी लखावी ७ परवाना श्री गुरुजीने आप्या. ते ७ फुरमान (परवाना) आ प्रमाणे. १ श्री गुजरात देशनो, २ मालव देशनो, ३ अजमेर देशनो, ४ दिल्ली फत्तेपुर-

ना देशनो, ५ लाहोर, मुलतान मंडलनो, ६ श्री गुरुजीने पासे राखवानो पूर्वोक्त पांचे देशना साधारण फुरमान, ते ते देशमां मोकली अमारि पडह वगडाव्यो, जेथी वादशाहना हुकमथी, नहोता जाणता एवा सर्व आर्य, अनार्य कुलमंडपमां दयारुप वेल विस्तारवान् थइ गइ वधीवान जनोने पण वादशाहे गुरुपासेथी उठी तत्काल मुक्त कर्या वली एक कोशना तलाव उपर पोते जइ, अनेक देशवालाउंए, अनेक जातिना जानवरो वादशाहने जेट मोकल्यां हता, ते सर्वने पोताना हाथथी ठोडी दीधां, वादशाहनी साथे गुरुजीने अनेकवार मेलाप थयो, अने अनेक जीनमंदिर तथा उपाश्रयोनो उपद्रव वादशाहे दूर कर्यो ज्यारे श्री हीरविजय सूरि वीजे देश विहार करवा लाग्या, त्यारे वादशाहे तेमने जे फुरमान लखी आप्यो तेनी नकल आ स्थले लखीए डीए

जलालुदीन वादशाह
अकव्वर वादशाह
गाजीनु फुरमान

अकव्वर मोहरनी वंशावली
जलालुदीन अकव्वर वादशाह
हुमायुन वादशाहाना पुत्र
वावर वादशाहना पौत्र
उमर शेख मीरजाना पुत्र
सुलतान अवुस इदना पुत्र
सुलतान महम्मद शाहना पुत्र
मीरशाहना पुत्र
अमीर तैमुर साहि किराननापुत्र

देश मालवा, अकव्वरावाद,लाहोर, मुलतान, अमदावाद,अजमेर, मीरत, गुजरात वगाला, तथा हाल जे जे मारा तावामां मूलक ठे ते सर्वना सुवा, मुसद्दी, करोरी तथा जागीरदार सर्वेने मालम थाय के, अमारो संपूर्ण इरादो एवो ठे के सर्व रैयतना मनने संतोष पमाडवो, कारण के रैयतना मनने सतोष ते परमेश्वरनी एक मोटी मेहेरवानी ठे वली विशेष रीते वृद्धावस्थामा मारो एवो इरादो ठे के, मारु सारु इछनारी सर्व रैयत सुखी रहे, ते कारणथी हरेक धर्मना लोकोमांथी जे सारा विचारवाला, परमेश्वरनी जक्ति करवामां पोतानी उमर पुरी करनारा ठे, तेउने दूर दूर देशोथी मे मारी पासे वोलाव्या, अने तेउनी परिक्षा करी, तेमने मारी सोवतमा राखु ढुं,

अने तेमनी वातो सांजली हुं बहु खुशी थाउं छुं ते प्रमाणे करता थकां मारा सांजलवामां आव्युं के श्रीहीरविजय सूरि, जैनश्वेतांबर मतना आचार्य गुजरातना बंदरोमां परमेश्वरनी जक्ति करे छे, मे तेमने मारी पासे बोलाव्या, तेमनी मुलाकात करी हुं बहु खुशी थयो छु केटलाएक दिवस पछी ज्यारे तेउंए पोताने वतन जवानी रजा मांगी, ते प्रसंगे तेउंए अरज करी के, गरीब परवरनी मरजीथी आ प्रमाणे हुकम थवो जोइये;

सिद्धाचलजी, गीरनाजी, तारंगाजी, आबुजीनो पहाड जे गुजरातमां छे, केशरीआनाथजी, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालामां छे, ते पहाडो उपर तथा नीचें, सर्व, मंदीरोनी कोठीउंमां तथा सर्व जक्ति करवानी जगाउंमां, तथा जे जे तीर्थनी जगाउं, जैनश्वेतांबर धर्मनी मारा तावाना मुलकोमां होय, ते पहाडो, मंदीरो तथा जगानी आसपास कोइ पण आदमीए कोइ पण जनावर मारवु नहि. आ प्रमाणे तेमणे अरज करी. ते आचार्य बहु दूरथी अमारी पासे आव्या छे, अने तेमनी अरज वाजबी अर्थात् सत्य छे. यद्यपि आ अरज मुसलमानी मतथी विरुद्ध छे, तो पण परमेश्वरने पिछाननारा आदमीउंनो आ दस्तुर छे के– कोइ कोइना धर्ममां दखल न करे, अने तेमनो रिवाज बहाल राखे ते कारणथी आ अरज मारी समजमां साची लागे छे, के सर्व पहाड तथा पूजानी जगा बहु वखतथी जैनश्वेतांबरी धर्मवालानी छे, ते कारणथी तेमनी अरज कबुल करवामां आवी छे, के सिद्धाचलनो पहाड, गीरनारनो पहाड, तारंगाजीनो पहाड, केशरीआजीनो पहाड, आबुनो पहाड, राजगृहना पांच पहाड, तथा समेतशिखर उर्फे पार्श्वनाथनो पहाड जे बंगालाना मुलकमां छे, ते सर्व पुजाउंनी जगाउं, तथा पहाड नीचे तीर्थनी जगाउं जे मारा राज्यमा छे, तथा गमे ते ठेकाणे जैनश्वेतांबरी धर्मनी जगा होय ते हीरविजय जैन श्वेतांबरी आचार्यने आपवामां आवी छे, अने तेमणे सारी रीते परमेश्वरनी जक्ति करवी जोइए

वली एक वात आ पण याद राखवी जोइए के, आ जैनश्वेतांबरी धर्मना पहाडो, पूजानी जगा तथा तीर्थनी जगा, जे मे श्री हीरविजयजी सूरिने आपेल छे, ते सर्व जगाउं हकीकतमां तो जैनश्वेतांबर धर्म-

वालाउंनीज छे, तेथी ज्यां सुधी सूर्यथी दिन रोशन रहे, अने ज्यांसुधी चन्द्रमाथी रात रोशन रहे, त्यां सुधी आ फुरमाननो हुकम जैनश्वेतांबरी धर्मना लोकोमां सूर्य तथा चन्द्रमानी जेम प्रकाशित रहे, अने कोइ आदमी तेमने हरकत न करे वली कोइ आदमीए ते पहाडो उपर, तेनीनीचे तथा तेनी आसपास पुजानी जगाउंमां तथा तीर्थनी जगाउंमां जानवर मारवु नहि, तथा आ हुकम मुजब अमल करवो आ हुकमथी फरवु नहि, तथा नवीन सनद मांगवी नहि लखी तारीख ७ मी माह उरदी वहेस मुतावेक माह रबीयुल अवल सन् ३७ जुलसी आ अकबर बादशाहना फुरमाननी नकल छे.

वली थानसिंहनी करावेली तथा बीजा शाह डुजणमल्लनी करावेली श्री जीनप्रतिमाउंनी प्रतिष्ठा, लाखो रुपीआ महोत्सवमां वपरावी, करी प्रथम चातुर्मास, आग्रामा, बीजो फत्तेपुरमां, त्रीजो त्रिरामनगरमां अने चोथो फरी आग्रामां, ए रीते कर्यां बाद बादशाहनी गोष्ठी वास्ते श्री शांतिचंद्र उपाध्यायने राखीने, श्री गुरुजी पोते मेहेडता तथा नागपुरमां चातुर्मासि करी शिरोही नगरमा गया, त्यां नवा चतुर्मुख प्रासादमां श्री आदिनाथना बिंबनी तथा श्री अजीतनाथ प्रासादमां श्री अजीतनाथजीना बिंबनी प्रतिष्ठा करी अनुक्रमे अर्बुदाचल यात्रा करवा गया अहींआं श्री शांतिचन्द्र उपाध्याये नवीन कृपारस कोश नामनो ग्रंथ रची अकब्बर बादशाहने श्रवण कराव्यो, ते श्रवण करवाथी बादशाहने दयानी बहुज वृद्धि थइ तेथी आ प्रमाणे थयु. बादशाहना जन्मना दिवसथी एक मास, पर्युषणना बार दिवस, सर्व रविवार, सर्व संक्रातिना दिवसो, नवरोजनो मास, सर्व इदना दिवसो, सर्व मिहर बासरा, सर्व सोफीआनादिन, इत्यादि सर्व मली एक वर्षमां छ महीना सुधी जीवहिंसा वध करावी तेना फुरमान लखाव्या, जे फुरमानो आजसुधी अमारा लोकोनी पासे छे श्री हीरवीजय सूरिए जैनमतनी वृद्धि तथा उन्नति बहुज करी, तेमा कांइ पण शका नथी मुसलमानो पण तेमनाथी दयावान् थया तेमणे स्तंभतीर्थे सवत (१६४६) मां स्तम्भ तीर्थवासी शा० तेजपालना बनावेला मदिरमां प्रतिष्ठा करी

५९ श्री हीरविजय सूरिनी पाट उपर श्री विजयसेन सूरि थया.

तेमनो संवत (१६०४) मां जन्म, (१६१३) माता पिता सहित दीक्षा, (१६२६) पंडितपद, (१६२७) उपाध्यायपद पूर्वक आचार्यपद, (१६५२) भट्टारकपद, अने (१६७१) मां स्तंभतीर्थे स्वर्गवास थयो. तेमना वेखहर्ष तथा परमानंद, बे शिष्योए अकब्बर बादशाहना पुत्र जाहांगीरने धर्म श्रवण करावी प्रतिबोध कर्यो, अने जाहांगीर बादशाहथी फुरमान कराव्यो, तेनी नकल नीचे मुजब.

जरुदीन महम्मद
जहांगीर बादशाह
गाजीनुं फुरमान

जहांगीरनी मोहोरमां वंशावली
उरदीन महम्मह जहांगीर बादशाह
अकबर बादशाह
हुमायुन बादशाह
बाबर बादशाय
मीरजी उमरशेख
सुलतान अबुसहस
सुलतान मीरजा मोहम्मशाह मीरा-
शाह- अमीर तेमुर साहिब किरान

मारा सर्व राज्यमां तथा विशेष करी गुजरातना सुबा, मोटा हाकेम, कीफायत करनारा आमील, जागीरदार, करोरी तथा सर्व खाताना कारकुनोने मालम थाय के, परमेश्वरने पिछाननारा जे लोक छे, तेनो एवो दस्तूर छे के, हरेक मतना तथा कोमना लोकोज मात्र नहि, परंतु सर्व जीव सुखी रहे, तेम करवुं हालमां वेखहरख तथा परमानंद यतियोए डुनीआनी रक्षा करनाराउना दरबारमां आवी, तखतनी पासे उभा रही अरज करी के.– विजयसेन सूरि तथा विजयदेव सूरि, तेमज जेउ सारी बुद्धिवाला लोको छे, तेउ इश्वरनी भक्ति करे छे, तेमज प्रार्थना करे छे; तथा वेखहरख अते परमानंद यतियोनी परमेश्वरने राजी राखवानी हकीकत, अमे बहु सारी रीते जाणी लीधी, तेथी डुनियाने ताबे करनारनो एवो हुकम थयो केः– कोइ आदमीए आ जैन लोकोना मंदिरोमा तथा धर्मशालामां उतरवुं नहि, तथा कारण विना अडचण करवी नहि जो ते लोको फरीथी नवा बनाववा चाहे तो तेउने कोइ रीते मना तथा हरकत करवी नहि. वली तेउना साधुउना

उपाश्रयमां तो कोइए पण उतरवु नहि. वली जो ते लोको सोरठमां शत्रुजय तीर्थनी यात्रा करवा वास्ते जाय तो कोइ पण आदमीए ते यात्रालुर्ड पासे कांइ पण मांगवु नहि, तथा लालच करवी नहि वली सदरहु वेखहरख अने परमानंद यतिनी अरज तथा खायेस उपर वहुज जारे हुकम आ थाय ठे के, दर अठवाडीआमां रविवार तथा गुरुवार तथा दर महिनामां सुद पडवाने रोज तथा इदने दिवसे तथा दर वर्षमां नवरोज अने माहशहरयुरमां जे अमारो मुवारक दिन ठे, तेमां एक एक वर्षना हिसाव प्रामाणे मारा सर्व राज्यमां कोइ जीवनी हिंसा न थाय, तथा शिकारनु काम, पक्षीयोनु पकडवुं, मारवुं, तथा माठलां मारवा, इत्यादि सर्व वंध करवु वली तेवी रीतना वीजा पण काम पूर्वोक्त दिवसोमां न थवा जोइए आ वात जरूरनी ठे के पूर्वोक्त हुकम मुजव हमेशां चलाववानी कोशिश करवी, तथा मारा फुरमानना हुकमथी कोइ फरे नहि, वीरुद्ध चाले नहि लखी० ता० माह सहर युरमे सन् ३ जुलसी. आ फुरमान खांजां हानना चोपानीआमां तथा सेवक अलीतकीना वर्त्तमान पत्रमा दाखल कर्यो तरजुमो करनार मुनशी सैयद अवदुला मीयां साहेव उरेजी

६० श्री विजयसेन सूरिनी पाट उपर श्री विजयदेव सूरि थया. तेमनो संवत (१६३४) जन्म (१६४३) दीक्षा, (१६५५) पडितपद, (१६५६) उपाध्याय पद पूर्वक आचार्यपद, (१६७१) मा स्वर्गवास थयो ६१ श्री विजयदेव सूरिनी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि थया तेमनो (१६४४) जन्म, (१६५४) दीक्षा, (१६७३) वाचकपद, (१६७२) सूरिपद (१७०८) मा स्वर्गवास थयो ६२ श्री विजयसिंह सूरिनी पाट उपर श्री विजयप्रज्ञसूरि थया तेमनो संवत (१६७५) जन्म, (१६८९) दीक्षा, (१७०१) पडितपद, (१७१०) उपाध्यायपद, (१७१३) नट्टारक पद, (१७४९) मां स्वर्गवास थयो तेमना समयमां मुखवधा ढुंढीयानो पथ प्रगट थयो, तेनी उत्पत्ति कहिए ठीए

सुरत शेहेरमा शा० वीरजी वोहरा अटकनो दशा श्रीमालि वाणीउं रहेतो हतो तेने फुली नामनी वाल विधवा एक पुत्री हती तेणे एक लवजी नामनो ठोकरो दत्तक लीधो ते लवजीने लुकाना उपाश्रयमां न-

एवा मोकल्यो. तेने यतियोनी संगतथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी लुंकाना यति वजरंगजीनो ते शिष्य थयो. बे वर्ष पछी ते पोताना गुरुने कहेवा लाग्यो के, जेवो शास्त्रमां साधुनो आचार छे, तेवो तमें केम पालता तथी? गुरुए कह्युं के पंचम कालमां शास्त्रोक्त सर्व क्रिया थइ शकती नथी. लवजीए कह्युं के तमे भ्रष्टाचारी छो, तेथी मारा गुरु हवे तमे नहि. हुं तो पोतेज संयम फरीने लइश. ए प्रमाणे क्लेश करी लवजी रुषिए लुंका मतनी गुरुदीक्षा छोडीने, पोतानी साथे बीजा बे यतियो लीधा. १ भाणो, २ सुखजी. त्रणेए पोतपोतानी मेले दीक्षा लीधी, अने मुख उपर लुगडानी पट्टी बांधी तेमना नवीन वेश देखी कोइ श्रावके तेमने प्रथम तो रहेवा जगा न आपी, तेथी तेउ खडेर मकानमां जइ रह्या गुजरातमां खडेर थइ गयेला मकानने ढुंढ कहे छे. लोकोए तेवा मकानमां तेउने रहेतां देखी तेउनु नाम ढुढीया राख्युं, तेउ त्रणेने नवो मत चलाववामां वहु क्लेश जोगववो पड्यो, परंतु तेउनो त्याग देखी केटलाएक लुका मतियो तेमने मानवा लाग्या; कारण के गाडरीआ प्रवाहनी रीति जगतुमां प्रचलित छे ते मुजव जोला, अज्ञान लोको उपरनो डोल देखी रागी थइ जाय छे, वली गुजरातना लोकोनो वहु जाग एवो हठग्राही छे के, जे वात पकडी, ते वातने वहु मुस्केलीथी छोडे छे, तेथी गुजरात देशमांज जैन मतना केटलाएक फांटा निकलेला छे. बाद ते लवजीनो शिष्य सोमजी नामनो उंसवाल वाणीउं, अमदावादना कालुपरनो रेहेनार थयो तेणे सूर्यनी आतापना वहुज करी तेना चेलाना नाम १ हरिदासजी २ प्रेमजी, ३ गीरधरजी, ४ कानजी प्रमुख थया, अने लुंकामतना कुंवरजीना चेला पण तेमना शिष्य थया, तेमना नाम १ श्रीपाल, २ अमीपाल, ३ धरमसी, ४ हरजी, ५ जीवाजी, ६ समरथ, ७ तोडुजी, ८ मोहनजी, ९ सदानंदजी, १० गोधाजी एक गुजरातवासी धर्मदास छीपाए पोतानी मेले मुंड मुंडावी, मुख उपर पट्टी बांधी, पोते ढुढीयानो साधु छे, एम प्रसिद्ध कर्युं. हरिदासनो चेलो वृंदावन थयो, वृंदावननो चेलो जवानीदास थयो, जवानीदासनो चेलो लाहोर निवासी मलूकचंद थयो मलूकचंदनो महासिंह, महासिंहनो खुशालराय, खुशालरायनो छजमल, छजमलनो

रामलाल, अने रामलालना बे शिष्य, रामरत्न तथा अमरसिंह, आ ब-नेने अमे देखेला छे ते बनेना चेला वसंतराय तथा रामबक्ष विगेरे जीवता छे. तेउ पजाव देशमां वर्तमानमां फर्या करे छे

जीवाजीनो चेलो लालचंद थयो, अने लालचदनो चेलो अमरसिंह थयो. ते मारवाड देशमां आव्यो, तेमना परिवारमां नानकजी थयो जेना चेला हालमां अजमेर तथा कृष्णगढ जील्लामा बहु फरे छे एक श्यामिदास, जेना परिवारमां कन्हीराम, लेखराज, तखतमल प्रमुख हालमां मारवाडमां रहे छे, तथा बुंदीकोटामा अने मालवामां, लालचंद, गणेशजी, गोवींदरामजी, थया, तथा अमीचद, हुकमचंद, उदयचद, फतेचद, ज्ञानजी, ठगन, मगन, देवकरण अने पन्नालाल प्रमुख फरे छे, तेउ पण हरिदासनाज चेला छे वली अमरसिंहना चेला दीपचद, दीपचदना धर्मदास, धर्मदासना जोगराज, जोगराजना हजारीमल्ल, हजारीमल्लना लालजीराम, लालजीरामना गगाराम, गगारामना जीवणमल्ल, जे वर्तमानमा दिल्लीनी आसपासना गामोमां फरे छे, तथा अमरसिंहना परिवारमा धनजी, मनजी, नाथुराम अने ताराचद प्रमुख थया छे, जेमना चेला, रतिराम तथा नंदलाल थया नदलालनो चेलो रुपचद अने रुपचदनो बिहारी जे पंजाबमां कोट जगरावादि गामोमा फरे छे, तथा कानजी अने धर्मदास छीपीना चेलाउ दीपचंद, गोपालजी प्रमुख लीबडी, वढवाण, मोरबी. गोंडल, जेतपुर, राजकोट, अमरेली, घ्रांगधरा प्रमुख झालावाड काठीयावाड अने हालार प्रमुखना गामोमां फरे छे धर्मदास छीपीना चेला धनाजी, धनाजीना सुदरजी, सुदरजीना रघुनाथजी, जैमलजी, गुमानचंद, दुर्गदास, कन्हीराम, रत्नचंद, हमीरमल्ल, कचोरीमल्ल प्रमुख वर्तमानमां मारवाडमा फरे छे, ते प्रसिद्ध छे

रघुनाथजीनो चेलो जखमजी संवत (१८१८) मां थयो. जेणे तेरापथ प्रगट कर्यो तेना चेला जारमल, हेमजी, रायचद, जीतमल्ल थया, जीतमल्लनी गादी उपर हाल मेघजी छे आ मुखवधा जेटला साधुउ छे, तेउनो पथ सवत (१७०९) नी सालथी चाल्यो छे. तेमनो मत ज्यारथी निरव्यो छे, त्यारथी आज सुधी तेमना मतमां कोइ पण विद्वान्

थयेल नथी; कारण के ते लोको कहे छे के, व्याकरण, काव्य, कोश, छद, अलंकार प्रमुख जणवाथी, तथा तर्कशास्त्र जणवाथी बुद्धि वगडी जाय छे. आ अज्ञानपणाना कारणथीज तेउं परस्पर बहु द्वेष राखे छे. कइक मनमानी कल्पित वातो बनावी लहे छे. एक बीजानो पग जामवा देता नथी, मनमां माने छे के, मारा फलाणा गृहस्थ चेलाने फलाणो जोलवशे, इत्यादि अनेक कारणोथी परस्पर इर्ष्या बहुज राखे छे. आ वातमां शंका लागे तेणे मारवाडमां जइ प्रत्यक्ष अनुभव करवो. तेमना आचार, व्यवहार, वेष, श्रद्धा, प्ररुपणा प्रमुख जैनमतना शास्त्रानुसार नथी. वली बीजा मतवालाउं पण जे जैनमतना बहु लोकोने गंदा, कढंगा माने छे, तेउं मात्र आ ढुंढीआउंनाज आहार, व्यवहारनी रीत देखीने तेम माने छे. विशेष शुं लखुं, तेउंनी अज्ञानतानो अनुभव तेउंनी साथेना परिचयथीज थाय छे, वास्तवमे आ लोको जैनमतथी तदन विपरीत चालनारा होवाथी जैनाभास छे इति ढुंढक मतोत्पत्ति.

६३ श्री विजयप्रभ सूरिनी पाट उपर श्री विजयरत्न सूरि थया ६४ श्री विजयरत्न सूरिनी पाट उपरश्री विजयक्षमा सूरि थया ६५ श्री विजयक्षमासूरिनी पाट उपर श्री विजयदया सूरि थया. ६६ श्री विजयदया सूरिनी पाट उपर श्रीविजयधर्म सूरी थया ६७ श्री विजयधर्म सूरिनी पाट उपर श्री जीनेंद्र सूरि थया ६८ श्री जीनेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंद्र सूरि थया ६९ श्री देवेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री विजयधरणेंद्र सूरि थया, वर्तमानमा तेमनी पाट उपर श्री राजेंद्रसूरि छे, ते विद्यमान विचरे छे

एकसठमी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि हता, तेमना शिष्य श्री सत्यविजय गणि थया, तेमज महोपाध्याय, षट् शास्त्र वेत्ता, न्यायविशारद, महावैय्याकरणि, तार्किकशिरोमणि, बुद्धिसमुद्र श्री यशोविजय गणि थया तेउं बंने ए श्री विजयसिंह सूरिनी आज्ञा लइ गछमां क्रियाशिथिल साधुउंने देखी, तथा ढुटक मतना पाखंडनो प्रचार दूर करवा वास्ते क्रिया उद्धार कर्यो. श्री यशोविजय गणिए काशीना पंडितोमां जयपताकानो झुंडो प्राप्त कर्यो, अने गुजरात प्रमुख देशोमां प्रतिमां उत्थापक कुलिंगीउंना मतरुप अधकारने प्रतिमाशतकादि अनेक ग्रंथोना तेजथी दूर कर्यो. तेमना रचेला महान् ग्रथो, अध्यात्मसार, स्या-

रामलाल, अने रामलालना बे शिष्य, रामरत्न तथा अमरसिंह, आ बनेने अमे देखेला छे ते बनेना चेला वसंतराय तथा रामबक्ष विगेरे जीवता छे. तेउ पंजाब देशमां वर्तमानमां फर्या करे छे

जीवाजीनो चेलो लालचंद थयो, अने लालचंदनो चेलो अमरसिंह थयो ते मारवाड देशमां आव्यो, तेमना परिवारमां नानकजी थयो. जेना चेला हालमां अजमेर तथा कृष्णगढ जील्लामां बहु फरे छे एक श्यामिदास, जेना परिवारमां कन्हीराम, लेखराज, तखतमल प्रमुख हालमां मारवाडमां रहे छे, तथा बुंदीकोटामां अने मालवामां, लालचंद, गणेशजी, गोवींदरामजी, थया, तथा अमीचंद, हुकमचंद, उदयचंद, फतेचंद, ज्ञानजी, छगन, मगन, देवकरण अने पन्नालाल प्रमुख फरे छे, तेउ पण हरिदासनाज चेला छे वली अमरसिंहना चेला दीपचंद, दीपचंदना धर्मदास, धर्मदासना जोगराज, जोगराजना हजारीमल्ल, हजारीमल्लना लालजीराम, लालजीरामना गंगाराम, गंगारामना जीवणमल्ल, जे वर्तमानमां दिल्लीनी आसपासना गामोमां फरे छे, तथा अमरसिंहना परिवारमां धनजी, मनजी, नाथुराम अने ताराचंद प्रमुख थया छे, जेमना चेला, रतिराम तथा नंदलाल थया नंदलालनो चेलो रुपचंद अने रुपचंदनो विहारी जे पंजाबमां कोट जगरावांदि गामोमां फरे छे, तथा कानजी अने धर्मदास छीपीना चेलाउ दीपचंद, गोपालजी प्रमुख लींबडी, वढवाण, मोरवी गोंडल, जेतपुर, राजकोट, अमरेली, ध्रांगधरा प्रमुख झालावाड काठीयावाड अने हालार प्रमुखना गामोमां फरे छे. धर्मदास छीपीना चेला धनाजी, धनाजीना भुदरजी, भुदरजीना रघुनाथजी, जेमलजी, गुमानचंद, दुर्गदास, कन्हीराम, रत्नचंद, हमीरमल्ल, कचोरीमल्ल प्रमुख वर्तमानमां मारवाडमां फरे छे, ते प्रसिद्ध छे

रघुनाथजीनो चेलो भखमजी संवत (१८१८) मां थयो जेणे तेरापंथ प्रगट कर्यो तेना चेला भारमल, हेमजी, रायचंद, जीतमल्ल थया, जीतमल्लनी गादी उपर हाल मेघजी छे आ मुखबंधा जेटला साधुउ छे, तेउनो पंथ संवत (१७०९) नी सालथी चाल्यो छे तेमनो मत ज्यारथी निकल्यो छे. त्यारथी आज सुधी तेमना मतमां कोइ पण विद्वान

थयेल नथी, कारण के ते लोको कहे छे के, व्याकरण, काव्य, कोश, छद, अलंकार प्रमुख जणवाथी, तथा तर्कशास्त्र जणवाथी बुद्धि वगडी जाय छे. आ अज्ञानपणाना कारणथीज तेउ परस्पर बहु द्वेष राखे छे. कइक मनमानी कल्पित वातो बनावी लहे छे. एक बीजानो पग जामवा देता नथी, मनमां माने छे के, मारा फलाणा गृहस्थ चेलाने फलाणो चोलवशे, इत्यादि अनेक कारणोथी परस्पर इर्ष्या बहुज राखे छे. आ वातमां शंका लागे तेणे मारवाडमां जइ प्रत्यक्ष अनुजव करवो. तेमना आचार, व्यवहार, वेष, श्रद्धा, प्ररुपणा प्रमुख जैनमतना शास्त्रानुसार नथी वली बीजा मतवालाउ पण जे जैनमतना बहु लोकोने गदा, कढंगा माने छे, तेउ मात्र आ ढुंढीआउनाज आहार, व्यवहारनी रीत देखीने तेम माने छे विशेष शुं लखुं, तेउनी अज्ञानतानो अनुजव तेउनी साथेना परिचयथीज थाय छे, वास्तवमे आ लोको जैनमतथी तदन विपरीत चालनारा होवाथी जैनाजास छे इति ढुंढक मतोत्पत्ति.

६३ श्री विजयप्रज सूरिनी पाट उपर श्री विजयरत्न सूरि थया. ६४ श्री विजयरत्न सूरिनी पाट उपरश्री विजयक्षमा सूरि थया. ६५ श्री विजयक्षमासूरिनी पाट उपर श्री विजयदया सूरि थया. ६६ श्री विजयदया सूरिनी पाट उपर श्रीविजयधर्म सूरी थया ६७ श्री विजयधर्म सूरिनी पाट उपर श्री जीनेंद्र सूरि थया ६८ श्री जीनेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री देवेंद्र सूरि थया ६९ श्री देवेंद्र सूरिनी पाट उपर श्री विजयधरणेंद्र सूरि थया, वर्तमानमां तेमनी पाट उपर श्री राजेंद्रसूरि छे, ते विद्यमान विचरे छे.

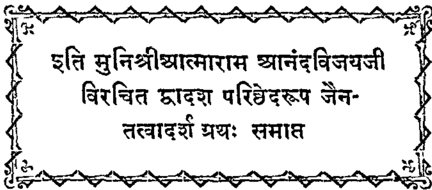
एकसठमी पाट उपर श्री विजयसिंह सूरि हता, तेमना शिष्य श्री सत्यविजय गणि थया, तेमज महोपाध्याय, षट् शास्त्र वेत्ता, न्यायविशारद, महावैय्याकरणि, तार्किकशिरोमणि, बुद्धिसमुद्र श्री यशोविजय गणि थया तेउ बंनेए श्री विजयसिंह सूरिनी आज्ञा लइ गछमा क्रियाशिथिल साधुउने देखी, तथा ढुढक मतना पाखंडनो प्रचार दूर करवा वास्ते क्रिया उद्धार कर्यो. श्री यशोविजय गणिए काशीना पंडितोमां जयपताकानो फुंडो प्राप्त कर्यो, अने गुजरात प्रमुख देशोमां प्रतिमां उच्छापक कुलिंगीउना मतरुप अधकारने प्रतिमाशतकादि अनेक ग्रंथोना तेजथी दूर कर्यो तेमना रचेला महान् ग्रंथो, अध्यात्मसार, स्या-

छाप कल्पलता, शास्त्रसमुच्चयवृत्ति, मल्लवादी सूरिकृत नयचक्र उद्धारादि अनेक मोटा (१००) सो ग्रंथ छे

श्री सत्यविजय गणिजी क्रिया उद्धार करी श्री आनंदघनजीनी साथे बहु वर्ष सुधी वनवासमां रह्या, तथा महा तपस्या योगाभ्यास प्रमुख कर्युं ज्यारे बहुज वृद्ध थइ गया, अने पगमां चालवानी शक्ति न रही, त्यारे अणहिलपुर पाटणमां आवी रह्या तेमना उपदेशथी बे शिष्य थया. गणि कपुरविजय पंडित, २ पंडित कुशलविजयजी गणि कपुरविजयजीए अनेक अर्हंत बिंबोनी प्रतिष्ठा करी, अने अनेक गाम तथा शेहेरमां धर्मनी वृद्धि करी, महाप्रभाविक थया श्री गणि कपुरविजयजीने बे शिष्य थया, १ पंडित वृद्धिविजयगणि, २ पंडित क्षमाविजय गणि श्री पंडित क्षमाविजय गणिना शिष्य पंडित श्री जीनविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित श्री उत्तम विजय गणि, तेमना शिष्य पंडित पद्मविजयगणि, तेमना शिष्य पंडित रुपविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित कस्तुरविजय गणि, तेमना शिष्य मुनि मणिविजय गणि तेमना शिष्य मुनि बुद्धिविजय गणि, तेमना शिष्य पंडित मुक्तिविजय गणि, तेमना हस्तथी दीक्षित लघु गुरुभ्रात् आ जैनतत्त्वादर्श ग्रंथना लखनार मुनि आत्माराम (आनंदविजयजी) इति तपगछ गुरु आवलि संपूर्ण

वर्त्तमान समयमां नवीन पंथ मुख्यत्वे करी जे निकल्या छे ते लखीए छीए – गुजरात देशमां स्वामिनारायणनो पंथ, बंगालामां ब्रह्मसमाजनो पंथ, पंजाबमां लुधीआना नजीक भयणीगाजनिवासी तखाणसिख जातिना उपदेशथी कूकापंथ, कोयलमां मौलवी अहमदशाहना नविन फिरका, तथा दयानंदसरस्वति स्वामिनो प्रगट करेलो आर्यसमाज पंथ, इत्यादि केटलाएक मतो, पुरातनी अनेक मतोनो त्याग करी निकलेला छे मत काढनाराउए एम मान्यु लागे छे के आपणी बुद्धि समान प्राचीन पंडितोनी बुद्धि न होती, तथा तेउ प्राचीन ग्रंथो जेम के वेदो, उपनिषदो प्रमुखने यथार्थ समजता न होता अमने तो कांइ हरकत नथी, परंतु जो कदापि आवी रीते नवीन नवीन मतो निकलता रहेशे, तो कोइ दिवस ब्राह्मादि मताधिकारीउनो गरास टली जशे, तथा धर्म अने नियम कायम रहेशे नहि

इति श्री तप गच्छीय मुनिगणी श्रीमणिविजय तच्छिष्य मुनि श्रीबुद्धि विजय तच्छिष्य मुनि आत्माराम आनंद विजय विरचिते जैन तत्वादर्शे गुरु आवलि कथनरूप द्वादश. परिछेदः संपूर्ण. ॥ १२ ॥



इति मुनिश्रीआत्माराम आनंदविजयजी विरचित द्वादश परिछेदरूप जैन-तत्वादर्श ग्रंथः समाप्त

शुद्धिपत्र.

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
३	११	आदिए	आदिए
८	२०	परहितकारी होय	परहितकारी
९	२८	लाछन	लछन
१४	२६	काचवानुचिह्	काचवालु चिन्ह
१३	११	लाछनना नाम	लछनना नाम
१८	११	लाछन नाम	लछन नाम
२०	११	लाछनना नाम	लछनना नाम
२२	११	लाछन नाम	लछन नाम
२४	११	लाछन नाम	लछन नाम
२६	११	लाछन नाम	लछन नाम
२८	११	लाछनना नाम	लछनना नाम
३०	११	लाछन नाम	लछन नाम
३२	११	लाछन नाम	लछन नाम
३६	१८	स्वारि	स्वारि
३७	२६	स्तुति छे ?	स्तुतिना छे ?
३८	२	परमेश्वरपणाये	परमेश्वरपणाये
४८	४	जीनोए	जीनोए
७६	१२	रजवामा	रचवामा
८३	१६	क्या छे	कया छे
८४	२९	तो अदत्त	तो गुरु अदत्त
८६	१०	सातमा	सातमी
८६	१८	वीजी	वीजा
८८	२३	वर्जनान्	वर्जनात्
९२	६	प्रप्रमुख	प्रमुख
९६	१	अनेकतरेथी	अनेकतरेहथी
९७	७	प्रासुक	प्रासुक
९७	१८	पुरीष	पुरीस
१०४	१	घात्रिशति	घात्रिशति
१०४	२	चितन	चितवन
१७१	७	जीजासा	जीज्ञासा
१७३	५	अत्मा	आत्मा
१९९	१७	वस्ते	वास्ते
२०१	१४	वर्तमामान	वर्तमान
२०१	२७	आह	आहा
२०४	१५	प्रकुतिल	प्रतिकुल
२०७	१४	पाचेर्डीयवाला छे	पाचइन्द्रिय छे
२०७	२३	अपर्याप्त	अपर्याप्तो
२०९	५	अनुपरत	अनुपहत
२१०	१४	अगारापत्तुखमा	अगाराप्रमुखमा
२१४	८	पराजनमा	परजनमा
२१५	१३	आतपनामकर्ग	आतापनामकर्म
२१६	१७	पुण्यपापा	पुण्यपाप
२२०	२३	स्यानद्धि	स्त्यानद्धि
२२१	१२	ककेश	क्लेश
२२४	५	हुड	हुडक
२३४	२०	प्रकानी	प्रकारनी
२३८	१८	सह	सहे
२४४	८	थाय छे	थया छे
२४६	१०	एवाज	एवा जे
२४७	७	जीनवाणीने	जिनवाणीने
२४८	१३	तेनो	तेनु
२५४	२२	लोजआहार	लोमआहार
२५६	१७	तेजोज	नेर्उज
२५८	२९	जेर्उनेज	जेर्उनो
२६१	६	लुटवानेज	लुटवाने
२६२	७	शुद्धाजोनिधि	शब्दाजोनिधि
२६२	२१	स्वरूप	स्वरूप
२६४	१४	अनिष्टयोगार्त्त	अनिष्टसयोगार्त्त
२६५	६	मनुष्याप्रवी	मनुष्यानुप्रवि
२७२	४	ध्यनमाज	ध्यानमाज
२७२	२७	अशुद्ध	अशुद्ध
२७८	२२	अतिप्रयत्न	अतिप्रयत्न
२८०	२०	क्रमोक्रमे	क्रमेक्रमे
२८३	११	एवा वीजो	एवा वीजा
२८७	२	केवलीसमद्घात	केवलीसमुद्घात
२९०	१	रूपतापन्नने	रूपतापने
२९१	११	धरतो	करतो
२९४	१४	मुनिश्रीद	मुनिश्रीमद्

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२९९	२५	प्राणी	पाणी
३०१	१०	शिप्याउने	शिप्यणीयोने
३२७	२७	साद्दत्	साक्षात्
३३१	६	राखनानो	रासनानो
३३४	२५	निचार	विचार
३३५	५	आतिचार	अतिचार
३३६	२२	अधीन	आधीन
३४०	१२	एएवु	एवु
३४२	७	जगत्नी	जगत्
३४७	२३	केवल	कवल
३५२	१९	अर्थां	अर्थी
३५२	१९	कालकुट	तालपूट
३५३	२४	वडु	वहु
३६८	९	अजीनिका	आजीविका
३८४	२९	सखिए	लखिये
३९२	२४	मण	पण
३९६	१४	आगर	आगार
३९८	२७	कुलोना	फूलोना
४०१	४	अगीकर	अगीकार
४०१	१४	जे	जो
४०१	१७	अने	आने
४०२	५	सारोद्धार	मारोद्धार
४०६	१७	सम्यत्त्व	सम्यक्त्व
४०६	२४	डुराचारा	डुराचारा
४०६	२७	म्रियते	म्रियन्ते
४०७	१९	रेशमि	रेशमी
४०८	२०	अर्हत	अर्हत
४०८	२९	लोकापहास्य	लोकोपहास्य
४०९	९	राज्यचिह्न	राज्यचिन्ह
४१३	२९	मालाघर	मालाधर
४१५	२३	चेडआण	चेडआण
४१६	२३	केकेवली	केवली
४१९	२६	जिनविंब	जिनबिंब
४१९	२३	जाणरून	जिणरून
४२०	५	ह्वण	न्हवण
४२०	८	मगीश्र	सगीश्रा
४२०	२३	जिनत्तु	जिन्नतु
४२१	२२	लोणणल	लोणलणल
४२३	१३	निश्राकत	निश्राकृत
४२३	१६	जिनममिरो	जिनमदिरो
४२३	२३	असंविस	असनिग्न
४२३	२६	निग्रकना	निर्ग्रंकना
४२३	२९	त्रिधि	विधिनो
४२४	३	ड्यां	ड्यां
४२४	२१	सिद्ध	मिद्ध
४२५	४	मोक्षप्रदात्री	मोक्षप्रदायी
४२५	८	तदासा	तदाज्ञा
४२९	८	प्रमुखथी	प्रमुखनी
४२९	१८	वडीनीत	वडीनीति
४३०	६	दिशा	दिशाए
४३०	२२	द्रव्यथी	द्रव्यनी
४३०	२२	असवारी	अस्वारी
४३०	२८	कागला	कोगला
४३२	४	वैद्यक	वैदक
४३२	२६	वैय्यावच्च	वैय्यावच्च
४३३	१७	प्रमुख	प्रमुखनी
४३६	१९	प्रमुखमा	प्रमुख
४३७	२३	स्नात्रप्रजावना	स्नात्र, प्रजावना
४३८	१४	परजावना	प्रजावना
४३९	१३	खमामणा	खमासमणा
४३९	१९	कुस्थान	सुस्वप्न
४४०	२६	रागग्रस्त	रोगग्रस्त
४४५	२८	निराधी	निरोधी
४४६	४	दागीन	दागीना
४४७	२२	न्युनादिक	न्यूनाधिक
४५३	४	करेख	लगेउ
४५५	४	परतीर्थिको	परतीर्थिउ
४५६	२८	तर्जना करे	तर्जना न करे

शुद्धिपत्र.

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
४६२	३	ते	के
४६४	१०	वोलावा	वलावा
४६७	१७	वोज	वोजो
४७१	२०	मेचतन	मचेतन
४७२	१ए	जावस्थिति	जवस्थिति
४७३	११	च्यवन	चवन
४७६	४	परिणाम	परिमाण
४७६	२२	डाढा	डाढ्य
४७७	११	अनदडर्थीर्थ	अनर्थदंडथी
४७०	१०	मम्यत्कव	सम्यक्त्व
४७१	१४	धी	घी
४७५	२ए	अधर्मी	अधर्मी
४७७	१ए	पडोकोश	पडोश
४ए०	७	निहाह	निवाह
४ए०	२०	जेम	तेम
४ए१	४	वध	वध
४ए१	१०	जिनप्रतिमा	जिनप्रतिमा
४ए७	१	पेथके	पेथडे
४ए६	१ए	सम्यत्त	सम्यक्त्व
४ए७	१४	जावोजीव	जावजीव
४ए७	१५	पेथके	पेथडे
४एए	१७	डव	डव्य
४एए	१ए	मोदा	मादा
५००	६	आलेवे	आलोवे
५०१	४	अर्हत	अर्हत
५०१	१ए	निध्वान	निधान
५०२	१२	प्रधम	प्रथम
५०५	७	वृपत्न	वृपत्न
५०५	१०	न्यूनवर्पना	न्यून एक वर्पना
५०७	१७	धिचार	विचार
५०ए	२७	ओपधानुयोग	ओंपधानुयोग
५०ए	२ए	सदीये	लदीये
५१२	१४	निक्षा	निक्षा
५१३	७१	देवोये	देवताउये
५१५	१७	तमे कहो ?	तमे कहो के
५१७	२६	काकणी	काकणी
५१ए	२३	सुहफफाए	सुहफाए
५२०	१४	धी	घी
५२०	२४	समुद्रा	सुवद्रा
५२५	१	धेर	घेर
५२६	२७	कह्मो	कह्यो
५२७	२७	ससगर	सगर
५२ए	ए	सर्वेये	सर्वोये
५२ए	१५	अवघिज्ञान	अवधिज्ञान
५३१	२७	स्यापना	स्यापन
५३६	७	आगीआरमा	अगीआरमा
५३६	२२	प्राप्त थता	करता
५३७	६	हस्तिपुर	हस्तिनापुर
५४०	१०	नगगर	नगर
५४४	२२	निर्ग्राह्मणी	निर्ब्राह्मण
५४५	६	निप्लुकुमार	निपणुकुमार
५४७	२ए	वथी	वशी
५५१	११	नाममा	नामना
५५७	११	दत्ती	हती
५५२	१३	विचार	तेनो विचार
५५४	१२	प्रमुखथी	प्रमुखनी
५५७	ए	आगीआरे	अगीआरे
५५ए	२४	निश्चय	निश्चय
५६०	१	जागवनार	जोगवनार
५६०	२७	इत्यादि	इत्यादि
५६१	२	सर्व	सर्व
५६५	१०	तथा अने	अने
५६५	१६	स्यापन कर्या	स्यापन न कर्या
५६७	७	परमार्हत	परमार्हत
५६७	२२	गृहवास	गृहस्थवास
५७१	१४	मने	अने
५७२	२	थोवाथो	थोवायो